# रामायण
# महानाटक

रमेशचन्द्र वार्ष्णेय

रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

# रामायण महानाटक

## सम्पूर्ण रामलीला

(संशोधित संस्करण)

तः स्मरणीय अमर शिल्पी महाप्राण गोस्वामी तुलसीदास जी
का "मानस" रामचरित्र का वह अप्रतिम ग्रन्थ है जिसे प्राप्त
कर भारत ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व कृतकृत्य
हो उठा। उन्हीं के शब्दों में.............
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा

**गुरु शरणम्**

**श्री श्री १०८ स्वामी निजानन्द जी महाराज**

गुरु-गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियौ बताय ॥

सेवक
रमेश चन्द्र वार्ष्णेय

♥ ♥ ♥

## समर्पण

पूज्य ताऊ जी स्वर्गीय सेठ चिरंजी लाल जी वार्ष्णेय खेड़ा वालों को
जिनकी धार्मिक प्रेरणा जीवन में सदैव मेरा मार्ग दर्शन करती रही।

—रमेश चन्द्र वार्ष्णेय

**नारी प्रेरणा है।**
—जयशंकर प्रसाद

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

# रामायण महानाटक

## सम्पूर्ण रामलीला (बारह भाग)

संकलनकर्त्ता
रमेश चन्द्र वार्ष्णेय (खेड़ा वाले) अवागढ़ (एटा)

मूल्य : ₹ 400.00

प्रकाशक
रणधीर प्रकाशन, हरिद्वार

*प्रकाशक* : **रणधीर प्रकाशन**
रेलवे रोड (आरती होटल के पीछे) हरिद्वार
फोन : (01334) 226297

*वितरक* : **रणधीर बुक सेल्स**
रेलवे रोड, हरिद्वार
फोन : (01334) 228510

*दिल्ली विक्रेता* : **गगन बुक डिपो**
4694, बल्लीमारान, दिल्ली-110006

*जम्मू विक्रेता* : **पुस्तक संसार**
167, नुमाइश का मैंदान, जम्मू तवी (ज.का.)

**संस्करण** : **सन् 2017**

*मुद्रक* : **राजा ऑफसेट प्रिंटर्स**, दिल्ली-92

---

© रणधीर प्रकाशन

---

**RAMAYAN MAHANATAK**

*PUBLISHED BY : RANDHIR PRAKASHAN, HARDWAR (INDIA)*

## मुझे भी कुछ कहना है. . . ?

बात सन् १९७४ की है। भारतीय कला निकेतन अवागढ़ (एटा) के मुख्य निर्देशक श्री ओ३म् प्रकाश शर्मा द्वारा व्यंग्य में राजा जनक का पार्ट मुझे स्टेज पर अभिनीत करने को देना भगवत प्रेरणा से इतना बड़ा रूप धारण कर लेगा इसकी कल्पना मुझे स्वप्न में भी नहीं थी। मेरे पार्ट पर वे इतने मुग्ध हुए कि उनको कहना पड़ा कि वकील साहब आप इसी प्रकार की पूरी रामायण नाटक शैली में लिख दीजिये। काम मेरी रुचि का था। रामायण महानाटक के रूप में उसकी रचना हुई जो आदर्श रामलीला क्लब अवागढ़ द्वारा बाहर से नहीं अपितु अवागढ़ से ही अनुकूल पात्रों द्वारा पूर्ण अभ्यास के बाद श्री अशोक पचौरी के सफल निर्देशन में प्रस्तुत की गई।

नाटक के प्रकाशक के सम्बन्ध में कुछ कहे बिना बात अधूरी रहेगी। जब रणधीर बुक सेल्स (प्रकाशन) हरिद्वार के प्रकाशक को मेरे नाटक के बारे में पता चला तब उन्होंने इसके प्रकाशन का साहसपूर्ण निर्णय लिया। कार्य सरल और छोटा नहीं था फिर भी उन्होंने इसे सुचारु रूप से सम्पन्न किया तथा नाटक को पाठकों के सामने सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। वे मेरे अपने ही हैं, ऐसा उनके व्यवहार से जाना। अत: उनको धन्यवाद देना तो सूरज को दीपक दिखाने के समान होगा फिर भी वे साधुवाद के पात्र तो हैं ही। अब पाठकों के उत्साह को देखते हुए इस पुस्तक का दूसरा संशोधित संस्करण आपके हाथों में है। आशा है सब राम प्रेमी इस सम्पूर्ण रामायण महानाटक का फिर से जोरदार स्वागत करेंगे।

विनीत

रमेश चन्द्र वार्ष्णेय

# शुभ कामना संदेश

## दो शब्द

"राम तुम्हारा चरित्र स्वयं ही काव्य है ।
कोई कवि बन जाय सहज समभाव्य है ॥"

महाकवि मैथिलीशरण गुप्त ने अपने प्रबन्ध काव्य 'साकेत' की रचना करते समय उपयुर्क्त पंक्तियों में रामचरित की विशिष्टता को प्रकट कर दिया है। वस्तुतः रामकथा साहित्य की प्रत्येक विधा का विषय रही है। हिन्दी के नाटक साहित्य में रामायण महानाटक एक उल्लेखनीय कृति है। इसी प्रकार हाल ही में श्री नरेन्द्र कोहली ने राम के चरित्र में घटना और स्थितियों की इतनी संकुलता मिलती है कि उसे किसी भी साहित्यिक विधा में सफलतापूर्वक बांधा जा सकता है। राम कथा को जहाँ एक ओर हिन्दी और अन्य भाषाओं के मूर्धन्य कवियों और लेखकों ने अपनी रचना का विषय बनाया है वहीं दूसरी ओर उस पर सामान्य लेखकों ने भी लेखनी चलाई है क्योंकि यह साहित्य से अधिक भावना और श्रद्धा का विषय है।

श्री रमेश चन्द्र जी वार्ष्णेय ने राम के प्रति अपनी श्रद्धा को प्रस्तुत कृति के माध्यम से व्यक्त किया है। उन्होंने रामचरित को नाटक का रूप दिया है। उनका परिश्रम सराहनीय है। मुझे आशा है कि राम के श्रद्धालु भक्तों को उसमें आनन्द की प्राप्ति होगी। मैं श्री वार्ष्णेय जी के प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ।

१०-५-७९ **डॉ० मलखान सिंह सिसौदिया**

(राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता एवं प्राचार्य आर्य विद्यालय एटा)

कल्पना कुटीर, एटा

भगवान श्री राम की पावन लीला प्रसंग मैंने पढ़ा। बहुत ही मनभावन है। लेखक श्री रमेश चन्द्र जी वार्ष्णेय ने बहुत परिश्रम किया है। भारतवर्ष के नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में विजय दशमी पर लीलायें होती हैं।

इस पुस्तक से सभी को बड़ी सहायता मिलेगी। भगवत लीला के प्रचार में अवश्य ही यह पुस्तक सहायक होगी। मैं लेखक के प्रयास की सराहना करते हुए मंगल कामना करता हूँ।

२६-१०-७९

**राम स्वरूप शर्मा**

संचालक—रामलीला एवं कृष्ण लीला मंडल

(अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त)

वृन्दावन (मथुरा)

श्री रमेश चन्द्र जी वार्ष्णेय द्वारा सकंलित रामायण महानाटक का विमोचन करके मुझे बरबस महाकवि बिहारी लाल जी का स्मरण हो आया जिन्होंने गागर में सागर भर दिया है। इस नाटक को समाज का प्रत्येक प्राणी पढ़कर समाज में जनहित की भावना जाग्रत करता रहेगा और घर-घर में रामचरित मानस का कल्याणकारी प्रचार होता रहेगा।

श्री वार्ष्णेय जी का परिश्रम सराहनीय है और मेरी शुभ कामनायें सदैव इनके साथ हैं।

२९-१०-७९

**ओमप्रकाश शर्मा**

मुख्य निर्देशक

भारतीय कला निकेतन, अवागढ़ (एटा)

इस ग्रन्थ का सारे भारत में प्रचार हो। लेखक दीर्घायु होकर अपने परिवार एवं समस्त हिन्दू समाज के लिये एक आदर्श व्यक्ति सिद्ध हो। यह मेरा शुभाशीर्वाद है।

२५-१-८३

शुभेक्षु

**स्वामी प्रकाशानन्द आचार्य**

महामण्डलेश्वर

श्री जगदगुरू आश्रम (कनखल)

हरिद्वार

## साभार

| | | |
|---|---|---|
| १. बाल्मीक रामायण | : | गीताप्रेस गोरखपुर । |
| २. तुलसीकृत रामचरित | : | गीताप्रेस गोरखपुर । |
| ३. राधेश्याम रामायण | : | राधेश्याम प्रेस बरेली |
| ४. रामलीला नाटक | : | लेखक—श्री चानन लाल वर्मा । |
| ५. रामलीला नाटक | : | लेखक—श्री विश्वेश्वर दयाल गुप्त 'कुशल' |
| ६. राधेश्याम रामायण | : | लेखक—श्री रघुनाथ जी |
| ७. रामलीला नाटक | : | लेखक—श्री जगदीश शर्मा |
| ८. लक्ष्मण-परशुराम संवाद | : | लेखक तथा संग्रहकर्त्ता—ब्रह्म स्वरूप द्विवेदी "वीरेश" |
| ९. मानस — रहस्य | : | लेखक—श्री जय राम दास 'दीन' |

## आभार

१. उन समस्त साभारित पुस्तकों के लेखकों का जिनके मनकों को रामायण महानाटक रूपी माला में पिरोने का दुःसाहस किया ।

२. उन तमाम अपने सहयोगियों का जिनका प्रोत्साहन एवं सहयोग मुझे प्रेरणा देता रहा ।

३. उन तमाम महान् विभूतियों का जिन्होंने अपने बहुमूल्य समय में से थोड़ा सा समय देकर रामायण महानाटक का अवलोकन किया ।

४. अपनी धर्मपत्नी श्रीमती ओ३मवती देवा का जिनकी प्रेरणा मेरी लेखनी को आगे बढ़ाती रही ।

## अपनी बात

यों तो भगवान राम की लीला संसार में हम और आप पल-पल देखते हैं। प्रभु की लीला अपरम्पार है। परन्तु अपने देश के ग्रामीण अथवा शहरी अंचल में कुआर के माह में वृद्ध, जवान, बच्चे, माता अथवा बहनों आदि के मन में रामलीला देखने की जो उमंग पैदा होती है उसी असीम आनन्द ने मुझे साभारित पुस्तकों के मनकों को रामायण महानाटक रूपी माला में पिरोने के लिये उत्साहित किया। यदि अपने देश में एक प्रतिशत भी रामलीला प्रदर्शन में बढ़ोतरी हो गई तो मैं अपने प्रयास को सफल समझूँगा।

अब नाटक आपके हाथों में है। निर्णय भी आपके पास सुरक्षित है।

फिर भी—

भूल जाना गल्तियों को, जो हृदय में धरते हैं।
रखना भावना निज मन में, हम प्रभु प्रचार करते हैं॥

क्योंकि—

जैसी जिसकी भावना, जैसे रूप विचार।
वैसे ही दीखें उन्हें, दशरथ अवध कुमार॥

विनीत
**रमेशचन्द्र वार्ष्णेय**

प्रभू की प्रेम दृष्टि से, बदल जाती हैं तकदीरें।
अगर विश्वास सच्चा है, तो कट जाती हैं जंजीरें॥

(श्री रामगोपाल भारद्वाज अवागढ़ वालों के सौजन्य से)

# विषय-सूची


| | | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| | श्री रामावतार कथा प्रसंग | २८-१०५ |
| १. | राम जन्म | १०६-१५८ |
| २. | धनुष यज्ञ | १५९-२०१ |
| ३. | राम विवाह | २०२-२०९ |
| ४. | दशरथ प्रतिज्ञा | २१०-२६२ |
| ५. | दशरथ मरण | २६३-३०१ |
| ६. | सीता हरण | ३०२-३६० |
| ७. | राम-सुग्रीव मित्रता | ३६१-३९८ |
| ८. | लंका दहन | ३९९-४७८ |
| ९. | लक्ष्मण शक्ति | ४७९-५१२ |
| १०. | सती सुलोचना | ५१३-५५२ |
| ११. | रावण वध | ५५३-६१२ |
| १२. | सीता बनवास | ६१३-६४३ |

# पढ़ो-समझो और करो

## सत्संग की महिमा

('सुखी जीवन' लेखिका मैत्री देवी गीता प्रेस गोरखपुर के सौजन्य से)

सत यानी परमात्मा और संग यानी प्रेम अर्थात् परमात्मा में प्रेम यही सर्वश्रेष्ठ सत्संग है। गोस्वामी तुलसीदास जी सत्संग का महत्व समझाते हुए लिखते हैं :—

बिनु सत्संग न हरि कथा तेहि बिनु मोह न भाग ।
मोह गएँ बिनु राम पद होई न दृढ़ अनुराग ॥

अर्थात् सत्संग के बिना हरि कथा नहीं मिलती। हरि कथा के बिना मोह नाश नहीं होता और मोह का नाश हुए बिना भगवान में दृढ़ प्रेम नहीं होता। भगवान मिलते ही हैं प्रेम से। रामचरित मानस के बालकाण्ड में देवताओं के प्रति भगवान शिवजी के वचन हैं :—

हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥

सच्चे संन्यासी की परिभाषा मचान पर रहने वाले योगिराज देवरहा बाबा ने इस प्रकार की है :—

तन जग में मन हरि के पासा । लोभ मोह सों सदा उदासा ॥

साधू बेला आश्रम बम्बई के महन्त गणेशदास जी लिखते हैं कि संन्यास लेना मामूली बात नहीं है। संन्यासी का सम्बन्ध तो केवल धर्म से होना चाहिए वह भी मानवता का धर्म अर्थात् दीन-दुखियों की सेवा करना ही भगवान में सच्चा प्रेम है। जो इन्सान अपने को भुला कर समाज के कार्य सम्पन्न करे वही सच्चा संन्यासी है।

गोस्वामी तुलसीदास के शब्दों में :—

नारि मुई गृह संपति नासी । मूड मुडाइ होंहिं संन्यासी ॥

इस प्रकार के संन्यासी समाज का कलंक हैं और ऐसे आडम्बरी संन्यासियों से समाज का कभी हित नहीं होता। ऐसे संन्यासी सदैव अपने पेट की भूख शान्त करने का ही उपाय सोचते रहते हैं। समाज का हित साधन कभी नहीं सोचते।

भगवान तो हमेशा प्रेम के भूखे हैं और प्रेम वश ही भक्त के बस में

हो जाते हैं तथा भक्त पर मुसीबत पड़ने पर अपना गरुड़ासन छोड़कर नंगे पैरों दौड़े आते हैं जिसके सैकड़ों उदाहरण भरे पड़े हैं। अन्तर्यामी सबके मनोभाव जानते हैं। तुलसी के मानस के कुछ प्रसंग देखिए :—

जहाँ एक ओर लक्ष्मण के अपने प्रति सेवाभाव से भगवान मुग्ध थे वहाँ दूसरी ओर भरत की अपने प्रति अटूट भक्ति के कारण भगवान भरत को सबसे प्रिय मानते थे। सुग्रीव अपराधी सा भगवान के सम्मुख खड़ा है परन्तु उसका सच्चा प्रेम देखकर भगवान ने कहा है कि :—

तब रघुपति बोले मुसुकाई । तुम प्रिय मोहि भरत सम भाई ॥

गीधराज जटायू की भक्ति से भगवान इतने प्रभावित हुए कि उनके नेत्रों से अश्रुधारा बहने लगी और उसे सबसे ऊँचा पद दिया।

जलभरि नयन कहहिं रघुराई । तात कर्म निज तें गति पाई ॥
तनु तजि तात जाहु मम धामा । देउं काह तुम्ह पूरन कामा ॥

बाली को जब अपने नीचता का ज्ञान हुआ तब वह लज्जित होकर भगवान के प्रेम जाल में फँस गया तब प्रभु ने उसे अपनाया।

अचल करौं तनु राखहु प्राना । बालि कहा सुनु कृपानिधाना ॥
जन्म जन्म मुनि जतनु कराहीं । अन्त राम कहि आवत नाहीं ॥
मम लोचन गोचर सोइ आवा । बहुरि के प्रभु अस बनिहि बनावा ॥

सबकी की कुटिया पर पहुँचकर भगवान भक्तिनी से इतने प्रभावित हुए कि उन्हें कहना पड़ा :—

अधम ते अधम अधम अति नारी । तिन्ह महँ मैं मति मंद अघारी ॥
कह रघुपति सुनु भामिन बाता । मानहु एक भगति कर नाता ॥

जब विभीषण शरणागत हुआ तब यह जानते हुए भी कि वह बैरी का भाई है उसे गले लगाया। यह भक्ति का प्रभाव था।

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष विसेषा ॥
दीन वचन सुनि प्रभु मन भावा । भुज विसाल गहि हृदयं लगावा ॥

उपरोक्त तथ्यों से प्रगट होता है कि भगवान में अटूट भक्ति ही मोक्ष का द्वार है। इसलिए दो बातों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए।

दो बातन को याद रख, जो चाहे कल्यान ।

सबसे प्रथम मौत को, दूजे श्री भगवान ॥

संसार नश्वर है यह कहकर उसे त्यागा नहीं जा सकता। उसकी नश्वरता में अमरता भी विद्यमान है। उसमें आसक्त नहीं होना चाहिए। तुलसी ने मानस में लिखा है कि :—

जोग भोग महँ राखेउ गोई । राम बिलोकत प्रगटेउ सोई ॥

अर्थात् जिस प्रकार राजा जनक राजसी भोग विलास में जीवन यापन करते हुए भी अपनी आत्मा का योग परमात्मा में बनाए रहे। उसी तरह :—

अनुरक्त न हो जीवन पर । मत हो विर्कत जीवन पर ॥

इस प्रकार सच्चा संन्यासी वही है जो संसार में रहकर माया मोह त्याग कर समा में दीन दुखियों की सेवा कर भगवान में अटूट विश्वास रक्खे। पहाड़ों अथवा कन्दराओं में समाधि लगाकर समाज से अलग रहकर अपने शरीर पर कष्ट झेलना बिरलों के ही बलबूते की बात है। भगवान को पाना है तो पहले अपनी आत्मा शुद्ध करो। तभी भगवान के दर्शन होंगे।

सत्पुरुष की क्षणभर की संगति भी संसार सागर से पार होने में नौका रूप होती हैं। तुलसी के मानस में देखिए :—

बिनु सतसंग विवेक न होई । राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥
गगन चढइ रज पवन प्रसंगा । कीचहिं मिलइ नीच जल संगा ॥

अर्थात् धूल वायु के संग से आकाश में चढ़ जाती है और वही नीचे गिरने वाले जल के संग से कीच में मिलती है।

इसी संदर्भ में "नारद बाल्मीकि प्रसंग" देखिये :—

## नारद-बाल्मीक-संवाद

रत्नाकर का जन्म ब्राह्मण वंश में हुआ था, किन्तु उसके आचरण शूद्रों के समान थे। वह हमेशा लुटेरों के साथ रहता और बेचारे निर्दोष यात्रियों की हत्या करके उनका सब मालमत्ता छीन लेता। यही उसकी आजीविका थी। एक दिन दैवयोग से देवर्षि नारद उसे ओर आ निकले। तब.....?

**रत्नाकर :** (नारद जी को डपटकर) ठहरो ! आगे मत बढ़ना।

**नारद जी :** तुम जानते नहीं, मैं डाकुओं का सरदार रत्नाकर हूँ। तुम्हारे पास जो कुछ भी हो यहाँ सीधे रख दो नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।

**नारद जी :** भाई ! हमारे पास तो केवल यह वीणा और हरि नाम है तुम खुशी से जब चाहो तब ले सकते हो।

**रत्नाकर :** अच्छा ! तुम जरा गाकर सुनाओ। तुम्हारी वीणा का स्वर तो बड़ा अच्छा जान पड़ता है।

(तब नारद जी ने अत्यन्त सुमधुर स्वर में भगवान का कीर्तन करना प्रारम्भ किया। उसके प्रभाव से रत्नाकर का कठोर हृदय कुछ पसीजा। उसमें कुछ दया का संचार हुआ।)

**रत्नाकर :** मुने ! मेरे हृदय में सदा आग-सी जलती है। आज तुम्हारी कीर्तन सुनकर मुझे कुछ शान्ति-सी जान पड़ती है। क्या इसमें कोई जादू है ?

**नारद जी :** भाई ! रामनाम में एक अजीब जादू है। यह तो शान्ति का भण्डार है। तुम लूट मार करते हो। निरपराध यात्रियों के प्राण हर लेते हो। सोचो तो सही संसार में जीव हिंसा से बढ़कर कोई पाप है। सच मानो तुम्हारे हृदय में यह पापाग्नि ही सुलगती रहती है। भाई ! तुम यह क्रूर कर्म छोड़ दो।

**रत्नाकर :** महाराज ! लूटमार छोड़ दूँ तो अपने माता-पिता और परिवार का पालन-पोषण किस प्रकार करूँगा ? हमारा तो इसी से पेट भरता है।

**नारद जी :** भाई ! जिनका तुम पालन करते हो उनसे एक बार यह तो पूछो कि तुम लोग इस लूट के धन के साथी हो या इसके बदले मुझे नरक में जो कष्ट भोगना पड़ेगा उसमें भी भाग लोगे। यदि वे केवल धन के ही साथी हैं तो तुम्हारा इस प्रकार पाप में लगे रहना ठीक नहीं।

(नारद जी की यह बात सुनकर रत्नाकर ने समझा ये मुनिराज इसी

बहाने मुझे घर भेजकर आप भाग जाना चाहते हैं ।)

रत्नाकर : खूब ! मैं घर जाऊँ और आप मौका पाकर भाग जायें ।

नारद जी : भाई ! तुम मुझे इसी पेड़ से बाँध जाओ और जल्दी पूछकर मुझे उनका विचार बताओ ।

**(रत्नाकर नारदजी को पेड़ से बाँधकर अपने घर आता है ।)**

रत्नाकर : (अपने घर आकर माता-पिता से) पिताजी ! मैं नित्य लूटमार कर और जीवों की हत्या करके आपके लिए धन लाता हूँ । उसे आप सभी भोगते हैं, परन्तु इस पाप कर्म के लिए मुझे परलोक में जो दण्ड मिलेगा उसमें आप लोग भाग लेंगे या नहीं ।

माता-पिता : बेटा ! धनोपार्जन करके हमारा पालन करना तेरा धर्म है । यदि तू अधर्म से धन बटोरता है तो हम उसमें क्या कर सकते हैं ? उसका फल तो अकेले तुझे भोगना पड़ेगा । हम तेरे पाप के भागी कैसे हो सकते हैं ?

रत्नाकर : (अपनी स्त्री से) प्रिये ! तेरा क्या विचार है ?

स्त्री : स्वामी ! मेरा धर्म तो आपकी सेवा करना है । यदि आप पापपूर्वक धन संग्रह करते हैं तो इसकी जिम्मेदारी आपकी ही है । मैं उसका फल क्यों भोगूँगी ?

(अपने परिवार से ऐसा रूखा उत्तर पाकर रत्नाकर को बड़ा पश्चाताप हुआ और फौरन नारदजी के पास आया और उनका बन्धन खोलकर चरणों में गिर गया और फूट-फूटकर रोने लगा । तब नारदजी ने उसे अत्यन्त दुःखी देखकर धैर्य बंधाया । तब रत्नाकर ने रोते हुए नारदजी से अपने उद्धार का उपाय पूछा ।

नारद जी : भाई ! यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो तो किसी जीव को मत सताना । और निरन्तर राम नाम जपते रहना ।

(रत्नाकर ने भविष्य में पवित्र जीवन व्यतीत करने की प्रतीज्ञा की और अपने परिवार से सदैव के लिए सम्बन्ध छोड़ दिया । किन्तु इतने दिनों तक पापमय जीवन व्यतीत करने के कारण उसका हृदय इतना कलुषित हो गया

था कि वह प्रयत्न करने पर भी राम-नाम का उच्चारण नहीं कर सकता था इसलिए उसने कोई और सरल उपाय पूछा ।)

(नारदजी ने विचारा कि इसका जीवन मारधाड़ करते ही बीता है इसलिए इसकी वृत्तियाँ अत्यन्त उग्र हो गई हैं अत: उन्होंने उसे 'मरा-मरा' ऐसा जप करने का उपदेश दिया। मरा-मरा ही कालान्तर में उलटकर राम-राम हो गया। उसने एक ही स्थान में स्थिर आसन पर बैठकर ऐसी कठोर तपस्या की कि उसके शरीर पर बाल्मीक (दीपक के घर) बन गए और वह चारों ओर से उनसे दब गया। इस प्रकार उसे कई सहस्त्र वर्ष बीत गए तब नारदजी फिर उधर आए और उन्होंने पुकार कर कहा . . . . . ! बाल्मीक ! बस ! इससे उसकी समाधि टूट गई और वे रत्नाकर से बाल्मीक मुनि हो गए। इसी बात को गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है :—

उलटा नामु जपत जगु जाना । बाल्मीकि भए ब्रह्म समाना ॥

इन्हीं बाल्मीक मुनि ने सबसे पहले रामचरित मानस रचा था। भगवान राम वनवास के समय भाई लक्ष्मण और सीताजी सहित इनके आश्रम पर पधारे थे और जब सीताजी को वनवास हुआ तब वे भी इन्हीं के आश्रम पर रही थीं और उसी समय उनके गर्भ से कुश और लव का जन्म हुआ था। जिनको शिक्षित करके सम्पूर्ण रामचरित का बोध कराया था।

◆ ◆ ◆

# सुनो कथा श्रीराम की

सरयू किनारे अयोध्या नगरी बसी थी। वहाँ के राजा थे दशरथ। कौशल्या, सुमित्रा और कैकई उनकी तीन रानियाँ थीं। पुत्र प्राप्ति के लिये राजा ने यज्ञ कराया। चैत्र मास की नवमी को कौशल्या ने राम को जन्म दिया। सुमित्रा के लक्ष्मण व शत्रुघ्न और कैकई के भरत हुए। राजा-प्रजा खूब खुश हुए।

चारों राजकुमार तरह-तरह की विद्यायें सीखने लगे। एक दिन विश्वामित्र दरबार में आये। राजा ने उनका स्वागत किया। मुनिवर के आने का कारण पूछा तब विश्वामित्र बोले.....? राक्षस यज्ञ में बाधा डालते हैं। राम-लक्ष्मण को लेने आया हूँ। वे राक्षसों को मारकर यज्ञ पूरा करायेंगे। राजा चिंता में डूब गये। राम-लक्ष्मण भयंकर राक्षसों से कैसे लडेंगे? तब गुरु वशिष्ठ ने समझाया.....? राजन! चिन्ता न करो। आपके पुत्र बड़े प्रतापी हैं। विश्वामित्र राम-लक्ष्मण को साथ लेकर चल दिये। जंगल में ताड़िका राक्षसी से सामना हुआ। राम ने एक ही बाण से उसे यमपुर पहुँचा दिया। आश्रम में पहुँच विश्वामित्र यज्ञ करने बैठे। तभी मारीच और सुबाहु दूसरे राक्षसों के साथ वहाँ आ गये और उत्पात मचाने लगे। राम-लक्ष्मण ने सुबाहु और दूसरे राक्षसों को मार दिया। मारीच को तीर से ऐसा उछाला कि सागर तट पर जाकर पड़ा। यज्ञ पूरा हुआ।

विश्वामित्र दोनों भाइयों को साथ ले आगे चले। रास्ते में पत्थर की एक शिला पड़ी थी। वह गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या थी जो ऋषि के शाप से शिला बन गई थी। राम ने चरण से उस शिला को छू भर दिया। छूते ही वह फिर अहिल्या बन गई। विश्वामित्र दोनों भाइयों को ले राजा जनक की नगरी मिथिलापुरी पहुँचे। राजा जनक की पुत्री थी सीता। उस दिन उसका स्वयंवर था। बहुत से राजा भाग लेने आये थे। राम-लक्ष्मण भी थे। बीचों बीच शिवजी का धनुष रखा था। एक-एक कर सबने जोर लगाया किन्तु तानना तो दूर, धनुष कोई हिला न सका। तभी राम उठे। धनुष उठाकर उसकी डोरी इतनी जोर से खींची कि धनुष के दो टुकड़े हो गये। सीता जी ने राम के गले में वरमाला डाल दी। यह खबर अयोध्या

पहुँची। राजा दशरथ बहुत प्रसन्न हुए। बारात लेकर मिथिला आये। धूमधाम से राम का विवाह सीता के साथ हो गया। राज परिवार में तीन राजकुमारियाँ और थीं। उनके साथ भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न के विवाह भी हो गये।

राजा दशरथ वृद्ध हो चले थे। उन्होंने एक दिन मंत्रियों से सलाह की। राम को आज गद्दी सौंप मैं तपस्या करने जाना चाहता हूँ। हर कोई कह उठा.....? आपने ठीक ही सोचा। यही रघुकुल की रीति है। राम के तिलक की घोषणा सुम कैकई की दासी मंथरा जल भुन गई। उसने कैकई को भड़काया। राम राजा बन गये तो कौशल्या का मान बढ़ जायेगा। तुम राजा से अपने दोनों वरदान माँग लो। एक वरदान में भरत को राजगद्दी और दूसरे में राम को चौदह वर्ष का वनवास। कैकई ने दशरथ से दोनों वरदान माँगे। बहुत समझाने पर भी न मानी। राम को बन जाना पड़ा। उनके साथ सीता और लक्ष्मण भी गये। दशरथ राम का वियोग न सह सके। उनकी मृत्यु हो गई। राजमहल में शोक छा गया।

भरत और शत्रुघ्न अपनी ननिहाल में थे। उन्हें बुलाने दूत भेजा गया। राम-सीता और लक्ष्मण अपनी वन यात्रा में श्रृंगवेरपुर पहुँचे। वहाँ से उन्हें गंगा पार करनी थी। केवट नाव ले आया। राम नाव पर चढ़ने लगे तो केवल बोला.....? पहले चरण धो लूँ। तभी बैठना। क्या पता आपके चरण छूकर मेरी नाव भी नारी बन जाये। फिर चित्रकूट में पहुँचे राम-लक्ष्मण ने सुन्दर पर्णकुटी बनाई। तीनों वहाँ रहने लगे।

इधर भरत ननिहाल से लौटे। माँ से सारी बात पता चली। वह दुःख से रोने लगे। राम जैसे भाई से अलग हो कर मैं नहीं रह सकता। मैं उन्हें मनाकर वापिस लाऊँगा। भरत के साथ पूरा राजपरिवार, मंत्री, सभासद आदि राम से मिलने चल पड़े। सभी सवारियों पर थे मगर भरत-शत्रुघ्न पैदल ही चल रहे थे। चित्रकूट में राम-भरत मिलन हुआ। सभी ने राम से लौटने के लिये कहा मगर राम अपने वचनों से नहीं फिरे तब भरत राम की खड़ाऊँ सादर सिर पर रखकर दल-बल सहित अयोध्या लौट आये। अब राम-सीता और लक्ष्मण के साथ पंचवटी पर जाकर रहने लगे।

एक दिन रावण की बहन सूपनखा वहाँ आई। सुन्दर रूप बनाये हुए थी। लक्ष्मण ने राम का इशारा पा उसके नाक कान काट दिये। नाक कान कटते ही सूपनखा ने भयंकर रूप धारण कर लिया। वह भागकर अपने भाई खर-दूषण के पास गई। दोनों ने सेना ले राम पर हमला कर दिया। लक्ष्मण सीता को ले दूर चले गये। अकेले राम ने ही उन दोनों को मार गिराया। सूपनखा रावण के पास गई। बहन की हालत देख और भाइयों का मरना सुन रावण क्रोध से गरज उठा। तू घर जा मैं उन तपस्वियों से बदला लूँगा। रावण के कहने पर उसका मामा मारीच सोने के मृग का रूप रख कर राम की कुटिया के बाहर घास चरने लगा। सीता राम से बोली मुझे यह मृग लाकर दे दो। राम धनुष-बाण ले मृग के पीछे दौड़े। दूर चले गये। बाद में लक्ष्मण भी एक रेखा खींच राम की खोज में चले गये। सीता अकेली रह गई। तभी साधू का भेष बना रावण वहाँ आया। भिक्षा माँगी। सीता भिक्षा देने आई। जैसे ही रेखा पार की, रावण ने उन्हें जबरदस्ती अपने उड़ने वाले रथ में बैठा लिया और लंका ले आया।

राम-लक्ष्मण वापिस आये। सीता को कुटिया में न पा दुःखी हो उठे। इधर-उधर ढूँढने लगे। तभी घायल पक्षी जटायु उन्हें मिला वह बोला...? मैं रावण से लड़ा था, किन्तु वह मुझे घायल कर सीता जी को ले गया। सीताजी को खोजते हुए राम-लक्ष्मण पम्पापुर के निकट पहुँचे। वहाँ का राजा सुग्रीव था। हनुमान जी ने सुग्रीव से राम की मित्रता कराई। सुग्रीव बोला .....? मेरा बड़ा भाई बाली मुझे सताता है। मैं उसका वध करूँगा। बाली और सुग्रीव का घोर युद्ध हुआ। राम ने वृक्षों की आड़ से तीर चलाकर बाली को मार, राज्य सुग्रीव को दिया। सुग्रीव ने भालुओं और बानरों को सीताजी को खोज के लिये भेजा।

सभी वानर समुद्र तट पर पहुँचे। लंका समुद्र पार थी। हनुमान जी एक छलाँग में समुद्र पार कर लंका जा पहुँचे। वहाँ अशोक वाटिका में सीता जी से मिले। उन्हें राम की अंगूठी दी। सीता उदास थी। रावण को हनुमान जी के आने का पता चला। उसने उन्हें पकड़ लाने के लिये राक्षसों को भेजा, मगर हनुमान जी ने उन्हें मार भगाया। अन्त में मेघनाद हनुमान

जी को पकड़कर ले आया । रावण ने अपने मंत्रियों की सलाह मान हनुमान जी की पूँछ में तेल में भीगा कपड़ा बंधवाया और आग लगवा दी । हनुमान जी ने जली पूँछ से लंका जलानी शुरू कर दी । देखते-देखते सारी लंका जल उठी । हनुमान जी ने सागर में पूँछ की आग बुझाई और लौट आये ।

इसी बीच रावण ने क्रोध में आकर अपने भाई विभीषण को लंका से निकाल दिया । वह राम की शरण में आया । राम ने उसे अभयदान दिया । राम ने लंका पर चढ़ाई की तैयारी शुरू कर दी । भगवान शंकर की पूजा की । नल-नील ने समुद्र पर पत्थरों का पुल बनाया । राम और रावण की सेना के बीच घमासान युद्ध होने लगा । इसी युद्ध में मेघनाद की शक्ति से लक्ष्मण बेहोश हो गये । हनुमान जी द्रोणाचल पर्वत से संजीवनी बूटी लाये । उससे लक्ष्मण की मूर्छा दूर हो गई । दूसरे दिन युद्ध में राम ने रावण के भाई कुम्भकरण को मार गिराया । रावण का बलवान बेटा मेघनाद भी लक्ष्मण के हाथों मारा गया । राम-रावण का भयंकर युद्ध हुआ । आकाश में देवता भी इस दृश्य को देख रहे थे । अन्त में राम के बाणों से रावण मारा गया । राम ने हनुमान, सुग्रीव और लक्ष्मण को लंका भेजा । वे आदर सहित सीता जी को ले आये । विभीषण को राम ने लंका का राजा बना दिया ।

राम-सीता, लक्ष्मण और उनके साथ हनुमान, विभीषण, सुग्रीव और अंगद आदि पुष्पक विमान में बैठ अयोध्या की ओर चल पड़े । राम ने अयोध्या में प्रवेश किया तो सारी अयोध्या आनन्द सागर में गोते खाने लगी । सबके हृदय के दीप जल गये ।

**बोलो . . . . . ? "सियापति रामचन्द्र की जय"**

◆ ◆ ◆

# रामायण का सार

## दशरथ का पुत्र मोह

### (राम जन्म लीला से)

**दशरथ :** ठहरिये मुनिवर ! कहाँ जाते हो ?

**विश्वामित्र :** जहाँ न्याय होता है ।

**दशरथ :** मैं न्याय करूँगा ।

**विश्वामित्र :** आशा नहीं ।

**दशरथ :** मैं दण्ड दूँगा ।

**विश्वामित्र :** विश्वास नहीं ।

**दशरथ :** महाराज ! मेरी भुजाओं में बल है ।

**विश्वामित्र :** कायरों के लिए ।

**दशरथ :** मैं कसम खाता हूँ ।

**विश्वामित्र :** किसकी ?

**दशरथ :** मर्यादा की ।

**विश्वामित्र :** वह तुमसे दूर भाग गई ।

**दशरथ :** न्याय की ।

**विश्वामित्र :** उसे तुम खो चुके ।

**दशरथ :** अपने प्यारे राम की ।

**विश्वामित्र :** देखो ! कहीं बाद में न पछताओ ?

**दशरथ :** मुनिवर ! बोलो ! बोलो ! यह कौन है ? जो आज मेरे हाथों मिटना चाहता है ।

पलट जाये जमीं या टेक, ध्रुव अपनी बदल जाये ।<br>
बजाए शाम का सूरज, सुबह को चाहे ढल जाये ॥<br>
शीतलता पानी से निकले, आग से गर्मी निकल जाये ।<br>
मगर एकदम असम्भव है, इरादा मेरा टल जाये ॥

**विश्वामित्र :** ताड़िका का बेटा मारीच और सुबाहू..... !

**दशरथ :** मुनिवर ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज संध्या तक उन्हें जीता न छोडूँगा ।

**विश्वामित्र :** परन्तु..... ! मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं ।

**दशरथ :** तो फिर..... !

**विश्वामित्र :** मुझे चाहिए राम और लक्ष्मण ।

**दशरथ :** राम और लक्ष्मण ।

**विश्वामित्र :** हाँ ..... ! हाँ ..... ! राम और लक्ष्मण । क्या अपनी कसम को इतनी जल्दी भूल गये ?

**दशरथ :** नहीं..... ! याद है ।

**विश्वामित्र :** तो फिर पूरी करो ।

**दशरथ :** मुश्किल है ।

**विश्वामित्र :** किसलिए ?

**दशरथ :** इसलिए कि वे कपटी हैं और फरेब का युद्ध करते हैं ।

**विश्वामित्र :** और उनको तूने क्या समझ रखा है ?

**दशरथ :** अभी वह नादान बच्चे हैं ।

**विश्वामित्र :** नहीं..... ! वह शेर हैं ।

**दशरथ :** यह हठ है ।

**विश्वामित्र :** तो क्या इंकार है ?

**दशरथ :** सुनना ही चाहते हो तो सुनिए मुनिवर ! अपने मासूम बच्चों को दशरथ आग में झोंकने से लाचार है ।

**विश्वामित्र :** राजन् ! तुझे धिक्कार है ।

**दशरथ :** हे मुनिवर ! दोनों बालक हैं, भोले-भाले नादान निरे ।
रण विद्या नहीं जानते हैं, लड़ने से अभी अन्जान निरे ॥
लो राज, ताज, सम्पत, सेना, यह सब देना दुश्वार नहीं ।
आज्ञा हो तो मैं स्वयं चलूँ, इसमें भी कुछ इन्कार नहीं ॥
हे स्वामी ! सभी समर्पण हैं, जितने साधन शासन के हैं ।
पर प्रभु ! विचार के बचन कहो, सुत चारों चौथेपन के हैं ॥

## राजा जनक की पीड़ा

(धनुष यज्ञ लीला से)

**जनक :** हे देश-२ के राजाओं, हम किसे कहें बलशाली है ।
हमको तो यह मालूम हुआ, पृथ्वी वीरों से खाली है ॥
पहले ख्याल होता ऐसा, तो यह बेबसी नहीं होती ।
हम करते नहीं प्रतिज्ञा यह, तो आज ऐसी हँसी नहीं होती ॥
अब तोड़े अपने प्रण को हम, तो धर्म हानि और लज्जा है ।
पुत्री को कुआरा रहना है, मैं क्या करूँ मेरा बस क्या है ॥
आसरा छोड़ प्रस्थान करो, वह हुआ जो सोचा दाता ने ।
सीता सुकुमारी का विवाह, लिखा ही नहीं विधाता ने ॥

**लक्ष्मण :** गुरूदेव ! भ्राता ! दीजिये आज्ञा, अब सुना जाता नहीं ।
क्षत्रिय के सामने यूँ कहें, क्या दिल जला जाता नहीं ॥
घर बुला कर इस तरह, अपमान करते हैं ।
ऐसी सभा के बीच, क्यों न बज्र गिरते हैं ॥
रघुवीर रामजी के होते, अनुचित वाणी कह डाली है ।
ये शब्द हृदय में चुभते हैं, पृथ्वी वीरों से खाली है ॥
अभिमान त्याग कर कहता हूँ, आदेश आपका पाऊँ मैं ।
तो धन्वा की क्या है बिसात, सारा ब्रह्माण्ड उठाऊँ मैं ॥

⇔

# राम की मर्यादा

## (दशरथ प्रतिज्ञा लीला से)

**राम :** आज्ञा माँ !

**कैकई :** बेटा ! तुम्हें रघुकुल की आन को निभाना होगा ।

**राम :** मगर पिताजी ..... !

**कैकई :** ये घबड़ा रहे हैं ? बेटा ! महाराज ने देवासुर संग्राम में दो वर देने का वचन दिया था जिसे आज पूरा करने में महाराज घबड़ाते हैं ।

**राम :** यदि ऐसा है तो वे अपनी कीर्ति को मिटाते हैं ।

**कैकई :** धन्य हो राम !

**राम :** आज्ञा माताजी !

**कैकई :** बेटा ! तुम्हें राजगद्दी छोड़कर वनों को जाना होगा।

**राम :** अहोभाग्य ! राम प्रण को निभाए। सुख-दुख में धर्म से गिरने न पाये।

**कैकई :** बेटा ! इस समय मैं तुझे 'मर्यादा पुरुषोत्तम राम' की पदवी देती हूँ।

तेरी मर्यादा के चर्चे होंगे हर जाँ बयाँ।
गाथा गायेगी तेरी, जगत की हर जवाँ।
माता के आशीष को, कोई मिटा सकता नहीं।
नाम तेरा जगत से, कोई हटा सकता नहीं।

⇔

# भरत का भ्रात प्रेम

## (दशरथ मरण लीला से)

**भरत :** राम ! भैया राम !

दुःख मन और दुःखी हृदय पर, अब करुणा करो स्वामी।
शरण में आ पड़ा हूँ मैं, मेरी रक्षा करो स्वामी ॥

**राम :** दुःखी क्यों इस तरह होते हो, धीरज़ तो धरो भाई।
पड़ा है कष्ट क्या तुम पर, जरा वर्णन करो भाई ॥
बताओ शोक क्या तुमको, भरत कितने सताये हो।
दुःखी होकर भला किस वास्ते, जंगल में आये हो ॥

**भरत :** हे रघुनंदन ! रघुकुल भूषण, रघुपति, रघुनायक, रघुराई।
छोटे आरत शरणागति की, गहिए यह बाँह बड़े भाई ॥
जो ज्येष्ठ अवध के राजा हैं, वे चलें अवध का राज्य करें।
शत्रुघ्न सहित हम दोनों भाई, बन में रहने का काम करें ॥

**वशिष्ठ :** बेटा भरत ! राम अपने मार्ग से कभी भी हटने वाले नहीं हैं इसलिए इनकी आज्ञा का पालन करो और सावधान होकर अयोध्या लौट चलो।

**भरत :** अच्छा भ्राता जी ! यदि आपकी और गुरुदेव की यही आज्ञा है तो आप मुझे अपनी खड़ाऊँ दे दीजिये। मैं इनसे

अयोध्या के राज सिंहासन को सजाऊँगा और स्वयं संन्यासी बनकर जीवन बिताऊँगा।

राम नहीं तो राम की, चरण पाद ही मंजूर हैं ।
राम की हो आज्ञा, तो भरत फिर मजबूर हैं ॥
राम के अनुराग में, अब भरत संन्यासी बना ।
बास नगरी में करूँगा, किन्तु बनवासी बना ॥

किन्तु प्रभो ! याद रखना ..... ! यदि आपने चौदह बरस में एक दिन भी ज्यादा लगाया तो भरत को जिन्दा न पायेंगे।

**वशिष्ठ :** धन्य हो भरत ! तुम धन्य हो। तुम दोनों साक्षात धर्म के अवतार हो।

एक वो हैं जो मर जाते हैं कट कट राज पर ।
एक ये हैं जो, लगा देते हैं ठोकर ताज पर ॥

⇔

# लक्ष्मण का आदर्श

## (सीता हरण लीला से)

**सीता :** लक्ष्मण ! लक्ष्मण ! जाकर देखो, रघुराई तुम्हें टेरते हैं ।
भाई के थके हुए बाजु, भाई की बाट हेरते हैं ॥
भगवान न जाने अपने सुख, कितने कष्टों के मुख में हैं ।
लक्ष्मण ! इसमें संदेह नहीं, प्राणेश इस समय दुःख में हैं ॥

**लक्ष्मण :** सकल संसार के संकट, जो क्षण में दूर करते हैं ।
पड़ेगा कष्ट क्या उन पर, जो सबके कष्ट हरते हैं ॥
मेरा इस समय धर्म है यह, रहूँ आपकी रक्षा पर ।
सर्वस्व निछावर है मेरा, अपने भाई की आज्ञा पर ॥

**सीता :** बस ! अब मैं जान गई, कि स्वारथ का तू भाई है ।
तेरे बन आने की मैंने, सब समझ ली चतुराई है ॥
लेकिन याद रख....? कपटी....! नीच....!
ख्याल तेरा है जिधर, वह बात हो सकती नहीं ।

जीते जी सीता तेरी, नारि हो सकती नहीं ॥

**लक्ष्मण :** नहीं..... ! माँ..... ! नहीं..... !
आँखें ये फूट जायें, यदि बद नजर करूँ ।
हो नरकबास दास का, चिन्तन अगर करूँ ॥
श्रद्धा है दिल में आपकी, जगदम्बे मान के ।
चरणों को पूजता हूँ, माँ सुमित्रा के जानके ॥

**(राम-सुग्रीव मित्रता लीला से)**

**राम :** वैदेही की सुधि नहीं मिली, तो तेरा मिलना निष्फल है ।
लक्ष्मण ! तुम भी आगे आओ, देखो तो सीता का कुँडल है ।

**लक्ष्मण :** मैंने तो चरण निहारे हैं, देखे माता के कान नहीं ।
मैं तो बिछुओं का सेवक हूँ, कुँडल की पहिचान नहीं ॥
सिर झुकाता था सदा, चरणों में उनके नाथ मैं ।
कुछ पता मुझको नहीं, क्या कान में क्या हाथ में ॥

**हनुमान :** हद नहीं मान की, और ज्ञान की सीमा नहीं ।
पास भाभी के रहे, पर कान तक देखा नहीं ॥

⇔

# बाली की नीचता

**(राम-सुग्रीव मित्रता लीला से)**

**बाली :** होकर सुकंठ के संरक्षक, तुमने ही उसे उबारा है ।
इन वृक्षों के पीछे छिपकर, क्या मुझे तुम्हीं ने मारा है ॥
बैरी को छल से वध करना, है शूरवीर का कर्म नहीं ।
छुपकर जो मेरा प्राण लिया, यह रघुवंशी का धर्म नहीं ॥

**राम :** तूने वर ऐसा माँगा था, प्रत्यक्ष न मारा जायेगा ।
सम्मुख लड़ने वाले का, आधाबल तुझमें आ जायेगा ॥
बरदान ब्रह्मा का नष्ट करें, ऐसा न स्वभाव हमारा है ।
बस ! इन्हीं विचारों से हमने, छुपकर के तुझको मारा है ।

**बाली :** सुग्रीव हमारा भाई है, भाई-भाई हैं हम दोनों ।
समदर्शी की तो नजरों में, चाहिए एक ही सम दोनों ॥

सुग्रीव मित्र है बालि शत्रु, यह कैसा न्याय विलक्षण है ।
रघुकुल के नायक उत्तर दें, वध करने का क्या कारण है।

**राम :** कन्या, भगिनी, सुत की पत्नी, या छोटे भाई की नारी ।
जो इन्हें कुदृष्टि देखता है, वध के है योग्य दुराचारी ॥
सुग्रीव अनुज की भार्या को, तूने अपने घर में डाला है ।
इस कारण हमने बाणमार, तुझको समाप्त कर डाला है ॥

# स्तुति

(श्री राधाकृष्ण पचौरी अवागढ़ वालों के सौजन्य से)

**॥ चौपाई ॥**

मंगल भवन अमंगल हारी । द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी ॥

होते तुम्हारे काम सारे, गूढ़ भेदों से भरे ।
हृदयस्थ जो कुछ भी कराते, मैं वही करता हरे ॥
अनुचित उचित के ज्ञान को, कुछ भी नहीं मैं जानता ।
जो प्रेरणा करता विमल मन, मैं उसी को ही मानता ॥
आकारहीन तथापि तुम, साकार सन्तत सिद्ध हो ।
सर्वस्व होकर भी अहो, तुम प्रेमवश प्रसिद्ध हो ॥
पाकर तुम्हें फिर और कुछ, पाना न रहता शेष है ।
पाता न जब तक जीव तुमको, भटकता अवशेष है ॥
जो जन तुम्हारी चरण रज में, असल मधु को जानते ।
वे मोक्ष की भी कर अनिच्छा, तुच्छ उसको मानते ॥
कर्त्ता तुम्हीं, भर्त्ता तुम्हीं, हर्ता तुम्हीं हो सृष्टि के ।
सारे पदारथ दयानिधि, फल हैं तुम्हारी दृष्टि के ॥
हे ईश, बहु उपकार तुमने, सर्वदा मुझ पर किये ।
उपहार प्रत्युपकार में, क्या दूँ तुम्हें इसके लिये ॥
जयपूर्ण पुरुषोत्तम जनार्दन, जगन्नाथ जगत्पते ।
जय-जय विभो ! मंगलमते, मायापते ! सीतापते ॥

◆ ◆ ◆

# श्री रामावतार कथा प्रसंग
## (संक्षिप्त कथा)

गोस्वामी तुलसीदासजी कृत 'रामचरितमानस' में श्री रामावतार के चार हेतु बतलाये गये हैं :—

१. ऋषिशाप से जय और विजय के रावण-कुम्भकरन होने पर।

२. जलन्धर के रावण होने पर।

३. नारदजी के शाप से शिव गणों के रावण-कुम्भकरन होने पर।

४. मनु की तपस्या और भानु प्रताप के अभिशप्त होकर रावण के रूप में जन्म लेने पर।

परन्तु श्री रामावतार के अनेक हेतु हैं जो वर्णन नहीं किये जा सकते। मानस में देखिये.....

**॥ चौपाई ॥**

राम जन्म कर हेतु अनेका । परम विचित्र एक ते एका ॥

फिर भी मानस में चार हेतुओं का वर्णन, केवल इसलिये हुआ है कि सतीजी को 'रामस्वरूप' में जो संशय हुआ था उसका समाधान हो जाय। सतीजी को संशय था। मानस में देखिये.....?

**॥ दोहा ॥**

ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद ।<br>
सो कि देह धर होइ नर जाहि न जानत बेद ॥

**॥ चौपाई ॥**

बिनु जो सुर हित नर तनु धारी । सोउ सर्वग्य जथा त्रिपुरारी ॥<br>
खोजइ सो कि अग्य इव नारी । ग्यान धाम श्रीपति असुरारी ॥

कहने का मतलब यह है कि सर्वव्यापक निर्गुण ब्रह्म तो मनुष्य का अवतार ले नहीं सकते और सगुण ब्रह्म बैकुण्ठनाथ भगवान विष्णु ने यदि अवतार लिया होता तो उनमें ऐसी अज्ञानता कैसे आई जो स्त्री के विरह में कातर होकर घूमते। वे तो सब कुछ जानने वाले हैं। इस संशय के समाधान के लिये जय-विजय और जलन्धर के हेतुओं से बैकुण्ठनाथ का बोध कराया गया है। नारद शाप से क्षीर शायी भगवान विष्णु का और मनु

और भानु प्रताप के हेतु से व्यापक ब्रह्म का रामावतार होना सिद्ध कर दिया गया है ।

प्रत्येक ब्रह्माण्ड में एक-एक सृष्टि के पालन के लिए हरि के अंसभूत त्रिदेवगत (ब्रह्मा-विष्णु-महेश) रहा करते हैं । मानस में देखिये .....?

॥ चौपाई ॥

बिधि हरि हर तप देखि अपारा । मनु समीप आए बहु बारा ॥

इसी प्रकार भारद्वाज ऋषि भी याज्ञबल्क्य मुनि से प्रश्न करते हैं । रामु कबन प्रभु पूछऊँ तोही ?

प्रश्न यह है कि राम एक हैं या अनेक इसका उत्तर याज्ञवल्क्य मुनि ने शिव-पार्वती संवाद उपस्थित करके दिया है । कथा इस प्रकार है :—

एक बार त्रेतायुग में भगवान शंकर अपनी प्रिया सती को साथ ले अगस्त्य ऋषि के आश्रम में पहुँचे । वहाँ राम कथा सुनकर मुनि को भक्ति का उपदेश देकर उन्होंने कैलाश पर्वत की ओर प्रस्थान किया । उस समय (उस कल्प का) रामावतार हो चुका था और भगवान राम वन में श्री सीता हरण के कारण विरह विकल से यहाँ-वहाँ वृक्ष-लता आदि से सीता का पता पूँछते फिर रहे थे । उसी मार्ग से सती के साथ शिवजी जा रहे थे । उनका अपने इष्टदेव का दर्शन हुआ तब अत्यन्त हर्षित होकर "जय सच्चिदानन्द जग पावन" कहकर दूर से ही प्रणाम किया । बुरा समय जानकर वे उनके पास न जा सके । सती को इस अवसर पर संदेह हुआ कि सर्वज्ञ शिव ने इस नृपसुत को सच्चिदानन्द कहकर क्यों प्रणाम किया ? उनके हृदय में यह शंका उठी कि सच्चिदानन्द अर्थात् व्यापक ब्रह्म अज-अकल-अनीह-अभेद है । वह नर तन क्यों धारण कर सकते हैं ? यदि वे श्री विष्णु भगवान होते तो वे अज्ञानी की तरह व्याकुल हो नारी को क्यों खोजते फिरते ? उनसे तो कुछ भी छिपा नहीं है । इधर भगवान शिवजी भी सर्वज्ञ हैं अर्थात् सब कुछ जानते हैं। इनका कथन भी मिथ्या नहीं हो सकता ।

हाँलाकि सती ने अपने की इस दुविधा को प्रगट नहीं किया परन्तु अर्न्तयामी शिवजी ने सब जान लिया और वे इसका समाधान इस प्रकार

करने लगे। हे सती ! जिन श्री रघुनाथजी की कथा अगस्त्य रिसि ने सुनाई है तथा जिनकी भक्ति का उपदेश मैंने उनको दिया है वह मेरे इष्टदेव यही श्रीराम हैं। जिनका मुनि-धीर-योगी सदा ध्यान करते हैं जिनके देह धारण करने को असम्भव समझकर तुम मन ही मन तर्क कर रही हो तथा जिनके सम्बन्ध में तुम्हें अज्ञानी की तरह नारी खोजने का संदेह हो रहा है। यह रघुकुल राम वही व्यापक ब्रह्म हैं। यही भगवान विष्णु हैं। मेरे प्रभु ने अपनी लीला से ही अपने भक्तों के हेतु यह अवतार धारण किया है।

इस समाधान से सती को बोध नहीं हुआ। भगवान शंकर ने हरिमाया की प्रबलता देखकर सती को खुद परीक्षा लेने की आज्ञा दी। आज्ञा पाकर सती परीक्षा लेने चलीं और सीताजी का रूप बनाकर श्रीराम के सामने आती हुई उन्हें रास्ते में मिलीं। सब कुछ जानने वाले भगवान राम अपने मायाबल को देखकर हँसे और हाथ जोड़कर प्रणाम करके सती से पूँछने लगे कि आज भगवान शंकर कहाँ हैं ? आप अकेली वन में क्यों फिर रही हैं ?

इस प्रश्न से ही भगवान ने सती पर यह साफ-साफ जाहिर कर दिया कि तुम मुझे अज्ञानी समझने का जो तर्क कर रही हो सो वह बेकार है। मैं ही सर्वज्ञ विष्णु हूँ। मेरे ही अवतार के बारे में शिवजी ने तुमको उपदेश दिया है। भगवान ने यह इशारा बड़ी गूढ़ता से दिया। स्पष्ट करने से तो लीला का स्वार्थ ही नष्ट हो जाता। इसीलिये तो आप शिवजी के पास नहीं पधारे थे। क्योंकि "गएँ जान सबु कोई" और इसीलिए यहाँ पिता के साथ अपना नाम लेकर सती को प्रणाम किया। हाँलाकि भगवान के इन प्रश्नों से कि भगवान शंकर कहाँ हैं ? अकेली वन में क्यों फिरती हो ? उनकी अज्ञानता ही झलकती है परन्तु ऐसी बात नहीं है। वह सर्वज्ञ हैं। "पूछत जान अज्ञान जिमि" भगवान के बचन सुनकर सती को अत्यन्त संकोच हुआ। और वह भयभीत होकर चिन्ता करती हुई शिवजी के पास चलीं परन्तु मन में बिचार करने लगीं कि शिवजी के पास पहुँचकर मैं क्या जवाब दूँगी ? इधर भगवान राम ने जब उन्हें बहुत दुःखित देखा तो रास्ते में अपने चर्तुभुज रूप का साक्षात्कार कराकर अपना प्रभाव दिखलाया।

मानस में देखिये.....।

॥ चौपाई ॥

सती दीख कौतुक भग जाता । आगें रामु सहित श्री भ्राता ॥
फिरि चितवा पांछे प्रभु देखा । सहित वंधु सिय सुन्दर वेष ॥

सती मार्ग में जिधर देखती हैं वहीं भगवान मौजूद हैं । त्रिदेव-ब्रह्मा, विष्णु-महेश चरण वन्दना कर रहे हैं । सभी देवता विभिन्न रूपों में सेवा कर रहे हैं । इसके अलावा चराचर जीव अनेकानेक प्रकार के अलग-२ दीख पड़े परन्तु श्रीराम सब जगह एक ही दिखाई दिये ।.....

"राम रूप दूसर नहिं देखा" इस चरित्र से श्री रघुनाथजी ने यह दर्शाया है कि मैं एक हूँ तथा मैं ही हर जगह व्याप्त हूँ। व्यापक ब्रह्म के नर देह धारण कर नर होने में जो तुम्हें संदेह हुआ था सो मिथ्या है । शिवजी ने जिस व्यापक ब्रह्म का बोध कराया था वह व्यापक ब्रह्म मैं ही हूँ ।

इस आश्चर्यमय अलौकिक दृश्य ने सतीजी के इस पहले वाली चिन्ता के दारुण दाह को कि "जाकर शिवजी को क्या कहूँगी" एक दम मिटा दिया । वह भगवान की इस लीला को देखकर भय से काँप उठीं और तुरन्त बेसुध-सी हो नेत्र मूँदकर वहीं बैठ गईं । कुछ देर बाद आँख खोलकर देखा तो कहीं कुछ भी नहीं है फिर वह बारम्बार श्री भगवान को सिर नवाकर शिवजी के पास गईं और डर के कारण उनसे सत्य बात छिपा ली । मानस में देखिये.....।

॥ चौपाई ॥

कछु न परीछा लीन्हि गोसाइं । कीन्हि प्रनामु तुम्हारिहि नाईं ॥

परन्तु अर्न्तयामी शिवजी ने सब जान लिया और सती के कर्म को भक्ति विरुद्ध समझकर मन ही मन जन्म भर के लिये सती का त्याग कर वे लम्बी समाधि में बैठ गये । सती ने दुःख से कातर हो करुणा निधान श्री रघुनाथजी को याद कर प्रार्थना की कि "छुटउ बेगि देह यह मोरी" और प्रभु की कृपा से अपने पिता दक्ष के यज्ञ में योगाग्नि से शरीर त्यागकर हिमाचल के यहाँ फिर जन्म लिया वहाँ पार्वती नाम पाकर घोर तप से फिर शिवजी को पति रूप में पाया । कुछ समय बाद सती रूप का संदेह भरा

प्रश्न शिवजी के सामने फिर रखा परन्तु इस बार क्षमा माँगते हुए प्रश्न किया कि हे प्रभो ! मुनिगण श्री रघुनाथजी को अनादि ब्रह्म कहते हैं। शेष-शारदा-वेद-पुराण आदि सब उनका गुणगान करते हैं। आप भी दिन-रात आदर के साथ राम नाम का जप किया करते हैं। वह राम यही अवधराजकुमार श्रीराम हैं। राजकुमार हैं तो वे ब्रह्म कैसे हैं? एक ओर उनके "नारि बिरहँ मति मोरि" के चरित्र को देखकर और दूसरी ओर उनकी महिमा सुनकर मेरी बुद्धि भ्रम में पड़ गई है। हे नाथ ! वह व्यापक ब्रह्म कौन है? समझाकर कहिए। तब शिवजी मुस्कराकर बोले कि प्रिये ! नारी जाति होती ही शंकालु है। तुम धन्य हो। तुम्हारी शंका को कहने सुनने से सभी का हित होगा। मेरे भ्रम रहित बचनों को सुनो.....?

॥ चौपाई ॥

अगुन अरूप अलख अज सोई। भगत प्रेमवस सगुन सो होई ॥

अर्थात् सर्वव्यापक ब्रह्म ही भक्तों के प्रेमवश होकर सगुण रूप धारण करते हैं। अत: श्री राम व्यापक ब्रह्म हैं। इसे जगत जानता है। वही रघुकुल मणि मेरे स्वामी हैं। तब भगवान शंकर के ऐसे गूढ़ बचन सुनकर पार्वती का सारा भ्रम जाता रहा और श्री रघुनाथजी के चरणों में प्रीति और विश्वास दृढ़ हो गया तो वह भगवान शंकर के चरणों की शरण ग्रहण कर हाथ जोड़कर प्रेमरस से सने हुए बचन बोलीं। हे नाथ ! आपके अमृतमय बचनों से मेरा सारा मोह विषाद मिट गया। मुझे श्री राम स्वरूप का यथार्थ बोध हो गया। अब निश्चय हो गया कि श्री रघुनाथ जी ही "सब उर बासी" व्यापक ब्रह्म हैं। वही विष्णु भगवान हैं। व्यापक ब्रह्म के अवतार लेने तथा भगवान श्रीपति के अज्ञानी होने की शंका मेरे हृदय में थी वह सर्वथा निर्मूल हो गई। अब हे नाथ ! यह समझाकर कहिए कि प्रभु ने मनुष्य का अवतार किस हेतु धारण किया। हाँलाकि शिवजी पहले कह चुके थे कि "भगत प्रेमवस सगुन सो होई" परन्तु पार्वती यह स्पष्ट जानना चाहती हैं कि भगवान ने किस-किस भक्त के प्रेमवश होकर अवतार लिया। शिवजी-पार्वती की इस जिज्ञासा से अत्यन्त प्रसन्न हुए और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए बोले कि हे प्रिये ! भगवान के गुण-नाम-लीला

का पार नहीं। उनकी माया अपरम्पार है और उनके अवतार को पूर्ण रूप से जानना भी सम्भव नहीं तथापि जब-जब धर्म की हानि होती है तब-तब प्रभु विविध शरीर धारण करके संतों का दुःख दूर करते हैं। ऐसा संत-मुनि-वेद और पुराण सब अपनी-अपनी मति के अनुसार कहते हैं। विविध शरीर का मतलब यह है कि मत्स्य, बराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध आदि विभिन्न अवतार धारण करते हैं। शिवजी राम जन्म के रहस्य का उद्घाटन करते हुए कहने लगे। मानस में देखिये रचि महेस निज मानस रखा। पाइ सुसमय शिवा सन भारवा॥

॥ चौपाई ॥

राम जनम के हेतु अनेका। परम विचित्र एक तें एका॥
जनम एक दुइ कहउँ बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी॥
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ। जय अरु विजय जान सब कोऊ॥
विप्र शाप तें दूनउ भाई। तामस असुर देह तिन्ह पाई॥
विजई समर वीर विख्याता। धरि वराह वपु एक निपाता॥
होइ नर हरि दूसरा पुनि मारा। जन प्रहलाद सुजस विस्तारा॥

॥ दोहा ॥

भए निसाचर जाइ तेइ महावीर बलवान।
कुम्भकरन रावन सुभट सुर विजई जग जान॥

॥ चौपाई ॥

मुकृत न भए हते भगवाना। तीनि जनम द्विज बचन प्रवाना॥
एक बार तिन्ह के हित लागी। धरेउ शरीर भगत अनुरागी॥
कस्यप अदिति तहाँ पितु माता। दशरथ कौशल्या विख्याता॥
एक कलप एहि विधि अवतारा। चरित पवित्र किए संसारा॥

शिवजी श्री रामावतार का प्रथम हेतु बताते हैं कि भगवान बैकुण्ठनाथ के जय और विजय नामक दो द्वारपाल थे जिन्होंने सनकादि ब्रह्म-ऋषियों के शाप से हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष नाम से असुर योनि में जन्म लिया। भगवान ने वराह अवतार धारण कर हिरण्याक्ष को मारा और नृसिंह अवतार धारणकर हिरण्यकशिपु का नाश किया तथा अपने

भक्त प्रहलाद के सुयश को संसार में फैलाया। हिरण्यकशिपु और हिरण्याक्ष ही दूसरे जन्म में रावण और कुम्भकरन हुए क्योंकि सनकादि ब्रह्म-ऋषियों ने उन्हें तीन जन्म तक लगातार असुर योनि में उत्पन्न होने का शाप दिया था। अतः भगवान के द्वारा मारे जाने पर भी विप्र शाप के कारण उनकी मुक्ति नहीं हुई। उसी रावण-कुम्भकरन के विनाश के लिए भक्तानुरागी भगवान ने रघुकुलमणि के रूप में अवतार धारण किया।

दूसरे कल्प में रामवतार के बारे में शिवजी बताते हैं कि मानस में देखिए..... ?

**॥ चौपाई ॥**

एक कलप सुर देखि दुखारे । समर जलंधर सन सब हारे ॥
संभु कीन्ह संग्राम अपारा । दनुज महाबल मरइ न मारा ॥
परम सती असुराधिपनारी । तेहि बल ताहि न जितहिं पुरारी ॥

**॥ दोहा ॥**

छलकर टारेउ तासु व्रत प्रभु सुर कारन कीन्ह ।
जब तेहि जानेउ मरम तब श्राप कोपिकर दीन्ह ॥

**॥ चौपाई ॥**

तासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना । कौतुक निधि कृपाल भगवाना ॥
तहाँ जलंधर रावन भयऊ । रन हति राम परम पद दयऊ ॥
एक जनम कर कारन एहा । जेहिं लगि राम धरीनर देहा ॥

शिवजी बताते हैं कि दूसरे कल्प में जब जलंधर राक्षस ने रावण रूप में जन्म लिया तो कृपालु भगवान ने रामावतार धारण किया।

फिर शंकर जी कहने लगे। मानस में देखिये..... ?

**॥ चौपाई ॥**

नारद श्राप दीन्ह एक बारा । कलप एक तेहिं लगि अवतारा ॥

हे प्रिये ! एक कल्प में नारद जी के शाप के कारण भगवान को अवतार लेना पड़ा। यह सुनते ही पार्वती चकित होकर कहने लगीं। हे प्रभो ! देवर्षि नारद तो प्रभु के अनन्य भक्त हैं और परम ज्ञानी हैं। उन्होंने भगवान को शाप क्यों दिया? इस अवसर पर "नारद विष्णु भगत पुनि

ज्ञानी" तथा "का अपराध रमापति कीन्हा" पार्वती जी के इन वचनों से स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें राम स्वरूप का यथार्थ बोध हो गया था तभी तो वह स्वयं विष्णु और रमापति शब्दों का उल्लेख करती हैं नहीं तो उन्हें क्या ज्ञान था कि नारद ने किसे शाप दिया ? वास्तव में पार्वती जी को इसका पूर्णतया बोध हो चुका था कि प्रभु के दोनों स्वरूप निराकार तथा साकार क्षीरशायी विष्णु इन्हीं दोनों से रामावतार होता है। क्योंकि निराकार ब्रह्म को शाप सम्भव नहीं है अतः साकार स्वरूप क्षीरशायी रमापति को ही शाप देना कहा गया है। श्री पार्वती के प्रश्न को सुनकर शिवजी हँसकर बोले कि प्रिये ! प्रभु की माया के आगे न तो कोई ज्ञानी है और न कोई मूढ़ है। श्री रघुपति जिस समय जिसको जैसा बनाते हैं वह उस समय वैसा ही बन जाता है।

कथा इस प्रकार है —

एक बार हिमाचल पर्वत की एक अति सुन्दर गुफा को देखकर नारद जी अति प्रसन्न हुए और वे वहाँ समाधि लगाकर बैठ गये उनके लम्बे समय तक तप करने के कारण इन्द्र को भय हुआ कि ये मुनि कहीं मेरा इन्द्रासन न छीन लें। अतः भयभीत इन्द्र ने श्री नारद जी के तप को भंग करने के लिए कामदेव को उसकी सेना सहित भेजा। कामदेव ने वहाँ पहुँचकर अपनी सारी कलायें दिखलाईं परन्तु नारद जी पर उसकी एक न चली। तब डरकर उसने श्री नारद जी के चरणों में प्रणाम किया और उनसे क्षमा माँगी। नारद जी को उस पर कुछ भी रोष न हुआ अपितु उन्होंने उसे प्रिय वचनों से संतुष्ट किया। तब कामदेव ने इन्द्र सभा में आकर अपनी सारी करनी तथा नारद जी की महिमा को स्पष्ट रूप से सुनाया जिसे सुनकर सब देवगण देवर्षि नारद जी को तपोनिष्ठा प्रर मुग्ध हो गये। इधर कामदेव पर विजय प्राप्त कर नारद जी को अहंकार हो गया और अपने इस पराक्रम को प्रसिद्ध करने के लिये शिवजी के पास पहुँचे। शिवजी उनकी निष्ठा पर अत्यन्त प्रसन्न हुए परन्तु उनके हित के लिए कहा कि हे नारद जी ! यह प्रसंग तुम लक्ष्मीपति भगवान विष्णु से भूलकर भी मत कहना। मानस में देखिये ..... ।

**॥ दोहा ॥**

संभु दीन्ह उपदेश हित नहिं नारदहि सोहान ।
भारद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान ॥

**॥ चौपाई ॥**

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई ।करै अन्यथा असनहिं कोई ॥

अतः अहंकार ने मुनि को चैन नहीं लेने दिया । वे क्षीर सागर पहुँच ही तो गये । हाँलाकि शिवजी ने उन्हें मना किया था फिर भी ..... ?

**॥ चौपाई ॥**

अति प्रचंड रघुपति कै माया । जेहिं न मोह उसको जग जाया ॥

भगवान विष्णु ने मुनि का स्वागत किया और पूछा कि हे मुनिराज ! बहुत दिनों में आपने दया की है कहिए कुशल तो हैं । फिर क्या था नारद जी अपनी काम विजय की कथा भगवान को सुनाने लगे । पूरी कथा सुनकर गर्व हरण श्री भगवान ने कहा । हे नारद जी ! भला आप जैसे ज्ञानी को मोह कैसे हो सकता है ? नारद जी ने अभिमान पूर्वक उत्तर दिया कि आपकी दया से ऐसा ही है । भगवान करुणानिधान ने देखा कि नारद के हृदय में गर्व का महान् वृक्ष उग रहा है इसे जल्द निर्मूल कर दिया जाय तभी ठीक है । क्योंकि सेवक का हित करना हमारा प्रण है । बस श्रीपति ने निजमाया को प्रेरणा कर बैकुण्ठ से भी बढ़कर एक सुन्दर नगर की रचना मार्ग में कर दी । नारद जी ने क्षीर सागर से लौटते हुए उस नगर में प्रवेश किया । और वे वहाँ के राजा शीलनिधि के दरबार में पहुँचे । राजा के एक अत्यन्त सुन्दर कन्या थी जिसका नाम विश्व मोहिनी था उसे बुलाकर राजा ने मुनि को उसका हाथ देखने को कहा । मुनि उसका रूप देखते ही सारा वैराग्य भूल गये । बड़ी देर तक एकटक देखते ही रह गये और उसके शुभ लक्षणों को देख अपने मन में बिचारने में लगे कि इस मौके पर यदि मेरा परम सुशोभित रूप हो जाय तो यह कन्या मुझे ही वर लेगी । श्री हरि हमारे परम हितैषी हैं । उन्हीं से सौन्दर्य माँगना चाहिए परन्तु प्रभु के धाम तक जाने में बहुत देर होगी । वे सर्वव्यापक हैं ही । यहीं प्रार्थना करूँ । यह सोचकर उन्होंने मन ही मन श्री हरि का स्मरण कर कहा कि हे हरे !

कृपया यहाँ प्रगट होकर मेरी सहायता कीजिये। भगवान ने तुरन्त प्रगट होकर नारद जी से पूछा कि मुनिवर ! किसलिये याद किया है ? नारद जी उन्हें सारी कथा सुनाकर अपने हित के लिए हरि का रूप माँगा। इस पर दीनदयालु प्रभु हँसकर बोले कि हे मुने ! जिसमें तुम्हारा कल्याण होगा मैं वही करूँगा। परन्तु ये गूढ़ वचन नारद जी की समझ में नहीं आये।

**॥ चौपाई ॥**

मुनि हित कारन कृपा निधाना। दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥

अतः नारद को उनके हित के लिये भगवान ने कुरूप बना दिया परन्तु भगवान की माया ऐसी थी कि वह रूप किसी दूसरे को न जान पड़ा। सबने उन्हें नारद ही जान प्रणाम किया। इस भेद को केवल दो शिव गण जानते थे जो उनकी हँसी उड़ाकर उन्हें चिड़ाने लगे। इसके अलावा नारद जी का यह भयंकर शरीर और बन्दर का सा मुख उस कन्या को भी दीख पड़ता था। अतः उसने इनकी ओर आँखें तक न उठाई। उसी समय नृप का शरीर धारण कर प्रभु खुद वहाँ आ गये। कन्या ने उनको जयमाला पहना दी। नारद जी इससे अत्यन्त व्याकुल हुए। शिव गणों ने उनसे कहा कि जरा शीशे में अपना मुँह तो देख लो। नारद जी ने जाकर जल में अपनी परछाई देखी और बन्दर का सा मुख देखकर अत्यन्त क्रोधित हुए। हरिगणों को शाप दिया कि तुम दोनों जाकर निश्चर कुल में जन्म लो। उन्हीं दोनों ने रावण और कुम्भकरन के रूप में जन्म लिया। उसके बाद फिर जब नारद जी ने जल में अपना मुख देखा तो उन्हें अपना स्वरूप दीख पड़ा। वे अत्यन्त क्रोधित हो लक्ष्मीपति के पास चले और मन में ठान लिया कि या तो उन्हें शाप दूँगा या अपना प्राण त्याग करूँगा। क्योंकि उन्होंने संसार में मेरा बड़ा भारी उपहास कराया। लक्ष्मीपति प्रभु रास्ते में ही मिल गये। उनके साथ रमा और वही राजकन्या थी। भगवान ने पूछा कि मुनि जी ! आप घबड़ाये हुए कहाँ जा रहे हैं ? भगवान के इन वचनों को सुनकर नारद जी का क्रोध भड़क उठा। भगवान की माया के वशीभूत होने के कारण उनका विवेक नष्ट हो गया था। भगवान को बहुत कुछ दुर्वचन कहने के बाद शाप दिया। मानस में देखिये..... ।

**॥ चौपाई ॥**

बंचेहु मोहि जबनिधरि देहा । सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा ॥
कीप आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी । करहिं कीस सहाय तुम्हारी ॥
मम अपकार कीन्ह तुम्ह भारी । नारि विरहँ तुम्ह होब दुखारी ॥

भगवान ने हँसी खुशी भक्त का शाप स्वीकार किया। इस प्रकार नारद जी के शाप के कारण रामावतार की कथा कहकर अब चौथे हेतु की कथा कहते हैं। राजा मनु और उनकी रानी शतरूपा ने चौथेपन में राज्य का भार पुत्र को सौंपकर खुद नैमिषारण्य जाकर गोमती तट पर निवास किया और वहाँ के ऋषियों के बतलाये हुए सब तीर्थों की यात्रा करने के बाद वे दोनों सिर्फ शाक-कन्द और फलाहार पर जीवन निर्वाह करते हुए सच्चिदानन्द ब्रह्म का स्मरण करने लगे और अनुराग पूर्वक "ॐ नमो भगवते वासुदेवायः" इस द्वादश अक्षर मंत्र का जप करते हुए रोजाना श्री वासुदेव के चरण कमलों में चित्त लगाकर और संत समाज में नित्य प्रति जाकर पुराणों का श्रवण करते हुए ऋषि भेष में जीवन बिताने लगे। उसके बाद उनकी निष्ठा ऐसी बढ़ी कि उन्होंने फल-मूलादि को भी त्याग दिया और श्री भगवान की प्राप्ति के लिए परम प्रभु को नेत्रभर देखने की शुभ अभिलाषा से केवल जल आहार पर रहकर ही तप करने लगे। उनका दृढ़ विश्वास था कि जिसके अंश से अनेक ब्रह्मा-विष्णु और शिव (प्रति ब्रह्माण्ड में) उत्पन्न होते हैं। ऐसे प्रभु ही प्रेमवश ही भक्तों के लिए लीला शरीर धारण करते हैं। यदि यह वचन वेदों में सत्य है तो हमारी भी अभिलाषा पूर्ण होगी। अर्थात् प्रभु लीला तनु धारण करके अवश्य ही हमें दर्शन देंगे। इस प्रकार जलाहार पर रहकर तप करके जब उन्हें छः हजार वर्ष बीत गये तब उन्होंने जल भी त्याग दिया और सात हजार वर्ष तक वायु के आधार पर शरीर को धारण कर तप कियो अर्थात् उसे भी छोड़कर दस हजारवर्ष तक निराहार तप किया। इस प्रकार दम्पत्ति ने तेईस हजार वर्ष तक घोर तप किया।

ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों देवता अनेकों बार उनके पास आ वर माँगने का लोभ दे गये परन्तु परमधीर दम्पत्ति तनिक भी विचलित नहीं हुए।

हाँलाकि उनके शरीर में हड्डियाँ ही बाकी रह गई थीं तथापि वे अपने व्रत पर अटल रहे। तब श्री परमधाम वासी सर्वव्यापक भगवान विष्णु उन्हें अपना अनन्य दास जानकर द्रवीभूत हो गये और कृपामृत से सनी हुई परम गम्भीर आकाशवाणी के द्वारा उनसे कहने लगे—वर माँगो-वर माँगो।

"प्रभु सर्वज्ञ दास निज जानी" अर्थात् मनु जी दर्शन चाहते हैं। यह अभिलाषा प्रभु से छिपी नहीं थी परन्तु वे किस लीलातनु का दर्शन चाहते हैं इस विषय में मनु जी के मुख से कहला लेना उचित समझा गया क्योंकि वामन-नृसिंह-वराह-परशुराम-राम-कृष्ण आदि अनेक लीलावतार हैं। इसलिये आकाशवाणी से वर माँगने की बात कही गई। तब मनु जी हृदय से प्रसन्न होकर बोले कि प्रभो ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो ..... ? मानस में देखिये ..... ।

**॥ चौपाई ॥**

जो सरुप बस सिव मन माहीं । जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥
जो भुसुंष्डि मन मानस हंसा । सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥
देखहिं हम सो रूप भरि लोचन । कृपा करहु प्रन तारित मोचन ॥

अर्थात् जो स्वरूप शिवजी के मन में बसता है तथा जिसके लिये मुनि लोग यत्न करते हैं जो काक भुशुंण्डि जी के मन मानस का हँस है और वेद जिसकी सगुण-निर्गुण कहकर स्तुति करते हैं। हे प्रणत के दुःख दूर करने वाले प्रभु ! कृपा करके हमें उसी रघुनाथ रूप से दर्शन दीजिये।

यहाँ शंकर जी के मन में बसने वाले रूप से अभिप्राय "संकर सोई मुरति उर राखी' द्रवउ सो दशरथ अजिर विहारी' आदि से निश्चय हुआ कि वे श्री कौशलानन्दन के रूप में दर्शन चाहते हैं। जिसके लिये मुनि लोग यत्न करते हैं। मानस में देखिये ..... ।

मम हियँ बसहु निरन्तर सगुन रूप श्री राम ।
"शरभंग मुनि" नाथ कौशलाधीश कुमारा "सुतीक्षण मुनि"
यहवर मागँऊकृपानिकेता । बसहु हृदयँ श्री अनुज समेता ॥ 'अगस्त्य ऋषि'

इस प्रकार दम्पत्ति के प्रेम पूरित नम्र तथा मधुर वचन सुनकर क्षीरशायी विष्णु श्रीराम रूप से प्रगट हुए। जिन हरि के लिए उन्होंने तप

करना शुरु किया था वही हरि जब राम रूप लीला तनु में सामने आ प्रगट हुए तब मनोरथ पूर्ण होने पर हर्ष से अपने देह की सुधि भूल गये और भगवान के चरणों में गिर पड़े। तब प्रभु ने उनके सिर पर हाथ फेरकर उन्हें शीघ्र उठा लिया और बोले कि मुझे अत्यन्त प्रसन्न और महादानी जानकर वर माँगो। श्री मनु धैर्य धारण कर अनेक प्रकार स्तुति करते हुए बोले कि हे प्रभो ! आपसे छिपाकर क्या रखूँ। मैं आपके समान पुत्र चाहता हूँ। श्री करुणानिधि ने एवमस्तु कहा और आज्ञा दी कि आप इस समय जाकर अमरपुर में रहें। वहाँ का सुख भोगकर आप कुछ दिन के बाद अवध नृपत होंगे तब मैं तो मैं ही हूँ। अतः इससे स्पष्ट है कि व्यापक ब्रह्म ने ही श्री मनु को वरदान देकर रामावतार धारण किया। अतः साकार तथा निराकार ब्रह्म में कोई भेद नहीं है।

याज्ञवक्ल्य मुनि कहते हैं कि हे भारद्वाज ! भगवान शंकर ने पार्वती से रामावतार का दूसरा एक और हेतु कहा था। कथा इस प्रकार है— कैकेय देश के राजा भानुप्रताप को उसके वैरी राजा कपट मुनि ने धोखा देकर तथा माया रचकर ब्राह्मणों से यह शाप दिला दिया कि वह सपरिवार साल भर में नष्ट होकर राक्षस हो जाय। समय आने पर वही भानुप्रताप रावण हुआ। उसका भाई अरिमर्दन कुम्भकरन हुआ और धर्म रुचि नामक सचिव उसका भाई विभीषण हुआ। इस प्रकार उसके सारे परिवार के लोगों ने घोर निशाचर योनि में जन्म ग्रहण किया। इन तीनों भाइयों ने उग्र तप करके रावण ने मनुष्य और वानर छोड़कर अन्य किसी से न मरने का, कुम्भकरन ने छः माह नींद का व एक दिन जागने का तथा विभीषण ने श्री भगवान की भक्ति का वरदान ब्रह्मा जी से प्राप्त किया। उसके बाद विभीषण तो भजन में लग गया और कुम्भकरन निद्राग्रस्त हो गया परन्तु रावण ने मद में चूर होकर अपने पुत्र मेघनाद आदि को आज्ञा दी कि पृथ्वी से धर्म का लोप कर दो फिर क्या था..... ? मानस में देखिये..... ।

**॥ चौपाई ॥**

अतिसय देखि धर्म कै हानी । परमसमीत धरा अकुलानी ॥

पृथ्वी अधर्म से व्याकुल हो धेनु रूप धारण कर ब्रह्मा जी की शरण में गई। ब्रह्मा जी ने पृथ्वी के साथ-साथ सारे देवताओं को असुरों के अत्याचार से दुःखित होकर कहा कि इसमें मेरा कुछ वश नहीं चल सकता है। हे पृथ्वी ! जिनकी तुम दासी हो वही अविनाशी प्रभु मेरेऔर तुम्हारे दोनों के सहायक हैं। हे धरणि ! तुम धीर धरो। हरि अपने जन का दुःख जानते हैं। वह शीघ्र ही इस दारुण विपत्ति को मिटायेंगे। तब देवताओं ने एकत्रित हो विचरना शुरु किया कि वे श्री हरि कहाँ मिलेंगे ? शिवजी कहते हैं कि हे गिरजा ! मानस में देखिये ..... ।

**॥ चौपाई ॥**

हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना ॥

शिवजी की यह राय कि जो प्रभु श्री बैकुण्ठधाम में रहते हैं तथा जो प्रभु क्षीर सागर में रहते हैं। वही हरि व्यापक भी हैं। जहाँ प्रेम किया जाय वहाँ ही प्रगट हो सकते हैं। यह सुनकर सब प्रसन्न हो गये और ब्रह्मा जी ने आनन्दित हो साधु-साधु कह धन्यवाद दिया। सब देवता प्रेम पुलकित हो स्तुति करने लगे। तब आकाशवाणी हुई कि मैं शीघ्र ही अवध में राजा दशरथ के यहाँ जन्म लूँगा। सब देवता गदगद हुए तथा वानर बनकर मृत्युलोक में आने को सहमत हो गये। शिवजी बोले कि मैंने भी अपने अंश से हनुमान की उत्पत्ति की।

⇔

# पात्र परिचय

## (श्री रामावतार कथा प्रसंग)

### नारद मोह

### पुरुष पात्र

| | |
|---|---|
| १. विष्णु भगवान | २. शिवजी |
| ३. नारद जी | ४. इन्द्र |
| ५. मंत्री इन्द्र | ६. कालादेव |
| ७. कामदेव | ८. गण (दो) शिवजी |

९. ब्रह्मा जी
१०. राजा शीलनिधि
११. राजा (चार)
१२. मंत्री शीलनिधि
१३. पुरवासी (चार)

**स्त्री पात्र**

१. लक्ष्मी जी
२. पार्वती
३. अप्सरा (दो)
४. योगमाया
५. विश्वमोहिनी
६. सखी (दो)

# रावण का अत्याचार

**पुरुष पात्र**

१. राजा मनु
२. ब्रह्मा जी
३. विष्णु
४. शिवजी
५. कपटी मुनि
६. राजा प्रतापभानु
७. ब्राह्मण (चार)
८. रावण
९. कुम्भकरण
१०. विभीषण
११. मंत्री रावण
१२. मय दानव
१३. दूत (रावण)
१४. मेघनाद
१५. सैनिक (तीन)
१६. मुनि (तीन)
१७. इन्द्र
१८. सूर्य
१९. चन्द्र
२०. पवन
२१. वरुण
२२. देवता (चार)
२३. नन्दी
२४. द्वारपाल (रावण)
२५. नारद जी
२६. राजा जनक
२७. मंत्री (जनक)
२८. किसान (चार)

**स्त्री पात्र**

१. रानी शतरूपा
२. शारद

३. मन्दोदरी
४. अप्सरा (दो)
५. पृथ्वी देवी
६. रानी सुनयना
७. सीता जी (बालक रूप में)

### प्रथम दिन

# नारद मोह

## (श्री रामावतार कथा प्रसंग)

### सीन पहला

**स्थान :** क्षीर सागर।

**दृश्य :** भगवान विष्णु शेष शैया पर लेटे हुए हैं। शेषनाग फन फैलाये सिर की तरफ खड़े हैं। लक्ष्मी जी चरण दबा रही हैं। व्यास जी आरती की थाली लिए हुए खड़े हैं।

### पर्दा उठना

### भगवान विष्णु जी की आरती

ओ३म् जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करें॥ ओ३म्...
जो ध्यावै फल पावै, दुख बिन से मनका।
सुख सम्पत्ति घर आवै, कष्ट मिटे तन का॥ ओ३म्...
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी।
तुम बिन और न दूजा, आस करूँ जिसकी॥ ओ३म्...
तुम पूरण परमात्मा, तुम अर्न्तयामी।
पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी॥ ओ३म्...
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्त्ता।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्त्ता॥ ओ३म्...
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राण पती।
किस विधि मिलूँ दयामय, तुमको मैं कुमती॥ ओ३म्...
दीनबन्धु दुख हर्ता, तुम रक्षक मेरे।
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे॥ ओ३म्...

तन-मन-धन, सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ॥ ओ३म्...

**पर्दा गिरना**

**नोटः**—भगवान विष्णु की आरती हर प्लाट से शुरू तथा अन्त में गाई जाये।

## सीन दूसरा

**स्थान :** कैलाश पर्वत।

**दृश्य :** कैलाश पर्वत पर वट वृक्ष के नीचे शिवजी आसन लगाये बैठे हैं। बायीं और पार्वती जी बैठी हुई हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ व्यासः चौपाई ॥**

एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ । तरू बिलोकि उर अति सुख भयऊ ॥
पारवती मल अवसरू जानी । गईं संभु पहिं भातु भवानी ॥
बैठीं सिव समीप हरषाईं । पूरव जन्म कथा चित आई ॥
पति हियं हेतु अधिक अनुमानी । बिहसि उमा बोलीं प्रिय बानी ॥

**पार्वती :** (हाथ जोड़कर) हे भोलेनाथ ! आप जो दिन रात आदर से राम-राम जपा करते हैं। वे राम अयोध्या नरेश के पुत्र हैं या अजन्मा और निर्गुण कोई और राम हैं। प्रभो ! यदि वे राजकुमार हैं तो ब्रह्म कैसे? कामी पुरुष की तरह स्त्री वियोग में जंगल में क्यों भटक रहे थे? उनके ऐसे चरित्र को देखकर और आपके मुख से उनकी महिमा सुनकर मेरी बुद्धि अत्यन्त भ्रमित हो गई है। आप इसका निवारण कीजिये।

**शिवजी :** (मुस्कराकर) प्रिये ! स्त्री स्वभाव होता ही शंकालु है। तुम सती भेष में सब कुछ जानकर भी अन्जान रहीं।

**पार्वती :** स्वामी ! मैंने श्री राम की प्रभुता वन में देखी थी , फिर भी मेरे मन में राम कथा सुनने की रूचि है।

**शिवजी :** (पार्वती के साथ पर्दे से बाहर आते हुए) हे पर्वतराज की

पुत्री ! तुमने श्री रघुनाथ जी की कथा के प्रसंग को पूछा है। वह कथा सम्पूर्ण लोकों को जग पावनी गंगा के समान है। तुम तो भगवान के चरणों में प्रेम करने वाली हो। तुम्हारे इस प्रश्न से संसार का भी भला होगा। प्रिये ! सगुण-निर्गुण में कोई अन्तर नहीं है। भक्तों के प्रेमवश निराकार मनुष्य रूप धारण करता है। अच्छा सुनो.....? एक बार नारद मुनि ने भगवान को श्राप दिया जिससे भगवान को अवतार लेना पड़ा।

**पार्वती :** (अचम्भित होकर) प्रभो पहेली मत बुझाइए। कहीं ऐसा हो सकता है ?

**शिवजी :** क्या नहीं हो सकता ?

**पार्वती :** स्वामी ! नारद जी तो परम विष्णु भक्त हैं। क्या कारण था कि मुनि ने श्राप दिया ? रमापति ने क्या अपराध किया था। हे पुरारि ! यह प्रसंग मुझसे कहिए। मुनि के मन में मोह होना बड़ा आश्चर्यजनक है।

**शिवजी :** (हँसकर) हे पार्वती !

ज्ञानी मूढ़ न कोई जगत में, होनी से सब मिलता है ।
हरि इच्छा के बिना जगत में, पत्ता तक नहीं हिलता है ॥

प्रिये ! देखो.....? अपनी आँखों से भगवान की लीला स्वयं देखो।

**दृश्य :** जंगल। पास में गंगा जी बह रही हैं। जहाँ एक सुन्दर गुहा है।

**पर्दा उठना**

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

हिमगिरि गुहा एक अति पावन । बह समीप सुरसरि सुहावनि ॥
आश्रम परम पुनीत सुहावा । देखि देवऋृषि मन अति भावा ॥

**(नारद जी का गाते हुए प्रवेश। शिव-पार्वती का हट जाना)**

**नारद जी :** (प्रवेश करके) नारायण.....! नारायण.....!! भजि मन

नारायण-नारायण हरी-हरी । (भजि मन .....)

**गाना (फिल्म-बैजू बावरा)**

मन तड़फत हरि दर्शन को आज । हमरे तुम बिन बिगड़े सारे काज ॥
तुम्हारे द्वार का मैं हूँ जोगी । हमारी ओर नजर कब होगी ॥
सुनो ! मेरे व्याकुल मन का राज । मन तड़फत हरि दर्शन को आज ॥
गुरु बिन ज्ञान कहाँ से पाऊँ । दीजो दान हरि गुण गाऊँ ॥
सब मुनिजन पै तुम्हारा राज । मन तड़फत हरि दर्शन को आज ॥

नारायण ..... ! नारायण ..... ! ! अहा ! यह कैसा रमणीक स्थान है? यहाँ की जलवायु और सुगन्धित वातावरण को देखकर मेरा मन प्रभुल्लित हो रहा है । और भगवान का भजन करने की प्रेरणा दे रहा है । मैं यहाँ पर बैठकर भगवान का ध्यान करूँ ।

उमड़ता आ रहा है, ध्यान का उत्साह हृदय में ।
बह उठा प्रेम की गंगा का, एक प्रवाह हृदय में ॥
पवन के स्पर्श से, परमात्मा की याद आती है ।
ध्वनि जलधार की, कानों में उसका गीत गाती है ॥
हजारों पात की जिसकी, कृपा से पार होते हैं ।
हजारों के लिए जिनके, खुले भण्डार होते हैं ॥
हजारों नाम से जिनके, परम सुखधाम होते हैं ।
उन्हीं के ध्यान में अब हम लौलीन होते हैं ॥
नारायण ..... ! नारायण ..... !

**(नारद जी का समाधि लगा लेना)**

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

निरखि सैलसरि बिपिन बिभागा । भयउ रमापति पद अनुरागा ॥
सुमिरत हरिहि श्राप गति बाँधी । सहज बिमल मन लागि समाधी ॥

**पर्दा गिरना**

**सीन तीसरा**

**दृश्य :** इन्द्र सिंहासन पर विराजमान हैं। पास में मंत्री बैठा हुआ है। साथ में कालादेव खड़ा है।

## पर्दा उठना

**अप्सरायें :** (प्रवेश करके झुककर) महाराज की जय हो।
प्यार किया तो डरना क्या, जब प्यार किया तो डरना क्या।
प्यार किया कोई चोरी नहीं की, घुट-२ आहें भरना क्या॥
प्यार किया तो डरना क्या..... !
मौत वही जो दुनियाँ देखे..... !

**(इन्द्रासन का हिलना। गाना बन्द हो जाना)**

**इन्द्र :** (घबड़ाकर) हैं. . . . ! यह क्या? आश्चर्य ! महान् आश्चर्य ! ! आज मेरा सिंहासन क्यों हिलने लगा? अफ़सोस.....?
सम्पदा ! तू किसी को आराम से नहीं बैठने देती।
मोह ! तेरे होते हुए कोई सुखी नहीं रह सकता।
लोभ ! तू न्याय को आँखों से अन्धा बना देता है।
स्वार्थ ! तू दयालु -हृदय को बज्र और कलुषित बना डालता है।

**मंत्री :** (खड़ा होकर दुःखी मन से) महाराज ! आपके हृदय को दुःखी देखकर सेवक का मन निराश हो रहा है। कहिए भगवन ! आज चित्त क्यों उदास हो रहा है?
लखि उदास आज नृप तुमको, शोक मन में भारी छाया है।
सच सच बतलाओ हे राजन !किस व्यथा ने तुम्हें सताया है॥
बलवान भी हो धनवान भी हो, और भाग्य बुलन्द तुम्हारा है।
किसलिये कहो फिर भी राजन, मुख हुआ उदास तुम्हारा है॥
न कुछ मन में करो चिन्ता, न दम ठण्डे भरो स्वामी।
खड़ा है दास चरणों में इसे आज्ञा करो स्वामी॥

**इन्द्र :** कैसे बताऊँ मंत्री ! इस आपत्ति को कैसे बताऊँ?
क्या कहूँ मन की व्यथा, कैसे करूँ बखान॥

सोच भयानक ने मेरे, घेरा उर को आन ॥
इन्द्रासन को डोलना, है चिन्ता की बात ।
होने वाला है कोई, मुझ पर वज्राघात ॥
मेरे बेचैन दिल को, भला कब चैन आता है ।
यह आनन्द है उन्हीं के वास्ते, जिनको सुहाता है ॥
मेरी किस्मत में लिखी है, बिधाता ने परेशानी ।
मेरी आशाओं पर फेरा है, मेरी तकदीर ने पानी ॥

मंत्री जी ! मालूम पड़ता है कि कोई मुनि तपस्या के बल से मेरा सिंहासन लेना चाहता है ।

**मंत्री :** महाराज ! आप चिन्ता न करें । मैं काला देव को अभी बनों में भेजकर उस तपस्वी का पता लगवाता हूँ । (मुड़कर) काला देव !

**काला देव :** (सिर झुकाकर) आज्ञा महाराज !

**मंत्री :** तुम बनों में जाकर उस तपस्वी का पता लगाकर आओ ।

**काला देव :** (झुककर) जो आज्ञा महाराज ! (काला देव का जाना)

**पर्दा गिरना**

## सीन चौथा

**स्थान :** जंगल ।

**दृश्य :** नारद जी समाधि में लीन हैं ।

**पर्दा उठना**

**काला देव :** (नारद जी के पास आकर) बाबा ! ओ बाबा ! ! अहा ! क्या यही साधु हमारे महाराज का सिंहासन तपस्या के बल से लेना चाहता है ? चलकर अभी इसका पता लगाऊँ । (काला देव का जाना)

**पर्दा गिरना**

## सीन पाँचवाँ

**स्थान :** इन्द्र दरबार ।

**दृश्य :** इन्द्र सिंहासन पर सोच में बैठे हुए हैं। मंत्री अपने स्थान पर बैठा हुआ है।

**पर्दा उठना**

**काला देव :** (प्रवेश करके झुक कर) महाराज की जय हो। अन्नदाता ! मैंने जंगल में जाकर जो देखा है वह आपको बताता हूँ।
महाराज ! जंगल के अन्दर, बन्दा हवा जो खाता था।
गिरि कन्दरा की खोह में, मुनि एक ध्यान लगाता था॥
हाथ कमण्डल बगल में वीणा, माला को सटकाता था।
ब्रह्मा जी का पुत्र है ये, नारद नाम कहाता था॥

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

मुनि गति देखि सुरेश डराना। कामहि बोलि कीन्ह सनमाना॥
सहित सहाय जाहु मम हेतु। चलेउ हरषि हियँ जलचर केतु॥

**इन्द्र :** (घबड़ाकर) मंत्री जी ! कामदेव को बुलाइए।

**मंत्री :** (सिर झुकाकर) जो आज्ञा महाराज !

**(मंत्री जाने लगता है।)**

**इन्द्र :** (मंत्री की तरफ इशारा करके) ठहरो ? मैं स्वयं बुलाता हूँ।

**(इन्द्र द्वारा जमीन पर हाथ से मंत्र फैंकना। कामदेव का जमीन से प्रगट होना।)**

**कामदेव :** (झुककर) मित्रवर ! नमस्कार !
हाजरे खिदमत में हूँ, इरशाद हो कुछ नेक नाम।
किसलिए थी इन्तजारी, और क्या है मुझसे काम॥
हे देवराज !कारण कहिए, यह सभा सभी अभिलाषी है।
क्या चिन्ता ऐसी व्यापी है, जिससे ये छाई उदासी है॥

**इन्द्र :** (दुःखी होकर) मित्र कामदेव ! क्या बताऊं ?
हिमगिरि की एक कन्द्रा में, देवर्षि तपस्या करते हैं।
लेना चाहें वह इन्द्रासन, लक्षण ऐसे लखि पड़ते हैं॥
तुम कामदेव !वहाँ पर जाओ, निज सेना साथ लिवा करके।
तप छुड़वाओ जा नारद का, अपनी माया दिखला करके॥

**कामदेव :** महाराज ! आप किसी बात की चिन्ता न करें।
मिटा दूँगा सदा के वास्ते, चिन्ता ये सब मन की।
कमी तुमको न रहेगी, सुख सम्पत्ति के साधन की॥
अच्छा..... ! महाराज ! ! प्रणाम। (कामदेव का जाना)

**पर्दा गिरना**

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

तेहि आश्रमहि मदन जब गयऊ । निज मायाँ बसंत निज भयऊ ॥

## सीन छठवाँ

**स्थान :** जंगल।
**दृश्य :** नारद जी समाधि में लीन हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ व्यासः चौपाई ॥**

रम्भादिक सुर नारि नवीना । सकल असमसर कला प्रवीना ॥
करहिं गान बहुतान तरंगा । बहुविधि कीड़हिं यानि पतंगा ॥
देखि सहाय मदन हरषाना । कीन्हेसि पुनि प्रपंच बिधि नाना ॥

**(कामदेव का रम्भा आदि अप्सराओं के साथ प्रवेश)**

**अप्सराओं का गाना**

बाबा पलकियाँ खोल रस की बूँदे गिरी।..... बाबा.....

**कामदेव :** (काम का तीर चढ़ाकर) हूँ.....?
कराता हूँ इसे अब, स्वर्ग के आराम का दर्शन।
हिमालय की गुफा में, देवपुर के धाम का दर्शन॥

**(कामदेव द्वारा मंत्र फूँकना। नारद की समाधि का अड़िग रहना)**

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

काम कला कछु मुनिहि न व्यापी । निय भयं डरेउ मनोभव पापी ॥

**कामदेव :** (एक ओर तिरछा खड़ा होकर माथे पर हाथ रखकर) अफसोस..... ! आज स्वर्ग की अप्सराओं का यौवन और कामदेव का मंत्र भी नारद मुनि का तप खंडित न कर

सका । निसन्देह मैंने बहुत बुरा कार्य किया जो सच्चे योगी को ध्यान से विचलित करने का बीड़ा उठाया ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

सहित सहाय सभीत अति, मानि हारि मन मैंन ।
गहेसि जाइ मुनि चरन तब, कहि सुठि आरत बैंन ॥

**कामदेव :** (नारद जी के पैरों में गिरकर) क्षमा ! मुनिवर क्षमा ! !
महाराज ! मुझ मूरख ने, किया भयंकर पाप ।
क्षमा कीजिए दास को, क्षमा कीजिए आप ॥

**कामदेव :** (पैरों में गिड़गिड़ाकर) क्षमा ! ब्रह्मऋषि क्षमा ! !
यह अभिमानी कामदेव, अपनी शक्ति पर फूला फिरता था ।
अहंकार वश होकर आपका, पराक्रम भूला फिरता था ॥
ना समझा मोह में अपने, निरादर किसका होता है ।
मेरा अभिमान मेरे रास्ते में, स्वयं ही शूल होता है ॥
हुआ है दुनियाँ में अब तक, सिर अभिमानी का नीचा ।
बिताना पड़ता है जीवन, सदा अपमान का नीचा ॥

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

भयउन नारद मन कछु रोषा । कहि प्रिय बचन काम परितोषा ॥

**नारद जी :** (मुस्कराकर) कामदेव ! कहो..... ? क्या बात है ? ? किस अपराध की क्षमा माँग रहे हो ? ? ?

**कामदेव :** (पैरों में गिरकर) मुनिराज !
देवराज ने देखि तप, मन में किया विचार ।
मेरा इन्द्रासन कहीं, छीन न लें मुनिराज ॥
मुझे दिया आदेश तब, मेरे मित्र अनंग ।
जाय अप्सराओं सहित, करो तपस्या भंग ॥

सुनिये भगवन ! आपकी घोर तपस्या को देखकर इन्द्र को मन में अपना इन्द्रासन छिन जाने का भय हुआ । इसलिए उसने मुझे अप्सराओं के साथ आपकी समाधि में बाधा डालने भेजा । मैंने आपकी तपस्या खंड़ित करने के लिए

सारे उपाय कर लिये किन्तु मैं असफल रहा हूँ। यह अपराध मुझसे हुआ है। हे नाथ ! मुझे क्षमा कीजिये।

निश्चय आप महान हैं, क्षमा करें मुनिराज।
आप स्वयं ही मार खा, चला हारकर आज ॥

**नारद जी :** (मुस्कराकर) हे कामदेव ! हम साधु लोग क्रोध नहीं किया करते और न सांसारिक पदार्थों की इच्छा करते हैं। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है। मैं जानता हूँ कि इन्द्र को इन्द्रासन का लोभ है। अब तुम जाकर अपने महाराज को समझाओ जिससे उसके हृदय को शान्ति मिले।

**कामदेव :** (पैरों में सिर नवाकर) धन्य हो मुनिराज ! धन्य हो। (कामदेव का अप्सराओं सहित जाना)

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

नाइ चरन सिरु आयसु पाई । गयउ मदन तब सहित सहाई ॥

**नारद जी :** (व्यंग से) हूँ.....! अभिमानी कामदेव ! इन्द्र के द्वार पर पड़ा रहने वाला भिखारी और महर्षि नारद से युद्ध की तैयारी (खुश होकर) कामदेव मुझे जीतने आया किन्तु मैंने उसे बुरी तरह हराया। अब मैं शिवजी के पास जाता हूँ और उन्हें अपनी जीत का समाचार सुनाता हूँ।
नारायण.....! नारायण.....!! (नारद जी का जाना)

**पर्दा गिरना**

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

तब नारद गवने सिव पाहीं । जिता काम अहमिति मन माहीं ॥
सकल चरित संकरहि सुनाए । अति प्रिय जानि महेस सिखाए ॥

## सीन साँतवा

**स्थान :** कैलाश पर्वत।

**दृश्य :** कैलाश पर शिवजी अपने दोनों गणों सहित बैठे हैं।

**पर्दा उठना**

**नारद जी :** (प्रवेश करते हुए) नारायण..... ! नारायण..... !

**शिवजी :** (मुस्कराकर) पधारिये नारद जी ! कहिए.....? कुशल तो है। आज इधर कैसे भ्रमण हो गया?

ब्रह्मपुत्र जग में फिरो, करते पर उपकार ।
आज प्रेम सरिसार हो, शंकर हुए उदार ॥

**नारद जी :** (खुश होकर) प्रभो ! एक शुभ समाचार लाया हूँ। आपको सुनकर महान हर्ष होगा। नारायण.... ! नारायण.... ! !

**शिवजी :** (मुस्कराकर) कहिए? कहिए मुनिवर ! ऐसे क्या समाचार है? शीघ्र ही कहिए।

**नारद जी :** अजी वह है न आपका पुराना शत्रु कामदेव ! जिसने आपके सामने ही आकर के अपनी माया रचाई थी और आपके द्वारा पूर्ण हार पाई थी।

**शिवजी :** हाँ..... ! हाँ..... ! ! कहो.....? कहो.....? ? क्या उसने और कोई नया उत्पात मचाया है।

**नारद जी :** मचाना चाहता था परन्तु.....? प्रभो ! हम भी अपने नाम के नारद हैं। मैंने उसे हरा करके ही छोड़ा और अच्छी तरह उसका अभिमान तोड़ा। क्या आपको जानकर प्रसन्नता नहीं हुई?

**शिवजी :** (खुश होकर) क्यों नहीं? यह तो बड़ा ही शुभ समाचार है। परन्तु.....? यह सब कैसे हुआ? नारद जी !

**नारद जी :** भगवन् ! मैं विचरता हुआ हिमालय के निकट जा पहुँचा। वहाँ का सुन्दर दृश्य देखकर मेरे मन में भगवान का भजन करने की प्रेरणा हुई और मैं वहाँ समाधि लगाकर बैठ गया। मेरे घोर तप को देखकर इन्द्र को अपना इन्द्रासन जाने का भय हुआ तब उसने कामदेव को रम्भा आदि अप्सराओं के साथ मेरा तप खंडित करने भेजा लेकिन वह मुझे समाधि से न डिगा सका तब कामदेव ने हार मानकर मेरे चरणों में गिरकर क्षमा माँगी। अब बताइए प्रभो ! इस

संसार में मेरे सिवा कौन है जो कामदेव को जीत सकता है। बताइए न महाराज ! क्या मैंने कोई साधारण कार्य किया है। नारायण ! नारायण ! !

अब मेरा साहस जगत में, किससे देखा जायेगा।
जो सुनेगा जीत मेरी, वह भी शरमा जायेगा ॥

**शिवजी :** वास्तव में नारद जी ! आपके पराक्रम को कौन पा सकता है ? ऐसे तेज के सामने कौन आँखें उठा सकता है ? परन्तु सुनो .....? मैं आपके हित के लिए प्रार्थना करता हूँ कि जिस प्रकार यह समाचार आपने मुझे सुनाया है कहीं विष्णु भगवान से मत कह बैठना क्योंकि.....?

हैं पिता तुम्हारे क्षमाशील, और यह कैलाशी भी भोला है।
भय है तो हरि ही का है, हरि ही ने हृदय टटोला है ॥
उन नट नागर में मौज उठी, तो नाटक ही दिखलायेंगे।
तुम कामजीत कहलाते हो, वे जाने क्या तुम्हें बनायेंगे ॥

**नारद जी :** (व्यंग्य से) हूँ.....! देखा.....? मैं यश कमाऊँ और दुनिया को न बताऊँ। मैं अवश्य ही अपनी जीत का समाचार पिता जी और विष्णु भगवान से कहूँगा। अवश्य कहूँगा। नारायण...! नारायण....! ! (नारद का जाना)

**शिवजी :** मालूम पड़ता है कि नारद के मन में अभिमान उत्पन्न हो गया है। अब ये अपनी जीत का समाचार विष्णु भगवान से कहे बिना न मानेंगे। हे गणों ! तुम नारद के पीछे-पीछे जाओ और जो कुछ भी अपनी आँखों से देखो हमें आकर बताओ।

**दोनों गण :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा प्रभो ! (गणों का नारद जी के पीछे-२ जाना)

**पर्दा गिरना**

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

संभु बचन मुनि मन नहिंभाए । तब बिरंचि के लोक सिधाए ॥

## सीन आठवाँ

**स्थान :** ब्रह्म लोक ।

**दृश्य :** ब्रह्मा जी आसन पर विराजमान हैं ।

**पर्दा उठना**

**नारद जी :** (प्रवेश करते हुए) नारायण..... ! नारायण..... ! !

**ब्रह्मा जी :** आओ बेटा ! कुशल तो है ।

**नारद जी :** पिता जी ! आपके आर्शीवाद से मैंने एक संग्राम में विजय पाई है ।

**ब्रह्मा जी :** (खुश होकर) यह तो बड़ा ही शुभ समाचार है । कहो...? शीघ्र कहो.....? ?

**नारद जी :** (गर्व से) सुनिये पिता जी ! वह है न इन्द्र का दास कामदेव । जिसने सारे संसार को नचा रखा है । हर एक को अपना दास बना रखा है । आज उसकी ही अशुभ घड़ी आई और उसने मेरे द्वारा पूर्ण हार पाई । नारायण..... ! नारायण..... ! !

**ब्रह्मा जी :** (विस्मय से) यह कैसे हुआ नारद !

**नारद जी :** पिताजी ! मैं हिमालय पर्वत पर समाधि लगाये हुए बैठा था कि इतने में इन्द्र के भेजे हुए कामदेव और अप्सरायें आईं। उन्होंने मेरा तप खंडित करने के लिए अनेक लीलायें रचाईं । अन्त में क्षमा माँगकर पीछा छुड़ाया और मैंने कामदेव को जींत लिया । नारायण... ! नारायण ! !

**ब्रह्मा जी :** (खुश होकर) पुत्र ! बात तो बड़े आनन्द की है । निःसन्देह तुमने बड़ा ही पराक्रम दिखाया है । परन्तु अपनी जीत का समाचार विष्णु भगवान को मत सुनाना तुम्हारा हित इसी में है ।

**नारद जी :** (मुस्कराकर) वाह पिताजी ! आपने तो कमाल कर दिया !
काम करके फिर न फ़ैलायें, उसे संसार में ।
और होंगे ऐसे मूर्ख. विश्व के विस्तार में ॥

अच्छा पिता जी ! आज्ञा दीजिए। नारायण ! नारायण ! !
(नारद का जाना)

**पर्दा गिरना**

**।। व्यास : चौपाई ।।**

छीर सिंधु गवने मुनि नाथा । जहँ बस श्री निवास श्रुतिमाथा ॥

**सीन नवाँ**

**स्थान :** क्षीर सागर।

**दृश्य :** भगवान विष्णु शेष शैया पर लैटे हुए हैं। लक्ष्मी जी चरण दबा रही हैं।

**पर्दा उठना**

**।। व्यास : चौपाई ।।**

हरषि मिले उठिरमा निकेता । बैठे आसन रिषिहि समेता ॥
बोले बिंहसि चराचर राया । बहुते दिनन कीन्हि मुनि दाया ॥

**नारद जी :** (प्रवेश करते हुए) नारायण..... ! नारायण..... ! !

**विष्णु :** (शेष शैया से उठकर मुस्कराते हुए) अहा ! योगेश्वर नारद जी.... ! ! आइए... ! पधारिये ! (नारद जी को अपने पास बैठा लेना) कहिए....? चित्त तो प्रसन्न है। अबकी बार बहुत दिनों में कृपा की। मृत्युलोक के क्या समाचार है ?

**।। व्यासः चौपाई ।।**

काम चरित नारद सब भाषे । जद्यपि प्रथम बरजि सिवं राखे ॥

**नारद जी :** प्रभो ! बन की शोभा और एकान्त स्थान देखकर मेरा चित्त प्रफुल्लित हो गया। मैं वहीं आपका ध्यान लगाकर बैठ गया।

**विष्णु :** फिर क्या हुआ नारद जी ?

**नारद जी :** प्रभो ! वही है न लालसा का दास इन्द्र ! जिसको हर समय इन्द्रासन की चिन्ता सताये रहती है। उसने सोचा कि कहीं नारद योगबल से मेरा इन्द्रासन न छींन ले। अतः उसने

कामदेव को रम्भा आदि अप्सराओं के साथ मेरा तप खंडित करने भेजा। नारायण.....! नारायण.....!!

**विष्णु :** मुनिवर! यह इन्द्रदेव की भूल है।

**नारद जी :** (खुश होकर) लेकिन प्रभो! वह मेरा कुछ बिगाड़ ने सका और मैंने कामदेव को जीत लिया। नारायण......! नारायण.....!!

**विष्णु :** हे नारद जी! तुम्हारे स्मरण मात्र से ही मोह, काम, मद और अभिमान मिट जाते हैं। हे मुनि! मोह तो उसी के मन में होता है जिसके हृदय में ज्ञान वैराग्य नहीं है। आप तो पूर्ण ब्रह्मचारी हैं इसलिए वह हारा है।

**नारद जी :** (गर्व से) हे भगवन्! यह सब आपकी कृपा है। नारायण! नारायण.....!!

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

तब नारद हरि पद सिर नाईं । चले हृदयं अहमिति अधिकाई ॥

**नारद जी :** (चरणो में सिर नवाकर) अच्छा प्रभो! अब दास का प्रणाम लीजिए। नारायण.-.... ! नारायण.....!!

**॥ चौपाई ॥**

करुना निधि मन दीख बिचारी । उर अंकुरेउ गरब तरु भारी ॥
बेगि सो मैं डारिहहुं उपारी । पन हमार सेबक हितकारी ॥
श्रीपति निज माया तब प्रेरी । सुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥

**विष्णु :** मुनि के हृदय में गर्व के भारी वृक्ष का अंकुर पैदा हो गया है। सेवक के हित के लिए उसे शीघ्र ही उखाड़ डालना चाहिए।

मैं अशरण शरण कहाता हूँ, अपना कर्त्तव्य निभाऊँगा।
करूँगा निज प्रण रक्षा, अहम रिसि का मिटाऊँगा॥

**लक्ष्मी :** प्रभो! ऐसा क्यों बिचारा है?

**विष्णु :** भक्त की रक्षा का व्रत जो धारा है। (ताली बजाकर योग माया को बुलाना)

**योग माया :** (प्रगट होकर सिर नवाकर) आज्ञा प्रभो !

**विष्णु :** योग माया ! तुम जाकर एक नगर बसाओ जिसका नाम श्रीनगर होगा और वहाँ का राजा शीलनिधि होगा । हे प्रिय लक्ष्मी ! तुम जाकर शीलनिधि की पुत्री का रूप धारण करो ।

**योग माया :** (हाथ जोड़कर) जो आज्ञा प्रभो ! (योग माया का अर्न्तध्यान होना)

**पर्दा गिरना**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

बिरचेउ मग महुँ नगर तेहिं, सत जोजन बिस्तार ।
श्री निवास पुर तें अधिक, रचना बिबिध कुमार ॥

## सीन दसवाँ

**स्थान :** श्री नगर ।

**दृश्य :** दरबार लगा है। राजा शीलनिधि विश्वमोहिनी के साथ विराजमान हैं। राजा लोग यथा स्थान बैठे हुए हैं। एक ओर मंत्री बैठा हुआ है। सखी माला लिए हुए विश्वमोहिनी के पास खड़ी हैं। पुरवासी बाहर घूम रहे हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

बसहिं नगर सुंदर नर नारी । जनु बहु मनसिज रति तनुधारी ॥
तेहिं पुर बसइ सीलनिधि राजा । अगनित हय गय सैन समाजा ॥
बिस्वमोहिनी तासु कुमारी । श्री बिमोह जिसु रूप निहारी ॥
करइ स्वयंवर सो नृपबाला । आए तहँ अगनित महिपाला ॥
मुनि कौतुकी नगर तेहिं गयऊ । पुरबासिन्ह सब पूछत भयऊ ॥

**नारद जी :** (प्रवेश करते हुए) नारायण . . . . . ! नारायण . . . . . ! ! (पुरबासी को रोककर विस्मय से) अरे भाई ! यह नगर कौन-सा है ? इसके राजा का नाम क्या है ? मैं इस रास्ते से

कई बार गुजर चुका हूँ परन्तु मैंने कभी भी यह नगर नहीं देखा ।

**पुरबासी :** महाराज ! इस नगर का नाम श्री नगर है और यहाँ के राजा का नाम शीलनिधि है । यह नगर तो बहुत पुराना है ।

**॥ चौपाई ॥**

सुनि सब चरित भूप गृहं आए । करि पूजा नृप मुनि बैठाए ॥

**नारद जी :** (दरबार में प्रवेश करते हुए) नारायण... ! नारायण.... ! !

**शीलनिधि :** (कन्या के साथ सिंहासन से उतरकर मुनि चरणों में झुककर) मुनिराज के चरणों में शीलनिधि का प्रणाम स्वीकार हो ।

**नारद जी :** (आर्शीवाद देते हुए) चिरंजीव रहो राजन !

**शीलनिधि :** (कन्या से) बेटी ! मुनिराज को प्रणाम करो । ऋसि मुनियों के दर्शन भी बरदान हुआ करते हैं ।

**विश्वमोहिनी:** (आगे बढ़कर हाथ जोड़कर) मुनिवर ! प्रणाम !

**नारद जी :** (आर्शीवाद देते हुए) सौभाग्यवती रहो ।

**शीलनिधि :** (हाथ जोड़कर) आसन ग्रहण कीजिए मुनिराज !

(नारद जी का आसन पर बैठना)

**॥ दोहा ॥**

आनि देखाई नारदाहि, भूपति राजकुमारि ।
कहहु नाथ गुन दोष सब, एहि के हृदयं बिचारि ॥

**शीलनिधि :** (कन्या का हाथ दिखाते हुए) हे मुनिवर ! मेरी बेटी का हाथ देखकर इसके गुण-दोष बताने की कृपा कीजिए। (नारद जी का हाथ थामकर कन्या को निहारना)

**॥ चौपाई ॥**

देखि रूप मुनि सुरति बिसारी । बड़ी बार बगि रहे निहारी ॥
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने । हृदयं हरष नहिं प्रगट बखाने ॥

**नारद जी :** (कन्या का हाथ देखकर) राजन ! तुम्हारी पुत्री तो बड़ी भाग्यवान है ।

सत्यमेश गुरु क़ह रहा, लिये सोम का साथ ।
सब नर नाथों में बड़ा, होगा इसका नाथ ॥
हे राजन ! तुम इसका स्वयंवर रचाओ । इसको निःसन्देह बड़ा श्रेष्ठ वर मिलेगा ।

**शीलनिधि :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा मुनिवर !

**नारद जी :** (उठते हुए) अच्छा राजन ! अब हम चलते हैं । नारायण ! नारायण ..... ! ! (नारद जी का जाना)

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं । नारद चले सोच मन माहीं ॥
करौं जाइ सोइ जतन बिचारी । जेहि प्रकार मोहि वरै कुमारी ॥
जप तप कछु न होइ एहि काला । हे बिधि मिलइ कवन विधि बाला ॥

## सीन ग्यारहवाँ

**स्थान :** जंगल ।

**दृश्य :** नारद जी सोच में डूबे चले जा रहे हैं ।

**पर्दा उठना**

**नारद जी :** (एक ओर तिरछा खड़ा होकर माथे पर हाथ रखकर)
क्या करूँ समझ नहीं आता है, किस तरह से पाऊँ सुन्दरता ।
इस विश्वमोहिनी देवी का, मैं बन जाऊँ कर्ता धर्ता ॥
यदि सुन्दरताई लेने को, अब पास विष्णु जी के जाऊँ ।
जाने आने में देर होय, जब तक मैं लौट यहाँ आऊँ ॥
वर लेगा कोई और इसे, मैं नहीं इसे वर पाऊँगा ।
मन इच्छा पूरन होय नहीं, यों तो कुआरा रह जाऊँगा ॥
इस समय तो मुझे महान् सुन्दर और विशाल रूप चाहिए जिसे देखकर यह कन्या मोहित हो जाय तब मेरे ही गले में जयमाला डाल दे । जाकर श्री हरि से सुन्दरता मागूँ परन्तु उनके पास जाने-आने में बड़ी देर होगी । भगवान

विष्णु के समान मेरा कोई हितैषी नहीं है और वे सर्वव्यापी हैं। अब मुझे उन्हीं की स्तुति करनी चाहिए।

**(नारद जी द्वारा भगवान विष्णु की स्तुति करना)**

**फिल्म : नरसी भगत**

दर्शन दो भगवान! नाथ मेरी अखियाँ प्यासी रे ।
मन मन्दिर की ज्योति जगा दो, घट-घट बासी रे ॥
मन्दिर मन्दिर मूरत तेरी। कहीं न दीखै सूंरत तेरी ॥
युग बीते ना आई मिलन की पूरन मासी रे।
दर्शन दो... (१)
द्वार दया का जब तू खोले ।पंचम स्वर में गूँगा बोले ॥
दर्शन दो... (२)
पानी पीकर प्यास बुझाऊँ ।नैनन को कैसे समझाऊँ ॥
आँख मिचौनी छोड़ो भगवन घट घट बासी रे ।
दर्शन दो... (३)
मन मन्दिर... ।

**॥ चौपाई ॥**

बहुविधि विनय कीन्हि तेहि काला। प्रगेटउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुड़ाने। होइहि काजु हिएं हरषाने ॥

**(भगवान विष्णु का प्रगट होना। नारद जी का खुश होकर पैरों में गिर जाना)**

जय हो प्रभु ! तुम्हारी जय हो ।

**विष्णु :** मुनिवर करो न विलम्ब अब, कहो हृदय की बात ।
किस कारण की प्रार्थना, क्या विपदा है तात ॥

**॥ चौपाई ॥**

अति आरति कहि कथा सुनाई। करहु कृपा करि होहु सहाई ॥

**नारद जी :** सुनिये ..... ? भगवन !
निज पथ से था जा रहा, पर अचरत की बात ।
श्रीनगर पथ में मिला, शोभा कही न जात ॥

नृपति वहाँ का शीलनिधि, ले मंत्री को साथ ।
करे स्वयंवर सुता का, कृपा कीजिए नाथ ॥

**विष्णु :** तो उसे स्वयंवर करने दीजिए। आप क्यों परेशान हैं? आप कैसी कृपा चाहते हैं?

**नारद जी :** हे दयानिधान !
मेरे मन में यह इच्छा है, उस भूप सुता से ब्याह करूँ ।
प्रभु हरि का रूप प्रदान करें, सुख से जीवन निर्वाह करूँ ॥
मेरा हरि रूप निरखि बाला, जयमाल मुझे पहनायेगी ।
सारा समाज साक्षी होगा, निज पती मुझे बनायेगी ॥
आज यही है प्रार्थना, मेरी कृपा निधान ।
हरि का रूप प्रदान कर, करो मेरा कल्यान ॥
कोई संसार में निर्बल का, तारण हो नहीं सकता ।
मेरा संकट तुम्हारे बिन, निवारण हो नहीं सकता ॥

**विष्णु :** हे नारद जी ! जिस प्रकार तुम्हारा कल्याण होगा मैं वही करूँगा। मेरा बचन मिथ्या नहीं होता।
मुझे अपने प्यार की है, प्यारे से अधिक चिन्ता ।
हमारे मन में रहती है, तुम्हारे से अधिक चिन्ता ॥
मैं सब कुछ जानता हूँ, क्या करूँगा और क्या होगा ।
मगर वही होगा जिसमें तुम्हारा ही भला होगा ॥

**॥ चौपाई ॥**

मुनिहित कारन कृपानिधाना। दीन्ह कुरुप न जाइ बरबाना ॥

**(नारद जी का बानर रूप बना देना तथा भगवान विष्णु का अन्तर्ध्यान हो जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

गबने तुरत तहाँ रिषिराई। जहाँ स्वयंवर भूमि बनाई ॥

**(नारद जी का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**सीन बारहवाँ**

**स्थान :** शीलनिधि का दरबार ।

**दृश्य :** दरबार लगा है । राजा, मंत्री तथा अन्य राजा यथा स्थान विराजमान हैं । शिवजी के दोनों गण विप्र भेष में एक तरफ खड़े हैं । सखी जयमाला लिये हुए विश्वमोहिनी के पास खड़ी हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

मुनि मनहरष रूप अति मोरें । मोहि तज आनहिं बरिहिं न मोरें ॥

**नारद जी :** (प्रवेश करते हुए) नारायण ! नारायण ! ! अहा ! मेरा रूप बड़ा सुन्दर है। कन्या मेरे अलावा और किसी को न वरेगी ।

**॥ चौपाई ॥**

सो लखि चरित काहुं न पावा । नारद जानि सबहि सिर नाबा ॥

**(सब राजाओं का नारद जी के सामने सिर नवाना । नारद जी द्वारा आशीर्वाद देना)**

**शीलनिधि :** (सिंहासन से उठकर नारद जी के चरणों में सिर नवाकर) मुनिराज के चरणों में सेवक का प्रणाम स्वीकार हो ।

**नारद जी :** (आशीर्वाद देते हुए) चिरंजीव रहो राजन ! कहो..... ? कुशल तो है ।

**शीलनिधि :** सब आपकी कृपा का फल है मुनिराज ! आपकी आज्ञानुसार मैंने अपनी बेटी के स्वयंवर की पूर्ण तैयारियां कर डाली हैं मुनिराज ! आप आसन ग्रहण कीजिए ।

**(नारद जी का आसन पर बैठ जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

काहुं न लखा सो चरित विसेषा । सो सरूप नृप कन्या देखा ॥
मर्कट बदन भयंकर देही । देखत हृदयं क्रोध भी तेही ।

**(विश्वमोहनी का नारद जी का वानर रूप देखकर दूसरी ओर मुँह फेर लेना)**

॥ दोहा ॥

रहे तहाँ दुई रुद्रगन, ते जानहिं सब भेउ ।
ब्रिप भेष देखत फिरहिं, परम कौतुकी तेउ ॥

**दोनों गण :** (नारद जी के पास आकर हँसकर)

धन्य-धन्य नारद मुनि, पाया रूप अपार ।
तुम समान दूजा नहीं, देखा नजर पसार ॥

॥ दोहा ॥

सखी संग लै कुअंरि तब, चलि जनु राज मराल ।
देखत फिरइ महीप सब, कर सरोज जयमाल ॥

**(सखी के साथ विश्वमोहिनी का माल लेकर राजाओं के सामने चक्कर लगाना)**

**सखी का गाना**

धीरे चलो सुकुमारि ............... ?

॥ चौपाई ॥

जेहि दिसि बैठे नारद फूली । सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली ।
पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुताही । देखिदसा हरगन मुसुकाही ॥

(विश्व मोहिनी का नारद जी के पास आकर बिना देखे मुँह फेर कर आगे बढ़ जाना । नारद जी का बार-बार उचकना तथा कुर्सी विश्वमोहिनी के आगे-पीछे करना । नारद जी की दशा देखकर दोनों शिवगणों का खिल-खिलाकर हँसना)

॥ चौपाई ॥

धरि नृप तनु तहं गयउ कृपाला । कुअरि हरषि मेलेउ उजयमाला ॥
दुलहिनि लै गे लच्छि निवासा । नृप समाज अब भयह निरासा ॥

(विष्णु भगवान का राजा का रूप धर कर आना । विश्वमोहिनी का उनके गले में जयमाला डालना । भगवान का विश्वमोहिनी को साथ ले जाना)

॥ चौपाई ॥

तब हर गन बोले मुसुकाई । निज मुख मुकुर बिलोकहुं जाई ॥

(शिवगण द्वारा नारद जी के गले में जयमाला डाल देना)

**नारद जी :** (शिव गण के गले में बाहें डालते हुए) आह ! मेरी प्यारी विश्वमोहिनी !

**शिवगण :** (दूर हटकर हँसकर) मैं विश्वमोहिनी नहीं बल्कि विश्वमोहिना हूँ ।

**(शिवगण द्वारा अपना घूँघट उलट देना)**

**शिवगण :** (हँसकर) हे मुनिवर !

दिल की दिल में क्यों रखते हो, कुछ डील डौल मूरत देखो ।
आये थे ब्याह रचाने को, शीशे में निज सूरत देखो ॥

**(नारद जी के हाथ में गणों द्वारा शीशा पकड़ाना)**

**॥ चौपाई ॥**

असकहि दोउ भागे भय भारी । बदन दीख मुनि बारि निहारी ॥
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढ़ा । तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढ़ा ॥

**(दोनों शिवगणों का भयभीत होकर भागना। नारद जी का शीशे में अपना मुख देखना। अपना बानर का रूप देखकर क्रोधित होना फिर जलाशय में झांकना तब अपने असली रूप में आ जाना।)**

**नारद जी :** (मुडकर क्रोध से) ठहरो.....?

राक्षस हो जाओ अरे दुष्ट, रिसियों की हँसी उड़ाते हो।
फल पाओ अपनी करनी का, कहाँ को तुम भागे जाते हो ॥

**(दोनों शिव गणों का एक जगह रुककर भयभीत होकर थर-थर काँपना)**

**नारद जी :** (क्रोधित होकर) देखा....? इस प्रपंची विष्णु का व्यवहार देखा.....? अरे धोखेबाज ! अरे पाखण्डी ! ! या तो क्षीर सागर पर गला घौंटकर मर जाऊँगा और तुझे ब्रह्म हत्या का भागी बनाऊँगा या तुझको घोर श्राप दूँगा जिससे तू और किसी रिसि के साथ कपट व्यवहार न कर सके। अच्छा.....? अब मुझे क्षीर सागर चलना चाहिए ।

## (नारद जी का जाना)

### ॥ चौपाई ॥

फरकत अधर कोप मन माहीं । सपदि चले कमलापति पाहीं ॥
बीचहिं पंथ मिले दनु जारी । संग रमा सोइ राजकुमारी ॥

**विष्णु :** (मुस्कराकर) मुनि ! व्याकुल की भाँति कहाँ चले ?

**नारद जी :** (क्रोध से) विष्णु ! तुम मुझसे पूछते हो ? कहाँ चले ... ? ? अरे पापी ! दूसरों की आशाओं पर पानी फेरकर अपनी कीर्ति को बढ़ाने वाले ठहर ..... ! भक्त के साथ द्रोही का काम करने वाले ठहर ..... ! ! काश तुझे मेरे हृदय की तड़प मालूम होती ।

छल कपट धोखा, याचना का बदला अपमान से ।
विश्वासघाती का काम, और विष्णु भगवान से ॥
रूप माँगा हरि का ।
और दे दिया बानर का ॥
मुनासिब था यही तुमको, श्री भगवान कहलाकर ।
यह गुण हमको दिखलाया, बड़ा गुणवान कहलाकर ॥
मेरे तो वास्ते जगत में, निराशा ही निराशा है ।
मगर देख ले तू भी, कपट का क्या तमाशा है ॥
भला ऐसे खाये कोई, मूरख लाभ का धोखा ।
जो यह आदत तुम्हारी है, तो कहाँ विश्राम है मेरा ।
न बदला लूँ बदी का, तो न नारद नाम है मेरा ॥
नृप बनकर धोखा दिया मुझे, नर तन तुमको धरना होगा ।
नारी के लिए हुआ था ये, नारी का ही दुख भरना होगा ॥
फिरोगे ठोकरें खाते, कहीं दुर्गम पहाड़ों में ।
कहीं पर्वत कहीं जंगल, कहीं बन और उजाड़ों में ॥
निराशाओं के बादल हर ओर, घिर-घिर के छायेंगे ।
यदि कुछ काम आयेंगे, तो यही बानर ही आयेंगे ॥
मैं श्राप यही अब देता हूँ, करनी का फल पाओगे ।

नर तन को धारण करके, तुम मृत्युलोक में आओगे ॥
मथा जब सिंधु को तूने, तो हलाहल विष का पाया ।
मिली जब रत्न लक्ष्मी तो, उसे अपनी पत्नी बनाया ॥
रखा था रूप जलंधर का, धरनि उस वक्त दहलाई ।
किया छल तूने बिंदा से, तुझे तब शर्म ना आई ॥
बचा कोई न पायेगा, जो साथी तेरे नामों का !
मिलेगा आज भी तुझको, नतीजा बुरे कामों का ॥

**॥ व्यास : दोहा ॥**

श्राप सीस धरि हरषि हियं, प्रभु बहु बिनती कीन्हि ।
निज माया कै प्रवलता, करषि कृपानिधि लीन्हि ॥

**॥ चौपाई ॥**

जब हरि माया दूरि निवारी । नहिं तेहिं रमा न राजकुमारी ॥
तब मुनि अति सभीत हरि चरना । गहे पाहि प्रनतारित हरना ॥

**(भगवान विष्णु द्वारा माया की प्रबलता खींचना। राजुकमारी का गायब हो जाना। नारद जी का भगवान के चरणों में गिर जाना)**

**विष्णु :** नारद जी ! मैं आपका श्राप स्वीकार करता हूँ ।
न मुझको काम सुख-दुख से, न शोक आनन्द साधन से ।
मुझे उसमें है आनन्द, जिसे तुम चाहते मन से ॥

**नारद जी :** (भगवान विष्णु के पैरों में सिर रगड़कर) हे शरणागतों के दुख हरने वाले प्रभो ! मेरी रक्षा कीजिये ।
हे नाथ !इस माया में फंसकर, सब ध्यान ज्ञान को खोया था ।
हो जाए शाप मेरा झूँठा, माया ने मुझको मोहा था॥
अभिमान किया था इसी से तब, तब ज्ञान नाथ बिसराया था ॥
दुर्वचन बहुत बोले मैंने, कर क्षमा मुझे दो गरुणगामी ।
किस तरह शाप ये छूटेगा, वह यत्न कहो अर्न्तयामी ॥

**विष्णु :** (मुस्कराकर) हे मुनिवर ! जाकर शिवजी के सतनाम का जाप करो । इससे शीघ्र ही तुम्हारे हृदय में शान्ति मिलेगी

क्योंकि मुझे शिवजी के समान कोई प्रिय नहीं है। भूलकर भी इस विश्वास को मत त्यागना।

**नारद जी :** धन्य हो प्रभु ! नारायण ! नारायण.. !!(नारद का जाना)

**पर्दा गिरना**

**(नारद का बिचरते हुए गाना)**

दया का भिखारी दया चाहता हूँ।
तुम्हें रात-दिन पूजना चाहता हूँ॥
नहीं कोई दुनियाँ में, साथी है अपना।
जगत को जो देखा तो, झूठा है सपना॥
उसी ने बनाया प्रभु ! तुमको तो अपना।
तुम्हें हर घड़ी देखना चाहता हूँ।
दया का भिखारी.....(१)
यह माना कि भगवन, गुनहगार हूँ मैं।
मगर तेरा भगवन, तलबगार हूँ मैं॥
दया मुझ पै कर दो, कि लाचार हूँ मैं।
मैं और कुछ न तेरे सिवा चाहता हूँ।
दया का भिखारी.....(२)
नारायण.....! नारायण......!!

**॥ चौपाई ॥**

हर गन मुनिहिं जात पथ देखी। विगत मोह मन हरष विसेषी॥
अति सभीत नारद पहिं आए। गहि पद आरत बचन सुनाए॥

**शिव गण :** (नारद जी के पैरों में गिरकर) क्षमा.. ! मुनिवर क्षमा...!! हे मुनिनाथ ! हम शिवजी के गण हैं ब्राह्मण नहीं। हमने बड़ा अपराध किया जिसका फल पा लिया। अब शाप नष्ट करने की कृपा कीजिए।

**नारद जी :** हे गणों ! मेरा शाप मिथ्या नहीं जाता। सुनो.....?
अब तुम दुनियाँ के अन्दर, बलवान असुर हो जाओगे।
जीतोगे सभी दिग्गजों को, अति शूरवीर कहलाओगे॥

रिसि मनुष्यों को दुख दे करके, तुम कष्ट बहुत पहुँचाओगे ।
भगवान विष्णु लें जन्म तभी, उनसे तुम युद्ध मचाओगे ॥
कर घोर युद्ध रण के अन्दर, प्रभु के हाथों मारे जाओगे ।
छूटोगे भव के बन्धन से, उस जन्म से मुक्ति पाओगे ॥

**शिव गण :** (पैरों में गिरकर) धन्य हो मुनिराज ! (शिव गणों का जाना)

**॥ चौपाई ॥**

चले जुगल मुनि पद सिर नाई । भय निसाचर कालहिं पाई ॥

**नारद जी :** (विचरते हुए) नारायण ..... ! नारायण ..... ! !

**पर्दा गिरना**

# राजा मनु का भगवान विष्णु से वर पाना

## (श्री रामावतार कथा प्रसंग)

**सीन तेरहवाँ**

**स्थान :** जंगल ।

**दृश्य :** राजा मनु तथा रानी शतरूपा मुनि वेष में एक पैर पर खड़े हुए तपस्या कर रहे हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा । जिन्ह तें मैं नर सृष्टि अनूपा ॥
बरबस राज सुताहि तब दीन्हा । नारि समेत गवन वन कीन्हा ॥

**॥ दोहा ॥**

द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग ।
बासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग ॥

**॥ चौपाई ॥**

उर अभिलाष निरंतर होई । देखिअ नयन परम प्रभु सोई ॥
बिधि हरि हर तप देखि अपारा । मनु समीप आए बहुबारा ॥
मागहु बर बहुभाँति लोभाए । परम धीर नहिं चलहिं चलाए ॥

**ब्रह्मा जी :** (प्रवेश करके) हे राजन ! हम तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न

हैं । वर माँगो । (राजा मनु का अडिग रहना । ब्रह्मा जी का चले जाना)

**विष्णु :** (प्रवेश करके) हे राजा मनु ! तुम्हारी तपस्या पूर्ण हो चुकी । अब तुम मन चाहा वर माँगों । (राजा मनु का अडिग रहना । विष्णु का चला जाना)

**शिवजी :** (प्रवेश करके) हे राजा मनु और रानी शतरूपा ! हम तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हैं । तुम्हारी जो इच्छा हो वह वर माँगो । (राजा मनु तथा रानी शतरूपा का अड़िग रहना । शिवजी का जाना)

**॥ चौपाई ॥**

प्रभु सर्वग्य दास निज जानी । गति अनन्य तापस नृप रानी ॥
मागु मागु बरू मैं नभ बानी । परम गभीर कृपा मृत सानी ॥

**आकाशवाणी :** वर माँगों !

**॥ चौपाई ॥**

मृतक जिआवनि गिरा सुहाई । श्रवन रंध्र होउ उर जब आई ॥
हष्ट पुष्ट तन भय सुहाए । मानहुँ अबहिं भवन ते आए ॥

**मनु व शतरूपा :** (अपना शरीर टटोलते हुए) हे प्रभो ! सुनिये . . . . . ? यदि हम लोगों पर आपका स्नेह हैं तो प्रसन्न होकर यह वर दीजिये कि आपका जो स्वरूप शिवजी के मन में बसता है और जिसकी प्राप्ति के लिए मुनि लोंग यत्न करते हैं । जो काकभुशुण्डि के मन रूपी मान सरोवर में बिहार करने वाला हंस है । सगुण और निर्गुण कहकर वेद जिसकी प्रशंसा करते हैं । हे शरणागति के दुख हरने वाले प्रभो ! हम उसी रूप को नेत्र भर कर देखें ।

**॥ चौपाई ॥**

दंपति बचन परम प्रिय लागे । मृदुल बिनीत प्रेम रस पागे ॥
भगत बछल प्रभु कृण निधाना । बिस्वबास प्रगटे भगवाना ॥

॥ दोहा ॥

बोले कृपानिधान मुनि अति प्रसन्न मोहि जानि ।
मागहू बर जोई भाव मन महादानि अनुमानि ॥

**विष्णु :** (प्रगट होकर) हे राजन ! मुझे अत्यन्त प्रसन्न जानकर और बड़ा भारी दानी मानकर मन को भाये वही वर माँग लो ।

**राजा मनु :** (हाथ जोड़कर) हे नाथ ! आपके चरण कमलों को देखकर अब हमारी सब मनोकामनायें पूर्ण हो गयीं । फिर भी मन में एक बड़ी लालसा है ।

**विष्णु :** (मुस्कराकर) तो फिर बताओ ना.....?

**मनु :** (सकुचाते हुए) मैं आपके समान पुत्र चाहता हूँ ।

॥ चौपाई ॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले । एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई । नृप तब तनय होय मैं आई ॥

**विष्णु :** (हाथ उठाकर) ऐसा ही हो । हे राजन ! मैं अपने समान दूसरा कहाँ जाकर खोजूँ ? अतः स्वयं ही आकर तुम्हारा पुत्र बनूँगा ।

॥ चौपाई ॥

सतरुपहि बिलोकि कर जोरें । देवि मागु बरु जो रुचि तोरें ॥

**विष्णु :** (शतरूपा की ओर घूमकर) हे देवी ! तुम्हारी इच्छा हो वह वर माँगो ।

**शतरूपा :** (हाथ जोड़कर) हे प्रभो ! मेरा अलौकिक ज्ञान कभी नष्ट न हो ।

**विष्णु :** (हाथ उठाकर) हे माता ! मेरी कृपा से तुम्हारा अलौकिक ज्ञान कभी भी नष्ट नहीं होगा ।

॥ चौपाई ॥

बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी । अवर एक बिनती प्रभु मोरी ॥

**मनु :** (हाथ जोड़कर) हे प्रभो ! आपके चरणों में मेरी वैसी ही प्रीति हो जैसी पुत्र के लिए पिता की होती है । साथ ही

साथ जिस प्रकार मणि के बिना सर्प तथा जल के बिना मछली जिन्दा नहीं रह सकती उसी प्रकार मेरा जीवन भी आपके बिना न रह सके।

॥ चौपाई ॥

अस बरू मागि चरन गहि रहेऊ । एवमस्तु करुना निधि कहेऊ ॥

**विष्णु :** (हाथ उठाकर) ऐसा ही हो। अब तुम मेरी आज्ञा मानकर देवराज इन्द्र की राजधानी अमरावती में जाकर बास करो। हे तात ! वहाँ स्वर्ग के बहुत से भोग भोगकर कुछ काल बीत जाने पर तुम अवध के राजा होगे तब मैं तुम्हारा पुत्र होऊँगा।

(विष्णु का अर्न्तध्यान होना)

॥ चौपाई ॥

पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना । अंतरधान भय भगवाना ॥
दंपति उर धरि भगत कृपाला । तेहिं आश्रम निवसे कछु काला ॥
समय पाइ तनु तजि अनयासा । जाइ कीन्ह अमरावति बासा ॥

पर्दा गिरना

द्वितीय दिन

# रावण-कुम्भकरण-विभीषण जन्म

## (श्री रामावतार कथा प्रसंग)

**सीन चौदहवाँ**

**स्थान :** जंगल।

**दृश्य :** कपटी राजा मुनि भेष में बैठा ध्यान में लीन है।

पर्दा उठना

॥ चौपाई ॥

फिरत विपिन आश्रम एक देखा । तहं बस नृपति कपट मुनि वेषा ॥
जासु देस नृप लीन्ह छुड़ाई । समर सेन तजि गयउ पराई ॥
तासु समीप गवन नृप कीन्हा । यह प्रतापरवि तेहि तब चीन्हा ॥

**प्रताप भानु :** (प्रवेश करके पैरों में गिरकर) मुनिवर ! प्रणाम ।

**मुनि :** (आर्शीवाद देते हुए) चिरंजीव रहो ।

**प्रताप भानु :** प्रभो ! प्यास से व्याकुल हो मेरे प्राण निकले जा रहे हैं। कृपा करके मेरी प्यास बुझाइए ।

**मुनि :** (सामने इशारा करके) देखो .....? वह सामने सरोवर है । उसमें जाकर अपनी थकान दूर करो ।

**प्रताप भानु :** (हाथ जोड़कर) जो आज्ञा महाराज ! (राजा का सरोवर तक जाकर अपनी प्यास बुझाना पिर लौटकर आश्रम पर आना)

**मुनि :** हे वीर पुरुष ! तुम कौन हो ? सुन्दर युवक होकर जीवन की चिन्ता न करके वन में अकेले क्यों फिर रहे हो ? तुम्हारे चक्रवर्ती राजा के से लक्षण देखकर मुझे भारी दया आती है ।

**प्रताप भानु :** (हाथ जोड़कर) हे मुनिवर ! प्रताप भानु नाम का एक राजा है । मैं उन्हीं का मंत्री हूँ । एक सूअर के शिकार के धोखे में रास्ता भूल गया । बड़े भाग्य से आकर आपके चरणों को देखा है ।

**मुनि :** हे सुजान ! तुम्हारा नगर यहाँ से सत्तर योजन पर है । घोर रात्रि का समय है । सघन वन है । इसमें रास्ता नहीं है । अब तुम यहीं पर विश्राम करो । सवेरा होते ही चले जाना ।

**प्रताप भानु :** (चरण पकड़कर) हे प्रभो ! मुझे अपना पुत्र और सेवक जानकर अपना नाम कहिए ।

**मुनि :** हे पुत्र ! धनहीन और घर रहित होने से अब हमारा नाम भिखारी है ।

**प्रताप भानु :** महाराज ! आप जैसे महान त्यागी ही भगवान को प्रिय होते हैं ।

**मुनि :** (मुस्कराकर) हे भद्र ! संसार में प्रतिष्ठा अग्नि के समान है जो तप रूपी बन को जला डालती है । इसी से संसार में मैं गुप्त रहता हूँ और भगवान को छोड़ किसी से भी मतलब

नहीं रखता परन्तु तुम्हारा प्रेम देखकर मुझे तुम पर विश्वास हो गया है। हे भाई ! मेरा नाम एकतनु है।

**प्रताप भानु :** (सिर नवाकर) प्रभो ! मैं समझा नहीं.....?

**मुनि :** हे तात ! जब सृष्टि का निर्माण हुआ था तभी मेरी उत्पत्ति हुई थी फिर मैंने दूसरी देह धारण नहीं की। हे पुत्र ! आश्चर्य मत करो। संसार में ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो तप से न मिल सके।

**प्रताप भानु :** (पैर पकड़कर) हे नाथ ! मुझे क्षमा कीजिए। मैंने आपसे कपट किया था। मैं.....?

**मुनि :** राजन ! मैं तुमको जानता हूँ। तुमने कपट किया था यह मुझको अच्छा लगा। राजा लोग जहाँ-तहाँ अपना नाम नहीं कहते। तुम्हारा नाम प्रताप भानु है। सत्यकेतु तुम्हारे पिता थे। हे राजन ! मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ। जो मन को भाए वही माँगो।

**प्रताप भानु :** (पैर पकड़कर) प्रभो ! आपके दर्शन से ही चारों पदार्थ मेरी हथेली में आ गये। फिर भी.....?

**मुनि :** (मुस्कराकर) संकोच मत करो।

**प्रताप भानु :** हे स्वामी ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो यह वर दीजिए कि मुझे युद्ध में कोई जीत न सके और पृथ्वी पर मेरा सौ कल्प तक एकक्षत्र राज्य हो।

**मुनि :** (हाथ उठाकर) ऐसा ही हो परन्तु.....?

**प्रताप भानु :** (अचरज से) परन्तु क्या.....?

**मुनि :** हे राजन ! एक ब्राह्मण कुल को छोड़कर काल भी तुम्हारे चरणों में सिर नवायेगा। हे नरनाथ ! यदि ब्राह्मणों को वश में कर लो तो ब्रह्मा-विष्णु और महेश भी तुम्हारे वश में हो जायेंगे।

**प्रताप भानु :** (हर्षित होकर) अब मेरा नाश नहीं होगा। प्रभो ! ये ब्राह्मण किस प्रकार वश में हो सकते हैं। वह उपाय बताइए।

**मुनि :** हे राजन ! संसार में अनेकों उपाय हैं परन्तु वे कष्टदायक हैं। हाँ.....? एक उपाय अत्यन्त सरल है।

**प्रताप भानु :** तो शीघ्र कहिए मुनिराज !

**मुनि :** वह उपाय मेरे अधीन है परन्तु तुम्हारे नगर में मेरा जाना असम्भव है।

**प्रताप भानु :** (अचरज से) आखिर क्यों .....? प्रभो ! पृथ्वी हमेशा अपने सिर पर धूल को धारण करती है। मेरे लिए इतना त्याग तो कर ही दीजिए।

**मुनि :** (खुश होकर) अच्छा .....? हे राजन ! मैं तुम्हारा काम अवश्य करूँगा परन्तु एक बात याद रखना.....?

**प्रताप भानु :** वह क्या.....?

**मुनि :** योग, उपाय, तप और मंत्रों का प्रभाव तभी फलता है जब वे गुप्त रूप से किये जाते हैं।

**प्रताप भानु :** आप मुझ पर पूरा भरोसा रखिये मुनिराज !

**मुनि :** तो सुनो .....? यदि मैं भोजन बनाऊँ और तुम उसे परोसो तथा मुझे कोई न जान सके तो उस भोजन को जो-जो करेगा वही तुम्हारे अधीन हो जायेगा।

**प्रताप भानु :** (पैर पकड़कर) धन्य हो मुनिराज ! मैं वायदा करता हूँ कि यह भेद-भेद ही रहेगा।

**मुनि :** (मुस्कराकर) तब ठीक है। अब मैं तप के बल से सोते ही मैं तुमको घर पहुँचा दूँगा।

**पर्दा गिरना**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

तुलसी जसि भवतव्यता तैसी मिलइ सहाइ ।
आपनु आवइ नाहि पहिं नाहिं तहाँ लै जाइ ॥

**सीन पन्द्रहवाँ**

**स्थान :** महल।

**दृश्य :** ब्राह्मण पंक्ति में बैठे हैं और राजा भोजन लिए हुए खड़ा है।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

भोजन कहुँ सब विप्र बोलाए । पद पखारि सादर बैठाए ॥
परुसन जबहिं लाग महिपाला । भै अकासबानी तेहि काला ॥

**(राजा का भोजन परोसने को झुकना)**

**आकाशवाणी :** हे ब्राह्मणों ! उठ-२ कर अपने घर जाओ। रसोई में ब्राह्मणों का माँस बना है।

**ब्राह्मण :** (खड़े होकर क्रोध से) हे मूर्ख राजा ! तूने हमारा धर्म नष्ट करने की कोशिश की। जा . . . . . ? तू अपने परिवार सहित जाकर निसाचर हो। तूने सपरिवार ब्राह्मणों को बुलाकर नाश करना चाहा था अब तू कुटुम्ब सहित नष्ट होगा।

**पर्दा गिरना**

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा । भयउ निसाचर सहित समाजा ॥
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा । रावन नाम वीर बरिबंडा ॥
भूप अनुज अरिमर्दन नामा । भयउ सो कुंभकरन बलधामा ॥
सचिव जो रहा धरम रुचि जासू । भयउ बिमात्र बंधु लघु तासू ॥
नाम विभीषन जेहि जग जाना । विष्णु भगत विग्यान निधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृप केरे । भय निसाचर घोर घनेरे ॥

**॥ दोहा ॥**

उपजे जदपि पुलस्त्य कुल पावन अमल अनूप ।
तदपि महीसुर श्राप बस भय सकल अघ रूप ॥

# ब्रह्मा जी का रावण-कुम्भकरण-विभीषण को वर देना

**(श्री रामावतार कथा प्रसंग)**

## सीन सोलहवाँ

**स्थान :** जंगल ।

**दृश्य :** रावण-कुम्भकरण-विभीषण तपस्या कर रहे हैं ।

### पर्दा उठना

### ॥ व्यास : चौपाई ॥

कीन्ह बिविध तप तीनहुं भाई । परम उग्रनहिं बरनि सो जाई ॥
गयउ निकट तप देखि बिधाता । मांगहु बर प्रसन्न मैं ताता ॥

**ब्रह्मा जी :** (प्रवेश करके रावण के पास आकर) रावण ! हम तेरी तपस्या से बहुत प्रसन्न हैं ।
तप देखि कठिन तेरा रावण, हर्षित हुआ हृदय हमारा है ।
ले माँ आज बरदान कोई, जो माँगे वही तुम्हारा है ॥

**रावण :** प्रभो ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे अजर-अमर कर दीजिए । तीनों लोकों में मुझे कोई मारने वाला न हो ।

**ब्रह्मा जी :** बेटा ! यह तो असम्भव है ।

**रावण :** (विस्मय से) क्यों ..... ?

**ब्रह्मा जी :** क्योंकि सृष्टि का नियम है कि जो इस पृथ्वी पर पैदा हुआ है वह एक दिन जरूर मरेगा ।

**रावण :** लेकिन प्रभो ! आप तो सर्वशक्तिमान हैं ।

**ब्रह्मा जी :** यह तो ठीक है परन्तु ..... ? इस मृत्युलोक का संचालन हम अकेले नहीं करते । मैं पैदा करता हूँ । विष्णु पालन करते हैं और महेश संहार करते हैं इसलिए यह सब मेरे अधिकार के बाहर की बात है ।

**रावण :** किन्तु प्रभो ! यह नियम आपके तो लोक में नहीं चलता ।

**ब्रह्मा जी :** नहीं... ? वहाँ किसी भी देवता पर यह नियम लागू नहीं होता ।

**रावण :** और ब्रह्मलोक में आपका आसन भी सबसे ऊँचा है ।

**ब्रह्मा जी :** (मुस्कराकर) सत्य है ।

**रावण :** और यह भी सत्य है कि मृत्युलोक का प्राणी आपकी शक्ति

का मुकाबला नहीं कर सकता।

**ब्रह्मा जी :** बिल्कुल ठीक।

**रावण :** (व्यंग से चुटकी मसलते हुए) तब ये नर... ! बानर.... ! ! मच्छर..... ! मुनगे..... ! हा..... हा..... हा.....
नर बानर का डर नहीं, सुनिये कृपानिधान ।
और किसी से ना मरू, देउ मुझे बरदान ।

**रावण :** (अहंकार से) अब ब्रह्मा-विष्णु और महेश भी मुझे नहीं मार सकते।

**ब्रह्मा जी :** बिल्कुल ठीक।

**रावण :** (हँसकर) तब मैं सर्वशक्तिमान हो गया। हा... हा... हा मैं भगवान का भगवान हूँ। मेरा नाम रावण है रावण... ! हा..... हा..... हा.....

**॥ चौपाई ॥**

पुनि प्रभु कुंभकरन पहिं गयऊ । तेहि बिलोकि मन बिसमय भयऊ ॥
सारद प्रेरि तासु मति फेरी । मांगेसि नींद माँस षट केरी ॥

**ब्रह्मा जी :** (कुम्भकरन को देखकर तिरछा होकर) यदि यह दुष्ट नित्य भोजन करेगा तो सारा संसार चौपट हो जायेगा। इसलिए सरस्वती को बुलाकर इसकी बुद्धि फेरनी चाहिए। (ब्रह्मा जी का मंत्र फूंकना। सरस्वती का प्रकट होना)

**सरस्वती :** (ब्रह्मा जी के चरणों में सिर नवाकर) आज्ञा प्रभो !

**ब्रह्मा जी :** (कुम्भकरन की तरफ इशारा करके) इसकी बुद्धि फेर दो।

**सरस्वती :** (हाथ जोड़कर) जो आज्ञा प्रभो ! (सरस्वती का कुम्भकरन के पीछे जाकर खड़ा हो जाना)

**ब्रह्मा जी :** (कुम्भकरन के पास आकर) वर माँगों।

**कुम्भकरन :** (उनींदा से होकर) आप कौन हैं ?

**ब्रह्मा जी :** हम ब्रह्मा हैं। तुम्हें वरदान का आश्वासन देने आये हैं।

**कुम्भकरन :** (हँसकर) ओ हो..... आप ब्राह्मण हैं और मुझे आसन देने आये हैं। (जंभाई लेते हुए) तब जल्दी दीजिए न आसन।

(हाथ जोड़कर) हे ब्राह्मण देवता ! मुझे ऐसा आसन दीजिये जिस पर मैं आराम से सोता रहूँ। समझे आप ! मुझे चाहिए ... ? निद्रासन..... !

**ब्रह्मा जी :** (हाथ उठाकर) तथास्तु। (सरस्वती का हट जाना)

**रावण :** (क्रोधित होकर) कुम्भकरन..... !

**मूर्ख :** तेरी बुद्धि को क्या हो गया है ? बोल..... ? ? त्रिलोक विजयी रावण के होते हुए तुझे किस वस्तु की कमी थी जो तू निद्रासन माँग बैठा। मुझे क्या पता था कि तू बिल्कुल निकम्मा और कायर है। सोच तो मैं भी रहा था जब तू ब्रह्मा जी को ब्राह्मण जी कह रहा था कि कहीं तू अनर्थ न कर डाले। स्वर्गलोक का आनन्द तेरे भाग्य में ही नहीं था वरना इन्द्रासन माँगने में क्या तेरी जीभ कट गई थी।

**कुम्भकरन :** (शर्मिन्दा होकर) भैया ! अब मैं क्या करूँ ?

**रावण :** (ब्रह्मा जी की ओर आँख से इशारा करके) मैं क्या जानूँ ?

**कुम्भकरन :** (ब्रह्मा जी के पैरों में गिरकर) हे ब्रह्मा जी ! आप ही मेरा भला कीजिए। स्वर्ग का वैभव ! अप्सराओं का यौवन ! ! इस दास को भोगने का अवसर दीजिए। नहीं तो मैं ... ? जीते जी मर जाऊँगा। जीवन भर जिन्दा लाश बनकर रह जाऊँगा। बोलो..... ? ब्रह्मा जी ! बोलो..... ? क्या फायदा इन आँखों से जो संसार की सुन्दरता देख नहीं सकतीं। क्या फायदा इन कानों से जो संसार के गुणगान सुन नहीं सकते। क्या फायदा इस जिह्वा का जो सांसारिक पदार्थों का स्वाद ले नहीं सकतीं।

**ब्रह्मा जी :** (कुम्भकरन को उठाते हुए) कुम्भकरन ! तुम्हारी दीनता पर मुझे भी तरस आ रहा है।

**कुम्भकरन :** (गिड़गिड़ाते हुए) फिर कोई उपाय कीजिये प्रभो ! नहीं तो मैं..... ? बेमौत मारा जाऊँगा।

**ब्रह्मा जी :** (सोचते हुए) हाँ ... ? याद आया .... ? एक उपाय है।

**कुम्भकरन :** शीघ्र कहिए.....? भगवन !

**ब्रह्मा जी :** हम तुमको एक मौका दे सकते हैं।

**कुम्भकरन :** (खुश होकर) तो क्या मैं दुबारा बरदान माँग लूँ।

**ब्रह्मा जी :** नहीं.....? अब ऐसा नहीं हो सकता.....??

**कुम्भकरन :** (विस्मय से) तब फिर.....?

**ब्रह्मा जी :** तुम सांसारिक सुख भोगना चाहते हो।

**कुम्भकरन :** कौन नहीं चाहता प्रभो !

**ब्रह्मा जी :** तब फिर छः माह बाद हम तुम्हें एक दिन का मौका देंगे जब तुम खूब सांसारिक सुख भोगना फिर.....?

**रावण :** (व्यंग से) छः माह के लिए फिर सो जाना। ठीक है न ब्रह्मा जी ! हा... हा... हा.... खूब....? बहुत खूब....?? आपने भी ऊँट के मुँह में जीरा डाल दिया। (दुखी मन से) ब्रह्मा जी ! आप नहीं समझ सकते.....? कुम्भकरन मेरा भाई ही नहीं अपितु मेरी दाहिनी भुजा था जिसे आपने तोड़कर रख दिया है। (क्रोधित होकर कुम्भकरन से) मूर्ख ! अब क्या देखता है? जा .....? अपनी कथनी पर पश्चाताप के आँसू बहाता रह। सारी जिन्दगी जिन्दा लाश बना सड़ता रह। तेरे भाग्य में यही लिखा था। हुँ......!

**॥ व्यास : दोहा ॥**

गए विभीषन पास पुनि कहेउ पुत्र बर माँगु ।
तेहि माँगेउ भगवंत पद कमल अमल अनुराग ॥

**ब्रह्मा जी :** (विभीषण के पास आकर) हे पुत्र ! वर माँगों।

**बिभीषण :** (चरणों में गिरकर) हे प्रभो ! भगवान के चरणों में मेरी निर्मल प्रीति हो।

**ब्रह्मा जी :** तथास्तु।

**रावण :** (क्रोधित होकर) भगवान .....! भगवान .....!! भगवान .....!!! कौन भगवान .....? किसका भगवान.....?? कैसा भगवान.....??? हुँ.....! मैं

भगवान का भगवान हूँ। ब्रह्मा-विष्णु-महेश भी मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते । हा.... ! हा..... हा..... हा..... ! सुन रहे हो.....? विभीषण..... !

**विभीषण :** (चरणों में गिरकर) हाँ..... भैइया..... ! परन्तु.....?

**रावण :** (अचरज से) परन्तु..... क्या.....?

**विभीषण :** भगवान अजर-अमर हैं।

**रावण :** (घमण्ड से) हम भी अजर अमर हैं।

**विभीषण :** परन्तु..... ? नर बानर..... !

**रावण :** (व्यंग से) नर... वानर...... ! मृत्युलोक के प्रार्णा..... ! (चुटकी मसलते हुए) मच्छर... भुनगे..... ! इनको मैं क्षणमात्र में मसलकर रख दूँगा। हा... हा... हा...

**विभीषण :** (डरते हुए) परन्तु..... ? भैया..... ! अगर शेर गीदड की खाल ओढ़ ले तो क्या वह बलहीन हो जायेगा?

**रावण :** (झुंझलाते हुए) आखिर तुम कहना क्या चाहते हो..... ?

**विभीषण :** मेरा मतलब है कि..... ? अगर नारायण खुद नर रूप में आ गये तब..... ?

**रावण :** (व्यंग से) तब तू नारायण नारायण जपता रहना। ब्रह्मा जी ! इस मूर्ख को बता दो..... ? हम क्या हैं..... ?? हा... हा... हा... !

**ब्रह्मा जी :** (मुस्कराकर) बेटा ! मैं क्या बता दूँ..... ? समय आने पर तुम खुद भी समझ जाओगे। अच्छा..... ? अब हम चलते हैं।

**(ब्रह्मा जी का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

तिन्हहि देइ वर ब्रह्म सिधाए । हरषित ते अपने गृह आए ॥

# रावण का विवाह

## (श्री रामावतार कथा प्रसंग)

**सीन सत्रहवाँ**

**स्थान :** जंगल।

**दृश्य :** मयदानव अपनी बेटी मन्दोदरी के साथ एक पत्थर की शिला पर बैठा है।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

मय तनुजा मन्दोदरि नामा । परम सुन्दरी नारि ललामा ॥

(मय दानव का मन्दोदरी के साथ बाहर आना)

**पर्दा गिरना**

**दूत :** (जंगल में घूमते हुए मय दानव और मन्दोदरी को देखकर) कौन हो तुम.....?

**मय दानव :** (क्रोध से) देखता नहीं.....? मैं हूँ मय दानव और यह मेरी बेटी है। जानता नहीं.....? सृष्टि पर मेरा एक क्षत्र राज्य है। तू कौन है?

**दूत :** (हाथ जोड़कर) महाराज ! मैं राजा रावण का दूत हूँ।

**मय दानव :** यहाँ क्या लेने आया है?

**दूत :** महाराज ! हमारे राजा विवाह करना चाहते हैं। (मन्दोदरी की ओर इशारा करके) अगर आज्ञा हो तो.....?

**मय दानव :** (क्रोध से) क्या कहा.....? मैं अपनी बेटी से विवाह कर दूँ। (पंजा आगे करके व्यंग से) जा.....? अपने महाराज से जाकर कहना कि अगर वह मेरा पंजा झुका देगा तो मेरी बेटी उसे अपने गले का हार बना लेगी।

**दूत :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज ! (दूत का जाना)

**पर्दा उठना**

**स्थान :** महल।

**दृश्य :** रावण बैठा हुआ है ।

**दूत :** (प्रवेश करके) महाराज की जय हो ।

**रावण :** बना कोई काम ।

**दूत :** (खुश होकर) सरकार ! काम तो बन गया परन्तु विवाह से पहले आपको अपनी शक्ति की परीक्षा देनी होगी ।

**रावण :** क्या मतलब ?

**दूत :** (हाथ जोड़कर) अन्नदाता ! महादानव की बेटी मन्दोदरी परम सुन्दरी है परन्तु विवाह से पहले मय दानव से टकराना होगा । उसकी शर्त है कि उसका पंजा झुकाने वाला ही उसकी बेटी के गलें का हार बन सकेगा ।

**रावण :** (घमण्ड से) आज मेरे समान सारे संसार में कौन बलवान है ? चलो .....? मैं अपनी ताकत से उसका गर्व चूर्ण कर दूँगा ।

**दूत :** निःसन्देह ऐसा ही होगा । चलिए महाराज ! (रावण का दूत के साथ पर्दे से बाहर आना)

**दूत :** (मय दानव के पास आकर) महाराज ! हमारे सरकार को आपकी शर्त मंजूर है ।

**मय दानव :** (मुस्कराकर) तो फिर देर किस बात की है ? बुलाओ अपने महाराज को ।

**दूत :** (रावण के पास आकर) चलिये सरकार ! अब मंजिल दूर नहीं है ।

**रावण :** चलो । (दूत का रावण के साथ मय दानव के पास आना)

**मय दानव :** (रावण को देखकर व्यंग से) तो ...... तुम हो ? मुझसे मुकाबला करना चाहते हो । (पंजा आगे करके) लो .....? आगे बढ़ो और अपनी ताकत का परिचय दो ।

**रावण :** (क्रोध से) अरे दुष्ट ! पंजा तो क्या चीज है मैं तुझे भी तोड़ कर रख दूँगा ।

**मय दानव :** (क्रोध से) ज्यादा बातें न बना । आगे बढ़कर अपनी ताकत

दिखा। (दोनों का पंजा लड़ाना। मय दानव का अपनी हार स्वीकार करना)

॥ चौपाई ॥

सोइ मयं दीन्हि रावनहि आनी । होइहि जातु धान पति जानी ॥

**मय दानव :** (खुश होकर) बेटी ! आगे बढ़ो।

**मन्दोदरी :** (रावण के पैरों में गिरकर) चरणों की दासी को आज्ञा दीजिए स्वामी !

**रावण :** (मन्दोदरी को उठाकर छाती से लगाकर) प्रिये ! तुम्हारा स्थान वहाँ नहीं यहाँ है।

**मय दानव :** हे तात ! मेरी बनाई हुई सोने की लंका यक्षों के कब्जे में है तुम अपने पौरुष से उसे जीतकर एक क्षत्र राज्य करो।

**रावण :** ऐसा ही होगा। अच्छा.....? जय शंकर की। (रावण का दूत तथा मन्दोदरी के साथ जाना)

॥ चौपाई ॥

हरषित भयउ नारि भलि पाई । पुनि दोउ बंधु बिआहेसि जाई ॥
फिर सब नगर दसानन देखा । गयउ सोच सुख भयउ बिसेषा ॥
सुन्दर सहज अगम अनुमानी । कीन्हि तहाँ रावन रजधानी ॥

# रावण का अत्याचार

## (श्री रामावतार कथा प्रसंग)

### सीन अठारहवाँ

**स्थान :** दरबार।

**दृश्य :** रावण, मंत्री, मेघनाद तथा सैनिकों के साथ बैठा है।

**पर्दा उठना**

॥ चौपाई ॥

दस मुख बैठ सभाँ एक बारा । देखि अमित आपन परिवारा ॥
मेघनाद कहुं पुनि हंकरावा । दीन्ही सिख बलु बयरु बढ़ावा ॥

**रावण :** पुत्र मेघनाद !

मेघनाद ! (उठकर सिर नवाकर) आज्ञा पिताजी !

रावण : बेटा ! देवतागण हमारे शत्रु हैं। वे सामने आकर युद्ध नहीं करते। उनको खत्म करने का एक ही उपाय है ब्राह्मण भोज, यज्ञ, हवन और श्राद्ध इन सब में जाकर तुम बाधा डालो तब भूख से दुर्बल और बलहीन हुए देवता हमसे आसानी से मिल जायेंगे तब हम या तो उन्हें मार डालेंगे अथवा भली प्रकार वश में करके छोड़ देंगे तब वे हमारी दासता स्वीकार कर लेंगे। हे तात ! जो देवता बलवान और हेकड़ स्वभाव के हैं उन्हें युद्ध में जीतकर बाँध लाना।

मेघनाद : (सिर नवाकर) ऐसा ही होगा पिताजी ! आप निश्चिन्त रहें। अच्छा पिताजी ! जय शंकर की। (मेघनाद का सैनिकों के साथ जाना)

पर्दा गिरना

**सीन उन्नीसवाँ**

स्थान : जंगल।

दृश्य : मुनि आश्रम में तीन मुनि कीर्तन कर रहे हैं।

पर्दा उठना

कीर्तन

भजि मन नारायण - नारायण - नारायण !
लक्ष्मी पति नारायण - नारायण - नारायण ! !

॥ चौपाई ॥

करहिं उपद्रव असुर निकाया । नाना रूप धरहिं करि माया ॥
जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला । सो सब करहिं वेद प्रतिकूला ॥

सैनिक-१ : (दो सैनिकों के साथ प्रवेश करके डपटकर) बन्द करो यह बकवास। चिल्ला-चिल्ला कर आसमान क्यों सिर पर उठा रहे हो ?

मुनि-१ : (विनीत भाव से) यह चिल्लाना नहीं, प्रभु का कीर्तन है।

**सैनिक-२ :** (क्रोध से) प्रभु ! किसका प्रभु .....? कैसा प्रभु .....? ? निशाचर राज महाराज रावण के अलावा कोई दूसरा भी प्रभु है । नहीं .....? ऐसा नहीं हो सकता ? ?

**मुनि-२ :** (ऊंपर आसमान की ओर हाथ उठाकर) यह मायापति प्रभु ! जो कण-कण में व्याप्त है । रावण जैसे करोड़ों जीवों को रोज बनाता मिटाता है । उसी प्रभु का कीर्तन ..... !

**सैनिक-३ :** (दाँत पीसते हुए) कर रहे हो । क्या पागल हो गये हो जो इस तरह अन्ट-सन्ट बक रहे हो ।

**सैनिक-१ :** पागल हो या चतुर ! हमें इससे कुछ भी लेना-देना नहीं ? हमें तो कर दो फिर खूब चिल्लाओ ।

**मुनि-१ :** (विस्मय से) कर .....? कैसा कर .....? ? राम ..... ! राम ..... ! ! कर तो कमाई करने वालों पर लगता है ।

**सैनिक-२ :** तुमको कमाने की कौन मना करता है ? यहाँ पड़े-२ हराम का खाते हो । भजन का बहाना करके लोगों को बेवकूफ बनाते हो । तुम सब आलसी और निकम्मे हो । परन्तु ...? याद रक्खो ......? ? राजा का कर तो देना ही पड़ेगा ।

**सैनिक-३ :** हाँ ..... ! जल्दी से कर चुकाओ । नहीं तो हम तुम्हारी कुटिया का सारा सामान नीलाम कर देंगे । समझे .....?

**मुनि-१ :** (दीनता से) अरे भाई ! हमारे पास कुटिया में लंगोटी और कमण्डल के अलावा रक्खा ही क्या है ? तुम स्वयं ही सोचो .....? हमारे पास देने को क्या है ? मुट्ठी भर हड्डियाँ, थोड़े से रक्त और माँस के अलावा हमारे पास रक्खा ही क्या है ?

**सैनिक-३ :** ठीक है .....? ती वही दो । (पास में रक्खा घड़ा उठाकर) तुम सब अपने रक्त से इसे भर दो । वही राजा का कर होगा ।

**सैनिक-२ :** (सैनिक नं० ३ के कंधे पर हाथ मारकर हँसते हुए) वाह ..? तूने अच्छी तरकीब सोची । इस रक्त को पाकर महाराज

रावण बहुत खुश होंगे और तुझे अफसर बना देंगे ।

**(मुनि आपस में एक दूसरे का मुँह देखते हैं)**

**सैनिक-१ :** (कोड़ा मारते हुए) जल्दी करो .....? मुँह ताकने से नहीं, रक्त देने से ही काम चलेगा । (मुनियों का डरते हुए चिमटे की नोक से हाथों से रक्त निकालकर घड़ा भरना ।

**मुनि-१ :** (घड़ा देते हुए) लो .....? इसे ले जाकर अपने राजा को देते समय कह देना कि प्रजा का रक्त चूसने वाला राजा थोड़े ही समय का होता है । यह हमारे रक्त का घड़ा उसके विनाश का कारण बनेगा ।

**सैनिक-१ :** (कोड़ा मारकर) चुप हो शैतान ! हमारे राजा के लिए अशुभ बात बोलता है ।

**सैनिक-२ :** (घड़ा लेकर) चलो .....? अपना काम हो गया । अब दूसरे मुनियों की खबर लेंगे । (सब सैनिकों का हँसते हुए जाना)

पर्दा गिरना

# मेघनाद का इन्द्र पर विजय पाना

## सीन बीसवाँ

**स्थान :** स्वर्गलोक ।

**दृश्य :** इन्द्र के साथ सूर्य, चन्द्र, पवन और वरुण आदि देवगण बैठे हैं ।

पर्दा उठना

**सूर्य :** (खड़ा होकर) हे देव ! पापी रावण का अत्याचार रोकने का कोई उपाय कीजिए ।

जग की छाती पर सोने की, लंका में निश्चर रहता है ।
हरिनाम न लेने देता है, जगदीश्वर खुद को कहता है ॥
आतंक यहाँ तक है उसका, चुपचाप कष्ट जग सहता है ।
शालायें जहाँ यज्ञ की हैं, रिसि रक्त वहीं पर बहता है ॥

**चन्द्र :** (खड़ा होकर) हे सुरेश ! सूर्यदेव ठीक कह रहे हैं ।
कोई भी सुन्दर स्त्री हो, निश्चर बलात ले जाते हैं ।
गन्धर्व, देव, मानव कन्या, निज पत्नी उसे बनाते हैं ॥

**वायु :** (खड़ा होकर) और मुझे लंका की ओर जाने में डर लगता है ।
सर्वत्र तीव्र गति से चलता, उस ओर मंद पड़ जाती है ।
निश्चर ज्यों ही लख पड़ता है, निस्वास बहुत बढ़ जाती है ॥

**वरुण :** (खड़ा होकर) हे देव !
मेरी भी ऐसी ही हालत है, जो पवन देव का कहना है ।
निश्चर सेवा करनी होगी, यदि जीवित जग में रहना है ॥
हम सारे हिम्मत हार चुके, इसलिए शरण में आये हैं ।
अब तो स्वामी रक्षा कीजै, पापी से अति घबराये हैं ॥

**इन्द्र :** देवताओं ! मुझसे कुछ छिपा नहीं है । मैंने रावण के दर्प को चूर्ण करने का निश्चय कर लिया है ।
जब भी मौका मिल जायेगा, निश्चय निज पूर्ण करूँगा मैं ।
इस वज्र चोट से रावण के, मस्तक को चूर्ण करूँगा मैं ॥

**मेघनाद :** (सैनिकों के साथ प्रवेश करके) कायर इन्द्र ! सुन ली तेरी शेखी । मेरे पिता का मस्तक चूर्ण करने से पहले मुझसे युद्ध कर अथवा अपने को हमारे हवाले कर ।

**इन्द्र :** (विस्मय से) कौन ? रावण सुत मेघनाद ! मेरे स्वर्ग में . . . ?

**मेघनाद :** अरे मूर्ख ! यह स्वर्ग अब तेरा नहीं, निशाचर राज रावण का है ।

**इन्द्र :** मेघनाद ! अभी तू बालक है । तू मेरे वज्र की शक्ति को नहीं जानता । तूने युद्ध का नाम ही सुन लिया होगा । जा ? भाग जा और अपनी माता की गोद में छिप जा । तू युद्ध करना क्या जाने ? अपने पिता को युद्ध करने भेज ।

**मेघनाद :** (क्रोध से) मूर्ख इन्द्र ! क्या तूने मेरी वीरता के बारे में नहीं सुना ? मैं तेरे इस पुराने हड्डी के बज्र की शक्ति को खूब

जानता हूँ। (दोनों में युद्ध होना। मेघनाद द्वारा इन्द्र के साथ देवगणों को बन्दी बना लेना)

**मेघनाद :** (मुस्कराकर व्यंग से) कहो इन्द्र ! कहाँ गई अब तेरे बज्र की शक्ति ? (सैनिकों से) ले चलो सबको लंका। बजा दो अब कूँच का डंका ! (सैनिकों का देवताओं को रस्सी से बाँधकर लंका को प्रस्थान)

**पर्दा गिरना**

# रावण द्वारा शिवजी से शक्ति पाना

## सीन इक्कीसवाँ

**स्थान :** कैलाश पर्वत की तलहटी।

**दृश्य :** रावण विमान में मंत्री के साथ बैठा जा रहा है।

**पर्दा उठना**

**(चलते-२ विमान का रुक जाना)**

**रावण :** (विस्मय से) अरे .....? अचानक चलते-२ विमान क्यों रुक गया ?

**रावण :** हुआ है किसमें साहस, जो मरे रावण से टकराकर।
पड़ा है कौन मृत्यु के भंवर में, मेरे सामने आकर ॥
अभी तक क्या कोई, ऐसा भी योधा है।
कि जिसने मार्ग में चलते, मेरे वाहन को रोका है ॥

**मंत्री :** महाराज ! आपका तो व्यर्थ ही यह रोष है।
मेरी समझ में तो वायु का यह दोष है ॥

**रावण :** (क्रोध से) वायु .....? क्या उसमें शक्ति है जो मेरी इच्छा के विपरीत चल सके।
वायु का बल मैं जानता हूँ, उसमें मम दहशत छाई है।
मुद्दत से मेरे पैरों ने, वायु हो ती ठुकराई है ॥

**मंत्री :** तो फिर इन्द्र की चाल होगी।

**रावण :** इन्द्र की चाल .....?

वह कायर और निकम्मा है, उससे मेरा न कुछ नाता है ।
जग में वीरों की गिनती में, हरगिज न गिना वह जाता है ॥
औकात न किसी देव की है, रावण के पथ में ज़ो आये ।
रावण से ठुक पिट करके वह, निज करनी पर फिर पछिताये ॥
दुनियाँ में किसकी हिम्मत है, रावण के रथ को रोक सके ।
मैं स्वेच्छाचारी हूँ, बलशाली हूँ, कौन मुझे जो टोक सके ॥

**नन्दी :** (प्रवेश करके) लंकेश !

**रावण :** (क्रोध से) तुम कौन हो.....?

**नन्दी :** तुम मुझे नहीं जानते । मैं शिवजी का अनुचर हूँ.... नन्दी ।

**रावण :** नन्दी ! क्या तुमने ही विमान को रोका है ?

**नन्दी :** महाराज ! इस रार को और न बढ़ाइए। दूसरी ओर से निकल जाइए ।

**रावण :** (क्रोध से) क्या कहा.....? दूसरी ओर से निकल जाऊँ । चोर की भाँति छिपकर निकल जाऊँ । नहीं.....? कदापि नहीं.....? ?

उठाकर फैंक दू सामने, जो पर्वत भी आ जाये ।
समुद्र खुश्क हो जाये, जो मेरा नाम सुन पाये ॥
गिरा डालूँ अगर लोहे की, हो दीवार भी आगे ।
मिटा डालूँ अगर मौत का, हो आकार भी आगे ॥

**नन्दी :** (विनीत भाव से) महाराज ! मेरी भी सुनिये.....?

कैलाश पर्वत शिवजी का निवास स्थान है ।
उसके ऊपर से जाना उनका अपमान है ॥

**रावण :** (हँसकर) क्या कहा...? अपमान... ! कैसा अपमान..? किसका अपमान.....? ?

क्या शंकर भी है कोई महान शक्तिवान ।
जो अपने अपमान का रखता इतना ध्यान ॥
बढ़ाकर बाल योगी बन जमा कर शान बैठा है ।
महाराज है या मानों कोई भगवान बैठा है ॥

न समझी शान मेरी और न देखा दबदबा मेरा ।
भला है खेल कोई रोक लेना रास्ता मेरा ॥

**मंत्री :** (हाथ जोड़कर) अन्नदाता ! कहाँ ध्यान है ? महादेव की महिमा महान है ।

**रावण :** (व्यंग से) महादेव ... ! हा ... हा .... हा ... (घमण्ड से) मैं देव और महादेव जैसों की परवाह नहीं करता ।
भयंकर काल हूँ बिकराल हूँ, विषधर हूँ काला हूँ ।
जलाकर भस्म कर दूँगा, मैं वह प्रचण्ड ज्वाला हूँ ॥

**नन्दी :** (क्रोधित होकर) जाइए ..... ? जिस ओर आपकी इच्छा हो जाइए ..... ? ?

**रावण :** (घमण्ड से) हुँ ..... ! ठीक है ..... ?
अभी इस कैलाश को, सागर में डाल देता हूँ ।
और मैदान साफ कर, रास्ता निकाल लेता हूँ ॥
आ बचाये अब इसे, शक्ति कहाँ आकाश की ।
फैंक देता हूँ हिलाकर, अब जड़े कैलाश की ॥

**(क्रोध में रावण द्वारा कैलाश उठाने का प्रयास करना मगर असफल रहना)**

(विस्मय से) हैं ? यह क्या ... ? ? कभी मैंने यह कैलाश उठाकर अपने भुजबल को तोला था परन्तु आज ..... ?
बढ़ाऊँ मैं अगर साहस, तो हृदय काँप जाता है ।
लगाऊँ हाथ जब इसको, तो वह काँप जाता है ॥
न जाने हो गया बलहीन, दिल बलवान क्यों मेरा ।
कराया इस जगह पर आकर, अपमान क्यों मेरा ॥

**नन्दी :** (मुस्कराकर) क्यों महाराज ! कैसी निराशा है ? कैलाश उठाना क्या कोई तमाशा है ?
कहाँ है जोर वह जिससे, उठाये ये जमीं सिर पर ।
कहाँ है तेज वह जिस पर, बघारी शेखियाँ बढ़ कर ॥

**रावण :** ठहरो ..... ? एक बार फिर बल लगाने दो । (रावण द्वारा

कैलाश उठाने को जोर लगाना। तब उसकी उँगलियों का दब जाना)

रंच नहीं गिर हिल सका, है अचरज की बात ।
जाने कैसे फस गया, इसमें मेरा हाथ ॥

अरे मंत्री ! मेरी सहायता करो ।

**नन्दी :** (व्यंग से) क्यों महाराज !

अपने मुँह से बन रहे, थे भारी बलवान ।
कहाँ गई वह शक्ति, अरु कहाँ गया अभिमान ॥

**रावण :** (दुःखी होकर) अभिमान तो चूर हो गया। मैं हाथ निकालने में मजबूर हो गया। (मंत्री का पर्वत को उठाने में मदद करना परन्तु हाथ का न निकलना)

**नन्दी :** महादेव की शरण में जाओ और उन्हीं से हाथ निकलवाओ ।

**रावण :** (पर्वत के ऊपर को देखता हुआ)

हुआ है ज्ञात भोलेनाथ की महिमा अनोखी है ।
अजब लीला तुम्हारी नाथ हमने आज देखी है ॥
किया अभिमान जो मैंने यह फल उसका ही पाया है ।
दया हो नाथ अब तो शीश चरणों में झुकाया है ॥

## दृश्य परिवर्तन

## पर्दा उठना

**दृश्य :** पर्वत की चोटी पर शिवजी बैठे हैं ।

**शिवजी :** (मुस्कराकर) क्यों लंकेश ! अपनी शक्ति को भली प्रकार अजमा लिया। अपने अभिमान का फल पा लिया।

**रावण :** (विनीत भाव से) भोलेनाथ ! अहंकार वश आपकी महिमा को ध्यान में नहीं लाया। उसका फल हाथ फँसाकर पाया। हे कैलाशवासी ! आपकी जय हो। मुझ पर दया कीजिए। (शिवजी का मुस्कराते हुए पैर ढीला करना। रावण का हाथ निकालना)

**रावण :** (हाथ को मलते हुए) उपकार ? नाथ . . . . ! ! उपकार ? ? आज से सदा मैं आपका दास रहूँगा ।

**शिवजी :** रावण ! मैं तेरी दीनता पर बहुत प्रसन्न हूँ । (तलवार देते हुए) ले . . . . . ? तुझे यह चन्द्रहास नामक तलवार देता हूँ । तू नित्य इसकी पूजा करेगा तो यह तेरी रक्षा करती रहेगी परन्तु जिस दिन तू इसकी पूजा करना भूल जायेगा उसी पल यह मेरे पास चली आयेगी और वही तेरी अन्तिम घड़ी समझी जायेगी । समझे . . . . . ?

**रावण :** (खुश होकर) समझ गया नाथ . . . . . ! भली प्रकार समझ गया । (तलवार हाथ में लेकर मस्तक से लगाकर शिवजी के चरणों में सिर झुकाकर) प्रभो ! मुझे अब जाने की आज्ञा दीजिए ।

**शिवजी :** (हाथ उठाकर) कल्याण हो । (रावण का विमान पर बैठक लंका को लौट जाना)

पर्दा गिरना

# आकाशवाणी

## सीन बाईसवाँ

**स्थान :** रावण दरबार ।

**दृश्य :** रावण सिंहासन पर विराजमान है । मंत्री तथा सेनापति यथास्थान बैठे हैं । पहरे पर द्वार पाल खड़ा है ।

पर्दा उठना

**रावण :** मंत्री जी ! राजकार्य तो ठीक प्रकार से चल रहा है ।

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) जी महाराज ! देवताओं की शक्ति कमजोर करने के लिए पूजा पाठ, यज्ञ हवन में भरपूर बाधा डाली जा रही है । भक्तों को मजबूर किया जा रहा है कि वे आपको ही भगवान मानें और आपके नाम का गुणगान करें । चारों दिशाओं में आपकी जय-जयकार गूँज रही है अन्नदाता !

**रावण :** (मुस्कराकर) बहुत ठीक.....? बहुत ठीक.....? ? अब नाच गाना कराओ।

**मंत्री :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज! (मंत्री का ताली बजाना। दोनों ओर से नर्तकी का प्रवेश)

**नर्तकी :** (कोर्निश करके)

रावण महाराज की जय हो विजय हो।
जग के सरताज की जय हो विजय हो॥
कीर्ति पताका उड़े गगन में।
है प्रताप छाया त्रिभुवन में॥
जग के स्वामी बनकर शासन करते निर्भय हो।
रावण महाराज की जय हो विजय हो॥
चमक रही सोने की लंका।
बजता सदा विजय का डंका॥
बना रहे यह वैभव इसका कभी नहीं क्षय हो।
रावण महाराज की जय हो विजय हो॥
कृपा दृष्टि जिस पर हो जाये।
वह जीवन में सब सुख पाये॥
क्रोध करे तो मिले धूल में भले हिमालय हो।
रावण महाराज की जय हो विजय हो॥

**(नर्तकियों का जाना)**

**द्वारपाल :** (प्रवेश करके सिर झुकाकर) महाराज की जय हो। कुछ सैनिक दर्शन की आज्ञा चाहते हैं।

**रावण :** आने दो।

**(द्वारपाल का जाना। सैनिकों का घड़ा हाथ में लिये हुए प्रवेश)**

**सैनिक-१ :** (सिर नवाकर) महाराज की जय हो। (घड़ा आगे बढ़ाते हुए) अन्नदाता! कर के रूप में ऋसि-मुनियों से हमने रक्त वसूल किया है।

**रावण :** (खुश होकर) शाबास....? मेरे बहादुर सैनिको! तुमने

बहुत अच्छा काम किया है। इस बार उनसे रक्त लिया है दोबारा में उनका माँस नौंच डालना। इन ऋषि मुनियों के यज्ञों से ही तो हमारे शत्रु देवताओं को शक्ति प्राप्त होती है। जाओ? यह रक्त लंका के रक्त कोष में जमा कर दो।

**सैनिक-२ :** (झिझकते हुए) क्षमा करें.....? महाराज! आज्ञा हो तो कुछ निवेदन करूँ।

**रावण :** कहो.....? क्या कहना है??

**सैनिक नं० :** अन्नदाता! उन दुष्ट रिसियों ने घड़ा देते समय कहा है कि यह रक्त आपके सर्वनाश का.....?

**रावण :** कारण बनेगा। हा... हा... हा.... मेरा सर्वनाश.....? हा..... हा..... हा..... वे मूर्ख नहीं जानते कि......? त्रिलोकी में रावण का कोई सानी नहीं। जाओ.....? इस रक्त को मिथिलापुर में जाकर कहीं गाढ़ दो।

**सैनिक :** (सिर झुकाकर) जो आज्ञा महाराज!

(सैनिकों का घड़ा लेकर जाना)

**मेघनाद :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) पिता श्री पुत्र मेघनाद का प्रणाम स्वीकार करें।

**रावण :** प्रसन्न रहो। कहो.....? स्वर्ग विजय में युद्ध करना पड़ा अथवा देवता लोग मेरा नाम सुनकर भाग गये।

**मेघनाद :** (घमण्ड से मुस्कराकर) भागना तो चाहते थे किन्तु... मैं भागने देता तब न। मैं सबको बन्दी बनाकर ले आया हूँ।

**रावण :** और इन्द्र!

**मेघनाद :** उसे भी.....? आज्ञा हो तो उपस्थित करूँ।

**रावण :** आज्ञा है।

**मेघनाद :** (एक सैनिक से) देवताओं को दरबार में लाया जाय।

**सैनिक :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज! (सैनिक का जाना। सभी देवताओं का हाथ बाँधे दरबार में प्रवेश)

**रावण :** (खुश होकर) खूब.....? बहुत खूब.....?? धन्य है

मेघनाद ! राक्षस कुल भूषण ! ! तू मेरा सच्चा पुत्र है। तेरे पराक्रम से आज सभी देवता मेरे सामने हाथ बाँधे खड़े हैं। इन्द्र की अकड़ को मिट्टी में मिला देने वाले मेरे बहादुर पुत्र ! आज से मैं तेरा नाम इन्द्रजीत रखता हूँ।

**मेघनाद :** (मुस्कराकर सिर नवाकर) यह सब आपके ही प्रताप का फल है पिताजी !

**रावण :** (मुस्कराकर व्यंग से) अपने को देवराज कहने वाले इन्द्र ! कहाँ है.....? वह तुम्हारा बज्र.....! जिससे तुम रावण का मस्तक चूर्ण करना चाहते थे।

**इन्द्र :** बज्र में अब भी वही ताकत है राक्षसराज ! समय मेरे प्रतिकूल और आपके अनुकूल है।

**रावण :** (घमण्ड से) समय को तो हमेशा रावण के अनुकूल रहना होगा। मैंने काल को भी बाँध रक्खा है।

**इन्द्र :** किन्तु.....? महाकाल तो आजाद है।

**रावण :** (हँसकर) महाकाल ! भगवान शंकर ! ! मुझे उनका कोई डर नहीं। वे मेरा अहित नहीं कर सके।

**इन्द्र :** (नीची दृष्टि किये हुए) इस समय मैं कुछ कहने की स्थिति में नहीं हूँ राक्षसरास !

**रावण :** नीची नजर क्यों किये हुए हो देवराज ! (मुस्कराकर) सिर ऊँचा करो। तुम एक राजा हो। रावण राजाओं के साथ व्यवहार करना जानता है। जाओ.....? तुम्हें आजाद करता हूँ, परन्तु.....? याद रखना ? ? तुम मुझे कर देने वाले मेरे अधीन राजा हो।

सैनिक ! इन्द्र को मुक्त कर दो। (इन्द्र का मुक्त होकर जाना) (देवगणों से) देवताओं ! तुम्हें मेरे कारागार में रहना होगा। तुम सब अपना-२ काम मेरी आज्ञा से करोगे। ले जाओ इन्हें ! कारागार में बन्दी बनाकर रखो। (सैनिकों का देवताओं के साथ जाना)

**रावण :** हा . . . . . हा . . . . . हा . . . . . इन्द्रजीत ! तुमने मेरे शत्रु देवताओं को कारागार की हवा खिला ही दी। आज वे सब मेरे अधीन हैं। अब रहा वह छलिया विष्णु ! उसे भी देख लूँगा। मैं रावण हूँ त्रिलोक विजयी रावण। हा . . . . . हा . . . . . हा . . . .

**पर्दा गिरना**

**स्थान :** जंगल।

**पर्दा उठना**

**नारद जी :** ( एक ओर से प्रवेश करके मुस्कराकर) नारायण . . . . . ! नारायण . . . . . ! ! राक्षस राज रावण ने सभी देवताओं को बन्दी बना लिया है। उसके पुत्र मेघनाद ने इन्द्र को जीत लिया है। प्रभो ! तेरी माया निराली है। नारायण . . . . . नारायण . . . . . (दूसरी ओर से उदास इन्द्र चले आ रहे हैं) (विस्मय से) अरे . . . . . ? देवराज इन्द्र ! आप . . . . . ? क्या यह सत्य है कि मेघनाद ने आप पर विजय पाई है ?

**इन्द्र :** (उदास होकर) हाँ . . . . . मुनिराज ! अब हम रावण के अधीन हैं।

**नारद :** नारायण . . . . . नारायण . . . . . महान आश्चर्य ! आपकी शक्ति निष्फल . . . . . ! !

**इन्द्र :** देवर्षि ! कैसे निष्फल न हो ? आपके पिताजी ने राक्षसों को विश्वविजयी होने का बरदान जो दिया है।

**नारद :** नारायण... नारायण... इसमें मेरा क्या कसूर है देवराज !

**इन्द्र :** हाँ . . . . . ? तुम ठीक कहते हो . . . . . ? ? कसूर तो मेरे भाग्य का ही है। लगता है कि देवताओं से विधाता ही रूठ गया है।

**नारद :** तो रूठे हुए विधाता को मनाने का उपाय करना चाहिए। चलिए देवेन्द्र ! ब्रह्मा जी से ही रावण के विनाश का उपाय पूँछें। कुछ देवताओं को साथ ले लीजिए।

**इन्द्र :** सभी मुख्य देवता रावण के यहाँ बन्दी हैं। साधारण देवता डरकर छिपते फिर रहे हैं।

**नारद :** तो उन्हीं को लेकर ब्रह्मलोक चलें। (एक ओर देखकर विस्मय से) अरे.....? यह तो देवी वसुन्धरा आ रही हैं। इनका भी मुख मलीन हो रहा है।

**॥ चौपाई ॥**

अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी । परम सभीत धरा अकुलानी ॥
धेनु रूप धरि हृदयं बिचारी । गई तहाँ जहं सुरमुनि क्षारी ॥

**पृथ्वी :** (पास आकर दुःखी होकर) देवर्षि नारद ! देवराज इन्द्र ! आप खूब मिले। मैं रावण के अत्याचारों से दुःखी होकर आपके ही पास आ रही थी। अब पापी रावण का भार मुझसे नहीं सहा जाता। पर्वत-नदियों और समुद्र का भार मुझे इतना कष्ट दायक मालूम नहीं होता जितना दूसरों को सताने वाले एक पापी का होता है। यदि तुम लोग मेरी पुकार नहीं सुनोगे तो मैं रसातल को चली जाऊँगी।

**नारद :** पृथ्वी देवी ठीक कह रही हैं देवराज !

**इन्द्र :** मैं जानता हूँ मुनिराज ! किन्तु असहाय हूँ। हम स्वयं ही संकट में है। देवी ! हम ब्रह्मा जी के पास जा रहे हैं यदि इच्छा हो तो आप भी चलें।

**पृथ्वी :** अवश्य चलूँगी देवराज ! परन्तु.....? गौ का रूप धारण कर चलूँगी जिससे उन्हें अधिक दया आयेगी।

**नारद :** नारायण..... नारायण..... देवी वसुन्धरा ने कैसा सटीक कहा है। जो गौ माता पर आये संकट को टालने का उपाय नहीं करता वह महान पाप का भागी होता है। पिताजी अवश्य ही कोई उपाय बतायेंगे। देर मत कीजिए। नारायण..... नारायण..... !

(सब का जाना)

**पर्दा गिरना**

॥ छंद ॥

सुर मुनि गंधर्वा मिलि करि सर्वा गे बिरंचि के लोका ।
संग गो तनुधारी भूमि बिचारी परम बिकल मय सोका ॥
ब्रह्मा सब जाना मन अनुमाना मोर कछु न बसाई ।
जा करि तैं दासी जो अविनासी हमरेउ तोर सहाई ॥

## सीन चौबीसवाँ

**स्थान :** ब्रह्म लोक ।

**दृश्य :** ब्रह्मा जी आसन पर ध्यान मग्न हैं ।

**पर्दा उठना**

**इन्द्र :** (हाथ जोड़कर) सृष्टि के रचइया भगवान ब्रह्मा जी को सेवक इन्द्र प्रणाम करता है ।

**नारद :** (एक साथ) हम सब देवता भी भक्तिपूर्वक प्रणाम करते हैं ।

**पृथ्वी :** हे ब्रह्मदेव ! हमारी रक्षा कीजिए। प्रभो ! हमारी रक्षा कीजिए ।

**ब्रह्मा जी :** (नेत्र खोलकर) कल्याण हो देवगण ! कहो देवेन्द्र ! कैसे आना हुआ ?

**इन्द्र :** हे सृष्टि कर्त्ता ! आपसे क्या छिपा है ? रावण ने स्वर्ग पर अधिकार कर लिया है । देवगण पर्वतों की कन्दराओं में छिपे फिर रहे हैं । उसके विनाश का तो उपाय कीजिए भगवन !

**नारद :** गौ के रूप में यह पृथ्वी देवी हैं पिताजी ! इनका कहना है कि अधर्मी राक्षस का भार अब मुझसे नहीं सहा जाता । (गाय के रभाने का शब्द होता है)

**ब्रह्मा जी :** मैं सब जानता हूँ पृथ्वी देवी ! मैंने ही उन राक्षसों को वरदान दिया है फिर मेरे द्वारा उनका विनाश कैसे सम्भव है ? इन्द्र देव ! तुम्हारे साथ सहानुभूति होते हुए भी मैं अपने बचनों के कारण लाचार हूँ ।

**नारद :** नारायण..... नारायण..... पिताजी ! राक्षसों का विनाश आपके हाथ नहीं परन्तु .....? आप उनके विनाश का उपाय तो बता सकते हैं ।

**ब्रह्मा जी :** (विचार करके) मेरी समझ में यदि श्री हरि चाहें तो देवताओं का कल्याण हो सकता है ।

**नारद :** ठीक है.....? हम सब उनके पास जाकर प्रार्थना करेंगे किन्तु आपका साथ होना भी जरूरी है पिताजी ।

**ब्रह्मा जी :** अवश्य चलूँगा ।

**नारद :** नारायण ! नारायण ! तो फिर शुभ काम में देर काहे की ?

**ब्रह्मा जी :** तुम्हारा कहना तो ठीक है देवऋषि ! परन्तु इस समय महाकाल का साथ होना भी शुभ होगा ।

**नारद :** नारायण..... नारायण..... इस कार्य को भी मैं अपने जिम्मे लेता हूँ । आप लोग क्षीर सागर के तट पर चलें

(नारद का वीणा बजाकर गाना)

शिव शंकर भोले नाथ आँखें खोलो ।
जय महादेव बम-बम भोला ॥
द्वार तिहारे सुरपति आये ।
दुखी देव रावण के सताये ॥
साथ बिचारी दुखिता पृथ्वी ।
देखो गौ का रूप बनाये ॥
कब तक ये सहेंगे क्लेश कुछ तो बोलो ।
शिव शंकर.....(१)

असुर बहुत अंधेर मचाते ।
यज्ञ हवन ना होने पाते ॥
धर्म लोप हो रहा धरा पर ।
पापी दिन-२ बढ़ते जाते ॥
बध करने को त्रिशूल हाथ में तोलो ।
शिव शंकर.....(२)

**ब्रह्मा जी :** (विस्मय से) अरे.....? देखो.....? ? शिवजी तो इधर ही आ रहे हैं ।

**नारद जी :** (मुस्कराकर) नारायण ..... नारायण ..... देखा .....? वीणा का कमाल । (शिवजी का त्रिशूल लिये हुए प्रवेश)

**नारद जी :** (सिर नवाकर हाथ जोड़कर) महाकाल भगवान शंकर को प्रणाम स्वीकार हो ।

**शिवजी :** (हाथ उठाकर) कल्याण हो ।

**इन्द्र :** (सिर नवाकर) मुझ दास का भी प्रणाम स्वीकार करें देवाधिदेव !

**शिवजी :** (हाथ उठाकर) कल्याण हो ।

**नारद जी :** प्रभो ! हमें आपकी बड़ी जरूरत थी ।

**शिवजी :** (ब्रह्मा जी की ओर मुड़कर) सृष्टि निर्माता ब्रह्मदेव ! जय सच्चिदानन्द । कहिए.....? मुझे क्या आज्ञा है ? ?

**ब्रह्मा जी :** (मुस्कराकर) जय सच्चिदानन्द महाकाल ! मेरा बरदान पाकर रावण बड़ा ही अभिमानी और अत्याचारी हो गया है । उसने स्वर्ग पर अधिकार करके देवों को बन्दी बना लिया है । देवराज इन्द्र को अपने अधीन करके छोड़ दिया है । हम सब उसके विनाश की प्रार्थना लेकर देवाधिदेव नारायण से प्रार्थना करने जा रहे हैं ।

**शिवजी :** किन्तु आप जायेंगे कहाँ ? वे तो सर्वव्यापक हैं ।

**॥ चौपाई ॥**

हरि व्यापक सर्वत्र समाना । प्रेम ते प्रगट होंहि मैं जाना ॥

**शिवजी :** हे देवगणों ! सुनिये .....? हठ या आग्रह की बात नहीं,
अपना विचार हम कहते हैं ।
चन्दन में जैसे पावक है, भगवान प्रेम में रहते हैं ॥
हो जाओ मेरे साथ खड़े, उठकर उनका गुणगान करो ।
नारायण अभी प्रगट होंगे, हो भक्त भेष आह्वान करो ॥

**नारद जी :** (मुस्कराकर) कैसा सीधा और सच्चा उपाय बताया है

गौरीनाथ ने । आओ .....? हम सब यहीं प्रेम से भगवान को पुकारें । (सबका खड़े होकर आँखें बन्द करके भगवान की स्तुति करना)

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम ही एक नाथ हमारे हो ।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुम्हीं रखवारे हो ॥ टेक
सब भाँति सदा सुखदायक हो, दुख दुर्गुण नाशन हारे हो ।
प्रतिपाल करो सबरे जग को, करके करुणा दुख हारे हो ॥
जिनके .....(१)
शुभ शान्ति निकेतन के मन में, मन मन्दिर के उजियारे हो ।
इस जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राणन के तुम प्यारे हो ॥
जिनके .....(२)

**॥ व्यास : दोहा ॥**

जानि समय सुर भुमि सुनि, बचन समेत सनेह ।
गगन गिरा गंभीर भई हरनि सोक संदेह ॥
जब-२ होता नाश धर्म का, और पाप बढ़ जाता है ।
तब अवतार प्रभू जी लेते, विश्व शान्ति तब पाता है ॥

**आकाशवाणी :** भक्तो ! तुम सब निश्चिन्त रहो, अब तुम्हें न कोई भय होगा ।
यह धरती होगी रंगभूमि, धरणीधर का अभिनय होगा ॥
सुन सकते नहीं कान मेरे, अत्यधिक पुकार अधीनों की ।
देखेगा शीघ्र दुष्ट मण्डल, क्या प्रबल हाथ है दीनों की ॥
जग की पुकार सुनकर तत्क्षण, जो नंगे पैरों धाता है ।
भक्तो ! तुम सब की रक्षा को, वह ही फिर दौड़ा आता है ॥
पृथ्वी ! मेरी प्यारी पृथ्वी ! ! मैं तेरा ताप मिटाऊँगा ।
दशरथ के यहाँ राम बनकर, अति शीघ्र अवध में आऊँगा ॥

**ब्रह्मा जी :** देवताओं ! तुमने भगवान की वाणी सुन ली । अब निश्चिन्त रहो । तुम सब भी वानर रूप में पृथ्वी पर जाकर उनकी सेवा के लिए भगवान के आने का इन्तजार करो ।

**नारद जी :** (मुस्कराकर) नारायण ..... नारायण ..... स्वर्ग का आनन्द

बहुत भोग लिया अब पृथ्वी पर बन्दर बनकर कच्चे-पक्के फल खाओ। नारायण..... नारायण.....।

**शिवजी :** अब मैं भी अपने अंश से हनुमान की उत्पत्ति करूँगा।

पर्दा गिरना

# सीता की उत्पत्ति

## सीन पच्चीसवाँ

**स्थान :** जनक दरबार।

**दृश्य :** राजा जनक मंत्री तथा सभासदों सहित बैठे हैं। द्वारपाल पहरे पर खड़ा है।

पर्दा उठना

**जनक :** मंत्री जी!

**मंत्री :** (उठकर आगे बढ़कर सिर नवाकर) आज्ञा महाराज!

**जनक :** मैं कुछ-२ हाहाकार और उपद्रव के शब्द सुन रहा हूँ।

**द्वारपाल :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराजाधिराज मिथिलानरेश की जय हो। राज्य के कुछ किसान आपसे निवेदन करने आये हैं। आज्ञा हो तो.....?

**जनक :** आने दिया जाय। (द्वारपाल का जाना। किसानों का प्रवेश)

**चौधरी :** (झुककर सिर नवाकर) अन्नदाता की जय हो।

**अन्य किसान :** जय हो.....! जय हो.....!!

**जनक :** मेरे प्रिय किसानों! अपने आने का उद्देश्य कहो।

**चौधरी :** (हाथ जोड़कर)-
बूँद-बूँद पानी को तरसें, सुनो श्री महाराज।
इसीलिये दरबार में, आ पहुँचे आज॥

**जनक :** मुझको भली प्रकार है, इस संकट का ज्ञान।
जल बिन सब जन दुखी हैं, रूठ गये भगवान॥

**चौधरी :** तो कुछ उपाय कीजिये अन्नदाता! जल वर्षाकर यश के भागी बनिये।

**जनक :** मैं कुछ भी नहीं कर रहा, यही सोचते आप ।
ऐसे में चुप बैठना, होगा भारी पाप ॥

**नारद :** (प्रवेश करके) नारायण ! नारायण . . . ! ! दो चार उपाय असफल होने पर साहस नहीं खोना चाहिए जनक नरेश !

**जनक :** (विस्मय से) ओह . . . . . ? देवऋषि ! दास का प्रणाम लीजिये । आप भी खूब अच्छे समय पर पधारे । अब आप ही जल बरसाने का कुछ उपाय बताइये ।

**नारद जी :** (मुस्कराकर) नारायण . . . नारायण . . . अपने पास तो हर रोग की दवा है । कोई मानने वाला हो उसका ही भला है ।

**जनक :** मैं तो आपका आज्ञाकारी सेवक हूँ मुनिश्रेष्ठ !

**नारद :** तो फिर आपको और महारानी को खुद हल चलाना होगा ।

**जनक :** (सिर नवाकर) आपकी आज्ञा सिर आँखों पर देवऋषि !

**नारद :** (खुश होकर) तो फिर शुरू हो जाइए ।

(जनक का रानी सहित हल चलाना । बादलों का गर्जना)

**नारद :** (खुश होकर) देखा ? राजा जनक ? शुभ शकुन होने लगे । आपके द्वारा हल की मूंठ पकड़ते ही बादल गरजने लगे ।

**जनक :** यह सब आपकी कृपा है मुनिराज !

**नारद :** (मुस्कराकर) नारायण . . . . . नारायण . . . . . (राजा जनक का हल चलाते-२ रुक जाना)

**जनक :** (विस्मय से) हे ईश्वर ! यह क्या यहाँ तो कोई बालिका पड़ी है ।

**महारानी :** (उठाते हुए विस्मय से) अरे ! यह तो जीवित है । (रानी द्वारा पुचकारकर छाती से लगा लेना) कितनी सुन्दर है ।

**मंत्री :** महान आश्चर्य . . . . . ? खेत में गढ़ा हुआ घड़ा और उसमें जीवित कन्या ।

**जनक :** (खुश होकर) आज से यह हमारी पुत्री होगी । भगवान ने हमें हमारी मेहनत का फल दिया है ।

**नारद :** (मुस्कराकर) नारायण..... नारायण..... आपको ही नहीं राजन। नारायण ने संसार को यह विभूति दी है। सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलयकारिणी महामाया साक्षात् लक्ष्मी ही इस कन्या के रूप में अवतरित हुई है। (हाथ जोड़कर) जग जननी को कोटि-२ प्रणाम !

**जनक :** (मुस्कराकर) तब मैं तो धन्य हो गया महामुनि ! भगवती के चरण मेरे घर पर पड़ेंगे। हाँ.....? यह तो बताइए.....? इसका नाम क्या होगा?

**नारद :** नाम तो स्पष्ट है। हल के फल या सीत द्वारा धरती खुदने पर इनकी उत्पत्ति हुई है इसलिए यह सीता कहलायेंगी। और आपके द्वारा अपनी पुत्री बनाने के कारण इनका नाम जानकी भी होगा। नारायण..... नारायण..... !

**पर्दा गिरना**

**॥ श्री रामावतार कथा प्रसंग समाप्त ॥**

◆ ◆ ◆

## तीसरा दिन (पहला भाग)

# राम जन्म लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. राम जन्म

(क) राम जन्म

(ख) विश्वामित्र का राम-लक्ष्मण को माँगना

(ग) ताड़िका वध

(घ) अहिल्या उद्धार

# राम जन्म लीला

## (संक्षिप्त कथा)

अयोध्या में रघु कुलमणि राजा हुए जिनका वेद विख्यात दशरथ नाम था। उनकी कौशल्या, कैक़ई और सुमित्रा तीन पवित्र आचरण वाली रानियाँ थीं। एक बार राजा के मन में ग्लानि हुई कि मेरे पुत्र नहीं है। राजा शीघ्र ही गुरु के घर गये और अपना सब दुख-सुख गुरु को सुनाया। गुरु वशिष्ठजी ने यह कहकर बहुत प्रकार समझाया कि राजन ! धैर्य करो। तीनों लोकों में विख्यात और भक्तों के भयहारी तुम्हारे चार पुत्र होंगे। वशिष्ठ जी ने श्रृंगी ऋषि को बुलाया और उनसे पुत्रेष्ठ शुभ यज्ञ कराया। मुनि ने भक्ति सहित आहूतियाँ दीं तो अग्निदेव हाथ में हवि लिये हुए प्रगट हुए और कहा हे राजन ! वशिष्ठ जी ने जो कुछ हृदय में विचारा है तुम्हारा वह सब कार्य सिद्ध हो गया। हे राजन ! अब तुम जाकर इस हवि को जिसे जैसा योग्य हो भाग बनाकर बाँट दो। तब अग्निदेव समझा कर अर्न्तध्यान हो गये। राजा दशरथ परमानन्द में डूब गये। उसी समय राजा ने प्रिय रानियों को बुलाया। राजा ने आधा भाग कौशल्या को दिया और शेष आधे के दो भाग किये। एक भाग राजा ने कैकई को दिया। शेष जो रहा उसके फिर दो भाग किये तथा उनको कौशलया तथा कैकई के हाथ पर रखकर प्रसन्न मन करके सुमित्रा को दिया। इस प्रकार सब रानियाँ गर्भवती

हो गई । दीनों पर दया करने वाले कौशल्या जी के कृपालु प्रभु प्रगट हुए तब माता कौशल्या बोलीं हे तात ! यह रूप त्याग कर अति प्रिय बाललीला करो । यह सुनकर प्रभु ने बालक होकर रोना शुरू कर दिया । बालकों का रोना सुनकर दासी राजा के पास गई । शुभ सम्वाद को सुनकर राजा दशरथ को अपार हर्ष हुआ और उन्होंने दिल खोलकर दान दिया । इस प्रकार कुछ दिन बीत गये तब राजा ने नामकरण संस्कार का समय जानकर ज्ञानी मुनि वशिष्ठ जी को बुला भेजा । मुनि ने अपनी बुद्धि के अनुसार राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न नाम चारों पुत्रों के रखे । जब चारों भाई कुमारावस्था के हुए तब गुरु के घर पढ़ने गये और अल्पकाल में सब विद्यायें आ गई ।

विश्वामित्र नाम के ज्ञानी मुनि बन में शुभ आश्रम जानकर बसते थे । जहाँ ये मुनि यज्ञ करते थे उसे देखते ही राक्षस दौड़कर विध्वंस कर देते थे जिससे मुनि दुख पाते थे । उनके मन में चिन्ता छा गई कि पापी राक्षस हरि के बिना न मरेंगे । तब मुनि ने मन में विचारा कि प्रभु पृथ्वी का भार हरने को प्रकट हुए हैं । इसी बहाने जाकर मैं प्रभु के दर्शन करूँ और विनय करके दोनों भाइयों को ले आऊँ । तब सरयू में स्नान करके महाराज दशरथ के द्वार पर आए । जब राजा ने मुनि का आना सुना तब वे विप्र समाज को साथ लेकर मिलने गये । दण्डवत करके मुनि का स्वागत करते हुए लाकर अपने आसन पर बैठाया फिर चारों पुत्रों को चरणों में डाल दिया तब राजा मन में हर्षित होकर बोले हे मुनि ! ऐसी कृपा तो आपने कभी नहीं की आज किस कारण आपका आना हुआ ? मुनि बोले हे राजन ! राक्षस मुझे सताते हैं । मैं तुमसे कुछ माँगने आया हूँ । भाई सहित श्रीरामजी को मुझे दो । राक्षसों का वध होने पर मैं सनाथ हो जाऊँगा । इस अति अप्रिय वाणी को सुनकर राजा का हृदय कांप गया और मुख की कान्ति फीकी पड़ गई तब वशिष्ठ जी ने समझाकर राजा के संदेह का नाश किया तब राजा ने राम-लक्ष्मण को मुनि को सौंप दिया ।

मार्ग में चले जाते हुए मुनि ने ताड़का को दिखलाया । वह शब्द सुनते ही क्रोधित होकर दौड़ी । प्रभु ने एक ही बाण से प्राणों को हर लिया और

उसे दीन जाकर अपना पद दे दिया तब मुनि ने प्रभु को सम्पूर्ण विद्यायें सिखा दीं फिर अपने आश्रम पर ले आयें और उनको कन्द-मूल और फलों का भोजन कराया। सुबह श्री राम जी ने मुनि से कहा आप जाकर निर्भयता से यज्ञ कीजिये तब मुनि यज्ञ करने लगे और आप यज्ञ की रखवाली पर रहे। यज्ञ का शुरू होना सुनते ही मारीच सहायकों को लेकर दौड़ा। श्री राम जी ने उसे बिना फल वाला वाण मारा जिससे वह सौ योजन समुद्र पार जा गिरा फिर सुबाहु को अग्निबाण से मारा और लक्ष्मण जी ने राक्षसी दल का संहार कर दिया।

इस प्रकार भगवान राम ने असुरों को मारकर ऋषि मुनियों को निर्भय कर दिया फिर प्रभु भाई लक्ष्मण सहित विश्वामित्र जी के आश्रम पर रहे तभी जनकपुर से राजा जनक का दूत सीता स्वयंवर का निमन्त्रण लेकर विश्वामित्र के पास आया तब मुनि ने आदर से समाझकर कहा हे प्रभो ! चलकर एक चरित्र देखिये। श्री रघुनाथ जी धनुष यज्ञ की बात सुन कर मुनि के साथ हर्षित होकर चले। मार्ग में एक आश्रम दीख पड़ा। वहाँ पशु-पक्षी कोई भी जीव-जन्तु नहीं था। प्रभु ने पत्थर की एक सिला देखकर मुनि से पूछा तब मुनि ने कहा हे प्रभो ! गौतम पत्नी अहिल्या शाप वश पाषाण देह धारण किये बड़े धीरज से आपके चरण कमलों की रज चाहती है। हे रघुनाथ जी ! इस पर कृपा कीजिए। प्रभु के चरणों का स्पर्श पाते ही अहिल्या सचमुच प्रगट हो गई। श्री राम जी की कृपा से भक्ति प्राप्त की। फिर श्री राम जी भाई लक्ष्मण सहित मुनि के साथ चले और वहाँ गये जहाँ संसार को पवित्र करने वाली गंगा जी थीं। विश्वामित्र ने प्रभु को वह सब कथा सुनाई जिस प्रकार गंगाजी पृथ्वी पर आई थीं। तब प्रभु ने मुनि के साथ स्नान किया फिर मुनि के साथ हर्षित होकर चले और शीघ्र ही जनकपुर के समीप पहुँच गये।

# पात्र परिचय

## राम जन्म लीला

## पुरुष पात्र

१. राजा दशरथ
२. गुरु वशिष्ठ
३. छज्जू धोबी
४. श्रृंगी ऋषि
५. अग्निदेव
६. मंत्री सुमंत
७. राम
८. लक्ष्मण
९. भरत
१०. शत्रुघ्न
११. प्रहरी
१२. सभासद (चार)
१३. ऋषि विश्वामित्र
१४. सेनापति
१५. सुबाहु
१६. मारीच
१७. दूत जनकपुरी
१८. पंडा (चार)
१९. राक्षस (दो)
२०. मुनि (दो)

## स्त्री पात्र

१. कौशल्या,
२. कम्मो धोबिन
३. सुमित्रा
४. कैकई
५. मंथरा दासी
६. ताड़का
७. अहिल्या

# राम जन्म

## राम जन्म लीला

### ॥ व्यास ॥

थीं तीन रानियाँ दशरथ की, जो महारानी कहलाती थीं ।
हितचित से सेवा कर नृप की, पतिव्रता का धर्म निभातीं थी ॥
कैकई, सुमित्रा, कौशल्या, तीनों के नाम भी प्यारे थे ।
सब तरह से था आनन्द वहाँ, सब ठाट बाट वहाँ भारे थे ॥
वहाँ सभी तरह आनन्द था, सन्तान का एक दुखभारी था ॥
दशरथ के बाद अयोध्या की, गद्दी का नहीं अधिकारी था ॥

## सीन पहला

**स्थान :** कौशल्या भवन ।

**दृश्य :** कौशल्या विष्णु मूर्ति की पूजा में मग्न है ।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**कौशल्या की मूर्ति के पैरों में गिर कर विनती (फिल्म : घूँघट)**

दुनियां में रहकर दुनियाँ न देखी, यह कैसी मजबूरी ।
मुझको भी प्रभु आँखें दे दो, कर दो आशा पूरी ॥
मेरी पत राखो संकट हारी ।
मैं पड़ी हूँ शरण तुम्हारी ॥
छोड़ तुम्हारा द्वार, प्रभु मैं किसके द्वारे जाऊँ ।
तुम बिन मेरा कौन सहारा, किसकी आस लगाऊं ॥
ये बोलो संकट हारी ।
मैं पड़ी हूँ शरण तुम्हारी ॥.....
डूब रही है बीच भंवर में मेरी नैया ।
चारों ओर है घोर अंधेरा, कोई नहीं खिवैया ॥
तूफान उठा है भारी ।
मैं पड़ी हूँ शरण तुम्हारी ॥.....

**(कौशल्या का विष्णु के पैरों में सिर रखकर फूट-२ कर रोना)**

**॥ चौपाई ॥**

एक बार भूपति के मन माहीं । भई ग्लानि मोरे सुत नाहीं ॥

**(राजा दशरथ का प्रवेश। कौशल्या को देखकर अधीर होकर खड़ा रहना)**

**कौशल्या :** (विष्णु की मूर्ति के पैरों में सिर रखकर आँखें तिरछी कर रोते हुए) त्रिलोकीनाथ ! इन आँसुओं को अर्पण कर भिखारिणी सिर्फ एक ही दया का दान माँगती है। राज्य का ऐश्वर्य, यह राजमहल, यहाँ का शून्य वातावरण मुझे खा जाने को दौड़ता है। किसी भी वस्तु की कमी न होते हुए भी यह आत्मा मछली की तरह तड़प रही है। इस राजमहल

में केवल एक बालक का कोलाहल नहीं तो .....। तो कुछ भी नहीं दयानिधान। प्रभो ! केवल इतनी-सी इच्छा के लिए यहाँ के सारे ऐश्वर्य का बलिदान करके भी मुस्कराहट लेना चाहती हूँ। (आँचल पसारकर) क्या मेरी सूनी गोद को एक बालक का भी वरदान नहीं मिल सकेगा प्रभो ?

आचंल पसारूँ हे प्रभो, कर दो कृपा।
इस शून्य जीवन में खिले, कोई कुसुम कर दो कृपा ॥
यह निराशा जाय मिट, आंगन में बाल विनोद हो ॥
यह भवन गुंजित हो प्रभो, किलकारियों का मोद हो ॥

**दशरथ :** (दुखी होकर) कौशल्ये .....।

**कौशल्या :** (चौंककर) अयोध्या नरेश की जय।

**दशरथ :** यह जयकारे ! तुम्हारे नरेश को सांत्वना नहीं दे सकेंगे, कौशल्ये।

**कौशल्या :** विधाता का न्याय कब तक हमारे विपरीत रहेगा, स्वामी !

**दसरथ :** प्रिये ! विधाता ने हमें सब कुछ दिया है परन्तु ..... ! दिल को शान्ति नहीं दी।

जो नहीं सन्तान, इच्छा नहीं धनधाम की।
भोगने वाला नहीं तो, यह सम्पदा किस काम की ॥
आँख हैं मौजूद लेकिन, आँख का तारा नहीं।
दिल हुआ बेचैन जब, जीने का सहारा नहीं ॥

कौशल्ये ! इस अभागे दशरथ की सिर्फ एक ही इच्छा है जो मेरे जीवन में ग्रहण-सा लग गई है। कितना अच्छा होता .....? यह देव मूर्तियाँ कुछ बोल पातीं .....। मैं इनसे अपना अपराध पूछ सकता था कौशल्ये ! अपने अपराध की क्षमा याचना कर सकता था किन्तु यह पाषाण मूर्तियाँ .....?

**कौशल्या :** नाथ .....?

**दशरथ :** (पत्थर की मूर्तियों की ओर इशारा करके) इनकी मौन धारणा मुझे खाये जा रही है कौशल्ये ! और मैं निर्जीव-सा आँसू तक नहीं बहा पाता। भाग्य विधाता ने हमें ऐसे अंधेरे में छोड़ दिया है कि हम भटक-२ कर मर जायें।

**कौशल्या :** इतने दुखी न हों नाथ ! विधाता के विधान में अन्याय को स्थान नहीं है। स्वामी !

**दशरथ :** झूठी सांत्वना न दो कौशिल्ये ! दशरथ के भाग्य में तेरे विधाता ने आँसू और तड़पन के सिवा कुछ भी नहीं दिया, कौशल्ये !

**कौशल्या :** इतने पर भी हमें मुस्कराना चाहिए, नाथ !

**दशरथ :** (व्यंग की हँसी हँसकर) हाँ ..... ! पागलों की तरह, जिसे न दुख का अहसास होता है न दर्द का। शायद मेरी कुछ घड़ियाँ बाहरी मुस्कराहट में बीत जाती हों। किन्तु ..... ! यहाँ तेरे विधाता के दर्शन कर उन्हीं आँखों से खून की धारा बह निकलती है। कौशल्ये !

**कौशल्या :** इससे कुछ भी तो लाभ नहीं हो सकेगा, नाथ !

**दशरथ :** (झुंझलाकर) तब तुम ! किसलिए इन पाषाण मूर्तियों के सामने गिड़गिड़ाया करती हो ? यदि तुम्हारी पुकार व्यर्थ है तो क्यूँ यह नाटक-सा खेलती हो ? क्यों इन पत्थरों को तोड़ नहीं फैंकती ?

**कौशल्या :** स्वामी ..... ! निराश होकर नास्तिकता का सहारा न लीजिए। यदि हमारी भक्ति सच्ची है तो विधाता को न्याय देना ही होगा।

**दशरथ :** नहीं कौशल्ये ! हमारी इच्छा हमेशा इच्छा ही बनी रहेगी। हमारी मनोकामना कभी पूरी नहीं होगी .....। कभी पूरी नहीं होगी। (मूर्तियों के पास जाकर) प्रभो ! तेरे यहाँ अभागे दशरथ के लिए एक मुस्कराहट नहीं तो क्या किसी के लिए न्याय भी नहीं। प्रभो ! यदि तुम शक्तिवान हो तो

मुझे उत्तर दो जिन ब्राह्मणों के शब्द पत्थर की लकीर होते थे आज उनकी शक्ति कहाँ जाती रही ? शान्तनु ब्राह्मण के शाप को क्या हो गया ? दशरथ के लिए क्या उसका शाप भी फलीभूत नहीं होगा ? प्रभो !

वह भी समय था श्राप के, जब शब्द कानों में पड़े ।
तन हो गया कम्पित, और हो गये रोयें खड़े ॥
भगवन कभी न झूठा होगा, श्राप यह मैं जानता ।
पर आज उस ही श्राप को, वरदान ही मैं मानता ॥
पर उम्र ढलती जा रही, करते प्रतीक्षा श्राप की ॥
वरदान से या श्राप से, अब तो कृपा हो आपकी ॥

**कौशल्या :** (अचरज से) ब्राह्मण का शाप ? मैं समझी नहीं नाथ ?

**दशरथ :** हाँ कौशल्ये ! दशरथ के लिए तो सब कुछ अकारथ होता जा रहा है। कुछ ही समय बीत पाया है कि शिकार के धोखे में दशरथ के बाण से अन्धे शान्तुन के पुत्र श्रवण की हत्या हो गई थी।

**कौशल्या :** जीव हत्या..... ! बहुत बड़ा अनर्थ, स्वामी !

**दशरथ :** तभी तो उसके माता-पिता ने मुझे श्राप दिया था और यदि वह शाप फलीभूत हो जाता.....? तो.....! तो आज हमारी आँखों में यह निराशा के आँसू न होते, कौशल्ये !

**कौशल्या :** मैं अभी समझी नहीं, स्वामी !

**दशरथ :** उस मरते हुए ब्राह्मण का शाप था कि जिस तरह हम पुत्र वियोग में तड़प-२ कर मर रहे हैं उसी तरह तू भी पुत्र वियोग में मरेगा, दशरथ !

**कौशल्या :** नहीं, ऐसा नहीं होगा स्वामी...? ऐसा नहीं होगा...??

**दशरथ :** और उस दिन को भी मैंने सौभाग्य का दिन समझ लिया था कौशल्ये ? दशरथ का बूढ़ा तन मर जाता परन्तु !यह आत्मा तो न मरती। अयोध्या के शासन का अन्त न होता।

**कौशल्या :** नाथ ! अयोध्या के शासन का अन्त तो कभी का हो गया होता यदि इस संसार में हमारे वंश की रक्षा के लिए विधाता ने गुरु वशिष्ठ को नहीं भेजा होता। वही एक मात्र इस रघुवंश की नौका के मल्लाह हैं। स्वामी ! मन में धीरज धरिए और गुरु वशिष्ठ की ही शरण में जाइए।

**दशरथ :** तुम ठीक ही कहती हो प्रिये। अब मैं उन्हीं की शरण में जाता हूँ।

**(दशरथ का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

गुरु ग्रह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि विनय बिसाला ॥
निज दुख सुख सब गुरुहि सुनायउ। कहि बसिष्ठ बहुविधि समुझायउ ॥
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी ॥

## सीन दूसरा

**स्थान :** गुरु वशिष्ठ का आश्रम।

**दृश्य :** गुरु वशिष्ठ ध्यान मुद्रा में बैठे हैं।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**दशरथ :** (प्रवेश करके दुखी होकर चरणों में सिर नवाकर पुष्प चढ़ाते हुए) गुरु के चरणों में सेवक का प्रणाम स्वीकार हो।

**(राजा दशरथ का सिर नीचा करके सोच में डूब जाना)**

**वशिष्ठ :** (आँखे खोलकर) चिरंजीव रहो राजन ! क्या किन्हीं विचारों में गोते लगा रहे हो, अयोध्यापति !

लखि उदास आज नृप तुमको, शोक मन में भारी छाया है ॥
सच २ बतलाओ हे राजन, किस व्यथा ने तुम्हें सताया है ॥
बलवान भी हो धनवान भी हो, और भाग्य बुलन्द तुम्हारा है ॥
किसलिये कहो फिर भी राजन, मुख हुआ उदास तुम्हारा है ॥

**दशरथ :** (पैर पकड़कर) दशरथ की चिन्ता किसी से भी तो छिपी

नहीं है गुरुदेव ! आप स्वयं जानते हैं.....?

कर चुका विवाह तीन फिर भी, फल उसका अब तक मिला नहीं ।
है चौथापन आने वाला, हृत्कमल अभी तक खिला नहीं ॥
कम से कम एक पुत्र ही हो, जिससे रघुकुल बढ़े अपना ।
पितरों को भी तर्पण पहुँचे, आगे को नाम चले अपना ॥

**वशिष्ठ :** राजन ! नाम औलाद से नहीं अपितु कर्मों से चलता है जिसका प्रमाण तुम्हारे ही कुल में राजा भागीरथ और हरिश्चन्द्र हैं ।

**दशरथ :** यह सब कुछ समझते हुए भी मैं इस चिन्ता से किनारा नहीं कर पा रहा हूँ गुरुदेव ! यह जानते हुए भी कि मेरे आँसू भाग्य लेख धो डालने में असमर्थ हैं फिर भी मन ही मन रोता रहता हूँ । आँखों में ज्योति होते हुए भी दशरथ का रघुवंश अंधकार में खोया-सा दीख पड़ता है । गुरुदेव !

चमकता था जगत में, आज तक ये तारा रघुकुल का ॥
बना अफसोस ! मैं अब, नाश का कारण रघुकुल का ॥
करेगा कौन अब चिन्ता, लाश मेरी उठाने की ॥
चिता भी राह देखेगी, उसमें अग्नि लगाने की ॥

**वशिष्ठ :** समय से पहले कुछ भी नहीं हो पाता, अयोध्यापति ! विधाता की अपार माया, उसका विधान और भाग्य रचना कौन पढ़ पाया है ?

**दशरथ :** तब विधाता ने भविष्य में अन्धकार में रखकर अन्याय किया है गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** नहीं ..... राजपति ! भविष्य की रचना अन्धकार में नहीं, हाँ..... ! ऐसी भाषा में अवश्य है जिसे मानव सरलता से पढ़ न सके ।

**दशरथ :** किन्तु..... ! ऐसा भी क्यों ? गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** इसलिए कि मानव प्रकृति की शक्ति का अनुमान कर उससे होड़ ने कर बैठे । दुखी मानव कल के सुख की प्रतीक्षा कर

सके। कर्म करने से पहले मानव कल के फल पर विश्वास करता रहे।

**दशरथ :** दशरथ के जीवन से तो कल का विश्वास भी जाता है गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** ऐसा नहीं अयोध्या नरेश ! आप अपने पूर्व जन्म की कथा नहीं जानते। मैंने ज्ञान दृष्टि द्वारा सब पता लगा लिया है। सुनो ..... राजन ! आप अपने पूर्व जन्म में राजा मनु थे और आपकी पत्नी सतरूपा थी। चौथेपन में पति-पत्नी ने घोर तपस्या की थी जिससे प्रसन्न होकर ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश तीनों आये और आपसे वरदान माँगने को कहा किन्तु वे आपकी तपस्या भंग नहीं कर सके। फिर आकाशवाणी हुई—कि राजन ! हम तुम्हारी तपस्या से बहुत प्रसन्न हुए हैं। तुम कोई वर माँगों तब आपने भगवान विष्णु से वर माँगा कि प्रभो ! यदि आप मेरी तपस्या से प्रसन्न हैं तो मुझे आप अपना जैसा गुणवाला पुत्र दीजिये जिस पर भगवान ने प्रसन्न होकर कहा राजन ! मैं अपना जैसा पुत्र कहाँ से लाऊँगा। त्रेतायुग में मैं स्वयं ही तुम्हारे यहाँ जन्म लूँगा। इसलिये .....?

मेरा दिल कह रहा है, पूर्ण यह आशा दिली होगी।
वह दिन आने वाला है, कली मन की खिली होगी॥

**दशरथ :** गुरुदेव ! भविष्य के सुख की कल्पना के अलावा और कोई साधन नहीं है।

**वशिष्ठ :** धीरज तो है। राजन ! दिल में धैर्य धारण कीजिए। मैंने पुत्रेष्टि यज्ञ के विशेषज्ञ श्रृंगीऋृषि को बुलवाया है। आप महलों में जाकर हवन सामग्री का प्रबन्ध कर पुत्रेष्टि यज्ञ की तैयारी कराइए।

**दशरथ :** पुत्रेष्ट यज्ञ ..... ! क्या इससे दशरथ का स्वप्न साकार हो सकेगा ?

**वशिष्ठं :** मुझे विश्वास है कि श्रृंगीऋषि की तपस्या अवश्य फलीभूत होगी । जाओ ..... ! महान आत्माओं के दर्शन भी वरदान स्वरूप होते हैं ।

**दशरथ :** (चरणों में गिरकर) जो आज्ञा गुरुदेव !

**(दशरथ का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**सीन तीसरा**

**स्थान :** छज्जू धोबी के घर का भीतरी भाग ।

**दृश्य :** कम्मो धोबिन का श्रृंगार करना ।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**(छज्जू का हास्य मुद्रा में कपड़ों की गठरी लिए हुए प्रवेश कर जाना)**

**(फिल्म : खानदान)**

बड़ी देर भई नंदलाला, तेरी राह तके ब्रजबाला ।
ग्वाल बाल इक-२ से पूँछे, कहाँ है मुरली वाला रे ॥ बड़ी ... १
कोई न जाए कुंज गलिन में, तुझ बिन कलियां चुनने को ।
तरस रहे हैं यमुना के तट, धुन मुरली की सुनने को ॥
अब तो दरश दिखा दे नटखट, क्यों दुविधा में डाला रे ॥ बड़ी ... २
संकट में है आज वो धरती, जिस पर तूने जन्म लिया ।
पूरा कर दे आज वचन वो, गीता में जो तूने दिया ॥
कोई नहीं है तुझ बिन मोहन, भारत का रखवाला रे ॥ बड़ी ... ३

**छज्जू :** (पुकारते हुए) कम्मो रानी ! अरी कम्मो ! सुनती हो ..... ?

**कम्मो :** (भीतर से) मुझे चूल्हे के लिए मिट्टी भिगोनी है । तुम्हीं सुनते रहो ।

**छज्जू :**

**(गठरी नीचे रखकर माथे का पसीना पौंछते हुए)** तुम्हारे मतलब की बात ढूंढ लाया हूँ, भाग्यवान ! सुनोगी .... ? तो फूल की

तरह खिल उठोगी। (कम्मो का बाहर आना)   पर्दा गिरना

**कम्मो :** (बाहर आकर कमर पर हाथ रखकर गुस्से से) अच्छा जी? काम से थककर आराम करने का बहाना ढूँढते रहते हो। काम करने को जी नहीं चाहता तो चूड़ियाँ पहनकर घर मैं बैठे रहो। तुम्हारा काम मैं कर लूँगी।

**छज्जू :** (व्यंग से) जी..... हाँ! सो तो तुम्हारी सूरत बता रही है। मेरी मटक्को! अपने लंगड़े गधे की दुल्लती भी नहीं झेल सकोगी।

**कम्मो :** डरती नहीं.....? अपने गाँव में गधे ही चराती रही हूँ।

**छज्जू :** गधे नहीं, आदमी चरा लिए होंगे।

**कम्मो :** तुम जैसी नहीं हूँ। आदमी चराती होगी तो तुम यहाँ न दीख पड़ते।

**छज्जू :** तो क्या? मुझे भी बेच खाती।

**कम्मो :** (झुंझलाकर माथे पर हाथ रखकर) ओफ.....! हो.... ! कौन मगज मारे तुमसे? मैं तो चली अपनी मिट्टी भिगोने।

**छज्जू :** (रोककर) अरे.....! सुनो तो.....? वह शुभ सूचना तो सुनी ही नहीं।

**कम्मो :** (क्रोध से) तुम्हारी शुभ सूचना सुनते-२ बुढ़ापा आने को हो गया पर वह शुभ सूचना अभी नहीं निबटी। यही तो कहोगे.....? अपने गधे का सौदा कर आया हूँ.

**छज्जू :** अरे! गधे को मार गोली। मैं तुझे माँ बनाने का ढंग खोज लाया हूँ।

**कम्मो :** (शरमाकर बनावटी गुस्से से) देखो जी.....? बात कुछ सोच समझ कर किया करो। मैं माँ किसी बच्चे की ही तो हो सकती हूँ।

**छज्जू :** और मैं कौन-सा तुझे अपनी माँ बना रहा हूँ। तुम जो हर घड़ी जादू टोने के चक्कर में लगी रहती हो कि किसी तरह माँ बन जाऊँ। मेरा मतलब है अपनी औलाद की।

**कम्मो :** फिर.....?

**छज्जू :** फिर क्या ? उपाय सूझ गया है। (कम्मो के कान के पास आकर) बता.....? हवन करा सकती है।

**कम्मो :** मैं बस, कपड़े धुला सकती हूँ। हवन कराने के लिए किसी पंडित को ढूंढो।

**छज्जू :** तुम भी अकल के पीछे लट्ठ लिए फिरती हो। अरे.....? हवन की सामग्री आनी है। सात कन्याओं को न्यौता देना है। बता.....? इसका प्रबन्ध हो जायेगा।

**कम्मो :** पर.....? किसलिए ?

**छज्जू :** कहा तो है तुम्हें माँ बनाऊँगा....? मेरा मतलब है....? अपने बच्चे की। आज राजा दशरथ ने भी यज्ञ रचाया है। सुनते हैं.....? अग्नि में घी सामग्री फूंकने से सन्तान मिल जाती है।

**कम्मो :** सन्तान तकदीर से मिलती है। सामग्री और घी जलाने से नहीं।

**छज्जू :** अरी पगली ! हवन करने से परमात्मा प्रसन्न हो जाता है।

**कम्मो :** (खुश होकर) तो यूँ कहो न.....? छोटी-सी बात का बतंगड़ बना दिया।

**छज्जू :** (बनावटी क्रोध से) अच्छा जी.....? हम बात का बतंगड़ बनाते हैं।

**कम्मो :** और क्या ?

**छज्जू :** और तुम क्या बनाती हो ? छज्जू राम को पागल।

**कम्मो :** जी नहीं !

**छज्जू :** (अकड़कर) क्यूँ नहीं ?

**कम्मो :** (मुस्कराते हुए गले में बाँह डालकर) इसलिए कि मैं पतिव्रता नारी हूँ।

**छज्जू :** (प्रसन्न होकर) जीओ.....! हजारो वर्ष जीओ, मेरी मटक्को ! भगवान कसम कभी-२ तो तुम मिश्री से भी

मीठी बन जाती हो।

**कम्मो :** (मुस्कराकर) मैं बहुत अच्छी हूँ न।

**छज्जू :** (व्यंग से) जी हाँ .....? बहुत-२ अच्छी। इसीलिये तो परमात्मा से विनती करता रहता हूँ कि वह हमारी जोड़ी अमर रखे। कम्मो ! सच बता .....? हवन का प्रबन्ध करेगी न।

**कम्मो :** पहले तुम बताओ .....? अगर तुम मेरी जगह होते तो क्या करते ?

**छज्जू :** (भोलेपन से) परमात्मा झूठ न बुलाए.....? मैं कभी का माँ बन चुका होता। मैं तो अब भी कोई कसर न छोड़ूँ, पर वश ही नहीं चलता।

**कम्मो :** (गम्भीर होकर) किसी पंडित को तुम बुला लाओ। बाकी सब मैं कर लूँगी।

**छज्जू :** (प्रसन्न होकर) सच .....? (गोदी में उठाकर) अरे .....? शाबाश मेरी कम्मो ! तबियत खुश कर दी। (उतार कर) चल .....? तू ! पूजा का सामान इकट्ठा कर। मैं पंडित को अभी लाया। चौंककर अरे ..... ! हाँ ..... ! हरिया गधा बाहर कपड़ों से लदा खड़ा है। कपड़े उतार लाओ तब तक मैं यह गठरी सुखा लूँ।

**(कम्मो का जाना। छज्जू का कपड़ों की गठरी उठाना)**

**कम्मो :** (घबड़ाकर प्रवेश करते हुए) अजी .....? सुनते हो।

**छज्जू :** (कपड़ों की गाँठ खोलते हुए) कपड़े सुखा दूँ कम्मो ! अभी आकर के सुनूँगा।

**कम्मो :** मैंने कहा .....? अपना हरिया गधा कहीं चला गया है। दौड़ के आओ।

**छज्जू :** (हाथ से कपड़ा गिर जाता है घबड़ाकर) क्या कहा ? हरिया कहीं चला गया है ?

**कम्मो :** जी हाँ।

**छज्जू :** और वह कपड़ो की गठरी। कम्बख्त ! उसे भी ले गया होगा। मारे जायेंगे कम्मो ! चलो ? उसे ढूँढ कर लाये।

**कम्मो :** मुझे चूल्हा भी तो बनाना है।

**छज्जू :** चूल्हे की बात करती हो। कपड़ों की गठरी खो गई तो रोटियाँ तक नहीं बनेंगी।

**(पुकारते हुए दोनों का बाहर जाना।)**

हरिया..... ! हरिया..... ! हरिया बेटे..... !

## सीन चौथा

**स्थान :** दशरथ का महल

**दृश्य :** यज्ञ की कुल सामग्री रखी है। राजा दशरथ तीनों रानियों के साथ बैठे हैं।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**॥ चौपाई ॥**

श्रृंगी रिषिहि वशिष्ठ बुलावा । पुत्र काम शुभ जग्य करावा ॥

**(वशिष्ठ का श्रृंगिऋषि के साथ प्रवेश)**

**दशरथ :** (तीनों रानियों के साथ खड़े होकर दोनों के चरणों में सिर नवाकर प्रणाम कर के) अहो भाग्य ! पधारिये। (रानियों की ओर इशारा करके) प्रिये ! महान आत्माओं का दर्शन भी वरदान होता है।

**(तीनों रानियों का दोनों को प्रणाम करना)**

**वशिष्ठ :** (आर्शीवाद देते हुए) सौभाग्यवती रहो। (दशरथ से) राजन ! यज्ञ का प्रबन्ध हो गया।

**दशरथ :** (हाथ जोड़कर) प्रभो ! सिर्फ आपकी ही देर थी।

**(श्रृंगीऋषि का यज्ञ कराना)**

**॥ चौपाई ॥**

भगति सहित मुनि आहुत दीन्हे । प्रगटे अग्नि चरू कर लीन्हे ।

**अग्निदेव का प्रगट होना (आवाज)**

**अग्निदेव :** (फल देते हुए) हे राजन ! इस फल को रानियों को खिला दो । जग में यश फैलाने वाले चार पुत्र तुमको प्राप्त होंगे ।

**(दशरथ का फल ले लेना और अग्निदेव का अन्तर्ध्यान हो जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

अर्धभाग कौशल्यहि दीन्हा । उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥

**(दशरथ द्वारा फल का आधा भाग कौशल्या को और आधे में से आधा-२ कैकई और सुमित्रा को देना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

एहि विधि गर्भ सहित सब नारी । भई हृदय हर्षित सुखभारी ॥
जा दिन तें हरि गर्भहि आए । सकल लोक सुख संपत छाए ॥

**सीन पाँचवां**

**स्थान :** कौशल्या का भवन

**दृश्य :** भगवान राम का चर्तुभुजी रूप में प्रगट होना ।

**पर्दा खुलना (आवाज)**

**॥ व्यास : छन्द ॥**

भये प्रकट कृपाला दीन दयाला कौशल्या हितकारी ।
हर्षित महतारी मुनि मन हारी अदभुत रूप बिचारी ॥
लोचन अभिरामा तनुघन श्यामा निज आयुध भुजचारी ।
भूषन बन माला नयन विसाला शोभा सिंधु खरारी ॥

**कौशल्या :** (आरती उतारते हुए)

पितु मातु सहायक स्वामी सखा, तुम्हीं एक नाथ हमारे ॥
जिनके कुछ और आधार नहीं, तिनके तुम्हीं रखवारे हो ॥

कौशल्या (भगवान का चर्तुभुज रूप देखकर) हे भगवन ! आपने मुझे दर्शन देकर कृतार्थ तो कर दिया परन्तु आपका चर्तुभुजी रूप देखकर समाज के लोग जो व्यंग भरी बातें करेंगे उनको मैं क्या जवाब दूँगी । हे प्रभो ! कृपा करके

बालक रूप में आकर समाज के सामने मेरी झोली भर दो ।
जिससे मेरा वात्सल्य उमड पड़े

**राम :** माँ ! तुम पहले देवमाता अदिति थीं और महाराज दशरथ कश्यप ऋषि थे। आप दोनों ने बहुत दिनों तक कठोर तपस्या करके मुझे प्रसन्न किया और मुझे पुत्र रूप में पाने का वरदान माँगा था। मैं अब इसलिए तुम्हारा पुत्र होकर प्रगट हुआ हूँ।

जब हुई तपस्या पूर्ण तो, मैं दर्शन तुमको देने आया ।
माँगों-२ क्या इच्छा है, ले लो जो कुछ मन को भाया ॥
हाथ जोड़ कर विनती करी, तुमसे हे भगवान ।
पुत्र हमें एक चाहिए, गुण में आप समान ॥

**कौशल्या :** (हाथ जोड़कर) भगवन ! यदि आप मेरे पुत्र होकर प्रगट हुए हैं तो यह अपना चतुर्भुज रूप छिपा लीजिये और बच्चे बन जाइए जिससे मुझे आपको पुत्र के रूप में पाने का सुख मिले।

**राम :** जो आज्ञा माँ ..... !

बचनों के कारण दिया, दर्शन एक बार ।
अब बालक बनकर करूँ, लीला अपरम्पार ॥

**दृश्य परिवर्तन**

**(कौशल्या की गोद में राम को बालक रूप में रोते हुए दिखाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन छठा

**स्थान :** दशरथ दरबार

**दृश्य :** गुरु वशिष्ठ, मंत्री सुमंत, सेनापति तथा सभासद अपने-अपने यथा स्थानों पर विराजमान हैं। पहरे पर प्रहरी खड़ा है।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**प्रहरी :** (बाहर से) सावधान .....? महाराजाधिराज, अयोध्या नरेश सभा में पधार रहे हैं ।

**(सभी का सम्मान में खड़ा हो जाना । दशरथ का गुप्तचर के भेष में प्रवेश)**

**सभासद :** (सम्मिलित स्वर से) अयोध्या नरेश की जय ।

**दशरथ :** अपने नाम के जयघोषों से दशरथ सुखी नहीं होता, सभासदो ! दशरथ की प्रजा का सुख ही दशरथ का सुख है ।

**वशिष्ठ :** अयोध्या नरेश के न्याय, कर्म और प्रेम ने प्रजा को स्वर्ग का वैभव जो दिया है, नरेश !

**दशरथ :** (पैरों में गिरकर) कहाँ .....? गुरुदेव ! मैं तो समझता हूँ कि प्रजा के लिए दशरथ अभी कुछ कर ही नहीं पाया ।

**वशिष्ठ :** राजन ! यही तो प्रजा का सौभाग्य है । जिस घड़ी आपने अपने कर्म की पूर्ति समझ ली तो निश्चय ही वही दिन प्रजा के दुर्भाग्य का दिन होगा । मैं अयोध्या के भविष्य का एक सपना देख रहा हूँ। प्रतीक्षा है कि कब वह स्वप्न साकार हो ।

**दशरथ :** (पैरों में गिरकर) मुझे आज्ञा दें, गुरुदेव ! प्राणों की बाजी लगाकर भी आपका स्वप्न साकार कर पाया तो अपना सौभाग्य समझूँगा ।

**वशिष्ठ :** मुझे आशा है । अवसर आने दो । विधाता ने चाहा तो मेरा वह स्वप्न .....(चौंककर) यह आपकी वेशभूषा .....?

**दशरथ :** कभी-कभी गुप्तचर की भाँति राज्य प्रबन्ध देख लेने की इच्छा हो आती है, गुरुदेव ! चाहता हूँ कि रघुवंश की राजसत्ता पर प्रजा कोई दोष न लगाने पाये। प्रजा की स्वतंत्रता पर घात न हो ।

**सुमंत :** (खड़े होकर) अयोध्या की प्रजा धन्य है कि उसके लिए अयोध्या नरेश के सीने में प्रेम और दया है। पीड़ित को

जड़ी-बूटी से ज्यादा सहानुभूति की जरूरत होती है, महाराज !

**दशरथ :** हाँ . . . . . । राजमंत्री ! इसीलिये तो हम स्वयं सेवक की भाँति कुछ करने की कोशिश करते हैं । वह राज्य भी क्या जहाँ प्रजा का हित नहीं, मान नहीं । वह नरेश नहीं लुटेरा है जिसे अपने सुख के आगे किसी और का ध्यान नहीं ।

**प्रहरी :** (प्रवेश करके झुककर) अयोध्यापति की जय ।

**दशरथ :** क्या संदेश है ? प्रहरी !

**प्रहरी :** महाराज ! राजमहल से दासी कोई संदेश सुनाने आई है ।

**दशरथ :** आने दो ।

**प्रहरी :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज !

**(प्रहरी का जाना)**

**मंथरा :** (प्रवेश करके सिर झुकाते हुए) अयोध्या नरेश की जय ।

**दशरथ :** क्या खबर लाई है ? मंथरा ।

**मंथरा :** महाराज ! महलों में तीनों रानियों ने चार पुत्रों को जन्म दिया है ।

**॥ चौपाई ॥**

दशरथ पुत्र जन्म सुनि काना । मानहुं ब्रह्मानन्द समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरा । चाहत उठ न करत मति धीरा ॥

**(दशरथ का गुरु वशिष्ठ के चरणों में गिर जाना)**

**दशरथ :** अहोभाग्य ! राजगुरु ! आपका प्रयास सफल रहा ।

**वशिष्ठ :** भाग्य तो अयोध्या नरेश का है। आज रघुवंश का टिमटिमाता दीप फिर से जगमगा उठा है ।

**दशरथ :** ठीक कहते हो . . . . . गुरुदेव ! (ऊपर आसमान की तरफ देखकर हाथ जोड़कर) आह . . . . . देव ! तुम बड़े न्यायशाली हो । तुमने आखिर भिखारी की टेर सुन ही ली । तुम्हारी कृपा से आज में भी संसार में बसने योग्य हो गया हूँ । आज मेरे महल में अन्धकार में प्रकाश दिखाई

देने लगा है । प्रभो ! तुम धन्य हो ! धन्य हो !
सुनी तुमने आखिर, यह फरियाद सेवक की ।
जगत में रह गई बाकी, प्रभो अब याद सेवक की ॥
(दासी को जाते देख) रुको ..... ? मंथरा ।

**मंथरा :** (सिर झुकाकर) आज्ञा ..... ? अयोध्यापति !

**दशरथ :** इस शुभ संदेश की प्रसन्नता में हम ..... ? (गले का हार उतारना)

**मंथरा :** दासी आपके स्नेह की भूखी है, अन्नदाता !

**दशरथ :** (गले का हार मंथरा को देते हुए) मंत्री जी !

**सुमंत :** (खड़े होकर सिर झुकाकर) आज्ञा ..... ? महाराज !

**दशरथ :** आज हमें पुत्र पाकर नया जीवन मिल गया है और आज अपने नये जीवन पर हम अपना सारा वैभव न्यौछावर कर देना चाहते हैं । राजमंत्री ! कोष की माया को स्वतन्त्र कर दो । दशरथ नहीं चाहता कि आज अयोध्या में भिखारी भी भिखारी दीख पड़े । आज हर किसी की इच्छा पूरी हो जानी चाहिए ।

**मंत्री :** (सिर झुकाकर) जैसी आज्ञा ..... ? महाराज !

**(भिखारी का प्रवेश) गाना**

**फिल्म : एक फूल दो माली**

करदे मदद गरीब की, तेरा सुखी रहे संसार ।
बच्चों की किलकारी से, गूँजे सारा संसार ॥
औलाद वालों फूलो फलो, औलाद वालों फूलो फलो ।
भूखे गरीब की ये ही दुआ है, औलाद वालो फूलो फलो ॥
तेरा घर बच्चों से भरा रहे, तेरा बाग हमेशा हरा रहे ।
गुड्डा गुड़िया बाजा मोटर, एक शोर हमेशा मचा रहे ॥
भूखे गरीब .....
पैसे दो पैसे से कुछ न घटेगा दौलत वालो ।
ले लो दुआयें निर्धन की, धन और बढ़ेगा दौलत वालों ॥

उसी का दिया है जग में, औलाद वालों......
जुग जुग जिये तेरा लाल रहे, खुशहाल सदा तेरा नाम करेगा ।
हर पल जै जैकार करे, संसार में ऐसा काम करेगा ॥
भलाई का बदला भला ही मिला है, औलाद वालो.....
धन्य है वो इन्सान करे वो, इन्सान की सारी खुशियाँ ।
अपने घर का दीपक देकर, रोशन कर दे सारी खुशियाँ ॥
वो इन्सान नहीं एक देवता है, औलाद वालों.....

**(मंत्री का भिखारी को धन देना)**

**वशिष्ठ :** तुम धन्य हो, अयोध्या नरेश ! तुम्हारी कीर्ति आकाश के तारों की तरह सदा झिलमिलाती रहेगी ।

**दशरथ :** (चरणों में सिर नवाकर) मुझे कीर्ति नहीं, आपका आशीर्वाद चाहिए, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** अयोध्या नरेश की जय ।

**दशरथ :** नहीं, दशरथ इतना भाग्यशाली नहीं है ? गुरुदेव ! उसे तो आपके आशीर्वाद से प्रकाश प्राप्त हुआ है । सभासद ! एक स्वर में पुकारें......? राजगुरु वशिष्ठ की जय ।

**सभासद :** राजगुरु वशिष्ठ की जय ।

**वशिष्ठ :** (खड़े होकर) अच्छा राजन ! अब हम चलते हैं । (गुरु वशिष्ठ का जाना)

**पर्दा गिरना**

**(राजा दशरथ का राम को गोदी में लेकर खिलाना)**

**गाना (फिल्म : एक फूल दो माली)**

तुझे सूरज कहूँ या चन्दा, तुझे दीप कहूँ या तारा ।
मेरा नाम करेगा रोशन, जग में मेरा राज दुलारा ॥
मैं कब से तरस रहा था, मेरे आँगन में कोई खेले ।
नन्हीं सी हँसी के बदले, मेरी सारी दुनियाँ ले ले ॥
तू मिला तो मैंने पाया, जीने का नया सहारा ।
मेरा नाम करेगा रोशन, जग में मेरा राजदुलारा ॥

तुझे सूरज.....

आ उंगली थाम के तेरी, तुझे मैं चलना सिखलाऊँ ।
कल हाथ पकड़ना मेरा, जब मैं बूढ़ा हो जाऊँ ॥
तेरे संग में झूल रहा है, मेरी खुशियों का जग सारा ॥
मेरा नाम करेगा रोशन, जग में मेरा राजदुलारा ॥

तुझे सूरज.....

**॥ चौपाई ॥**

नाम करन कर अवसरु जानी । भूप बोलि पठाए मुनि ज्ञानी ॥

**सीन सातवां**

**स्थान :** दशरथ दरबार ।

**दृश्य :** राजा दशरथ मंत्री के साथ बैठे हैं ।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**दशरथ :** मंत्री जी ! गुरु वशिष्ठ को बुलाइये ।

**मंत्री :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा, महाराज !

**(मंत्री का गुरु वशिष्ठ के साथ प्रवेश)**

**दशरथ :** (सिंहासन से उठकर चरणों में सिर नवाकर) गुरुदेव के चरणों में दशरथ का प्रणाम स्वीकार हो ।

**वशिष्ठ :** (आशीर्वाद देते हुए) चिरंजीव रहो, राजन !

**दशरथ :** (सिंहासन की ओर इशारा करते हुए) आसन ग्रहण कीजिए, गुरुदेव !

**(गुरु वशिष्ठ का सिंहासन पर बैठ जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

करि पूजा भूपति अस भाषा । धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा ॥

**दशरथ :** (चरणों में झुककर) हे गुरुदेव ! यह सब आपकी ही कृपा का फल है जो भगवान ने मुझे चार पुत्र दिये हैं। अब आपने जो विचार कर रखे हों, वह नाम रखने की कृपा करें ।

**वशिष्ठ :** हे राजन ! इनके अनेक अनुपम नाम हैं । मैं अपनी बुद्धि के अनुसार बताता हूँ। (पत्रा देखते हुए) हे राजन ! तुम बड़े भाग्यशाली हो। तेरे ये चारों पुत्र अवतारी हैं। कौशल्या नन्दन का नाम मैं राम रखता हूँ जो दीनों को सुख देने वाले हैं। कैकई के पुत्र का नाम भरत रखता हूँ जो संसार का पालन पोषण करने वाले हैं। सुमित्रा नन्दन का नाम लक्ष्मण रखता हूँ जो शुभ लक्षणों के धाम श्री राम जी के प्रिय और सम्पूर्ण विश्व के आधार हैं और सुमित्रा के छोटे पुत्र का नाम शत्रुघन रखता हूँ जिनके स्मरण मात्र से शत्रु का नाश होता है।

**दशरथ :** (खुश होकर) धन्य हो, प्रभो !

**वशिष्ठ :** (उठते हुए) अच्छा, राजन ! अब हम चलते हैं।

**दशरथ :** (चरणों में झुककर) गुरुवर ! प्रणाम ।

**वशिष्ठ :** (आशीर्वाद देते हुए) फूलो फलो राजन !

**(गुरु वशिष्ठ का जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

गुरु गृहं गए पढ़न रघुराई । अल्प काल विद्या सब आई ॥

**दशरथ :** मंत्री जी ! चारों पुत्रों को गुरु वशिष्ठ के पास विद्या पढ़ने के लिए ले जाइए।

**मंत्री :** (झुककर) जो आज्ञा, महाराज !

**(मंत्री का जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन आठवाँ

**स्थान :** गुरु वशिष्ठ का आश्रम।

**दृश्य :** वशिष्ठ ध्यान मुद्रा में बैठे हैं।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**(मंत्री का चारों राजकुमारों के साथ प्रवेश करके गुरु के**

**चरण छूना। गुरु का आशीर्वाद देकर चारों राजकुमारों को सब विद्याओं में निपुण करना)**

**गुरु की शिक्षा . . . . . ?**

**वशिष्ठ :** बेटा राम ! तुम चारों राजकुमार सामने आम का वृक्ष देख रहे हो । यह फलों से लदा है तथा बिना किसी भेद-भाव के सबको शीतल छाया प्रदान करता है । उसी प्रकार तुम सब हर जीव पर दया करना । यही सबसे बड़ा धर्म है । ध्यान रखना . . . . . ? दया धर्म का मूल है ।

**पर्दा गिरना**

**।। चौपाई ।।**

विश्वामित्र महामुनि ग्यानी । बसहिं विपिन सुभ आश्रम जानी ॥

## विश्वामित्र का राम-लक्ष्मण को माँगना

## (राम जन्म लीला)

**सीन नवाँ**

**स्थान :** जंगल ।

**दृश्य :** विश्वामित्र हवन की तैयारी कर रहे हैं ।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**।। चौपाई ।।**

जहं जप जग्य जोग मुनि कर हीं । अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥
देखत जग्य निसाचर धावहिं । करहिं उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥

**(विश्वामित्र का मुनियों के साथ हवन करना। राक्षसों द्वारा गौ, ब्राह्मणों की हड्डियाँ डालकर हवन विध्वंस करना)**

**।। चौपाई ।।**

गाधितनय मन चिंता व्यापी । हरिबिनु मरहिं न निसचर पापी ॥
तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा । प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा ॥

**विश्वामित्र :** (स्वयं से) आह ! अब राक्षस हमें हवन भी नहीं करने देते

हैं। यदि इनका अन्त न होगा तो महात्माओं का यज्ञ करना दुर्लभ हो जाएगा। जगदीश की कृपा से और योगबल से मैं इनको नष्ट कर सकता हूँ लेकिन ऐसा करने से मेरा आत्म बल क्षीण हो जाएगा। (विचार करके) हाँ .....? योगबल द्वारा मुझे मालूम हुआ है कि भगवान ने अयोध्या में राजा दशरथ के यहाँ जन्म ले लिया है अब मैं जाकर के उनसे राम-लक्ष्मण को माँग लाऊँ तब यह दुष्ट राक्षस सहज ही नष्ट हो जायेंगे।

अभी जाकर के रघुकुल के, द्वार खटखटाता हूँ ।
अभी जाकर महाराज को, दुख अपना सुनाता हूँ ॥
मिटेगी मन की चिंता, और जन उद्धार भी होगा ।
हनन दुष्टों का होगा, धर्म का उपकार भी होगा ॥

**(विश्वामित्र का जाना)**

पर्दा गिरना

**॥ दोहा ॥**

बहुविधि करत मनोरथ, जात लागि नहिं बार ।
करि मज्जन सरयू जल, गए भूप दरबार ॥

## सीन दसवाँ

**स्थान :** दशरथ का राज दरबार।

**दृश्य :** राजा दशरथ सिंहासन पर विराजमान हैं। सभा में सेनापति, मंत्री तथा गुरु वशिष्ठ भी विराजमान हैं। द्वारपाल पहले पर खड़ा है।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**(विश्वामित्र का प्रवेश)**

**द्वारपाल :** (विश्वामित्र को देखकर पैरों में झुककर) मुनिराज के चरणों में सेवक का प्रणाम स्वीकार हो।

**विश्वामित्र :** चिरंजीव रहो, द्वारपाल ! अपने महाराज से कहो .....?

ऋषि विश्वामित्र आए हुए हैं।

**द्वारपाल :** (झुककर) जो आज्ञा, मुनिवर !

**॥ चौपाई ॥**

मुनि आगमन सुना जब राजा । मिलन गयउ लै विप्र समाजा ॥
करि दंडवत मुनिहि सनमानी । निज आसन बैठा रेन्हि आनी ॥

**द्वारपाल :** (प्रवेश करके नत मस्तक होकर) अयोध्या नरेश की जय !

**दशरथ :** क्या समाचार है, द्वारपाल !

**द्वारपाल :** अयोध्यापति के दर्शन को ऋषि विश्वामित्र पधारे हैं।

**दशरथ :** (खुश होकर) महाऋषि विश्वामित्र। सम्मान के साथ लेकर आओ। (द्वारपाल जाने लगता है) ठहरो.....? महाऋषि का स्वागत स्वयं दशरथ करेगा।

(दशरथ का मंत्री, गुरु तथा सेनापति के साथ द्वार की तरफ आना)

**दशरथ :** (पैरों में गिरकर) ऋषिराज के चरणों में दशरथ का प्रणाम स्वीकार हो।
उदय हुआ है भाग्य सितारा, आज अवधपति धन्य हुआ।
कहो अचानक भगवन कैसे, सेवक पर अनुराग हुआ ॥

**विश्वामित्र :** हम तुम्हारे प्रेम और भक्ति भाव से बहुत प्रसन्न हैं, अयोध्या नरेश !

**मंत्री :** (चरणों में झुककर) मुनिवर ! प्रणाम।

**विश्वामित्र :** चिरंजीव रहो।

**सेनापति :** (चरणों में झुककर) मुनिवर ! प्रणाम।

**विश्वामित्र :** चिरंजीव रहो।

**(वशिष्ठ का आगे आकर विश्वामित्र से गले मिलना)**

**दशरथ :** (चरणों में सिर नवाकर) पधारिए महर्षि ! आसन ग्रहण कीजिए।

**(सबका राज दरबार में आगमन। विश्वामित्र तथा गुरु वशिष्ठ का आसन पर बैठना)**

**वशिष्ठ :** सुना था.....? महर्षि यज्ञ रचाने जा रहे हैं।

**विश्वामित्र :** सन्यासियों का निर्णय नहीं होता, वशिष्ठ जी ! विचार होता है।

**वशिष्ठ :** और आप जैसी महान आत्माओं का विचार भी अटल हुआ करता है, ऋषिराज !

**विश्वामित्र :** नहीं..... राजगुरु ! व्यंग से (राजा दशरथ की ओर इशारा करके) यदि प्रजापति का सहयोग मिल जाता तो सन्यासियों की कल्पना साकार हो सकती है।

**दशरथ :** (चरणों में गिरकर) मैं समझा नहीं, ऋषिराज !

**विश्वामित्र :** समझ भी नहीं सकते, राजन ! आज सत्ता तेरे हाथ में है। संसार तेरी कृपाण में है। परन्तु .....? तुझे दिखाई नहीं देता। अन्धा बना हुआ है। मार डाल, अपनी प्रजा को तू मार डाल। तू ! राजा है इसलिए तू उनको रोता देख। तू ! बलवान है इसलिए तू उनको मरता देख। और कोई प्रबन्ध न कर।

सितमगर हैं जो सिंहासन को, अपनी शान समझे हैं।
लगाना ताज मुकुटों को, जो अपनी आन समझते हैं॥
प्रजा को जो सेवक, अपने को महाराज समझे हैं।
गरीबों की कमाई को, ऐश का सामान समझे हैं॥
अरे ! उसे कहते हैं राजा, जो प्रजा के दुख में मरता है।
सुला कर चैन से सबको, तब आराम करता है॥

**दशरथ :** (पैर पकड़कर) महामुने ! यदि मैं आपके कुछ काम आ सका तो इसे अपना सौभाग्य समझूँगा।

हुए हो किसलिए व्याकुल, जो इतने तमतमाये हो।
बताओ शोक का कारण, जो यों भयभीत आये हो॥
न कुछ मन में करो चिन्ता, न दम ठन्डे भरो स्वामी।
खड़ा है दास चरणों में, इसे आज्ञा करो स्वामी॥

**विश्वामित्र :** राजन ! तेरा राज्य प्रबन्ध इसी तरह चलता रहा तो एक दिन तुझे राज्य से हाथ धोना पड़ेगा। तूने अपने मन में सोच

रखा होगा कि मेरे पास सब कुछ है। हाँ.....! तेरे पास सब कुछ है। मगर.....! तुझमें प्रजा का दुख दूर करने की शक्ति नहीं। आह! कैसा अंधेर है? भक्त मर रहे हैं। मर्यादा टूट रही है। रघुकुल का नामोनिशान मिटने जा रहा है। मगर.....! फिर भी तू ध्यान नहीं देता।

**दशरथ :** महामुनि! क्या हुआ? कुछ कहिए तो सही।

**विश्वामित्र :** (दुखी होकर) क्या कहूँ? दुख होता है। आज प्रातःकाल की बात है। मैं हवन कर रहा था, कि इतने में अत्याचार हुआ।

**दशरथ :** क्या फौज चढ़ आई?

**विश्वामित्र :** नहीं.....!

**दशरथ :** तो फिर.....!

**विश्वामित्र :** (क्रोध से) उस पापी ने.....! उस चाण्डाल ने.....! जी चाहता है कि उसे अपने तेज से भस्म कर दूँ।

**दशरथ :** आखिर हुआ क्या है? महाराज!

**विश्वामित्र :** जो आदि काल से होता आया है।

**दशरथ :** अर्थात्.....!

**विश्वामित्र :** राजगुरु वशिष्ठ जी! आप राक्षसी ताड़िका से तो परिचित होंगे ही।

**वशिष्ठ :** क्यों नहीं महर्षि! वह पापिनी भी किसी सन्यासी से छिपी है।

**विश्वामित्र :** मारीच और सुबाहू के साथ उस राक्षसी ने संन्यासी जगत में भयंकर आतंक मचा रखा है। अयोध्या नरेश! केवल अभिमानी रावण के इशारे पर इने राक्षसों ने हमारी प्रत्येक धार्मिक क्रिया में विघ्न डालना अपना कर्त्तव्य समझ लिया है।

**दशरथ :** (दुखी होकर) अनर्थ! घोर अनर्थ!! शोक! महाशोक!! राज्य में जब इस तरह, अन्याय का व्यवहार है।

तो जिन्दगी पर फिर मेरी, धिक्कार है धिक्कार है ॥
मेरा कर्त्तव्य है पहला, ऋषि की आन की रक्षा ।
करूँगा प्राण देकर भी, तुम्हारे मान की रक्षा ॥

**विश्वामित्र :** इतना ही नहीं, अयोध्यापति ! ऋषियों के यज्ञ को भंग करना । यज्ञ में सामग्री के स्थान पर गौ, ब्राह्मणों की हड्डियाँ, घृत की जगह गौ, ब्राह्मणों के रक्त की आहूतियां ! बोलो . . . ! बोलो— न्याय के अधिकारी । धर्म के देवता । बोलो . . . . ! क्या इसको अनर्थ नहीं कहोगे ? क्या मैं तुम्हारी सीमा से बाहर चला जाऊँ ? (उठकर) हाँ ! मैं अब वहीं रहूँगा जहाँ पापियों के सिर काट लिये जाते हैं ।

**(विश्वामित्र जाने लगते हैं)**

**दशरथ :** (रोककर) ठहरिये, मुनिवर ! कहाँ जाते हो ?

**विश्वामित्र :** जहाँ न्याय होता है ।

**दशरथ :** मैं न्याय करूँगा ।

**विश्वमित्र :** आशा नहीं ।

**दशरथ :** मैं दण्ड दूँगा ।

**विश्वामित्र :** विश्वास नहीं ।

**दशरथ :** महाराज ! मेरी भुजाओं में बल है ।

**विश्वामित्र :** कायरों के लिए ।

**दशरथ :** मैं कसम खाता हूँ ।

**विश्वामित्र :** किसकी ?

**दशरथ :** मर्यादा की ।

**विश्वामित्र :** वह तुमसे दूर भाग गई ।

**दशरथ :** न्याय की

**विश्वामित्र :** उसे तुम खो चुके ।

**दशरथ :** तो अब सुनना ही चाहते हैं तो सुनिये मुनिवर . . . . . ?
सौगन्ध सहित लो, सुनो अब मेरा कथन है ।
यह वीर प्रतिज्ञा है, और क्षत्री का वचन है ॥

मध्यस्थ मेरी बात का, यह राज भवन है ।
साक्षी है यह आकाश, यह पृथ्वी, यह पवन है ॥
यह आन पहली बार ही, उस पवित्र नाम की ।
खाता हूँ तुम्हारे सामने, सौगन्ध राम की ॥

**विश्वामित्र :** देखो..... ! कहीं बाद में पछताना न पड़े ।

**दशरथ :** मुनिवर ! मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि आज संध्या तक उन्हें जीता न छोड़ूँगा ।

पलट जाये जमीं या टेक, ध्रुव अपनी बदल जाये ।
बजाए शाम के सूरज, सुबह को चाहे ढल जाये ॥
शीतलता पानी से निकले, आग से गर्मी निकल जाये ।
मगर.. .. ! एकदम असम्भव है, इरादा मेरा टल जाये ॥

**विश्वामित्र :** परन्तु..... ! मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं ।

**दशरथ :** तो फिर..... !

**विश्वामित्र :** सोचता हूँ नरेश ! क्या मेरी इच्छा पूर्ण भी हो सकेगी ?

**दशरथ :** दशरथ के सामने शंका को इतना महत्व न दें, दयानिधान !

**विश्वामित्र :** कह देने और कर देने में बहुत अन्तर होता है, अयोध्या पति !

**दशरथ :** क्षत्रीवीर जो कह देते हैं उसे कर दिखाया करते हैं, ऋृषिराज !

आकाश के तारे चहें, पृथ्वी पर बिखर जायें ।
पृथ्वी के जीव भी चहें, आकाश में भर जायें ॥
माणिक समुद्र में हो, पहाड़ों में मगर जायें ।
हम वह नहीं हैं जो, अपनी बात से मुकर जायें ॥
परमात्मा गवाह है, कभी अनुचित नहीं होगा ।
रघुकुल नरेश धर्म से, कभी विचलित नहीं होगा ॥

**विश्वामित्र :** तो मैं विश्वास करूँ कि यहाँ से निराश न लौटूँगा ।

**दशरथ :** क्या..... ? ऋृषिराज ! दशरथ की परीक्षा लेना चाहते हैं ।

**विश्वामित्र :** यही हाँ कहूँ तो..... !

**दशरथ :** तो ..... ! दशरथ तन, मन, धन का त्याग कर भिखारी बन जाने में भी संकोच नहीं करेगा। आप से महान आत्माओं की एक मुस्कान के लिए दशरथ को चाहे कितने भी आँसू लुटाने पड़ें तो भी दशरथ इसे अपना सौभाग्य समझेगा, ऋषिराज !

**विश्वामित्र :** तब तो मुझे ..... !

**दशरथ :** शंका का त्याग करो, ऋषिराज ! दशरथ स्वयं कुछ भी नहीं, सब आपके आशीर्वाद का फल है, प्रभो ! आत्मबल और कर्म से आपने स्वयं को क्षत्री से ब्राह्मण बना दिया तो क्या ? इस सेवक को सेवा भाव का दान नहीं दे सकेंगे, महामुने !

**विश्वामित्र :** मेरी सेवा में शान्ति नहीं, तड़पन मिलेगी, दशरथ ! दर्द मिलेगा।

**दशरथ :** यदि दशरथ की रगों में रघुवंश का रक्त हुआ तो वह इस तड़प और दर्द से भी मुस्कान पा सकेगा, ऋषिराज !

**विश्वामित्र :** मैं तुमसे बहुत बड़ी याचना करने आया हूँ, दशरथ !

**दशरथ :** दशरथ का राज लीजिए। उसके प्राण लीजिए।

**विश्वामित्र :** मैं तुम्हें वचनों का बन्दी बनाना चाहूँ...... ! तो ..... ?

**दशरथ :** क्षत्री की वाणी ही सौगन्ध होती है, ऋषिराज ! दशरथ आपकी इच्छा का अनादर करके रघुवंश के माथे पर कलंक नहीं बनेगा।

**विश्वामित्र :** तो मैं तुम्हारे रत्न राम और लक्ष्मण को माँगता हूँ।

**॥ दोहा ॥**

राजन तू अब ध्यान से, सुन कुछ मेरा हाल ।
ऋषियों की रक्षा सदा, करते हैं भूपाल ॥
मैं यज्ञ जिस समय करता हूँ, दुख मुझको निशाचर देते हैं ।
पूजा सामग्री हवन कुण्ड, सब नष्ट भ्रष्ट कर देते हैं ॥
असुरों के अत्याचारों से, उकताया घबराया हूँ मैं ॥

रक्षा सहायता दो पदार्थ, तुझसे लेने आया हूँ मैं ॥
तू अपने राम लषण दोनों, दे सोंप मुझे थोड़े दिन को ॥
इसमें है तुझको पुण्य सुयश, कल्याण और मंगल इनको ॥

**दशरथ :** (हैरानी से) राम और लक्ष्मण..... ! किन्तु ऋृषिराज !

**विश्वामित्र :** हाँ.... हाँ.... राम और लक्ष्मण..... ! विचलित हो गये, दशरथ ! क्या अपनी कसम को इतनी जल्दी भूल गये ?

**दशरथ :** विचलित नहीं, ऋृषिराज ! सोचता हूँ कि अभागे दशरथ की ममता छीनकर आप किन स्वप्नों को साकार बनाना चाहते हैं ? वह वरदान जो आप ही ने दिया था क्यों लौटा लेने की इच्छा करते हैं ? कहीं दो घड़ी की मुस्कराहट देकर दशरथ का जीवन तो लूटने का निश्चय नहीं कर लिया आपने ?

**विश्वामित्र :** नहीं, अयोध्यापति ! विश्वामित्र घातक नहीं है। विश्वामित्र के हृदय में रघुवंश के प्रति सदा प्रेम रहा है। भले ही मोहवश तुम कुछ भी समझो किन्तु विश्वामित्र इसमें भी एक अहम स्वप्न देख रहा है। राजन ! मैं यज्ञ का प्रबन्ध कर राम और लक्ष्मण को लिवाने आया हूँ।
हमको जरूरत तेरे लखन-राम की । मत रोकना ॥ २ ॥

**दशरथ :** इच्छा करूँगा पूरी धन व धाम की ।
क्या है जरूरत बन में लखन-राम की ॥
ओ कौशिक मुनि..... !

**विश्वामित्र :** राजन ! यदि मुझे धन की लालसा होती तो राज्य क्यों छोड़ता।
नहीं है जरूरत हमको धन व धाम की ।
हमको जरूरत तेरे लखन-राम की ॥
माँगू ना राज तेरा नहीं ताज चाहिये ।
आये हैं सुन के चर्चा तेरे नाम की ।
हमको जरूरत तेरे लखन-राम की ॥

**दशरथ :** दान मैं बालकों को कैसे दे दूँ स्वामी ।
मेरे प्राण दान में ले लो अर्न्तयामी ॥
यात्रा करेंगे दानव यम धाम की ।
क्या है जरूरत वन में लखन-राम की ॥

**विश्वामित्र :** दैत्य व दानव दल परेशान करते ।
भंग सभी सामाँ पूजा का करते ॥
होती है खंडित पूजा सुबह शाम की ।
हमको जरूरत तेरे लखन-राम की ॥

**दशरथ :** दानवों से लड़ने खुद हम चलेंगे ।
मारीच सुबाहू को वाणों से हनेंगे ॥
होगी न खंडित पूजा सुबह शाम की ।
क्या है जरूरत बन में लखन-राम की ॥

**विश्वामित्र :** फैंकते हैं माँस मदिरा हवन कुण्ड में ।
जाके फँसा हूँ अकेला पापियों के झुंड में ॥
दिला दो सजा तुम उनको बुरे काम की ।
हमको जरूरत तेरे लखन-राम की ॥

**दशरथ :** छोटी सी उमरिया इनकी कैसे ये डरेंगे ।
मायावी दानवों को देखकर लड़ेंगे ॥
दुनिया में होगी पूजा मुनि नाम की ।
क्या है जरूरत वन में लखन-राम की ॥

**विश्वामित्र :** आया हूँ दर पै तेरे दान दे दो स्वामी ।
दशरथ से कहता है विश्वामित्र ज्ञानी ॥
दुनियाँ में होगी पूजा श्री राम की ।
हमको जरूरत तेरे लखन-राम की ॥
मत रोकना..... !

**(मास्टर रामवीर सिंह अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**दशरथ :** (स्वयं से) राम और लक्ष्मण ! फिर वही हृदय पर घात...? क्षमा करें, ऋषिराज ! मैं समझ नहीं सका कि वह फूल से

सुकुमार क्या सेवा कर सेकेंगे आपकी ?

**विश्वामित्र :** सेवा मेरी नहीं, दशरथ ! दुष्टनी ताड़का, मारीच और सुबाहु के अत्याचार से साधु समाज को मुक्त कर राम धर्म का उपकार करेंगे ।

**दशरथ :** तो क्या राक्षसों से संघर्ष करना होगा उन बालकों को ?

**विश्वामित्र :** हाँ .....! किन्तु तुम इतने व्याकुल क्यों हो रहे हो ? नरेश !

**दशरथ :** दशरथ भी तो हड्डी और माँस का बना पुतला है, महर्षि ! इसमें भी तो प्रेम का अंश है । दशरथ को भी तो पीड़ा का ज्ञान हो सकता है । मेरे राम-लक्ष्मण .....! वह कल के दूध पीते बालक .....! क्या संघर्ष कर सकेंगे राक्षसों से ? कपटी और फरेबी राक्षसों को देखकर ही उन बालकों के प्राण हवा हो जायेंगे, महर्षि !

**विश्वामित्र :** वहम है नरेश ! कस्तूरी मृग भटकता रहता है कस्तूरी की खोज में, जबकि कस्तूरी उसमें स्वयं ही मौजूद है । राजन ! आप राम-लक्ष्मण के पिता हैं, परन्तु अपने पुत्रों का वास्तविक रूप नहीं पहचान पाते ।

**दशरथ :** इतना अवश्य जानता हूँ, ऋषिराज ! कि राम की आकृति मेरे रोम-२ में समा चुकी है । मुझे लगता है कि राम दशरथ का पुत्र ही नहीं प्राण भी है । क्यों है राम के प्रति दशरथ का इतना मोह .....? यह मैं स्वयं नहीं जान पाया । (सोचते हुए) हाँ .....। मुझे कुछ बीती कहानी याद हो आई है, महामुनि !

**विश्वामित्र :** मैं अभी नहीं समझ सका, नरेश !

**दशरथ :** शायद उन बूढ़े ब्राह्मणों का अभिशाप तो पू.      हो जाना चाहता है ।

**विश्वामित्र :** अभिशाप .....?

**दशरथ :** हाँ ..... ऋषिराज ! वे हीं घड़ियाँ दशरथ से खिलवाड़ कर

रही हैं। श्रवण कुमार की मृत्यु पर दुखी होकर उसके अन्धे माँ-बापे अभागे दशरथ को शाप दिया था कि मैं भी उन्हीं की तरह पुत्र वियोग में तड़प-तड़प कर प्राण त्यागूँगा। (पाँव पकड़कर) प्रभो ! राम-लक्ष्मण का अयोध्या से निकलना और मृत्यु को बुलावा देना एक समान होगा। न जाने पुत्र वियोग में मैं तड़पू या मर जाऊँ और विधाता न करें.....? कहीं मेरे सुकुमार ही मौत को प्रिय न हो जायें। ऋषिराज ! यह दशरथ आपकी हर आज्ञा पालन करने में अपना सौभाग्य समझेगा किन्तु अपने सुकुमारों को राक्षसों के सम्मुख.....?

**विश्वामित्र :** राजन ! तो क्या इन्कार है ?

**दशरथ :** सुनना ही चाहते हैं तो सुनिय मुनिवर.....? अपने सुकुमारों को आग में झोंकने से दशरथ लाचार है।

**विश्वामित्र :** (उठते हुए) तुम्हारे राम पर विश्वामित्र का अधिकार नहीं है, दशरथ ! यह तो तुम्हारी इच्छा पर ही निर्भर था। ऐसे संकट के समय धर्म की कुछ सहायता कर सकते।

अफसोस ? तुम जैसे ज्ञानी को, इतनी बच्चों की ममता है।
जा चुकी जवानी दीवानी, फिर भी माया में भ्रमता है ॥
उपकार सन्त का करने में, इतना विलम्ब इतनी उलझन।
कुछ दिन को उनके देने में, इतनी बातें इतनी अड़चन ॥
यदि आज विष्णु से कहता मैं, चल देते छोड़ गरुड़ वाह्न।
शिव से आदेश अगर करता, हिल जाता उनका भी आसन ॥
माँगा जो कर पसार तुझसे, इसलिए मुझे सन्ताप हुआ।
दुख हुआ तुझको भी मुझको भी, इस पुण्य, कार्य में पाप हुआ ॥

**॥ चौपाई ॥**

सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदयं कंप मुख दुति कुमलानी ॥
चौथेंपन पायऊं सुत चारी। विप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी ॥

**दशरथ :** (पैरों में पड़कर रोते हुए)

हे मुनिवर ! दोनों बालक हैं भोले भाले नादान निरे ।
रण विद्या नहीं जानते हैं, लड़ने में अभी अजान निरे ॥
लो राज-ताज, सम्पत सेना, यह सब देना दुश्वार नहीं ।
आज्ञा हो तो मैं चला चलूँ, इसमें भी कुछ इन्कार नहीं ॥
हे स्वामी ! सभी सर्मपण हैं, जितने साधन शासन के हैं ।
पर, प्रभु ! विचार के वचन कहो, सुत चारों चौथेपन के हैं ॥
वैसे तो चारों ही मेरी, इन बूढ़ी आँखों के तारे हैं ।
लेकिन राम और लषण दोनों, प्राणों में बढ़कर प्यारे हैं ॥
आराम से है मुझको, कब उसका विरह गवारा हो ।
जब घर का वही चाँदना हो, जीवन का वही सहारा हो ॥

**विश्वामित्र :** भूलते हो, दशरथ ! राम पुत्र इसलिए है कि तुम पिता हो। यह कौन जानता है कि राम के रूप में स्वयं.....?

**दशरथ :** हृदय को समझाता हूँ परन्तु कुछ भी असर नहीं होता, ऋषिराज ! सोचता हूँ, यह सुकुमार देन आपकी ही है तो सोंप दूँ आपको, पर डरता हूँ कि संसार में मेरी हत्यारी ममता के प्रति कहावतें न खड़ी हो जायें। यह दशरथ संतान का मोह त्याग कर कलंकी न कहलाए। महामुनी ! भले ही दशरथ को वचनहारी बनना पड़े। ऋषिराज का शाप लेना पड़े, पर उस कली को जिसकी परवरिश के लिए, दशरथ माली का पात्र निभा रहा है, नहीं नोंच सकेगा, प्रभो ! नहीं नोंच सकेगा.....?

**विश्वामित्र :** (आगे बढ़ते हुए) अयोध्या नरेश ! आज तूने रघुकुल की आन और सूर्य वंशी शान को मिट्टी में मिला दिया। अपने बेटों को अपने पास ही रख। मैं जा रहा हूँ.....? अब कभी भी तेरे पास सहायता को नहीं आऊँगा।

**(विश्वामित्र जाने लगते है)**

**वशिष्ठ :** (खड़े होकर) ठहरिये, मुनिराज ! अयोध्या नरेश के द्वार से आपका निराश लौट जाना साधारण बात नहीं, इसमें लज्जा

केवल मेरे, दशरथ या अयोध्या के लिए ही नहीं, सम्पूर्ण रघुवंश के लिए है। विराजिये, ऋषिराज ! मैं स्वयं दशरथ को समझाता हूँ।

॥ चौपाई ॥

तब वसिष्ठ बहुविधि समुझावा । नृप संदेस नास कहँ पावा ॥

**वशिष्ठ :** अयोध्या नरेश !

**दशरथ :** (पैरों में पड़कर) हाँ ! आप भी कह दें कि यह सब मेरे लिए उचित नहीं है। मेरे भाग्य में तो केवल पुत्र वियोग में रोना-तड़पना बदा है, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** नहीं, राजन ! संसार के हर कार्य के पीछे कोई कारण छिपा होता है। कई बार राजकुमार राम का व्यवहार देखकर मुझे भी शंकाओं ने घेरा है। आप विश्वामित्र जी के प्रति कोई शंका न रखें। हठधर्मी कर लेने या रो-रोकर सिर धुनने से भाग्य के लेख नहीं बदले जा सकते। विश्वामित्र जी यदि चाहें तो अपने तेज से राक्षसों का नाश कर सकते हैं किन्तु यह सुयश वे आपके पुत्र राम और लक्ष्मण को देना चाहते हैं।

**दशरथ :** तब ..... कह दीजिए, आप भी। कह दीजिए..... कि मैं अपने सुकुमारों को बुला भेजूँ।

**वशिष्ठ :** मुझे इसी में भलाई दीखती है, नरेश ! मुझे लगता है कि कल का रघुवंशीय टिमटिमाता दीप भविष्य में चन्द्रमा के समान सदा-सदा के लिए चमक उठेगा।

**दशरथ :** भविष्य में क्या होगा ? यह नहीं जानता, गुरुदेव ! हाँ ... ! इतना जानता हूँ कि राम और लक्ष्मण के आँखों से दूर होते ही इन आँखों की ज्योति चली जायेगी। दशरथ राम-लक्ष्मण को विदा करके बिना लाठी का अन्धा ही रहेगा, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** धर्म पर बलिदान रोकर नहीं, हँसकर दिया जाना चाहिए,

नरेश ! आप उसी वंश में जन्में हैं जिसमें सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र हुए थे। मोह त्याग दो, अयोध्यापति ! अपने सुकुमारों को बुलाकर सौंप दो महर्षि को। सम्भव है आपका यह महान त्याग भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाये।

**दशरथ :** गुरुदेव ! सत्य है.....? दशरथ को यदि अपने आदर्श का ध्यान न हुआ होता। दशरथ के हृदय में यदि रघुवंश की मर्यादा का स्नेह न होता। यदि दशरथ सेवा भाव का पक्षपाती न होता तो कदाचित..... आज वह अपने हृदय राम को जुदा न करता।

**॥ चौपाई ॥**

अति आदर दोउ तनय बोलाए । हृदयं लाइ बहुभाँति सिखाए ॥
मेरे प्राण नाथ सुत दोऊ । तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥

**दशरथ :** मंत्री जी ! पुत्र राम-लक्ष्मण को अपने साथ लेकर आओ।

**मंत्री :** (सिर झुकाकर) जो आज्ञा महाराज !

**(मंत्री का राम-लक्ष्मण को लेकर आना)**

**राम-लक्ष्मण :** आदरणीय राजगुरु, महर्षि और पूज्यनीय पिता जी को अपने सेवक का प्रणाम स्वीकार हो।

**(सबका आशीर्वाद देना)**

**दशरथ :** बेटा राम !

**राम :** आज्ञा, पिताजी !

**दशरथ :** आज से स्वयं को महर्षि विश्वामित्र का दास समझो, जब तक भी ऋषिराज चाहें।

**राम :** आपकी आज्ञा सिर आँखों पर, पिताजी !

**दशरथ :** आज से यह आज्ञा दशरथ की नहीं, ऋषिराज विश्वामित्र की होगी। बेटा राम ! याद रहे.....? इनकी किसी भी आज्ञा का अनादर करना दशरथ पर घात करना होगा।

**लक्ष्मण :** भैया राम अपनी मर्यादा के बड़े पक्के हैं, पिताजी ! भले ही

राम भैया खाना-पीना भूल जायें किन्तु प्रभात में उठकर इतना अवश्य दोहराते हैं।

रघुकुल रीति सदा चलि आई । प्राण जाय पर वचन न जाई ।

**वशिष्ठ :** सुना, अयोध्यापति ! राम चरित पर प्रकाश डालना चन्द्रमा को दीप दिखाने के समान होगा। यदि श्रीराम जी चाहें तो अपना परिचय स्वयं दे सकते हैं।

**राम :** परिचय .....? और मेरा .....? राई को पहाड़ों की उपमा न दें, गुरुदेव ! राम तो अयोध्या नरेश का अधखिला फूल है। राम तो अपने बड़ों और मानव समाज का तुच्छ दास है। पूज्यनीय पिताजी ! आपकी आज्ञा के बाद राम को माता के आशीर्वाद की भी आवश्यकता पड़ेगी।

**दशरथ :** राजमहल में जा सकते हो किन्तु जल्दी ही लौटना, बेटे !

**॥ दोहा ॥**

सौंपे भूप ऋषिहि ब्रत, बहुविधि देई असीस ।
जननी भवन गए प्रभु, चले नाई पद सीस ॥

**(राम-लक्ष्मण का वशिष्ठ, विश्वामित्र तथा दशरथ को प्रणाम करके जाना)**

**दृश्य परिवर्तन**

**स्थान :** राजमहल।

**दृश्य :** तीनों मातायें बैठी हैं।

**राम-लक्ष्मण :** (प्रवेश करके) माताओं के चरणों में हमारा प्रणाम स्वीकार हो।

**मातायें :** हमारे होनहार पुत्रों ? तुम्हारा सदैव कल्याण हो।

**राम :** माताजी ! आज्ञा दीजिए.....? हमें ऋषि विश्वामित्र की सेवा में जाना है।

**कौशल्या :** जाओ, पुत्र ! रघुकुल की कीर्ति को बढ़ाओ।

**(राम-लक्ष्मण का चरण छूकर जाना)**

**दृश्य परित्र्तन**

**राम-लक्ष्मण :** (प्रवेश करके) गुरु वशिष्ठ, ऋषि विश्वामित्र तथा दशरथ के चरण छूना। सबका आशीर्वाद देना।

**वशिष्ठ :** हँसकर दोनों राजकुमारों को विदाई दो, अयोध्या नरेश !

**दशरथ :** विदाई दूँ, तो ..... कैसे, राजगुरु ! हृदय की धड़कनें कुछ भी तो नहीं कहने दे रहीं, गुरुदेव ! मेरी ओर से राम-लक्ष्मण स्वतंत्र हैं, किन्तु ..... ? (मुँह फेरकर सुबकना)

**राम :** (चरणों में सिर नवाकर) यह किन्तु का विराम ही तो मोह का कारण बना हुआ है, पिताजी ! इसे त्याग दीजिए, हमें आज्ञा दीजिए।

**दशरथ :** (राम-लक्ष्मण का हाथ अपने हाथ में लेकर विश्वामित्र की ओर इशारा करके)

प्रभु ! याद रहे ये दोनों बच्चे, मेरी आँखों के तारे हैं ।
इन्हीं पर जीवन नैया है, और नाथ ! ये मेरे सहारे हैं ॥
लो हाथ में इनका हाथ नाथ, ये दोनों भोले भाले हैं ।
यह फिकरा याद रहे भगवन, मेरे नाजों के पाले हैं ॥

**(विश्वामित्र को हाथ थमाकर)**

तुम्हें अर्पण है मेरी, उम्र भर की जो कमाई है ।
बड़ी मुश्किल से ईश्वर ने शकल इनकी दिखाई है ॥
लिया है हाथ में हाथ, इसका मान भी रखना ।
दया करके प्रभो इनकी, रक्षा का ध्यान भी रखना ॥

**विश्वामित्र :** (मुस्कराकर) विधाता की माया अपार है, दशरथ ! संकोच छोड़ दो, राजन ! माना की आप योद्धा हैं, बलशाली हैं किन्तु वहाँ का यश तो राम-लक्ष्मण को ही मिलना है।

मुझे भी लाज रखनी है, अपने कर्म और नाम की ।
राम करेंगे यज्ञ रक्षा, और मैं तुम्हारे राम की ॥

**लक्ष्मण :** (प्रसन्न होकर) अयोध्यानरेश की जय !

**वशिष्ठ :** नहीं, लक्ष्मण ! जय अयोध्यानरेश की नहीं, इन्होंने राजाज्ञा नहीं दी तुम्हें, पित्राज्ञा दी है। शासन का हृदय तो पत्थर भी

हो सकता है, किन्तु पिता का हृदय सदा मोम रहता है। आज अयोध्यानरेश ने मोह का त्याग किया है। धर्म हित के लिए अपने हित को मिटा दिया है इसलिए जयकारा यूँ लगाओ।

**(आदर्श पिता दशरथ की जय)**

**राम-लक्ष्मण :** आदर्श पिता दशरथ की जय।

**(महर्षि विश्वामित्र के पीछे-पीछे २ राम-लक्ष्मण चल देते हैं। दशरथ एकटक देखते रह जाते हैं)**

**।। सोरठा ।।**

पुरुषसिंह दोउ बीर, हरषि चले मुनि भय हरन ।
कृपासिंधु मति धीर, अखिल विश्व कारन करन ॥

# ताड़िका वध

## (राम जन्म लीला)

### सीन ग्यारहवाँ

**स्थान :** जंगल।

**दृश्य :** विश्वामित्र कें साथ राम-लक्ष्मण धनुष बाण लिए हुए खड़े हैं।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**विश्वामित्र :** बेटा राम-लक्ष्मण ! तुम दोनों अपनी बाण परीक्षा दो। लक्ष्मण ! तुम वह सामने के वृक्ष को भेदो।

**लक्ष्मण :** (चरण छूते हुए) क्षमा करें, गुरुदेव ! पहला अधिकार तो भैया राम का है।

**विश्वामित्र :** धन्य हो, लक्ष्मण ! मैं तुम्हारे भ्रातृ प्रेम से बहुत प्रसन्न हूँ। (राम की ओर) धनुष बाण तुम संभालो, राम !

**राम :** (चरण छूकर) जैसी आज्ञा, गुरुदेव !

**(राम का धनुष पर बाण चढ़ाना तथा जय गुरुदेव कहकर बाण छोड़ना। बाण से अग्नि की लपटें निकलना।)**

**विश्वामित्र :** (प्रसन्न होकर) शाबास . . . . . ! अब धनुष बाण तुम संभालो, लक्ष्मण !

**लक्ष्मण :** (चरण छूकर) जैसी आज्ञा, गुरुदेव !

**विश्वामित्र :** देखो लक्ष्मण ! अग्नि की लपटें बढ़ती जा रही हैं। तुम क्या करोगे ? लक्ष्मण !

**लक्ष्मण :** आज्ञा दें तो वर्षा कर इन लपटों को शान्त कर दूँ, गुरुदेव !

**विश्वामित्र :** दिखाओ अपना कौशल।

**(लक्ष्मण का जय गुरुदेव कहकर बाण छोड़ना वर्षा होना। जंगल में अग्नि की लपटों का शान्त होना)**

**राम :** (चरणों में झुककर) आपकी शिक्षा आदर्श रही, गुरुदेव !

**विश्वामित्र :** मैं तुम्हारी मान्यता को स्वीकार करता हूँ और मेरी कामना है कि तुम अपनी धनुष विद्या में सर्वश्रेष्ठ रहो। अब हमारी इच्छा बन भ्रमण की हो गई है, राम ! चलो . . . . . ! आगे चलो।

**राम :** (चरणों में झुककर) जैसी आज्ञा, गुरुदेव !

**(विश्वामित्र का राम-लक्ष्मण के साथ प्रस्थान)**

**पर्दा गिरना**

## सीन बारहवाँ

**स्थान :** घोर जंगल का एक मार्ग।

**दृश्य :** विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण का पथ गमन।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**राम :** (वन के मार्ग में रुककर) गुरुदेव ! यह कौन-सा स्थान है ?

**विश्वामित्र :** यह वन भयंकर राक्षसों का निवास स्थान है। यहाँ ताड़िका नाम की एक राक्षिसी रहती है जिसने ऋषि-मुनियों का जीना दूभर कर दिया है।

**राम :** तब उसका नाश क्यों नहीं कर दिया जाता ? गुरुदेव !

**विश्वामित्र :** ताड़िका पर विजय प्राप्त करना हम किसी के बलबूते की

बात नहीं है। मैंने सोचा है कि यह क्यों न तुम्हारे हाथों..?

**राम :** किन्तु, गुरुदेव ! ऐसी भयंकर राक्षसी पर क्या सम्भव है कि हम विजय पा जायें ?

**विश्वामित्र :** मुझे इसमें संदेह नहीं है।

**राम :** इस बाल्यावस्था में.....?

**विश्वामित्र :** यही कहना चाहते हो कि हममें इतना साहस नहीं।

**राम :** यह निर्णय तो आपके हाथ है, गुरुदेव !

**विश्वामित्र :** संसार में कुछ ऐसे भी महान होते हैं जिन्हें अपनी महानता का पूरा ज्ञान नहीं होता। उनमें से तुम भी एक रत्न हो और फिर मेरी शुभकामनायें भी तो तुम्हारे साथ हैं।

**राम :** तब हमें कोई संकोच न होगा, गुरुदेव ! हाँ.....! ताड़िका ऋषियों के साथ ऐसा अत्याचार क्यों करती है, गुरुदेव !

**विश्वामित्र :** इसकी भी एक कहानी है, बेटा ! सुकेतु यक्ष ने ब्रह्माजी से सन्तान का वर प्राप्त किया था फलस्वरूप उन्हीं के यहाँ ताड़िका का जन्म हुआ। योग्य हो जाने पर ताड़िका का विवाह जम्भासुर से कर दिया गया जिससे मारीचि नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ। सुकेतु यक्ष के किसी दुर्व्यवहार के कारण अगस्त मुनि ने उसे अपने शाप से भस्म कर दिया। दुष्टनी ताड़िका पुत्र मारीच सहित अगस्त मुनि पर घात करने दौड़ी। अगस्त मुनि ने पुकारा, राक्षसी ! और उन महामुनि के इस शब्द ने अमरता का रूप ले लिया। बस ! उसी समय से यह पापिन इस वन में रह रही है। ऋषियों के जीवन से खिलवाड़ करना, उनकी तपस्या भंग करना ही ताड़िका का ध्येय बन गया है।

**राम :** तब तो उस पिशाचिनी का वध करने में कोई दोष नहीं होगा गुरुदेव !

**विश्वामित्र :** द्रोष नहीं, पुण्य होगा, राम !

**(परदे के पीछे से ताड़िका की भयंकर हँसी)**

राम : गुरुदेव ! इतनी भयंकर हँसी.....?

विश्वामित्र : वही ताड़का पिशाचिनी है। तुम धनुष बाण संभालो, राम !

राम : जय गुरुदेव की।

**(राम लक्ष्मण गुरुदेव के चरण छूकर बाण संभालते हैं)**

विश्वामित्र : सावधान राम ! दूसरा बाण चलाने की जरूरत न रहे। संकोच मत करना कि नारी घात पुरुष के लिए दोष होगा। ताड़िका नारी नहीं पाप है। उसे समाप्त कर देने में पाप नहीं, धर्म है।

**॥ चौपाई ॥**

चले जात मुनि दीन्हि देखाई । सुनि ताड़िका क्रोध कर धाई ॥
एकहिं बांन प्रान हर लीन्हा, दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥

ताड़िका : (सामने आकर) आहार.....! भूखी का आहार।

**(राम की ओर अट्टहास करते हुए झपटना)**

राम : अरे दुष्टा मरने के लिए हो जा तैयार।

**(राम का बाण चलाना और ताड़िका का गिरना)**

विश्वामित्र : (प्रसन्न होकर) श्री रामचन्द्र जी की जय।

राम : नहीं.....? गुरुदेव की जय।

विश्वामित्र : अच्छा.....! अब हमारे आश्रम में चलो।

राम : चलिये, प्रभो !

**(तीनों का प्रस्थान)**

**पट परिवर्तन**

स्थान : जंगल।

दृश्य : मारीच और सुबाहु वन में घूम रहे हैं।

दूत : (घबराये हुए प्रवेश करके) महाराज की दुहाई है।

मारीच : (क्रोध से) क्या आफत आई है ?

दूत : अन्नदाता ! गजब हो गया.....?

मारीच : साफ-साफ बता.....? पहेली न बुझा.....? ?

दूत : महाराज ! ऋषि विश्वामित्र के साथ आये दो राजकुमारों ने

माँ ताड़िका का हमेशा-हमेशा के लिए इस संसार से नामोनिशान मिटा दिया ।

**मारीच :** (गरज कर) क्या कहा.....? ताड़िका मारी गई.....??
ओह ! अनर्थ...!! हमारी सीमा में हम पर ही अनर्थ..?
ओ अत्याचारी संभल ?? अब तू बच नहीं पायेगा ???

## सीन तेरहवाँ

### (मारीच और सुबाहु का प्रस्थान)

### पर्दा गिरना

**स्थान :** विश्वामित्र का आश्रम ।

**दृश्य :** विश्वामित्र यज्ञ पर बैठे हुए हैं । पास में राम-लक्ष्मण धनुष बाण लिए हुए खड़े हैं ।

### पर्दा उठना

### ॥ चौपाई ॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई । निर्भय जग्य करहुँ तुम जाई ॥
होम करन लागे मुनि झारी । आपु रहे मख की रखवारी ॥

**राम :** (चरणों में झुककर) गुरुदेव ! अब आप निर्भय होकर यज्ञ कीजिए ।

**विश्वामित्र :** अच्छा, बेटा ! मैं यज्ञ रचाता हूँ। तुम सावधान होकर रहना । क्योंकि यहाँ दुष्ट राक्षसों का हर समय भय बना रहता है ?

**राम :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा गुरुदेव !

**(विश्वामित्र का यज्ञ रचाना । राम-लक्ष्मण का धनुष-बाण लेकर पहरा देना)**

**सुबाहु :** (राम-लक्ष्मण के पास आकर) हा... हा... हा... (क्रोध करके व्यंग से) तो.....? तुम हो......??
बचकर निकल जाना अब, यहाँ से दुश्वार है ।
ताड़िका नहीं तो क्या हुआ, यह उसका बरखुरदार है ॥

**लक्ष्मण :** जिस जगह पर माँ गई, बेटा भी वहीं पर जायेगा ।
लक्ष्मण का यह वार, खाली कभी न जायेगा ॥

**सुबाहु :** रण की भूमि है यह, कोई बच्चों का न खेल है ।
सामने से मरदूद हट, तेरा मेरा क्या मेल है ॥

**राम :** राक्षसों को मारने की, कसम खाई है राम ने ।
जीता वह न जायेगा, आ गया जो मेरे सामने ॥

**सुबाहु :** देख लेना माँ का बदला, मैं चुकाऊँगा अभी ।
एक ही बस वार में, यमलोक पहुँचाऊँगा अभी ॥

**राम :** बातें बनाना छोड़ दे, न मुझसे तकरार कर ।
यमलोक जाने के लिए, तू रास्ता तैयार कर ॥

**(राम और सुबाहु का युद्ध होना। राम का बाण छोड़ना। सुबाहु का गिरकर प्राण त्यागना)**

**॥ चौपाई ॥**

सुनि मारीच निशाचर कोही । लै सहाय धावा मुनि द्रोही ॥
बिनु फर बान राम तेहिं मारा । सत जोगन गा सागर पारा ॥

**मारीच :** मारीच मेरा नाम है, मैं काल हूँ विकराल हूँ ॥
अन्यायियों के वास्ते, विकराल हूँ महाकाल हूँ ॥

**राम :** कर चुका विध्वंस अब तक, यज्ञ ऋषि मुनियों के बहुत ॥
विघ्न डाले धार्मिक कार्यों में, ऋषि मुनियों के बहुत ॥
अब सहाई हो गया, इनको हमारा बाण है ।
देख ले अब यह तेरी, मौत का सामान है ॥

**मारीच :** होश में आकर के देख, क्या है ? बालक ! तेरे सामने ।
आ गया मारीच बनकर, अब काल तेरे सामने ॥

**राम :** माँ, गई जिस जगह, तू भी वहीं पर जायेगा ॥
समझ ले कुछ देर में जिन्दा न रहने पायेगा ॥

**(राम और मारीच का युद्ध होना। राम का बाण छोड़ना। मारीच का भागना। लक्ष्मण द्वारा पीछा करना)**

**लक्ष्मण :** (मारीच के पीछे भागते हुए) ठहर दुष्ट ..... ? मैं तुझे अभी

ाठकाने लगाता हूँ.....??

**राम :** लक्ष्मण ! ठहरो.....?
भागने वाले को छोड़ो, वह न कोई इन्सान है ।
उसके पीछे भागना, न अब हमारा काम है ।

**विश्वामित्र :** शाबास.....! रघुकुल शिरोमणि ! शाबास ! अब मेरी विद्या सफल हुई ।

**राम :** (सिर नवाकर) गुरुदेव ! यह सब आपके चरणों का प्रताप है ।

**विश्वामित्र :** अच्छा.....! अब कुछ फल खाओ और विश्राम करो ।

**राम :** गुरुदेव ! पहले आप आराम कीजिए और हमें चरणों की सेवा का अवसर दीजिये ।

**विश्वामित्र :** चिरंजीव रहो, पुत्रों ! अब मैं निश्चिन्त हो गया ।

**(विश्वामित्र का लेट जाना । राम-लक्ष्मण का चरण दबाना)**

**॥ चौपाई ॥**

तब मुनि सादर कहा बुझाई । चरित एक प्रभु देखिअ जाई ॥

**जनक दूत :** (प्रवेश करके) क्या मुनि विश्वामित्र का यही स्थान है ?

**राम :** हाँ.....? क्या फरमान है ?

**दूत :** (पत्र देकर) महाराज ! बन्दा यह संदेश लाया है ।

**लक्ष्मण :** मुनिवर ! यह पत्र कहाँ से आया है !

**विश्वामित्र :** (पढ़कर) बेटा ! जनकपुरी के राजा जनक ने अपनी बेटी सीता का स्वयंवर रचाया है जिसमें शामिल होने के लिए मुझे भी नुलाया है ।

**राम :** गुरुदेव ! क्या आप वहाँ अकेले ही पधारेंगे ।

**विश्वामित्र :** नहीं.....! बेटा ! अकेले क्यों ? तुम्हें भी अपने साथ ही ले जायेंगे ।

**राम :** (सिर नवाकर) जैसी आपकी आज्ञा ।

**दूत :** अच्छा मुनिराज ! मुझे आज्ञा दीजिए ।

**(जनक के दूत का जाना)**

पर्दा गिरना

॥ चौपाई ॥

धनुष जग्य सुनि रघुकुल नाथा । हरषि चले मुनिवर के साथा ॥

# अहिल्या उद्धार

## (राम जन्म लीला)

### सीन चौदहवाँ

**स्थान :** जंगल ।

**दृश्य :** विश्वामित्र का राम-लक्ष्मण के साथ गमन ।

पर्दा उठना (आवाज)

॥ चौपाई ॥

आश्रम एक दीख मग माहीं । खग मृग जीव जंतु तहँ नाहीं ।
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी । सकल कथा मुनि कहा विसेषी ॥

**राम :** (थोड़ी दूर चलकर इधर-उधर देखकर) गुरुदेव ! यह कैसा स्थान है ? न पशु विचरते हैं और न पक्षी बोलते हैं केवल एक पत्थर की मूर्ति दिखाई देती है ।

**विश्वामित्र :** बेटा ! यह पत्थर नहीं, नारी का शरीर है । इन्द्र की मक्कारी की, मुँह बोली तस्वीर है ।

**राम :** (विस्मय से) मुनिवर ! यह आप क्या फरमाते हैं ? इन्द्र तो देवताओं के राजा हैं ।

**विश्वामित्र :** बेटा ! होनहार बड़ी बलवान है । बहुत समय पहले की बात है कि देवराज इन्द्र गौतम ऋषि की पत्नी अहिल्या को देखकर मोहित हो गया और छल से गौतम ऋषि का रूप बनाकर सती का सत भंग करने आया किन्तु गौतम ऋषि ने उसकी पाखंडी लीला को पहचान लिया और शाप दिया—

रमणीक स्थान यह, अब सुनसान हो जाये ।
बदकार नारी तू, शिला समान हो जाये ॥

त्रेतायुग में जब, राम का अवतार होगा।
चरण लगते ही उनके, तेरा उद्धार होगा॥
इसलिए बेटा.....?
इन्तजारी में अहिल्या पड़ी।
दे दो इसको पद रच हरी॥
लाख नारी है ये तो क्या।
जग में नारी सी कोई धारा नहीं॥
यूँ तो बहता है सागर जमीं।
पावन उसका भी इतना किनारा नहीं॥
बन के अबला जमीं पै पड़ी।
दे दो इसको.....(१)
जिंदगी का बुझाया दिया।
साथ छल इसके जग ने किया॥
बनी दुश्मन ही इसकी जवानी।
शाप इसको पिया ने दिया॥
लागी कर्मों की है हथकड़ी।
दे दो इसको.....(२)

**(गाना श्री दिनेश चन्द्र स्वर्णकार अवागढ़ के सौजन्य से)**

**विश्वामित्र :** एक नारी एकाकी, जीवन को जी रही है।
नफरत के जगजहर को, रो-रो के पी रही है॥
खुद साथी खुद साया, खुद को ही छी रही है।
आँसूओं के धागों से, जख्मों को सी रही है॥

**राम :** तो, प्रभो ! अब क्या आज्ञा है ?

**विश्वामित्र :** बेटा ! लगा दो चरण ताकि, इसका उद्धार हो जाए।
बनी पत्थर की मूरत का, बेड़ा पार हो जाए।

**(राम का चरण लगाना और अहिल्या का नारी रूप में बदलना)**

**अहिल्या :** (हाथ जोड़ते हुए चरणों में सिर नवाकर) उपकार.....!
त्रिभुवनपति !..... उपकार !

**राम :** आगे नहीं चलियेगा, गुरुदेव !

**अहिल्या :** क्या मुझ दासी को पतित पावन की चरण धूलि नहीं मिल सकेगी ? प्रभो !

**विश्वामित्र :** श्रद्धा में सबसे बड़ी शक्ति है देवी ! तुम्हारा प्रभु के प्रति प्रेम किसी शक्ति से कम नहीं है ।

**लक्ष्मण :** हाँ ! यदि आशीर्वाद चाहो तो गुरुदेव से याचना करो ।

**विश्वामित्र :** तुम्हारी मनोकामना पूर्ण होगी, देवी ! जाओ . . . . . . ! तुम बैकुंठ जाओ ।

**अहिल्या :** तुम्हारी जय हो, दयानिधान ! पतित पावन ! तुम्हारी जय हो ।

**फिल्म (काला बाजार)**

जमाने में कहीं टूटी हुई तस्वीर बनती है ।
तेरे दरबार में बिगड़ी हुई तकदीर बनती है ।
न मैं धन चाहूँ, न रत्न चाहूँ ।
तेरे चरणों की धूलि मिल जाये तो मै तर जाऊँ ।
प्रभु मैं तर जाऊँ राम मै तर जाऊँ ।
लाये क्या थे जो, लेके जाना है ।
नेक दिल ही, तेरा खजाना है ॥
न मैं धन . . . . . (१)
थम गया पानी, जम गई काई ।
बहती नदिया ही, साफ कहलाई ॥
न मैं धन . . . . . (२)

**(अहिल्या राम की चरण धूलि मस्तक पर लगा नत मस्तक हो ऊपर को प्रस्थान करती है ।)**

**(पर्दा गिरना)**

**॥ चौपाई ॥**

चले राम लछिमन मुनि संगा । गए जहाँ जग पावनि गंगा ॥

## सीन पन्द्रहवाँ

**स्थान :** जंगल।

**दृश्य :** गंगा जी बह रही हैं।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**(एक ओर से विश्वामित्र का राम-लक्ष्मण के साथ प्रवेश। दूसरी ओर से चार पंडाओं का प्रवेश)**

**पंडा नं० १ :** (आपस में धक्का देकर आगे आकर) अरे . . . . .! ये यजमान तो मेरे हैं।

**पंडा नं० २ :** (बही देखते हुए) नहीं . . . . . ? ये मेरे हैं।

**पंडा नं० ३ :** (सब पंडाओं को हटाते हुए) नहीं . . . . ! ये मेरे यजमान हैं।

**पंडा नं० ४ :** नहीं . . . . . ! ये मेरे यजमान हैं।

**(चारों पंडाओं का "नहीं ये मेरे हैं" कहकर शोर मचाना)**

**विश्वामित्र :** अरे भाई ! शान्ति करो। पहले प्रभु की वंशावली सुनाओ।

**(सब पंडाओं का एक दूसरे की ओर अचरज से देखना)**

**पंडा नं० ३ :** (बही खोलकर) देखिये . . . . . प्रभो ? त्रेतायुग में महाराज खड़वाङ्ग के दीर्ववाह, दीर्घवाह के रघु, रघु के अज, अज के दशरथ और दशरथ के श्री राम।

**राम :** (खुश होकर) तुम्हीं हमारे असली पंडा हो।

**(सब पंडाओं का प्रस्थान)**

**राम :** (गंगाजी की ओर इशारा करके) प्रभो . . . . . ?

**विश्वामित्र :** बेटा ! मानो तो ये गंगा माँ है, नहीं तो बहता पानी है।
जो स्वर्ग ने दी धरती को, इसकी भी अजब कहानी है॥

**दृश्य परिवर्तन**

**(गंगावतरण सीनरी)**

**विश्वामित्र :** देखो . . . . . ? अपनी आँखों से स्वयं देखो। बेटा राम ! इस गंगा की उत्पत्ति विष्णु के चरण कमलों से हुई है। इसको

मृत्युलोक में लाने का श्रेय तुम्हारे वंशजों को है। तुम्हारे वंश में राजा सगर विख्यात हुए हैं उनके साठ हजार पुत्रों को कपिल मुनि ने शाप से भस्म कर दिया था जिनका उद्धार करने करे लिए इसी वंश में राजा भगीरथ हुए। उन्होंने गंगा महारानी की तपस्या एक हजार वर्ष तक की, तब गंगा महारानी प्रसन्न हुई और मत्युलोक में आईं किन्तु उनके वेग को धारण करने की सामर्थ किसी में भी नहीं थी तब भागीरथ ने शंकर ज़ी की तपस्या करके उनको प्रसन्न किया। तब शंकर जी ने अपनी जटाओं में गंगा जी को धारण किया उसके बाद वह पृथ्वी पर आईं और सगर के साठ हजार पुत्रों का उद्धार किया आज भी वह पापियों का उद्धार करने के लिए मृत्युलोक में भ्रमण कर रही है।

**राम :** धन्य हो, प्रभो !

**विश्वामित्र :** चलो...? बेटा राम-लक्ष्मण...? ? अब आगे चलें ? ?

**(राम-लक्ष्मण का गंगा जी को हाथ जोड़कर प्रणाम करना)**

**।। चौपाई ।।**

हरषि चले मुनि बृंद सहाया । बेगि बिदेह नगर निअराया ।

**पर्दा गिरना**

**।। राम जन्म लीला समाप्त ।।**

◆ ◆ ◆

## चौथा दिन (दूसरा भाग)

# धनुष यज्ञ लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. धनुष यज्ञ

(क) नगर दर्शन

(ख) पुष्प वाटिका

(ग) जनक प्रतिज्ञा

(घ) रावण बाणासुर संवाद

(ड) लक्ष्मण-परशुराम संवाद

# धनुष यज्ञ लीला

## (संक्षिप्त कथा)

विश्वामित्र ने राम-लक्ष्मण के साथ जनकपुर में पहुँचकर राजा जनक की राज्य वाटिका में विश्राम किया। जब जनक नरेश को ऋषि विश्वामित्र के आगमन की खबर मिली तो उन्होंने सपरिवार महर्षि का भरपूर स्वागत किया और सुन्दर भवन में ठहराया। ऋषि विश्वामित्र की आज्ञा पाकर राम-लक्ष्मण ने जनकपुर की शोभा को देखा और जनकपुर वासियों के मन को आनन्दित किया। प्रभात वेला में राम-लक्ष्मण ऋषि विश्वामित्र की आज्ञा पाकर पूजा के लिए फूल लेने राजा जनक की पुष्प वाटिका में गये। सहसा राम की दृष्टि वाटिका के एक ओर रुक गई। जनकनन्दिनी सीता सखियों तथा सेविकाओं सहित गौरी पूजा को आई हुई थीं। सीता की दृष्टि भी राम पर पड़ी, और फिर लगा कि दृष्टि वहाँ जम गई हो। सीता अपनी सुध-बुद्ध खो बैठीं फिर मन्दिर में जाकर माँ पार्वती से मनचाहा आशीर्वाद प्राप्त किया।

जनक दरबार में सीता स्वयंवर के शुभ अवसर पर देश-देश के राजा उपस्थित हो चुके थे इन्हीं में गुरु सहित श्री राम-लक्ष्मण भी थे। सब राजा बारी-२ से शिव धनुष उठाने की कोशिश कर हार मानते चले गये तब

जनकराज ने निराश होकर सभा को ललकारा । बस..... ! अब वीरता का प्रदर्शन बन्द हो । सीता के भाग्य में कुंआरा ही रहना लिखा है । आज मुझे मालूम हो गया कि पृथ्वी वीरों से खाली है ।

ऐसा नहीं महाराज ! वीरों के प्रताप से पृथ्वी रुकी है । बस..... ! इसी पुराने धनुष के आधार पर ही आपने मान लिया.....? लक्ष्मण कहे जा रहा था.....? यदि गुरुदेव की आज्ञा पाऊँ तो इस धनुष के टुकड़े-२ कर दिए जायेंगे और विश्वामित्र का संकेत पाकर श्री राम ने धनुष उठाया और टुकड़े-२ कर दिया । सीता की मनोकामना पूर्ण हो गई । श्री राम के जयकारों से भवन गूंज उठा तभी रंग में भंग डाला महर्षि परशुराम ने, जिन्हें अपने गुरु शिव का धनुष टूटने का महादुःख हुआ था परन्तु..... ! अन्त में राम की महिमा को पहचान कर चरणों में सिर नवाकर जंगल में चले गये ।

⇔

# पात्र परिचय

## (धनुष यज्ञ लीला)

### पुरुष पात्र

१. माली
२. राजा जनक
३. विश्वामित्र
४. राम
५. लक्ष्मण
६. रावण का प्रहरी
७. रावण का मंत्री
८. चार सभासद रावण दरबार
९. मारीच
१०. चार राजा
११. गुरु शतानन्द
१२. जनक का मंत्री
१३. बाणासुर
१४. प्राइवेट हुडदंग प्रसाद
१५. परशुराम
१६. शिवजी
१७. रावण

### स्त्री पात्र

१. सीता
२. सखी
३. पार्वती

# नगर दर्शन

## (धनुष यज्ञ लीला)

### सीन पहला

**स्थान :** जनक दरबार ।

**दृश्य :** राजा जनक मंत्री सहित विराजमान हैं ।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**॥ चौपाई ॥**

विश्वामित्र महामुनि आए । समाचार मिथलापति पाए ॥

**माली :** (प्रवेश करके) महाराज की जय हो ।

**जनक :** चिरंजीव रहो, माली ! कहो..... ! क्या खबर लाये हो ?

**माली :** महाराज ! बाग में ऋषि विश्वामित्र जी पधारे हुए हैं ।

**जनक :** (खुश होकर) ऋषि विश्वामित्र ! अरे..... ! यह तो बड़ा ही सुखदाई समाचार है। चलो .....? हम स्वयं उनके स्वागत को चलते हैं ।

**(जनक का मंत्री तथा माली के साथ जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ दोहा ॥**

संग सचिव सुचि भूरि भट, भूसुर बर गुर ग्याति ।
चले मिलन मुनि नाय कहि, मुदित राउ एहि भाँति ॥

### सीन दूसरा

**स्थान :** जनक की राज्य वाटिका ।

**दृश्य :** विश्वामित्र बैठे हुए हैं ।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**॥ चौपाई ॥**

कीन्ह प्रनांमु चरन धरि माथा । दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥
'कुसल प्रश्न कहि बारहिं बारा । बिस्वामित्र नृपहि बैठारा ॥

**जनक :** (प्रवेश करके चरणों में झुककर) ऋषिराज के चरणों में जनक का प्रणाम स्वीकार हो ।

**विश्वामित्र :** चिरंजीव रहो राजन ! कल्याण हो । बैठो राजन ! कुशल तो है ।

**जनक :** (बैठते हुए) प्रभो ! सब आपकी कृपा का फल है । आपके दर्शन पाकर मैं धन्य हो गया ।

**(राम-लक्ष्मण का प्रवेश)**

**॥ चौपाई ॥**

तेहि अवसर आए दोउ भाई । गए रहे देखन फुलवाई ॥
उठे सकल जब रघुपति आए । विश्वामित्र निकट बैठाए ॥
मूरति मधुर मनोहर देखी । भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी ॥

**विश्वामित्र :** (राम-लक्ष्मण की ओर देखकर) आओ बेटा ! जनक नरेश को प्रणाम करो ।

**राम-लक्ष्मण :** महाराज जनक को हमारा प्रणाम स्वीकार हो ।

**जनक :** (खड़े होकर) चिरंजीव रहो, पुत्रो ! (विश्वामित्र से, राम-लक्ष्मण की ओर निहारते हुए)

हैं आप कृपानिधि विद्यानिधि, धर्मज्ञ धर्म संचालक हैं ।
ये श्यामगौर दोनों कुमार, किस भाग्यवान के बालक हैं ॥
इनमें कुछ शक्ति अलौकिक है, यह मुझे दिखाई पड़ता है ॥
इनका दर्शन कर महाराज, ये मन ब्रह्म मनन से हटता है ॥
टकटकी बंधी हो जाती है, ऐसा कुछ अदभूत नेह हुआ ॥
कहते हैं मुझे विदेह सभी, पर मैं तो आज विदेह हुआ ॥

**विश्वामित्र :** राजन ! यह आपकी बड़ाई है जो इन बालकों के प्रति श्रद्धा दिखाई है ।

दोनों हैं पुत्र अवध नृप के, है नाम राम-लक्ष्मण इनका ।
यह वीर उत्साही हैं, किस विधि से करूँ वर्णन इनका ॥
निवदेन कराकर यज्ञ कार्य, निश्चर समूह संहारा है ।
गौतम की नारि अहिल्या का पद रज से शाप निवारा है ॥

अब धनुष महोत्सव के कारण, यह दोनों भाई आये हैं ।
राजन ! तेरे आनन्द हेतु, हम इन्हें साथ में लाये हैं ॥

**जनक :** अच्छा, महाराज ! आप किसी बात का कष्ट न उठाना। मुझे आज्ञा दीजिए। अन्य राजाओं से भी मिलने जाना है।

**विश्वामित्र :** अच्छा, राजन ! जाओ।

**जनक :** (पैरों में झुककर) मुनिवर ! प्रणाम।

**॥ चौपाई ॥**

करि पूजा सब विधि सेवकाई । गयउ राउ गृह बिदा कराई ॥

**(जनक का मंत्री सहित जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

नाथ लखन पुरु देखन चहहीं । प्रभु संकोच डर प्रकट न कहहीं ॥
जौं राउर आसयु मैं पावौं। नगर देखाइ तुरत लै आवौं ॥

**राम :** (पैर पकड़कर) हे नाथ ! भाई लक्ष्मण के मन में जनकपुर की शोभा देखने की इच्छा है। यदि आपकी आज्ञा हो तो नगर दिखलाकर शीघ्र ही ले आऊँ।

**विश्वामित्र :** (मुस्कराकर) जाओ, पुत्र ! जनकपुर देख आओ और अपने सुन्दर मुख दिखाकर सबके नेत्रों को सफल करो।

**राम :** जैसी आज्ञा, गुरुदेव !

**(राम-लक्ष्मण का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता । चले लोक लोचन सुखदाता ॥
देखन नगरु भूप सुत आए । समाचार पुरबासिन्ह गाए ॥

## सीन तीसरा

**स्थान :** जनकपुरी।

**दृश्य :** बाजार लगा हुआ है।

**पर्दा उठना**

**(राम-लक्ष्मण का बाजार की शोभा देखना)**

**॥ चौपाई ॥**

कौतुक देखि चले गुरु पाहीं । जानि बिलंबु त्रास मन माहीं ॥

**(राम-लक्ष्मण का जाना)**

पर्दा गिरना

# पुष्पवाटिका

## (धनुष यज्ञ लीला)

### सीन चौथा

**स्थान :** राजा जनक की राज्य वाटिका ।

**दृश्य :** ऋषि विश्वामित्र विराजमान हैं ।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**॥ दोहा ॥**

सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउ भाइ ॥
गुरु पद पंकज नाइ सिर, बैठे आयसु पाइ ॥

**राम-लक्ष्मण :** (प्रवेश करके चरणों में झुककर) मुनिवर ! प्रणाम ।

**विश्वामित्र :** चिरंजीव रहो, पुत्रो ! कहो ? जनकपुर की शोभा देख आए ।

**राम :** हाँ, मुनिराज !

**॥ चौपाई ॥**

मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई । लगे चरन चापन दोउ भाई ॥

**राम :** गुरुदेव ! अब आप आराम कीजिए और हमें चरण सेवा का अवसर दीजिए ।

**विश्वामित्र :** (खुश होकर) जैसी तुम्हारी इच्छा.....?

**(विश्वामित्र का मुस्कराकर लेट जाना । राम-लक्ष्मण का चरण दबाना)**

**विश्वामित्र :** (उठकर) बेटा राम-लक्ष्मण ! प्रभात होने वाला है । तुम राजा जनक की पुष्प वाटिका से पूजा के लिए कुछ फूल ले आओ ।

**राम :** जैसी आज्ञा, गुरुदेव !

**(राम-लक्ष्मण का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

समय जानि गुर आयसु पाई । लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥

**सीन पाँचवाँ**

**स्थान :** राजा जनक की पुष्प वाटिका ।

**दृश्य :** वाटिका में एक ओर गौरी जी का मन्दिर स्थापित है। माली पहरा दे रहा है ।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**॥ चौपाई ॥**

चहुंदिसि चितइ पूंछि मालीगन । लगे लेन दल फूल मुदितमन ॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई । गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥

**माली :** (चरणों में झुककर) महाराज ! प्रणाम। सेवक को क्या आज्ञा है ?

**राम :** (मुस्कराकर) भाई ! हम आज्ञा देने नहीं, लेने आये हैं। हमें पूजा के लिए कुछ फूल चाहिए ।

**माली :** शर्मिन्दा न करें, प्रभो ! ये बाग आपका ही है ।

**(राम का ऊपर को निगाह उठाकर सीता जी की ओर टकटकी बाँधकर देखना। सीता का राम की ओर निहारना तथा अपनी सुधबुध खो देना)**

**लक्ष्मण :** भैया.....?

**राम :** (हड़बड़ाकर) लक्ष्मण ! मालूम पड़ता है कि सीताजी गौरी पूजन को आई हुई हैं। कल इन्हीं का स्वयंवर होने वाला है ।

**लक्ष्मण :** (मुँह फेरकर मुस्कराकर) भैया ! फूल इकट्ठे हो चुके हैं ।

**राम :** चलो, लक्ष्मण ! समय बहुत हो चुका ।

## (राम-लक्ष्मण का जाना)

**सखी :** (सीता के कन्धे हिलाकर) राजकुमारी जी . . . . . ! राजकुमारी जी . . . . . ! राजकुमारी जी . . . . . !

**सीता :** (शरमाकर सखी के गले में बाहें डालकर) प्यारी सखी ! आज मुझे एक पुरानी बात याद हो आई है। मेरे भविष्य का हाल बताते हुए देवऋृषि नारद जी ने कहा था—"इसी वाटिका में विवाह से पूर्व ही तुम्हें अपने होने वाले पति के दर्शन हो जायेंगे।" कहीं आज वही तो शुभ घड़ी नहीं आ गई . . . . . ? यदि नारद जी की वाणी सत्य है तो आज मैं अपने . . . . . ?

**सखी :** (चुटकी लेकर) तो दुलारी जी ने मन ही मन पति पूजा शुरू कर दी है।

**सीता :** (मुस्कराकर) चल हट . . . . . ? पूजा को देर हो रही है।

**॥ चौपाई ॥**

गई भवानी भवन बहोरी । बंदि चरन बोली कर जोरी ॥

**(सीता का गौरी जी के मन्दिर में सखी सहित प्रवेश)**

**सीता की विनती**

**(फिल्म : जय संतोषी माँ)**

करती हूँ तुम्हारा व्रत मैं, स्वीकार करो माँ ।
मझधार में तो अटकी, बेड़ा पार करो माँ ॥
जय माँ सन्तोषी . . . . . ! माँ सन्तोषी . . . . . !
बैठी हूँ बड़ी आशा से, मैं तेरे दरबार में ।
क्यू रोयें तुम्हारी बेटी, इस निर्दयी संसार में ॥
पलट दो मेरी भी किस्मत, चमत्कार करो माँ ॥
मझधार में तो अटकी, बेड़ा पार करो माँ ॥
जय माँ सन्तोषी . . . . . ! माँ सन्तोषी . . . . . !
करती हूँ तुम्हारा व्रत में . . . . .
मेरे लिये तो बन्द हैं, दुनियाँ की सब राहें ।

कल्याण मेरा हो सकता, माँ ! आप जो चाहें ॥
चिन्ता की आग से मेरा, उद्धार करो माँ ।
मझधार में तो अटकी, बेड़ा पार करो माँ ।
जय माँ सन्तोषी.....! माँ सन्तोषी.....!
करती हूँ तुम्हारा व्रत मैं.....
दुर्भाग्य की दीवार को, तुम आज हटा दो ।
मातेश्वरी वापस मेरे, सौभाग्य को लादो ॥
इस अभागिन नारी से, कुछ प्यार करो माँ ।
मझधार में तो अटकी, बेड़ा पार करो माँ ॥
जय माँ सन्तोषी.....! माँ सन्तोषी.....!
करती हूँ तुम्हारा व्रत मैं.....

**(चरणों में गिरकर)**

आसरा तेरे सिवा, माता नहीं संसार में ।
आसरा ले के आई है, दासी तेरे दरबार में ॥
या तो शक्ति बढ़ा दे, मेरे चितचोर की ।
या कमी कर दे तू, धनुष के भार में ॥
जानती है तू हर मन की, कामना अच्छी तरह ।
क्या कहूँ अपनी इच्छा, आपसे दरबार में ॥

**(माता पार्वती का प्रगट होना) आवाज**

**पार्वती :** हे सीते ! कुछ सन्देह नहीं, उत्तम अभिलाष तुम्हारी है ।
नारद का वचन सत्य होगा, ऐसी आशीष हमारी है ॥
छिपकर जिनको अपनाया है, प्रत्यक्ष उन्हें अपनाओगी ।
बस ! इसी स्वयंवर में सीते, मन चीता वर तुम पाओगी ॥

**सीता :** (हाथ जोड़कर) धन्य हो, धन्य हो ।

**(पार्वती का अर्न्तध्यान होना । सीता का सखी सहित प्रस्थान)**

**पर्दा गिरना**

**॥ छंद ॥**

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर सांवरो ।

करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥
एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥

# जनक प्रतीज्ञा

## (धनुष यज्ञ लीला)

### सीन छठवाँ

**स्थान :** रावण दरबार ।

**दृश्य :** दरबार लगा है। मंत्री तथा चार सभासद बैठे हैं। प्रहरी पहले पर खड़ा है ।

**प्रहरी :** (खड़ा होकर) महाराजधिराज ! लंका नरेश। महाराजा रावण ! दरबार में पधार रहे हैं ।

**(सब दरबारियों का सन्मान में खड़ा हो जाना)**

**(रावण का प्रवेश करके सिंहासन पर बैठ जाना फिर सब दरबारियों का बैठना)**

**मारीच :** (घबड़ाते हुए प्रवेश करके) महाराज ! त्राहिमाम ! त्राहिमाम !

**रावण :** मारीच ! इतना क्यों घबड़ाया है ?

**मारीच :** (थरथर काँपते हुए) महाराज ! ऋषि विश्वामित्र के आश्रम में अयोध्या के दो राजकुमार आए हैं। उन्होंने कंधों पर धनुष बाण सजाए हैं। मुनि विश्वामित्र ने यज्ञ रचाया था। उन दोनों को रक्षा के लिए बुलाया था। जब हम यज्ञ विध्वंस करने लगे तो वे दोनों भाई हमसे लड़ने लगे ।

**रावण :** मारीच ! यह क्या खबर सुनाई है ?

**मारीच :** महाराज ! इसमें सचाई ही सचाई है ।

**रावण :** अच्छा..... ! आगे बता..... ? ज्यादा देर न लगा ।

**मारीच :** महाराज ! युद्ध में सुबाहु और ताड़िका दोनों ही मार गये । मौत के घाट उतार गये। मैंने भागकर जान बचाई ।

आपको आकर खबर सुनाई। अब वह जनक पुरी में जायेंगे जहाँ वह अपने जोर आजमायेंगे।

**(रावण का मन में सोचना)**

**परदे के पीछे से आवाज.....?**

त्रेता युग में, राम का अवतार होगा ।
तो उनके हाथों, तेरा उद्धार होगा ॥

**रावण :** तो क्या...? नारद मुनि का शाप पूर्ण होने को आया है।
भगत के लिए भगवन, न जाने क्या-२ करते हैं ।
जगत के जो स्वामी हैं, रूप इंसान का धरते हैं ॥
बढ़ाकर बैर विष्णु से, वही स्थान पाना है ।
जहाँ थे था गिरा नीचे, उसी स्थान जाना है ॥
रावण का अट्टहास.....? हा हा.....हा.....अब मैं जनकपुर में जाऊँगा और अपनी आँखों से उनको देखकर आऊँगा।

**पर्दा गिरना**

**सीन सातवाँ**

**स्थान :** जनक दरबार।

**दृश्य :** तीन राजा अपने-२ आसन पर विराजमान हैं। मंच पर ऋषि विश्वामित्र राम-लक्ष्मण सहित विराजमान हैं। सिंहासन पर राजा जनक और उनके पास एक सुन्दर मंच पर सीता जी सखी सहित बैठी हैं।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**हुड़दंग :** (प्रवेश करके) प्राइवेट ! ओ प्राइवेट के बच्चे ! बताओ कि इस समय हम कहाँ पहुँच चुके हैं ?

**प्राइवेट :** मालिक ! आप इस समय उस जगह पर है जहाँ एकबार आपके पिताश्री भी गए थे और यहाँ से आपकी माताश्री को साथ लेकर आपके जन्म का उपाय निकाला था।

**हुड़दंग :** गुड प्राइवेट ! तुम बहुत समझदार आदमी मालूम होता है। तुम ठीक बोलता है कि अब हम सीता के स्वयंवर में आ गए हैं।

**प्राइवेट :** यस सर ! यह सामने देखिए . . . ! ये सब राजा लोग बैठे आपका गुणगान कर रहे हैं। अब आपके लिए भी कोई जगह तलाश की जाये ताकि आप भी बैठ सकें।

**हुड़दंग :** प्राइवेट !यहाँ ये क्या फटीचर इन्तजाम है ? वाह ! मेरे बेटे जरा इधर सुनो ! जब हम नानी के यहाँ जाते थे तो वह इन्तजाम होता था . . . वह इन्तजाम होता था . . . वह इन्तजाम होता था ? समझा . . . महामूर्ख ! वह इन्तजाम होता था कि हमारे पिताश्री के पिताश्री के पिताश्री को भी नसीब न हुआ हो और बेटे ! यहाँ तुम्हारे पिताश्री बाबू हुड़दंग प्रसाद का कोई इन्तजाम नहीं।

**मंत्री :** आइए . . .। महाराज ! आपके लिए यह विशाल मंच है, यहाँ बैठिए।

**हुड़दंग :** वैरीगुड़, वैरीमच, प्राइवेट ! ये आदमी ठीक बोलता है। ओ मैन ! अब हम पकड़ के बैठना माँगता है।

**(प्राइवेट का हुड़दंग प्रसाद को पकड़कर कुर्सी पर बैठाना)**

**॥ चौपाई ॥**

शतानन्द तब जनक बुलाए । कौसिक मुनि पहिं तुरन पठाए ॥

**जनक :** मंत्री जी ! गुरु शतानन्द को बुलाओ।

**मंत्री :** जो आज्ञा, महाराज !

**(गुरु शतानन्द का प्रवेश)**

**जनक :** (सिंहासन से उठकर चरणों में झुककर) गुरुदेव प्रणाम !

**शतानन्द :** चिरंजीव रहो, राजन ! कल्याण हो।

**जनक :** गुरुवर ! आसन ग्रहण कीजिए।

**(शतानन्द का मंच पर बैठना)**

॥ दोहा ॥

बोले बन्दी बचन वर, सुनहु सकल महिपाल ।
पन बिदेह कर कहहिं हम, भुजा उठाइ बिसाल ॥

**जनक :** हे गुरु जी ! अब हमारी प्रतिज्ञा देश-२ के राजाओं को सुना दी जाए और सीता स्वयंवर की घोषणा की जाय ।

**शतानन्द :** हे महिपालो ! अब ध्यान धरो, जो समय आज यहाँ आया है ।
लो जान सभी सज्जन राजा, किसलिए यहाँ बुलाया है ।
प्रण किया जनक महाराज ने है, जो कोई धनुष चढ़ायेगा ।
श्री सीता जनक दुलारी से, बेशक वह ब्याह रचायेगा ॥

॥ चौपाई ॥

रावनु बानु महाभट भारे । देखि सरासन गंवहिं सिधारे ॥

**बाणासुर :** (प्रवेश करके जनक से) भाई सहाब नमस्कार ।

**जनक :** (उठकर छाती से लगाकर) नमस्कार, बाणासुर ! पधारिये ?

**(बाणासुर तथा जनक का अपनी-२ जगह पर बैठ जाना)**

**रावण :** (प्रवेश करके) हा..... हा..... हा.....
मैं नहीं आया यहाँ मिथलेश के पैगाम पर ।
जानकी मैं न ब्याहूँगा, स्वयंवर जीत कर ॥
सूरमा मेरे बराबर, कौन है कह दो यहाँ ।
जिसकी ताकत का सिक्का, जमाने में बयाँ ॥
चूड़ियां पहनो, बघारो, औरतों में शेखियाँ ।
जो तुम जमीं से हिला, सकते नहीं हरगिज कमां ॥
धनुष मेरे गुरु का है, मुझे उठाना है नहीं ।
बिन लिए सिया, मुझे जाना है नहीं ॥
बता मिथलेश ! कहा है सिया ।
जिसकी खातिर यह स्वयंवर किया ॥

**बाणासुर :** (उठकर) ओ हो..... मित्र दशानन ! जय शंकर की आज तो बहुत समय बाद दर्शन हुआ । कहो मित्र..... !
तात दशभाल हाल कैसो है तुम्हारों तात ।

कुल कुशलता से अवगत कराइए ॥
भ्रात कुम्भकरण और विभीषण तो मजे में हैं ।
मेघनाद तात तो प्रसन्न हैं बताइए ॥
खरदूषणादि आति त्रिसरा समेत सभी ।
तो रानी मन्दोदरि हैं कैसे समझाइए ॥
शिव की कृपा से सब ठीक हैं समृद्धि वृद्धि ।
लंकापुरी कौ हाल सकल सुनाइए ॥

**रावण :** हा..... ! हा..... ! ! हा... ! ! !
शिव की कृपा से सब सफल मनोरथ हैं ।
तात तो अनुग्रह सों कुशल कुटुम्ब में ॥
दारा सुत तात भ्रात सबको है नीको भ्रात ।
शुभ दिन बीतैं लौ लगी है जगदम्ब में ॥
क्यों न हो कुशल जो कुशल हो त्रिलोकी में ।
है अपार शक्ति मेरे बीस भुज खम्ब में ।
कौन मो समान भक्त रहूँ अनुरक्त सदा ।
पिता शंकर में और माता जगदम्ब में ॥

**बाणासुर :** हा... ! हा... ! ! हा... ! ! ! मित्र ! पंडित होते हुए भी यह अंहकार भरी बातें नहीं गईं । चलो, ठीक है, आज कैसे आना हुआ ?

**रावण :** हा... ! हा... ! ! हा... ! ! ! मित्र ! कैसे बन रहे हो ? खूब.... ! बहुत खूब.... ! जैसे यहाँ के आने का कारण किसी को मालूम ही न हो । जनकराज का चुनौती भरा निमन्त्रण और सीता की सुन्दरता यहाँ तक खींच लाई है ।
करूँ खण्डन धनुष शिव का, बरूँ सीता कुमारी है ।
विजयसुत जाऊँ लंका को, यही इच्छा हमारी है ॥
कहो, मित्र ! ठीक है न मेरा विचार ।

**बाणासुर :** मित्र लंकेश ! तुम जैसे अहंकारी का विचार..... और ठीक..... मेरी समझ में तो कभी नहीं आया । यह दोनों

ही बातें असम्भव हैं।

जिसे तू धनुष कहता है, वह है कोदण्ड शंकर का ।
चर अचर जानते हैं सब, ये है गौरव श्री हरहर का ॥

मित्र दशानन ! तुम जिसे तोड़ने की बात करते हो उसे उठाना भी मुश्किल है। समझे.....? हा... ! हा... !! हा... !!!

**रावण :** हा... ! हा... !! हा... !!! मैं नहीं जानता था, मित्र बाणासुर ! कि तुम इतने कायर हो ? देखो.....

बसा करते हैं भवानी पति, जिस कैलास पर्वत पर ।
उठाया खेल में मैंने, एक दिन हथेली पर ॥
विदित जग को पराक्रम है, दशानन की भुजाओं का ।
काँप उठते हैं तीनो लोक, देख बल इन भुजाओं का ॥
करूँ खण्डन सदा शिव का, धनुष मैं देखते सबके ।
बरे सीता कुमारी को, ये रावण देखते सबके ॥

हा... ! हा... !! हा... !!!

**बाणासुर :** वाह मित्र ! वाह..... ! घमण्डी हो तो ऐसा हो ।याद तो होगा, लंकेश ! कि तुम्हीं तो इस कोदण्ड को यहाँ पड़ा हुआ छोड़ गये थे या वह और कोई था । एक बार कैलाश क्या उठा दिया अपने को जगत विजयी, त्रिलोक विजयी और न जाने क्या-२ बताने लगे हो ।

पिता पद पूजने में, एक दिन पाताल पहुँचा था ।
भूमि के भार से थककर शेष उस दिन यूँ कहता था ॥
है कोई वीर ऐसा एक पल, साधे धरातल को ।
तो मैंने अपने भुजदण्डों पै, तोला था महीतल को ॥

**रावण :** हा... ! हा... !! हा... !!! तोला होगा किसी दिन, लेकिन यह बिसाल बाहू दशानन तुम्हारे जैसा कायर नहीं जो सारे भूमण्डल के नरेशों के सामने दुम दबाकर भागे । मैं जनक दुलारी को बल पूर्वक ले जाके मानूँगा । देखूँगा

मुझे कौन देखता है ? हा.. ! हा.. !! हा... !!!

(रावण आगे कदम बढ़ाता है)

**बाणासुर :** (क्रोध से) लंकेश ! ठहरो, अब कदम आगे न जाये ।
कहीं ऐसा न हो कि, रंगभूमि रणभूमि बन जाये ॥

**रावण :** (क्रोध से)
अकल से बात कर बेअकल, मैं सृष्टि का मालिक हूँ ।
मेरा ही नाम रावण है, मैं पृथ्वी का मालिक हूँ ॥
नादानी छोड़ दे नादान, क्यों मुझसे अकड़ता है ।
मैं वो बला हूँ, जमाना जिससे डरता है ॥

**बाणासुर :** (क्रोध से)
यह कोई रणभूमि नहीं, है यह यज्ञ स्वयंवर का ।
दिखा न लाल-२ आँखें, मजा न हो भंग स्वयंवर का ॥
छेड़ा गर शेर को तूने, तो किस्सा पाक कर देगा ।
तेरे परलोक जाने का, रास्ता साफ कर देगा ॥

**रावण :** (पृथ्वी पर पैर मारकर क्रोध से)
मैं चल दूँ जिस तरफ, बस, वही है रास्ता मेरा ।
वहाँ की हर वस्तु पर, रहता है दबदबा मेरा ॥
त्रिलोकी में जो भी है, वह चाहता आसरा मेरा ।
हटे आगे से पर्वत भी, हो इशारा गर मेरा ॥

**बाणासुर :** (व्यंग से) होता होगा, मगर..... ?
जरा सी बात पर, न बुद्धिमान अकड़ते हैं ।
भंवर हो सामने तो, क्या उसमें कूद पड़ते हैं ॥

**रावण :** (क्रोध से) ओ शरीर ! तू क्या चाहता है ?

**बाणासुर :** यही कि अगर जनक नन्दिनी को पाना चाहते हो तो पहले स्वयंवर के प्रण को पूरा करो ।

**रावण :** और तुम ! किसलिए आए थे ? बाणासुर !

**बाणासुर :** मैं स्वयंवर की शोभा देखने आया था, लंकेश !
यह धनुष है गुरुदेव का, जनक है भ्रात समान ।

सीता पुत्री है मेरी, करता हूँ प्रस्थान ॥

(बाणासुर का जाना)

**रावण :** हा.... हा.... हा..... गया ? अभिमानी गया.....? ? देख.....? अब मुझे कौन रोकता है.....? ? हा..... हा..... हा.....(रावण का आगे बढ़ना)

**आकाशवाणी :** हे रावण ! तेरी लंका में आग लग गई है और तेरी बहिन को राक्षस लिये जा रहा है।

**रावण :** (विस्मय से) हैं..... ! मेरी लंका में आग लग गई है और मेरी बहन को राक्षस लिए जा रहा है। पहले मुझे अपनी प्रजा का दुःख दूर करना चाहिये। आज मेरी हठ पूरी न हो सकी।

आकाशवाणी सुनकर, जाता हूँ मैं शंका में।
लेकिन याद रख सीते, एक दिन तुझे पहुँचाऊँगा लंका में ॥
हा..... हा..... हा.....

(रावण का जाना)

**राजा नं० १ :** यह धनु, तो एक, बायें हाथ का खेल है।
जानकी के साथ मेरे, नाम का मेल है ॥
देखिये इस धनुष को, सुरमा बनाता हूँ अभी।
काम कोई मुश्किल नहीं, मेरे लिए यह कभी ॥

(जोर लगाकर बैठ जाना)

**राजा नं० २ :** पंचाल राजा के लिए, यह धनुष मामूली सी बात है।
लिखा लेख सीता का, विधाता ने मेरे साथ है ॥
करे इस शर्त को पूरा, ताकत कहाँ इन्सान में इतनी।
मिटाये लेख की शक्ति, कहाँ है भगवान में इतनी ॥

(दण्ड लगाकर बैठ जाना)

**राजा नं० ३ :** मेरे सिवा इस धनुष को, कोई उठा सकता नहीं।
विवाह सीता से कोई भी, रचा सकता नहीं ॥

(जोर लगाकर बैठ जाना)

**राजा नं० ४ :** उठाकर फैंक दूँगा मैं, इसे कैलाश के ऊपर ।
मेरा ही नाम गूँजेगा, अब आकाश के ऊपर ॥
करेंगे मेहर शिवजी, जब अपने दास के ऊपर ।
विवाह कर जानकी, ले जाऊँगा रनवास के ऊपर ॥

**(जोर लगाकर बैठ जाना)**

**(सब राजाओं का मिलकर धनुष उठाना । जोर लगाकर गिर जाना फिर अपने-२ स्थान पर बैठ जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

द्वीप द्वीप के भूपति नाना । आए सुनि हम जो पनु ठाना ॥

**जनक :** ओह..... विधाता !

**(जनक के हृदय को धक्का लगता है । वे सोच में डूब जाते हैं फिर व्याकुल होकर गम की मुद्रा में धीरे-२ धनुष की ओर बढ़ते है)**

**पर्दे के पीछे से गाना : फिल्म—एक फूल दो माली**

किस्मत के खेल, निराले मेरे भइया ।
किस्मत का लिखा कौन, टाले मेरे भइया ॥
किस्मत के हाथ में, दुनियाँ की डोर है ।
किस्मत के आगे तेरा, कोई ना जोर है ॥
सब कुछ है उसी के, हवाले मेरे भइया ।
किस्मत का लिखा कौन, टाले मेरे भइया ॥
किस्मत के लेख.....(१)

किस्मत में लिखा है जो, सुख का सवेरा ।
कब तक रहेगा ये, गम का अँधेरा ॥
एक दिन तो मिलेंगे, उजाले मेरे भइया ।
किस्मत का लिखा कौन, टाले मेरे भइया ॥
किस्मत के खेल.....(२)

ये सच्चा तीरथ, ऊँचा हिमालय ।
ये मन का मन्दिर, सुख का शिवालय ॥
धूनी यहीं तो तू, रमाले मेरे भइया ।

किस्मत का लिखा कौन, टाले मेरे भइया ॥
किस्मत के खेल.....(३)
दुनियाँ में प्रानी क्या-२, सपने सजाये ।
किस्मत की आँधी उन्हें, पल में मिटाये ॥
बिगड़ी को कौन, संभाले मेरे भइया ।
किस्मत का लिखा कौन, टाले मेरे भइया ॥
किस्मत के खेल.....(४)

**जनक :** (धनुष को देखकर एक साथ झटके से पीछे हटते हुए) नहीं ! नहीं.....! ऐसा कभी नहीं हो सकता ? मंत्री ! कभी नहीं हो सकता ? कभी नहीं हो सकता ? यह सब क्या हो गया ? मंत्री क्या हो गया ?

**(जनक का जमीन पर गिरना । मंत्री का हाथों पर रोकना)**

आज मुझे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा, मंत्री ! संसार मुझे सूना-२ नजर आ रहा है ।

सुख के लाखों साथी हैं, मगर दुःख का कोई न सहाई है ।
पड़े मेरी अकल पर पत्थर, जो आज मैंने यह प्रतीज्ञा निभाई है ।

अफसोस.....! महान अफसोस.....!

करता भला कितना विधाता, दिल न देता यदि उन्हें ।
जिनके सुता हैं पूँछिये, मंत्री ! हिय की वृथा दारुण तिन्हें ॥

**मंत्री :** महाराज ! इतने व्याकुल मत होइए ? आप किसी प्रकार की चिन्ता मत कीजिए ।

**जनक :** मंत्री जी ! चिन्ता कैसे न करूँ ? हृदय फटा जा रहा है । आघात.....?

चिता हम जिसको कहते हैं, अरे वह तो सिर्फ मुर्दे को ही जलाती है ।
मगर..... मगर बुरी है इसलिये चिंता, कि वह जीते को जलाती है ॥

और आज यही चिंता मेरे हृदय की तन्त्री को तड़पा रही है । मेरी शान्त वाटिका में दावानल भड़का रही है ।

**मंत्री :** महाराज चिंता करने से लाभ.....?

**जनक :** मंत्री जी ! नहीं समझे .....? तुम मेरी चिंता को सहीं अर्थों में नहीं समझे । जिस धनुष को सीता ने बचपन में खेल-२ में उठा लिया था । आज उसे तोड़ना तो दूर रहा, उसे कोई भी हिला न सका .....? अब बोलो ..... मंत्री ! बोलो .....? क्या मैं अपनी बेटी की सूनी माँग देख सकूँगा ? नहीं, मंत्री ! नहीं .....? अब इन आँखों से यह दृश्य नहीं निहारा जाता ।

**मन्त्री :** महाराज ! आप तो विदेह हैं ।

**जनक :** विदेह .....। हूँ .....। मत कहो, विदेह ! अब मैं विदेह नहीं, नीच हूँ, पापी हूँ, कलंकी हूँ, अपनी बेटी के सुहाग का हत्यारा हूँ ।

अरे ! मिट नहीं सकता कभी, लिखा हुआ तकदीर का ।
बस नहीं चलता यहाँ, इंसान की तदबीर का ॥

**मंत्री :** वीरों के सामने दिल छोटा मत कीजिए, महाराज !

**जनक :** वीर .....। हूँ .....। (व्यंग की हँसी हँसना) वीर .....! (फिर व्यंग की हँसी हँसना) मंत्री ! अब भी तुम इन्हें वीर कहते हो । (व्यंग की हँसी हँसना) (राजाओं की ओर निहारते हुए व्यंग मिश्रित क्रोध से) छाती उभार कर चलने वाले, कायरों ! लज्जा करो । लज्जा करो । काश .....। तुम चूड़ियाँ पहनकर अपने-२ घरों में बैठ जाते ।

**(सब राजाओं के सिर शर्म से झुक जाते हैं)**

हे देश-२ के राजाओं ! बोलो .....! बोलो ।
आज मैं किसे कहूँ बलशाली है ॥
नहीं .... नहीं .... मुझको तो यह मालूम हुआ ।
यह पृथ्वी वीरों से खाली है ॥
पहले ख्याल होता ऐसा ।
तो ..... तो यह बेबसी नहीं होती ॥
हम करते नहीं प्रतिज्ञा यह, तो मंत्री जी ।

आज हमारी ऐसी हँसी नहीं होती ॥
अब..... अब तोड़ें अपने प्रण को हम ।
तो..... तो धर्म हानि और लज्जा है ॥
पुत्री को कुआरा रहना है, मंत्री जी ।
बोलो..... मैं क्या करूँ ? मेरा बस क्या है ॥
आसरा छोड़ प्रस्थान करो.....? नहीं.....। नहीं.....।
इसमें तुम्हारा कोई कसूर भी नहीं है। बेटी सीते.....।
सीते.....।

**(सीता का रोते हुए जनक की छाती से लगना। जनक द्वारा सीता का चेहरा ऊपर उठाकर उसके आँसू पौंछते हुए)**

देख सकता हूँ मैं, संसार में सब कुछ होते हुए ।
नहीं बेटी ! नहीं..... देख सकता तुझे रोते हुए ॥
(सीता को छाती से लगाकर) बेटी ! तू पृथ्वी की तरह हर दुख सहले। सूरज की तरह तू ढलती जा। धर्म की लाज बचाने को आग में जलती जा। अरे ! वह हुआ जो सोचा दाता ने।बेटी ! तू यह समझ लेना कि, तेरा विवाह लिखा ही नहीं विधाता ने ।

**(जनक का सीता के साथ अपनी जगह पर बैठना)**

**॥ चौपाई ॥**

जनक वचन सुनि सब नर नारी । देखि जानकिहि भय दुखारी ॥
भाखे लखनु कुटिल भइँ भौंहें । रदपट फरकत नयन रिसौंहें ॥

**लक्ष्मण :** (क्रोध पर काबू करते हुए) क्षमा करें, जनक नरेश ।
स्वयं कहलाकर इतने, ज्ञानवान बलवान ।
कर बैठे तुच्छ बात पर, वीरों का अपमान ॥
बुलाकर राज्य सभा में, क्षत्री कुल का अपमान किया ।
आमंत्रित नरेशों का तुमने, क्या अच्छा सम्मान किया ॥

**जनक :** यह वीरता का नाटक देखकर भी तुम्हें कुछ शंका रह गई है, राजकुमार !

**लक्ष्मण :** निःसन्देह आपने बिना सोचे विचारे क्षत्रिय वीरता का अपमान किया है, जनक नरेश ! आपको भ्रम हो गया है कि पृथ्वी वीरों से शून्य हो चुकी है। मेरा विश्वास है कि जिस दम भूमि से वीरता मिट जायेगी तो यह पृथ्वी रसातल में धंस जायेगी।

**जनक :** किन्तु यह सब किसने देखा है? राजकुमार ! तुमने यह अभी देख लिया कि भारत भूमि पर कोई वीर नहीं।

**लक्ष्मण :** (क्रोध से) फिर वही शब्द दोहराये जा रहे हैं, जनक नरेश ! (विश्वामित्र और राम के चरणों में गिरकर)

गुरुदेव ! भ्राता ! दीजिये आज्ञा, अब सुना जाता नहीं।
क्षत्रिय के सामने यूँ कहें, क्या दिल जला जाता नहीं ॥
घर बुला कर इस तरह, अपमान करते हैं।
ऐसी सभा के बीच, क्यों ने बज्र गिरते हैं ॥
सच्चे योद्धा सच्चे क्षत्री, अपमान नहीं सह सकते हैं।
जिनको सुनने की ताव नहीं, वह चुप कैसे रह सकते हैं ॥
रघुवीर रामजी के होते, अनुचित वाणी कह डाली है।
ये शब्द हृदय में चुभते हैं, पृथ्वी वीरों से खाली है ॥
मैं बलपूर्वक कहता हूँ, है बलवानों की पृथ्वी यह।
जिस दिन बलवान नहीं होंगे, उस रोज न होगी पृथ्वी यह ॥
हे भ्राता मेरा स्वभाव ही ऐसा है, अपमान न मुझे गवारा है।
है कृपा गुरु के चरणों की, बल और प्रताप तुम्हारा है ॥
अभिमान त्याग कर कहता हूँ, आदेश गुरु का पाऊँ मैं।
तो धन्वा की क्या है बिसात, सारा ब्रह्मांड उठाऊँ मैं ॥
फिर कच्चे घड़े समान उसे, दम भेर में फोड़ फाड़ डालूँ।
या गाजर मूली की तरह, चुटकी में तोड़ ताड़ डालूँ ॥
जनक नरेश ! आप इसी पुराने धनुष पर वीरता देखना चाहते हैं।
यह धनुष पुराना घिसापिटा, तिनके सा किस गिनती में है।
सैकड़ों कोस तक ले दौड़ूँ, इतना तो बल इस उंगली मे है ॥

॥ चौपाई ॥

सयनहिं रघुपति लखनु नेवारे । प्रेम समेत निकट बैठारे ॥

**राम :** तुम शान्त रहो, लक्ष्मण !

**लक्ष्मण :** शान्त कहाँ ? भैया जी ! जनक नरेश के शब्दों ने हृदय में आग सुलगा दी है । आप ही कब तक सुनते रहेंगे ?

**विश्वामित्र :** लक्ष्मण यति । शान्त !

**लक्ष्मण :** नहीं गुरुदेव ! एक बार शान्त के बदले हाँ कह दीजिए, और फिर देखिये कि क्षत्री रक्त में निर्बलता है या शक्ति ।

जनक देख लें कि अभी, वीरता है जहान में ।
दम ही क्या शेष है, इस पुरानी कमान में ॥
क्षण में धनुष भूपर होगा, या आसमान में ।
चुटकियों में उठा लूँ, और तोड़ूँ आन की आन में ॥

**जनक :** (मुस्कराते हुए) तुम्हारे हौंसलों को देखकर हम प्रसन्न हैं, राजकुमार !

**लक्ष्मण :** केवल हौंसले ही नहीं, कर्म भी यही हैं, 'जनक नरेश ! मेरे पूज्यनीय गुरुदेव ! मुझे आशीर्वाद दें तो भैया श्री राम जी की चरण धूलि पाकर तोड़ दूँ यह धनुष तिनके के समान । यदि हार जाऊँ तो छोड़ दूँ बाँधने यह धनुष बाण ।

**विश्वामित्र :** वीरता के ताज लक्ष्मण यति । शान्त !

॥ चौपाई ॥

विस्वामित्र समय सुभ जानी । बोले अंति सनेहमय बानी ॥

**विश्वामित्र :** (लक्ष्मण से)

हे लक्ष्मण ! बैठो सब्र करो, बस अभी समय वह आता है ।
देखो थोड़ी देर में अब, बिधना क्या खेल खिलाता है ॥

**(राम की ओर इशारा करके)**

हे राम ! उठाओ धनुष को, न ज्यादा देर लगाओ तुम ।
इस भरी सभा में जनक का, अब सन्ताप मिटाओ तुम ॥

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

गुरु पद वंदि सहित अनुरागा । राम मुनिन्ह सन आयुस माँगा ॥

**राम :** (खड़े होकर चरणों में झुककर) गुरुदेव !
आज्ञा पाकर आपकी, जाता हूँ ऋषिराज ।
आशीर्वाद से आपके, पूर्ण होंय सब काज ॥

**विश्वामित्र :** मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है ।

**राम :** (चरणों में झुककर) जय गुरुदेव ! (लक्ष्मण से) लक्ष्मण ! सावधान.....? धनुष टूटने पर पृथ्वी दहल जायेगी ।

**लक्ष्मण :** भ्राता जी ! मैं अभी पृथ्वी को थामता हूँ ।

**(लक्ष्मण का धनुष बाण लेकर पृथ्वी पर बैठना । राम का धनुष के पास जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

तेहि छन राम मध्य धनु तारा । भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

**(पटाखे की आवाज के साथ धनुष टूटना)**

**सम्मिलित ध्वनि : "सियापति रामचन्द्र की जै"**

**॥ चौपाई ॥**

शतानन्द तब आयसु दीन्हा । सीता गमनु राम पहिं कीन्हा ॥

**शतानन्द :** राजन ! बेटी सीता को जयमाला डालने भेजो ।

**(सीता का जयमाला लिये हुए सखी सहित राम के पास आना । राम सिंहासन पर विराजमान हैं । सीता जी जयमाला लिये हुए खड़ी हैं)**

**॥ व्यास : ॥**

शिव धनुष तोड़ा राम ने, मिथला में जिस घड़ी ।
सब स्तुति करने लगे, दशरथ कुमार की ॥
मुनि वेद मंत्र पढ़ रहे थे, ऊँची तान से ।
फूलों की वर्षा हो रही थी, आसमान से ॥
जयमाल लिये हाथ में, आई थीं जानकी ।
डालूँ गले में किस तरह, वह यूँ हैरान थीं ॥

ऊँचा था सिंहासन जहाँ, प्रभु विराजमान थे।
सर मुकुट और कांधे पै, तरकस कमान थे ॥
कुछ ठिठकी और मन में, अब सीता ने विचारा।
आँखों ही आँखों में किया, अब लक्ष्मण को इशारा।
हे शेष के अवतार मुझे, अब दीजै सहारा।
एहसान उम्र भर अब, कभी भूलूँ न तुम्हारा ॥
कुछ देर के लिए, अब लखन पृथ्वी को उठा ले।
ये भाभी तेरे भैया को, जयमाला पहना दे ॥
इतना सुनते ही लक्ष्मण जी, एकदम से उठ खड़े।
जा करके श्री राम के, चरणों में गिर पड़े ॥
श्री राम जी भी जान गये, दोनों की बात को।
सर नीचा कर उठाने लगे, अपने भ्रात को ॥
जयमाल जानकी ने, झट उनके डाल दी।
नर नारि जय जयकार बोले, जय हो राम की ॥

**(सीता का राम के गले में जयमाला डालना)**

**पटाखे की आवाज**

**सम्मिलित स्वर : "सियापति रामचन्द्र की जै"**

**पर्दा गिरना**

# लक्ष्मण-परशुराम संवाद

## धनुष यज्ञ लीला

### सीन आठवाँ

**स्थान :** महेन्द्राचल पर्वत

**दृश्य :** परशुराम गम्भीर योग निद्रा में लीन हैं।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**(घनघोर शब्द से साधना का भंग होना)**

**परशुराम :** (चौंककर) हैं .....? किसी घोर घनघोर शब्द ने मुझे ब्रह्मानन्द से विचलित कर दिया। गगन मण्डल में

गड़गड़ाहट कैसी ? मेरे शान्त तपोवन में अशान्ति की भ्राँति कैसी ?

बिलबिलाते पक्षी क्यों, अरु भागते हैं हिरन क्यों ?
बन देवियों के चित्त में, कैसा ये धमाका है ।
चारों ओर दीखते हैं, धुआँ के धुंआरे क्यों ?
भुजायें फड़कती क्यों ? कैसा ये कड़ाका है ।
शिव.....! शिव.....! शोक.....! महाशोक.....?
क्यों हृदय सशंकित है मेरा, मानस विचार से शून्य हुआ ।
घनघोर हुआ रवि क्यों नभ में, अवनी पर क्यों उत्पात हुआ ॥
किस कारण अवनी फटती है, वारिधि में क्यों उफान हुआ ।
ओ मेरे गुरु शिव त्राहिमाम, मम ध्यान आज क्यों भंग हुआ ॥
तैयार हुए हो युद्धे हेतु, या नयन तीसरा खोला है ।
हे नाथ ! कृपाकर बतला दो, यह गरल आज क्यों घोला है ॥

हे भगवान शंकर ! कुछ मालूम नहीं होता । यह घनघोर शब्द कैसा था ? भगवान ! अपने सेवक की बुद्धि दीजिए। शक्ति दीजिए। ओफ ... ! कितना घनघोर शब्द ? देखूँ ? पुनः समाधिस्थ होकर देखूँ क्या कारण है ?

**(परशुराम का दूसरी बार समाधि लगाना और क्रोधावेश में उठ कर खड़ा होना)**

आ गया मुख पर पसीना, और आतुर मन हुआ ।
क्यों अकारण आज शम्भु, चाप का भंजन हुआ ॥

बस ...? मालूम हो गया आज मिथलापुर में किसी पाखण्डी ने भगवान शंकर के धनुष का खण्ड-खण्ड कर डाला। शोक.....! महाशोक.....! रेणुका कुमार के जीते जी धनुष का खण्डन....? शिव....! शिव.....! शोक.....! महाशोक.....!

शिव द्रोही कौन पैदा हुआ, किसने बुलाया आज मृत्यु को डगर में ।
मुझ बाल ब्रह्मचारी ब्राह्मण से, निर्भय हुआ कौन विश्वभर में ॥

बीते अखण्ड वर्ष निक्षत्रभूमि को, आया न कोई लाल क्षत्री के समर में ।
देखो अब होनहार कैसी होय, रेणुका कुमार को कुठार गहना पड़ा कर में ॥

शिव धनुष को तोड़ने वाले नीच पापी ! संभल.....?
तोरयौ है चाप यदि पाखण्डी पापी ने ।
काट के शीश रक्त की नदियाँ बहाऊँ मैं ॥
मार डालूँ, पीस डालूँ, पटक मरोड़ डालूं ।
मिथिलापुर जाय ऐसी प्रलय मचाऊँ मैं ॥
मारिके गिराय देउ, यमपुर पठाय देउ ।
वाकौ धनु तोरिबे को मजा चखाऊँ मैं ॥
एतौ ना करो तौ शपथ गुरु शंकर की ।
रेणुका कुमार परशुराम ना कहाऊँ मैं ॥
बम विश्वनाथ.....! बम विश्वनाथ.....!

(परशुराम का मिथिलापुर जाना)

पर्दा गिरना

**सीन नवाँ**

स्थान : कैलाश पर्वत ।

दृश्य : कैलाश पर्वत पर शिवजी समाधि में लीन हैं । पार्वती पास में खड़ी हैं ।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**(कैलाश पर्वत का हिलना । शिवजी का समाधि से जाग्रत होकर मुस्कराना)**

पार्वती : (शिवजी को मुस्कराते हुए देखकर पैरों में गिरकर) हे नाथ ! कितना भयानक घोर शब्द है कि पृथ्वी के साथ-२ यह कैलाश पर्वत भी डगमगाने लगा है !

थरथराती क्यों धरा, अहि कोल कमूर कलि मले ।
इस घोर से भयभीत हों, रविबाज मारग तजि चेल ॥
चिक्करहिं दिग्गज किस तरह, नभ व्योम आतंकित प्रभो ।

क्या सृष्टि की होती प्रलय, सब चर अचर शंकित प्रभो ॥
बोलिये न, प्रभो ! इस कुसमय में आप प्रसन्न दिखाई दे रहे हैं। आपके रोम-२ से हर्ष टपकता सा मालूम होता है। क्या कारण है? नाथ ! क्या दासी की शंका का समाधान न करियेगा? प्रभो !

**शिवजी :** क्यों नहीं .....? देवी ! मेरा हर्ष तुमसे गुप्त रहे, यह असम्भव है। सुनो .....? मैंने जिस पिनाक को महान परिश्रम से तैयार किया था वह खण्डित कर दिया गया। यह भयानक घोर शोर जिसे तुम प्रलय कहती हो उसी के टूटने का है।

**पार्वती :** प्रभो ! उसे तो लंकापति बड़ी आराधना के बाद प्राप्त कर पाया था फिर उस मूर्ख ने उसे तोड़ क्यों डाला? उसे तो वह अपना गौरव समझता था।

**शिवजी :** ऐसा नहीं है, देवी ! वह मूर्ख तो उसे लंका तक ले जा न सका। वह पिनाक विदेहराज की राजधानी जनकपुर में हीं पड़ा रह गया।

**पार्वती :** यह कैसे हुआ? भगवन !

**शिवजी :** मैंने उससे कहा था कि आज तू इसे जहाँ तक ले जाना चाहता है ले जा। लेकिन धरातल का स्पर्श करने के बाद यह न उठ सकेगा और ऐसा ही हुआ।

**पार्वती :** तो क्या .....? भगवन ! महान बलशाली दसशीश जनकपुर जाने तक ही थक गया या कोई और कारण हुआ।

**शिवजी :** प्रभु की इच्छा पर कोई चारा नहीं चलता, बलि के पुत्र बाणासुर ने सपने वागजाल में फंसाकर उसे मूर्ख बना दिया। वह घमंडी तो था ही। होनीवश बुद्धि भ्रष्ट हो गई और पिनाक को पृथ्वी पर रख दिया। वह उसे फिर न उठा सका।

**पार्वती :** तो क्या .....? प्रभो ! इसीलिए कुपित होकर उसने पिनाक को तोड़ डाला। आपका कितना परिश्रम व्यर्थ गया ? और फिर भी आप प्रसन्न हो रहे हैं। वास्तव में तभी तो लोग आपको भोलानाथ कहते हैं।

**शिवजी :** यह बात नहीं है, देवी ! जब दसशीश उसे उठा ही न सका तो तोड़ना असम्भव था। मेरे पिनाक को मेरे आराध्य देव के सिवा और कोई तोड़ने वाला ही नहीं है। उस पर मेरी प्रसन्नता का कारण दूसरा ही है।

**पार्वती :** तो उसे शीघ्र कहिए, प्रभो !

**शिवजी :** देवी ! भूसुता के रूप में सीता अवतरित हो चुकी हैं जो विदेहराज की पुत्री करके विख्यात हैं। जनकराज की यह प्रतिज्ञा थी कि कोदण्ड को खण्डन करने वाला ही उन्हें वरण कर सकेगा। मेरे महाप्रभु ने कोदण्ड को खण्डन कर दिया। अब मेरे आराध्यदेव का विवाह होने जा रहा है। अब तुम्हीं बताओ ..... देवी ! इससे बड़े हर्ष का समय कौन-सा होगा ?

**पार्वती :** अब समझी .....? नाथ ! कि आप भांग पीकर दावत उड़ायेंगे लेकिन सच समझिये कि मैं भी साथ चलूँगी और ऐसा छकाऊँगी तुम्हारे आराध्य देव को कि वह भी याद करें।

**शिवजी :** तो..... देवी ! पुरानी कसक निकालने की ठानी है क्या !

**(परशुराम का कुठार लिए हुए भागते दिखाई देना)**

**पार्वती :** (शिवजी से परशु राम की ओर इशारा करते हुए) वह देखिये .....? प्रभो ! क्रोधी मुनि आज कुठार लिये कहाँ भागे जा रहे हैं ?

कंधे पर धनु, कर में कुठार, नेत्रों से आग बरसती है।
किसको शामत ने घेरा है, किसके सिर मौत उतरती है ॥

**शिवजी :** देवी ! यह मेरे भक्त हैं और इन्हें धनुष टूटने का ज्ञान हो

चुका है किन्तु यह उस तोड़ने वाले को गुरुद्रोही समझ कर वध करने जा रहे हैं।

**पार्वती :** तो इन्हें शीघ्र रोकिये, नाथ ! अन्यथा बड़ा अनर्थ हो जायेगा। यह क्रोधी मुनि वहाँ रंग में भंग पैदा कर देंगे।

**शिवजी :** नहीं..... देवी ! जब शक्ति से शक्ति टकरायेगी तो बड़ा आनन्द आयेगा। इस समय क्रोध ने इनकी बुद्धि पर परदा डाल दिया है। वहाँ मेरे प्रभो का दर्शन करने से इनका कल्याण होगा।

**पार्वती :** प्रभो ! न जाने क्या परिणाम होगा ? शुभ कार्य के समय कहीं भीषण युद्ध न छिड़ जाय।

**शिवजी :** ऐसा नहीं होगा, देवी ! महाप्रभो का अवतार मर्यादा की रक्षा के लिए हुआ है। ब्राह्मण से युद्ध करके वह मर्यादा का उल्लंघन न होने देंगे।

**पार्वती :** (मुस्कराकर) तब तो दृश्य देखने योग्य है, भगवन !

**शिवजी :** बड़ा ही आनन्द रहेगा, देवी !

**पार्वती :** तो नाथ ! क्यों न शीघ्र चला जाए !

**शिवजी :** नन्दीश्वर तैयार है फिर देर क्यों करती हो ? चलो.....?

**(शिव पार्वती का जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन दसवाँ

**स्थान :** जनक दरबार।

**दृश्य :** मंच पर विश्वामित्र राम-लक्ष्मण के साथ बैठे हैं। सिंहासन पर राजा जनक, बेटी सीता तथा गुरु शतानन्द सहित विराजमान हैं। पास में मंत्री ४ राजाओं सहित बैठा है।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**(सब राजाओं का आपस में धक्का मुक्की करते हुए)**

**सभी राजा :** देंखे ? यह जरा सा राजकुमार सीता को कैसे ले जायेगा ?

## ॥ चौपाई ॥

तेहिं अवसर सुनि शिव धनु भंगा । आयउ भृगुकुल कमल पतंगा ॥
देखत भृगुपति बेष कराला । उठे सकल भय विकल भुआला ॥
पितु समेत कहि कहि निज नामा । लगे करन सब दण्ड प्रनामा ॥

**(परशुराम का प्रवेश)**

**(पटाखे की आवाज) पूरे दरबार का खड़ा होना**

**राजा नं० १ :** (चरणों में गिरकर) मुनिवर ! प्रणाम ! (हाथ जोड़कर खड़ा होना)

**परशुराम :** हाथ जोड़कर खड़े न हो नृप, क्रांति मचा दो भूतल में ।
अपनी प्रबल भुजाओं से तुम, अग्नि वृष्टि कर दो थल में ॥
देखो ! अब भी माँ रोती है, उसको धैर्य दिलाओ ।
आशीर्वाद है यही नृपति तुम, विजय ध्वजा फहराओ ॥

**राजा नं० २ :** (चरणों में गिरकर) महामुनि ! प्रणाम ।

**परशुराम :** देश जाति उपकार हेतु तुम, सच्चा पथ अपनाओ ।
उलझी हुई गुत्थियाँ अगणित, उन सबको सुलझाओ ॥
यदि हो सच्चे सपूत माता के, तो तुम जग दहलाओ ।
कर्त्तव्य भावना से सब जग में, राष्ट्र पताका फहराओ ॥

**राजा नं० ३ :** कंपकंपाते हुए चरणों में गिर जाना ।

**परशुराम :** (उठाकर खड़ा करके)
इस युवावस्था में राजन क्यों, आज बदन मुरझाया है ।
रक्तहीन क्यों है शरीर नहिं, अभी युवापन आया है ॥
सूखे पाखे सरकंडा से, तेजहीन क्यों हो राजन ।
पीते हो मद्य होते हो प्रतीत, कर दो मद्य निषेध राजन ॥
अपने स्वदेश की सेवा करना, यह कर्त्तव्य तुम्हारा है ।
ब्रह्मचर्य ब्रत पालन करिए, यह आदेश हमारा है ॥

**राजा नं० ४ :** (हुड़दंग प्रसाद का गाना)
जिया बेकरार है, छाई बहार है ।
आजा मेरी प्यारी, तेरा इन्तजार है ॥

**परशुराम :** (पास आकर क़ोड़े बरसाते हुए)
भारत की अबलाओं का, आज सिंगार लुटा जाता।
हे नृपति तू ! पड़ा पड़ा अब भी है गाने गाता॥
जाओ ! दुखित प्रजा के डर से, सुख सौरभ बरसा दो।
बिलख रहे हैं बाल वृद्ध अरु, जवान इन्हें हरषा दो॥
विप्र, धेनु, अबलाओं के हित, विजय ध्वजा फहराओ।
अत्याचार मिटाकर प्यारे, विजय ध्वजा फहराओ॥

**॥ चौपाई ॥**

जनक बहोरि आई सिरु नावा । सीय बुलाइ प्रनामु करावा ।

**जनक :** (चरणों में झुककर) ऋषिराज ! प्रणाम !

**परशुराम :** चिरंजीव रहो, राजन ! कल्याण हो ।

**जनक :** दर्शन देकर आपने, किया बड़ा उपकार ।
शीश नवाऊँ चरण में, विनय करूँ हर बार॥
दया दृष्टि से आपकी, पूर्ण हो जाये काम ।
स्वामी को सीता करो हाथ जोड़ प्रणाम॥

**सीता :** (हाथ जोड़कर) मुनिवर ! प्रणाम ।

**परशुराम :** (आशीर्वाद देते हुए) हे बेटी सीता !
दूर रहे तुमसे सदा, द्वेष भाव और राग।
शोक न व्यापे जगत में, होवे अटल सुहाग॥
तेरा हो सौभाग्य अमर, श्रृंगार अमर सीता बेटी।
जनक दुलारी मिथिलापति, पूर्ण कामना हो बेटी॥
पतिव्रता महिलायें तेरे, यश के गीतों को गायेंगी।
तू ! जीवन में सदा सफल होगी, तेरी कथा सुनायेंगी॥

**॥ चौपाई ॥**

विश्वामित्र मिले पुनि आई, पद सरोज मेले दोउ भाई ।

**परशुराम :** (विश्वामित्र से गले मिलते हुए) अहोभाग्य ! आज कितने बड़े-२ ऋषियों से दर्शन हो रहे हैं ? कहिये ..... विश्वामित्र जी ! आपका यज्ञ इत्यादि तो सब कुशल से हो रहा होगा ।

**विश्वामित्र :** (राम-लक्ष्मण की ओर इशारा करे) हाँ..... परशुराम जी ! इन राजकुमारों की सहायता से सब कुशल है ।

**परशुराम :** (राम-लक्ष्मण की ओर ध्यान से देखते हुए)
तुम कहते हो राजकुंवर यह, पर हमने यह देखा ।
अंकित इनके विषद भाल पर, बनवासी की रेखा ॥
इन सुन्दर मुखड़ों की छवि में, जग का है कुल सार छिपा ।
इनके इन सुन्दर हारों में, मेरा भी हीरक हार छिपा ॥
इनकी इन विकट धनुहियों में, कितनों का आधार छिपा ।
है कितनों का उद्धार छिपा, और कितनों का संहार छिपा ॥
हे कौशिक हमें बताय देउ, यह किस घर के उजियारे हैं ।
किस गोदी के लाल हैं दोनों, किस के प्राण प्यारे हैं ॥

**विश्वामित्र :** परशुराम जी ! ये अयोध्या के चक्रवर्ती महाराज दशरथ के पुत्र हैं । (राम-लक्ष्मण की ओर इशारा करके) इन का नाम राम और इनका नाम लक्ष्मण है । इन्हें आशीर्वाद दीजिए ।

**(राम-लक्ष्मण को इशारा करके)**

राम ! लखन ! आमे बढ़ो, इन्हें नवाओ शीश ।
सुखदाता संकट हरन, ऋषियों का आशीश ॥

**राम लक्ष्मण:** (चरणों में झुककर) ऋषिराज ! प्रणाम ।

**परशुराम :** राम-लखन ! दोनों जिओ, सदा प्राप्त जय हो ।
नाम रहे उज्जवल सदा, जग में निर्भय हो ॥

**जनक :** आइए ऋषिराज ! आसन ग्रहण कीजिए ।

**॥ चौपाई ॥**

समाचार कहि जनक सुनाए । जेहि कारन महीप सब आए ॥

**परशुराम :** (सभा की ओर निहार कर जनक से)
हे जनक ! कहो क्या कारण है ? यह भारी भीड़-भाड़ क्यों है ?
यह अभी शोर सा कैसा था ? वीरों में छेड़छाड़ क्यों है ?

**जनक :** (हाथ जोड़कर) मुनिराज ! शिवजी का जो धनुष आप मुझे दे गये थे उसका मैं रोजाना पूजन किया करता था । एक

समय की बात है कि मुझे किसी काम से दो-तीन दिन को बाहर जाना पड़ा तब मैं यह काम अपनी पत्नी सुनयना को बता गया। घरेलू कामों के कारण उससे पूजा करने में एक दिन भूल हो गई। मेरी बेटी सीता ने देखा कि धनुष के पास मुरझाये हुए फूल पड़े हैं तो उसने सोचा कि आज माँ पूजा करना भूल गई हैं। उसने तुरन्त एक हाथ से धनुष उठाकर उसके नीचे सफाई की तथा ताजा फूल लाकर उसका पूजन किया। मेरे वापिस आने पर यह शुभ समाचार मेरी पत्नी ने मुझे बताया। तब मैं दंग रह गया कि इतना शक्तिशाली धनुष सीता ने एक हाथ से उठा लिया। तभी मैंने यह प्रतीज्ञा कर डाली कि जो कोई भी राजा इस धनुष को तोड़ेगा उसी के साथ मैं अपनी बेटी सीता का विवाह करूँगा। प्रभो ! उसी का यज्ञ एक साल से यहाँ चल रहा है और आज उसका अन्तिम दिन था। मेरा प्रण पूरा हो गया।

**॥ चौपाई ॥**

सुनत वचन फिरि अनत निहारे, देखे चापखण्ड महि डारे ॥

**परशुराम :** (विस्मय से) तो क्या धनुष टूट गया (धनुष के पास जाकर दुःखी हृदय से) हे भगवान शंकर ! मैं आपकी अमानत की रक्षा न कर सका। आपका सारा परिश्रम बेकार हो गया। (पलटकर क्रोध से)

हे मूर्ख जनक ! इतना बतला, यह धनुआँ किसने तोड़ा है ।
भरे स्वयंवर में सीता से, किसने नाता जोड़ा है ॥
बतला दे मुझको जल्दी से, किसने इस धनुष को तोड़ा है ।
जोड़ा है नाता यमपुर से, काल ने उसे झंझोड़ा है ॥
दे हटा समाज से अलग उसे, वध सबका मैं कर डालूँगा ।
दूँ पलट राज तेरा क्षण में, बदला अब सभी निकालूँगा ॥
जिसने इस धनुष को तोड़ा है, यह फरसा उस पर छूटेगा ।

वह काल का ग्रास बना यहाँ पर, जीवन का डोरा टूटेगा ॥

॥ दोहा ॥

सभय बिलोके लोग सब, जानि जानकी भीरु ।
हृदय न हरषु विषादु कछु, बोले श्री रघुबीरु ॥

**राम :** (परशुराम से सामने आकर सिर झुकाकर)
शिव धनुष तोड़ने वाला भी, कोई शिव का प्यारा ही होगा ।
जिसने ऐसा अपराध किया, वह दास तुम्हारा ही होगा ॥
जो कृपा पात्र है गुरुओं का, वह कब किससे डर सकता है ।
जिस पर है कृपा ब्राह्मणों की, यह कार्य वही कर सकता है ॥
ऋषिराज ! इस धनुष चाप को तोड़ने वाला कोई आपका ही सेवक होगा ।

**परशुराम :** (क्रोध से) सेवक ! कौन सेवक ? किसका सेवक ? ? क्या शम्भु चाप तोड़ने वाला मेरा सेवक ?
मान का बैरी है वह, पुतला है अभिमान का ।
जिसने तोड़ा है धनुष, शत्रु है मेरी जान का ॥
सेवक तो वही होता है, जिसका सेवा ही जीवन है ।
जो बैरी का सा काम करे, वह इस फरसे का भोजन है ॥
हे राम ! बना है अगुआ तू, इस क्षत्रिय कुल की गाड़ी में ।
इसलिए मसल वह याद मुझे, तिनका है चोर की दाढ़ी में ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि मुनि बचन लखन मुस्काने, बोले परसुधरहि अपमाने ॥

**लक्ष्मण :** (खड़ा होकर व्यंग से)
मुनि जी ! सुख का संवाद कभी, दुख का कारण हो जाता है ।
मीठा अरु मधुर बोलने से, तोता पिंजरे में आता है ॥
जो ज्यादा मीठा होता है, वह अपना नाश कराता है ।
देखो तो मीठे गन्ने को, कोल्हू में पैरा जाता है ॥
भाई ने मीठे बचन कहे, तो क्रोध और चढ़ आया है ।
सबसे पहले बोल उठे, इसलिए चोर उन्हें ठहराया है ॥

अच्छा ! अपराधी हम ही सही, हमने ही जहर निचोड़ा है ।
करना है सो करें आप, शिव धनुष हमीं ने तोड़ा है ॥

**परशुराम :** हाँ ..... ! याद आया ..... ?

वेद पुराण, कवि कोविद का, अरु मनु स्मृति का कथन यही ।
दो पुरुषों के सम्भाषण में, तीसरे पुरुष का काम नहीं ॥
यदि दोनों के बीच कोई, एक निर्बल पक्ष पड़ जावे ।
तो तृतीय यदि योग्य होय, उन दोनों को समझावे ॥
क्या तू गुरु से योग्य हुआ, या रामचन्द्र है भोला ।
यदि नहीं तो बतलारे लक्ष्मण, इनके आगे क्यों बोला ॥

**लक्ष्मण :** सुनिये ऋषिराज ..... !

इस भरे स्वयंवर में विदेह ने, निर्वीर मही कह डाली थी ।
उस समय अकेले वीरों की, मैंने मर्यादा पाली थी ॥
जिसको खंडित किया जनक ने, मैंने मंडित कर डाला ।
मौन नृपति जब थे विदेह को, मैंने उत्तर दे डाला ॥
हे महामुनि ! यह मान्य नीति, मेरे द्वारा जिसका मंडन ।
जब तक जीवित रहूँ धरा पर, होने मत पावे खंडन ॥
दे रहे चुनौती आज आप, वीरत्व भाव फिर है डोला ।
इसलिए पुनः उसका मंडन, करने के हेतु मैं बोला ॥
बचपन में बहु धनुहीं तोड़ी, तो स्वामी कभी न रिसिआए ।
इन धन्वा में क्या लाल लगे, जो स्वामी इतने गरमाए ॥

**परशुराम :** (क्रोध से) हूँ ! छोटा मुँह बड़ी बात ..... ?

अरे ! ओ राजा के लड़के, मुँह नहीं संभाल रहा है तू ।
मुझ जैसे क्रोधी के आगे, क्यों आँखें निकाल रहा है तू ॥
श्री महादेव का महाधनुष, सम्पूर्ण जगत में अनुपम है ।
ऐसा प्रचण्ड को दण्ड भला, छोटी-२ धनुआँ ही सम है ॥

**लक्ष्मण :** (विनती करके) हे मुनिराज !

श्रीमान तपस्वी ब्राह्मण हैं, इसलिए मुझे यह कहना है ।
ब्राह्मण का भूषण क्रोध नहीं, जो महाराज ने पहना है ॥

यह गहना है रजपूतों का, जो पहना जाता है रण में ।
अपराध क्षमा हो महामुने, चाहिये शान्ति ब्राह्मण में ॥

**परशुराम :** (क्रोध से) अरे दुष्ट अज्ञानी, रेणुका कुमार को शिक्षा देने का ध्यान.....?

अय़ बालक ! क्या हुआ तुझे, जो बात काटता जाता है ।
क्या न्यौतारी बामन समझा, जो मुझे डाँटता जाता है ॥
मुझको सीधा ब्राह्मण न जान, मैं क्षत्रिय कुल का द्रोही हूँ ।
भृगुवंशी बाल ब्रह्मचारी, अति क्रोधी हूँ निर्मोही हूँ ॥
मेरे इस लौह कुल्हाड़े ने, लोहू की नदी बहा दी है ।
इस भारत भूमि पर इक्कीस बार, क्षत्राणी रांड बना दी है ॥
यह फरसा सहस्त्रबाहु की भी, भुजा काटने वाला है ।
इस फरसे को तू भी बिलोक, जो खून चाटने वाला है ॥

**लक्ष्मण :** (क्रोध से) जरूर होगा, मगर मुनिराज..... !

देखता नहीं यदि विप्र भेष, क्षण भर में मजा चखा देता ।
अरमान मिटा लेता दिल के, फरसे की य़ाद भुला देता ॥
छीनता धनुष बाण फरसा, करके घ़नघोर दिखा देता ।
उछल-२ कर फरसा चलना, मुनि जी अभी भुला देता ॥

(व्यंग से) महाराज ! ब्राह्मणों की प्रभुता को मैं भी जानता हूँ...? वह आप जैसे ब्राह्मण नहीं थे । छोटे-२ बालकों के सिर काटकर आपने उनके रक्त को उलीच करके पितरों को तर्पण किया । क्या यही ब्राह्मण़त्व था ? फिर भी.....?

हे महामुनि ! देखना, नजर नहीं लग जाय ।
दबा लीजिए कांख में, हवा न लगने पाय ॥
बस ! इसी एक फरसे से, शूरों का स्वर्ग द्वार खुला ।
हल्दी की एक गाँठ पर ही, पसरट्टे का बाजार खुला ॥
अब बीत चुकी इसकी बहार, यह शस्त्र आपका गुट्टल है ।
फरसे में नहीं प्रबलता वह, जो बूढ़ी वाणी में बल है ॥
क्यों बूढ़ा फरसा दिखलाकर, क्षत्रिय कुमार को डरा रहे ।

बलिहारी आप तो फूंक से ही, उदयाचल पर्वत उड़ा रहे ॥
हम उस माई के लाल नहीं, जोहऊए से डर खा जायें।
हम छुईमुई के पेड़ नहीं, जो छूने से मुरझा जायें॥

**परशुराम :** (क्रोध से) ओ अक्ल के दुश्मन ! क्षणिक हँसी तेरी मौत का कारण बन सकती है। इसलिये.....?

दुध मुँहे ! बड़ों से हँसी छोड़, अन्यथा रुलायेगा फरसा।
कर देगा खट्टे दाँत अभी, स्वाद चखायेगा फरसा॥
तू बच्चा है बच्चा ही रह, क्यों मेरे फरसे मरता है।
मुझ जैसे क्रोधी के आगे, किस कारण बचपन करता है॥

**लक्ष्मण :** (मुस्कराकर) आप ठीक कहते हैं.....?

श्री महाराज ! हम बच्चे हैं, बच्चे ही बचपन करते हैं।
पर, तुम्हें नहीं शोभा देता, जो बच्चों के मुँह लगते हैं॥
मेरे मुँह में वह दूध नहीं, जो तुर्शी के बल खा जायें।
डर है फरसे की लपटों से, अत्यधिक उबाल न आ जाये॥

**परशुराम :** (क्रोध से) ओ नीच बालक ! क्यों जीने से तंग आ गया है?

क्यों बुलाता मौत अपनी, आज मेरे हाथ से।
लौट जा घर को अभी, समझा रहा हूँ बात से॥
क्यों काल को देता निमंत्रण, बहक कर उन्माद में।
प्राण खो बैठेगा तू, इस व्यर्थ की बकवाद में॥
मारूँ सहस्त्रबाहु सम, दुष्ट अब तू मान जा।
हट जा सम्मुख से अभी, छुप जा कहीं या भाग जा॥

**॥ दोहा ॥**

लखन उतर आहुति सरिस, भृगुबर कोपु कृसानु।
बढ़त देखि जल सम बचन, बोले रघुकुलभानु॥

**राम :** (चरणों में गिरकर)

भगवन ! बच्चों की बोली में, अनुचित या उचित न रहता है।
वह तो गंगा का है बहाव, जो कुछ भी आये बहता है॥
ब्राह्मण की भाँति आप आते, तो सह लेता यह लातें भी।

वीरों का भेष देखकर ही, इसने की इतनी बातें भी ॥
जो दण्ड आप देना चाहें, उसका अधिकारी तो मैं हूँ ।
यह सब प्रकार निर्दोषी है, सच्चा अपराधी तो मैं हूँ ॥

**परशुराम :** हूँ..... ! देखा.....?
वह तो है गर्म यह है, क्या कुटिल नीति है दोनों की ।
क्यों विश्वामित्र ! देखते हो, चालाकी अपने चेलों की ॥
छोटा भाई तो बारबार, अंगारे मुझ पर फैंक रहा ।
तू मीठी-मीठी बातों से, चोटों को मेरी सेक रहा ॥

**विश्वामित्र :** (आगे आकर) हे मुनिराज ! क्षमा करें, अभी दोनों बच्चे नादान हैं ।

**परशुराम :** अच्छा..... विश्वामित्र जी !
तुम्हारे कहने से मैं इन्हें, क्षमा किये देता हूँ ।
अब तक जो मैंने क्रोध किया, वापिस लिये लेता हूँ ॥

**लक्ष्मण :** (मुस्कराकर) यह क्रोध ही तो सत्यानाश की निशांनी है, मुनिराज ! इसे हमेशा-हमेशा के लिए त्याग दीजिए ।

**परशुराम :** (क्रोध से) ओ शरीर बालक ! क्या तू ! मेरे स्वभाव को नहीं जानता ?
जो पितु के ऋृण से मुक्त हुआ, जो माता का बलिदाता है ।
गुरु के ऋण के कारण वही हाथ, फिर एकबार खुजलाता है ॥
इस कारण उस कर्जे का अब, पूरा भुगतान करूँगा मैं ।
अपने इस खूनी फरसे से, तेरा बलिदान करूँगा मैं ॥

**लक्ष्मण :** (क्रोध मिश्रित व्यंग) खूब.....? बहुत खूब.....?
वह लोहा तुम्हीं को शोभा दे, जिसने घर का लोहू चाटा ।
बलिहारी है उन हाथों की, जिसने माता का सिर काटा ॥
गुरु ऋृण अब तक माथे पर है, तो उसको मैं निबटा दूँगा ।
ले आयें आप महाजन को, कौड़ी-कौड़ी भुगता दूँगा ॥

**परशुराम :** (क्रोध से)
अरे ! दुष्ट बालक ! बस, बहुत कर चुका काट ।

अब फरसा पहुँचायेगा, तुझे मौत के घाट ॥

**(फरसा लेकर आगे आना)**

**॥ चौपाई ॥**

अति विनीत मृदु सीतल बानी । बोले रामु ज़ोरि जुग पानी ॥

**राम :** (फरसा के नीचे सिर झुकाकर) हे मुनिराज !

अपने दासों का लहू पिये, यह ताव भला कब फ़रसे की ।
भृगुनाथ ! हमारी गर्दन तो, छाया में है अब फरसे की ॥
यदि इसे काट भी डालों तो, क्या चिन्ता यह अनुरागी है ।
न्यौछावर विप्र चरणों में हो, तो यह शरीर बड़भागी है ॥

**(लक्ष्मण का मुस्कराना)**

**परशुराम :**

हे राम ! तुम्हारी बातें सुन, नर्माई मुझमें आती है ।
मगर, देख के तेरे भाई को, गुस्सा बढ़ती ही जाती है ॥

**(लक्ष्मण की ओर इशारा करके)**

वह देख ? वह मुस्कराहट ? करती विदीर्ण यह छाती है ।
उसकी यह व्यंग भरी चितवन, फिर मेरे आग लगाती है ॥
उसको भी तो कुछ शिक्षा दे, मुझको ही क्यों समझाता है ।
फिर मेरी आँखों के आगे से, किसलिए न तू इसे हटाता है ॥

**लक्ष्मण :** (मुस्कराकर) अब बनी बात..... ?

मुनिवर ! हटें हम, है यदि यही पसन्द ।
अपनी आँखें आप ही, कर लीजिए न बन्द ॥
आँखों से आँखें डरती हों, तो आँखें मूँद चले जाओ ।
छाती विदीर्ण होती है तो, छ्ाती पर हाथ मले जाओ ॥
तब बिना बुलाये आये थे, अब बिना कहे जा सकते हो ।
अनुराग धनुष खण्डों का हो; तो इनको भी ले जा सकते हो ॥

**(लक्ष्मण का अंगूठा दिखाकर चिढ़ाना)**

**परशुराम :** (क्रोध से) हूँ..... ? अपमान..... ? घोर अपमान..... ?

धिक्कार भुजाओं पर मेरी, जो इस पर नहीं प्रहार किया ।

है व्यर्थ कुल्हाड़ा यह मेरा, जो इसे नहीं संहार किया ॥
है नहीं सवाल बाल वध का, जब यह मरना चाहता है ।
मत देना कोई दोष मुझे, फरसा अब इसे छाँटता है ॥

**(फरसा चलाते हैं लेकिन हाथ रुक जाता है)**

**(अचम्भे से)**

हैं ! यह क्या हुआ मुझे, जो पाँव न आगे बढ़ता है ।
फरसा पहाड़ हो गया मुझे, जो नहीं उठाये उठता है ॥

**लक्ष्मण :** (हँसकर व्यंग से)

अहा..... मुनिवर ! अब, देव हुआ है अनुकूल ।
मुख से श्री मुनिराज के, अब बरसे हैं फूल ॥
देखना, संभलना इसी जगह, मूरत होकर मत रह जाना ।
फिर ऐसा न हो कि पड़े हमको, यहाँ मंदिर आपका बनवाना ॥
फिर पूजा की सामिग्री हम, इस समय पास नहीं रखते हैं ।
भगवन ! आप स्वीकार करें, तो ये हार भेंट कर सकते हैं ॥

**राम :** (आगे आकर सिर झुकाकर विनीत स्वर में) हे मुनिवर !

हम करें ब्राह्मणों की सेवा, स्वामी ! यह धर्म हमारा है ।
हम झुकें ब्राह्मणों के आगे, यह पहला कर्म हमारा है ॥
यह दया ब्राह्मणों ही की है, सीता से नाता जोड़ा है ।
यह कृपा ब्राह्मणों ही की है, शिव धनुष राम ने तोड़ा है ॥

**परशुराम :** (झुंझलाकर पीछे हटकर)

वाक युद्ध अब हो चुका, बाण युद्ध हो राम ।
रण ही निर्णय करेगा, कौन बड़ा बलधाम ॥
मैं परशुराम कहलाता हूँ, तो तू भी राम कहाता है ।
मेरा ही नाम छीनकर तू, मुझ पर धाक जमाता है ॥
दो राम रहेंगे नहीं राम,. इसका कारण कर संग्राम अभी ।
अन्यथा जगत को मत बहका, दे त्याग राम का नाम अभी ॥

**राम :-** (हाथ जोड़कर विनीत भाव से)

भृगुनाथ ! आपमें और मुझमें, सोचो तो कितना अन्तर है ।

मस्तक पर तो है परशुराम, यह राम नाम चरणों पर है ॥
मैं राम आप हैं परशुराम, अब कहिए किसका नाम बड़ा।
भृगुनाथ ! विनय हम करते हैं, पर आप बिगड़ते जाते हैं ।
हम जितने झुकते जाते हैं, प्रभु ! उतने चढ़ते जाते हैं ॥
बिगड़ जाए हम तो कहीं, तो अनर्थ हो नाथ।
सूर्यवंश में जन्मे हैं, धनुष बाण हैं साथ ॥
अभिमान, प्रशंसा, रोष नहीं, अपना स्वभाव कहते हैं हम।
अत्यधिक छेड़ता है कोई, तो मौन नहीं रहते हैं हम ॥
रघुकुल का रक्त चुनौती पर, रण मध्य खौलने लगता है।
फिर महाकाल भी हो सम्मुख, तो उससे भी लड़ना पड़ता है ।
इसलिए न फरसा दिखलायें, उससे हम कभी न डरते हैं ॥
हाँ ! एक शस्त्र द्विजवर पर है, जिसका हम आदर करते हैं ॥
कहिये ! बतला दें वह क्या है, जिसका हमको अब भी डर है ।
द्विजराज ! देखिये नीचे को, वह उन चरणों की ठोकर है ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि मृदु गूढ़ बचन रघुपति के । उघरे पटल परसुधर मति के ॥

**परशुराम :** (तिरछे होकर स्वयं) एक बातों की ज्वाला उगलता है, तो दूसरा उस पर जल छिड़क देता है। इन बालकों का यह साहस...? शिव धनुष भंग करने की अपार शक्ति....? परशुराम के क्रोध को स्नेह में बदलने वाला विचित्र व्यवहार.....? कहीं भगवान ने अवतार तो नहीं ले लिया? विष्णु अवतार के सिवाय इस धनुष को कोई भी तो नहीं उठा सकता। भगवान को त्रेता युग में अवतार लेना था किन्तु इस शंका का समाधान? याद आया...? (राम को अपना धनुष बाण देते हुए) मैं तुम्हारी वीरता का अनुमान चाहता हूँ। चढ़ाइए तो इस पर चिल्ला।

अरे राम ! वास्तव में तुम, राम हो तो सन्देह मिटाओ ।
राम रमापति का धनुष, खैचउ और चढ़ाओ ॥

**लक्ष्मण :** (व्यंग से) अरे..... ! यह तो भैया श्री राम के लिए बहुत बड़ा कार्य बता दिया, मुनिवर !

**राम :** मैं प्रयत्न करता हूँ, प्रभो ! जय गुरुदेव..... !

**(राम का धनुष पर चिल्ला चढ़ाना)**

**परशुराम :** (चरणों में गिरकर) भगवान राम की जय !

**राम :** यह क्या कर रहे हैं ? मुनिराज !

**परशुराम :** मैंने आपका वास्तविक रूप पहिचान लिया है, प्रभो !

**राम :** यह तो बताइए कि इस बाण का क्या करें ? यह बाण अकारथ नहीं जा सकेगा, मुनिराज !

**परशुराम :** मुझे विश्वास नहीं था कि भगवान राम इतना रौद्र रूप धारण करेंगे ।

**राम :** आप महाज्ञानी हैं। अपने तपोबल द्वारा बतायें कि इस बाण का क्या किया जाए ?

**परशुराम :** तब प्रभो ! इसे तपोवन की ओर ही छोड़ दीजिये । वहीं यह सेवक तपस्या करता है ।

**(राम का बाण छोड़ना)**

**परशुराम :** (चरणों में गिरकर) मेरे कठोर वचनों को भूल कर मुझे क्षमा कर देना, प्रभो ! (प्रस्थान करते हुए) भगवान श्री राम की जय ।

**॥ चौपाई ॥**

कहि जय जय जय रघुकुल केतु । भृगुपति गय बनहि तप हेतु ॥

**पर्दा गिरना**

**॥ धनुष यज्ञ लीला समाप्त ॥**

◆ ◆ ◆

### पाँचवाँ दिन (तीसरा भाग)

# पात्र परिचय

## (राम विवाह लीला)

### पुरुष पात्र

१. राजा जनक
२. विश्वामित्र
३. राम
४. लक्ष्मण
५. जनक का दूत
६. जनक का मंत्री
७. गुरु शतानन्द
८. राजा दशरथ
९. गुरु वशिष्ठ
१०. भरत
११. शत्रुघ्न
१२. पण्डित (दो)
१३. नाऊ
१४. दशरथ का मंत्री
१५ द्वारपाल

### स्त्री पात्र

१. सीता
२. सखी
३. सुनैना

# राम विवाह

## सीन पहला

**स्थान :** जनक दरबार।

**दृश्य :** मुनि विश्वामित्र राम-लक्ष्मण सहित सिंहासन पर विराजमान हैं। राजा जनक गुरु शतानन्द तथा मंत्री सहित नीचे मंच पर बैठे हुए हैं।

**पर्दा उठना (आवाज)**

**॥ चौपाई ॥**

जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा । प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥

**जनक :** (विश्वामित्र के चरणों में गिरकर) प्रभो ! आपकी कृपा से

राम जी ने धनुष तोड़ा है। दोनों भाइयों ने मुझे कृतार्थ कर दिया। हे स्वामी ! अब जो उचित हो सो कहिए।

**विश्वामित्र :** हे राजन ! विवाह तो धनुष के ही आधीन था, वह इसके टूटते ही हो गया तो भी तुम जाकर अब जैसा अपने वंश का व्यवहार हो, अपने गुरु से पूछकर जैसा विधान हो वैसा करो। पहले तुम अयोध्या को दूत भेजो जो राजा दशरथ जी को बुला लावे।

**जनक :** (मुदित मन से) हे कृपालु ! बहुत अच्छा। (राजा जनक का ताली बजाना)

**दूत :** (प्रवेश करके झुककर) आज्ञा.....? अन्नदाता !

**जनक :** (पत्र देते हुए) हे दूत ! तुम यह पत्र लेकर अवधपुर राजा दशरथ जी के पास चले जाओ।

**दूत :** (पत्र लेकर) जो आज्ञा, महाराज !

**(दूत का पत्र लेकर जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

पहुँचे दूत राम पुर पावन । हरषे नगर बिलोकि सुहावन ॥
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई । दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई ॥
करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही । मुदित महीप आपु उठि लीन्ही ॥
बारि बिलोचन बाचत पाती । पुलक गात आई भरि छाती ॥

## सीन दूसरा

**स्थान :** दशरथ दरबार।

**दृश्य :** राजा दशरथ मंत्री तथा गुरु वशिष्ठ के साथ यथा स्थान पर बैठे हुए हैं। द्वारपाल पहरे पर खड़ा है।

**पर्दा उठना**

**दूत :** (द्वारपाल से) हे भाई द्वारपाल ! अपने महाराज से कहो कि जनकपुर से एक दूत आया है।

**द्वारपाल :** (प्रवेश करके झुककर) महाराज की जय हो ।

**दशरथ :** कहो ..... द्वारपाल ! क्या खबर लाये हो ?

**द्वारपाल :** अन्नदाता ! जनकपुर से एक दूत आया है ।

**दशरथ :** उसे आदर सहित अन्दर लिवाकर लाओ ।

**द्वारपाल :** (झुककर) जो आज्ञा, महाराज !

**(द्वारपाल का दूत के साथ प्रवेश)**

**दूत :** महाराज ! बधाई है ।

**दशरथ :** कहाँ से आये हो ?

**दूत :** (पत्र देते हुए) महाराज ! जनकपुर के राजा जनक ने आपकी सेवा में यह पत्र भेजा है ।

**दशरथ :** (पत्र लेकर पढ़ कर गुरु वशिष्ठ को देते हुए हर्ष से)

हे गुरु ! राम ने रघुकुल की, सब विधि से शान बढ़ाई है ।
नृप जनकराज के घर जाकर, यश कीरत अति पाई है ॥
है विजय स्वयंवर में पाई, रघुकुल का नाम बढ़ाया है ।
शिव धनुष तोड़कर दिखलाया, भूपों का मान घटाया है ॥
यह पत्र जनक ने भेजा है, अब बरात सजाकर जाना है ।
श्री राम के साथ में सीता का, चल करके ब्याह रचाना है ॥

**वशिष्ठ :** (खुश होकर) हे राजन ! तुमसे अधिक बड़ा पुण्य किसका होगा जिसके राम जैसे पुत्र हैं । अतः डंका बजा कर बारात सजाओ ।

**दशरथ :** (चरणों में झुककर) जैसी आज्ञा, गुरुदेव !

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

सुमिरि रामु गुर आयसु पाई । चले महिपति शंख बजाई ॥

**सीन तीसरा**

**स्थान :** जनकपुर के महल का बाहरी भाग

**दृश्य :** राजा जनक मंत्री, शतानन्द, सहित बारात का इन्तजार कर रहे हैं ।

## पर्दा उठना

**॥ दोहा ॥**

आवत जानि बरात वर, मुनि गहगहे निसान ।
सजि गज रथ पद चर तुरग, लेन चले अगवान ॥

**(राजा जनक का दशरथ तथा गुरु वशिष्ठ से गले मिलना तथा जनवासे में ले जाना)**

**॥ दोहा ॥**

भूप बिलोके जबहि मुनि, आवत सुतन्ह समेत ।
उठे हरषि सुख सिन्धु महूँ, चले थाह सी लेत ॥

**(विश्वामित्र का राम-लक्ष्मण के साथ जनवासे में आना। राजा दशरथ तथा वशिष्ठ का विश्वामित्र से गले मिलना तथा राम-लक्ष्मण को छाती से लगाना)**

**विश्वामित्र :** (दशरथ से)
हे राजन ! सुन मेरी, हो गई अब खत्म जमानत है ।
ले भूप संभाल आज हमसे, अपनी अनमोल अमानत है ॥

**दशरथ :** (मुस्कराकर चरणों में झुककर)
हे मुनिवर ! यह विनय मेरी, धन मूल सभी भर पाया है ।
कहना है केवल ये ही अब, नहीं ब्याज भी तक आया है ॥
हो ब्याह राम का सीता से, बारात विदा करवायेंगे ।
समझो बस उसी दिवस तुमरे, भर पाये हम हो जायेंगे ॥
फिर काम यही रह जाता है, तीनों को अवधपुर ले जाना ।
लाये हो जैसे जाकर के, वैसे ही जमा करा आना ॥

**विश्वामित्र :** (मुस्कराकर) अच्छा राजन ! जैसी तुम्हारी इच्छा ।

**॥ चौपाई ॥**

पुनि जेवनार भई बहु भाँती । पठए जनक बोलाइ बराती ॥

**(राजा जनक का दावत खिलाना। नारियों का गारी गाना)**

## दृश्य परिवर्तन

**स्थान :** राजा जनक के महल का भीतरी भाग

**दृश्य :** विवाह मंडप पर पंडित बैठा हुआ है ।

**॥ चौपाई ॥**

करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा । राम गमनु मंडप तब कीन्हा ।

**(सुनैना द्वारा राम की आरती उतारना। पंडित तथा नाऊ सहित राम का मंडप के पास पहुँचना, सीता का सखी सहित आना। राम सीता के फेरे के लिए नाऊ द्वारा गाँठ लगाना)**

**वर ने वधू से यह पाँच वचन माँगे**

१. वन उपवन में प्रिये, अकेले रखना कभी न पैर ।
पति के संग बिना पत्नी की, नहीं है अच्छी सैर ॥
२. सुरा सेवियों, मतवालों से, करना कभी न बात।
कुसंगियों की संगति में, हैं नाना विधि उत्पात ॥
३. वे पूँछे और बिना बुलाए, मैके न हो पयाना ।
अपने आप कहीं जाने पर, कम होता है मान ॥
४. शील छोड़कर कभी न हँसना, रखना यह मर्यादा ।
अधिक हास्य से पैदा होते, नाना भाँति विषाद ॥
५. पति कैसा भी हो तुम करना, सदा प्रेम व्यवहार ।
निगमागम बतलाते हैं यह, नारि धर्म का सार ॥

**वधू ने वर से यह सात वचन माँगे**

१. मुझे अन्नपूर्णा की पदवी, देना मेरे नाथ।
भोजनशाला का प्रबन्ध, सब रखना मेरे हाथ ॥
२. सुख दुख में सहचरी बनाकर, लेना मेरी राय।
ग्यारह हो जाते हैं तब, जब एक-एक मिल जाय ॥
३. मेरी देख-रेख में रखना, धन सम्पत्ति आगार ।
सारे आय-व्यय हो मेरी, सम्मति के अनुसार ॥
४. अर्द्धांगिनी समझना मुझको, मेरे प्राणाधार ।
औरों के आगे मत करना, गुस्से का व्यवहार ॥
५. घर का आंगन रहे न खाली, गोधन से भरतार ।
दूध दही पर पूरा-पूरा, हो मेरा अधिकार ॥

६. ऋतु अनुकूल धर्म का करना, कभी नियम मत भंग ।
तीर्थ-यज्ञदानादि कार्य में, रखना मुझे संग ॥
७. लोक और परलोक सुधरने का, का करना उद्योग ।
ऋषि जीवन में भी जीवनधनु, हो मेरा सहयोग ॥

**(राजा जनक तथा सुनैना का कन्यादान देना। जनता से कन्यादान ग्रहण करना)**

**(राम सीता के फेरे पड़ना : पंडितों द्वारा विवाह पढ़ा जाना)**

**पर्दा गिरना**

**जनक :** (विवाह खत्म होने पर दशरथ जी से हाथ जोड़कर)
हे स्वामी ! अपने सेवक का, पूरा उत्साह कीजिएगा ।
शत्रुघ्न, भरत, लक्ष्मण का भी, बस, यहीं विवाह कीजिएगा ।
मेरे समीप के नाते की, महलों में तीन कुमारी हैं।
तीनों ही भ्राताओं के सुयोग्य, वे तीनों राजदुलारी हैं ॥
माण्डवी भरतजी को समुचित, श्रुतकीर्ति शत्रुघ्नजी को है ।
उर्मिला सिया की लघुभगिनी, अर्पण श्रीलक्ष्मणजी को है ॥

**दशरथ :** (मुस्कराकर जनक को छाती से लगाकर)
यह कौन जानता है किसने, किसका मर्तबा बढ़ाया है ।
हमने तुमको अपनाया है, या तुमने हमको अपनाया है ॥
समधी समधी सम्बन्ध हुआ, तो फिर हम तुम समान दोनों ।
मिलती हैं देह-देह दोनों, मिलते हैं, प्रान-प्रान दोनों ॥
जो कुछ है उधर तुम्हारा है, जो कुछ है इधर हमारा है ।
शत्रुघ्न, भरत या लक्ष्मण पर, पूरा अधिकार तुम्हारा है ॥

**जनक :** (अश्रुपूरित नेत्रों से दशरथ जी की छाती से लगकर) धन्य हो स्वामी ! आप जैसे समधी को पाकर मैं कृतार्थ हो गया ।

**(दशरथ जी का आना)**

**॥ चौपाई ॥**

कौशिक सतानंद तब जाई । कहा विदेह नृपहि समुझाई ॥

**शतानन्द :** (आकर राजा जनक से) हे राजन ! आप अपना स्नेह नहीं छोड़ सकते फिर भी दशरथ जी को जाने की आज्ञा दीजिए।

**जनक :** (दुखी होकर चरणों में गिरकर) हे मुनिराज ! ! यह समस्त सुख आप ही की कृपा का प्रसाद है। मन को बहुत समझाता हूँ। परन्तु .....?

**शतानन्द :** (आगे आकर) ममता मोह का त्याग दीजिए, राजन ! आखिर बरात को विदा होना ही है।

**जनक :** हे नाथ ! जैसी आपकी इच्छा .....? मंत्री जी !

**मंत्री :** (आकर सिर नवाकर) अन्नदाता !

**जनक :** अब अयोध्यानाथ चलना चाहते हैं भीतर रनवास में कह दो।

**मंत्री :** (सिर नवाकर दुखी मन से) जो आज्ञा महाराज !

**मंत्री का जाना**

**दृश्य परिवर्तन**

**स्थान :** राजा जनक के महल का भीतरी भाग।

**दृश्य :** राजा जनक सुनैना तथा सीता के साथ खड़े हुए हैं।

**पर्दा गिरना**

**(सीता का रोते हुए अपनी माता सुनैना की छाती से लगना)**

**सुनैना :** (सीता के आँसू पौंछकर दुखी मन से)

पति के चरणों में सदा-सदा, रखना बेटी ! तुम मन अपना ।
पति को परमेश्वर माने हृदय, करना सब कुछ अर्पण अपना ॥

बेटी .....! तू ! पराया धन थी, जिसे हमने अब तक संभाल कर रखा। हम तेरे पाँव पूजते रहे, लेकिन अब से तूझे पूजने होंगे। बेटी ! याद रखना .....? जिस घर में तू जा रही है उसको स्वर्ग बनाना। पति को परमेश्वर मानकर सम्पूर्ण परिवार की मन लगाकर सच्चे हृदय से सेवा करना। पति के घर से कलंकित होकर मत निकलना।

अगर उस घर की चौखट से तुझे निकलना ही पड़े तो ... तू
..... नहीं ..... तेरी अर्थी निकले ..... !

**(सीता का रोते हुए अपने पिता जनक की छाती से लगना)**

**जनक :** (सीता को विदाई करते हुए दुखी मन से)

**(फिल्म : नीलकमल)**

बाबुल की दुआयें लेती जा, जा तुझको सुखी संसार मिले ।
मैके की कभी ना याद आए, ससुराल में इतना प्यार मिले।
नाजों से तुझे पाला मैंने, कलियों की तरह फूलों की तरह ।
बचपन में झुलाया है तुझको, बाहों ने मेरी झूलों की तरह ।
मेरे बाग की ऐ नाजुक डाली, तुझे हर पल नई बहार मिले ।
मैके की कभी ना याद आए, ससुराल में इतना प्यार मिले ।
बाबुल की दुआयें .....(१)

जिस घर से बंधे हैं भाग तेरे, उस घर में सदा तेरा राज रहे ।
होंठों पै हँसी की धूप खिले, माथे पै खुशी का ताज रहे ।
कभी जिसकी ज्योति ना हो फीकी, तुझे ऐसा रूप सिंगार मिले ।
मैके की कभी ना याद याए, ससुराल में इतना प्यार मिले ।
बाबुल की दुआयें .....(२)

बीतें तेरे जीवन की घड़ियाँ, आराम की ठण्डी छाहों में ।
काँटा भी ना चुभने पाये कभी, मेरी लाडली तेरे पाँव में ।
उस द्वार से भी दुख दूर रहे, जिस द्वार से तेरा द्वार मिले ।
मैके की कभी ना याद आए, ससुराल में इतना प्यार मिले ।
बाबुल की दुआयें .....(३)

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

चली बरात निसान बजाई । मुदित छोट बड़ सब समुदाई ॥

**॥ राम विवाह लीला समाप्त ॥**

### छटवाँ दिन (चौथा भाग)

# दशरथ प्रतिज्ञा लीला

१. संक्षप्ति कथा

२. पात्र परिचय

३. दशरथ प्रतिज्ञा

(क) मंथरा-कैकई संवाद ।

(ख) दशरथ-कैकई संवाद ।

(ग) कौशल्या माता से विदाई ।

(घ) राम वन गमन ।

(ङ) केवत संवाद ।

## दशरथ प्रतिज्ञा लीला

### (संक्षिप्त कथा)

युवराज श्री राम के राजतिलक की पूर्ण तैयारियाँ हो चुकी थीं। अयोध्या की प्रजा उत्साह व उमंगें लिये इस शुभ घड़ी की प्रतीक्षा में थी कि यकायक एक चिंगारी ने प्रजा की सारी उमंगें, राज्य परिवार की मुस्करान और आने वाले कल के शुभ अवसर को फूंक कर राख कर दिया।

दासी मंथरा की ओछी बातों ने महारानी कैकई के पवित्र और कोमल हृदय को पत्थर बना दिया। राजमहल आज कोप भवन बन गया था। कैकई नारी का विपरीत उग्र रूप धारण किये पड़ी थी। ठीक इसी अवसर पर अयोध्यापति राम के राजतिलक की शुभ सूचना लेकर पहुँचे।

कैकई ने पति प्रेम के आधार और वीरांग्ना होने के नाते पुरस्कार स्वरूप दो वरदान प्राप्त किये थे और आज वह उनकी पूर्ति चाहती थी। दशरथ ने कैकई को विश्वास दिलाया कि मैं तुम्हारा ऋृणी हूँ। उनके अधरों पर मुस्कान खेल रही थी। उन्होंने उत्सुकता से पूछा बोलो .....! क्या चाहती हो प्रिये !

पहले वरदान में चाहती हूँ "भरत का राजतिलक" कैकई कहे जा रही

थी । और दूसरे में चाहती हूँ "राम को चौदह वर्ष का वनवास" कैकई के इन शब्दों ने मानों दशरथ के पैरों की जमीन छीन ली हो । वह चीख उठे नहीं ? रानी ! तू मेरे प्राण ले ले किन्तु ऐसा अन्याय न कर । दशरथ गिड़गिड़ाते रहे । रोते-तड़पते रहे जब तक उन्हें सुधि रही ।

श्री राम ने इस समाचार को सुनकर वन यात्रा का निर्णय कर लिया । पति स्नेह की मूर्ति जनक दुलारी सीता भी वन यात्रा को तैयार हो गई । लक्ष्मण की विनय और आँसुओं को राम ठुकरा न सके । भले ही उर्मिला का हृदय भीतर ही भीतर कितना भी रो रहा हो परन्तु इस त्याग की देवी ने अपने आँसू छिपाये अपने प्राणपति लक्ष्मण को विदाई तिलक कर दिया ।

## पात्र परिचय

### (दशरथ प्रतिज्ञा लीला)

#### पुरुष पात्र

१. दशरथ
२. मंत्री सुमन्त
३. गुरु वशिष्ठ
४. सभासद
५. राम
६. छज्जू धोबी
७. लक्ष्मण
८. प्रजाजन
९. निषादराज (मय कुटुम्ब)
१०. केवट (मय परिवार)
११. बाल्मिकि ऋषि

#### स्त्री पात्र

१. मंथरा
२. कैकई
३. कम्मो धोबिन
४. सीता
५. कौशल्या
६. सुमित्रा
७. उर्मिला

## मंथरा-कैकई संवाद

### (दशरथ प्रतिज्ञा लीला)

## सीन पहला

**स्थान :** राजा दशरथ का राजदरबार ।

**दृश्य :** राजा दशरथ सिंहासन पर विराजमान हैं। नीचे मंत्री सभासद बैठे हैं ।

### पर्दा उठना

### ॥ चौपाई ॥

एक समय सब सहित समाजा । राजसभा रघुराजु बिराजा ॥
श्रवन समीप भए सित केसा । मनहँ जरपठनु अस उपदेसा ॥
नृप जुबराजु राम कहुँ देहू । जीवन जनम लाहु किन लेहू ॥

**दशरथ :** (शीशा देखकर) प्रभो ! तेरी कृपा से मैं संसार के सब सुख भोग चुका । मन को पूर्ण शान्ति मिल चुकी है ।

अन्त होना चाहते हैं, अब मेरे जीवन के दिन ।
रह रहा मुझसे बुढ़ापा, काल की घड़ियों को गिन ॥
बुझ गया दीपक तो फिर, होगी कहाँ से रोशनी ।
क्या भरोसा स्वप्न जैसी, है जगत की रोशनी ॥
बरसों गरजा युद्ध स्थल में, बरसों शिकार में मग्न रहा ।
बरसों तक राजकाज देखा, बरसों महलों में मग्न रहा ॥
अब छोड़छाड़ झूठे झगड़े, चल अपनी सच्ची बस्ती को ।
हे मूर्ख ब्याज की तृष्णा में, खोए देता है पूँजी को ॥
दे रामचन्द्र को राजपाट, तू घर को त्याग तपस्या कर ।
अब तक तो विषयानन्द रहा, अब ब्रह्मानन्द साधना कर ॥

मंत्री जी !

**मंत्री :** (खड़े होकर सिर नवाकर) आज्ञा महाराज ।

**दशरथ :** मंत्री जी ! अब मैं चाहता हूँ कि राम को राज काज सौंपकर इस मायाजाल के बन्धन से मुक्त हो जाऊँ ।

**मंत्री :** (सिर झुकाकर) पृथ्वीनाथ ! आपका विचार अति श्रेष्ठ है ।

**दशरथ :** तो फिर मुझे गुरु वशिष्ठ से सलाह मशवरा कर लेना चाहिए ।

**मंत्री :** जैसी आपकी इच्छा !

**(दशरथ का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ दोहा ॥**

यह बिचारु उर आनि नृप, सुदिनु सुअवसरु पाइ ।
प्रेम पुलकि तन मुदित मन, गुरुहि सुनायउ जाइ ॥

**सीन दूसरा**

**स्थान :** गुरुं वशिष्ठ का आश्रम ।

**दृश्य :** गुरु वशिष्ठ ध्यान में लीन हैं ।

**पर्दा उठना**

**दशरथ :** (प्रवेश करके चरणों में पुष्प चढ़ाते हुए) गुरुदेव के चरणों में दशरथ का प्रणाम स्वीकार हो ।

**वशिष्ठ :** (आशीर्वाद देते हुए) चिरंजीव रहो राजन ! कल्याण हो । कहो ..... । कैसे पधारे ?

**दशरथ :** (पैरों में गिरकर) स्वामी ! दुनियाँ का ऐश आराम सभी कुछ मैं भोग चुका परन्तु प्रभो ! अन्त समय ये कुछ भी काम नहीं आयेंगे । मेरी इच्छा है कि राम के राज काज सौंपकर मैं बनों में जाकर हरि का भजन करूँ ।

**वशिष्ठ :** (मुस्कराकर) विचार तो अति श्रेष्ठ है, राजन ! परन्तु ..... ?

**दशरथ :** (पैरों में गिरक़र) परन्तु क्या ? गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** राजन !

पुत्रों पर डालें राज्य भार, राजाओं का है धर्म यही ।
चौथापन परमात्मा को दें, है गृहस्थियों का कर्म यही ॥
अवधेश ! आपकी ये बातें, मन के संयम पर निर्भर है ।
तप करूँ तपोवन में जाकर, बस यहीं आप गलती पर हैं ॥
घर ही में कर एकान्त वास, आराधन ब्रह्म तत्व का हो ।
चिंताओं का हो बहिष्कार, आवाहन आत्मस्वरूप का हो ॥

श्री रामचन्द्र युवराज बनें, यह ही विचार अब सुन्दर है ।
छोड़ें समस्त चिंता मन की, चिन्तामणि जब अपने घर है ॥
राजन ! राम को राजकाज सौंपकर महलों में ही मन की समस्त चिन्तायें निकाल कर भगवान विष्णु का ध्यान धरो ।

**दशरथ :** (चरणों में झुककर) जैसी आज्ञा, गुरुदेव !

**(दशरथ का जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन तीसरा

**स्थान :** राजा दशरथ का राज दरबार ।

**दृश्य :** राजा दशरथ सिंहासन पर विराजमान हैं। मंत्री तथा सभासद यथा स्थान बैठे हुए हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

मुदित महीपति मंदिर आए । सेवक सचिव सुमंत बोलाए ॥
कहि जयजीव सीस तिन्ह नाए । भूप सुमंगल वचन सुनाए ॥

**दशरथ :** हे सभासदो ! आप लोगों को यदि यह विचार अच्छा लगे तो हृदय में हर्षित होकर अयोध्या का राजतिलक राम को कर दिया जाये ।

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) हे जगत्पति ! आप करोड़ों वर्ष जियें । हे नाथ ! आपने संसार की भलाई के लिये यह अच्छा काम सोचा है । शीघ्रता कीजिए । देर न लगाइये ।

**(सबका एक साथ खड़े होकर बोलना "राजा रामचन्द्र की जै")**

**(जयकारे बोलते हुए सभासदों का पर्दे से बाहर आना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

सारद बोलि विनय सुर करहीं । बारहिं बार पाय लै परहीं ॥

॥ दोहा ॥

विपति हमारि बिलोकि बड़ि, मातु करिअ सोइ आजु ।
रामु जाहिं बन राजु तजि, होइ सकल सुर काजु ॥

॥ चौपाई ॥

बार बार गहि चरन संकोची । चली बिचारि बिबुध मति पोची ॥
हरषि हृदयं दशरथ पुर आई । जनु ग्रह दसा दुसह दुखदाई ॥

॥ दोहा ॥

नामु मंथरा मंद मति, चेरी कैकई केरि ।
अजस पेटारी ताहि करि, गई गिरा मति फेरि ॥

॥ चौपाई ॥

दीख मंथरा नगरु बनावा । मंजुल मंगल बाज बधावा ॥
पूछेसि लोगन्ह काह उछाहू । रामतिलक सुनि भा उर दाहू ॥

**मंथरा :** (प्रवेश करके सभासदों से) अरे भाई ! यह नगर क्यों सजाया जा रहा है ?

**सभासद :** अरी मंथरा ! तुझे नहीं मालूम .....? कल रामचन्द्र का राजतिलक होने जा रहा है ।

**मंथरा :** क्या कहा ....? राजतिलक .... ! रामचन्द्र जी का ..... । हायरी दइया ..... ।

**(मंथरा का सिर पीटकर बैठ जाना)**

## सीन चौथा

**स्थान :** रानी कैकई का महल ।

**दृश्य :** कैकई रानी श्रृंगार कर रही है ।

**पर्दा उठना**

॥ चौपाई ॥

करइ बिचारु कुबुद्धि कुजाती । होई अकाजु कवन विधि राती ॥
भरत मातु पहिं गइ बिलखानी । का अनमनि हसि कह हंसि रानी ॥

**मंथरा :** (प्रवेश करके) यह अनर्थ है । महा अनर्थ है । महारानी जी :

**कैकई :** क्या है मंथरा ?

**मंथरा :** अयोध्या नरेश की सूचना नहीं सुनी, आपने !

**कैकई :** नरेश की सूचना .....? क्या है ?

**मंथरा :** उस सूचना को कह देने का साहस मुझमें कहाँ महारानी जी !

**कैकई :** आखिर मैं भी तो सुनूँ वह शुभ सूचना।

**मंथरा :** शुभ नहीं ..... अशुभ कहो महारानी जी !

**कैकई :** क्या कह रही है मंथरा ?

**मंथरा :** कहने का साहस बटोर रही हूँ महारानी जी ! यदि मैं कह भी पाई तो आप सुन नहीं सकेंगी। कल की प्रभात में ...।

**कैकई :** रुक क्यों गई मंथरा ? कल की प्रभात में .....?

**मंथरा :** महारानी कौशल्या के राम को राजतिलक होने जा रहा है।

**कैकई :** (प्रसन्न होकर) राम को राजतिलक होने जा रहा है।

**कैकई :** (प्रसन्न होकर) राम को राजतिलक .....? यह तो बड़े हर्ष की सूचना है।

**मंथरा :** किन्तु मेरे लिए नहीं .....?

**कैकई :** (झुंझलाकर) आखिर क्यों ...? इसमें तेरा क्या स्वार्थ है ?

**मंथरा :** स्वार्थ नहीं .....? मैं दासी के साथ-२ आपकी ही तरह माँ भी हूँ। मैं आपको फूल की तरह पाला है। यदि कोई उस फूल को पत्थर पर रखकर पैरों से कुचले तब क्या मेरा हृदय नहीं फटेगा ?

**कैकई :** तब .....?

**मंथरा :** सन्तान पर मुसीबत की घड़ियाँ माँ की ममता में वेदना भर देती हैं, महारानी जी ! और मैं भी कुछ ऐसा ही अनुभव कर रही हूँ। अयोध्यानरेश ने राजतिलक में पक्षपात किया है।

**कैकई :** क्या राम राजतिलक के योग्य नहीं .....?

**मंथरा :** योग्य तो भरत जी भी हैं।

**कैकई :** किन्तु वह छोटे हैं।

**मंथरा :** छोटे नहीं, अप्रिय हैं। महारानी जी !

**कैकई :** (क्रोध से) मंथरा.....?

चल निकल यहाँ से चाण्डालिन, किसने मति तेरी मारी है ।
जो स्वच्छ रूई की ढेरी को, तू बनकर आई चिनगारी है ॥
अबके जो ऐसे वचन कहे, मुँह तेरा नुचवा दूँगी मैं।
युवराज राम होंगे जिस क्षण, मुँह माँगा इनाम दूँगी मैं॥

(गले का हार देते हुए) ले...? यह रहा तेरा पुरस्कार ।

**मंथरा :** (हार लौटाते हुए)

यह हार तुम्हीं को शोभा दे, दासी न लालचिन माल की है ।
है जीत राम की और हार, उस भोले भरत लाल की है ॥
कुछ याद तुम्हें आता तुमसे, जब ब्याह किया था राजा ने ।
तेरा ही पुत्र नृपति होगा, यह वचन दिया था राजा ने ॥
अब इस चालाकी को देखो, किस ढंग से पलटा देते हैं ।
परदेश भरत को भेज दिया, अधिकार राम को देते हैं ॥
बलिहारी ऐसे उत्सव की, जो देश-२ में न्यौते हों।
हो एक पुत्र को राजतिलक, दो बेटे मामा के घर हों ॥

महारानी जी ! आप इस अन्याय को न्याय समझकर फूली नहीं समा रहीं ।

**कैकई :** मन्थरे ! मैं भी महारानी कौशल्या की तरह राम की माँ हूँ।

**मंथरा :** किन्तु वह आपका पुत्र नहीं बन सकेगा महारानी जी !

**कैकई :** (क्रोध से) मंथरा.....?

मुझको समान हैं राम भरत, एक ही पेड़ के दो शाखें हैं ।
मुझ चिड़िया के पंख यही, ये मेरी दो आँखें हैं ॥
यदि भरत राम सा दुलारा है, तो राम भरत सा प्यारा है ।
गोदी का भरत दुलारा है, तो राम नयन का तारा है ॥

**मंथरा :** (माथे पर हाथ मारकर) महारानी जी ! मैं सब कुछ आपकी भलाई के लिए ही तो कह रही हूँ। परन्तु आप समझती ही नहीं .....? क्या आप मेरी तरह दासी बनकर रहना

चाहती हो। सौत चाहे मिट्टी की हो फिर भी जहरीली नागिन होती है। अपने पुत्र राम द्वारा तुमको अधिक सम्मान दिलाना .....? इसमें भी कौशल्या की चाल है। वह जानती है कि भरत राजसिंहासन का अधिकारी है इसलिये तुम्हारे दिल में राम के प्रति मोह पैदा कर दिया है ताकि मोहवश तुम्हारी जबान पर हमेशा ताला पड़ा रहे।

यदि तुम इस रण में हार गईं, तो भरत रहेगा दासों में।
रखेगी तुमको कौशल्या, दासी समान रनिवासों में॥
धिक्कार है ऐसे जीवन पर, क्यों पड़ा समझ पर पत्थर है।
अधिकार नहीं, सम्मान नहीं, तो मर जाना ही बहतर है॥

**कैकई :** (सोचते हुए) मंथरा .....? तूने उल्टी सीधी बातों से मेरे हृदय में हलचल सी मचा दी है। मैं जिसे सूर्य की उपमा देती हूँ तू उस पर धूल उड़ाती है। यह सब क्या है?

**मंथरा :** धोखा.....! खूबसूरत धोखा.....!

**कैकई :** तब अपने पति को कपटी समझूँ जिसे सच्ची नारी भगवान से भी ऊँचा मानती है। पुत्र राम से छल .....? एक माँ कहलाकर।

**मंथरा :** संसार में विपरीत के साथ ही प्रीति है महारानी जी !

**कैकई :** तब मुझे निश्चय कर लेना चाहिए?

**मंथरा :** हाँ.....! आज जिस राम को आप अपना समझती हैं वह कल पराया भी हो सकता है। हृदय से यह वहम निकाल दीजिए महारानी जी ! कि पुत्र का हृदय भी माँ के समान होता है।

**कैकई :** अब मैं क्या करूँ मंथरे !

**मंथरा :** समय की प्रतीक्षा।

**कैकई :** इसके लिए साधन की जरूरत है मंथरे !

**मंथरा :** ठीक है आप भी अयोध्या नरेश से अपने वचनों की पूर्ति करा लीजिए.....?

हों याद तुम्हें रानी जू, दो वर राजा पर बाकी हैं ।
घर का युद्ध जीतने को, बस वही तीर दो काफी हैं ॥
नृप जब अन्तःपुर में आयें, तिर्छी कर भवें कमानों को ।
पहले दिखलाओ त्रिया चरित्र, फिर माँगों उन वरदानों को ॥
माँगना खूब चतुराई से, जो माँग सफलता पा जाए ।
उस समय माँगना जब राजा, सौगन्ध राम की खा जाए ॥
कहना दो वचन माँगती हूँ, राजा श्री भरत लाल जी हों ।
चौदह वर्षों को रामचन्द्र, तपसी बनकर बनवासी हों ॥

**कैकई :** (खुश होकर)

मंथरा ! मेरी प्यारी दासी, तेरी मति को बलिहारी है ।
है अब से भरत ऋणी तेरा, तू ही उसकी महतारी है ॥
मुझ सीधी ने यह समझा था, क्या राम-भरत की जोड़ी है ।
दासी ! तुझ पर बलिहारी जाऊँ, दीवार कपट की तोड़ी है ॥
कूबड़ है नहीं बुद्धि गठरी, की तुझे प्रदान विधाता ने ।
सिर में न ठसी तो पीठ मध्य, रख दी भगवान विधाता ने ॥
मंथरा कदापि नहीं -होगी, कौशल्या की मनमानी अब ।
युवराज बनेगा भरतलाल, मैंने भी हठ यह ठानी अब ॥
अब तुम जा सकती हो, मंथरा !

**मंथरा :** जो आज्ञा महारानी जी !

**(मंथरा का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

बहु बिधि चेरिहि आदरु देई । कोपभवन गवनी कैकई ॥

# दशरथ-कैकई संवाद

## (दशरथ प्रतिज्ञा लीला)

**सीन पाँचवाँ**

**स्थान :** रानी कैकई का राजमहल ।

**दृश्य :** काले वस्त्र पहिने खुले बालों में कैकई कोप भवन में लेटी हुई है। पास में ही उसके आभूषण बिखरे पड़े हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ दोहा ॥**

साँझ समय सानन्द नृपु, गयउ कैकई गेह।
गवनु निठुरता निकट किय, जनुधरि देह सनेह ॥

**॥ चौपाई ॥**

कोपभवन सुनि सकुचेउ राऊ। भय बस अगहुड़ परइ न पाऊ ॥
सभय नरेसु प्रिया पहिं गयऊ। देखि दसा दुखु दारुन भयऊ ॥

**दशरथ :** (प्रवेश करके विस्मय से) हैं! यह क्या महारानी?

**कैकई :** (दुखी होकर) कैकई के स्नेह और ममता की चिता।

**दशरथ :** क्या कहती हो रघुवंशिनी.....?

**कैकई :** (व्यंग से) रघुवंशिनी.....! यह आप कह रहे हैं.....? अभागिनी क़ैकई को.....??

**दशरथ :** अभागिनी नहीं, सौभागिनी महारानी को।

**कैकई :** जिसका सर्वनाश करने की योजनायें तैयार की जा रही हैं।

**दशरथ :** (विस्मय से) क्या मतलब.....?

**कैकई :** (रुआंसी होकर) मतलब जानकर क्या कीजिएगा.....?

**दशरथ :** हे प्राणप्रिये!

हैं...! हैं...!! यह क्या, बोलो तो ढंग बेढंग क्यों है।
बेवक्त फूल से मुखड़े का, हो रहा मनील रंग क्यों है ॥
जिन आँखों ने त्रास दिया, वे आँखें फुड़वा दूँगा मैं।
जो जिह्वा कड़वी बोली हो, वह जिह्वा कटवा दूँगा मैं ॥
क्यों कोप भवन में लेटी हो, क्यों भारी तुमको पलपल है।
जो तुम्हें प्राण से प्यारा है, उसका अभिषेक दिवस कल है ॥
क्या किसी ने कह दिये हैं, आज कुछ कड़वे वचन।
या किसी की बात तुमको, हो नहीं पाई सहन ॥
सच बताओ क्यों पड़ी हो, आज मन मैला किये।

जो कहो कर दूँ अभी, संसार में तेरे लिये ॥
क्या है संसार में जो, तुझसे अधिक प्यारा हो ।
मैं प्राण न्यौछावर कर दूँगा, जहाँ तेरा तनिक इशारा हो ॥
तेरी तो जग में किसी से, समता हो नहीं सकती ।
तेरे तो आगे प्राणों की भी, ममता हो नहीं सकती ॥
उठो ? सोलह श्रृंगार करो, क्यों धूल धूसरित हो रानी ।
क्या संकट है क्या पीड़ा है, क्या इच्छा है माँगो रानी ॥

महारानी ! दशरथ जीवन के अन्तिम मोड़ पर आ चुका है फिर भी उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है । वह कौन हत्यारा है जो महारानी के दुख का कारण बन गया है । हम परिचित होना चाहते हैं । दशरथ नहीं, अयोध्या नरेश तुम्हें सच्चा न्याय देंगे ।

**कैकई :** और यदि मेरी पीड़ा के कारण आप स्वयं ही हो तो.....?

**दशरथ :** (मुस्कराकर) तब अयोध्या नरेश नहीं, दशरथ तुम्हारे सामने खड़ा है । इसे अपराध का दण्ड दो, महारानी ! तुम्हें मेरी सौगन्ध, राम की सौगन्ध है, भरत की सौगन्ध है ।

**कैकई :** (ऊँचे स्वर में) हाँ.....? भरत का माँस ही स्वादिष्ट होगा न.....? और वह भी आपके लिए.....? ?

**दशरथ :** (दुखी होकर) यह क्या कह रही हो, रानी ! भरत तो मुझे राम से भी अधिक प्रिय है ।

**कैकई :** (व्यंग से) सच.....?

**दशरथ :** दशरथ को चौथेपन में एक साथ चार सन्तानें प्राप्त हुई हैं । उन्हें परख लेने की शक्ति किसी और में हो या न हो किन्तु दशरथ में है ।

**कैकई :** अर्थात्.....?

**दशरथ :** दशरथ की निगाहों में चारों पुत्र समान हैं ।
सब पुत्र पिता को है समान, तू भी यह बात जानती है ।
हैं मुझे एक से राम-भरत, यह त्रिभुवन नायक साक्षी है ॥

**कैकई :** तब फिर.....?

**दशरथ :** शंका को त्याग दो, कैकई ! आज दशरथ तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेगा।

**कैकई :** प्राणनाथ ! क्या भूल गये ? तुम पिछले युद्ध की घटनायें।
जब कि धुरी टुटी थी रथ की, सम्मुख थी यम की सेनायें॥
मैंने हाथ न डाला होता, पहिया गिरता गिरता रथ भी।
तुम क्या बचते सूना ही, हो जाता मेरा जीवन पथ भी॥
और दूसरी बार युद्ध में, बिंध कर विष के शत बाणों से।
तन छलनी जब हुआ तुम्हारा, तुम मुझको प्रिय थे प्राणों से॥
सब घावों का रक्त चूस कर, मैंने मानो विष पी डाला।
बहुत चिकित्सा करने पर ही, शान्त हुई थी जिसकी ज्वाला॥
तुम्हें बचाने को ही मैंने, सब संकट स्वीकार किये।
दोनों ही युद्धों में तुमने, मुझको कुछ वरदान दिये॥
आग्रह था वरदान माँग लूँ, मैंने कहा समय आने दो।
खून खराबी के इस युग को, थोड़ा और आगे निकल जाने दो॥
आज समय आया है उसका, वे दोनों वरदान मुझे दो।
इस हलचल के बीच कहीं, खोया है सम्मान मुझे दो॥

(सौजन्य से—"सुनो राम की कथा" वीरेन्द्र मिश्र-शकुन प्रकाशन ३६२५, सुभाष मार्ग दरिया गंज दिल्ली-६)

**दशरथ :** (मुस्कराकर) **॥ दोहा ॥**

अरे रानी ! बस यही, इस पर ही यह स्वांग।
इतनी लम्बी भूमिका, और जरा सी मांग॥
दो,वर तो कोई चीज नहीं, जितने भी जी चाहे ले लो।
मैंने सीखी है नहीं कभी, जो भी मन को भाए ले लो॥
गरजे तो अति बरसे न बूँद, यह सब धोखा मेघों में है।
जो कहा, किया जो माँगा, दिया, बस एक बात मर्दों में है॥

**कैकई :** कहते हुए डर लगता है कि कहीं मेरी इच्छा की हत्या न हो जाये।

**दशरथ :** रानी सूर्यवंश के इतिहास पर नजर डालो .....?

रघुकुल रीति सदा चलि आई ।प्राण जाँय पर वचन न जाई ॥

**कैकई :** यदि मैं वचनों का बंदी बनाना चाहूँ तो .....?

**दशरथ :** क्षत्री वीर के शब्द पत्थर की लकीर होते हैं, कैकई !

**कैकई :** (सकुचाते हुए)

कुछ क्रोध नहीं अपमान नहीं, करती हूँ मैं उपहास नहीं ।
सच तो यह है मुझको, अब पुरुषों पर विश्वास नहीं ॥
चिकनी चुपड़ी बातें कहकर, मुझ अबला को मत बहकाओ ।
सच्चे हो तो हे रघुवंशी, सौगन्ध राम की खा जाओ ॥

**दशरथ :** हे रानी ! किसलिये, बढ़ा रही हो रार ।
तुम्हीं कहो मेरा रहा, झूठ कभी व्यवहार ॥
आकाश के तारे चहें, पृथ्वी पर बिखर जायें ।
पृथ्वी के जीव भी चहें, आकाश में भर जायें ।
माणिक समुद्र में हों, पहाड़ों में मगर जायें ।
हम वह नहीं है जो, अपनी बात से मुकर जायें ॥
परमात्मा गवाह है, कभी अनुचित नहीं होगा ।
रघुकुल नरेश धर्म से, कभी विचलित नहीं होगा ॥
सौगन्ध सहित लो, सुनो अब मेरा कथन है ।
यह वीर प्रतीज्ञा है, और क्षत्री का वचन है ॥
मध्यस्थ मेरी बात का, यह राजभवन है ।
साक्षी है यह आकाश, यह पृथ्वी यह पवन है ॥
यह आन पहली बार ही, उस पवित्र नाम की ।
खाता हूँ तेरे सामने, सौगन्ध राम की ॥

**कैकई :** तब मैं अपने वचनों को माँग लूँ न ।

**दशरथ :** माँगना कैसा महारानी ? वह तो तुम्हारा अधिकार है ।

**कैकई :** तो सुनो प्राणपति ! प्राणनाथ ! वर पहला आज माँगती हूँ ।
कौशल्या नन्दन के बदले, निज सुत को राज माँगती हूँ ॥

**दशरथ :** यह तुमने क्या कह दिया महारानी संसार तुम्हें क्या

कहेगा ? पुत्र कुपुत्र हो सकता है परन्तु माता कुमाता नहीं हो सकती ।

**कैकई :** संसार मुझे केवल "माँ" समझेगा । भरत के लिए मैं वही कर रही हूँ जो एक माँ के लिए उचित है ।

वर जो कि दूसरा है मेरा, लो सुनो कम्पित मत होना ।
क्षत्रिय नरेश कहलाते हो तो, सत से विचलित मत होना ॥
राजा जो राम हो रहा है, वह राजा नहीं उदासी हो ।
कल ही से चौदह वर्षों क़ो, तपसी बनकर बनवासी हो ॥

**दशरथ :** (कानों को दबाते हुए चीखकर) नहीं ..... ! कैकई ... ! ! यह नहीं हो सकेगा ! ! ! दशरथ की मनसाओं का सर्वनाश नहीं करो, महारानी ! यह नहीं हो सकेगा ।

**कैकई :** (व्यंग से) क्यों महाराज ! रघुकुल रीति को दोषी करना उचित समझेंगे ।

**दशरथ :** कैकई ! परीक्षा समय आने पर हरिश्चन्द्र ने पत्नी और पुत्र बेचे थे । समय आने पर दशरथ भी अपने शरीर के टुकड़े-२ कर बाजारी माँस की तरह बिकवा देगा ।

**कैकई :** तब मेरे ऋण को चुकाने में किस बात का संकोच है ?

**दशरथ :** संकोच नहीं ..... ! हाँ ..... ! भविष्य की कल्पना करता हूँ कि संसार मेरी भूल पर हँसेगा ।

**कैकई :** वह क्यों ?

**दशरथ :** इसलिए कि नारी की मूल प्रवृत्ति जानते हुए भी मैंने नारी पर विश्वास किया ।

**कैकई :** यह उचित नहीं है अयोध्यापति ! कि मैं अपना ऋण माँगना चाहूँ और आप मेरा अपमान करें ।

**दशरथ :** (रोते हुए)

रानी ! रानी ! ! यह तेरा पति, जो तेरा पूज्य देवता है ।
इस समय पाँव पड़कर तेरे, बस इतनी सी भीख माँगता है ॥
तपसी होकर भी दूर न हो, मुझसे आनन्द धाम मेरा ।

मेरी इन बूढ़ी आँखों के, आगे ही रहे राम मेरा ॥
पहला वर जो माँगा तूने, वह नहीं हुआ है भार मुझे ।
मिल जाये राज भरत ही को, उत्साह सहित स्वीकार मुझे ॥
पर राम वनों में वास करें, वह भी चौदह बरसों को ।
इसमें क्या तूने सोचा है, मैं समझ न पाया भेदों को ॥

**कैकई :** तो सुनो राजन ! मुझे चाहिए "रामराज्य" ।

**-दशरथ :** नहीं महारानी ! ऐसा न कहो ।
राम का कोमल बदन, न शस्त्रों के लायक है ।
फूल है वह न कांटों और, पत्थरों के लायक है ॥

**कैकई :** नहीं महाराज ! नहीं . . . . . ! ! मुझे चाहिए भरत को राज और राम को वनवास । महाराज न्याय कीजिए कि एक पलड़े में धर्म है और दूसरे में सूर्यवंशी कुल की मर्यादा ।

**दशरथ :** ओ दुष्ट रानी ! तू धर्म का नाम न ले । धर्म के विरुद्ध एक दशरथ तो क्या सैकड़ों, हजारो, लाखों, करोड़ों दशरथ भी अपने प्राणों की आहुति दें तो भी धर्म का पलड़ा भारी रहेगा ।

**कैकई :** यदि ऐसा ही है तो न्याय कीजिए महाराज !

**दशरथ :** न्याय नहीं, इसे अन्याय कह, अन्याय ।

**कैकई :** आपके लिए होगा मेरे लिए नहीं ।

**दशरथ :** मैं तेरे एक वर में भरत को राज्य देता हूँ ।

**कैकई :** और दूसरे में ।

**दशरथ :** बस . . . ! बस . . . . ! ! इससे अधिक और कुछ न माँग ।

**कैकई :** मगर . . . . . महाराज ! मुझे भरत के राज्य के साथ-२ राम को वनवास भी चाहिए ।

**दशरथ :** आखिर क्यों . . . . . ?

**कैकई :** क्योंकि अयोध्या की प्रजा राम के साथ है ।

**दशरथ :** रानी ! पीछे पछतायेगी ।

**कैकई :** देखा जायेगा ।

**दशरथ :** ओ दूध पीकर जहर उगलने वाली नागिन राम ने तेरा क्या बिगाड़ा है? अरी पापिन ! मेरे प्राण माँग ले किन्तु ऐसा अन्याय न कर। आज तूने मेरा हृदय चीरकर राम की मूरत निकालने की कोशिश की है। काश.....? तुझे मेरे हृदय की तड़प मालूम होती।

**कैकई :** मुझे वर चाहिए।

**दशरथ :** ओ अत्याचारिणी !

**कैकई :** महाराज ! मजबूर किसने किया है? इंकार कर दीजिए।
झूठ के इक बोल से, राजतिलक हो जायेगा।
आपकी चहेती और प्रसन्न, जगत हो जायेगा ॥

**दशरथ :** ओ नीच बुद्धि वाली नारी, ऊँचे से हमें गिराती है।
जो सत्य हमारा जीवन है, उससे हमें तू डिगाती है।
हम सूर्यवंश की चादर में, कालिमा नहीं आने देंगे।
सुनती है, सर्वस्व देंगे, पर वचन नहीं जाने देंगे।
बेटे के प्यार दूर हो जा, दशरथ इस समय धर्म पर है।
ओ मोह पलायन हो तुरन्त, मेरा उत्थान कर्म पर है।
रानी !रानी ! !क्या कहती है, मुझको अभिमान धर्म पर है।
मैं क्या, तू क्या, संतानें क्या, सबकुछ बलिदान धर्म पर है।

**(लड़खड़ाते हुए..... बेटा..... राम बार-२ कहते हुए गिरकर बेहोश हो जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

राम रामं रट विकलं भुआलू। जनु बिनु पंख बिहग बेहालू ॥
बिलपत नृपहि भयउ भिनुसारा। बीना बेनु संख धुनि द्वारा ॥

**(एक तरफ से सेवक तथा दूसरी ओर से मंत्री का प्रवेश)**

**सेवक :** (सिर नवाकर) महामंत्री को दास का प्रणाम स्वीकार हो।

**मंत्री सुमन्त :** चिरंजीव रहो। (सेवक की ओर देखकर अचरज से) अरे ! तुम व्याकुल क्यों हो रहे हो?

**सेवक :** मंत्री जी ! सुबह की ब्रह्मवेला में श्री रामचन्द्र जी का

राजतिलक होने वाला है परन्तु महाराजधिराज.....?

**मंत्री सुमन्त :** (आश्चर्य से) क्या हुआ है ? महाराजधिराज को.....!

**सेवक :** (सकुचाते हुए) उनका अभी तक राजदरबार में न पहुँचना शंका उत्पन्न करता है।

**मंत्री सुमन्त :** (सान्त्वना देते हुए) तुम निश्चिन्त रहो। मैं अभी मालूम करके आता हूँ।

**॥ चौपाई ॥**

गए सुमंत्रु तब राउर पाहीं । देख़ि भयावन जात डेराहीं ।

**मंत्री सुमन्त :** (महाराज के पास जाकर चरणों में सिर नवाकर) महारानी जी.....!

**कैकई :** (सकुचाते हुए) मंत्री जी ! महाराज को रात भर नींद नहीं आई। इन्होंने राम-राम रटकर सवेरा कर दिया परन्तु इसका भेद कुछ भी नहीं बतलाते। तुम जल्दी से राम को बुला लाओ।

**मंत्री सुमन्त :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा.....?

**(मंत्री का जाना साथ में सेवक का दुखी मन से सकुचाते हुए मंत्री के पीछे-२ जाना)**

**राम :** (प्रवेश करके) रघुवंशियों की आन को सुरक्षित रखने वाला माता के चरणों में राम का प्रणाम स्वीकार हो।

**कैकई :** मेरे होनहार पुत्र ! तेरा सदा ही कल्याण हो।

**राम :** (चरणों में गिरकर) आज्ञा माँ.....!

**कैकई :** बेटा ! तुम्हें रघुकुल की आन को निभाना होगा।

**राम :** (दशरथ की ओर इशारा करके) मगर पिताजी.....!

**कैकई :** घबड़ा रहे हैं ? बेटा ! महाराज ने देवासुर संग्राम में दो वर देने का वचन दिया था जिन्हें आज पूरा करने में महाराज घबड़ाते हैं।

**राम :** यदि ऐसा है तो वे अपनी कीर्ति को मिटाते हैं।

**कैकई :** धन्य हो राम !

**राम :** आज्ञा माता जी !

**कैकई :** बेटा ! तुम्हें राजगद्दी छोड़कर वनों में जाना होगा ।

**राम :** अहोभाग्य..... ! राम प्रण को निभाये । सुख-दुख में धर्म से गिरने न पाये ।

**कैकई :** (राम को छाती से लगाकर) बेटा ! इस समय मैं तुम्हें "मर्यादा पुरुषोत्तम राम" की पदवी देती हूँ ।

तेरी मर्यादा के चर्चे, होंगे हरजाँ बयाँ ।
गाथा गाएगी तेरी, जगत की हर जवाँ ॥
माता के आशीष को, कोई मिटा सकता नहीं ।
नाम तेरा जगत से, कोई हटा सकता नहीं ॥

**राम :** (चरणों में गिरकर) उपकार... ! माँ !! उपकार.... !!!

**कैकई :** बेटा ! माता कौशल्या से विदा लेकर प्रण पूरा करो ।

**राम :** अच्छा माँ ! अपनी चरण रज देकर मुझे शक्ति दो ।

**(राम का चरण छूकर दशरथ के पास जाना)**

**दशरथ :** ठहरो..... ! राम..... !!

**राम :** (चरणों में गिरकर) आज्ञा पिता जी !

**दशरथ :** बे..... टा..... रा..... म..... !

**(राम का चरण छूकर जाना)**

**दशरथ :** बे..... टा..... रा..... म !

**दशरथ :** (करवट बदलकर) नारी ! तू क्या है ?

है जिसे मनुष्य हंसी खुशी, अपनी रंगों में समा लेता है ।
इसे कटार समझते हुए भी, गले का हार बना लेता है ॥
अफसोस..... !
मैंने तुझको जितना चाहा, उतनी ही पीर मिली ।
काँटे ही आये दामन में, ऐसी तकदीर मिली ॥

**कैकई :** महाराज मुझे क्यों दोष देते हैं ? सिर्फ इतना कह दीजिये कि मेरा वचन मिथ्या है । मैं इसी समय राम को वापिस बुला लेती हूँ । किन्तु... ? राजन.... ! याद रखना.... ?

मैं जितना रघुकुल की मर्यादा को बढ़ाने की कोशिश कर रही हूँ आप उतना ही उसे मिटा रहे हैं।

**दशरथ :** (रोते हुए) मर्यादा .....! मर्यादा .....? ठीक है .....। इसी मर्यादा पर महाराज शिवि ने अपने शरीर का एक-एक अंग दान कर दिया था। इसी मर्यादा पर सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र ने अपना राज-पाट त्यागकर एक डोम का दास बनना स्वीकार किया था। अब मैं भी अपनी मर्यादा को निभाऊँगा और राम के वियोग में अपने प्राण गवाऊँगा।

**कैकई :** महाराज ! यदि ऐसा है तो आज आपको एक भेद की बात बताती हूँ।

**दशरथ :** (चौंककर) रानी .....?

**कैकई :** महाराज ! रावण के दूत हमारी सीमा में घुस आये हैं। उसके गुप्तचर हमारी सेना को भड़का रहे हैं। जिसके फलस्वरूप हमें राज्य से हाथ धोना पड़ सकता है।

**दशरथ :** लेकिन ...? इसका राम बनवास से क्या सम्बन्ध ...??

**कैकई :** है .....!

**दशरथ :** कैसे .....?

**कैकई :** महाराज सुनिये .....? भरत को राजा इसलिए बनाया जायेगा कि वह अपनी सेना में फूट न पड़ने दे और राम को बनवास इसलिए दिया गया है कि उन छोटे-२ राजाओं को जो आपस में लड़ रहे हैं, इकट्ठा करे।

**दशरथ :** परन्तु यह कार्य तो भरत भी कर सकता था।

**कैकई :** नहीं .....? कदापि नहीं ..... ताड़िका और सुबाहु के वध से विश्वामित्र के मन को, शान्ति, आपको यश और देश को एक ताकतवर इन्सान मिला है जिसका नाम है "राम" और इसी को लोग कहेंगे "राम राज्य" और यही मेरे मन का स्वप्न है।

**दशरथ :** परन्तु .....? अफसोस .....?? तेरे स्वप्न का राज्य

दशरथ न देख सकेगा।

**कैकई :** महाराज ! आप व्याकुल न हों। वह सदा के लिए नहीं जा रहा।

**दशरथ :** हे रानी ! याद रख.....? आने वाला जमाना तुझे डायन कहेगा।

**कैकई :** बेशक दुनियाँ मुझे कुछ भी कहे, मैं 'राम राज्य' चाहती हूँ और उसकी स्थापना मैंने कर दी है। लेकिन.....? महाराज ! यह भेद किसी पर जाहिर न हो ? जिससे संसार राम को मर्यादा पुरुषोत्तम राम कह सके।

**दशरथ :** "मर्यादा पुरुषोत्तम राम" कितना प्यारा नाम है ? हाँ.....? राम.....! मर्यादा पुरुषोत्तम राम ही है किन्तु दशरथ तूने हकदार का हक छीनकर मर्यादा को तोड़ा है (धीरे-२ तिरछा खड़ा होकर) हे रानी !

मेरा कुछ नहीं बिगड़ता है, तू जो मुझको ललकार रही।
रानी तू अपने पाँवों में, आप कुल्हाड़ी मार रही।
तू आज नहीं है आपे में, जिस दिन आपे में आयेगी।
उस दिन अपनी ही करनी पर, सिर धुन-२ कर पछतायेगी॥
अच्छा जो होना है होगा, उसकी न मुझे चिन्ता अब है।
मेरा तो आज सत्य पर ही, जो कुछ है न्यौछावर सब है॥
रानी ! रानी ! ! आँचल पसार, थाली ले और दान भी ले।
ले धन भी ले गद्दी भी ले, वर भी ले और प्राण भी ले।

(दशरथ का गश खाकर गिर जाना)

**(मास्टर रामवीर सिंह अवागढ वालों के सौजन्य से)**

**दशरथ :** (रोते हुए धीरे-२ सिर उठाकर) बे... टा... रा... म...! राम ! ! बे... टा... रा... म... ! ! !

दिल में दर्द होता है, खाऊँ गम में गोता है।
इक तीर चुभता है, और घाव होता है॥
बेहद तड़पता हूँ।
जब याद करता हूँ॥

हाय क्या हुआ मुझको।
देकर वचन तुझको॥
राम को वन मत भेज कैकई, सब कुछ ले लेना।
सब कुछ पा आराम तू रानी, जुग-२ जी लेना।
कर महलों में तू विश्राम,.......... ।
न भेजो मेरे वन को, प्यारे राम सिया राम॥
दिल में दर्द..........(१)
तूने क्या मांगा, हाय... हाय... हाय... ।
इक तीर सा लगा, हाय... हाय... हाय... ॥
दिल में है दुख भारी होती है बेजारी।
दिल याद करता है, और आहें भरता है।
इक याद सताती है, दिल टूट जाता है॥
कैकई अपना वचन तू केवल, वापिस ले लेना।
राजपाट सब भरत को देकर, मौज उड़ा लेना॥
मेरे जीवन की हो रही, शाम......... ।
न भेजो मेरे वन को प्यारे राम सिया राम (३)
दिल में दर्द...........(२)
क्या राम का होगा, हाय... हाय... हाय... ।
अन्जाम क्या होगा, हाय... हाय... हाय... ॥
कुछ दोष नहीं है तेरा। अपराध है मेरा॥
जोगी वस्त्र धरायेंगे, जानकी लक्ष्मण जायेंगे।
वन में वो जाकर के, क्या-क्या कष्ट उठायेंगे॥
सब कुछ बदले पर ये होनी, रुख ना बदलेना।
बहुत देर समझाया रानी, कुछ भी समझेना॥
तू पाये नहीं आराम, ........ ।
न भेजो मेरे वन को, प्यारे राम सिया राम (३)
दिल में दर्द.........(३)
जो श्राप दिया था, हाय... हाय... हाय... ।

सन्मुख वो आया, हाय... हाय... हाय... ॥
किसको क्या बोलूँगा। करनी को भोगूँगा ॥
बन राम जायेंगे, संग प्राण जायेंगे।
दशरथ ये दुख गाथा, सबको सुनायेंगे ॥
मन से भजन कर ले राम का, सन्तों पै चित देना।
छोड़ जगत की झूठी माया, हरि का नाम भज लेना ॥
ये है मुक्ति का धाम, .......... ।
न भेजो मेरे वन को, प्यारे राम सिया राम (३)
दिल में दर्द..........(४)

**(दशरथ का बेहोश हो जाना)**

**पर्दा गिरना**

# कौशल्या माता से विदाई

## (दशरथ प्रतिज्ञा लीला)

### सीन छठवाँ

**स्थान :** छज्जू धोबी के घर का बाहरी भाग।

**दृश्य :** कम्मो धोबिन घर के भीतर है।

**छज्जू :** (झुंझलाया सा प्रवेश करके) कम्मो . . . . . ! अरे धोबिनिया !

**कम्मो :** (भीतर से बाहर आकर) हाय-हाय ! आज तुम्हें हो क्या गया है ? घर से निकलकर बाहर तक जाते नहीं, कि लौट आते हो। कुछ काम धन्धा नहीं करोगे।

**छज्जू :** (कान पकड़कर) राम... राम... राम... ! भला भाग्यवान ! आज का क्या काम ? अरे.. ? अयोध्या नगरी शोक में डूबी जा रही है और तुम काम की बात करती हो। आज काम का दिन नहीं, खाली बैठकर रोने का दिन है।

**कम्मो :** क्यों जी, भला मैं पूछूं कि रोना क्यों ? आपका कौन मर गया है ?

**छज्जू :** (क्रोधित होकर) मुँह संभाल कर बात कर, मेरा कोई क्यों मरे, मरे तेरा..... ।

**कम्मो :** (खिसियाकर) तो फिर यह रोने का दिन क्यों है

**छज्जू :** तूझे क्या पता? कहीं घर से बाहर झांके तो पता चले। अनर्थ हो गया है अनर्थ ।

**कम्मो :** अजी मैं वही तो सुनना चाहती हूं।

**छज्जू :** पर सुनाने की मुझमें हिम्मत हो, तब न.....

**कम्मो :** (झुंझलाकर) मेरी जाने बला, तुम क्या चिल्ला रहे हो?

**छज्जू :** अरे..... हद हो गई तेरी उल्टी मति की। भाग्यवान ! मैं चिल्ला नहीं, रो रहा हूं।

**(छज्जू रोने लगता है)**

**कम्मो :** (विस्मय से) अरे..... ? यह तुम्हें हो क्या गया है? कहीं ऊपरी हवा तो असर नहीं कर कर गई ।

**छज्जू :** नहीं..... ? मेरी कम्मो ! ऊपरी हवा नहीं, अयोध्या का मातम असर कर रहा है ।

**कम्मो :** (झुंझलाकर) मेरी समझ में तो कुछ नहीं आता, आखिर बात क्या है?

**छज्जू :** तेरी समझ में तो तब आये जब मैं कोई बात कहूं।

**कम्मो :** फिर कुछ फूटोगे भी ।

**छज्जू :** फूटने के लिये ही तो साहस कर रहा हूं। बात यह है कि मेरी कम्मो कि..... ? (छज्जू रुक जाता है और कम्मो का हाथ पकड़ कर) मेरे दिल को कुछ शक्ति मिल जायेगी। तू एक गिलास दूध ले आ ।

**कम्मो :** (हाथ नचाकर व्यंग से) वाह जी वाह..... ! काम को हाथ नहीं और खाने को..... ?

**छज्जू :** (बीच में बात काटकर) घोर मातम की बात है, कम्मो ! मैं सच कह रहा हूं बिना दूध पिए मुझसे यह शोक समाचार नहीं सुनाया जायेगा।

**कम्मो :** पर मुझे उससे क्या लाभ होगा ?

**छज्जू :** (गले में बाहें डालकर) खुशी से झूम उठेगी मेरी रानी !

**कम्मो :** (खुश होकर) सच..... ? अच्छा, मैं अभी लाई ।

**(कम्मो का जाना)**

**छज्जू :** (स्वयं से) तू तो अधिक चतुर बनती ही है । आज हमारी भी चतुराई का पैंतरा देख, तुझे छठी तक का दूध न याद दिलाया तो मेरा नाम छज्जू राम नहीं । (कम्मो को आते देखकर) तुम सच्ची पतिव्रता नारी हो, कम्मो ! भगवान तेरे इस पति प्रेम को सदा बनाये रक्खे ।

**कम्मो :** (दूध देते हुए) यह चापलूसी छोड़ो । दूध पीकर सुनाओ, क्या सुनाना चाहते हो ?

**(छज्जू दूध पीकर डकारें लेता है)**

**छज्जू :** बात यह है कम्मो रानी ! (हिचकियाँ लेकर) मेरा दिल कहता है कि कम्मो से गले मिलकर रोलूं ।

**कम्मो :** पर वह बात मैं भी तो सुनूँ ।

**छज्जू :** (रूंआसा होकर) वह अपने राम हैं, न राजा दशरथ के पुत्र !

**कम्मो :** हाँ..... हाँ ! जानती हूँ, सीता के पति !

**छज्जू :** बिल्कुल वही, वह बनवास को जा रहे हैं ।

**कम्मो :** यह तो मैं कभी की सुन चुकी हूं । कुछ और फूटो ।

**छज्जू :** (विस्मय से) क्या..... ? क्या यह कम फूटने की बात है । पत्थर हृदय हो कम्मो ! तुमसे अब तक दो आंसू भी नहीं गिराये गये ।

**कम्मो :** आंसू तो दो की जगह चार गिरा दूं, पर कुछ बात भी हो तब न ।

**छज्जू :** हद हो गई । मुर्गी जान से गई और तुम्हें आनंद भी नहीं आया ।

**कम्मो :** (क्रोध से) तो क्या इसी बात के लिए एक गिलास दूध बेकार किया है । (हाथ से खाली गिलास लेकर जमीन पर

मारते हुए) मैं खूब समझती हूं, तुम घर का नाश करने पर तुले हो तो मैं सर्वनाश करके दम लूंगी ।

**(कम्मो का जाना)**

**छज्जू :** (पीछे-पीछे चलते हुए) अरे सुनो तो भाग्यवान ! सत्यानाश करने की मत ठान लेना, देवी ! नारी से तो बेचारे देवता भी हार मानते आये हैं। भला यह छज्जू किस खेत की मूली है। तुम्हें मेरी सौगंध है कम्मो ! तुम्हें अपने छज्जू की सौगंध है ।

**(कहते-कहते छज्जू का भीतर जाना)**

**सीन सातवां**

**स्थान :** राज भवन का बाहरी भाग ।

**दृश्य :** एक ओर से श्री राम कल्पनाओं में खोये धीरे-धीरे प्रवेश करते हैं, पीछे-पीछे लक्ष्मण भी । लक्ष्मण की भावनाओं से विद्रोह की झलक दीखती है ।

**लक्ष्मण :** भैया..... ! माँ कैकई ने कल के होने वाले राजकुमार को आज दर-दर का भिखारी बना दिया है ।(क्रोध से)

वह कौन मांगने वाली है, जो मांग रही है राजतिलक ।
अधिकार जिसे है गद्दी का, होगा उसको ही आज तिलक ॥
अन्याय अगर होता है तो, चुप रहने में सन्तोष नहीं ।
बन जाने की भी खूब रही, क्यों जायें, जब कुछ दोष नहीं ॥

**राम :** आज राम का कर्म, धर्म और साहस मर्यादा के बन्दी बन चुके हैं, लक्ष्मण ! माँ कैकई की इच्छा पूर्ण होने दो, इसी में राम की भलाई है ।

**लक्ष्मण :** आप कोमल स्वभाव के कारण माँ कैकई के अन्याय को सहन किये जा रहे हैं, भैया जी !

**राम :** नहीं लक्ष्मण, माँ कैकई ने अन्याय नहीं, उपकार किया है ।

**लक्ष्मण :** (व्यंग से) माँ कैकई का इतना कठोर संकल्प यदि उपकार है तो अत्याचार की परिभाषा क्या है, भैया जी ।

**राम :** हमारी कहानी की रचना इसी प्रकार होनी थी, लक्ष्मण ! यह तो माँ कैकई ने अपने ऊपर झूठा दोष ले लिया है। बहुत बड़ी उम्र बीत जाने तक भी पिता जी निःसंतान रहे थे। पिता जी को इसका बहुत दुःख था। इसलिए नहीं कि उन्हें कोई पिता कहकर पुकारने वाला नहीं था अपितु इसलिए कि उनके देखते-देखते ही यह रघुवंश का दीप सदा-सदा के लिए बुझने जा रहा था।

**लक्ष्मण :** और इसी वंश की रक्षा के लिए पिता जी ने धर्म शास्त्र के विपरीत दूसरा और तीसरा विवाह रचाया था।

**राम :** हाँ, और तीसरे विवाह पर कैकय नरेश अश्वपति, अर्थात् हमारे नाना जी ने पिता जी से वचन लिया था कि उनके उपरान्त राज्य अधिकारी कैकई का पुत्र होगा।

**लक्ष्मण :** किन्तु पिता जी को यह वचन देने का अधिकार भी क्या था? राज्य उनकी निजी सम्पत्ति तो नहीं थी?

**राम :** इस पर विवाद करना राम का कर्तव्य नहीं है, लक्ष्मण ! राम का कर्तव्य है माता-पिता की आज्ञा का पालन करना।

**लक्ष्मण :** तब आपका यह निश्चय..... ?

**राम :** अटल है, लक्ष्मण !

**लक्ष्मण :** तो यह भी निश्चित समझिये कि यह लक्ष्मण भी आपके साथ रहेगा।

**राम :** (समझाते हुए) लक्ष्मण..... ! तुम समझते क्यों नहीं?
मैं अब वन को जाता हूं, मामा के भरत-शत्रुघ्न हैं।
इस जगह पिता जी माता जी, शोकातुर हैं मलीन मन हैं॥
इसलिए रहो तुम यहीं लषण, उनकी व्याकुलता हरने को।
सेवक चाहिए यहाँ भी तो, माँ-बाप की सेवा करने को॥

**लक्ष्मण :** आप जिस घरेलू क्लेश से बचने के लिए वनों की शरण ले रहे हैं, वह क्लेश भी होकर रहेगी। श्री राम वनों में और लक्ष्मण अयोध्या में? और इस अन्याय के प्रति मौन... ?

यह नहीं हो सकेगा भैया जी, यह नहीं हो सकेगा।

**राम :** (दुःखी होकर) तब राम के लिए एक और चिन्ता बन आई है।

**(राम का जाना)**

**लक्ष्मण :** (पुकारते हुए) भैया..... ! भै.... या..... ! !

**(लक्ष्मण का जाना)**

## सीन आठवाँ

**स्थान :** कौशल्या भवन।

**दृश्य :** कौशल्या शोकातुर बैठी हुई हैं।

**आकाशवाणी :** सीता सावधान..... ? राम बन को जा रहे हैं।

पर्दा गिरना

**॥ चौपाई ॥**

दीन्हि असीस सासु मृदुं बानी। अति सुकुमारि देखि अकुलानी ॥

**(सीता का प्रवेश करके कौशल्या के पैरों में गिरकर सिसकना)**

**कौशल्या :** (सीता का चेहरा ऊपर उठाकर आंसू पौंछते हुए)
बेटी ! बेटी ! ! सौगन्ध तुम्हें, बतलाओ तो चिन्ता क्या है।
लज्जा को दूर करो सीते, कह डालो हृदय व्यथा क्या है ॥

**सीता :** (सिसकते हुए) माता जी !
लज्जा को कैसे दूर करूं, यह तो नारी का गहना है।
पर माता आज्ञा देती हैं, तो कहती हूं जो कहना है ॥
मझली माँ ने कौशलपति से, वरदान ले लिये दो चुनके।
पहला तो भरत राज्य का है, दूसरा वन गमन उनके ॥
हैं आप पूज्यनीया उनकी, जिनकी यह तुच्छ पुजारिन है।
इसलिए आज्ञा की भिक्षा, लेने को आई भिखारिन है ॥

**कौशल्या :** (सीता को छाती से लगाकर से रोते हुए)
चकरा गया है सर मेरा, बेटी तेरे फरमान से।
फट गया मेरा कलेजा तेरे, शब्द रूपी बाण से ॥

ये शब्द सुनने से पहले, क्यो न कौशल्या मर गई ।
बनवास जाने से पहले, कूँच क्यों न कर गई ॥
बेटी ! सुनना ही चाहती है तो सुन? बेटी ! पति के
सुख-दुःख में साथ देने वाली नारी ही सदगति पाती है ।
वह राजा हो तू रानी हो, वह योगी हो तो यू योगिन हो ।
वह यदि बनवासी होता हो, तो सीते तू बनवासिन हो ॥

**॥ चौपाई ॥**

अति विषाद बस लोग लोगाईं । गए मातु पहिं रामु गोसाईं ॥

**राम :** (प्रवेश करके चरणों में गिरकर) प्रणाम ! जननी माँ ! !

**(सीता उठकर एक ओर को खड़ी हो जाती है)**

**कौशल्या :** (माथा चूमते हुए) चिरंजीव रहो, मेरे राजऋषि !

**॥ चौपाई ॥**

सादर सुन्दर बदनु निहारी बोली मधुर वचन महतारी ॥
धरम धुरीन धरम गति जानी, कहेतु मातु सन अति मृदु बानी ॥
कहहु तात जननी बलिहारी । कबहिं लगन मुद मंगलकारी ॥
पिता दीन्ह मोहि कानन राजू । जहं सब भाँति मोर बड़काजू ॥

**राम :** माता आज्ञा दो मुझको, हो पूर्ण मनोरथ निज मन का ।
दिया है राज्य पिताजी ने इस वक्त मुझे दण्डक वन का ॥

**कौशल्या :** (रोते हुए) नहीं ..... ! बेटा ..... ! ! नहीं ..... ! ! अब मैं अपने दिल को कैसे धीरज बधाऊँ ?

**राम :** माता तुझे सौगन्ध है ।
वन गमन के वास्ते, माता मुझे तैयार कर ।
हुक्म पिता का मानने को, जननी मेरा इकरार कर ॥

**कौशल्या :** (राम की बाँह पकड़कर) बे ..... टा ..... !

**राम :** (कौशल्या के आँसू पौंछते हुए)
ना रोको मुझे माता, और ना देर करो माँ।
आशीष भरा हाथ मेरे, सिर पर धरो माँ॥
मेरे सिर पर धरो माँ .....

मेरी माता प्यारी। मेरी माँ महतारी॥
जाते हैं पितु की आज्ञा से, बनवासी हम होंगे।
चौदह बरसों को भरत आज, रजवासी अब होंगे॥
आशीष हमको दीजै-२ और उपकार करो माँ।
आशीष भरा हाथ.....(१)
जाते-जाते थोड़ा सा, चरणामृत दे दो माँ।
दोनों हाथों में लेकर, चुम्बन तो ले लो माँ॥
आशीष भरा हाथ.....(२)

(श्री अशोक पचौरी अवागढ़ वालों के सौजन्य से)

## (सीता का हिचकियाँ लेना)

॥ चौपाई ॥

बैठि नमितमुख सोचति सीता । रूप रासि प्रति प्रेम पुनीता ॥
चलन चहत बन जीवन नाथू । केहि सुकृती सन होइहि साथू ॥

**राम :** (सीता की ओर मुड़कर)
सीते ! सीते ! ! क्यों रोती हो, क्या धरा वेदनाओं में है ।
सुख-दुख हैं एक समान उन्हें, बल जिनकी आत्माओं में है ॥
मैं जान रहा हूँ पति वियोग, तुम नहीं प्रिय सह सकती हो ।
फिर भी आत्मा में बल लाओ, बल होगा तो रह सकती हो ॥

**सीता :** (पैरों में गिरकर) हे स्वामी !
अब लाज छोड़कर कहती हूँ, चरणों के साथ चलूँगी मैं ।
यदि आप भभूत रमायेंगे, तो स्वामी भस्म मलूँगी मैं ॥

**राम :** चलने को तो चल सकती हो, पर भ्रमण तुम्हारे योग्य नहीं ।
हे राजभवन की पुत्र वधू, वन गमन तुम्हारे योग्य नहीं ॥
हे प्रिये ! वन में खूनी जानवरों का, हुआ करता है निवास ।

**सीता :** उनके वध के वास्ते, शस्त्र हैं स्वामी के पास ।

**राम :** कठिन मार्ग कांटों से भरा, उन पर चलोगी किस तरह ।

**सीता :** सिंह के साथ सिंहनी, चलती है स्वामी जिस तरह ।

**राम :** कांटों पर कोमल चरण, कैसे सिया रख पायेगी ।

**सीता :** पलकों से सीता स्वामी, कांटे हटाती जायेगी ।

**राम :** हर कदम पर कष्ट होंगे, दिल सिया घबरायेगा ।

**सीता :** दो होंगे तो एक का दिल, दूसरा बहलायेगा ।

**राम :** प्रिये ! तुम समझती क्यों नहीं ?
मैं कैसे ले चल सकता हूं, जब हूं आज्ञा के बंधन में ।
मंझली मां ने यह नहीं कहा, सीता भी जाएगी बन में ॥
अब तुमको साथ ले चलूँ तो, यह बात आन की जाती है ।
मां कह देंगी बनवास कहाँ, जब साथ जानकी जाती है ॥

**सीता :** (पैरों में गिरकर)
हे प्राणनाथ ! हे प्राणेश्वर ! ! है यदि यही विचार ।
तो मैं पहलो ही कर चुकी, हूं इसका प्रतिकार ॥
कह चुकी बड़ी माता मुझसे, वे योगी तो तू योगिन हो ।
दे चुकी मुझे भी आज्ञा वह, सीते तू भी बनवासिन हो ॥
दासी है प्रभु की अर्द्धांगिन, छाया की भांति साथ में है ।
मेरी जीवन डोरी तो, प्राणेश्वर इसी हाथ में है ।

**॥ चौपाई ॥**

समाचार जब लछिमन पाए । व्याकुल बिलख बदन उठि धाए ॥
कंप पुलक तन नयन सरीरा । गहे चरन अति प्रेम अधीरा ॥

**लक्ष्मण :** (पुकारते हुए प्रवेश कर चरणों में गिरकर) भैया..... !

**राम :** (लक्ष्मण के कन्धे पकड़कर उठाकर) बनवास राम को मिला है लक्ष्मण को नहीं ।

**लक्ष्मण :** क्या बनवास मिले बिना बन यात्रा निषेध है ?

**राम :** नहीं तो ।

**लक्ष्मण :** फिर लक्ष्मण को छोड़ देने का विचार क्यों करते हैं ? इसे भार समझकर..... ?

**राम :** नहीं लक्ष्मण !

**लक्ष्मण :** अपनी सेवा के अयोग्य समझकर..... ?

**राम :** यह कैसी बाते करते हो ? लक्ष्मण !

**लक्ष्मण :** भैया जी ! लक्ष्मण आपका भाई भी है और सेवक भी। यदि लक्ष्मण श्री राम का सीधा हाथ है तो श्री राम इस सेवक के हृदय हैं। किसी को हृदय विहीन करके उसके जीवन की आशा की जा सकती है। यदि श्री राम इस सेवक को जीवित चाहते हैं तो उन्हें लक्ष्मण को साथ रखना होगा।

**राम :** तुम समझते क्यों नहीं ? लक्ष्मण !

जिस आज्ञा पर तत्पर हूँ मैं, उससे क्यों कर टल सकता हूँ।
मझली माता ने कहा नहीं, फिर कैसे संग ले चल सकता हूँ॥
अब तुम भी साथ चलोगे तो, सब बात नष्ट हो जाएगी।
बनवास नहीं है बन बिहार, यह कहकर माँ झुंझलाएगी॥

॥ चौपाई ॥

धीरजु धरेउ कुअवसर जानी। सहज सुहृद बोली मृदु बानी॥
तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामु सब भाँति सनेही॥
जौं पै सीय राम वन जाहीं। अवध तुम्हार काजु कुछ नाहीं॥

**सुमित्रा :** (प्रवेश कर) बेटा राम ! लक्ष्मण को अपनी सेवा से विमुख मत करो। इसे अपने साथ ले जाओ।

आज्ञा का ही है प्रश्न, तो तोड़ इस बन्धन को।
दे रही सुमित्रा आज्ञा है, ले जाउ सुमित्रा नन्दन को॥

**लक्ष्मण :** (सुमित्रा के पैरों में गिरकर) धन्य हो माँ... तुम धन्य हो !

देखो वह भी है एक मात, जो अपने सुत को राज दिलाती है।
सौतले लड़के को लड़कर, घर से वन में भिजवाती है॥
इस ओर एक यह भी माँ है, इस माँ की भी तो छाती है।
जो सौतेले की सेवा में, अपने को भेंट चढाती है॥

**कौशल्या :** (आगे आकर) बहन सुमित्रा !

इस नन्हे को रहने दो, मन मेरा विचलित होता है।
इसका तो चौदह बरसों को, बन जाना अनुचित होता है॥
आँखों के आगे ही रखो, इन बूढ़ी आँखों के सुख को।

इस रामचन्द्र के बदले में, निरखूँगी इसके ही मुख को ॥

**सुमित्रा :** बहन !

मझली के बन्धन में रघुवर हैं, सिया आपके शासन में ।
तो लक्ष्मण ! यह मेरा लक्ष्मण, है मेरी आज्ञा पालन में ॥
बस अब इन बातों का विवाद, मेरा आदेश मिटायेगा ।
वह साथ इसे ले जायेगा, यह साथ भ्रात के जायेगा ॥

**कौशल्या :** हे बहन सुमित्रा, अब आज्ञा काटे कौन ।
बहन सुमित्रा कर दिया, तुमने सबको मौन ॥

**(राम के हाथ में लक्ष्मण का हाथ पकड़ाकर)**

देखना राम इस लक्ष्मण को, तू बन को लिये जा रहा है ।
उर्मिला, सुमित्रा के धन को, तू बन को लिये जा रहा है ॥
पर ध्यान रहे उस जंगल में, यह फूल न कुम्हलाने पाये ।
जैसा जाता है हरा भरा, वैसा ही खिला-खिला आये ॥

**राम :** (चरणों में सिर नवाकर) माताजी ! आप किसी बात की चिन्ता न करें . . . . . ? ये अभागा राम ! यदि अपने प्राणों की बाजी लगाकर भी अपने भाई को सुरक्षित रख सका तो इसे अपना सौभाग्य समझेगा, माँ . . . . . ! अब अपने राम को आज्ञा दो माँ . . . . . ?

**कौशल्या :** (जाते हुए देखकर रोते हुए) बेटा. . . राम . . . . ? बे. . . . . . टा . . . . . टा . . . . . रा . . . . . म . . . . . !

**(राम का लक्ष्मण सीता के साथ प्रस्थान)**

**पर्दा गिरना**

## सीन नौवां

**स्थान :** उर्मिला भवन का भीतरी भाग ।

**दृश्य :** लक्ष्मण का फोटो सामने रखा है। उर्मिला आरती उतार रही है ।

**पर्दा उठना**

## फिल्म-खानदान

### आरती

तुम्हीं मेरे मन्दिर, तुम्हीं मेरी पूजा।
तुम्हीं देवता हो, तुम्हीं देवता हो॥
कोई मेरी आँखों से, देखे तो समझे।
क़ि तुम मेरे क्या हो, कि तुम मेरे क्या हो॥
तुम्हीं मेरे मन्दिर..

तुम्हीं मेरे माथे की, बिन्दिया की झिलमिल।
तुम्हीं मेरे हाथों के, गजरों की मन्जिल॥
मैं हूँ एक छोटी सी, माटी की गुड़िया।
तुम्हीं चांद मेरे, तुम्हीं आत्मा हो॥
तुम्हीं मेरे मन्दिर...

बहुत रात बीती, चलो मैं सुला दूँ।
पवन छेड़े सरगम, मैं लोरी सुना दूँ॥
तुम्हें देखकर ये, ख्याल आ रहा है।
जैसी परिस्ताँ में, कोई सो रहा है॥
तुम्हीं मेरे मन्दिर...

**लक्ष्मण :** (प्रवेश कर) उर्मिले .....! अनर्थ हो गया .....? महा अनर्थ हो गया .....??

**उर्मिला :** (पैरों में गिरकर) नाथ ....! ये आप क्या कह रहे हैं ...?

**लक्ष्मण :** उर्मिले ! आज अयोध्या की मुस्कान लुट रही है ।

**उर्मिला :** (विस्मय से) ये क्या कह रहे हो ? स्वामी !

**लक्ष्मण :** कल के होने वाले युवराज श्री राम आज चौदह वर्ष के बनवासी हो गये हैं ।

**उर्मिला :** नहीं .....?

**लक्ष्मण :** माँ कैकई ने अपनी इस हत्यारी इच्छा की पूर्ति का प्रण किया है ।

**उर्मिला :** वह त्याग, प्रेम और दया की मूर्ति, कैकई माँ ! उनका

कोमल हृदय इस इच्छा से काँप नहीं उठा ।

**लक्ष्मण :** पाषाण को पीड़ा का आभास नहीं होता, उर्मिले ! और आज यह लक्ष्मण भी मौन है

**उर्मिला :** भाई के सम्मान में आप ही का मान है, नाथ ! किन्तु बहन सीता.....? क्या इस आघात को सह सकेंगी ? ?

**लक्ष्मण :** अग्नि ने पुष्पलता की आहूति ली है, उर्मिले ! तुम्हें भी एक महान त्याग करना होगा ।

**उर्मिला :** आज्ञा पालन करूँगी, स्वामी !

**लक्ष्मण :** तुम्हें अपने हृदय पर पत्थर रखना होगा, प्रिये !

**उर्मिला :** इतने पर भी यह दासी मुस्करायेगी, नाथ !

**लक्ष्मण :** तो चौदह बरसों के लिए तुम्हें अपने नाथ का त्याग करना होगा ।

**उर्मिला :** (तड़पकर) नाथ.....?

**लक्ष्मण :** बनवासी भाई राम और माता जानकी की सेवा में तुम्हारा नाथ भी बन यात्रा को जा रहा है, उर्मिले !

**उर्मिला :** ओह ! मेरे दुर्भाग्य ! !

**लक्ष्मण :** सौभाग्य कहो प्रिये ! रघुवंशीय इतिहास में तुम्हारा यह त्याग अमर रहेगा, देवी !

**उर्मिला :** स्वामी ! कितना अच्छा होता कि आप भाई के सेवक होते और मैं सीता बहन की सेविका ।

**लक्ष्मण :** भाई श्री राम जानकी जी को संभालेंगे और लक्ष्मण भाई की सेवा करेगा । तुम्हारे साथ चलने से लक्ष्मण केवल तुम्हें ही संभालने में जुटा रहेगा और ऐसी दशा में हम दोनों उनके सेवक न रहकर उल्टे उन पर भार बन जायेंगे, उर्मिले !

**उर्मिला :** आपकी आज्ञा पूर्ण होगी, नाथ ! उर्मिला अपने आँसूओं को अमृत समझकर पीती रहेगी ।

**लक्ष्मण :** उर्मिले ! त्याग की देवी ! ! सीता माँ राम के साथ रहेंगी

परन्तु तुम्हारा राम अकेला जा रहा है। तुम अपने राम को शान्ति दो, उर्मिले ! कि वह तुम्हारी कल्पना को मिलन समझकर मुस्करा लिया करे।

**उर्मिला :** परमात्मा आपको शक्ति दे। आपकी उर्मिला आपकी छवि को दृष्टि में बसाए मृत्यु काल तक प्रतीक्षा करेगी।

**लक्ष्मण :** अच्छा प्रिये ! मैं जा रहा हूँ। मेरी प्रतीक्षा करना।

**लक्ष्मण का लौटना**

**उर्मिला :** ठहरिये नाथ ! अभी मैं स्वागत की सामग्री लेकर आ रही हूँ

**(उर्मिला का पूजा की थाली लेकर पलटना)**

**(लक्ष्मण का जाना)**

(पूजा की थाली लिये हुए) मेरे देवता ! आज मैं प्रतिज्ञा करती हूँ कि आपकी वापसी तक इसी रूप में प्रतीक्षा करती रहूँगी।

दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे।
चाँद सूरज बनकर निकलता रहे॥
दीपक मेरे सुहाग...

**पर्दा गिरना**

# राम वन-गमन

## (दशरथ प्रतिज्ञा लीला)

### सीन दसवाँ

**स्थान :** कैकई का कोप भवन।

**दृश्य :** रानी कैकई बैठी हुई है। राजा दशरथ अचेतावस्था में लेते हुए हैं। पास में मंत्री सुमन्त दुखी मुद्रा में खड़ा हुआ है तथा गुरु वशिष्ठ बैठे हुए हैं।

**पर्दा गिरना**

**(राम-लक्ष्मण जानकी का प्रवेश)  (स्टेज पर घूमना)**

**गाना—(बैक ग्राउन्ड) रिकार्डिंग : प्रदीप**

कोई लाख करके चतुराई, कर्म का लेख मिटे ना रे भाई ।
जरा समझो इसकी सचाई रे, कर्म का लेख मिटे ना रे भाई ॥
इस दुनियाँ में भाग्य के आगे, चले ना किसी का उपाय ।
कागज हो तो सब कोई बाँचे, कर्म न बाँचा जाय ॥
इक दिन इसी किस्मत के कारण, बन को गये थे रघुराई रे ।
कर्म का लेख...
काहे मनुवा धीरज खोता, काहे तू नाहक रोय ।
अपना सोचा कभी नहीं होता, भाग्य करे सो होय ॥
चाहे हो राजा चाहे भिखारी, ठोकर सभी ने यहाँ खाई रे ।
कर्म का लेख...

**राम :** (लक्ष्मण-सीताजी के साथ प्रवेश करके दशरथ के चरणों में गिरकर) पिताजी, प्रणाम !

**॥ चौपाई ॥**

सचिवँ उठाइ राउ बैठारे । कहि प्रिय वचन रामु पग धारे ॥
सिय समेत दोउ तनय निहारी । व्याकुल भयउ भूमिपति भारी ॥

**सुमंत :** (राजा को उठाते हुए) महाराज ! श्रीरामचन्द्र जी पधारे हैं ।

**दशरथ :** (राम को छाती से लगाकर व्याकुल होकर)
प्राणों ! तुम इनके साथ चलो, इनके सम्बन्धी हो जाओ ।
आँखों !यह दृश्य देखने के पहले, तुम अंधी हो जाओ ॥
मुझसा न कठोर पिता इस, पृथ्वी पर और कहीं होगा ।
तुमसा भी आज्ञाकारी बेटा, जग में अन्य नहीं होगा ॥
तुम घर का प्यार छोड़ते हो, मैं अपना प्राण छोड़ दूँगा ।
तुम छोड़ रहे हो अवधपुरी, मैं यह संसार छोड़ दूँगा ॥

**राम :** पिताजी ! धैर्य धारण कीजिए.....? रघुवंश में किसी ने कोई अधर्म नहीं किया फिर आपका वचन मैं कैसे मिथ्या कर दूँ ?
हे पिता ! कष्ट समयानुसार, सब भाँति सहन करना अच्छा ।

यह मंत्र आप ही का तो है, दुख में धीरज रखना अच्छा ॥
जब आप विकल होंगे ऐसे, तो हम सब घबरा जायेंगे ॥
आशीष प्रदान कीजिए हमें, हम कुशल सहित घर आयेंगे ॥

**दशरथ :** बेटा राम ! तुम मेरे प्राण हो । मैं कैसे जाने की कहूँ ? मंत्री सुमन्त ! तुम राम के साथ पूरी सेना लेकर जाओ ।

**कैकई :** (तुनककर) महाराज ! भरत को राज्य देने के बाद आपको ऐसी आज्ञा देने का क्या अधिकार है ?

॥ चौपाई ॥

मुनि पट भूषन भाजन आनी । आगे धरि बोली मृदु बानी ॥

**कैकई :** (बनवासी वस्त्र राम के आगे रखते हुए) हे रघुवीर ! राजा को तुम प्राणों के समान प्रिय हो । भीरू राजा शील और स्नेह नहीं छोड़ेंगे । तुम ये राजसी वस्त्र उतारकर बनवासी भेष धारण करो ।

**राम :** (कैकई के चरणों में झुककर) जो आज्ञा, माता जी !

॥ चौपाई ॥

रामु तुरत मुनि वेषु बनाई । चले जनक जननिहि सिरु नाई ॥

(मुनि पट भूषण लेकर पहनते हुए)

प्यारी माता मेरी, काहे की है देरी, राम जाता।
मइया चरणों में शीश नवाता॥
ये ले माता तू कानों के कुण्डल।
तेरी खातिर ही जाते हैं हम बन॥
सर पर रखते जटा, जैसे काली घटा, बन का रास्ता।
मइया चरणों में...
ये ले माता तू वस्त्र और गहना।
तेरा माना है तीनों ने कहना॥
तन पर भस्म रमी, जैसे रहती नमी, साधू आता।
मइया चरणों में...
कहो पिता जी क्या हाल तुम्हारे।

तीनों आज्ञा लेने को हैं ठाड़े ॥
जाते बन को सदा, चौदह बरस बिता, लौट आता ।
मइया चरणों में...

(श्री अशोक पचौरी अवागढ़ वालों के सौजन्य से)

**कैकई :** (सीता की ओर देखकर) बहू.....! तुम भी.....?

**वशिष्ठ :** (दुखी होकर) हद हो गई महारानी कैकई ! कुछ तो लज्जा रखिये । त्रिया हठ की भी सीमा होती है । सीता रघुकुल की ही नहीं, अपितु सारे अयोध्या की लाज है । आपने वरदान में राम को वनवास माँगा है, सीता को नहीं । वह तो अपनी मर्जी से जा रही है । आभूषण उसका सुहाग है ।

**सीता :** गुरुदेव ! नारी का सुहाग उसका पति होता है । यदि वे योगी बन रहे हैं तो मुझे योगिन बनने में कोई संकोच नहीं है ।

**दशरथ :** (रोते हुए) हाय... ! अभागे दशरथ... ! तूने जनक नन्दिनी को सौंपते समय राजा जनक से क्या प्रतिज्ञा की थी ? अब तू उन्हें क्या जवाब देगा ? (दशरथ का बेहोश हो जाना और राम-सीता-लक्ष्मण का जाना)

॥ चौपाई ॥

गई मुरछा तब भूपति जागे । बोलि सुमंत्रु कहन अस लागे ॥
पुनि धरि धीर कहइ नरनाहू । लै रथु संग सखा तुम्ह जाहू ॥
जौं नहिं फिरहिं धीर दोउ भाई । सत्य संघ दृढ़व्रत रघुराई ॥
तौं तुम्ह विनय करेहुकर जोरी । फेरिअ प्रभु मिथिलेसकिसोरी ॥

**दशरथ :** (रोते हुए) मंत्री सुमन्त.....! रोको.....? मेरी हंसों की जोड़ी को रोको.....? ? बेटा.....राम.....!

आँखों के तारे राम-लखन, सीता सरोज सकुचाती है ।
एक संग जुदाई तीनों की, अब मुझसे सही न जाती है ॥
हे मंत्री करो तुम कहना यह, ले जाओ रथ सजा करके ॥
बिठलाकर तीनों को रथ में, लाना बन उन्हें दिखा करके ॥

आ सकते गर लौट नहीं, वे रामचन्द्र ब्रतधारी ।
दे भेंज जनक सुकुमारी को, कहना ये अर्ज हमारी ॥

सुमंत : (सिर झुकाकर) जैसी आज्ञा, महाराज ! आप धैर्य धारण कीजिए महाराज !

दशरथ : (रोते हुए तड़पकर) अब किस पर धैर्य धारण करूँ मंत्री ! अब कौन सी आशा बाकी रह गई है....? कैकई की ओर पलट कर उसका कन्धा झकझोरते हुए) अरे कुल्टा......! अपनी हत्यारी इच्छा की पूर्ति के लिए आखिए तैने ये घर जला ही डाला । दूध पीकर जहर उगलने वाली नागिन..! इस अभागे दशरथ के बुढ़ापे की बैसाखी छीन कर तेरे दिल में ठंडक पड़ गई । रघुवंश के जलते दीपक में ठोकर मारकर तैने अपने अरमान पूरे कर ही लिये । अरी डायन ! इस अभागे दशरथ को तड़प-तड़प कर मारने से पहले ही अच्छा होता कि तू मेरा गला ही दबा देती । ओ कलंकिनी याद रख.....? आने वाला जमाना तुझे कभी भी क्षमा नहीं करेगा.....? कभी भी क्षमा नहीं करेगा.....? ? और तू अपने कर्मों पर सिर धुन-२ कर पछतायेगी । राम.. बेटा.....राम.....तुम ये घर बार छोड़ चले अब मैं भी यह संसार छोड़ दूँगा। तुम्हारी जुदाई अब नहीं सही जाती । बेटा.....राम.....बे...टा...रा...म...!

सुमंत : (सिर नवाकर) अच्छा महाराज ! प्रणाम ! !

(मंत्री सुमन्त का जाना)

पर्दा गिरना

(राम का लक्ष्मण-सीता तथा सुमन्त के साथ गमन)

बैक ग्राउन्ड

तीनों प्राणी माँ कैकई की, आज्ञा पाकर चल दिये ।
जाते-जाते माता पिता को, शीश नवाकर चल दिये ॥
दशरथ दुलारे, प्राणों से प्यारे, बन में रहेंगे, किसके सहारे ॥

कोई बताए, कैसे रहेंगे, कष्टों को बन में, कैसे सहेंगे ॥
शिला पड़ी पत्थर की राह में, ठोकर लगाकर चल दिये ।
जाते जाते .....
आयेगी जब-तब, याद तुम्हारी, रोयें अवध के, नर और नारी ॥
रो-रो के सब, यों ही कहेंगे, राम बिना हम, कैसे रहेंगे ॥
राज-पाट और धन दौलत को, ठोकर लगाकर चल दिये ।

**(श्री हरिशंकर शर्मा अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**॥ चौपाई ॥**

चढ़ि रथ सीय सहित दोउ भाई । चले हृदयं अवधहि सिरुनाई ॥

**दशरथ :** (उठकर बाहर आते हुए) रोको .....? मेरी हंसों की जोड़ी को रोको .....??

**कैकई :** (थामते हुए) नाथ ..... !

**दशरथ :** (धक्का देते हुए क्रोध से) दूर हट नागिन ..... ! अब मेरा तेरा कोई सम्बन्ध नहीं ? याद रख .....? आज से इस संसार में तेरे नाम की कोई औरत पैदा नहीं होगी और तेरा पुत्र यदि मुझे पिण्डदान देगा तो वह मुझे कभी भी स्वीकार नहीं होगा । प्रिय कौशल्ये ! अब मुझे वहीं ले चलो जहाँ में राम की छवि निहारता रहूँ ।

**(कौशल्या का दशरथ को सहारा देना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन ग्यारहवाँ

**स्थान :** अवधपुरी ।

**दृश्य :** राम रथ पर लक्ष्मण-सीता के साथ बैठे हुए हैं । मंत्री सुमन्त रथ हांक रहे हैं । अवधवासी रथ के पीछे-पीछे चल रहे हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

सहि न सके रघुवर बिरहागी । चले लोग सब व्याकुल भागी ॥

कहि सप्रेम मृदु वचन सुहाए । बहुविधि राम लोग समुझाए ॥

राम : (प्रजाजनों से)

इस समय भाइयो बतलाओ, क्यों साथ हमारे आते हो ।
हम तो अब बन को जाते हैं, तुम क्यों तकलीफ उठाते हो ॥
मानो मेरा कहना, जाओ, बाखुशी अवध में रहना तुम ।
हे भाई मेरे वियोग का दुख, चौदह बरसों तक सहना तुम ॥

प्रजाजन : (हाथ जोड़कर) नहीं . . . . . ! प्रभो . . . . . ! ! नहीं . . . . . ! !
हम तो आपके साथ ही रहेंगे ।

दिल के टुकड़े-टुकड़े करके, तुम बनों को चल दिये ।
जाते-जाते ये तो बता दो, हम जियेंगे किसके लिये ॥
दशरथ दुलारे, प्राणों से प्यारे, बन में रहोगे, किसके सहारे ॥
कोई बताये, कैसे रहोगे, कष्टों को बन में, कैसे सहोगे ॥
तुम तो तीनों माँ कैकई की, आज्ञा पाकर चल दिये ।
जाते-जाते...
आयेगी जब-जब, याद तुम्हारी, रोयेंगे अवध के, नर और नारी ॥
रो-रो के सब, यो हीं कहेंगे, राम बिना हम, कैसे रहेंगे ॥
जावेंगे हम भी साथ तुम्हारे, बन में विपदा के लिये ।
जाते-जाते...

पर्दा गिरना

## सीन बारहवाँ

स्थान : तमसा नदी का तट ।

दृश्य : सब का विश्राम करना ।

॥ चौपाई ॥

जबहिं जाम जुग जामिन बीती । राम सचिव सन कहेउ सप्रीती ।
खोज मारि रथु हाँकहु ताता । आन उपायं बनिहि नहिं बाता ॥

राम : (आधी रात को सोते से उठकर) हे मंत्री जी ! अब यहाँ से शीघ्र चलने का प्रबन्ध कीजिये । अगर ये प्रजाजन जाग गये तो ये मोहवश हमारा पीछा नहीं छोड़ेंगे । तब यहाँ से

आगे बढ़ना बहुत कठिन हो जायेगा।

**मंत्री :** (सिर झुकाकर) जो आज्ञा महाराज !

**॥ दोहा ॥**

राम लखन सिय जान चढ़ि, संभु चरन सिर नाइ ।
सचिव चलायउ तुरत रथु, इत उत खोज दुराइ ॥

**दृश्य परिवर्तन**

**(मंत्री सुमन्त का राम-लक्ष्मण-सीता को रथ पर बिठा कर ले जाना। प्रजाजनों को सोते हुए छोड़ जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

जागे सकल लोग भयं भोरू । गे रघुनाथ भयउ अति सोरू ॥
रथ कर खोज कतहुं नहिं पावहिं । राम राम कहि चहुं दिसि धावहिं ॥

(सुबह जागने पर प्रजाजनों का श्री राम इधर-उधर ढूँढ़ना)

**प्रजानन :** (निराश होकर आपस में) भाइयो ! राम जी ने हमें क्लेश जानकर त्याग दिया है। राम जी के बिना जीने को धिक्कार है।

**फिल्म—चन्दा और बिजली**

काल का पहिया घूमे भैया, लाख तरह इन्सान चले।
ले के चले बारात कभी तो, कभी बिना सामान चले॥
जनक की बेटी अवध की रानी, सीता भटके बन-बन में।
राह अकेली रात अन्धेरी, मगर रतन है दामन में॥
साथ न जिसके चलता कोई, उसके साथ भगवान चले।
लेके चले.....

(रोते हुए) भाइयो !
क्या खता हुई हमसे, जो रामचन्द्र मुख मोड़ गये।
किस लिए न जाने हम सबको, सोती हालत में छोड़ गये॥
चौदह वर्षों बाद फिर, होगा यह संयोग।
इस आशा को साथ ले, चलो अयोध्या लोग॥

**(प्रजाजनों का अयोध्या वापिस लौटना)**

**पर्दा गिरना**

**।। चौपाई ।।**

एहि विधि करत प्रलाप कलापा । आए अवध भरे परितापा ॥

## सीन तेरहवाँ

**स्थान :** वन-पथ ।

**दृश्य :** श्रीराम सीता जी के साथ बैठे हुए हैं। मंत्री सुमन्त एक दुखी मुद्रा में खड़े हैं। लक्ष्मण धनुष बाण लिये हुए एक ओर खड़े हैं ।

**पर्दा उठना**

**।। चौपाई ।।**

यह सुधि गुहं निषाद जब पाई । मुदित लिए प्रिय बंधु बोलाई ॥
लिए फलमूल भेंट भरि भारा । मिलन चलेउ हियं हरषु अपारा ॥

**दूत :** (प्रवेश करके सिर नवाकर खुश होकर) सरकार ! प्रभु रामचन्द्र जी जानकी तथा छोटे भाई लक्ष्मण सहित इधर ही पधार रहे हैं ।

**निषाद राज :** (खुश होकर) श्रीराम, मेरे सखा, मेरे गुरु भाई ! अहोभाग्य ? चलो . . . . . ? ? हम स्वयं उनका स्वागत करेंगे । (अपने कुटुम्ब के साथ फल लेकर प्रवेश करके राम के पैरों में गिरकर) । हे नाथ ! आपके चरण कमलों के दर्शन कर आज मैं भाग्यवान पुरुषों की गिनती में आ गया । हे देव ! यह पृथ्वी, धन और घर सब आपका है । मैं तो परिवार सहित आपका नीच सेवक हूँ । अब कृपा करके पुर में पधारिये और इस दास का मान बढ़ाइए । जिससे सब लोग मेरे भाग्य की बड़ाई करें ।

**राम :** (मुस्कराकर) हे सखा ! तुमने जो कहा सत्य है, परन्तु . . . ?

**निषाद राज :** (विस्मय से) परन्तु क्या . . . . . ? प्रभो !

**राम :** पिता जी ने मुझको और ही आज्ञा दी है ।

बिपिन बास चौदह बरस, खाना फल और फूल ।
बस्ती के अन्दर कभी, चले न जाना भूल ॥
यह आज्ञा मात-पिता की है, बस, इसीलिए लाचार हूँ मैं ।
हे सखा ! बरस चौदह तक, उन वचनों के आधार हूँ मैं ॥

**निषाद राज :** (दुखी होकर) अच्छा प्रभो ! यदि ऐसी बात है तो बनवासी प्रभु की सेवा में मैं भी साथ रहूँगा ।

**राम :** क्या आवश्यकता है ?

**निषाद राज :** (चरणों में गिरकर) प्रभो ! हार्दिक भाव दास का है ।

**राम :** अच्छा तुम्हारी यही इच्छा है तो ..... ?

**निषाद राज :** प्रभो ! अब रात्रि हो चली है । फल-फूल खाकर विश्राम कर लीजिए ।

(निषाद राज द्वारा पत्तों की कोमल शैया बिछाकर अपने हाथ से फल थाली में भर-भरकर रख देना । सीता जी, सुमन्त जी और भाई लक्ष्मण सहित कन्द मूल खाकर श्री रामचन्द्र जी का लेट जाना । लक्ष्मण जी का उनके पैर दबाना । फिर रामचन्द्र जी को सोता जान कर कुछ दूरी पर धनुष बाण लेकर पहरा देना ।)

**॥ चौपाई ॥**

हृदयं दाहुअति बदन मलीना । कह करजोरि बचन अति दीना ॥

**(श्री रामचन्द्र जी का सोते से जागना)**

**सुमंत :** (रोते हुए चरणों में गिरकर) हे प्रभो ! महाराज ने मुझे आज्ञा दी है..... ?

ले जाना बन में तीनों को, निज रथ पर सचिव बिठा करके ।
गंगा स्नान करा लाना, उपवन की छवि दिखला करके ॥
ये दिया हुक्म नृप दशरथ ने, था सो मैंने नाथ बजाया है ।
जाऊँ तुम्हें जो छोड़ यहाँ पर, नहीं ऐसा हुक्म सुनाया है ॥

**राम :** (मंत्री को छाती से लगाकर)

मंत्री ! मंत्री ! ! बूढ़े मंत्री ! ! ! यदि हमको आप चाहते हैं ।

तो हम इस चाहत के नाते, तुमसे बस यही माँगते हैं ॥
जितनी जल्दी जा सकते हो, उतनी जल्दी जाओ तुम ।
चौदह वर्षों के लिए हे तात ! इस राघव को बिसराओ तुम ॥

**सुमंत :** हे प्रभो !
नृप ने कहा था यह मुझसे, नहीं आप अगर वापिस आवें ।
सीता ही को भेजो साथ मेरे, जो माँ बाप आपके सुख पावें ॥

**सीता :** (तिरछी होकर)
मंत्री जी ! सोने की चमक कभी, सोने से अलग नहीं होती ।
चरणों की रेखा चरणों के, धोने से अलग नहीं होती ॥

**लक्ष्मण :** हे मंत्री बोलो, जहाँ नहीं है न्याय ।
ऐसे राजा के यहाँ, कौन लौट कर जाय ॥
कहना माता कैकई से, घी के चिराग जलवायें वे ।
हम काँटे थे सो निकल गये, बेखटके राज चलायें वे ॥
यह भी कह देना क्षमा करें, हम बेटे वे महतारी हैं ।
जो कृपा उन्होंने हम पर की, हम उसके भी आभारी हैं ॥

**राम :** हे मंत्री ! दिल के अन्दर, लक्ष्मण के वचनों को मत लेना ।
सौगन्ध तुम्हें है मेरी, केवल इतना जाकर कह देना ॥
माता दें आशीर्वाद हमें, हम कुशल सहित घर आयेंगे ।
जब चौदह वर्ष पूर्ण होंगे, तब दर्शन उनका पायेंगे ॥

**सुमंत :** (राम के चरणों में गिरकर रोते हुए) भगवन ! आप साक्षात् धर्म के अवतार हैं, परन्तु यह अभागा सुमन्त महाराज को कैसे धीरज बंधायेगा ?

**॥ चौपाई ॥**

रामलखन सियपद सिरू नाई । फिरेउ बनिक जिमिमूर गंवाई ॥

**पर्दा गिरना**

# केवट संवाद

## (दशरथ प्रतिज्ञा लीला)

**सीन चौदहवाँ**

**स्थान :** गंगा जी का किनारा ।

**दृश्य :** केवट नाव लिये खड़ा है ।

**पर्दा उठना**

**(श्री राम का लक्ष्मण, निषादराज तथा जानकी के साथ प्रवेश)**

**॥ चौपाई ॥**

बरबस राम सुमंत्रु पठाए । सुरसरि तीर आपु तब आए ॥

**केवट का गाना**

क्या रखा है ध्यानम् में, रखा है ज्ञानम् में ।
धोले अपने पाप सभी इस, गंगा के स्नानम् में ॥
भेद भाव ना जाने गंगा, क्या बड़ा क्या छोटे में ।
गंगा जी में डुबकी मारो, गंगा आये लोटे में ॥
धोलो अपने पाप...
गंगा मइया इस कलयुग में, तेरी शान निराली है ।
घाट पै आया मइया तेरे, मेरी झोली खाली है ॥
धोलो अपने पाप...
दर्शन करने सुबह से मइया, घाट तेरे मैं आता हूँ ।
इच्छा पूर्ण कर दो मइया, तेरे गुण में गाता हूँ ॥
धोलो अपने पाप...

**(कीर्तन मंडल अवागढ़ के सौजन्य से)**

**॥ चौपाई ॥**

माँगी नाव न केवटु आना । कहह तुम्हार मरमु मैं जाना ॥
चरन कमल रज कहुँ सबु कहई । मानुष करनि मूरि कछु अहई ॥

**राम :** हे केवट ! नाव इधर लाओ ।

**केवट :** लाता हूँ, राजा ! (चुप हो जाना)

**राम :** हे केवट ! देर न करो ।

**केवट :** आता हूँ, राजा ! (चुप हो जाना)

**राम :** हे भाई केवट ! आखिर बात क्या है ?
केवट चतुर सुजान, नाव इत लाना रे ।

ज़ाना पल्ली पार, तुरत पहुँचाना रे॥
हम दोनों भाई-भाई, संग में एक सीता नारी।
महलों के सुख तजके, हमरे संग सिधारी॥
कहा नहीं माना रे...
जाना पल्ली पार, तुरत पहुँचाना रे।
केवट......(१)
कहा मात-पिता का कीना, हमें बनोवास दे दीना।
सब राज पाट तज दीना, तन वस्त्र गेरुआ कीना॥
फकीरी बाना रे...
जाना पल्लीपार, तुरत पहुँचाना रे॥
केवट......(२)
भैया क्यों सुस्त खड़े हो, जरा पास हमारे आओ।
उतराई तुमको देंगे, क्यों ज्यादा देर लगाओ॥
जरूरी जाना रे..
केवट......(३)
हे केवट! जो बात हो, कहो उसे जी खोल।
"आया-आया" इस तरह, करो न टालमटोल॥

॥ व्यास : छन्द ॥

पद कमल धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहों।
मोहि राम राउरि आन दशरथ सपथ सब सांची कहौं॥
वरु तीर मारहुं लखनु पै जब लगि न पाय पखारिहौं।
तब लगि न तुलसीदास नाथ कृपाल पारु उतारिहौं॥

**केवट :** (मुस्कराकर) सुनना ही चाहते हैं राजाजी तो सुनिये.....?

**(कीर्तन मण्डल अवागढ़ के सौजन्य से)**

पहले प्रभु जी! चरण धुलाओ, फिर मेरी नाव में बैठ जाओ।
ना अब प्रभु जी! देर लगाओ, फिर मेरी नाव में बैठ जाओ॥
आपकी पदरज से अहिल्या तरी।
फिर तो यह नाव मेरी काठ की बनी॥

पदरज लगेगी तो नाव उड़ जाएगी.....
नाव उड़ जाएगी तो मैं क्या खाऊँगा।
मैं क्या खाऊँगा भूखा मर जाऊँगा।
भूखा मर जाऊँगा...? तो...! तो... तो...!!
पहले प्रभु जी.....(१)

चाहे बाण से लक्ष्मण मारे भले।
फिर भी यह मेरा वचन न टले॥
मार दोगे मुझे तो मैं तर जाऊँगा.....
मैं तर जाऊँगा, मैं गुण गाऊँगा।
मैं गुण गाऊँगा, मैं स्वर्ग जाऊँगा॥
मैं स्वर्ग जाऊँगा...? तो...! तो...! तो...!!
पहले प्रभु जी.....(२)

**(चरणों में सिर नवाकर)**

प्रभो ! मुझे डर लग रहा है... ? पत्थर की शिला आपका पैर लगते ही एक सुन्दर नारी बन गई... कहीं...?

**राम :** हाँ.... हाँ..... !! कहो.....? रुक क्यों गये.....?

**केवट :** (सकुचाते हुए) प्रभो...... !

चरणों की रज का यह प्रभाव, जब पत्थर और शिला पर है।
तो मेरी लकड़ी की नाव नाथ, बस, छूते ही छूमन्तर है॥

**राम :** हे भाई केवट ! पहले अपना संशय मिटा लो।

**केवट :** हे प्रभु ! ठीक है.....?

अपना, मेरा दोनों ही का, यों काम बना लें राजा जी।
चरणों की रज पर संशय है, वह रज धुलवालें राजाजी॥
सेवक की रोजी बनी रहे, बाधा न आपके काम में हो।
हो कृपा राम की केवट पर, केवट का प्रेम राम में हो॥

**॥ चौपाई ॥**

कृपा सिंधु बोले मुस्काई। सोइ करु जेहिं तव नाव न जाई॥
बेगि आनु जल पाय पखारु। होत बिलंबु तारहि पारु॥

**राम :** हे केवट ! तुम्हारा जाय यदि, संशय इसी प्रकार ।
तो हम भी तैयार हैं, लो यह चरण पखार ॥

**केवट :** (गदगद होकर चरणों में गिरकर) ठहरिये प्रभु.....?

**(केवट का अपनी घरवाली तथा बच्चों को पुकारते हुए कठौती लेने जाना)**

**लक्ष्मण :** (आगे आकर राम से) हे भैया ! मेरी एक शंका है। केवट आपके चरण पखारने के लिए बार-२ विनती क्यों कह रहा है?

**राम :** (मुस्कराकर) लक्ष्मण ! एक समय की बात है कि जब मैं क्षीर सागर में वास किया करता था उस समय यह केवट भी कछुआ के रूप में सागर में रहता था और मेरे चरण बार-बार छूने की कोशिश करता था। जब यह पैरों की ओर आता था तब सीता रूप लक्ष्मी इसको अपने हाथों से अलग हटा देती थीं और जब यह सिर की तरफ आता था तब तुम शेषनाग के रूप में अपना फन मारकर इसको अलग हटा देते थे। अब उसी कछुवा रूपी केवट को अवसर मिलता है तथा हमें भी इसके आग्रह को सहर्ष स्वीकार करना पड़ रहा है। क्योंकि हमें गंगा पार उतरना है?

**केवट :** (परिवार सहित वापिस आकर राम के चरणों में कटौती रखकर) प्रभु ! अपना पैर आगे बढ़ाइए।

**(राम का पैर आगे बढ़ाना। केवट का उसे धोना)**

**राम :** हे केवट ! शीघ्रता करो।

**केवट :** हे प्रभो !
अधिकार इस समय मेरा है, मैं उसे न खोऊँगा राजा।
अब यह मुझ पर ही निर्भर है, कब तक पग धोऊँगा राजा ॥
सम्पूर्ण धूल जब धो दूँगा, मन का सन्देह मिटा लूँगा।
तब स्वयं छोड़ दूँगा इनको, प्रभु को भी पार लगा दूँगा ॥

**राम :** हे भाई केवट ! तुम समझते क्यों नहीं ?
हे केवट ! समझो जरा, समय हो रहा नष्ट ।
एक पाँव पर हम खड़े, इसका भी है कष्ट ॥

**केवट :** हे नाथ ! कष्ट का भी उपाय, राजाधिराज सेवक पर है ।
स्वीकार करें मेरी विनती, तो कष्ट न फिर रत्ती भर है ॥
जो हाथ आपकी जंघाओं तक, वह हाथ उठाओ नाथ अपना ।
रखो मुझ सेवक के सिर पर, राजा जी वही हाथ अपना ॥

**राम :** (मुस्कराकर केवट के सिर पर हाथ रखकर) अच्छा भाई ! अब जल्दी करो ।

**(केवट का राम के चरण धोना फिर नाव पर चढ़ाकर तीनों को गंगा पार उतारना)**

**॥ दोहा ॥**

पद पखारि जलु पान करि, आपु सहित परिवार ।
पितर पारु करि प्रभुहि पुनि, मुदित गयउ लेइ पार ॥

**॥ चौपाई ॥**

उतरि ठाढ़ भए सुरसरि रेता । सीय रामु गुह लखन समेता ॥
केवट उतरि दंडवत कीन्हा । प्रभुहि सकुच एहिं कुछ दीन्हा ॥
पिय हिय की सिय जाननिहारी । मनि मुदरी मन मुदित उतारी ॥
कहेउ कृपाल लेहि उतराई । केवट चरन गहे अकुलाई ॥

**राम :** (सीता की मुदरी देते हुए) लो भाई ! अपनी मजदूरी लो ।

**केवट :** (राम के चरणों में गिरकर) नहीं ..... प्रभो !
मजदूरी कहीं मजदूरों को, मजदूरी देते हैं प्रभो ।
मल्लाह कहीं मल्लाहों से, मल्लाही लेते हैं प्रभो ॥
अपने को ऋणी समझते हो, तो ऋण तुम वहीं चुका देना ।
मैंने तुमको गंगापार किया, तुम मुझको भवपार लगा देना ॥
तुम हुए नृपति से बनवासी, यह समय कुछ न लेने का है ।
इस अवसर पर देना लेना, प्रभु ! कहो कब जँचता है ॥
जब चौदह बरस पूर्ण होंगे, प्रभु लौट कुशल से आयेंगे ।

उस समय नाथ मैं ले लूँगा, जो कुछ मुझको दे जायेंगे ॥

**राम :** अच्छा भाई ! वापसी में हम तुम्हारी भावनाओं की पूर्ति करेंगे।

**केवट :** (चरणों में गिरकर) अच्छा प्रभो ! दास का प्रणाम स्वीकार कीजिये।

**॥ चौपाई ॥**

देखत बन सर सैल सुहाए । वाल्मिकी आश्रम प्रभु आए ॥
मुनि कहुं राम दंडवत कीन्हा । आसिरबादु विप्रवर दीन्हा ॥

**पर्दा गिरना**

## सीन पन्द्रहवाँ

**स्थान :** जंगल।

**दृश्य :** आश्रम में बाल्मिकि ऋषि बैठे हुए हैं।

**पर्दा उठना**

**राम :** (लक्ष्मण निषादराज और सीता के साथ प्रवेश करके बाल्मिकि के चरणों में सिर नवाकर) ऋृषिराज के चरणों में राम का प्रणाम स्वीकार हो।

**बाल्मिकि :** कल्याण हो।

**राम :** हे मुनिराज ! आपके चरणों का दर्शन करने से आज हमारे सब पुण्य सफल हो गये। अब आप कृपा करके हमें वह स्थान बतलाइये जहाँ मैं लक्ष्मण व सीता सहित जाऊँ और वहाँ सुन्दर पत्तों और घास की कुटी बनाकर कुछ समय निवास करूँ।

**बाल्मिकि :** (मुस्कराकर) धन्य हो प्रभो ! आप वेदों की मर्यादा के रक्षक जगदीश्वर हैं। सब कुछ जानते हुए भी अनजान बन रहे हैं।
अवतार लिया है दयासिन्धु, इस भूमि का भार उतारन को।
नर तन धारण कीना है प्रभु, निश्चरों के दल संहारन को॥

**॥ दोहा ॥**

जो मुझसे ही पूँछते, तो यह मेरी आस ।

चित्रकूट गिरि पर करो, प्रेम पूर्वक वास ॥

**राम :** (चरणों में सिर नवाकर) जैसी आज्ञा ऋषिराज ! (श्री राम का सबसे साथ चित्रकूट पर आ जाना) हे भाई निषादराज ! अब तुम वापिस लौट जाओ और किसी प्रकार की चिन्ता मत करो ।

**निषादराज :** (चरणों में सिर नवाकर) जो आज्ञा प्रभो ! (निषादराज का जाना)

**पटाक्षेप**

**॥ चौपाई ॥**

चित्रकूट रघुनन्दन आए । समाचार सुनि सुनि मुनि आए ॥
आवत देखि मुदित मुनि वृन्दा । कीन्ह दंडवत रघुकुल चन्दा ॥

**॥ चौपाई ॥**

एहि विधि सिय समेत दोउ भाई, बसहिं विपिन सुरमुनि सुखदाई ।

**॥ दशरथ प्रतिज्ञा लीला समाप्त ॥**

◆ ◆ ◆

## सातवाँ दिन (पाँचवा भाग)

# दशरथ मरण लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. दशरथ मरण

(क) मंत्री सुमन्त का लौटना ।

(ख) दशरथ मरण ।

(ग) भरत मिलाप ।

# दशरथ मरण लीला

## (संक्षिप्त कथा)

अयोध्यापति राजा दशरथ राम के प्रति आघात सहन न कर सके। उनकी पथराई सी दृष्टि इस घातक वातावरण में श्री राम-जानकी और लक्ष्मण को ढूँढती-२ थक गई। दशरथ वियोग में कराह रहे थे। सारी रात बड़बड़ाते रहे। कौशल्या उन्हें दिलासा दिये जा रही थी।दशरथ की दृष्टि में वही दृश्य दृष्टिगोचर हो आया जब उनके हाथों में श्रवण की हत्या हुई थी। उन्हें लग रहा था मानों श्रवण सम्मुख पड़ा तड़प रहा है। वे अटकी-अटकी सी उसकी सांसें ! वे उड़ते हुए श्रवण के प्राण ! ! उन्हें लगा कि शान्तनु मुझे फिर शाप दे रहा है। वही शाप जिसमें दशरथ को भी उनकी तरह ही पुत्र वियोग में तड़प-तडप कर मर जाने की याचना थी।और आज ? सम्भवत: शान्तनु का वही शाप पूर्ण हो रहा था। दशरथ टक्करें मारते, सिर धुनते श्री राम-सीता चिल्लाते रहे। मृत्यु की इन अन्तिम घड़ियों से खेलते-खेलते दशरथ नरेश ने प्राण त्याग दिये। भाई भरत ने अपने महान त्याग का परिचय दिया, राज ताज पर ठोकर मारकर भैया राम को मनाने चल दिये।परन्तु राम का धर्म आड़े आया और भरत को श्री राम की जगह उनकी चरण पादुका लेकर ही हृदय में धैर्य धारण करना पड़ा और उन्हीं के सहारे बनवासी की तरह राज्य करते रहे जब तक कि भैया राम वापिस न आ गये।

# पात्र परिचय

## (दशरथ मरण लीला)

### पुरुष पात्र

| | |
|---|---|
| १. निषादराज | ९. भरत |
| २. निषादराज का सेवक | १०. शत्रुघ्न |
| ३. मंत्री सुमन्त | ११. अयोध्या वासी |
| ४. दशरथ (दो रूप में) | १२. भील |
| ५. श्रवण | १३. राम |
| ६. श्रवण का अन्धा पिता | १४. लक्ष्मण |
| ७. गुरु वशिष्ठ | १५. सभासद |
| ८. दूत अवधपुर | |

### स्त्री पात्र

| | |
|---|---|
| १. कौशल्या | ५. सुमित्रा |
| २. कैकई | ६. बाँदी |
| ३. श्रवण की अन्धी माँ | ७. मंथरा |
| ४. सीता | |

# मंत्री सुमन्त का लौटना

## (दशरथ मरण लीला)

### सीन पहला

**स्थान :** तमसा नदी का किनारा ।

**दृश्य :** सुमन्त मूर्छित पड़े हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

फिरेउ निषादु प्रभुहि पहुँचाई । सचिव सहित रथ देखेसि आई ॥
मंत्री बिकल बिलोकि निषादू । कहिन जाइ जस भयउ विषादू ॥

राम राम सिय लखन पुकारी । परेउ धरनितल व्याकुल भारी ॥
धरि धीरजु तब कहइ निषादू । अब सुमंत परिहरहु विषादू ॥

**निषादराज :** (सेवक के साथ प्रवेश करके सुमन्त जी को मूर्छित अवस्था में देखकर) अहा ..... ! मंत्री जी को अभी तक होश नहीं आया है। जब वे स्वयं ही इस प्रकार दुखी होंगे, तब महाराज दशरथ को कैसे धीरज बंधेगा? माताओं को धीरज कौन बंधायेगा? राम के वियोग ने इनको कितना व्याकुल बनाया है? (पुकारते हुए) सुमन्त जी ! सावधान होकर बुद्धि से काम लीजिये। जब आप ही इस प्रकार दुखी होंगे तब महाराज दशरथ को कैसे संतोष आयेगा? माताओं को धीरज कौन बंधायेगा?

**सुमन्त :** (करवट लेकर) धीरज ! जब धीरज का सहारा न रहा तो किस आशा पर धीरज धरूँ? हे भाई ! अब तुम्हीं राम को समझाकर वापिस भेज दो ।

**निषादराज :** महाराज ! प्रभु रामचन्द्र जी तो आपको मूर्छित अवस्था में ही छोड़कर चले गये हैं ।

**सुमन्त :** (विस्मय से) चले गये हैं। अब मैं अयोध्या को लौट कर कैसे जाऊँगा? मैं भी अब किसी वृक्ष से अपना सिर फोड़कर जान दे दूँगा ।

**निषादराज :** महाराज ! अयोध्या में आपकी प्रतीक्षा हो रही होगी। सारी नगरी विरह में जान खो रही होगी, इसलिए अब अधिक देर न लगाइये। वापिस लौटकर सबको समझाइये। (सेवक से) देखो? तुम सुमन्त जी के साथ चले जाओ। और इन्हें सकुशल अयोध्या पहुंचाओ ।

**सेवक :** (चरणों में झुक कर) जैसी आज्ञा महाराज !

**(सेवक का सुमन्त का सहारा देकर उठाना)**

**॥ चौपाई ॥**

सोच सुमंत विकल दुख दीना । धिग जीवन रघुबीर बिहीना ॥

## सुमन्त का विलाप

राम लौटे नहीं, वन को सिधारे ।
बहुत कह करके, हम उनसे हारे ॥
क्या करूँ अब, कहाँ को मैं जाऊँ ।
राजा को कैसे, जा मुँह दिखाऊँ ॥
पूछेंगे लाल, मेरे कहाँ रे ।
बहुत.....(१)
पैर पड़ते नहीं, मेरे आगे ।
प्राण नहीं जाते, ये अभागे ॥
खो के सब कुछ, अकेला चला रे ।
बहुत.....(२)
घोड़े आगे नहीं पग बढ़ाते ।
हिनहिनाते, पछाड़ें ये खाते ॥
राम के दुख में, व्याकुल हैं सारे ॥
बहुत.....(३)
जब अयोध्या में, पहुचूँगा जाके ।
सारे पुरवासी, पूछेंगे आके ॥
हैं कहाँ राम, प्राणों के प्यारे ।
बहुत.....(४)
रात के वक्त, जाऊँगा बन से ।
ना मिलूँ महुँ, छिपाऊँगा सबसे ॥
अब तो दिल में, बसी ये हमारे ।
बहुत.....(५)

**(नन्ने खाँ अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**पर्दा गिरना**

## सीन दूसरा

**स्थान :** अवधपुर की सीमा ।

**दृश्य :** सुमन्त जी रथ हाँक रहे हैं । सेवक रथ पर खड़ा है ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

राम रहित रथ देखिहि जोई । सकुचिहि मोहि बिलोकत सोई ॥
एहि विधि करत पंथ पछितावा । तमसा तीर तुरत रथु आवा ॥

**सुमन्त :** (माथे पर हाथ रखकर रोते हुए) अन्धेर.... ! अन्धेर..... ! महाअन्धेर.... ! ! ! भाग्य का बड़ा भयानक फेर। आशा टूट गई। अभागे सुमन्त ! राम बन को जा रहे हैं और तेरा रथ अयोध्या की ओर दौड़ लगा रहा है। क्या कहेगा, जब महाराज पूछेंगे, तो तू क्या कहेगा ?
हाय पापी किस तरह, महाराज को समझाएगा।
उस दुखी मन को भला, सन्तोष कैसे आएगा॥

**सेवक :** महाराज ! मन को शान्ति दीजिए और रथ को आगे बढ़ाइये।

**सुमन्त :** बस, भाई ! अब तमसा नदी का किनारा आ गया है। अब तुम लौट जाओ।

**सेवक :** (सिर नवाकर) महासज ! आपको अयोध्या तक पहुँचाकर ही वापिस जाऊँगा।

**सुमन्त :** नहीं, भाई ! अब अयोध्या दूर ही कितनी है ? तुम वापिस लौट जाओ।

**सेवक :** (चरणों में सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

**(सेवक का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

विदा किए करि विनयनिषादा । फिर पायें पाईबिकल बिषादा ॥
अवध प्रवेसु कीन्ह अंधियारे । पैठि भवन रथु राखि दुआरे ॥

## दशरथ मरण

## (दशरथ मरण लीला)

## सीन तीसरा

**स्थान :** कौशल्या भवन।

**दृश्य :** दशरथ अचेतावस्था में लेटे हुए हैं। तीनों रानियाँ तथा गुरु वशिष्ठ पास बैठे हुए हैं। बांदी दरवाजे पर खड़ी है।

**पर्दा उठना**

**दशरथ :** (करवट बदलकर) हा..... राम ! कौशल्ये ! राम के साथ सुमन्त जी गये थे क्या वह वापिस अभी नहीं आये ?

**कौशल्या :** महाराज ! आप धीरज रखिये वह आते ही होंगे।

**दशरथ :** रानी ! क्या राम वापिस आ जायेगा ?

**कौशल्या :** हरगिज नहीं।

**दशरथ :** प्रिये ! यह न कह। यदि तू मुझे जीवित देखना चाहती है तो कह.....? वह जरूर आयेगा। हे रानी.....!

तेरे दिल में मैंने ही, कपट का तीर भोंका है।
तेरे लाल को मैंने ही, प्यारी ! वन को भेजा है॥

**कौशल्या :** (रोते हुए) प्राणनाथ ! आपं आराम कीजिए।

है मुझे आसान, सह लेनी जुदाई राम की।
पर तुम्हारे बिन, कोई सूरत नहीं आराम की॥

**दशरथ :** आराम.....! उस पापी दशरथ को आराम.....!! जिसने निर्दोष राम को मर्यादा और धर्म पर कुर्बान किया है। सत्य की रक्षा के लिये प्राणों से प्यारे पुत्र को वन जाने दिया है। (रुककर) किन्तु कौशल्ये.....?

एक दिन भी सह नहीं, सकता जुदाई राम की।
तड़प-तड़प कर जान दूंगा, देकर दुहाई राम की॥

**॥ दोहा ॥**

देखि सचिव जय जीव कहि, कीन्हेउ दंड प्रनामु।
सुनत उठेउ व्याकुल नृपति, कहु सुमंत कहं रामु॥

**॥ चौपाई ॥**

भूप सुमंतु लीन्ह उर लाई। बूड़त कछु अधार जनु पाई॥

**बांदी :** (प्रवेश करके) महारानी जी ! सुमन्त जी आ गये ।

**दशरथ :** (जल्दी से उठकर) क्या कहा.....? सुमन्त जी लौट आये हैं । क्या मेरे राम को लाये हैं ?

**सुमन्त :** (प्रवेश करके चरणों में गिरकर) महाराज प्रणाम ।

**दशरथ :** (सुमन्त को हृदय से लगाकर)
क्या साथ लिवाकर लाये हो, या छोड़ विपिन में आये हो ।
हे मेरे प्यारे मंत्री ! सच बतलाओ क्यों सहमाये हो ॥

**(सुमन्त का दूसरी ओर मुँह करके रोना)**

**दशरथ :** (सुमन्त को कन्धे से पकड़कर) सुमन्त जी बोलो...? चुप क्यों हो.....? ?(सुमन्त का मुंह ऊपर उठाकर) अरे....! तुम रो रहे हो......!! (सुमन्त को कन्धे से पकड़कर झकझोरते हुए) बोलो.....? सुमन्त जी बोलो....? ? मेरी हंसों की जोड़ी कहां छोड़ आये.....? ? ?

**सुमन्त :** (रोते हुए) महाराज.....! मैंने राजाज्ञा का उलंघन किया है । मुझे दण्ड दीजिए ।
क्या कहूं, कैसे -कहूं? कुछ कहा जाता नहीं ।
लेकिन बिन बताये भी, अब रहा जाता नहीं ॥
चौदह बरस तक अब अवध में, वह लौटकर न आयेंगे ।
जान दे देंगे मगर वह, वचन से न जायेंगे ॥

**दशरथ :** (दोनों कानों पर हाथ रखकर) नहीं.....! मंत्री.....!! नहीं.....!!! ऐसा मत कहो.....? मंत्री ! ऐसा मत कहो.....? ?. ये अभागा दशरथ जब नारी के हाथ के कठपुतली बन गया तब राजाज्ञा कहाँ ? मंत्री मुझे मेरे राम के पास ले चलो

**वशिष्ट :** राजन ! आपको तो गर्व होना चाहिए कि आपके पुत्र राम ने सब कुछ त्याग कर धर्म का पालन किया है ।

**दशरथ :** (वशिष्ठ की तरफ मुँह करके) गुरुदेव ! यह सब कुछ कहना सरल है परन्तु निभाना कठिन है ।

**वशिष्ठ :** कठिन समय में ही धैर्य की परीक्षा हुआ करती है राजन !

**(दशरथ गिरने लगते हैं मंत्री संभालता है)**

**सुमन्त :** महाराज ! शान्ति से चौदह वर्ष बितायें । आखिर एक दिन वह भी आयेगा जब अभागी अयोध्या को उनका दर्शन मिल जायेगा ।

**दशरथ :** (ठंड़ी साँस खींचकर) हाँ.... !ठीक है सुमन्त जी..... ! ! चौदह बरस के बाद अवश्य ही राम वापिस आयेगा । मगर अफसोस.....? दशरथ वह दिन न देख पायेगा.....? आह.....?

आख़िर वक्त मुझको, मुखड़ा दिखादो लाल का।
किस तरह जिन्दा रहूं, अरसा है चौदह साल का ॥

**सुमन्त :** महाराज धीरज रखिये ।

विधाता की गति, टाले नहीं टलती है दुनिया में ।
वही ज्ञानी हैं जो, सन्तुष्ट हैं ईश्वर की इच्छा में ॥

**दशरथ :** (रोते हुए) मंत्री जी ! अब तो अन्तिम आशा भी टूट गई । अब मैं जिन्दा नहीं रहूँगा ।

किस तरह धीरज धरूँ, और कौन सी अब आस है ।
मैं तड़पता ही रहूँगा, जब राम न मेरे पास है ॥
हे मंत्री मुझको बतला दे, प्राणों के प्यारे राम कहाँ ।
सीता-सीता, लक्ष्मण-लक्ष्मण, ये मेरे सुखधाम कहाँ ॥
ले चलो राम के पास मुझे, मंत्री ! क्यों करते हो देरी ।
युग के समान क्षण बीत रहा, कहीं निकल न जाय जान मेरी ॥

**(दशरथ गिरने लगते हैं। कौशल्या संभालती है।)**

**कौशल्या :** प्राणनाथ ! कहाँ जाऊँ.....? किधर जाऊँ.....?

न जाने कौन से बन में, गये राम-लक्ष्मण-जानकी ।
कौन जाने क्या अवस्था, होगी मेरे प्यारे राम की ॥

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

तापस अंध साप सुधि आई । कौशल्यहिं सब कथा सुनाई ॥

**दशरथ :** (उठते हुए टटोलकर) ओह प्यारी कौशल्ये ! तुम कहाँ हो ? क्या .....? ? जाती रही .....? ? ? मेरे नेत्रों की ज्योति जाती रही ।

**कौशल्या :** क्या कहते हो नाथ ?

**दशरथ :** (सामने देखकर सुमन्त को पकड़कर) हैं ! हैं ! ! यह कान श्रवण ..... ! ! ! बूढ़े अन्धों का सहारा श्रवण ..... ! ! ! ! (दोनों कानों पर हाथ रखकर चीख कर) बचाओ .....? मुझे बचाचो .....?

**सुमन्त :** (थामते हुए) महाराज ! यह तो मैं सुमन्त हूँ ।

**दशरथ :** नहीं ....? नहीं ....? देखो .....? उधर देखो .....? ?

**(पीछे से पर्दा गिरना)**

**स्थान :** सरयू नदी का किनारा ।

**दृश्य :** श्रवण का नदी में लौटा डुबाना ।

**दशरथ :** (अचरज से) हैं .....? ये आवाज कहाँ से आई .....? ? मालूम पड़ता है कि कोई हिंसक जानवर नदी पर पानी पीने आया है । (दशरथ का बाण मारना) (पटाखे की आवाज पर तीर लगना । श्रवण का गिर जाना ।)

**श्रवण :** आह ..... ! माता-पिता ..... ! पिता-माता ! इस अभागे श्रवण का अन्ति प्रणाम लेना ।

हो गया कैसे समय यह, काल ग्राहक जान का ।
घाव भारी है लगा, सीने में मेरे बाण का ।

**श्रवण का विलाप**

आह ..... ! कातिल ... ! ! तेरा क्या बिगाड़ा ।
तीर सीने में, जो तूने मारा ॥
चोट ऐसी लगी तन करारी ।
आह चश्मों से बहे अश्क जारी ॥
धीर धरता नहीं दिल हमारा ।
तीर .....

पिता अन्धे माँ अन्धी बिचारी ।
कैसे हो उनके दिल को करारी ॥
वृद्धावस्था का था एक सहारा ।
तीर.....
प्यास से तड़पते होंगे वे दोनों ।
इन्तजारी में बेजार वे दोनों ॥
कोई जाके कहो ये नजारा ।
तीर.....
पात्र पानी का पहुँचे भरके ।
आखिरी शाप दे पूरी करके ॥
प्राण पापी अब करे किनारा ।
तीर.....

**(श्री रामानन्द दरभंगा वालों के सौजन्य से)**

**दशरथ :** (चौंकते हुए) हैं ! कौन बोला..... ! किसने पुकारा.....?
किसके बाण मारा.....?
हो गया क्या जुल्म, धोखे में किसी का जान पर ।
चल गया क्या बाण मेरा, उफ... ! किसी इन्सान पर ॥

**श्रवण :** (कराहते हुए) आह ! माता-पिता !! पिता-माता... !!!
प्यास अब कैसे बुझाऊँ, हाय मैं लाचार हूँ ।
किस तरह सेवा करूँ, मरने को अब तैयार हूँ ॥
आ गई एक-एक पल, अब शोक और संताप की ।
मर गया मैं कौन फिर, सेवा करेगा आपकी ॥

**दशरथ :** (श्रवण को देखकर) हैं.....? कौन.....?? श्रवण कुमार..... ! अन्धे-अन्धी का प्राणाधार..... !! निर्बल और दीनों का सहारा । माँ-बाप का प्यारा । हाय..... ! अभागे दशरथ तूने किसको बाण मारा ?
क्यों बला टूटी न मुझ पर, और धनुष पर बाण पर ।
तोड़ डाला जुल्म पापी, बेकसों की जान पर ॥

ऊफ ! सितम उन बेसहारों, का सहारा यह ही था ।
हाय ! उन अन्धों की, आँखों का तारा यह ही था ॥

**श्रवण :** (स्वयं से) आह . . . . . ! माता-पिता . . . . . ! अब तुम्हारा आज्ञाकारी पुत्र समाप्त होता है । हाय ! हाय ! ! तुम कैसे धीरज धरोगे ?

आत्मा परलोक में, बेटे को देखे बिन गई ।
इक डंगारी थी बुढ़ापे की, सो वह भी छिन गई ॥

**दशरथ :** (श्रवण से लिपटकर) श्रवणकुमार . . . . . ! मुझ निर्दयी के शिकार श्रवण कुमार . . . . . ! बेटा ! आँखें खोलो । अन्तिम बार अपने प्राणघातक से बोलो । हाय . . . . . ! हाय . . . . . ! कैसा अनर्थ हो गया ।

**श्रवण :** (करवट लेकर) कौन . . . . . ? दशरथ . . . . . ? अयोध्या नरेश . . . . . ? महाराज प्रणाम !

**दशरथ :** गिर पड़ . . . ? हे आकाश मुझ पर गिर पड़ । टूट जा . . . . ? हे वज्र मेरे सिर पर टूट जा । खा जाओ ? हे संसार की बलाओ . . . . . ! मुझ पापी को खा जाओ ।

सुन रहे हैं कान मेरे, इस निर्दोष के प्रणाम को ।
हाय दशरथ कर दिया, बदनाम कुल के नाम को ॥
हाथ छोड़ा हाय दशरथ, बेखता की जान पर ।
शोक तेरी वीरता पर, शोक तेरे बाण पर ॥

**श्रवण :** अयोध्या नरेश ! इतना पश्चाताप । महाराज ! आपने तो जंगली पशु समझकर बाण मारा है फिर भाग्य के आगे किसका इजारा है ?

हे विधाता चाहता हूँ, अब दया यह आपकी ।
जन्म लूँ जिस योनि में, सेवा करूँ माँ बाप की ॥

**दशरथ :** (झकझोरते हुए) श्रवण ! श्रवण . . . ! पितु भक्त श्रवण . . . !

चुकाते जाते अपना बदला, बेटा ! अपने जीवन में ।
उठाकर बाण अपने हाथ में, मारो मेरे तन में ॥

**श्रवण :** महाराज ! ऐसा भी कभी हो सकता है ?

**दशरथ :** (अचरज से) तो क्या.....? तुम मुझे दण्ड नहीं दोगे ।

**श्रवण :** कभी नहीं ।

**दशरथ :** इस अन्यायी से इस पाप का बदला नहीं लोगे ।

**श्रवण :** कदापि नहीं ।

**दशरथ :** अच्छा......? तो इतना ही करो.....? इस अभागे दशरथ से कोई सेवा ही ले लो ।

**श्रवण :** महाराज ! यदि आपकी यही इच्छा है तो.....?
इस ओर ही वन में हे राजन !पितु-मातु प्यास से तड़पते हैं ।
जल उन्हें पिला देना जाकर, मत कहना उनसे हम मरते हैं ॥

**(दशरथ पानी लेकर जाने लगते हैं)**

**श्रवण :** (कराहते हुए) ठहरो राजन ? पहले मेरी छाती से यह बाण तो निकालते जाइए ।

**दशरथ :** (बाण निकालते हुए) हाय.....! हाय.....! पश्चाताप से हृदय जला जा रहा है । कलेजा मुँह को आ रहा है । क्या करूँ.....? कहा जाऊँ.....?
हे जमीं फट के अपनी, गोद में ले ले मुझे ।
अन्यथा दुनिया कहेगी, दशरथ धिक है तुझे ॥

**(दशरथ का बाण खींचना)**

**श्रवण :** क्षमा.....! माता-पिता.....! क्षमा.....!
हो चुका जीवन मेरा, होठों पै अन्तिम सांस है ।
अब तुम्हारे नाम की ही, मुझको केवल आस है ॥
हा......! माता.....! पिता.....मा...ता.....!

**(श्रवण का प्राण त्यागना । दशरथ कां जल लेकर जाना ।)**

**पट परिवर्तन**

**स्थान :** जंगल ।

**दृश्य :** वृक्ष के नीचे श्रवण के माता-पिता बैठे हैं ।

**पर्दा गिरना**

**अन्धे-अन्धी :** बेटा श्रवण ! तुम कहाँ हो ? तुमने इतनी देर क्यों कर दी ?
मन हुआ बेचैन अब, तोड़ो न हमारी आस को ।
ध्यान में बेटा तेरे हम, भूल बैठे प्यास को ॥

**दशरथ :** (आकर एक ओर) हा..... ! हाय..... ! क्या कहूं ? इन बेचारों को कैसे बताऊं ?
हो रहे लौलीन कितने, पुत्र के ही ध्यान में ।
क्या करूं ? दूं शान्ति कैसे ? अब इन्हें भगवान मैं ॥
(साहस करके) मैं जल लेकर आया हूं ।

**अन्धे अन्धी :** बेटा ! पानी लाने में इतनी देर क्यों हुई ? और तेरी यह आवाज..... ? बता बेटे ? क्या हो गया है तुझे ?

**दशरथ :** (रोते हुए) पहले आप जल पी लीजिये ।

**अन्धे अन्धी :** नहीं..... ? बताओ ..... ? तुम कौन हो..... ? हमारा श्रवण कहाँ है ?

**दशरथ :** (रोते हुए) वह चला गया ।

**अन्धे अन्धी :** (अचरज से) कहां..... ? वह हमको छोड़कर कहीं नहीं जा सकता ?

**दशरथ :** हे महामते ! हे महामती ! मैं श्रवण नहीं हूं दशरथ हूं ।
वह बड़भागी परमारथ था, मैं एक अभागा दशरथ हूं ॥
सहारा हाय तुम दोनों का, अब सुरपुर सिधारा है ।
तुम्हारे पुत्र को मैंने, इन्हीं हाथों से मारा है ॥

**अन्धे अन्धी :** (दहाड़ मारकर)..... ! हा श्रवण..... !

**दशरथ :** हे महामते ! अभागा दशरथ आपके सामने खड़ा है । इसे दण्ड दो । इसके शरीर के टुकड़े-टुकड़े कर दो । उफ... ? इस निर्दयी दशरथ ने शिकार के धोखे में जंगली पशु समझकर आपका सहारा हमेशा-हमेशा के लिये छीना है ।

**अन्धे अन्धी :** (रोते हुए) दशरथ ! क्या तेरे तरकस में और तीर नहीं हैं ?
जीवन का सहारा पुत्र गया, अपना न कोई संसार में है ।
हम दोनों दुखियों की नौका, अब डूब रही मझधार में है ॥

हाय पापी दशरथ ! बता . . . ? अब हम किस के सहारे जीयें . . . ?

**(हाथ में जल लेकर दशरथ पर छिड़कते हुए)**

कानों को खोल अयोध्यापति ! सुन ले विलाप हम दोनों का ।
अभिशाप लगेगा अब तुझको, कर ग्रहण शाप हम दोनों का ॥
हम दोनों के शव कर्म विहीन हुए, हो नृपति यही हाल तेरा ।
तेरी भी मिट्टी पड़ी रहे, जब आये अन्तकाल तेरा ॥

हा.. बेटा... श्रवण... हा... बे... टा... श्र... व... ण...

**(अन्धे-अन्धी का प्राण त्यागना)**

**पट परिवर्तन**

**(पहले का कोप भवन का सीन)**

**दशरथ :** अनर्थ..... ! घोर अनर्थ..... ! एक मृत्यु के साथ तीन मृत्यु..... ! कौशल्ये !

सुन करके उन दोनों का, मैंने स्वीकार शाप किया ।
टूटी छाती के शापों को, मस्तक पर अपने धार लिया ॥
झूठा भी शाप अगर हो यह, तो भी दशरथ को सच्चा हो ।
उत्पन्न शाप ही के कारण, मुझ पुत्रहीन के बच्चा हो ॥
बस ! वही शाप पूरा होता, दिखलाई आज ये देता है ॥
जाते हैं प्राण हमारे भी, यह शाप प्राण मम लेता है ॥
हा... ! राम... ! हा... ! रा... म... !

**(दशरथ का प्राण त्यागना)**

**॥ व्यासः दोहा ॥**

राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुवर बिरह, राउ गयउ सुरधाम ॥
महलों में लाश नृपति की है, बन में लक्ष्मण-रघुवर हैं ।
अन्त्येष्टि क्रिया हो किस प्रकार, दो भाई मामा के घर हैं ॥
संसार चक्र की चाल यहां, प्रत्यक्ष दिखाई पड़ती है ।
हों चार-चार बेटे जिसके, उसकी यूं लाश भिनकती है ॥

**॥ चौपाई ॥**

सोक विकल सब रोवहिं रानी । रुपु सीलु बलु तेजु बखानी ॥
एहि विधि बिलपत रैनि बिहानी । आए सकल महामुनि ग्यानी ॥
तेल नांव भरि नृप तनु राखा । दूत बोलाइ बहुरि अस भाषा ॥
धावहु बेगि भरत पहि जाहू । नृप सुधि कतहुं कहहु जनि काहू ॥

**कौशल्या :** (सिर पीटकर) हाय ..... ! प्राणनाथ ..... ! आप तो सचमुच ही परलोक चले गये ।
हाय स्वामी ! चल दिये, मुझको अकेली छोड़कर ।
तुम बिना मर जाऊंगी, दीवार से सिर फोड़कर ॥

**सुमित्रा :** हाय ..... ! प्राणनाथ ..... ! मैं लुट गई ।
चले हो छोड़ किस पर नाथ ! अब आँसू बहाने को ।
अभागी रह गये हैं हम, यहां संकट उठाने को ॥

**वशिष्ठ :** देवियो ! धैर्य धारण करो । अधिक रुदन न करो ।(रानियों से)
संसार स्वप्नवत माया है, जो जन्म यहां पर धरता है ।
वह आज मरें या कल परसों, आखिर एक दिन मरता है ॥
है नाशवान जो जन्मा है, कुछ ख्याल नहीं करना होगा ।
चाहे राजा हो या रंक, रहे, सबको, एक दिन मरना होगा ॥
हे धर्मावतार दशरथ ! तुम हमेशा मुझे नतमस्तक हो प्रणाम करते रहे, परन्तु आज वशिष्ट तुम को सिर नवाता है ।

**(सुमन्त का लौटना)**

**हे सुमन्तः** राजगुरु ! श्री राम-लक्ष्मण बन में हैं । भरत-शत्रुघ्न दूर देश ननिहाल में हैं । अब क्या किया जाये ?

**वशिष्ठ :** मंत्री जी ! दशरथ जैसे धर्मावतार राजा जिसने देवासुर संग्राम में देवताओं पर विजय पाई थी उन्हें पुत्र द्वारा अग्निदान एवं पिण्डदान से वंचित न रखा जाय। इसलिये ..... ?(मंत्री सुमन्त से)

हे मंत्री सुमन्त जी, अब ऐसा यत्न किया जाये ।
तेलों और मसालों में, कुछ दिनों मृतक रक्खा जाये ॥
कैकय प्रदेश से मंत्रीवर, बुलवाओ भरत-शत्रुघ्न को ।
उनके द्वारा हों क्रिया कर्म, वे ही दें आग मृतक तन को ॥

**सुमन्त :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा गुरुदेव ! (दूत से)
तुम भरत-शत्रुघ्न दोनों को, अब साथ लिवा करके लाना ।
गुरु वशिष्ठ ने बुलवाया है, यह बात उन्हें भी समझाना ॥
नृप के मरने की बात कहीं, यह समाचार मत बतलाना ।
है काम जरूरी कह देना, और साथ में अपने ले आना ॥

**दूत :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज ! (दूत का जाना)

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

सुनि मुनि आयसु धावन धाए । चले बेगि बर बाजि लजाए ॥

# भरत मिलाप

## (दशरथ मरण लीला)

### सीन चौथा

**स्थान :** कैकय नरेश का राज महल ।
**दृश्य :** भरत निद्रावस्था में लेटे हुए हैं ।

**पर्दा उठना**

**(स्वप्न में भरत को राम-वन-गमन का दृश्य दिखाई देता है)**

**भरत :** (नींद से चौंककर) भइया..... ?

**शत्रुघ्न :** (प्रवेश करके) भइया..... ?

**भरत :** (हड़बड़ाकर) हैं..... ? यह क्या ..... ? अवध के महलों में शोक का समागम । राज दरबार में अशान्ति का पहरा । शत्रुघ्न ! मैं हमेशा भैया राम को स्वप्न में देखा करता था परन्तु आज..... ?

**शत्रुघ्न :** (विस्मय से) आज क्या..... ?

भरत : आज स्वप्न में मैंने पिता जी को देखा है उनके सिर पर मुकुट नहीं है ।

**॥ दोहा ॥**

एहि बिधि सोचत भरत मन, धावन पहुँचे आइ ।
गुरु अनुसासन श्रवन सुनि, चले गनेसु मनाइ ॥

दूत : (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज प्रणाम !

भरत : क्या संदेश लाया है ?

दूत : महाराज ! आपको गुरुदेव ने बुलाया है ।

भरत : अच्छा.....? मैं अभी चलता हूँ । परन्तु माता-पिता-भाई सब कुशल तो हैं ।

दूत : महाराज ! आपको तुरन्त गुरुदेव ने बुलाया है ।

**(भरत-शत्रुघ्न का दूत के साथ प्रस्थान)**

**(दृश्य परिवर्तन)**

**पर्दा गिरना**

स्थान : अयोध्यापुरी ।

दृश्य : अयोध्यापुरी का सुनसान वातावरण ।

**॥ चौपाई ॥**

असगुन होंहि नगर पैठारा । रटहिं कुभाँति कुखेत करारा ॥

भरत का आवाज लगाना ? सुनो भाई !

**(अयोध्यावासियों का गुमसुम विचरते नजर आना)**

भरत : (शत्रुघ्न तथा दूत के साथ प्रवेश करके) हे भाई शत्रुघ्न ! आज ये कैसा असगुन हो रहा है ? अयोध्या सुनसान नजर आ रही है । जो भी आँख मिलाता है वही मुँह फेरकर एक तरफ हो जाता है ।

दिशायें रो रही हैं, कुल नगर में शोक छाया है ।
विधाता ! आज क्या अशगुन, इन आँखों को दिखाया है ॥
किसी के शोक में देखो, सकल घरवार रोते हैं ।
कहीं बच्चे बिलखते हैं, कही परिवार रोते हैं ॥

हुआ है शोक का समागम, नगरी की हवाओं में।
निराशा छा रही है कुल, अयोध्या की दिशाओं में॥

**(पर्दे के पीछे आवाज आना)**

आया है.....? आया है.....? अयोध्या को शमशान बनाने वाली का बेटा आया है।

**भरत :** (विस्मय से दुखी होकर) शत्रुघ्न ! ये मैं क्या सुन रहा हूँ? नहीं? (क्रोध से) कौन है? जिसने अयोध्या को सुनसान बनाया है। कौन है? जिसकी मौत का पैगाम आया है। कौन है? जिसने मेरी माता कैकई पर दोष लगाया है।

**(पर्दे के पीछे से वही आवाज)**

तू ! प्रण का गला दबा ले।

**भरत :** (दुखी होकर) शत्रुघ्न ! अवश्य ही अयोध्या में कोई अनर्थ हुआ है। जल्दी महलों में चलकर.....?

**(पर्दे के पीछे से फिर वही आवाज)**

हाँ.....? हाँ.....? जरूर जाओ.....? ताकि तुम्हें भी मालूम हो सके कि तुम्हारी माता ने अयोध्या में क्या गुल खिलाया है? अपने सुहाग को उजाड़ा है और तुम्हारे पिता को स्वर्गवास पहुँचाया है।

**भरत :** आह.....! पिता का स्वर्गवास..... विधाता ! यह मैं क्या सुन रहा हूँ।

**पट परिवर्तन**

**स्थान :** कैकई का कौप भवन।

**दृश्य :** रानी कैकई विधवा भेष में बैठी है। मंथरा एक तरफ खड़ी है।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

सजि आरती मुदित उठी धाई। द्वारेहिं भेंटि भवन लेइ आई॥
भरत दुखित परिवारु निहारा। मानहुँ तुहिन बनज बनु मारा॥

(भरत-शत्रुघ्न का प्रवेश । कैकई आरती की थाली लेकर मंथरा के साथ बाहर आती है ।)

**कैकई :** (भरत-शत्रुघ्न को देखकर) आओ बेटा ! तुमने तो आने में बडी देर लगाई ।

**(कैकई का आरती उतारना)**

**भरत :** (आरती की थाली में हाथ मारकर नीचे गिराते हुए) माँ.. ! तुम्हारा यह भेष ...? कहाँ गया तुम्हारा श्रृंगार ....?? कहाँ गई तुम्हारे माथे की बिंदिया .....???

**कैकई :** (सहमते हुए) बेटा ! यह संसार नश्वर है। समय के आगे किसी का जोर नहीं .....

**भरत :** आह ! पिताजी !! हम अनाथ हो गये। माँ ! पिताजी ने अन्तिम समय में मुझे बार-२ पुकारा होगा ।

**कैकई :** नहीं .....? उन्होंने राम-राम रटते हुए प्राण त्यागे हैं ।

**भरत :** तो क्या .....? भैया राम .....??

**वशिष्ठ :** (भरत के कन्धे पर हाथ रखकर) बेटा ! धैर्य से काम लो ।

**भरत :** (चरणों में गिरकर) गुरुदेव ! अयोध्या की यह दुर्दशा मुझसे नहीं देखी जाती ।

मुझे अब लोग कहते हैं, कि यह हत्यारिन का बेटा है ।
लगाई आग जिसने है, यह उस कैकई का बेटा है ॥

**वशिष्ठ :** (सिर पर हाथ फेरते हुए) बेटा ! अब रोने से कुछ नहीं होगा । महाराज के अन्तिम संस्कार की तैयारी करो ।

**भरत :** (विस्मय से) परन्तु गुरुदेव ...? भैया राम के होते मैं.. ??

**कैकई :** परन्तु अफसोस ..... ? वह यहाँ उपस्थित नहीं ।

**भरत :** (विस्मय से) क्या कहा ..... ? भैया राम यहाँ नहीं हैं माँ ! जल्दी बताओ .... ? भैया राम कहां गये .... ??

**कैकई :** (सहम कर) बेटा ! महाराज के पास मेरे दो वर बाकी थे। मैंने उचित समय जानकर उसके बदले तेरे लिए राज तिलक और राम चन्द्र के लिए चौदह वर्ष का बनवास माँग

लिया । लक्ष्मण और जानकी भी उनके साथ गये हैं ।

**भरत :** (दोनों कानों पर हाथ रखकर) नहीं..... ? ये तूने क्या कर दिया माँ..... ? ? क्या कर दिया..... ? ? ?

ऐ जमीं फटजा, ताकि तुझमें समा जाऊं में ।
इन अयोध्यावासियों को, कैसे अपना मुँह दिखाऊँ मैं ॥

ओ माँ ! ऐसे वरदान माँगते समय तेरी जबान क्यों न कट गई ?

लगी अग्नि भी ममता की, न छाती में जरा तेरी ।
यों ही चलती रही पापिन ! कपट की वार्ता तेरी ॥

**कैकई :** (सहम कर) बेटा ! मैंने सब कुछ तेरी भलाई के लिये किया है ।

**भरत :** (झुंझलाकर रोते हुए) नहीं.... माँ.... ! बिल्कुल नहीं... ?

भला मंजूर तुझको था, तो करती यह भला मेरा ।
जन्म जब था लिया मैंने, दबा देती गला मेरा ॥

**कैकई :** (झुंझलाहट में क्रोधित होकर) बेटा ! मेरे दूध की शर्म कर ।

**भरत :** (रोते हुए) माँ ! यह दूध की ही शर्म है । न मैं तेरा दूध पीता और न इस दिन के लिए जीता ।

खबर जो मुझे यह होती, तो दुनियाँ से ही चल देता ।
न पीता दूध तेरा मैं, पीता तो सब उगल देता ॥
जो पैदा होते ही मर जाता, तो यह न दुर्दशा होती ।
अच्छी थी पशुयोनि, न माता कर्कशा होती ॥

**कैकई :** (झुंझलाकर) भरत ! मेरे उपकार को न भूल । मैंने तुझे दास बनने से बचाया है ।

**भरत :** नहीं ... ! पतिघातिनी माता .... ! ! ! नहीं ..... ! ! ! हकदार का हक छीनकर, अपने सुहाग को उजाड़ने वाली हत्यारिन ..... ? तूने कुल का नाश कराया है ।

**कैकई :** (क्रोध से) भरत ! होश में आ मेरे किए कराये पर पानी न फेर ।

**भरत :** (रोते हुए व्यंग से) पानी ..... ? माँ ..... ! पानी तो उसी दम फिर गया था जब राम वन को चले गये। रघुकुल के नाम को कलंकित करने वाली माँ! तूने भरत का कलेजा चीरकर राम की सूरत निकालने की कोशिश की है, परन्तु याद रख ..... ?

कपट जो किया तूने, वर वह पूर्ण नहीं होगा।
यह गद्दी राम की है, राम ही गद्दी नशीं होगा॥

**कैकई :** (खिसियाकर) तो ..... क्या ..... ? मेरी सारी मेहनत बेकार जायेगी।

**मंथरा :** (आगे आकर) और मंथरा भी अपने परिश्रम का कुछ पुरस्कार न पायेगी।

**शत्रुघ्न :** (मंथरा को चोटी से घसीटकर लात मारते हुए) ओ दुष्टा! चाण्डालिन ..... !! तूने ही भैया राम को वन भिजवाया है। तूने ही इस कुल का नाश कराया है।

**मंथरा :** (रोते हुए) हाय ..... ! भगवन ..... ! मैं मर गई।

**॥ चौपाई ॥**

भरत दयानिधि दीन्ह छुड़ाई । कौशल्या पहिं गे दोऊ भाई ॥

**भरत :** (शत्रुघ्न से) भाई! छोड़ दो इसे ..... ? नारी जाति पर हाथ उठाना उचित नहीं है।

हुआ है आज जो कुछ, सब विधाता ने दिखाया है।
न है कुछ दोष माता का, न कुछ इसने बनाया है॥

**कैकई :** (खुश होकर समझाते हुए) बेटा भरत! तुम तो ज्ञानवान और नीतिवान हो। होनी होकर रहती है। विधाता की गति टाली नहीं जा सकती। अपने मन में शान्ति करो और प्रजा की भलाई के लिए राज्य करो।

**भरत :** (रोते हुए व्यंग से) राज्य करूँ ..... ? राम को वनों में भेजकर राज्य करूँ ..... ?? लक्ष्मण और जानकी को संकट में फंसाकर राज्य करूं ..... ??? यह तू कौन से

मन से कह रही है ? माँ ! यदि तू माता कौशल्या के दिल से पूछती । यदि तुझे माता सुमित्रा के कलेजे की तड़प मालूम होती, तो तुझे पता चल जाता कि सब दिल तेरे जैसे नहीं । माँ ! तूने अपनी ही सन्तान को धोखा दिया । तूने अपने ही सुहाग पर लात मारी । याद रख ..... ? जब तूने अपना कपट व्यवहार नहीं छोड़ा है तो भरत भी अपनी राम-भक्ति को कदापि नहीं छोड़ेगा ।

हो गया होना लिखा था, जो हमारे भाग्य में ।
राम का सेवक चला, अब राम के अनुराग में ॥

**(भरत का शत्रुघ्न के साथ जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन छठवाँ

**स्थान :** कौशल्या भवन ।
**दृश्य :** कौशल्या शोक में बैठी हुई है ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

भरतहि देखि मातु उठ धाई । मूर्छित अवनि परी क्षईं आई ॥
देखत भरतु बिकल भए भारी । परे चरन तन दसा बिसारी ॥

**कौशल्या का विलाप**

**(श्री हरि शंकर शर्मा अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

सीता-लक्ष्मण-राम, बनों के वासी हो गये ।
छोड़ अवध सा धाम, सुबन सन्यासी हो गये ॥
राम-लखन मेरी आँखों के तारे, बन में भटकते होंगे बिचारे ।
कैसे भुलाऊँ उनकी यादें, थे प्राणों से प्यारे ॥
कोमल अंग मुलायम, सुवन संन्यासी हो गये ।
सीता-लक्ष्मण-राम.....(१)
राम बिना अब प्राण हमारे, भटक रहे हैं ।

राज-पाट युवराज बिना सब, दिल में खटक रहे हैं ॥
बिगड़े काम तमाम, सुवन संन्यासी हो गये ॥
सीता-लक्ष्मण-राम.....(२)

राजा जनक की राजदुलारी, क्या कहती होगी मन में बिचारी ॥
राजमहल की रहने वाली, कैसी विपता डारी ।
गये थे नंगे पाँव, सुवन संन्यासी हो गये ॥
सीता-लक्ष्मण-राम.....(३)

**कौशल्या :** (रोते हुए)
तेरे बिन रो-रो के, अन्धी हो रही हूँ शोक में ।
पाऊँगी न मरकर भी, चैन में परलोक में ।
अपनी सूरत मेरे बेटा, एक बार तो दिखा देता ।
हे राम ! बिलखती माता को, मुखड़ा तो दिखा देता ॥
राम ..... ! बे... टा... रा... म... !

**(कौशल्या का मूर्छित होकर गिर जाना)**

**भरत :** (प्रवेश कर कौशल्या को उठाते हुए) माँ ! मुझे पहचानो ? मैं उसी हत्यारिन का बेटा हूँ जिसने तुम पर गमों का पहाड़ तोड़ा है ।

**कौशल्या :** (भरत को छाती से लगाकर) बेटा भरत !
गये हैं राम बन को, हाय ! मेरा भाग्य है हेटा ।
लगा लूँ तुझको छाती से, भरत ! तू ही मेरा बेटा ॥

**भरत :** (पश्चाताप के आँसू बहाते हुए) माता जी !
दिखाती हो मुझे किस वास्ते, ये भाव ममता के ।
हूँ बेटा आपका पर, योग्य हूँ माता जी ! घृणा के ॥

**कौशल्या :** ऐसी बातें क्यों करते हो ? भरत !

**भरत :** (चरण पकड़कर) माँ ! मैं कितना नीच हूँ ? मेरे ही कारण भैया राम को बन जाना पड़ा । पिताजी का स्वर्गवास हुआ और आपने यह सन्ताप भोगा । (माथे पर हाथ मारकर रोते हुए) हाय ..... ! कैकई ..... !! तेरी कोख से जन्म

लेते ही मेरा क़ाल क्यों न आ गया ?

सहन करने नहीं पड़ते, इस अपमान के बदले ।
यदि तू माँग लेती मौत ही, वरदान के बदले ॥

**कौशल्या :** (भरत के आँसू पौंछते हुए) बेटा । माता को क्यों दोष देते हो ? यह सब हमारे कर्मों का फल है ।

तेरा क्या किसी का भी नहीं, हरगिज गिला मुझको ।
लिखा था जो तकदीर में, मिला है आज वह मुझको ॥

**भरत :** माँ । क्या तुम भी मुझ पर सन्देह करती हो ?

मुझे सब पाप लग जाए, मुझे दुष्कर्म प्यारा हो ।
यदि इस काम में माता, तनिक मेरा इशारा हो ॥
अगर हो खोट दिल में, तो मेरा नाश हो जाए ।
सड़कर भस्म इसी जगह पर, मेरी लाश हो जाए ॥

**कौशल्या :** (विस्मय से) यह तुम क्या कह रहे हो ? बेटे । मैं जानती हूँ कि—

भरत निज राम भक्ति को, कभी भी खो नहीं सकता ।
मुझे सन्देह सपने में भी, तुम पर हो नहीं सकता ॥

**फिल्म—काजल**

बेटा ..... ?
तेरा मन दर्पण कहलाये ।
भले बुरे सारे कर्मों को, देखे और दिखाये ॥
तेरा मन .....
मन ही देवता मन ही ईश्वर, मन से बड़ा न कोए ।
मन उजियारा जब-२ फैले, जग उजियारा होय ॥
इस उजले दर्पण में बेटा, धूल न जमने पाये ।
तेरा मन .....
सुख की कलियाँ दुख के कांटे, मन सबका आधार ।
मन से कोई बात छिपे ना, मन के नैन हजार ॥
जग से कोई भाग ले चाहे, मन से भाग न पाये ॥

तेरा मन .....

तन की दौलत ढलती छाया, मन का धन अनमोल।
तन के कारण मन के धन को, मत माटी में रोल॥
मन की कदर भुनाने वाला, हीरा जन्म गँवाये।
तेरा मन .....

॥ चौपाई ॥

वामदेव वशिष्ठ तब आए । सचिव महाजन सकल बोलाए ॥
मुनि बहुभांति भरत उपदेशे । कहि परमरीथ वचन सुदेशे ॥

**वशिष्ठ :** (प्रवेश करके) बेटा भरत ! शोक छोड़ो । मन को शान्ति दो और सबसे पहले महाराज के मृतक शरीर का दाह संस्कार करो ।

**भरत :** जैसी आज्ञा गुरुदेव । चलिये ..... ? मैं अभी चलता हूँ । (भरत का गुरु वशिष्ठ के साथ जाना । दशरथ की अर्थी को कन्धा लगाकर बोलना ..... ? राम नाम सत्य है, सत्य बोलो मुक्ति है ॥ शमशान पर जाकर मृतक के शरीर में आग लगाना)

॥ चौपाई ॥

एहिविधि दाहक्रिया सबकीन्ही, विधिवत न्हाइ तिलांजलि दीन्हीं ।

## सीन सातवाँ

**स्थान :** अयोध्या की राजसभा ।

**दृश्य :** भरत, शत्रुघ्न, गुरु वशिष्ठ, मंत्री सुमन्त तथा सभासदों के साथ बैठे हैं ।

**पर्दा उठना**

॥ चौपाई ॥

बैठे राजसंभा जब जाई । पठए बोलि भरत दोउ भाई ॥
भरतु वशिष्ठ निकट बैठारे । नीति धरममय बचन उचारे ॥

**वशिष्ठ :** बेटा भरत । राज्य के कार्य में बाधा पड़ रही है । दिनों दिन

शासन की व्यवस्था बिगड़ती जा रही है। बेटा। अब मन को समझाओ और उत्तम रीति से राज्य कार्य चलाओ।

**भरत :** (चरणों में गिरकर) गुरुदेव। आप कहते तो ठीक हैं परन्तु ?

मैं नहीं चाहता बड़ा बनूँ, रहने दो छोटा ही मुझको।
शासन का अनुशासन मत दो, करने दो सेवा ही मुझको ॥
स्वामी उसका बनना अच्छा, जो स्वामीपद के समुचित है।
सेवक का स्वामी बनना तो, अनुचित ही नहीं कलंकित है ॥
बिछड़ कर प्राण से, इस देह का जीवन कहाँ होगा।
करूँगा राज मैं अपना, राम का दर्शन जहाँ होगा ॥

**वशिष्ठ :** बेटा भरत। यह तो ठीक है परन्तु ..... ?

माता की तुमको आज्ञा है, तुम शासन करो अयोध्या का।
यदि उसे त्याग दोगे बेटा, उल्लंघन होगा आज्ञा का ॥
माँ की आज्ञा का उल्लंघन, यदि पाप बड़ा कहलाता है।
तो भरत लाल ये ध्यान रहे, वह पाप तुम्हें लग जाता है ॥

दूसरे ..... ?

उमड़ता ही रहेगा, शोक का प्रवाह जनता का।
न होगा राज शासन के, बिना निर्वाह जनता का ॥

**भरत :** (चरणों में गिरकर) एक तो मैं कैकई का पुत्र, दूसरे राम के बनवास का कारण और फिर पिता की मृत्यु का कलंकी ? प्रजा क्या मेरे राज्य में सुख पायेगी ? गुरुदेव।

मेरे कारण ही सब लोगों ने, जब संताप यह भोगा।
तो जनता को कहाँ आनन्द, मेरे राज्य में होगा ॥

**वशिष्ठ :** किन्तु बेटा भरत। राम तो अब बनों से वापिस आने वाले नहीं।

**भरत :** (चरणों में गिरकर रोते हुए) नहीं गुरुदेव। ऐसा मत कहिये ? मैं भैया राम के हाथ जोडूँगा। पैर पकडूँगा। विनती करूँगा। क्या उन्हें फिर भी दया न आयेगी ?

वह दयालु हैं, दुखी देख न पायेंगे मुझे।

मुझे विश्वास है, छाती से लगायेंगे मुझे ॥

**वशिष्ठ :** (ठंडी सांस लेकर) बेटा भरत। राम परम दयालु होते हुए भी अपने वचनों पर अटल रहने वाले हैं।

यदि ऐसे न होते राम, तो क्यों यह दशा होती।
न दशरथ मरण होता, न जनता को व्यथा होती ॥
मुझे विश्वास है उनका, नहीं झूठा कथन होगा।
कहा इकवार जो मुख से, वही अन्तिम वचन होगा ॥

**भरत :** (चरणों में गिरकर) आप सत्य कहते हैं गुरुदेव परन्तु... ?

नहीं मेरे लिए जग में, ठिकाना दूसरा कोई।
जो छोड़ूँ राम चरणों को, नहीं है आसरा कोई ॥

**वशिष्ठ :** तो बेटा..... ? तुम राम के पास जाए बिना नहीं मानोगे।

**भरत :** नहीं गुरुदेव। जब तक प्राण हैं तब तक नही।

**वशिष्ठ :** अच्छा तो ..... ? चलने की तैयारी करो। आज हमें मालूम हो गया कि तुम राम के परम भक्त हो।

**सम्मिलित स्वर—(बोलो सियापति रामचन्द्र की जय)**

**॥ दोहा ॥**

सोंपि नगर सुचि सेवकनि, सादर सकल चलाइ ।
सुमिरि राम सिय चरन तब, भले भरत दोउ भाइ ।

**पर्दा गिरना**

**(भरत का संन्यासी भेष में शत्रुघ्न, वशिष्ठ, सुमन्त तथा तीनों माताओं के साथ जाना)**

## सीन आठवाँ

**स्थान :** जंगल।

**दृश्य :** निषादराज भीलों के साथ बैठे हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

समाचार सब सुने निषादा । हृदयं बिचार करइ सविषादा ।

कारन कवन भरत बन जाहीं । है कुछ कपट भाउ मन माहीं ॥

**दूत :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो। एक आवश्यक समाचार लाया हूँ। अन्नदाता।

**निषादराज :** कहो ..... ? क्या समाचार लाये हो ..... ? ?

**दूत :** महाराज ! अयोध्या के नये राजा भरत अपनी भारी सेना लेकर इसी ओर आ रहे हैं।

**निषादराज :** (भीलों से) हे मेरे शूरवीरों ! रामचन्द्र जी की सहायता को आगे आओ। भरत की सेना से लोहा लो।

**भील :** महाराज ! भरत जी की विशाल सेना से हम मुट्ठी भर भील क्या लोहा ले सकेंगे ?

**निषादराज :** हम अपने प्राण तो दे सकेंगे। प्रभु राम जी की सेवा में यदि ऐसा हुआ तो हम सबको मुक्ति मिलेगी और यदि बच गये तो प्रभु राम की सेवा सकेंगे। वीरो ! आज समय आ गया है कि प्रभु राम जी की सेवा में गंगा मैया की प्रत्येक लहर अपने खून से लाल कर दो।

**भील :** (हथियार तानकर) हम सब तैयार हैं।

**सुमन्त :** भरत जी ! वह देखो ..... ? सामने निषादराज खड़े हैं।

**भरत :** (आकर) निषादराज राम कहाँ हैं ?

**(भीलों द्वारा भरत को घेर लेना)**

**निषादराज :** (कड़ककर) ठहरो ..... ? तुमने हमारे रामचन्द्र से राज्य छीना। तन के वस्त्र छीने। उनको दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर कर दिया। क्या उनको अब भी वन में चैन से नहीं रहने दोगे ? नहीं ..... ? तुम मेरे राम पर हाथ नहीं डाल सकते। उनकी तरफ आँखें उठाने वाले की आँखें फोड़ दी जायेंगी।

**भरत :** (रोते हुए) हाँ ..... ? हाँ ..... ? ? निषादराज ! जो आँखें प्रभु राम के दर्शन नहीं कर सकतीं उन्हें तीरों से फोड़ दो। जिस हृदय में प्रभु राम का नाम नहीं उसके टुकड़े-२

कर दो, निषादराज ! आगे बढ़ो ..... ?

**निषादराज :** (अचरज से) तो क्या .... ? आप प्रभु राम को .... ? ?

**भरत :** हाँ ..... ! हाँ ..... ! ! निषादराज ..... ! ! ! मैं प्रभु रामचन्द्र जी को वापिस लेने आया हूँ ।

**निषादराज :** (पैरों में गिरकर) राजकुमार ! मुझे क्षमा करो । मैंने आपको पहचानने में भूल की ।

**भरत :** निषादराज को छाती से लगाकर) निषादराज ! तुमने बड़ी भूल की ... ? (रोते हुए) इस पापी भरत का कलेजा अपने तीरों से छलनी कर देते । तुम बड़े भाग्यवान हो ... ? जो तुमने जी भर कर प्रभु राम की सेवा की ।

**निषादराज :** (रोते हुए) नहीं ..... ! भरत जी ..... ! ! हमारे ऐसे भाग्य कहाँ ? भगवान राम ने इसी पेड़ के नीचे रात बिताई । माता सीता पत्थरों का तकिया बनाकर सोईं । हमारा परोसा हुआ भोजन भी नहीं खाया । केवल कन्द मूल फल खाकर गंगा मैया का जल पीकर ही रहे और लक्ष्मण जी तमाम रात पहरा देते रहे । सुबह होते ही हमें सोता छोड़कर सभी बन की राह चले गये ।

**भरत :** (कानों पर हाथ रखकर रोते हुए) नहीं ..... ! इतनी कठोरता ..... ! ! अभागे भरत ! भैया कन्द मूल फल खायें और तू महलों में राजभोग करे । नहीं ..... ? आज से भरत भी कन्द मूल फल खाकर रहेगा जब तक भैया राम अयोध्या वापिस नहीं लौट आते । यह मेरी प्रतिज्ञा है ।

**वशिष्ठ :** धन्य हो भरत ! तुम्हारी राम भक्ति की संसार में कोई मिसाल नहीं है ।

**भरत :** निषादराज ! अब आप हमें गंगा पार करायें । हमें प्रभु से जाकर शीघ्र मिलना है ।

**निषादराज :-** (चरणों में गिरकर) महाराज ! यह आपका बडप्पन है जो मुझ कुजाति को गले ला रहे हैं । चलिए ..... ? मैं

आपको गंगा पार कराता हूँ और यह सेवक भी आप के साथ जायेगा।

**॥ चौपाई ॥**

गुरहिं सुनाँव चढ़ाइ सुहाई, नई नाव सब मातु चढ़ाई ।

**(सबका गंगा पार होना)**

**पर्दा गिरना**

**सीन नवाँ**

**स्थान :** चित्रकूट पर्वत ।

**दृश्य :** राम सीता सहित बैठे हैं । लक्ष्मण बाण लिये दूर खड़े हैं ।

**पर्दा उठना**

**राम :** सीते ! प्रकृति का ऐसा मनोहारी दृश्य देखकर भी तुम्हारा मुख क्यों मलीन हो रहा है ?

**सीता :** स्वामी ! आज दोपहर को मैंने एक सपना देखा है ..... ?
हे पिया ! स्वप्न में देखा है, श्री भरत मिलन को आये हैं ।
था भेष अशुभ मैंने देखा, अति बदन मलीन दिखाए हैं ।

**॥ चौपाई ॥**

एक आइ अस कहा बहोरी, सेन संग चतुरंग न थोरी ।

**भील :** (प्रवेश करके चरणों में गिरकर) भगवन प्रणाम ।

**राम :** कहो ..... ? घबड़ाये हुए क्यों हो ..... ?

**भील :** प्रभो । भरत लाल जी आ रहे हैं और ..... ?

**राम :** और क्या ? रुक क्यों गए ?

**भील :** प्रभो । साथ में सेना ला रहे हैं ।

**॥ चौपाई ॥**

लखन लखेउ प्रभु हृदयं खभारू, कहत समय सम नीति बिचारू ।

**लक्ष्मण :** (क्रोध से) हूँ ..... ! देखा ..... ? भाई के छल कपट का व्यवहार ..... ? ? उसकी भक्ति शासन के मद में चूर-२ हो गई है भैया ।

हे भाई ! शीघ्र आज्ञा दो, भाई को अब समझूँगा मैं ।
अन्याय न्याय पर चढ़ता है, यह कैसे होने दूँगा मैं ।
वैसे ही हृदय जल रहा है, मंझली माँ की करतूतों से ।
क्या दुख है राज छूटने का, पूछे कोई रजपूतों से ।
इस पर भी वह सन्तुष्ट नहीं, सेना ले लड़ने आता है ।
असहाय समझ बन में हमको, घेरने पकड़ने आता है ।

**(सिर नवाकर)**

हे नाथ ! रोकते रहे सदा, पर आज रोकना नहीं मुझे ।
सौगन्ध आपको है मेरी, इस समय टोकना नहीं मुझे ।
यदि पुत्र सुमित्रा का हूँ मैं, तो उसका गर्व मिटा दूँगा ।
श्री राम दुहाई पृथ्वी पर, क्षण भर में उसे सुला दूँगा ।

**राम :** लक्ष्मण । बिना सोचे समझे बड़े भाई का अपमान मत करो । भरत मेरा परम भक्त है । वह मुझे सबसे अधिक प्रिय है ।

**लक्ष्मण :** भैया ! आप सरल हृदय हैं । आप सबको अपना जैसा ही समझते हैं ।

भाई ? कैसा भाई ? किसका भाई ? भाई तब था जब निर्मल था ।
है आस्तीन का सांप आज, जो कभी भुजाओं का बल था ।
उससे कुछ बैर नहीं झगड़ा, है उसके बुरे विचारों से ।
विष वाले दाँत तोड़ दे तो, तो खौफ नहीं फुंकारों से ।
सेवक का तो धर्म यही, नित तत्पर होना सेवा में ।
स्वामी पर संकट आए तो, न्यौछावर होना सेवा में ।
इसलिए हाथ में धन्वा है, धन्वा पर बाण चढ़ रहा है ।
शत्रुओं संभल जाओ रण में, लक्ष्मण का क्रोध बढ़ रहा है ।
पृथ्वी हो चाहे खण्ड खण्ड, विन्धयाचल तिल तिल हो जाए ।
तूफान समुन्दर से उठकर, अम्बर से चाहे टकराए ।
शंकर भी आकर मदद करें, तो शंकर ही की साक्षी है ।
रण में उसको संहरूँगा, जो रघुराई का बैरी है ।

**राम :** लक्ष्मण शान्त होकर मेरी बात ध्यान से सुनो ..... ?

पहले तो भरत गिर गया है, यह नहीं समझ में आता है ।
उस जैसा तो सुशील भाई, सब जगह न पाया जाता है ।
फिर यह भी माना बदल गया, चाहता निभाना मेल नहीं ।
तो उससे उसकी सेना से, जय पाना कोई खेल नहीं ।
तुम इकले एक धनुष तुम पर, कब तक सम्मुख अड़ सकते हो ।
इतने दल वाले राजा से, कैसे रण में लड़ सकते हो ।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) प्रभो । अधर्म की नाव हमेशा डगमगाया करती है । यह आपका ही मन्त्र है ।

जब तक भरत था धर्मवान, तब तक हम दबा न सकते थे ।
मैं क्या सौ लक्ष्मण भी उसको, लड़ने से हरा न सकते थे ।
पर आज अधर्मी है वह ही, दल भी उसका अधर्म का है ।
इसलिए धर्म का एक बाण, उन सबका वध कर सकता है ।
बस समाधान हो गया नाथ, अब आज्ञा दो दिल मचल रहा ।
अपमानित क्षत्री का लौहू, भीतर ही भीतर उबल रहा ।
या तो यह बाण शत्रुओं का, संहार बाण हो जायेगा ।
या आज दास का सेवा में, बलिदान प्राण हो जायेगा ।

**आकाशवाणी :** हे लक्ष्मण ! तुम्हारे प्रभाव को कौन जान ग्गा कह सकता है ? फिर भी उचित अनुचित का विचार करके ही कोई काम करना चाहिए, नहीं तो .... ? बाद में पछताना पड़ता है ।

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

सुनि सुर बचन लखन सकुचाने । राम-सीय सादर सनमाने ॥

**राम :** जोश में न आओ लक्ष्मण । तुम्हारे पराक्रम को मैं खूब जानता हूँ लक्ष्मण । तुम निश्चय ही भरत का संहार कर दोगे परन्तु बाद में भरत के मनोभावों को जानकर क्या तुम उसे जिन्दा कर सकोगे ... ? शायद .... ! नहीं .... !! (भरत की ओर इशारा करके) वह देखो ..... ? वह

बेचारा तो अकेला ही भागा आ रहा है ।

**भरत :** राम ..... ! भैया राम ..... ! (चरणों में गिरकर) क्षमा करना प्रभु ..... ? क्षमा करना ..... ? ?

दुखी मन और दुखी हृदय पर, अब करुणा करो स्वामी ।
शरण में आ पड़ा हूँ मैं, मेरी रक्षा करो स्वामी ।

**॥ चौपाई ॥**

बरबस लिए उठाइ उर, लाए कृपा निधान ।
भरत राम की मिलनि लखि, बिसरे सबहि अपमान ।

**राम :** (भरत को उठाकर छाती से लगाकर)

दुखी क्यों इस तरह होते हो, धीरज तो धरो भाई ।
पड़ा है कष्ट क्या तुम पर, जरा वर्णन करो भाई ।
बताओ शोक क्या तुमको, भरत किसने सताये हो ।
दुखी होकर भला किस वास्ते, जंगल में आये हो ।

**भरत :** प्रभो ! अवध में चलकर प्रजा का कल्याण कीजिये ।

**राम :** भावना में मत बहो भरत ! भावना से कर्त्तव्य ऊँचा है ।

राम को कोई सत्य से, हरगिज हटा सकता नहीं ।
राज्य त्रिलोकी का भी, मुझको लुभा सकता नहीं ॥

**वशिष्ठ :** (प्रवेश करके) धन्य हो बेटा !

**राम :** (चरणों में गिरकर) गुरुदेव । आप ..... ?

**वशिष्ठ :** बेटा । थोड़ी दूरी पर तुम्हारी मातायें तथा दुखी प्रजा तुम्हारे दर्शनों को तड़प रही है ।

**राम :** क्या कहा गुरुदेव ..... ? अहोभाग्य ..... ? आज मैं उनका दर्शन करूँगा । चलिये गुरुदेव ..... ? शीघ्र चलिये ..... ?

(राम का भरत तथा गुरु वशिष्ठ के साथ माताओं के पास आना । पीछे-२ लक्ष्मण तथा सीता जी भी आती है)

**॥ चौपाई ॥**

प्रथम राम भेंटी कैकई । सरल सुभायं भगति मति भेई ॥

पग परिकीन्ह प्रबोधु बहोरी । काल करम बिधिसिर धरिखोरी ॥

**राम :** (कैकई के चरणों में गिरकर) माता के चरणों में राम का प्रणाम स्वीकार हो । (कैकई को चुप देखकर) माताजी आप चुप क्यों हैं ? बीती हुई बातों को भूलकर अपने पुत्र राम को आशीर्वाद दो, माँ ।

**कैकई :** (रोते हुए सकुचाकर) बेटा राम ..... ! (छाती से लगाकर) आज मैं अपनी निर्दयी व्यवहार पर स्वयं लज्जित हूँ, बेटे । परन्तु क्या करूँ ..... ? होनी के आगे किसी का वश नहीं चलता । आज मैं पापिन हर एक की नजरों में गिर चुकी हूँ । क्या मेरे जीवन का यह कलंकित धब्बा कभी धुल सकेगा ?

**राम :** (चरणों में गिरकर) नहीं ... ? माँ । ऐसा मत कहो .... ? होनहार होकर रहता है । तुम्हारा इसमें कोई भी कसूर नहीं ! मातेश्वरी । रघुवंश के प्रति आपकी छिपी भावना को जब ज्ञानी पुरुष जान लेंगे तब वह धब्बा स्वयं ही सदा-सदा को धुल जायेगा ।

**वशिष्ठ :** (आगे आकर) धन्य है ..... ? आर्यवीरों के इन पवित्र विचारों का जोड़ संसार के इतिहास में कहीं नहीं मिल सकता ।

**॥ चौपाई ॥**

गहि पद लगे सुमित्रा अंका । जनु भेंटी संपति अति रंका ॥
पुनि जननी चरननि दोउ भ्राता । परे प्रेम व्याकुल सब गाता ॥

**कौशल्या :** (आगे आकर राम को छाती से लगाकर रोते हुए) बेटा । तुम्हारा बनवास किस प्रकार कटता होगा ?

**राम :** (चरणों में गिरकर) माताजी । हर मनुष्य अपने कर्मों का फल भोगता है ।

**॥ चौपाई ॥**

नृप कर सुरपुर गवनु सुनावा । सुनि रघुनाथ दुसह दुख पावा ॥

मरण हेतु निज नेहु बिचारी । भे अति बिकल धीर धुर धारी ॥

**वशिष्ठ :** ठीक कहते हो बेटा । यह सब कर्मों का ही तो फल है कि एक ओर तो तुम बन को पधारे और दूसरी ओर तुम्हारे पिताजी परलोक सिधारे ।

**राम :** (विस्मय से) हैं . . . . . ? क्या पिताजी का स्वर्गवास हो गया . . . . . ? हाय ! पिताजी . . . . . ! अब अयोध्या बेसहारा हो गई ।

हा । पिता । तुम तो स्वर्ग सिधारे ।
हम जियें अब किसके सहारे ॥
आज लगता जहाँ सारा सूनौ ।
जैसे बिन चन्द्रमा के पूनौ ॥
बुझ गये भाग्य मेरे के तारे ।
हम जियें अब.....
गम के तूफान उठते हों काले ।
आज दुनियाँ से भगवन उठा ले ॥
डूबते हों नहीं -बीच द्वारे ।
हम जियें अब .....
जानता अगर दिल में अपने ।
टूटते ही नहीं आज सपने ॥
कैसे रोते गगन बीच तारे ।
हम जिये अब.....

**(श्री हरिशंकर शर्मा अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**लक्ष्मण :** (रोते हुए) भैया ! हम सब भाई अनाथ हो गये ।

ओ भाग्य चक्र तूने, घर जला ही डाला ।
था एक ही सहारा, वह भी मिटा ही डाला ॥

**॥ चौपाई ॥**

मुनिवर बहुरि राम समुझाए । सहित समाज सुसरित नहाए ॥

**वशिष्ठ :** बेटा । शान्ति करो । विलाप करके मृतक की आत्मा को

दुख न पहुँचाओ ।

**राम :** (सिर नवाकर) गुरुदेव । आपका उपदेश कल्याणकारी है किन्तु अब आप इन सबको लेकर अयोध्या लौट जाइए ।

**वशिष्ठ :** बेटा । मैंने भरत को पहले ही बहुत समझाया किन्तु इनकी राम भक्ति के सामने हमारा कोई भी उपाय काम न आया ।

**राम :** (भरत से) हे भाई ! अब तुम्हीं विचार कर ऐसा कार्य करो जिससे माताओं को शान्ति और प्रजा को सुख मिले ।

**भरत :** (चरणों में गिरकर)

हे रघुनन्दन ! रघुकुल भूषण ! रघुपति !रघुनायक !रघुराई ।
छोटे आरत शरणागति की, गहिये यह बाँह बड़े भाई ॥
माता से जो अन्याय हुआ, उसका है पश्चाताप उन्हें ।
खाये जाता है दिन पर दिन, वह पाप और सन्ताप उन्हें ॥
जो ज्येष्ठ अवध के राजा हैं, वे चले अवध का राज करें ।
शत्रुघ्न सहित हम दोनों भाई, बन में रहने का कार्य करें ॥
जैसे भी हो लौटिये अवध, है इतनी टेर भिखारी की ।
ठाकुर जी के मन्दिर तक ही, होती है दौड़ पुजारी की ॥

**राम :** (भरत को उठाकर छाती से लगाकर) भरत ! मैं तुम्हारी बात मान लेता परन्तु धर्म मेरा रास्ता रोक रहा है । याद करो.. ?

सत्य पर मोरध्वज ने, बलिदान बेटे का किया ।
सत्य पर हरिश्चन्द्र ने, परिवार को भी तज दिया ॥
सत्य पर ही शिव ने, प्राण का सौदा करा ।
सत्य के कारण हमें, बनवास में आना पड़ा ॥
सत्य का पालन करें हम, यह ही सच्चा कर्म है ।
याद रखो सबसे ऊपर, सबसे ऊँचा धर्म है ॥

**(भैया भरत)**

यह न समझो राम को, तुम बिन यहाँ आनन्द है ।
क्या करें पर राम अपने, धर्म का पाबन्द है ॥
वचन मेरा, पिता आज्ञा, परण अपना निभाओ तुम ।

करो मत अब देर भाई, अवध को लौट जाओ तुम ॥

**वशिष्ठ :** बेटा भरत ! तुम्हारे निस्वार्थ प्रेम की हद हो गई। इसके अलावा तुम राम के अनन्य भक्त भी हो और भक्त के लिये भगवान अपना गरुणासन छोड़ कर नंगे पैरों दौड़े चले आते हैं। एक तरफ तुम्हारी भावना है और दूसरी ओर राम का धर्म। राम नहीं चाहेंगे कि जिस पिता ने अपने वचनों की पूर्ति के लिए प्राण दे दिये उन बचनों को राम झूठा कर दें। बेटा भरत ! राम अपने मार्ग से कभी भी हटने वाले नहीं है इनकी आज्ञा का पालन करो और सावधान होकर अयोध्या लौट चलो।

**भरत :** (चरणों में गिरकर) अच्छा भ्राता जी ! यदि आपकी और गुरुदेव की यही आज्ञा है तो आप मुझे अपनी खड़ाऊँ दे दीजिये। मैं इनसे अयोध्या के राजसिंहासन को सजाऊँगा और स्वयं संन्यासी बनकर जीवन बिताऊँगा।

राम के अनुराग में, अब भरत संन्यासी बना।
बास नगरी में करूँगा, किन्तु बनवासी बना ॥

**वशिष्ठ :** धन्य हो भरंत ? तुम धन्य हो ? तुम दोनों साक्षात धर्म के अवतार हो। तुमने दिखला दिया कि धर्म के पालन के सामने राज्य का कोई मूल्य नहीं।

एक वो हैं जो, मर जाते हैं कट-कट राज पर।
एक ये हैं जो, लगा देते हैं ठोकर ताज पर ॥

**राम :** (खड़ाऊँ देते हुए) अच्छा प्यारे ! लो मेरी खड़ाऊँ ले जाओ।

**भरत :** (खड़ाऊँ सिर पर रखकर)

राम नहीं तो राम की, चरण पाद ही मंजूर है।
राम की हो आज्ञा, तो भरत फिर मजबूर है ॥

अच्छा प्रभो ! आज्ञा दीजिए ? किन्तु ? याद रखना ? अगर आपने चौदह वर्ष से एक दिन भी ज्यादा लगाया तो ... ? भरत को जिन्दा न पायेंगे।

**राम :** तुम निश्चिंत रहो भरत !

**भरत :** (चरणों में गिरकर) अच्छा प्रभो ! आज्ञा दीजिये ।

**(राम का भरत को छाती से लगाना)**

**॥ चौपाई ॥**

प्रभु पद पदुम बंदि दोउ भाई, चले सीस धरि राम रजाई ।

**राम :** (गुरु वशिष्ठ के चरणों में गिरकर) अच्छा गुरुदेव ! राम को आशीर्वाद दीजिये कि राम अपने धर्म से गिरने न पाये ।

**वशिष्ठ :** (आशीर्वाद देते हुए) मेरी शुभ कामनायें सदैव तुम्हारे साथ हैं ।

**पर्दा गिरना**

**सीन दसवाँ**

**स्थान :** अयोध्या का राज दरबार ।

**दृश्य :** भरत-शत्रुघ्न, गुरु वशिष्ठ, मंत्री सुमन्त तथा सभी सभासदों सहित विराजमान हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

सचिव सुसेवक भरत प्रबोधे । निज निज काज पाइ सिख ओधे ।
पुनि सिख दीन्हि बोलि लघुभाई । सौंपी सकल मातु सेवकाई ॥

**भरत :** मंत्री सुमन्त जी ! आप गुरुदेव की आज्ञा से राज-काज ठीक प्रकार से चलाना और भाई शत्रुघ्न ! तुम माताओं की सेवा करना। अच्छा गुरुवर ! अब शुभ घड़ी में सिंहासन पर खड़ाऊँ सुशोभित कराइये ।

**॥ दोहा ॥**

मुनि सिख पाइ असीस बड़ि, गनक बोलि दिनु साधि ।
सिंहासन प्रभु पादुका, बैठारे निरुपाधि ॥

**(भरत द्वारा राम की खड़ाऊँ सिंहासन पर रखना)**

**सम्मिलित स्वर : बोलो सियापति रामचन्द्र की जय**

—

**भरत :** (चरणों में गिरकर) गुरुदेव ! अब मुझे आज्ञा दीजिये । मैं नन्दी ग्राम में कुटी बनाकर तपसी भेष में रहूँगा ।

**वशिष्ठ :** कल्याण हो ।

**(भरत का जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

नन्दि गांव करि परन कुटीरा । कीन्ह निवासु धरम धुर धीरा ॥

**पटाक्षेप**

**(भरत को नन्दीग्राम में कुटी पर भजन करते हुए दिखाना)**

**॥ व्यास : ॥**

माँ की इच्छा से रघुबर ने, नाता गद्दी से तोड़ा है ।
पर भरत ने अपनी इच्छा से, यह राजपाट सब छोड़ा है ॥
इस कारण मत है जनता का, जन हुआ जनार्दन से ऊँचा ।
हे भरत ! तुम्हारा यह चरित्र, है श्री रघुनन्दन से ऊँचा ॥

**॥ दशरथ मरण लीला समाप्त ॥**

◆ ◆ ◆

## आठवाँ दिन (छठवाँ भाग)

# सीता हरण लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. सीता हरण

(क) जयन्ता की कुटिलता

(ख) सती अनुसुइया का उपदेश

(ग) राक्षस-वध प्रतिज्ञा

(घ) पंचवटी निवास

(ङ) खर-दूषण वध

(च) सूपनखा का रावण दरबार में जाना

(छ) मारीच वध

(ज) सीता हरण

(झ) जटायु-रावण युद्ध

(ञ) राम विलाप

(ट) जटायु उद्धार

(ठ) शबरी का उद्धार

# सीता हरण लीला

## (संक्षिप्त कथा)

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का वनवास काल समाप्त होने को ही था कि दुर्भाग्य ने फिर अपना दूसरा आक्रमण कर दिया। माया रूपी मृग सीता को स्वर्ण मृग जान पड़ा। वह किसी भी दशा में मृग पाने को उत्सुक हो उठीं। जानकी की इच्छा का आदर करते हुए राम धनुष बाण संभाल कर मृग के पीछे हो लिये।

स्वर्ण मृग वास्तव में मारीच था जो रावण की कठोर आज्ञा का पालन करने तथा राम के हाथों मृत्यु पाने के लिए यह कार्य कर रहा था। यकायक सीता के कानों में आवाज आई ..... ? आह ..... ! लक्ष्मण ! मैं घोर

संकट में हूँ। लक्ष्मण भैया ! मेरी रक्षा करो।

मानो सीता के पाँवों की भूमि खिसक गई हो। वह सन्न रह गई। लक्ष्मण को श्री राम की आज्ञा थी कि वह सीता को छोड़ कर कहीं न जाये और उसे अब समय और सीता दोनों बाध्य कर रहे थे कि वह राम की आज्ञा का उल्लंघन करे। सीता ने पति हित में लक्ष्मण पर लाँछन लगाये। लक्ष्मण का हृदय काँप गया। वह मौत पाने के लिए छटपटा उठा। वह आश्रम के बाहर आन रेखा खींचकर आवाज की ओर चला गया और सीता को यह हिदायत दे गया कि वे इस रेखा का उल्लंघन न करें।

सीता का दुर्भाग्य मुँह फाड़े खड़ा था। कपटी रावण संन्यासी भेष में पुकार रहा था। भिखारी सिर्फ भाव और भिक्षा का इच्छुक है देवी ! सीता ने गृहस्थी का कर्म निभाया और आश्रम से भिक्षा लेकर जैसे ही बाहर निकली रावण अपने असली रूप में आ गया और सीता का हरण कर ले गया।

सीता की करुण पुकार वृद्ध जटायु को सहन न हुई। वह धर्म मार्ग पर चलकर एक अबला की सहायता को आगे आया और रावण से जूझ गया। रावण के शस्त्र प्रहारों ने वृद्ध जटायु को इस भाँति घायल कर दिया कि वह पानी तक न माँग सके।

सौभाग्य वश जटायु की भेंट श्रीराम से हो गई। राम-लक्ष्मण ने जटायु को साँत्वना देने की कोशिश की परन्तु ..... ? जटायु इतना ही कह पाया था कि देवी सीता को छुड़ाने के अपराध में... राक्षस... ने... और वृद्ध जटायु ने श्रीराम के चरणों में दम तोड़ दिया। श्री राम भाग्य रचना पर फिर हाथ मलते रह गये।

संसार की दृष्टि में घृणापात्र शबरी दिन भर दुष्कर्म करती, किन्तु ऊषा और सन्ध्या काल में वह नित्य पथिकों के पथ बुहारती ताकि रास्ता चलने वालों के कांटा न लग जाये। श्री रामचन्द्र शबरी की कथा सुन चुके थे। उसकी भक्ति ने राम के हृदय में सद्भावनायें उत्पन्न कर दी थीं। समय पाकर श्री राम लक्ष्मण सहित शबरी की कुटिया पर पधारे। भूख ने उन्हें ऐसा विवश कर दिया था कि वे चलने का साहस छोड़ चुके थे। शबरी ने

अपना सौभाग्य जान श्री राम-लक्ष्मण का हार्दिक स्वागत किया। प्रभु ने शबरी का मान रखते हुए अपनी कथा सुनाई जिसके लिए शबरी ने ऋष्य मूक पर्वत पर सुग्रीव से भेंट करने की राय देकर आगे का मार्ग प्रस्तुत कर दिया। प्रभु शबरी को अभय दान देकर आगे चल दिये।

⇔

# पात्र परिचय

## (सीता हरण लीला)

### पुरुष पात्र

१. राम
२. लक्ष्मण
३. जयन्ता
४. शिवजी
५. ब्रह्माजी
६. नारद
७. मुनि समुदाय (चार मुनि)
८. अत्रिऋषि
९. सुतीक्षन मुनि
१०. अगस्त मुनि
११. खर
१२. दूषण
१३. राक्षस (तीन)
१४. सेनापति (खर-दूषण)
१५. द्वारपाल (रावण)
१६. रावण
१७. मंत्री (रावण)
१८. मेघनाद
१९. मारीच
२०. जटायु
२१. बानर (चार)
२२. साधु

### स्त्री पात्र

१. सीता
२. सूपनखाँ
३. शबरी
४. सती अनुसूइया
५. अप्सरा

# जयन्ता की कुटिलता

## (सीता हरण लीला)

## सीन पहला

**स्थान :** चित्रकूट पर्वत ।

**दृश्य :** राम सीता सहित बैठे हुए हैं । लक्ष्मण एक और धनुष बाण लिए खड़े हैं । मुनि समुदाय भगवान का भजन कर रहा है ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

एक बार चुनि कुसुम सुहाए, निज कर भूषन राम बनाए ।
सीतहि पहिराए प्रभु सादर, बैठे फटिक सिला पर सुन्दर ।

**राम :** प्रिये ! अवधपुरी में तो तुम रोज सोलह श्रृंगार किया करती थी । कभी-कभी माता जी तुम्हें अपने हाथों से सजाती थीं । मेरा भी दिल चाह रहा है कि पंचवटी से फूल चुनकर लाऊँ और तुमको सजाऊँ ।

**सीता :** नाथ ! विधाता ने मेरे भाग्य में यही बनवासी श्रृंगार लिखा था और फिर मेरे श्रृंगार तो आप हैं ।

**॥ चौपाई ॥**

सुरपति सुत धरि बायस बेषा । सठ चाहत रघुपति बल देखा ।
सीता चरन चोंच हति भागा । मूढ़ मंद मति कारन कागा ।

**जयन्ता :** अहा ..... ! आज तो त्रिलोकी नाथ स्वयं माता जानकी का श्रृंगार कर रहे हैं । चलकर उनकी परीक्षा लेनी चाहिए ।

**(जयन्ती का सीता जी के पैर में चोंच मारना)**

**॥ चौपाई ॥**

चला रुधिर रघुनायक जाना, सींक धनुष सायक संधाना ।

**(सीता जी के पैर में खून देखकर राम का जयन्ता के बाण मारना)**

**॥ चौपाई ॥**

प्रेरित मंत्र ब्रह्मसर धावा । चला भाजि बायस भय पावा ।

**जयन्ता :** (कराहकर) हाँ ..... ? मैं मर गया । भगवान शंकर मेरी

रक्षा करो। मैं घोर संकट में हूँ।

**शिवजी :** अरे दुष्ट जयन्ता ! मैं तेरी कोई मदद नहीं कर सकता ? तैने घोर अपराध किया है। तू उन्हीं के पास जा जिनका बाण है।

**॥ चौपाई ॥**

धरि निज रूप गयउ पितु माहीं, राम विमुख राखा तेहि नाहीं ।

**जयन्ता :** ब्रह्माजी मेरी सहायता करो। मैं दर्द से व्याकुल हो रहा हूँ।

**ब्रह्माजी :** अरे जयन्ता ! मैं तेरी कोई सहायता नहीं कर सकता ?

**॥ चौपाई ॥**

काहूँ बैठन कहा न ओही, राखि को सकइ राम कर द्रोही ।

**(जयन्ता का दर्द से कराहना)**

**॥ चौपाई ॥**

नारद देखा बिकल जयन्ता, लागि दया कोमल चित्त संता ।
पठवा तुरत राम पहिं ताही, कहेसि पुकारि प्रनत हित पाही ।

**नारद :** (प्रवेश करके) नारायण ! नारायण !

**जयन्ता :** (पैरों में गिरकर) हा.... ! मुनिवर..... ! मेरी रक्षा करो।

**नारद :** अरे जयन्ता ! जिनका बाण है उन्हीं के पास जा।

**॥ चौपाई ॥**

आतुर सभय गहेसि पद जाई, त्राहि-त्राहि दयाल रघुराई ।
अतुलित बल अतुलित प्रभुताई, मैं मतिमंद जानि नहीं पाई ॥

**जयन्ता :** (राम के पैरों में गिरकर) क्षमा करो प्रभु.. ! क्षमा करो .. !

**॥ चौपाई ॥**

सुनि कृपाल अति आरत बानी, एक नयन करि तजा भवानी ।

(राम द्वारा बाण खींचकर एक नयन फोड़कर क्षमा कर देना)

**जयन्ता :** (चरणों में गिरकर) धन्य हो प्रभु..... ! धन्य हो..... !

**(जयन्ता का जाना)**

**॥ व्यास : ॥**

यह इन्द्र कुमार जयन्ता था, आया था राम परीक्षा को ।

दुर्मति के कारण आँख गई, शिक्षा यह मिली सर्वदा को ॥

॥ चौपाई ॥

रघुपति चित्रकूट बसि नाना, चरित किए श्रुति सुधा समाना ।
बहुरि राम अस मन अनुमाना, होइहि भीर सबहिं मोहि जाना ।

**राम :** हे भाई लक्ष्मण ! चित्रकूट को अब सारे अयोध्यावासी जान गये हैं इसलिये वे यहाँ आकर माया-मोह बढ़ाने वाले बातें किया करेंगे और साथ ही यात्रा का कष्ट सहा करेंगे ।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) यथार्थ है भैया ! वह स्थान वैसे भी अयोध्य से बहुत दूर नहीं है ।

**राम :** अब यही उचित जान पड़ता है कि हम सभी आगे क भ्रमण करें और अन्य स्थानों की यात्रा करके अनुभव क लाभ उठावें ।

**लक्ष्मण :** हाँ..... ! चलिये प्रभु..... ! अब यही सुन्दर है ।

॥ चौपाई ॥

सकल मुनिन्ह सन विदा कराई, सीता सहित चले दोउ भाई ।
(राम-लक्ष्मण-सीता का मुनि समुदाय के साथ आगे को प्रस्थान)

पर्दा गिरना

# सती अनुसुइया का उपदेश

## सीता हरण लीला

### सीन दूसरा

**स्थान :** अत्रि मुनि का आश्रम ।

**दृश्य :** अत्रि मुनि पत्नी अनुसुइया सहित बैठे हुए हैं ।

पर्दा उठना

॥ चौपाई ॥

अत्रि के आश्रम जब प्रभु गयऊ, सुनत महामुनि हरषित भयर, .

**अत्रि मुनि :** मेरे मन में भी बसा है, नाम उस भगवान का ।
अब समय नजदीक है, पाऊँगा दर्शन राम का ॥

**राम :** (लक्ष्मण-सीता सहित प्रवेश कर चरणों में गिरकर) मुनिवर प्रणाम !

**अत्रि मुनि :** (गद-गद होकर) प्रभु आ गये ..... ? अपने भक्तों का बेड़ा पार करने आ गये ..... ?

**राम :** (सिर नवाकर) हाँ ..... ! मुनिराज ..... ! हम आपके दर्शन करने आ गये ।

**॥ चौपाई ॥**

अनुसुइया के पद गहि सीता, मिली बहोरि सुसील बिनीता ।
ऋषिपतिनी मन सुख अधिकाई, आसिष देइ निकट बैठाई ।

**सीता :** (अनुसुइया के पैर छूकर) माताजी प्रणाम !

**अनुसुइया :** (सीता को उठाकर छाती से लगाकर) बेटी ! तू साक्षात देवी है ।

**सीता :** माताजी ! कोई धर्म उपदेश दीजिए जिससे मेरा भी कल्याण हो ।

**॥ चौपाई ॥**

कह रिषबधू सरस मृदु बानी, नारि धर्म कछु ब्याज बखानी ।

**अनुसुइया :** बेटी ! तू तो स्वयं ही गुणों की खान है। फिर भी बेटी ! सुन..... ? संसार में चार प्रकार का नारियाँ होती हैं।

**प्रथम :** जो नारी पति को ही परमेश्वर मानकर दिन रात मन लगाकर तन-मन-धन से सेवा करती हैं वह अति उत्तम श्रेणी में आती हैं।

**दूसरे :** जो नारी अपने पति के अलावा दूसरों को पिता-पुत्र समान समझती हैं वह मध्यम श्रेणी में आती हैं।

**तीसरे :** जो नारी लज्जा और भय के कारण अपनी मर्यादा का पालन करती हैं वह मध्यम श्रेणी में आती हैं।

**चौथे :** जो नारी पति के होते हुए भी व्यभिचार करती हैं। पति सेवा को ठुकराकर अपनी ही मौज मस्ती में रहती हैं। वह अति नीच श्रेणी में आती हैं। ऐसी नारी को कोई भी भला

नहीं कहता और उसे नरक में घोर यातनायें भोगनी पड़ती हैं। और ऐसी नारी अगले जन्म में जवानी ही में विधवा हो जाती हैं। हे बेटी ! इससे भी बड़ी एक बात और है उसे भी ध्यान से सुन..... ?

परलोक दृष्टि से उच्च धर्म, पतिव्रत समझा जाता है ।
पर जग में उससे भी ऊँचा, शिशु पालन धर्म कहाता है ॥
संतान हेतु ही होती है, भूतल पर सृष्टि नारियों की ॥
हैं प्रकृति पापिनी पड़े नहीं, जो इस पर दृष्टि नारियों की ॥

**सीता :** (चरंण पकड़कर) माताजी ! आपका यह उपदेश मैं जीवन भर हृदय की गाँठ में बाँधें रखूँगी ।

**अनुसुइया :** बेटी ! तुम जैसी देवियों पर ही पतिव्रत धर्म टिका हुआ है। मेरा आशीर्वाद है कि आगे आने वाली संतान तेरे यश के गीत गायेंगी ।

**सीता :** (चरणों में गिरकर) अच्छा माताजी प्रणाम ।

**अनुसुइया :** (आशीर्वाद देते हुए) तेरा सदैव कल्याण हो ।

**॥ चौपाई ॥**

सुनि जानकी परम सुख पावा । सादर तासु चरन सिर नावा ॥
तब मुनि सन कह कृपानिधाना । आयसु होइ जाऊँ बन आना ॥
तब मुनि सन कह कृपानिधाना । आयसु होइ जाऊँ बन आना ॥

**सीता :** (चरण पकड़कर) धन्य हो माँ..... ? तुम धन्य हो ।

**राम :** (चरणों में सिर नवाकर) हे मुनिवर ! आज्ञा हो तो दूसरे बन में जाऊँ। आप हमेशा मुझ पर कृपा कीजियेगा और सेवक जानकर स्नेह न त्यागियेगा ।

**अत्रिमुनि :** हे स्वामी ! मैं कैसे कहूँ कि अब आप जाइए? हे नाथ ! आप अन्तर्यामी हैं। आपने प्रभुता पाकर भी अपने मृदुल स्वभाव से हर प्राणी का मन मोह लिया है ।

**राम :** (चरणों में सिर नवाकर) अच्छा..... ? मुनिवर प्रणाम !

(राम-लक्ष्मण-सीता का मुनि समुदाय के साथ प्रस्थान)

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

मुनि पद कमल नाइ करि सीसा । चले बनहि सुरनर मुनि ईसा ॥
आगें राम अनुज पुनि पाछें । मुनि बर वेष बने अति काछें ॥

# राक्षस वध प्रतिज्ञा

## (सीता हरण लीला)

### सीन तीसरा

**स्थान :** जंगल का मार्ग

**दृश्य :** मार्ग के एक ओर हड्डियों का ढेर पड़ा हुआ है ।

**॥ चौपाई ॥**

पुनि रघुनाथ चले बन आगे । मुनिवर बृन्द बिपुल संग लागे ॥
अस्थि समूह देखि रघुराया । पूछी मुनिन्ह लागि अति दाया ॥
जानतहूँ पूछिअ कस स्वामी । समदरसी तुम्ह अन्तरजामी ॥

**राम :** (ठिठककर हड्डियों का ढेर देखकर) हैं... ? यह क्या.. ?
हे पूज्यवरों ! ऋषियों ! मुनियों ! हड्डियों का कैसा ढेर यहाँ ।
यह तपोभूमि का है कलंक, या शासन का है अन्धेर यहाँ ॥

**(रोते हुए)**

हाँ..... ? कितना कष्ट वाला यह, दृश्य दृष्टि में आता है ।
पकड़े हैं इसने पाँव मेरे, अब आगे को बढ़ा न जाता है ।

**मुनि समुदाय :** (रोते हुए) हे प्रभो ! आप अन्तर्यामी हैं । जानते हुए भी कैसे पूछ रहे हैं ?
हमको बेनृप की प्रजा जानि, असुरों ने बहुत सताया है ।
कितने ही ऋषियों मुनियों को, उन नरभक्षों ने खाया है ।
जो भोजन बने राक्षसों के, उनकी हड्डियाँ पड़ी हैं ये ।
पत्ते तो वे खुद चबा गये, टूटी टहनियाँ पड़ी हैं ये ।

**॥ चौपाई ॥**

निसिचर निकर सकल मुनिखाए, सुनि रघुबीर नयन जलछाए ।

**राम :** (रोते हुए कानों पर हाथ रखकर) नहीं .... ? अनर्थ .... ?
घोर अनर्थ ..... ? (क्रोध से)
गौ, ब्राह्मण रक्षक गरज उठें, ऋषि मुनि दल सुने प्रतीज्ञा यह ।
पाताल सुने, भूलोक सुने, नभ मण्डल सुने प्रतीज्ञा यह ।
मैं हाथ उठाकर कहता हूँ, अब से है यही काम मेरा ।
पृथ्वी को निश्चरहीन करूँ, जब दशरथ सुवन नाम मेरा ।

**मुनि :** भगवान राम की जय । भगवान राम की जय ॥

**(आकाश से पुष्प वर्षा होना)**

**॥ दोहा ॥**

निसिचरहीन करऊँ महि, भुज उठाइ पन कीन्ह ।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हि, जाइ जाइ सुख दीन्ह ॥

**दृश्य परिवर्तन**

**स्थान :** सुतीक्षन मुनि का आश्रम ।

**दृश्य :** सुतीक्षन मुनि ध्यान मग्न हैं। भगवान राम-लक्ष्मण-सीता सहित बन मार्ग में वृक्ष की ओट में खड़े हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

मुनि अगस्त कर शिष्य सुजाना, नाम सुतीछन रति भगवाना ।
प्रभु आगमनु श्रवन सुनि पावा, करत मनोरथ आतुर धावा ।

**सुतीक्षन :** (ध्यान भंग कर दौड़ते हुए वन मार्ग में रुककर) हे विधाता ! क्या दीनबन्धु श्रीराम जी मुझ जैसे शठ पर दया करेंगे ? क्या स्वामी रामजी छोटे भाई सहित मुझ से अपने सेवक के समान मिलेंगे ? हृदय में दृढ़ भरोसा नहीं है क्योंकि मेरे मन में भक्ति वैराग्य या ज्ञान कुछ भी नहीं है ।

**(मुनि का वन के बीच मार्ग में अचल होकर बैठ जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

मुनि मग माक्ष अचल होइ बैसा, पुलक शरीर पनस फल जैसा ।
तब रघुनाथ निकट चलि आए, देखि दसा निज जन मन भाए ।

मुनिहि राम बहु भाँति जगावा, जाग न ध्यानजनित सुख पावा ।
भूप रूप तब राम दुरावा, हृदयँ चतुर्भुज रूप देखावा ॥

**राम :** (लक्ष्मण जानकी सहित मुनि के पास आकर) हे भक्त सुतिक्षन ! जागो..... ? जागो..... ? जागो..... ?

(मुनि का न जागना तब श्री राम जी का अपना चतुर्भुज रूप दिखाना)

**॥ चौपाई ॥**

मुनि अकुलाइ उठा तब कैसे, बिकल हीन मनि फरिबर जैसे ।
आगे देखि राम तन स्यामा, सीता अनुज सहित सुखधामा ॥
परेउ लकुट इव चरनन्हि लागी, प्रेम मगन मुनिवर बड़भागी ।
भुज बिसाल गहि लिए उठाई, राम प्रीति राखे उर लाई ।

**(मुनि का प्रभु के चरणों में लिपट जाना तथा श्रीराम द्वारा उठाकर मुनि को छाती से लगाना)**

**॥ दोहा ॥**

तब मुनि हृदय धीर धरि, गहि पद बारहिं बार ।
निज आश्रम प्रभु आनि करि, पूजा बिबिध प्रकार ।

**सुतीक्षन :** (राम के चरणों में गिरकर) हे स्वामी ! अब चलकर मेरे आश्रम को पवित्र कीजिए ।

**(श्री राम का लक्ष्मण-जानकी सहित मुनि के आश्रम में आना)**

**सुतीक्षन :** (सबको आसन पर बिठाकर पूजा की थाली लाकर आरती उतारते हुए) हे प्रभो ! मेरी विनती सुनिये । मैं किस प्रकार से आपकी स्तुति करूँ? आपकी महिमा अपार है और मेरी बुद्धि थोड़ी है जैसे सूर्य के सामने जुगनू का प्रकाश । हे स्वामी ! छोटे भाई और जानकी जी सहित वन में विचरने वाले रूप से मेरे मन में बसिये ।

**॥ चौपाई ॥**

सुनि मुनि बचन राम मन भाए, बहुरि हरषि मुनिबर उर लाए ।
एवमस्तु करि रमानिवासा, हरिष चले कुंभज ऋषि पासा ।
बहुत दिवस गुरू दरसनु पाएँ, भए मोहि एहि आश्रम आएँ ।

अब प्रभु संग जाऊँ गुरू पाही, तुम्ह कहँ नाथ निहोरा नाहीं ।
देखि कृपानिधि मुनि चतुराई, लिए संग बिहंसे द्वौ भाई ।

राम : (मुनि को छाती से लगाकर मुस्कराकर) ऐसा ही हो। अच्छा..... ? मुनिराज ! अब हम चलते हैं।

सुतीक्षन : (पैरों में गिरकर) प्रभो ! गुरूजी के दर्शन पाये और इस आश्रम में आये मुझे बहुत दिन हो गये हैं अब मैं भी शुभ के साथ गुरूजी के पास जाऊँगा। हे नाथ ! इसमें आप पर मेरा अहसान नहीं है।

राम : (हंसकर) चलिये मुनि..... ? परन्तु ..... ?

सुतीक्षन : (चलते हुए) परन्तु क्या ..... ? प्रभो ..... !

राम : गुरूजी के पास इतनी लम्बी अवधि तक न जाने का कारण क्या है ?

सुतीक्षन : मेरी भूल का परिणाम..... ?

राम : (विस्मय से) भूल..... ? और आपसे..... ? मैं समझा नहीं..... ?

सुतीक्षन : प्रभो ! कुछ समय पहले की बात है कि एक दिन गुरूजी गंगा स्नान को मुझे आश्रम पर छोड़कर गये। संध्या समय मैं गुरूजी के पास उनके ठाकुर जी लेकर उनके पूजन के लिए चला। रास्ते में सरोवर के किनारे जामुन का पेड़ देखकर जामुन खाने को मेरा मन ललचा उठा। मैंने इधर-उधर पत्थर के टुकड़े की तलाश की। जब बालू में मुझे कोई पत्थर का टुकड़ा नहीं मिला तब मैंने ठाकुर जी को ही पेड़ पर दे मारा। जामुन तो मेरे हाथ लग गया परन्तु ठाकुर जी को मैं गँवा बैठा। मैंने सरोवर में काफी तलाश किया फिर हार थककर मैंने भयवश जामुन को ही ठाकुर जी के रूप में गुरूजी के पास रख दिया। गुरूजी ने पूजा के लिए जैसे ही ठाकुर जी को पानी से रगड़ा वह गल गया तब गुरू जी क्रोधित हो गये और मेरी मूर्खता के लिये मुझे

फटकार दिया। प्रभो ! अब समय आ गया है कि आज मैं अपने गुरू जी को साक्षात ठाकुर जी के दर्शन कराऊँगा।

**दृश्य परिवर्तन**

**स्थान :** अगस्तमुनि का आश्रम।

**दृश्य :** मुनि ध्यान मग्न बैठे हैं।

**पर्दा उठना**

**।। चौपाई ।।**

पंथ कहत निज भगति अनूपा, मुनि आश्रम पहुँचे सुरभूपा ।
तुरत सुतीक्षन गुर पहिं गयऊ, करि दंडवत कहत अस भयऊ ।
नाथ कोसलाधीस कुमारा, आए मिलन जगत आधारा ।
राम अनुज समेत बैदेही, निसि दिनु देव जपत हहु जेही ।

**सुतीक्षन :** (अगस्त मुनि के पैरों में गिरकर) हे नाथ ! अयोध्या नरेश के कुमार जगदाधार श्रीराम जी, छोटे भाई लक्ष्मण जी और जानकी सहित आपसे मिलने आए हैं। हे देव ! जिन्हें आप दिन रात जपते रहते हैं।

**अगस्तमुनि :** (नेत्रों में खुशी के आँसू भरकर) क्या कहा ..... ? मेरे आराध्य देव आये हैं। चलो ..... ? शीघ्र चलो ..... ?

**सुतीक्षन :** (पैरों में लिपटकर) चलिये गुरूदेव ! आज आपके कारण मेरे भी भाग्य खुल गये ..... ?

गुरू, गोविन्द दोनों खड़े, काके लागूँ पाँय ।
बलिहारी गुरू आपने, गोविन्द दिये मिलाय ।

**(अगस्त मुनि का सुतीक्षन के साथ आश्रम के बाहर श्री राम जी के पास आना)**

**।। चौपाई ।।**

सुनत अगस्ति तुरत उठि धाए, हरि बिलोकि लोचन जल छाए ।
मुनि पद कमलपरे द्वौ भाई, ऋषि अति प्रीति लिए उर लाई ।
सादर कुसल पूछि मुनि ग्यानी, आसन बर बैठारे आनी ।
पुनि करि बहु प्रकार प्रभु पूजा, मोहि सम भाग्यवंत नहिं दूजा ।

**रामलक्ष्मण :** (अगस्त मुनि के चरणों में गिरकर) मुनिवर ! प्रणाम !

**अगस्तमुनि :** (हृदय से लगाकर) रघुवंश मणि ! आयुष्मान ! आज मेरे समान भाग्यवान दूसरा कोई नहीं है । चलिये प्रभु ..... ? आसन ग्रहण कीजिये ।

**(अगस्त मुनि द्वारा श्री राम के साथ आसन पर विराजमान होना)**

**॥ चौपाई ॥**

तब रघुबीर कहा मुनि पाहीं, तुम सन प्रभु दुराव कछु नाहीं ।
अब तो मंत्र देहु प्रभु मोही, जेहि प्रकार मारौं मुनि द्रोही ।
मुनि मुसुकाने सुनि प्रभु बानी, पूछेहु नाथ मोहि का जानी ।
यह बर मागँउ कृपा निकेता, बसहु हृदयं श्री अनुज समेता ॥

**राम :** (सिर चरणों में नवाकर) मुनिराज ! आपसे तो कुछ दुराव नहीं है । जिस कारण से मैं बन आया हूँ वह आप जानते ही हैं । अब हे प्रभो ! मुझे वही मंत्र दीजिए जिस प्रकार मैं मुनि-द्रोहियों को मारूँ ।

**अगस्तमुनि :** (मुस्कराकर) हे नाथ ! क्या जानकर आपने मुझे पूछा है ? सम्पूर्ण लोकपालों के स्वामी ! मनुष्य की तरह मुझसे पूछते हो । हे कृपाधाम ! मुझे अपनी भक्ति देकर इस मायाजाल से छुटकारा दीजिए ।

**राम :** मुनिराज ! योगी और सन्त का माया क्या बिगाड़ सकती है ? उनके लिए तो कल्याण का मार्ग हमेशा खुला रहता है । अच्छा मुनिराज ..... ? वनों में भ्रमण करते-२ हमें बहुत सा समय बीत गया । अब कोई ऐसा स्थान बताइए जहाँ हम तीनों विश्राम कर सकें ।

**॥ चौपाई ॥**

हे प्रभु परम मनोहर ठाऊँ, पावन पंचवटी तेहि नाऊं ।
बास करहु तहँ रघुकुल राया, कीजे सकल मुनिन्ह पर दाया ।

**अगस्तमुनि :** प्रभु ! आप सर्वव्यापक हैं भला मैं आपको क्या स्थान बता सकता हूँ । वैसे यदि आपकी यही इच्छा है तो ..... ? हे

भगवन ! यहाँ से कुछ दूर दक्षिण की ओर पंचवटी नाम का एक मनोहर स्थान है। वहाँ पवित्र गोदावरी बहती है। अनेक प्रकार के फलदार वृक्ष हैं और पक्षियों का कोलाहल मधुर संगीत सुनाता रहता है। आप वहीं जाकर विश्राम कीजिये। वहीं आपकी मनोकामना पूर्ण होगी क्योंकि पंचवटी से आगे राक्षसों की छावनी है।

**राम :** (चरणों में सिर नवाकर) बहुत अच्छा मुनिवर ! आज्ञा दीजिए।

**अगस्तमुनि :** (दिव्य शस्त्र देते हुए) लो राम..... ? ये दिव्य शस्त्र आज से तुम्हारी हर आज्ञा का पालन करेंगे।

**राम :** (शस्त्र लेते हुए सिर नवाकर) अहोभाग्य ! मुनिराज !

**(राम-लक्ष्मण-सीता का प्रस्थान)**

**पर्दा गिरना**

**।। चौपाई ।।**

चले राम मुनि आयसु पाई, तुरतहिं पंचवटी निअराई ।

**।। दोहा ।।**

गीधराज सै भेंट भइ, बहुविधि प्रीति बढ़ाइ ।
गोदावरी निकट प्रभु, रहे परन गृह छाइ ।

**दृश्य परिवर्तन**

**दृश्य :** सामने जटायू बैठा है।

**पर्दा उठना**

**लक्ष्मण :** (जटायू को देखकर) भैया ! वो सामने देखिये..... ? मुझे तो ऐसा लगता है कि कोई मायावी राक्षस भेष बदले हुए बैठा है। मैं इसे अभी ठिकाने लगाता हूँ।

**राम :** लक्ष्मण ! रिसि विश्वामित्र जी के शब्दों को याद करो... ? उन्होंने कहा था कि दूसरों के मन के भावों को जाने बिना उस पर वार नहीं करना चाहिए। नहीं तो..... ? बाद में पछताना पड़ता है (जटायू के पास आकर) हे गीधराज !

यदि आपको कष्ट न हो तो मैं आपका परिचय जानना चाहता हूँ। मैं अयोध्या के राजा दशरथ का पुत्र राम हूँ।

**जटायू :** (खुश होकर) राम ! यह तो मेरा सौभाग्य है। तुम्हारे पिता से देवासुर संग्राम में मेरी मित्रता हुई थी। मेरा नाम जटायू है।

**राम :** अहोभाग्य ! जटायू महाराज ! आज मैं ऐसा महसूस कर रहा हूँ मानों मेरे पिता मुझे फिर से मिल गये हों और हम फिर से सनाथ हो गये हैं। लक्ष्मण ! यही पर्णकुटी बनाओ।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा भैया !

# पंचवटी निवास

## (सीता हरण लीला)

### सीन चौथा

**स्थान :** पंचवटी।

**दृश्य :** श्री राम सीता जी सहित बैठे हैं। लक्ष्मण धनुष बाण लिए दूर खड़े हैं।

**पर्दा उठना**

**राम :** प्रिये ! देखो ..... ? प्रकृति ने पंचवटी का दृश्य कितना सुन्दर बनाया है ?

**सीता :** (मुस्कराकर) हाँ ..... ! स्वामी ..... ! पंचवटी की प्राकृतिक शोभा ने मेरा भी मन लुभाया है। मेरा भी दिल यहाँ कुछ दिन रहने को करता है।

**॥ चौपाई ॥**

सूपन खाँ रावण कै बहिनी, दुष्ट हृदय दारुन जस अहिनी ।
पंचवटी सो गइ एक बारा, देखि विकल भइ जुगल कुमारा ।
रुचिर रूप धरि प्रभु पहिं जाई, बोली बचन बहुत मुसुकाई
तुम्ह सम पुरुष न मो सम नारी, यह संजोग विधि रचा बिचारी ।

**सूपनखा :** (गेंद उछालते हुए प्रवेश करके) आह ..... ? आज तो हमारी पंचवटी की शोभा बैकुण्ठ से भी बढ़कर नजर आ रही है। (श्री राम के पास आकर) कौन हो तुम ..... ?

**राम :** देवी ! हम अयोध्यानरेश राजा दशरथ के पुत्र हैं।

**सूपनखा :** (मटककर) तुम्हारा नाम क्या है ?

**राम :** (गम्भीर होकर) मुझे राम कहते हैं और मेरे साथ भाई लक्ष्मण और पत्नी सीता है। आप अपना परिचय देने का कष्ट करेंगी, देवी !

**सूपनखा :** (मुस्कराकर) क्यों नहीं ..... ? मैं जगत प्रसिद्ध, लंकापति महाराज रावण की बहन सूपनखा हूँ।

**राम :** (अचरज से) किन्तु आप ... इस कुटी की ओर कैसे ... ?

**सूपनखा :** मुझे हासिल है आज्ञा, कहीं भी आने जाने में ।
लगाती रहती हूँ में, रात-दिन चक्कर जमाने में ।

**राम :** (मुस्कराकर) बड़ा भ्रमणशील स्वभाव पाया है देवी !

**सूपनखा :** (इठलाते हुए अंगड़ाई लेकर) भ्रमणशील नहीं ..... ? तुम्हें खुशी होगी कि मैं पति की तलाश में फिर रही हूँ।

**राम :** (विस्मय से) तो क्या ..... ? तुम्हारा अभी तक विवाह नहीं हुआ देवी !

**॥ चौपाई ॥**

मम अनुरूप पुरुष जग माहीं, देखेऊँ खोजि लोक तिहु नाहीं ।
ताते अब लगि रहिऊँ कुमारी, मनु माना कछु तुम्हहि निहारी ।

**सूपनखा :** (शरमाकर) हो कहाँ से ..... ? मेरे योग्य आज तक कोई वर नहीं मिला। (राम की आँखों में आँखें डालकर) हाँ .. ? तुम में कुछ-२ लक्षण नजर आते हैं।

मुझसा तो हसीन जमाने में, कोई नहीं मिला भरतार मुझे ।
ढूँढ़ा ही करती पति को मैं, है काम यही दिन रात मुझे ।
हाँ ! तुम कुछ-२ इस काबिल हो, जो पति बनो और प्यार करो ।
मैं तुमको अंगीकार करूँ, तुम मुझको अंगीकार करो ।

**राम :** (क्रोध से) ये आप ..... ? कैसी बातें कर रही हैं ..... ? पर पुरुष से तुम्हें यह बातें शोभा नहीं देतीं ।

**सूपनखा :** (मुस्कराकर इठलाकर) किन्तु ? मैं आपको पर पुरुष समझूँ तब न ..... ?

**राम :** तुम्हारी इच्छा अनुचित है देवी (क्रोध से) आप यहाँ से चली जाइये ।

**सूपनखा :** (मुस्कराकर बेशरमाई से) इतने कटु बोल इस भेष में शोभा नहीं देते तपस्वी ..... ?

**राम :** हम कटु वचन बोलने के इच्छुक नहीं हैं । आप अपनी राह लीजिए..... ?

**सूपनखा :** (एक ठंडी सांस खींचकर मुस्कराकर) मेरी राह पहले अंधकार में थी किन्तु तुम्हारी सुन्दर छवि के प्रकाश ने उसे प्रकाशित कर दिया है । मैं तुम्हें चाहती हूँ ।

**राम :** (झुंझलाकर) राजकुमारी ! तुम समझती क्यों नहीं ..... !
हम कुंआरे नहीं विवाहित हैं, फिर एक नारि व्रत रखते हैं ।
अपनी को छोड़ अन्य सबको, माता और बहन समझते हैं ।
इसलिए तुम्हारी यह आज्ञा, पालन कर सकते कभी नहीं ।
हम आर्य पुरुष हैं धर्म, खंडन कर सकते कभी नहीं ।

**सूपनखा :** (व्यंग से) अच्छा तो ..... ? यह बात है । यदि मैं अपना रास्ता साफ कर लूँ तब ..... ?

**राम :** (मुस्कुराकर) किन्तु ... ? तुम्हें इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी देवी ! (लक्ष्मण की और इशारा करके) वह देखो .... ? मेरे छोटे भाई हैं । बड़े वीर और पराक्रमी हैं । (सीता की ओर देखकर) और विशेषता यह है कि वे बिल्कुल अकेले हैं ।

**(लक्ष्मण का मुस्कुराना)**

**।। चौपाई ।।**

सीताहि चितइ कही प्रभु बाता, अहइ कुमार मोर लघु भ्राता ।

गई लछिमन रिपु भागिनी जानी, प्रभु बिलोकि बोले मृदु बानी ।

**सूपनखा :** (लक्ष्मण के पास आकर)
हे गोरे ! मुझे देख क्यों, मंद-मंद तुम हंसते हो ।
वे तो हैं ब्याहे हुए किन्तु, तुम कुंआरे ही लगते हो ।
हो गया ब्याह उनका देखो, वह कैसा अब सुखदाई है ।
तुम करो हमारे साथ ब्याह, यह इच्छा मन में आई है ।

**लक्ष्मण :** (राम की ओर इशारा करके) मैं तो उनका तुच्छ सेवक हूँ। मैं पराधीन हूं अतः तुम्हें सुख नहीं मिलेगा । प्रभु समर्थ हैं। कौशलपुर के राजा हैं ।

**सूपनखा :** तब ..... ? मैं भी सेविका बनकर ही रह लूंगी मेरे राजकुमार !

**लक्ष्मण :** किन्तु यह..... ? मेरे लिए शोभायमान नहीं होगा ।

**सूपनखा :** (झुंझलाकर) आखिर क्यों..... ?

**लक्ष्मण :** एक दास होकर सुख या आराम की इच्छा करना उसी तरह है जैसे भिखारी होकर मान की, लोभी होकर सम्मान की और मूढ़ होकर ज्ञान की इच्छा करना हो ।

**सूपनखा :** (झुंझलाकर) फिर वही उपदेशों की भरमार..... ? मैं तो यह बातें सुनने नहीं आई राजकुमार !

**लक्ष्मण :** (मुस्कुराकर) तो इससे अधिक अपने पास राम जी का नाम है । आप उन्हीं से बातें कीजिये ।

**॥ चौपाई ॥**

तब खिसिआनि राम पहिं गई, रूप भयंकर प्रगटत भई ।
सीतहि सभय देखि रघुराई, कहा अनुज सन सयन बुझाई ।

**सूपनखा :** (खिसियाकर) अरे वाह..... ? मेरे राज्य में रहकर मुझ पर ही हुक्म चलाया जा रहा है ।

**राम :** तुम व्यर्थ ही भटक रही हो देवी । इससे तुम्हारे नारी धर्म का नाश हो जाएगा ।

**सूपनखा :** (व्यंग से) यह पाठ अपना विवाह कराने से पहले भी पढ़ा

था क्या ?

**राम :** (झुंझलाकर) देवी ! मुझे माफ करो ... ? मैं पहले ही कह चुका हूं कि मैं विवाहित हूं। अब तुम जा सकती हो ... ?

**सूपनखा :** (क्रोध से) क्या ही अच्छा हो कि जाने से पहले उस डाल को ही नष्ट कर दूं जिसने मेरा साया छीन लिया है।

**राम :** (अचरज से) मैं समझा नहीं ..... ?

**सूपनखा :** (राक्षसी भेष में आकर क्रोध करके सीता पर झपटते हुए) अभी समझाये देती हूं ..... ? (दांत पीसकर) यह कौड़ी भर नारी ही मेरी लुटेरी है।

**लक्ष्मण :** (रास्ता रोककर क्रोध से)
है पुत्र के सम्मुख ताकत जो, माता को दुखी करे कोई ।
लक्ष्मण के होते भला कौन, जो आकर अहित करे कोई ।
ठहर ..... ? मैं तुझे अभी ठिकाने लगाए देता हूँ ।

**सूपनखा :** (विस्मय से) क्या कहा ..... ? ठिकाने ..... ?

**लक्ष्मण :** (मुस्कराकर व्यंग से) मेरा मतलब है ..... ? मैं तुम्हें अभी विवाह बन्धन में बांधे देता हूं।

**सूपनखा :** (मुस्कराकर) तो यह बात पहले क्यों नहीं कह दी थी ? राजकुमार !

**लक्ष्मण :** (व्यंग से) इधर आइये देवी जी ..... ? पहले अपने बुरे व्यवहार के लिए माफी मांग लीजिये।

**सूपनखा :** (हाथ जोड़कर) मैं माफी चाहती हूं राजकुमार !

**लक्ष्मण :** अरे ..... ? ऐसे नहीं ..... ? (धनुष लिटाकर जिससे डोरी ऊपर रहे) मेरे इस धनुष की डोरी पर नाक रगड़ते हुए कहो ..... ? मैं देवी सीता से अपने दुर्व्यवहार की क्षमा चाहती हूं।

**सूपनखा :** अच्छा ..... ? राजकुमार जी ..... ! (धनुष की डोरी पर नाक रगड़ते हुए) मैं सीता से ..... ?

**लक्ष्मण :** खाली सीता ही नहीं ..... ? देवी सीता कहो ..... ?

(लक्ष्मण अपना धनुष खींच लेता है। सूपनखा की नाक कट जाती है। वह चीख पड़ती है।)

**सूपनखा :** (कराहते हुए) आह ..... ? मैं मर गई..... ? यह तुमने मुझसे छल किया है..... ? (नाक हाथ में लेकर)
कट गई हाय री दइया ।
मैं मर गई मेरे भइया ॥

**(सूपनखा का रोते हुए जाना)**

**पर्दा गिरना**

# खर-दूषण वध

**सीन पाँचवाँ**

**स्थान :** खर-दूषण की मधुशाला।

**दृश्य :** खर-दूषण राक्षसों के साथ शराब पी रहे हैं।

**पर्दा उठना**

**खर :** (बोतल हाथ में लेकर) लाल परी..... ! वाह..... ! क्या नाम है इसका..... ? लाल परी..... ? अट्टहास: हा...हा...हा...(बोतल हाथ में लेकर)

**दूषण :** (झूमते हुए) क्यों न हो..... ? जिन्दगी का मजा तो इसी के साथ है। अट्टहास हा... हा... हा...(बोतल हाथ में लेकर)
मर जाऊँ ऐ शराब, गर तेरी बू न हो ।
खाना भी हराम, जो बोतल में तू न हो ।

**॥ चौपाई ॥**

खर दूषन पहिं गइ बिलपाता । धिग-२ तव पौरष बल भ्राता ।

**सूपनखा :** (आकर क्रोध से) चूल्हें में जायें तुम्हारी बोतलें और भाड़ में जाये तुम्हारा पीना-पिलाना। अरे मूर्खो... ! तुम्हारी बहन का यह हाल हो और तुम्हें मदिरा पीने का ख्याल है।

**खर :** (नशे में झूमते हुए) कौन हो तुम..... ?

**दूषण :** अरे बहन..... ! क्या बात है ?

**राक्षस १ :** मौसी ! क्या सूचना लाई है ?

**राक्षस २ :** बुआ ! क्यों इतनी अकुलाई है ?

**राक्षस ३ :** ताई ! तुम्हारा बोल कुछ भारी लगता है ?

**सूपनखा :** (सिर पीकर रोते हुए) हाय..... ? हाय..... ? तुम्हारा हो जाए सत्यानाश । तुम्हें मजाक की पड़ी है..... ? मेरी जान पर बनी है ?

**खर :** (होश में आकर सूपनखा को देखकर) अरे बहन..... ! तुम्हारी यह दशा किसने बनाई है ?

**दूषण :** (क्रोध से) किसकी मौत यहाँ खींच लाई है ?

**सूपनखा :** (दुखी होकर क्रोध से)

क्या पूछो मेरी बात अरे नादानो ।
सूरत से मेरा तुम हाल पहचानो ॥
जिसके ऐसे बलवान लड़ाका भाई ।
दुष्टों ने उसकी ऐसी दशा बनाई ॥
बजता है जग में जिसके नाम का डंका ।
बदनाम हुई है आज तुम्हारी लंका ॥
आती है कुछ शर्म मानि हानि में ।
तो जाकर डूब मरो चुल्लू भर पानी में ॥

**खर :** हैं..... ? क्या कहा..... ? लंका की बदनामी..... ?

**सूपनखा :** (रोते हुए) भैया..... ?

बैठे-बैठे दिल आज लगा उकताने ।
मैं चली गई दण्डकवन मन बहलाने ॥
कुछ दिनों से आकर पंचवटी पर ।
ठहरे हैं दो सुकुमार मनोहर सुन्दर ॥
इक रूपवान, गुणवान साथ है नारी ।
कहते हैं राम की प्रिया सिया सुकुमारी ॥
जब देखा मेरा रूप चन्द्र उजियाला ।

वह छोटा राजकुमार हुआ मतवाला ॥
उसकी चालों में मैं कैसे आ जाती ।
क्या खर-दूषण के कुल को दाग लगाती ॥
जब चली न कोई चाल कपट की बाँधी ।
तब अन्यायी ने मेरी यह नाक उड़ा दी ॥
हाय री मेरी दइया ।
मैं मर गई मेरे भइया ॥

**खर :** (दुखी होकर क्रोध से) ओह..... ? इतना अनर्थ..... ? मेरे ही साम्राज्य की सीमा में और मुझ पर ही अन्याय। अच्छा बहन..... ! तुम निश्चिन्त रहो। तुम्हारी नाक का बदला उनके खून से लिया जायेगा।

**सूपनखा :** (खुश होकर) हाँ भाई..... ! तभी मुझे तसल्ली आयेगी।

**दूषण :** अच्छा ..... ! सेनापति ! तुरन्त सेना तैयार करो और पंचवटी की ओर कूंच करो।

**सेनापति :** (सिर झुकाकर) जो आज्ञा महाराज !

**(सेनापति का जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन छठवाँ

**स्थान :** पंचवटी।

**दृश्य :** श्री राम सीता जी के साथ बैठे हैं। लक्ष्मण धनुष-बाण लिये दूर खड़े हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

धूरि पूरिं नभ मंडल रहा, राम बोलाइ अनुज सन कहा ।

**राम :** हे भाई लक्ष्मण ! वह देखो..... ! सामने आकाश में धूल छा रही है। मालूम पड़ता है कि वह दुष्टा अपने सहायकों के साथ आ रही है। तुम सीता को लेकर कहीं छिप

जाओ । मैं इन्हें देख लूँगा ।

**लक्ष्मण :** भैया..... ! मैं आपको अकेला छोड़कर..... !

**राम :** लक्ष्मण ! जिद न करो । समय कम है । तुम सीता को किसी सुरक्षित स्थान पर ले जाओ ।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा भ्राता जी !

**(लक्ष्मण का सीता जी को सुरक्षित स्थान पर ले जाना)**

**खर :** (सेना के साथ प्रवेश करके) लंकेश की बहन पर हाथ उठाने वाले होशियार ... और मरने के लिए हो जाओ तैयार ।

**राम :** क्या तू..... ! उसका हिमायती बनकर आया है ।

**खर :** लंकेश की बहन का बदला चुकाने आया हूँ ।

**राम :** राम दुष्टों को मारकर ही अयोध्या वापिस जायेगा ।

**खर :** ओ बदकार ! तुझे नहीं पता कि पंचवटी पर किसका अधिकार है !

**राम :** राम माता कैकई के वचनों से लाचार है ।

**खर :** संभल जा..... ! मेरा वार आता है ।

**राम :** अभी तू खुद अपनी करनी का फल पाता है ।

**(लड़ना ..... ! खर का मारा जाना)**

**दूषण :** (आगे आकर) ओ मेरे भाई की हत्या करने वाले ! देख.. ! तेरा काल आया है ।

**राम :** तुझको भी अब मौत ने बुलाया है ।

**दूषण :** पापी ! तूने पराई स्त्री की नाक उड़ाई है ।

**राम :** उसी के कारण तेरी मौत आई है ।

**दूषण :** देख..... ! काल तेरे सामने हैं भय क्यों खाता नहीं !

**राम :** सच्चा क्षत्री युद्ध से घबड़ाता नहीं ।

**दूषण :** ज्यादा बातें न बना । सामने आ ।

**राम :** जहाँ पर भाई गया वहाँ पर तू भी जा ।

**(लड़ना ... ? दूषण का मारा जाना । सेना में भगदड़ मच जाना)**

॥ चौपाई ॥

जब रघुनाथ समर रिपु जीते, सुर नर मुनि सबके भय बीते ।
तब लछिमन सीतहिं लैं आए, प्रभु पद परस हरषि उर लाए ।

**लक्ष्मण :** (आकर चरणों में गिरकर) धन्य हो भैया ! आज तो राक्षसों की मिट्टी खूब ठिकाने लगाई ।

**सीता :** नाथ ! आप थक गये होंगे ।

**राम :** प्रिये ! मुझे कोई थकान नहीं, भूख जरूर लग रही है ।

**सीता :** स्वामी ! मैं अभी कन्द-मूल फल तोड़े लाती हूँ ।

**लक्ष्मण :** (आगे आकर सिर झुकाकर) नहीं माँ ..... सेवक के होते हुए आप ..... !

**(लक्ष्मण का कन्द मूल फल लेने जाना)**

॥ व्यास : दोहा ॥

लछिमन गए बनहिं जब, लेन मूल फल कंद ।
जनक सुता सन बोले, बिहंसि कृपा सुख वृन्द ॥

॥ चौपाई ॥

तब लागि करहुं अग्नि महँ बांसा । जब लोग करहुं निसाचर नासा ॥

**राम :** प्रिये ! इन राक्षसों के नाश के लिए एक विचित्र लीला मुझे दिखानी है । इनके नाश होने तक तुम अग्नि में प्रवेश कर जाओ ।

**सीता :** (सिर झुकाकर) जो आज्ञा नाथ !

**(सीता का अग्नि प्रवेश । मायावी सीता का प्रगट होना)**

॥ चौपाई ॥

लछिमन हूँ यह मरमु न जाना । जो कुछ चरति रचा भगवाना ॥

पर्दा गिरना

# सूपनखा का रावण के दरबार में जाना

## (सीता हरण लीला)

**सीन सातवाँ**

**स्थान :** रावण दरबार।

**दृश्य :** मेघनाद मंत्री तथा सभासद बैठे हैं। द्वारपाल पहरे पर है।

**पर्दा उठना**

**द्वारपाल :** होशियार..... ? देवताओं के सरताज ! लंका नरेश ! महाराज रावण पधार रहे हैं।

**(मंत्री तथा सभासदों का खड़ा हो जाना)**

**रावण :** (प्रवेश करके) हा... हा... हा...
पड़े दिन काटते हैं यम, वरुण मेरे सहारे पर।
देव-दानव पलते हैं, मेरे ही गुजारे पर॥
खड़ी हैं सब सम्पत्तियाँ, हाथ बाँधे मेरे द्वारे पर।
निरन्तर नाचता है काल भी, मेरे ही इशारे पर॥
अगर गुस्सा घड़ी भर को, मेरी आँखों में छा जाये।
तो यह ब्रह्माँड सारा, क्रोध की अग्नि से जल जाये॥
हा... हा... हा...

**मंत्री :** (सिर झुकाकर) निःसन्देह..... ? अन्नदाता..... !
आपकी ताकत का डंका चारों ओर बज रहा है।
नहीं विद्रोह की शक्ति, रही अब देवताओं में।
दुहाई मच गई है आपकी, चारों ही दिशाओं में॥

**मेघनाद :** क्यों नहीं..... ? पिताजी..... !
सर उठाने की नहीं, ताकत किसी इन्सान में।
आपका सानी नहीं, कोई भी इस जहान में॥

**(रावण के बैठने पर सबका यथास्थान बैठ जाना)**

**रावण :** मंत्री जी..... !

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर झुकाकर) अन्नदाता..... !

**रावण :** अप्सराओं को बुलाओ और शराब का दौर भी चलवाओ।

**मंत्री :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज ! (आवाज देकर) द्वारपाल..... !

**द्वारपाल :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) आज्ञा श्रीमान !

**मंत्री :** महाराज की आज्ञा का पालन करो ।

**द्वारपाल :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा श्रीमान !

**(द्वारपाल का जाना)**

**अप्सरा :** (प्रवेश करके कोर्निश करके) अन्नदाता..... !

**रावण :** साकी..... ? जल्दी लाओ ।
पिला दो ऐसी कि जो, मस्ताना बनाकर छोड़े ।
होश अपना न रहे, मैखाना लगाकर छोड़े ॥

**साकी :** (शराब पेश करके) लीजिये..... ? अन्नदाता..... !
बोतल का काक उड़ते ही, मस्ती है जागती ।
यह लाल परी आँख के परदों में नाचती ॥

**मंत्री :** (खड़ा होकर)
जाम पर जाम का वह दौर चला दे साकी ।
सारे दरबार को तू, दीवना बना दे साकी ॥

**साकी :** पीकर शराब आदमी, मस्ती में चूर है ।
होठों से जब लगाई, तो गम दिल से दूर है ॥

**रावण :** हा... हा... हा...
देवताओं ने आज तक, क्या मेरी ताकत जानी नहीं ।
आज सारे जगत में, मेरा कोई सानी नहीं ॥
हा... हा... हा...

**॥ चौपाई ॥**

धुआँ देखि खर दूषन केरा । जाइ सुपनखा रावन प्रेरा ॥
बोली बचन क्रोध करिभारी । देस कोस कै सुरति बिसारी ॥

**सूपनखा :** (प्रवेश करके क्रोध से) भैया..... ! तेरा शानी पैदा हो गया है । तू तो शराब के नशे में सो गया है । (कराह कर) हायरी मेरी दइया । मैं मर गई मेरे भइया ।

**रावण :** (चौंककर) कौन..... ? बहन सूपनखा..... ? तेरी यह दशा किसने बनाई है..... ?

**सूपनखा :** (क्रोध से)

**॥ दोहा ॥**

पड़ जाये इस राज पर, और ताज पर खाक ।
तेरे होते कट गई, आज बहन की नाक ॥

**(रोते हुए)**

भइया मेरे राखी की रखना अब तू लाज ।
विपत पड़ी तेरी बहना पै आज ॥
हे भाई ! दो लड़के राम-लखन, इस दंडकवन में आये हैं ।
संग में एक सीता नारी, सुकुमारी साथ में लाये हैं ॥
बांके हैं और लड़ाके हैं, गोया शमशीर उन्हीं की हो ।
यो पंचवटी में रहते हैं, मानों जागीर उन्हीं की हो ॥
मैं उधर अचानक निकल गई, उस नारी से मिलना चाहा ।
इतने में छोटे तपसी ने, मुझसे छल करना चाहा ॥
जब मैंने तेरा नाम लिया, सुनते ही उसने दी गाली ।
फिर मेरे कान कतर डाले, मेरी यह नाक काट डाली ॥
मेरी नाक गई सो गई, अब अपनी नाक संभालो तुम ।
जग में ऊँची नाक नहीं, तो नकटा नाम धरा लो तुम ॥

**रावण :** (नाक उठाकर क्रोध से) हे बहन ! तुम शान्ती रखो ।
गमनाक न हो तुम उनकी भी, मैं नाक नहीं अब रखूँगा ।
भेजा नथुनों की राह करूँ, मिर्चों का नास उन्हें दूँगा ॥
नारी की नाक उड़ाने में, होती है नाक नहीं ऊँची ।
अबला पर हाथ उठाने में, उठती है धाक नहीं ऊँची ॥
मैं चला नाक की सीध अभी, नाके पर उनको पकडूँगा ।
तेरी आँखों के आगे ही, दोनों की नाक रगड़ दूँगा ॥

**(सोचते हुए) परन्तु ..... ?**

यह समाचार, यह दुराचार, क्या खर-दूषण से नहीं कहा ।
उनका तो वहीं अखाड़ा था, उन कुल भुषण से नहीं कहा ॥

**सूपनखा :** (रोते हुए) कहा था भइया..... ! कहा था..... ! !

॥ दोहा ॥

हे भाई ! मुझ पर हुआ, जब यह अत्याचार ।
पहले उन पर ही गई, कहा सब समाचार ॥
वे सेना लेकर गये वहाँ, अत्यन्त घोर संग्राम किया ।
लेकिन उस बड़े तपसिया ने, उन सबका काम तमाम किया ॥

**(रावण का इशारे से दरबार बरखास्त करना)**

॥ चौपाई ॥

सुर नर असुर नाग खग माहीं । मोरे अनुचर कहँ कोउ नाहीं ॥
खर दूषन मोहि सम बलवंता । तिन्हहि को मारइ बिनु भगवंता ॥

**रावण :** (तिरछा होकर स्वयं से)
जब एक अकेली ताकत ने, खर-दूषण को मार दिया ।
तो फिर निश्चय यह सिद्ध हुआ, नारायण ने अवतार लिया ॥
अपना परिचय देने ही को, दिखलाई है यह युक्ति मुझे ।
इस रण के कारण मिलनी है, पिछले ऋृण से अब मुक्ति मुझे ॥
निश्चय ही वे अवतारी हैं, तो बैर भाव मैं रखूँगा ।
दूसरे जन्म का बन्धन भी, उसके द्वारा ही तोडूँगा ॥
(पलट कर आँखें लाल-लाल कर, तलवार निकाल कर)
हूँ ? वे कांटे नाक कान फिर, जिन्दा रहें जमाने में ।
तो टूटें बीस भुजा मेरी, लानत है शस्त्र उठाने में ॥
तुम बैठो, थोड़ी धीर धरो, मैं दण्डकवन में जाता हूँ ।
इस नाक काटने का बदला, दोनों से चुकाता हूँ ॥

**सूपनखा :** (रोते हुए) तभी मुझको तसल्ली आयेगी भैया !

**रावण :** (सूपनखाँ के पास आकर आँसू पौंछते हुए) मत रो बहन ? मत रो . . . . . ? ? (क्रोध से) उन मूर्खों ने मेरी बहन की नाक काटी है किन्तु रावण रघुवंश की ही नहीं सम्पूर्ण अयोध्या की नाक काटकर दम लेगा । उन छोकरों ने रावण की बहन पर हाथ उठाया है तो रावण उनकी आबरू पर हाथ डालेगा . . . . . ? "बनवासी सीता का हरण" हा . . .

हा... हा... इससे वह बालक सीता के वियोग में पागल हो उठेंगे। सीता को खोजते बन-बन भटक कर मर जायेंगे। हा... हा... हा...।

पर्दा गिरना

# मारीच वध

## (सीता हरण लीला)

### सीन आठवाँ

**स्थान :** मारीच की कुटी।

**दृश्य :** मारीच साधू भेष में भगवान के ध्यान में लीन है।

पर्दा उठना

**मारीच :** परलोक का मूरख ध्यान तो कर, क्यों दुनिया में भरमाया है।
जिस पर तू मोहित हो बैठा है, वह सारी झूठी माया है॥
बोलो..... ? श्री राम जय राम जय जय राम॥

॥ चौपाई ॥

दसमुख गयउ जहाँ मारीचा। नाइ माथ स्वारथ रत नीचा॥

**रावण :** (प्रवेश करके) क्यों मारीच.... ? क्या हाल है..... ?

**मारीच :** (ऊपर सिर उठाकर विस्मय से) कौन? लंकापति.. ??
अहोभाग्य? जय शंकर की..... !! विराजिये महाराज।

**(रावण का कुर्सी पर गम्भीर मुद्रा में बैठना)**

॥ दोहा ॥

करि पूजा मारीच तब, सादर पूछी बात।
कवन हेतु मन व्यग्र अति, अकसर आयहु तात॥

**(मारीच का रावण की आरती उतारना)**

लखि उदास आज नृप तुमको, शोक मन में भारी छाया है।
सच-सच बतलाओ हे राजन ! किस व्यथा ने तुम्हें सताया है॥
बलवान भी हो, धनवान भी हो, और भाग्य बुलन्द तुम्हारा है।
किसलिये कहो? फिर भी राजन ! मुख हुआ उदास तुम्हारा है॥

यकायक आपका यहाँ आना मारीच के मन में शंका उत्पन्न करता है अन्नदाता ! कहिए..... ? महाराज..... ! आनन्द में तो हैं।

**रावण :** (ठंडी साँस लेकर)
हम भी हैं, आनन्द, कहते हैं सभी व्यवहार में।
कौन रहता है मगर, आनन्द से इस संसार में ॥

**मारीच :** (अचरज से) तो क्या..... ? आजकल कोई चिन्ता सता रही है जो ऐसी निराशा भरी बातें कहीं जा रही हैं।

**रावण :** क्या बताऊँ मारीच..... ?

**॥ चौपाई ॥**

दसमुख सकल कथा तेहि आगें ! कही सहित अभिमान अभागें ॥
होहु कपट मृग तुम्ह छलकारी। जेहि विधि हरि आनौं नृपनारी ॥

**रावण :** दो तपसी लड़कों ने बन में, यह करनी बेहूदा की है।
खर-दूषण त्रिशरा मारे हैं, नकटी श्री सूपनखा की है ॥
इस कारण अब पत्थर का जवाब पत्थर ही से देना है।
कटवाई नाक भगिनी की तो, भार्या उनकी हर लेना है।
तू चलकर माया मृग बन जा, मैं बाबा जी बन जाऊँगा।
तू उन तपसियों को बहकाना, मैं सीता को हर लाऊंगा ॥

**॥ व्यास : चौपाई ॥**

तेहिं पुनि कहा सुनहु दससीसा। ते नर रूप चराचर ईसा ॥
जाहु भवन कुल कुसल बिचारी। सुनत जरा दीन्हिसि बहु मारी ॥

**मारीच :** (काँपते हुए) त्राहिमाम..... ? त्राहिमाम..... ? ?
धनुष कन्धे पर रक्खे राम, मुझको नजर आता है।
वही विश्वामित्र के यज्ञ के यज्ञवाला, बाण नजर आता है ॥
मेरा दिल काँपता है, जब राम का ध्यान करता हूं।
इसी कारण मैं राम का, हरदम नाम जपता हूं ॥

**रावण :** (क्रोध मिश्रित व्यंग से)
काँपता है जिससे जग, भयभीत सारा लोक है।

क्या उसी रावण का मामा, इस कदर डरपोक है ॥

**मारीच :** (व्यंग से) डरपोक नहीं... ? बल्कि आपका हितैषी है ?
जिन्होंने बाण मारा, ताडिका का दम निकाला है ।
जिन्होंने चाप शम्भु का, सहज में तोड़ डाला है ॥
जिन्होंने भाई खर दूषण को, सहज में पीस डाला है ।
जिन्होंने अपने बाण से, मुझको लंका में डाला है ॥
उन्हीं को आपने, बलहीन और नादान समझा है ।
बड़ा धोखा हुआ, भगवान को इन्सान समझा है ॥

**रावण :** (क्रोध से) मारीच ! गुरू बनकर तू मुझे ज्ञान सिखाता है । मूर्ख ! वे नर हैं या नारायण ! इसी बात का पता करने को मैं तुझे माया मृग बनाकर उनके सामने ले जा रहा हूँ । वे वन में शिकार करते ही हैं । यदि वे भगवान होंगे तब तो कपट पहचान ही जाएंगे, उठेंगे ही नहीं और यदि राजपुत्र होंगे तो शिकार देखकर उसे मारने के लिए उसके पीछे अवश्य दौड़ेंगे । तब यह निश्चय हो जायेगा कि वे ईश्वर नहीं हैं नर हैं । यदि यह निर्णय होगा कि वे भगवान हैं तो वहीं जबरदस्ती युद्ध छेड़ दूंगा और उनके बाणों द्वारा मरकर मुक्ति प्राप्त करूँगा । और यदि भूप सुन हुए तो तू लक्ष्मण का नाम लेकर राम जी की भांति पुकारना । उसके पुकारने पर जब लक्ष्मण सीता को छोड़कर चला जायेगा तब सीता को हर ले जाऊँगा और संसार का सुख भोगूँगा । कदाचित उन दोनों ने हरण में बाधा उपस्थित की अथवा पीछे पता लगने पर वे युद्ध के लिए आगे आए तो दोनों भाइयों को रण में जीत ही लूँगा इसमें कोई संदेह नहीं है । समझा..... ?
यदि नहीं साथ देगा मेरा, तो सारा ज्ञान भुला दूंगा ।
सीता को हरने से पहले, यमपुरी तुझे पहुंचा दूँगा ॥

**मारीच :** (डरकर कांपते हुए) परन्तु महाराज ? सच्ची बात तो ?

**रावण :** (बात काटकर क्रोध से) चुप रह..... ? नालायक..... !
जो इरादा कर चुका हूं, वह बदल सकता नहीं ।
बल यह रस्सी का है, जलकर भी निकल सकता नहीं ॥
उठ ! खड़ा हो ! ! साथ चल, बकवास सब बेकार है ।
सिर उड़ा दूंगा अगर, फिर से कहा इनकार है ॥

**॥ चौपाई ॥**

तब मारीच हृदयं अनुमाना । नवहिं बिरोधें नहिं कल्याना ।

**मारीच :** (तिरछा होकर स्वयं से)
परवश क्या है परवशता है, सब भाँति मौत ही आई है ।
इस ओर कुएं में गिरना है, उस ओर गिरूं तो खाई है ॥
राजी से मैं यदि नहीं जाऊं, तो भी मैं मारा जाऊंगा ।
इससे तो राम के हाथों से, मर मुक्ति मार्ग को पाऊंगा ॥
इस दुष्ट के हाथों मरने से, श्रीराम के हाथ मरूं अच्छा ।
जो कहता है सो अब इसका, इस तरह से काम करूं अच्छा ॥
(पलटकर) लंकेश ! पानी में रहकर मगर से बैर नहीं निभता । मुझे आपकी आज्ञा स्वीकार है । मारीच चलने को तैयार है ।

**रावण :** (मारीच की पीठ ठोककर) शाबाश मारीच..... ? तू बड़ा दिलेर है । आखिर तो शेरों का शेर है ।

**मारीच :** (स्वयं से) अहा..... ?
स्वार्थ में अन्धी है दुनियाँ, स्वार्थ का संसार है ।
स्वार्थ की ही मित्रता है, स्वार्थ का ही प्यार है ॥

**॥ चौपाई ॥**

अस जिय जानि दसानन संगा । चला राम पद प्रेम अभंगा ॥
मन अति हरष जनाब न तेही । आजु देखिहउं परम सनेही ॥

**पर्दा गिरना**

# सीता हरण

## (सीता हरण लीला)

## सीन नवाँ

**स्थान :** पंचवटी ।

**दृश्य :** राम सीता सहित विराजमान हैं । लक्ष्मण धनुष बाण लिये दूर खड़े हैं ।

**पर्दा उठना**

**सीता :** हे स्वामी !

अब लौट अवध को जायेंगे, देखेंगे नगरी की शोभा ।
दर्शन पाकर माताओं के, यह जीवन जन्म सफल होगा ॥
होगी फिर भेंट भरत जी से, सखियों से मिल सुख पायेंगी ।
जो कुछ भी बन में बीता है, सारा वृतान्त उन्हें सुनाऊँगी ॥

**राम :** प्रिये ! आज तो तुम्हें वतन की याद सता रही है ।

**॥ चौपाई ॥**

तेहि बन निकट दसानन गयऊँ, तब मारीच कपट मृग भयऊ ॥
अति विचित्र कछु बरनि न जाई । कनक देह मनि रचित बनाई ॥
सीता परम रुचिर मृग देखा । अंग अंग सुमनोहर वेषा ॥
सुनहु देव रघुबीर कृपाला । एहि मृग कर अति सुन्दर छाला ॥
सत्य संघ प्रभु बधि करि एहि । आनहु चर्म कहति बैदेही ॥

**(मारीच का सोने का मृग बनकर सामने आना)**

**सीता :** (मृग को देखकर) हे स्वामी ... ? उधर देखिये ..... ? ?

मृग ऐसा तो देखा न सुना, जैसा यह सुघड़ सलौना है ।
देखो तो ? सर से पाँव तलक, सारा सोना ही सोना है ॥
हे नाथ ! खाल लाओ इसकी, तो कुटिया का श्रृंगार होगी ।
सोने के मृग की मृगछाला, क्या अद्भुत यादगार होगी ॥

स्वामी ! जब हम अयोध्या वापिस जायेंगे तो मातायें इस मृगछाला को देख बहुत खुश होंगी ।

**॥ चौपाई ॥**

तब रघुपति जानत सब कारन । उठ हरषि सुर काजु सवारन ॥

**राम :** (दर्शकों की ओर देखते हुए)

भला कहीं संसार में, सोने का मृग होय।
होनी हो करके रहे, मेट सके ना कोय॥
अच्छा प्रिये.... ? यदि तुम्हारा यही हठ है तो जाता हूँ।

**लक्ष्मण :** भैया ! इस मृग की रचना मुझे प्रकृति के विपरीत मालूम पड़ती है। कहीं यह राक्षसी माया न हो।

**राम :** तो क्या हुआ..... ? राम ने राक्षसों को मारने की कसम खाई है।

**॥ चौपाई ॥**

प्रभु लक्षिमनहि कहा समुझाई । फिरत बिपिन निसिचर बहु भाई ।
सीता केरि करेहु रख वारी । बुधि विवेक बल समय बिचारी ॥

**राम :** भाई लक्ष्मण ! जब तक मैं लौटकर न आऊँ, जानकी को अकेले मत छोड़ना। यहाँ पर राक्षस कपट रूप धारण करके विचरते हैं।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा भ्राता जी !

**॥ चौपाई ॥**

मृग बिलोकि कटि परिकर बाँधा । करतल चाप रुचिर सर साधा ।

**(राम का धनुष बाण लेकर मृग के पीछे जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

प्रभुहि बिलोकि चला मृग भाजी । धाए रामु सरासन साजी ॥
कबहुं निकट पुनि दुरि पराई। कबहुंक प्रगटइ कबहुं छपाई ॥
प्रगटत दुरत करत छल भुरी। एहि बिधि प्रभुहि गयउ लै दुरी ॥
तब तकि राम कठिन सर मारा। धरनि परेउ करिघोर पुकारा ॥
लछिमन कर प्रथमहिं लै नामा। पाछें सुमिरेसि मन महुं रामा ॥

**(पर्दे के पीछे से आवाज)**

आह.... ? लक्ष्मण.....? मैं घोर संकट में हुं। भैया लक्ष्मण.....? मेरी सुधि लेना.....।

**॥ चौपाई ॥**

आरत गिरा सुनी जब सीता। कह लछिमन सन परम सभीता ॥

जाहु बेगि संकट अति भ्राता । लछिमन बहंसि कहा सुनु माता ॥

**सीता :** हैं..... ? ये मैं क्या सुन रही हूं..... ? लक्ष्मण..... !
कुछ सुना तुमने..... ?

**लक्ष्मण :** किसी ने मुझे पुकारा है ? माँ..... ?

**सीता :** (व्याकुल होकर) किसी ने नहीं ? स्वयं तुम्हारे भाई ने ? ?

**(पर्दे के पीछे से आवाज)**

मेरा दम निकला जा रहा है लक्ष्मण ! मेरी रक्षा करो ! !

**सीता :** (सिसकियाँ लेते हुए) तुम्हारे भाई संकट में हैं लक्ष्मण !
लक्ष्मण ! लक्ष्मण ! ! जाकर देखो, रघुराई तुम्हें पुकार रहे ।
भाई के थके हुए बाजु, भाई की बाट निहार रहे ॥
भगवान न जाने अपने सुख, कितने कष्टों के मुख में हैं ।
लक्ष्मण ! इसमें सन्देह नहीं, प्रणेश इस समय दुख में हैं ॥
लक्ष्मण..... ?
मालूम ऐसा होता, किसी जंजाल में होंगे ।
जल्दी से जाओ, लक्ष्मण ! वो किस हाल में होंगे ।
जल्दी से जाओ, मत देर लगाओ ।
मालुम ऐसा हो रहा, कुछ आपदा आई ॥
तुमको पुकारें लक्ष्मण, लक्ष्मण कहके रघुराई ।
हो सकता वो किसी निश्चर की चाल में होंगे ।
जल्दी.....(१)
सौगन्ध मेरी है तुम्हें, अब देर ना करो ॥
जाकर के बन में भ्रात की, अब रक्षा तो करो ॥
भूले होंगे बन पथ को, बन बिकराल में होंगे ।
जल्दी.....(२)

**(श्री ओम बाबू अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**॥ चौपाई ॥**

भृकुटि बिलास सृष्टि लय होई । सपनेहुं सकंट परइ कि सोई ॥

**लक्ष्मण :** धीरज से काम लो माँ..... ?

चिन्ता न माता भाई, मृग की चाल में होंगे ।
घट-घट के वासी रामजी, मृग छाल में होंगे ॥
विनय यह मेरी माता, चरण में शीश नवाता ॥
भाई की आज्ञा माँ, मुझे लाचार ना करो ।
घबराओ ना दिल अन्दर, अपने धीर तो धरो ॥
आते होंगे श्री राम जी, फिलहाल में होंगे ।
घट-घट के वासी.....

आते ही होंगे रामजी, हिरणा को मारके ।
दिल ना दुखाओ अपना, माता आँसू डारके ॥
ये भालू-शेर-बघेरे, बन विकराल में होंगे ।
घट-घट के वासी.....

छोड़ अकेला तुमको अब, मैं कहीं ना जाऊँगा ।
जो आज्ञा दे गये भैया, उसको ही निभाऊँगा ॥
चिन्ता करो ना दिल में, वो सही हाल में होंगे ।
घट-घट के बासी.....

**(श्री ओ३म् बाबू अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

किसकी मजाल है हे माता ! जो उन्हें दुख पहुँचायेगा ।
जहाँ सूर्य प्रकाश है माता ! वहाँ अन्धकार कब आयेगा ॥
अच्छा, माना दुख आया भी, तो क्या करे दिखलायेगा ।
श्री रामचन्द्र का दर्शन कर, सुख का स्वरूप बन जायेगा ॥
धीरज का साथ न छोड़ो माँ ! बिना सोचे समझे सेवक को आज्ञा देकर कोई भूल न करो ।(बिहंसकर)
सकल संसार के संकट, जो क्षण में दूर करते हैं ।
पड़ेगा कष्ट क्या उन पर, जो सबके कष्ट हरते हैं ॥

**॥ चौपाई ॥**

मरम बचन जब सीता बोला । हरि प्रेरित लछिमन मन डोला ॥

**सीता :** (सुबकते हुए) बेकार की बातों में समय बर्बाद मत करो लक्ष्मण ! यदि भाई की सहायता करने की इच्छा नहीं है

तो ..... ? रहने दो। मर जाने दो ..... ? उन्हें यूँ ही तड़प-तड़प कर।

**लक्ष्मण :** (दोनों कानों पर हाथ रखकर) माँ ..... ? आप समझती क्यों नहीं ..... ?

मेरा इस समय धर्म है यह, मैं रहूँ आपकी रक्षा पर।
सर्वस्व निछावर है मेरा, अपने भाई की आज्ञा पर॥
यह बन विशाल है व्याघ्रव्याल, भय, चारों ओर घनेरा है।
माँ ! तुम्हें अकेला छोड़ूँ मैं, कर्त्तव्य नहीं यह मेरा है॥

**सीता :** (क्रोध से) बहाने मत बना, लक्ष्मण !

बस, अब मैं जान गई, कि स्वारथ का तू भाई है।
तेरे बन आने की मैंने, समझ ली चतुराई है॥
मतलब के सारे भाई हैं, बिन मतलब के न कोई नाता है।
है सच्चा मित्र वही जग में, जो मुश्किल में काम आता है॥

**लक्ष्मण :** (सीता के पैरों में गिरकर रोते हुए) नहीं .... ? माँ ..... ? नहीं ..... ? ? भैया राम के हित में यदि लक्ष्मण को प्राण भी गंवाने पड़े, तो वह अपना सौभाग्य समझेगा माँ सीते ?

**(पर्दे के पीछे से आवाज)**

मैं घोर संकट में हूँ लक्ष्मण ! मेरे प्राणों की रक्षा करो।

**सीता :** (रोते हुए) लक्ष्मण ! इतने घोर संकट काल में अनजान भी कुछ सहायता कर दिया करते हैं। किन्तु तुम ..... ? तुम वह भाई हो जो अपने खास भाई के काम भी नहीं आ सकते।

**लक्ष्मण :** (पैरों में गिरकर) मातेश्वरी... ! यदि यहाँ राक्षसी आक्रमण का भय न होता तो मैं आपको अकेला छोड़कर चला जाता। विधाता न करे.. ? कोई बात बन गई तो यह लक्ष्मण अपने भैया को मुँह तक न दिखा सकेगा। माँ.. !

**सीता :** (क्रोध से) बस, अब चुप रह ..... ? तेरे मुँह से माँ शब्द भी अच्छा नहीं लगता।

**लक्ष्मण :** (तड़प कर) ओह..... ? मेरे दुर्भाग्य ..... ?

**सीता :** (क्रोध से) मुझे लगता है कि तेरे हृदय में मेरे प्रति बुरे विचार बन गये हैं, मगर याद रख..... ?

ख्याल तेरा है जिधर, वह बात हो सकती नहीं।
जीते जी सीता तेरी, नारि हो सकती नहीं॥

**लक्ष्मण :** (दोनों कानों पर हाथ रखकर रोते हुए) नहीं... ? माँ... ? नहीं ? ओह... ! पत्थर दिल धरती... ! तू ! इस अभागे लक्ष्मण को अपने आंचल में क्यों नहीं छिपा लेती ?

**सीता :** (व्यंग से) यह विलाप तेरे हृदय की कालिमा को नहीं धो सकेगा लक्ष्मण ! तूने भाई के साथ धोखा किया है। तू केवल मुझे छलने के लिए ही हमारे साथ आया था।

**लक्ष्मण :** (सीता के पैरों में गिरकर रोते हुए) इन विषैले शब्दों का प्रयोग नहीं करो माँ ! बुरे समय में बुद्धि भी विपरीत हो जाया करती है, माँ सीते... ? यह... आप... नहीं... ? हमारा बुरा समय कह रहा है और यह अभागा लक्ष्मण सुन रहा है और सुनता रहेगा जब तक ये पृथ्वी फट न जाये, ये आकाश टूट कर न गिरे।

आँखें ये फूट जायें, यदि बद नजर करूँ।
हो नरक वास दास का, चिन्तन अगर करूँ॥
श्रद्धा है दिल में आपकी, जगदम्बे मान के।
इन चरणों को पूजता हूँ, सुमित्रा के जान के॥

**सीता :** (रोते हुए) लक्ष्मण ! क्या करू ? मेरे दिल को तसल्ली नहीं होती..... ? ?

**॥ दोहा ॥**

दिल मेरा घबड़ा रहा, नहीं पड़ता मुझको चैन।
तुम सच्चे भी हो लषण ! फिर भी मैं हूँ बेचैन॥
मेरी तुम कुछ चिन्ता न करो, रक्षक है सर्वेश्वर मेरे।
तुम जाओ वहीं चले जाओ, जिस जगह गये प्रभुवर मेरे।

माता तुम मुझे समझते हो, तो आज्ञा मानो माता की ।
मैं आज्ञा तुमको देती हूँ, जाओ सुधि लेने भ्राता की ।

॥ चौपाई ॥

बन दिसि देव सौंपि सब काहू । चले जहाँ रावन ससि राहू ॥

**लक्ष्मण :** (चरणों में झुककर) अच्छा माता... तुम्हारा यही हठ है तो जाता हूँ..... ? (खड़ो होकर)

हे पवनदेव ! हे बन वृक्षों ! हे पक्षी ! ! अब गवाह हो तुम ।
लक्ष्मण की धर्म की नौका के, सूर्य, चन्द्र ! मल्लाह हो तुम ।
करता हूँ आज्ञा का पालन, इतना है बस सन्तोष मुझे ।
भाई यदि मुझे उल्हाना दें, तुम कह देना निर्दोष मुझे ।

**(सिर नवाकर)**

अच्छा माता..... ? मैं जाता हूँ, तुम सावधान रहना ।

**(रेखा खींचकर)**

आज्ञा के भीतर दास रहा, तुम इस रेखा के भीतर रहना ।
इस रेखा का उल्लंघन करके, जो इसके अन्दर आयेगा ।
है आन उसे यह लक्ष्मण की, वह वहीं भस्म हो जायेगा ।
(पैर छुकर) अच्छा..... ? माता जी प्रणाम !

**(लक्ष्मण का जाना)**

॥ चौपाई ॥

सून बीच दस कंधर देखा । आवा निकट सती के वेषा ॥

**रावण :** (साधू के भेष में झोली डालकर प्रकट होकर)

**दृश्य :** (सीता जी गंगाजल हथेली पर रखकर मुँह की ओर ले जा रही हैं)

**रावण :** (प्रवेश करके)

**"भजन"**

पीना है तो हरि प्रेम पिओ, क्या रखा है गंगाजल पीने में ।
हरि को छोड़ जो नर जिये, क्या रखा है उस जीने में ॥
राम नाम के हीरा मोती, मैं बिखराऊँ गली-गली ।

ले लो रे कोई राम का प्यारा, शोर मचाऊँ गली-गली ॥
माया के दीवानों सुन लो, एक दिन ऐसा आयेगा ।
धन दौलत और माल खजाना, यहीं पड़ा रह जायेगा ॥
ये सुन्दर काया मिट्टी होगी, चरचा होगी गली-गली ।
ले लो रे.....(१)
क्यों कहता है मेरा-मेरा, यह तो तेरा मकान नहीं ।
झूठे जग में फँसने वाला, है सच्चा इन्सान नहीं ॥
जग का मेला दो दिन का है, अन्त में होगी चला-चली ।
ले लो रे.....(२)
जिस जिसने ये मोती लूटे, वह तो मालामाल हुए ।
धन दौलत के बने पुजारी, आखिर वे कंगाल हुए ॥
सोने-चाँदी वालो तुमको, बात बताऊँ भली-भली ।
ले लो रे.....(३)
इस दुनियाँ को तू कब तक बन्दे, अपनी कहता जायेगा ।
राम नाम को भूल गया तो, अन्त समय पछतायेगा ॥
दो दिन का ये चमन खिला है, फिर मुरझाये कली-कली ।
ले लो रे..... (४)

अलख निरंजन..... ! अलख निरंजन..... ! (सीता को देखकर) मातेश्वरी प्रणाम !

हे माई ! मुझको भिक्षा दे, मर्तबा रहे आला तेरा ।
भगवान तुझे जीता रखे, हो सदा बोल बाला तेरा ।
तू देवी हरदम सुखी रहे, दिन पर दिन बड़ भागिन हो ।
भूखे को थोड़ा भोजन दे, देवी ! तू अटल सुहागिन हो ।

**सीता :** (सिर नीचा करके) हे साधू बाबा !
प्रात:काल के भोजन को, कुछ फल कुटिया में रखे हैं ।
लेकिन इस मृग के झंझट में, अब तक न किसी ने चखे हैं ।
हैं कन्द-मूल जो कुटिया में, वो लाकर भिक्षा देती हूँ ।
हाजिर हैं बाबा जो फल मेरे, वो लाकर अभी देती हूँ ।

आशीर्वाद यह दो मुझको, उद्देश्य हमारा नष्ट न हो।
मृग मार कुशल सहित आयें, स्वामी को मेरे कष्ट न हो।

**(सीता का कुटिया के अन्दर फल लेने जाना)**

**रावण :** (रेखा पार करना चाहता है तभी रेखा से अग्नि की लपटें निकलती हैं।)
(पीछे हटते हुए) हैं.... ? हैं.... ? यह क्या हुआ.... ?
यह रेखा रंग क्यों बदलती है..... ? अरे..... ? यह कोई माया है या किसी सती का तेज है।

**(आकाशवाणी... रावण ! याद रख..... ? यदि तू इसका उल्लंघन करेगा तो अभी तेरा मरण होगा.....)**

**सीता :** (फल लाकर) लो बाबा..... ?

**रावण :** नहीं माँ !
यदि भिक्षा देनी है तो, रेखा के बाहर आ माई।
जोगी लेते हैं नहीं कभी, इस तरह बंधी भिक्षा माई।

**सीता :** हे साधू महाराज ! क्षमा करिये ? यह रेखा छूट नहीं सकती। यह आन लषण देवर की है, जो मुझसे टूट नहीं सकती।

**रावण :** तो कोई बात नहीं..... ?
हे माई ! तोड़ो नहीं, तुम देवर की आन।
बाबा भी लेगा नहीं, इस प्रकार का दान।

**(रावण जाने लगता है)**

**सीता :** ठहरो बाबा..... ? आपका खालीं हाथ लौट जाना मेरे लिये लज्जा की बात है।
देवर की आन रहे न रहे, रखूँगी धर्म गृहस्थी का।
अब मैं रेखा का ध्यान छोड़, करती हूँ कर्म गृहस्थी का।

**रावण :** (कुटिल मुस्कान के साथ) अब बनी बात..... ?

**॥ व्यास : ॥**

देखो ? क्या ऊँचा ब्रत है यह ? कितना यह भाव विलक्षण है ।

इस सिया हरण की लीला में, आतिथ्यदान ही कारण है ।

**॥ चौपाई ॥**

तब रावन निज रूप देखावा । भई सभय जब नाम सुनावा ।
कह सीता धरि धीरजु गाढ़ा । आइ गयउ प्रभु रहु खल ठाढ़ा ।
सुनत बचन दससीस रिसाना । मन महुँ चरन बंदि सुख माना ॥

**सीता :** (रेखा के बाहर आकर) लो बाबा..... ।

**रावण :** (असली रूप में आकर हाथ पकड़कर) हा... हा... हा...
सीता! हो जा सावधान, अब तू मेरे पन्जे में है ।
मैं लंका का पति रावण हूँ, तू रावण के कब्जे में है ।

**सीता :** (हाथ झटककर) यदि तू अपनी आयु चाहता है तो..... ?
ओ दुष्ट खड़ा रह खबरदार, स्वामी अब आने वाले हैं ।
जो धनुष तोड़कर लाए हैं, वे ही मेरे रखवारे हैं ।
अब तक मैं उस रेखा में थी, अब मैं सत की रेखा में हूँ ।
अबला हूँ पर इतना बल है, पति व्रत की रेखा में हूँ ।
तू क्या संसार अगर आए, तो भी बल तोल नहीं सकता ।
सतवन्ती के सत से आगे, ब्रह्मा भी बोल नहीं सकता ।
दानी के बटुए की समता, करती झोली भिखमंगे की ।
सूरज के पास पहुँच जाऊं, इच्छा यह नीच पतंगे की ।

**रावण :** हा... हा... हा...
रावण का सानी कोई, हुआ नहीं संसार में ।
देवता भी सर झुकाते, आकर मेरे दरबार में ।
रावण के सामने बोल सके, यह किसकी मजाल है..... ?

**सीता :** तो समझ ले ? सीता का हरण नहीं, तेरा काल है ।

**रावण :** काल..... ? हा... हा... हा...
काल कैदी है मेरा, अब काल आ सकता नहीं ।
मेरे फन्दे से तुझे, अब कोई छुड़ा सकता नहीं ॥

**सीता :** (रोते हुए) हा.... ! स्वामी ! ! तुम कहाँ हो ? हा.... !
लक्ष्मण.... ! मेरी रक्षा करो । स्वामी... ! स्वामी.... !

स्वामी अब रक्षा करो, निज मान की ।
रो-रोकर तुमको पुकारे जानकी ॥ स्वामी...
मारने मृग को मैंने भेजे प्रभो,
सुनकर आवाज लखन भेजे प्रभो ।
भंग कर दी शाँ लखन की आन की,
रो-रोकर तुमको पुकारे जानकी । स्वामी...
दुष्ट रावण ने छला निज चाल से,
ना निकल सकती इसके जाल से ।
सुन लो मेरी आवाज अर्न्तध्यान की,
रो-रोकर तुमको पुकारे जानकी । स्वामी...
सूने बन में कोई, अपना नजर आता नहीं,
कोई तारागण भी, राह दिखलाता नहीं ।
नहीं है उम्मीद अब अपने प्रान की,
रो-रोकर तुमको पुकारे जानकी । स्वामी...

**(श्री हरि शंकर शर्मा अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**(रावण का सीता को रथ पर बिठाकर आकाश मार्ग से ले जाना । सीता का रुदन करना, हा लक्ष्मण ! हा राम !)**

**॥ दोहा ॥**

क्रोधवंत तब रावन, लीन्हिसि रथ बैठाइ ।
चला गगन पथ आतुर, भय रथ हाँकि न जाइ ॥

**पर्दा गिरना**

# जटायु रावण युद्ध

## (सीता हरण लीला)

**सीन दसवाँ**

**स्थान :** जंगल का मार्ग ।

**दृश्य :** रावण रथ द्वारा आकाश मार्ग से सीता को ले जा रहा है । जटायु जमीन पर आराम कर रहा है ।

## पर्दा उठना

॥ चौपाई ॥

बिबिध बिलाप करति बैदेही । भूरि कृपा प्रभु दूरि सनेही ॥

**सीता :** (रोते हुए) नाथ कहाँ हो? लक्ष्मण! मुझे इस पापी से छुड़ाओ।

दोष मेरा कुछ नहीं है, नाथ! अबला नार हूँ ।
किस तरह आकर मिलूँ, इस दुष्ट से लाचार हूँ ।
जानकी बार बार रोती है ।(२)...
प्रभु को पुकार-२ प्रभु को पुकार रोती है। जानकी..
गम की दास्ताँ, किसको सुनाऊँ,
रो-रोकर यूं, नीर बहाऊँ ।
जानकी अश्रु डार रोती है। जानकी..
पंचवटी पै कोई न हमारा,
कोई तो आके दे दो सहारा ।
जानकी हिचकी मार रोती है। जानकी..
ये क्या तूने रची विधाता,
अपना कोई नजर नहीं आता ।
जानकी खाके पछाड़ रोती है। जानकी..
भेजे थे मैंने अपने दिवरिया,
लाये न अब तक कोई खबरिया ।
जानकी कर विचार रोती है। जानकी..

**(श्री हरिशंकर शर्मा अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**जटायु :** (चौंककर) हैं... ? यह रोने की आवाज कहाँ से आई... ?

**सीता :** हे जटायु महात्मा। मेरी रक्षा करो।

॥ चौपाई ॥

गीधराज सुनि आरत बानी । रघुकुल तिलक नारि पहिचानी ॥
अधम निसाचर लीन्हें जाई । जिमि मलेछ बस कपिला गाई ॥

धावा क्रोधवंत खग कैसे । छुटइ पवि परबत कहूँ जैसे ॥
आवत देखि कृताँत समाना । फिर दसकंधर कर अनुमाना ॥

**जटायु :** (अचरज से) हैं ? यह तो मेरे नाम की पुकार आ रही है । (आकाश मार्ग की ओर उड़कर सीता को पहिचान कर) अरे ? यह तो जनक नन्दिनी सीता है । (रावण को देखकर क्रोध से) तुम किसी अबला का हरण किये जा रहे हो ?

**रावण :** सत्य है ।

**जटायु :** यह सत्य तुम्हारे लिये लज्जा की बात है । देखने में तो तुम..... ?

**रावण :** (अभिमान से) नरेश हूँ..... ? लंका नरेश..... ?

**जटायु :** (क्रोध से) किन्तु..... ? कर्म राक्षसी किया है तुमने ।

**रावण :** (क्रोध से) चुप रहो ..... ? किसी भी नरेश को यह निडरता सहन नहीं हो सकेगी ।

**जटायु :** (व्यंग से) नरेश के लिये यह डूब मरने की बात है कि एक गिद्ध नरेश के बुरे कर्म की चेतावनी दे ।

**रावण :** (क्रोध से) जबान पर लगाम लगा बूढ़े ..... ? यदि कुशलता चाहता है तो मेरा रास्ता छोड़ दे ।

**जटायु :** (क्रोध से) मैं अपनी नहीं..... ? इस बिलखती अबला की स्वतंत्रता चाहता हूँ नरेश !

**रावण :** (क्रोधसे) लंकापति रावण के जीते जी तुम्हारी इच्छा पूरी नहीं हो सकेगी बूढ़े ।

**जटायु :** (क्रोध से) अनर्थ करने का इतना साहस मत करो नरेश ! जो इस अबला को..... ?

**रावण :** (व्यंग से) छोड़ दूँ..... ? हा... हा... हा...।अरे मूर्ख ! तू अपनी औकात को देख..... ? और मेरी शक्ति का अनुमान कर ।

कहाँ तू है कहाँ मैं हूँ, कहाँ मुझसे लड़ाई है ।
जरा सी चींटी और, पर्वत पर चढ़ाई है ।

तुझे अपना विरोधी, देखकर भी शर्म आई है ।
मलूँ हाथों से भुनगे को, नहीं मेरी बड़ाई है ।

**जटायु :** (क्रोध सं) अरे अभिमानी ! जब मौत की आँधी का झोका आयेगा तब सारा बल धरा रह जायेगा ।

**रावण :** (अभिमान से) अरे अज्ञानी ! तू नहीं जानता कि मैंने देवताओं पर विजय पाई है ।

मैं अगर चाहूँ तो, नभ मण्डल में हलचल डाल दूँ ।
पर्वतों को चीर दूँ, जलथल में हलचल डाल दूँ ।
फेर दूँ लोकों को, अस्ताचल में हलचल डाल दूँ ।
पट पवन का फाड़ दूँ, बादल में हलचल डाल दूँ ।
मार दूँ ठोकर तो, पग में धूल भूमण्डल बने ।
क्रोध से देखूँ तो, सागर सूख कर जंगल बने ।
हा... हा... हा... ।

**जटायु :** ओह... इतना अभिमान..... ?

दया कर अबला पर, क्यों इतना जुल्म करता है ।
सताकर तू इसे क्यों, पाप का भण्डार भरता है ।
रहा अब तक न और, तेरा भी मान दुनियाँ में ।
मिटेगा एक दिन देख, तेरा भी अभिमान दुनियाँ में ।

**रावण :** (क्रोध से) बूढ़े नादान ..... ! रावण को शिक्षा देने का ध्यान..... ! चल हट..... ! मेरा रास्ता छोड़..... ?

**जटायु :** (क्रोध से) नहीं..... ?

करूँगा इसकी रक्षा, राह में तेरी अड़ूँगा मैं ।
धर्म का पक्ष लेकर, पाप से कुश्ती लड़ूँगा मैं ।

**(दोनों में युद्ध होना। रावण का मुर्छित हो जाना)**

**।। चौपाई ।।**

चौचन्ह मारि बिदारेसि देही । दंड एक भइ मुरछा तेही ॥

**जटायु :** आओ बेटी सीता ! अन्यायी मूर्छित हो गया। भगवान ने तुम्हारी खूब रक्षा की ।

**॥ चौपाई ॥**

तब सक्रोध निसिचर खिसिआना । काढ़ेसि परम कराल कृपाना ।
काटेसि पंख परा खग धरनी । सुमिरि राम करि अदभुत करनी ।

**रावण :** (होश में आकर क्रोध से) नहीं..... ! कदापि नहीं..... !

(रावण द्वारा तलवार से जटायु के पंख काटना । जटायु का घायल होकर जमीन पर गिरना)

**जटायु :** (कराहते हुए) हाय ..... ! बेटी सीता ..... ! अब मैं विवश हो गया । अन्यायी ने मुझे मजबूर कर दिया । क्षमा करना बेटी ..... । मैं तेरी कोई सहायता न कर सका । क्षमा करना बेटी ..... । क्षमा करना ..... ।

**सीता :** (रोते हुए) नहीं ..... ? जटायु महात्मा ... भगवान तुम्हें इसका फल जरूर देंगे । मैं तुम्हारे परोपकार को जिन्दगी भर नहीं भूल सकती । यदि प्रभु आयें तो उन को सारी बातें बता देना ।

**(रावण द्वारा रथ आगे ले जाना । सीता का रुदन करना)**

**पट परिर्वतन**

**स्थान :** रिष्यमूक पर्वत ।

**दृश्य :** सुग्रीव, हनुमान तथा अन्य वानरों के साथ पर्वत पर बैठे हुए हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

सीतहि जान चढ़ाइ बहोरी, चला उताइल त्रास न थोरी ।
करति बिलाप जाति नभ सीता, ब्याध बिबस जनु मृगी सभीता ।
गिरि पर बैठे कपिन्ह निहारी, कहि हरि नाम दीन्ह पट डारी ।
एहि विधि सीतहि सो लै गयऊ, बन अशोक महँ राखत भयऊ ।

**(सीता का वानरों को देखकर अपने आभूषण फैंकना)**

**सुग्रीव :** हे तात हनुमान जी ! वह देखो ..... ? सामने कोई चमकती हुई वस्तु नजर आ रही है ।

**(हनुमान का उठकर चमकती वस्तु के पास जाना। फिर उसे उठा लेना)**

**हनुमान :** (सुग्रीव के पास आभूषण दिखा कर सिर नवाकर) महाराज ! ये तो किसी नारी के आभूषण हैं ।

**सुग्रीव :** (देखकर) अच्छा तात ..... ! इन्हें हिफाजत से रख लो ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज !

पर्दा गिरना

# राम विलाप

## (सीता हरण लीला)

### सीन ग्यारहवाँ

**स्थान :** जंगल का मार्ग ।

**दृश्य :** राम की मृग मारकर वापसी ।

पर्दा उठना

**॥ चौपाई ॥**

रघुपति अनुजहि आवत देवी, बाहिच चिंता कीन्हि विसेषी ।
जनकसुता परिहरिहु अकेली, आयहु तात बचन मम पेली ।

**लक्ष्मण :** (राम को देखकर चरणों में गिरकर) भैया ..... ?

**राम :** (विस्मय से लक्ष्मण को उठाकर छाती से लगाकर) लक्ष्मण ! तुम यहाँ कैसे ..... ?
हे भाई लक्ष्मण ! कुशल तो है किस कारण तुम अकुलाये हो ।
चुप क्यों हो ? बोलो ? बोलो ? क्यों इतने तुम घबराये हो ।
क्या हुआ ! बताओ तो भाई, क्यों इतने उतावले आये हो ।
किसलिए अकेली सीता को, आश्रम में छोड़ चले आये हो ।

**॥ चौपाई ॥**

गहि पद कमल अनुज कर जोरी, कहेउ नाथ कछु मोहि न खोरी ।

**लक्ष्मण :** (पैरों में गिरकर) भैया ..... !

**॥ दोहा ॥**

क्यों आया ! क्या जानते ! नहीं आप यह राज ।
सुधि लेना भाई मेरी, यह थी आपकी आवाज ॥

तब भैया

सुनते ही श्री मुख की पुकार, चौंकी, फिर घबड़ाई माता ।
भयभीत, अधीर, व्यग्र होकर, अकुलाई चिल्लाई माता ।
इस समय यहाँ आना मेरा, उनकी आज्ञा सिर धारण है ।
परन्तु भैया..... ?
उनका भी इसमें दोष नहीं, आवाज आपकी कारण है ।

**॥ चौपाई ॥**

निसिचर निकर फिरहिं बन माहीं, मम मन सीता आश्रम नाहीं ।

**राम :** भैया लक्ष्मण होनी के आगे किसी का दोष नहीं है ।
मारीच बना था माया मृग, यह गहरी चाल उसी की थी ।
मेरे स्वर में मरते-मरते, आवाज विशाल उसी की थी ।
इस कारण सोच रहा हूँ मैं, कुछ तो है बीती आश्रम में ।
कहता है मेरा बाम नेत्र, अब नहीं जानकी आश्रम में ।

**लक्ष्मण :** (चरणों में गिरकर रोते हुए) नहीं भैया जी.. ! ऐसा न कहो ! मेरी रेखा पार करने का साहस किसने कर लिया ।

**राम :** हमारे दुर्भाग्य ने लक्ष्मण ! (लक्ष्मण को उठाकर) चलो... । चलते हैं और कुटिया पर जानकी जी का पता करते हैं ।

**लक्ष्मण :** (सिर झुकाकर) चलिए भैया जी.... ? शीघ्र चलिए... ।

**(राम-लक्ष्मण का पंचवटी पर आना)**

**॥ चौपाई ॥**

अनुज समेत गए प्रभु तहवाँ, गोदावरि तट आश्रम जहवाँ ।
आश्रम देखि जानकी हीना, भए विकल जिस प्राकृत दीना ।
लछिमन समुझाए बहु भाँती, पूछत चले लता तरु पाँती ।
पूरन काम राम सुख रासी, मनुज चरित कर अज अबिनासी ।

**राम :** (कुटिया को सूनी देखकर) सीते..... ! सीते..... !

सीते..... !(रोते हुए)

हे खग, मृग, भ्रमर बृन्द, तुमने वह मृग नयनी देखी।
कोकिले ! कूक कर बतला दे, तूने कोकिल बयनी देखी।
हंसो ! मत हंसो, बताओ तो, चलकर उस राजहंसिनी को।
सिंहो ! गरजो, इतना कह दो, देखा है मैथिली सिंहनी को।
हे पहरेदारों बन वृक्षों ! बोलो बनदेवी किधर गई।
हे कुटी-२ ! तू ही बतला, वह इधर गई या उधर गई।
हे प्रगति बता चन्द्रा बन की, किस ओर चकोर किशोर गई।
मुझ पत्नी वाले की एकमात्र, वह पतिव्रता किस ओर गई।
सबर कर 'लेना, मैं ढूँढने तुझे आता हूँ।
ढूंढ कर मानूँगा, मैं तेरी कसम खाता हूँ।
तेरे कहने से मृग की छाल, जब लेने को गया।
मिला मारीच मृग की खाल, में जब ध्यान भया।
समझता था मैं मन में, वह बीता इस बन में।
कुटी तू ही बता दे, छुपी हो जिस उपवन में।
तेरी आवाज भी अब, सुनने को तरसता हूँ।
ढूँढ कर मानूँगा.....(१)

मेरी सीता को वो पापी, क्या सतायेगा।
बाण जो हाथ में है, काल बनके जायेगा।
नहीं छू पायेगा वो, भस्म हो जायेगा वो।
अपनी करनी का फल, स्वयं ही पा जायेगा वो।
बिरह की वेदना उठती है, आप श्राप देता हूँ।
ढूँढ कर मानूँगा.....(२)

मेरे भगवान तेरी लीला भी, बड़ी आली है।
कहीं सूरज है कहीं, घोर घटा काली है।
पिता का छोड़ सहारा, सिया ने किया किनारा।
प्यारी सीता अब तूने, बीच मझदार मारा।
आ गले लग जा, अपनी बाँह फैलाता हूँ।
ढूँढ कर मानूँगा.....(३)

**(श्री अशोक पचौरी अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**लक्ष्मण :** भैया ! धीरज रखिये । चलिये ..... ? माता को बनों में खोजते हैं ।

**(राम-लक्ष्मण का आगे जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

एहि विधि खोजत बिलपत स्वामी, मनहुं महा बिरही अति कामी ।

# जटायु उद्धार

## (सीता हरण लीला)

(पर्दे के पीछे से आवाज आ रही है... ? हा... राम ! हा.. राम ! !)

**राम :** (चौंककर) हैं ? कौन बोला .... ? किसने पुकारा .... ? हे लक्ष्मण ! ये मेरा नाम लेकर कौन पुकार रहा है ?

**लक्ष्मण :** भैया ! मैं अभी पता करता हूँ ।(आवाज की सीध में जाना) (वापिस आकर घबड़ाते हुए) भैया ... ? गजब हो गया । महात्मा जटायु घायल पड़े हैं । शीघ्र चलिये भैया !

**राम :** चलो ..... ? लक्ष्मण ..... !

**(राम-लक्ष्मण का जटायु के पास जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

आगें परा गीध पति देखा, सुमिरत राम चरन जिन्ह रेखा ।

**राम :** (जटायु के पास आकर) हे परोपकारी ! किसने पीड़ा दी है प्राणों में ।

**जटायु :** हट जाओ ..... ? मुझे माता का मन्त्र जपने दो । हा... राम ! हा... !

**राम :** (रोते हुए) हे गीधराज ! अभागा राम तुमको प्रणाम करता है । (गीधराज को अपनी जंघाओं पर लिटाकर) तुम्हारी यह दशा किस अन्यायी ने बना दी है गीधराज ..... ?

**जटायु :** प्रभो ! वन के इस सुनसान वातावरण में मैंने किसी अबला नारी का करुण विलाप सुना तो मुझसे रहा नहीं गया ।

**राम :** नारी का करुण विलाप..... ? तुमने उस नारी को देखा है बोलो जटायु..... ।

**ज़टायु :** हाँ देखा है। पानी .....

**राम :** लक्ष्मण ! जल्दी पानी लाओ ।

**(लक्ष्मण का पानी लाकर पिलाना)**

**जटायु :** लक्ष्मण ..... ! राम ..... ! लक्ष्मण ..... ! हाँ इन्हीं नामों से पुकारती थी वह !

**राम :** (व्याकुल होकर रोते हुए) वह देवी सीता थी । वह इसी राम की सीता थी ।

**जटायु :** मैं जानता हूँ भगवन ! किन्तु अब तो वह देवी बहुत दूर जा चुकी होगी। मैंने उस देवी की सहायता करनी चाही तो उस दुष्ट राक्षस ने ... मैं निहत्था ... वृद्ध ... प्रहारों की पीड़ा से अचेत होकर गिर पड़ा और वह देवी हा ... राम हा ... लक्ष्मण ... पुकारती रही। वह पापी ... दक्षिण दिशा की ओर विमान द्वारा... वह रा... रा.. रा...

**(वृद्ध जटायु दम तोड़ देता है)**

**॥ दोहा ॥**

अबिरल भगति माँगि बर, गीध गयउ हरिधाम ।
तेहि की क्रिया यथोचित, निज कर कीन्ही राम ॥

**राम :** (रोते हुए जटायु को झकझोरते हुए) बोलो ..... ? बोलो जटायु ..... ? लक्ष्मण ! सुना तुमने ..... ? कोई दुष्ट राक्षस सीता का हरण कर ले गया है, जटायु ने सीता की रक्षा में प्राणों की बाजी लगा दी किन्तु हमारा दुर्भाग्य .. ? जटायु अधिक बोल न सके। हमारा दुर्भाग्य हमसे खिलवाड़ कर रहा है ..... !

**लक्ष्मण :** भैया जी ! यूँ बिलखने से भाग्य की रेखा नहीं मिट सकेगी ।

**राम :** (रोते हुए) हमारा दुर्भाग्य हमसे खिलवाड़ कर रहा है

लक्ष्मण..... ! (जटायु पर हाथ फेरकर)
हे भाई ! यह समाचार, कहना न पिताजी से जाकर ।
मैं राघव हूँ तो दुष्ट चोर, कुल सहित कहेगा खुद आकर ।
अच्छा जाओ हे भक्तराज ! जाओगे परम धाम को तुम ।
जाते-जाते इतना सुन लो, कर चले ऋणी राम को तुम ।

**(राम द्वारा जटायु का क्रिया-कर्म करना)**

**॥ चौपाई ॥**

गींध अधम खग आमिष भोगी, गति दीन्ही जो जाचत जोगी ॥
पुनि सीतहि खोजत द्वौ भाई, चले बिलोकत बन बहुताई ॥

**पर्दा गिरना**

# शबरी उद्धार

## (सीता हरण लीला)

**सीन बारहवाँ**

**स्थान :** शबरी की कुटिया ।
**दृश्य :** शबरी भगवान के ध्यान में लीन है ।

**पर्दा उठना**

**(फिल्म) "सत्यम् शिवम् सुन्दरम्"**

**शबरी :** ईश्वर सत्य है सत्य ही शिव है शिव ही सुन्दर है ।
जागो उठकर देखो जीवन ज्योति उजागर है ।
राम अवध में काशी में शिव कान्हा वृन्दावन में ।
दया करो प्रभु देखूँ इनको हर घर के आंगन में ।
ईश्वर.....(१)
एक सूर्य है एक गगन में, एक ही धरती माता ।
दया करो प्रभु एक बने सब, सबका एक सा नाता ।
ईश्वर.....(२)
(मन में सोचते हुए) एक मुद्दत बीत गई । मेरे गुरु मातंग मुनि ने कहा था कि इसी स्थान पर तुम्हें हरिदर्शन होंगे ।

परन्तु ..... ?
स्वर्ग के स्वामी मेरी, कुटिया में कैसे आयेंगे ।
वे तो पावन हैं फिर, अपावन को कैसे अपनायेंगे ।
(गाते हुए रास्ते में झाड़ू लगाना)

**गाना : (फिल्म) "सती अनुसुइया"**

बड़े प्यार से मिलना सबसे, दुनियाँ में इन्सान रे ।
क्या जाने किस भेष में बाबा, मिल जाए भगवान रे ।
कौन बड़ा है कौन है छोटा, ये है प्रभु का बगीचा ।
मत खींचो तुम दीवारें, इन्सानों के दरम्यान रे ।
क्या जाने .....(१)

**साधू :** (प्रवेश कर उड़ती धूल से क्रोधित होकर) अरे ..... ? अन्धी हो क्या ..... ? प्रभात की हरि वेला में धूल के अलावा और भी कुछ सूझ पड़ता है ।
लगी धुन राम दर्शन की, बड़ी आई भगत बन के ।
उड़ाती फिर रही है धूल, मारग में ऋषिजन के ।

**शबरी :** क्रोध न कीजिए साधू महाराज ... बुद्धिहीन हूँ ।
अपावन हूँ, धर्म हीन, और नीच जाति हूँ ।
घृणा की पात्र हूँ मैं, संसार का कूड़ा उठाती हूँ ।
न साधु सन्त सेवा का, कभी अवसर ही पाती हूँ ।
इस कारण से मारग में, सदा झाड़ू लगाती हूँ ।
कि रास्ता चलने वालों को, न कोई कष्ट हो पाये ।
जो आयें सन्त उनके, पांव में काटा न लग जाए ।
(व्यंग से) परन्तु महन्त जी ..... ?
तुम महन्त जी खोज रहे, उन्हें मोती की लड़ियों में ।
कभी उन्हें ढूँढा है क्या, भूखों की अन्तड़ियों में ।
दीन जनों के अंसुवन में, क्या कभी किया स्नान रे ।
क्या जाने .....(२)

**साधू :** (व्यंग से) अरे ..... ! वाहरी भगतिन ..... ! जैसे सारा

धर्म कर्म तेरे ही लिये तो रह गया है। और हम साधू-संन्यासी ... (क्रोध से) तू नीच .... ! अधम .... ! राम के पवित्र नाम को अपवित्र करने वाली दुराचारिणी ?

**शबरी :** (सिर नवाते हुए हाथ जोड़कर) इन संकुचित विचारों को त्याग दीजिए महामुनि ! श्री राम तो पावन हैं।

वह दयालु हैं दया दृष्टि भी, इस ओर डालेंगे।
पतित पावन जो ठहरे तो, मुझे पावन बना लेंगे।
क्या जाने कब अवधमुरारी।
आ जाये बनके भिखारी।
लौट न जाये कभी द्वार से, बिना लिए कुछ दान रे।
क्या जाने .....(३)

**साधू :** (क्रोध से पैर पटककर) तब खूब जोर-२ से चिल्लाया कर ... ? अरे पापिन ... ! यह तो सोच ... ? अगर भगवान तेरे घर आयेंगे तो पवित्र भी रह पायेंगे। हूँ.... ?

(साधू का जाना)

**शबरी :**

**फिल्म "नरसी भगत"**

लाखों तारे भरे गगन में, सबकी एक ही शान।
कौन है ऊँचा कौन है नीचा, कर्मों से पहचान।
पर उपकार करे फिर भी जो, मन अभिमान न माने रे.।
छोड़ बुराई करे भलाई, तजे पराई निन्दा।
सकल चराचर समझ बराबर, रहे धर्म पै जिन्दा।
भूलकर भी करे न लालच, दया करे अन्जान रे।
पर उपकार...
ना कोई छोटा ना कोई खोटा, हरि के सभी खिलौने।
जिसके मन में भेद न जन्मे, उसके श्याम सलौने।
पिंजड़ा छोड़ उड़े जब पंछी, क्या अपने बेगाने रे।
पर उपकार...

**॥ चौपाई ॥**

ताहि देइ गति राम उदारा, सबरी के आश्रम पगु धारा ।
सबरी देखि राम गृहँ आए, मुनि के बचन समुझि जिएँ भाए ।

**राम :** (लक्ष्मण के साथ प्रवेश करके) बूढ़ी माँ ! थोड़ी देर विश्राम करने का अवसर मिल सकेगा ।

**शबरी :** (दुखी होकर) अवसर तो मिल जायेगा किन्तु ..... ?

**राम :** किंतु क्या..... ? कहते-कहते रुक क्यों गई शबरी !

**शबरी :** (सकुचाकर) आप ..... ? मुझसे परिचित होते हुए भी कारण पूछना चाहते हैं। भगवन ! मैं घृणा की पात्र हूं। मनुष्य मेरी छाया पड़ने पर भी भ्रष्ट हो जाया करते हैं।

**राम :** हे भामिनी ! मैं तो एक भक्ति का नाता मानता हूं। जो भी प्राणी अटल विश्वास के साथ मेरे नाम का जप करता है, वही मुझको अत्यन्त प्यारा है ।

**शबरी :** (गदगद होकर पैरों में गिरकर) श्री राम... ? श्री राम...? मैं कितनी अभागिन हूं, जिन्हें दिन-रात खोजती फिरती थी वही..... ?

पधारे भीलनी के घर, खुद त्रिलोक के मालिक हैं ।
मेरा सत्कार करते हैं, जो खुद प्रथ्वी के मालिक हैं ॥

(अपनी ओढ़नी बिछाकर)

बैठिये प्रभु ! (चौंककर) अरे ..... ? मैं तो भूल ही गई प्रभु ! आपके दर्शन पाकर इतनी उतावली हो गई कि आसन की जगह अपनी ओढ़नी ही बिछा बैठी । (जाते हुए रुककर) अरे आसन क्यों ..... ? पहले तो श्रीराम के चरण धो लूँ..... ? अरे..... ? मेरी बुद्धि सचमुच ही मलीन है। बहुत आगे की सोचने लगी किन्तु..... । प्रभु के खाने पीने की ओर ध्यान ही नहीं दिया । (सोचते हुए) आखिर मैं पहले करूँ तो क्या करूँ ?

**राम :** (मुस्कुराकर) किस गहरी चिन्ता में डूब गई हो शबरी मां ?

**शबरी :** (हाथ जोड़कर) वृद्धावस्था अधीर होती है प्रभो .... ?
(आसन लाकर बिछाकर) बैठिये प्रभो ..... ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

कंद मूल फल सुरस अति, दिए राम कहूं आनि ।
प्रेम सहित प्रभु खाए, बारम्बार बखानि ॥

**शबरी :** (डलिया में बेर लेकर) खाइये प्रभो ..... ! मैंने मुद्दतों से इकट्ठे किये हैं ।

**(श्री राम का बेर खाना । शबरी द्वारा चख-२ कर मीठे बेर श्री राम को देना)**

**राम :** (हंसकर) अरे शबरी मां ..... ! ये बेर तो बहुत मीठे हैं । लक्ष्मण ये बेर..... !
स्वर्ग के पकवान हैं, या मेवों के उत्तम ढेर हैं ।
कौन कहता है कि ये, शबरी के झूठे बेर हैं ॥
(एक बेर लक्ष्मण को देते हुए) लो भाई... ! एक बेर तुम भी खाओ .... !
(लक्ष्मण का बेर लेकर प्रभु की निगाह बचाकर पीछे की ओर फैंक देना)

**॥ व्यास : ॥**

कर तो डाला यह कार्य मगर, मन में कुछ खटका बना रहा ।
अन्तर्यामी की आँखों से, यह भेद भला कब छुपा रहा ।
यह कथा अगाड़ी आयेगी, द्रोणागिरि जाकर गिरा वही ।
श्री रघुराई की इच्छा से, ओषधि संजीवनि बना वही ।
जिस समय लषण के शक्ति लगी, हनुमान वही तो लाए थे ।
तब इसी बेर की बूटी ने, लक्ष्मण के प्राण बचाये थे ।

**लक्ष्णण :** अब चलिएगा नहीं ..... । भैया जी ..... !

**राम :** हाँ ... । अवश्य ... । अच्छा ... । देवी ! आज्ञा दो .. ।

**शबरी :** (पैरों में गिरकर) प्रभो ! अब किस ओर जाने की इच्छा है ।

**राम :** (दुखी होकर) हे भीलनी ! तुम्हारे राम किसी अभिशाप के सताए हुए मारे-२ फिर रहे हैं । पिछले दिनों किसी अन्यायी ने तुम्हारी पुत्र वधु सीता का हरण कर लिया है शबरी माँ !

हम दोनों भाई राम-लषण, बनवासी बनकर आए थे ।
सीता को अपने साथ-साथ, इस दण्डकबन में लाए थे ॥
दुर्दिन ने ऐसा कर डाला, उस ओर पिता का मरण हुआ ।
इस ओर स्वर्ण मृग के कारण, आश्रम से सीता हरण हुआ ॥

॥ दोहा ॥

तुम भी हे बनवासिनी, बतलाओ कुछ राय ।
कहाँ जायें ? किससे कहें ! क्या हम करें उपाय ॥

**शबरी :** (दुखी होकर) वधू सीता का हरण ..... । शिव ..... ! शिव ..... ! भला वह अन्यायी इस अनर्थ का बोझ कैसे सहन कर पायेगा। (चरणों में गिरकर) प्रभु ! आप सर्वव्यापक हैं, फिर भी आप पूछते हैं तो सुनिए..... ।
आगे है रिष्यमूक पर्वत, सुग्रीव वहां पर रहता है ।
अपने भाई के कारण, अत्यन्त कष्ट वह सहता है ।
बस वहीं पधारें महाराज, सीता की सुधि मिल जाएगी ।
जो कली यहाँ मुरझाई है, वह उसी जगह खिल जाएगी ।

**राम :** अच्छा ..... । शबरी माँ ..... । हम तुम्हारे सेवा भाव से बहुत संतुष्ट हुए हैं ।

(राम-लक्ष्मण का जाना)

**शबरी :** (जाते हुए देखकर) मेरे प्रभो ..... ! (बेहोशी से गिरते हुए) मे.... रे... रा.... म... !

॥ चौपाई ॥

चले राम त्यागा बन सोऊ, अतुलित बल नर केहरि दोऊ ॥

**॥सीता हरण लीला समाप्त ॥**

**पर्दा गिरना**

◆ ◆ ◆

## नवां दिन (सातवां भाग)

# राम-सुग्रीव मित्रता लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. राम सुग्रीव मित्रता

(क) राम-सुग्रीव मित्रता

(ख) बालि वध

(ग) सीता की खोज

# राम-सुग्रीव मित्रता लीला

## (संक्षिप्त कथा)

श्री रामचन्द्र जी को विश्वास था कि सीता जी का भेद लगाने में सुग्रीव से बहुत मदद मिलेगी, इसी कारण राम ने सुग्रीव की ओर हाथ बढ़ा दिया। सुग्रीव को अहसान बन्धन में बांधने के लिए राम ने सुग्रीव को बालि के विरुद्ध उकसाया। श्री राम जानते थे कि बालि के सम्मुख लड़ने वाले की आधी शक्ति बाली में समा जाती है। इसी कारण उन्हें वृक्ष की आड़ में बालि का वध करना पड़ा। सुग्रीव किष्किन्धा नगरी का नरेश तथा बालिपुत्र अंगद को वहां का युवराज घोषित किया गया। पवन पुत्र हनुमान को श्री राम की अपार शक्ति पर विश्वास हो गया था कि यह कोई साधारण पुरुष नहीं हैं। दूसरे सुग्रीव की आज्ञा थी कि वह सीता की खोज में चारों दिशायें छान डालें !

निर्जन वन में जामवन्त, नल नील, अंगद सहित हनुमान जी अनेकों उलझनों में खेलते हुए बहुत दूर निकल गये। यह प्यास के कारण बहुत व्याकुल थे। उनकी निगाहें पानी की खोज में थीं कि उसी समय संपाती नामक गिद्ध (जटायु का बड़ा भाई) से उनकी भेंट हुई। नारी रक्षा हेतु भाई की मृत्यु का समाचार सुनकर संपाती ने गौरव का अनुभव किया साथ ही नेक कार्य में सहायता मांगने पर वानरों को संपाती ने बताया कि अन्यायी लंकेश ने सीता का हरण किया है।

चार सौ कौस समुद्र पार जाना केवल पवनपुत्र हनुमान के ही साहस का कार्य था और उन्होंने ही इसे किया।

उन्होंने ही इसे किया।

⇔

# पात्र परिचय

## (राम-सुग्रीव मित्रता लीला)

### पात्र परिचय

| | |
|---|---|
| १. राम | ७. दूत |
| २. लक्ष्मण | ८. नल |
| ३. सुग्रीव | ९. नील |
| ४. हनुमान | १०. जामवंत |
| ५. बालि | ११. बानर सेना |
| ६. अंगद | १२. संपाती (गीध) |

### स्त्री पात्र

| | |
|---|---|
| १. तारा | २. स्त्रियाँ चार |

# राम-सुग्रीव मित्रता

## (राम-सुग्रीव मित्रता लीला)

### सीन पहला

**स्थान :** रिष्यमूक पर्वत

**दृश्य :** सुग्रीव एक पत्थर की शिला पर खड़ा हुआ है। पास में हनुमान जी खड़े हुए हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

आगे चले बहुरि रघुराया। ऋष्यमूक पर्वत निअराया॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सींवा॥

अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटु रूप देखु तै जाई । कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ॥

(श्री राम-लक्ष्मण सहित वन मार्ग में घूमते हुए पर्वत के निकट पम्पा सरोवर के किनारे आते हैं)

**सुग्रीव :** (राम-लक्ष्मण को देखकर घबड़ाकर) हे तात हनुमान जी ! भाई बालि के छल-कपट ने मुझे इतना सचेत कर दिया है कि मैं अपनी छाया पर भी भ्रम कर बैठता हूँ। पम्पा सरोवर के किनारे पर मैंने अभी-२ दो व्यक्तियों को देखा है, मंत्री !

**हनुमान :** (सिर नवाकर) तब क्या हुआ ? महाराज ! अनेकों पथिक आते ही रहते हैं।

**सुग्रीव :** (डरते हुए) नहीं हनुमान जी ..... ? मैं अपनी शंका का समाधान चाहता हूँ। कहीं बालि ने अपने गुप्तचर तो नहीं भेजे हैं ? तुम ब्रह्मचारी का रूप धरकर जाकर देखो .... ।
हनुमान ! देखना तो जाकर, जो पुरुष इधर को आते हैं ।
दोनों ही तपसी तेजस्वी, मुझे नरसिंह समान सुहाते हैं ।
मातंग शाप बस बालि भ्रात, यद्यपि न यहाँ आ सकता है ।
पर मैं जब तक दुनियाँ में हूँ, वह चैन नहीं पा सकता है ।
सम्भव है उसके गुप्त दूत, मेरा यों भेद लगाते हों ।
छल से, बल से या कौशल से, वध करने मुझको आते हों ।
इसलिये प्रथम चतुराई से, सब पता ठिकाना लेना तुम ।
फिर हो मेरा सन्देह सही, तो मुझे इशारा देना तुम ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) महाराज ! आप किसी बात की चिन्ता मत कीजिए ? मैं अभी ब्राह्मण का रूप बनाकर जाता हूँ और उनके मनोभावों का पता लगाता हूँ।

(हनुमान का ब्राह्मण के भेष में राम-लक्ष्मण के पास में जाना)

**॥ चौपाई ॥**

बिप्र रूप धरि करि तहँ गयऊ । माथ नाइ पूछत अस भयऊ ।

चार सौ कौस समुद्र पार जाना केवल पवनपुत्र हनुमान के ही साहस का कार्य था और उन्होंने ही इसे किया।

उन्होंने ही इसे किया।

⇔

# पात्र परिचय

## (राम-सुग्रीव मित्रता लीला)

### पात्र परिचय

| | |
|---|---|
| १. राम | ७. दूत |
| २. लक्ष्मण | ८. नल |
| ३. सुग्रीव | ९. नील |
| ४. हनुमान | १०. जामवंत |
| ५. बालि | ११. बानर सेना |
| ६. अंगद | १२. संपाती (गीध) |

### स्त्री पात्र

| | |
|---|---|
| १. तारा | २. स्त्रियाँ चार |

# राम-सुग्रीव मित्रता

## (राम-सुग्रीव मित्रता लीला)

### सीन पहला

**स्थान :** रिष्यमूक पर्वत

**दृश्य :** सुग्रीव एक पत्थर की शिला पर खड़ा हुआ है। पास में हनुमान जी खड़े हुए हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

आगे चले बहुरि रघुराया। ऋष्यमूक पर्वत निअराया॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुल बल सींवा॥

अति सभीत कह सुनु हनुमाना । पुरुष जुगल बल रूप निधाना ॥
धरि बटु रूप देखु तै जाई । कहेसु जानि जियँ सयन बुझाई ॥

(श्री राम-लक्ष्मण सहित वन मार्ग में घूमते हुए पर्वत के निकट पम्पा सरोवर के किनारे आते है)

**सुग्रीव :** (राम-लक्ष्मण को देखकर घबड़ाकर) हे तात हनुमान जी ! भाई बालि के छल-कपट ने मुझे इतना सचेत कर दिया है कि मैं अपनी छाया पर भी भ्रम कर बैठता हूँ। पम्पा सरोवर के किनारे पर मैंने अभी-२ दो व्यक्तियों को देखा है, मंत्री !

**हनुमान :** (सिर नवाकर) तब क्या हुआ ? महाराज ! अनेकों पथिक आते ही रहते हैं।

**सुग्रीव :** (डरते हुए) नहीं हनुमान जी . . . . . ? मैं अपनी शंका का समाधान चाहता हूँ। कहीं बालि ने अपने गुप्तचर तो नहीं भेजे हैं ? तुम ब्रह्मचारी का रूप धरकर जाकर देखो . . . . ।
हनुमान ! देखना तो जाकर, जो पुरुष इधर को आते हैं।
दोनों ही तपसी तेजस्वी, मुझे नरसिंह समान सुहाते हैं।
मातंग शाप बस बालि भ्रात, यद्यपि न यहाँ आ सकता है।
पर मैं जब तक दुनियाँ में हूँ, वह चैन नहीं पा सकता है।
सम्भव है उसके गुप्त दूत, मेरा यों भेद लगाते हों।
छल से, बल से या कौशल से, वध करने मुझको आते हों।
इसलिये प्रथम चतुराई से, सब पता ठिकाना लेना तुम।
फिर हो मेरा सन्देह सही, तो मुझे इशारा देना तुम।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) महाराज ! आप किसी बात की चिन्ता मत कीजिए ? मैं अभी ब्राह्मण का रूप बनाकर जाता हूँ और उनके मनोभावों का पता लगाता हूँ।

(हनुमान का ब्राह्मण के भेष में राम-लक्ष्मण के पास में जाना)

**॥ चौपाई ॥**

बिप्र रूप धरि करि तहँ गयऊ । माथ नाइ पूछत अस भयऊ ।

को तुम्ह स्यामल गौर सरीरा । छत्री रूप फिरहु बन बीरा ।
कठिन भूमि कोमल पद गामीं । कबन हेतु बिचरहु बन स्वामी ।

**राम :** (दुखी होकर) आह..... ! विधाता..... !! तू हमें क्यों सता रहा है ?

जिस समय उस दुष्ट का, मैं पता कुछ पाऊँगा ।
आकाश में पाताल में, होगा वही पर जाऊँगा।
वह दिति के गर्भ में, प्रवेश कर छुप जायेगा।
उस जगह पर भी राम, मारकर ही उसे आयेगा।

**हनुमान :** (प्रवेश कर सिर नवाकर) हाँ..... ? हाँ..... ? आपके तेज से तो ऐसा ही मालूम पड़ता है..... ?

कठिन मार्ग है यहाँ का, बन है अति गम्भीर ।
आप कौन श्रीमान हैं? श्यामल गौर शरीर ।
हे अतिथि ! कृपा कर बतलाओ, किस चिंता में अटक रहे ।
क्या नाम कहाँ पर रहते हो किसलिए यहाँ पर भटक रहे ।

**राम :** (दुखी होकर) हे भाई !

तकदीर के मारे हैं हम तो, क्या अपना हाल बतायें हम ।
कुछ बस नहीं चलता होनी से, क्या बात तुम्हें समझायें हम ॥
हम भी खुद इस चक्कर में हैं, किस तरह बताए कहाँ के हैं ।
जब थे तब थे लेकिन अब तो, न यहाँ के हैं न वहाँ के हैं ॥
है भेष आपका ब्राह्मण सा, पर दीख रहे बनवासी हैं ।
वैसे ही हम भी इस बन में, राजा होकर संन्यासी हैं ॥

हम दुर्दिनों के सताए हुए हैं, भैया ! हमारा परिचय जानकर करोगे भी क्या ?

**हनुमान :** सुख-दुख तो छाया और धूप के समान होते हैं, महापुरुष और फिर..... । परिचय में केवल स्वार्थ ही नहीं, प्रेम भाव भी तो हो सकता है ।

**राम :** (दुखी होकर) विपदाओं में विश्वास भी किनारा कर जाया करता है, भैया !

हम अवध नृपति के लड़के हैं बनवासी होकर रहते हैं।
लक्ष्मण है इनका नाम सुनो, और राम मुझे सब कहते हैं।
पितु आज्ञा से बन आए हम, था पंचवटी पर वास किया।
थीं साथ हमारे सीता जी, था पर्णकुटी पर निवास किया।
वहाँ पंचवटी पर सीता जी, धोखा देकर के गईं हरी।
है धन्य तुमको भाई, जो हालत पूछी दर्द भरी।

**॥ चौपाई ॥**

प्रभु पहिचान परेउ गहि चरना, सो सुख उमा जाइ नहिं बरना ।
अस कह परेउ चरन अकुलाई, निज तनु प्रगटि प्रीति उर छाई ।
तब रघुपति उठाइ उर लावा, निज लोचन जल सींचि जुड़ावा ।

**हनुमान :** (असली रूप में आकर चरणों में गिरकर)

**॥ दोहा ॥**

पवन अंजनी सुत प्रभो, हनुमान है नाम ।
बानर जाति है मेरी किष्किन्धा है धाम ॥

सुग्रीव हमारे राजा हैं, जो इसी शिखर पर रहते हैं।
इस निर्जन पर्वत को स्वामी, सब रिष्यमूक गिरि कहते हैं।
जो काम आप करने आये, हम उसमें हाथ बटायेंगे।
धरती दुष्टों से हीन करूँ, इस प्रण पर प्राण लड़ायेंगे।

चलिये . . . ! प्रभु . . . ! महाराज सुग्रीव को दर्शन देकर उनसे मित्रता कीजिये और उन्हें दीन जान कर निर्भय कीजिए। वे जहाँ तहाँ करोड़ों बानर भेज कर सीता जी की खोज अवश्य करायेंगे।

(हनुमान का राम-लक्ष्मण को अपने कन्धों पर ले जाना)

**॥ चौपाई ॥**

एहि बिधि सकल कथा समुझाई, लिए दुऔ जन पीठि चढ़ाई ।
जब सुग्रीव राम कहुं देखा, अतिसय जन्म धन्य करि लेखा ।

**हनुमान :** (प्रवेश करके) महाराज की जय हो।

**सुग्रीव :** कहो . . . . . । क्या समाचार है हनुमान . . . . . !

**हनुमान :** (सिर नवाकर) महाराज ! दोनों युवक गुप्तचर नहीं, बल्कि ठीक आपकी ही तरह अपनों के सताये हुए हैं। (राम-लक्ष्मण की ओर मुड़कर सुग्रीव की ओर इशारा करके) प्रभो ! आप हैं रिष्यमूक पर्वत के बानर नरेश श्री सुग्रीव जी !

**राम :** (हाथ जोड़कर) हम नरेश को सादर प्रणाम करते हैं ।

**सुग्रीव :** (पैरों में गिरकर) नहीं..... ! प्रभो..... ! आपका तुच्छ दास हूँ । सेवा का अवसर चाहता हूँ, भगवन !

**हनुमान :** (सुग्रीव से राम-लक्ष्मण की ओर इशारा करके) महाराज ! आप हैं अयोध्या नगरी के राजकुमार श्री राम-लक्ष्मण ।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) मेरे बड़े सौभाग्य हैं जो आपके दर्शन हुए। सिला की तरफ इशारा करके) विराजिए भगवन !

(राम-लक्ष्मण का सुग्रीव से गले मिलकर पत्थर की सिला पर बैठ जाना)

**॥ चौपाई ॥**

सादर मिलेउ नाइ पद माथा । भेंटेउ अनुज सहित रघुनाथा ।
कपि करि मन बिचार एहि रीति । करिहहिं बिधि सो मन ए प्रीती ।

**सुग्रीव :** (सिर झुकाकर) प्रभो ! आप भी मेरी तरह अपनों के सताए हुए हैं। किन्तु..... । मैं समझ नहीं सका..... । आखिर इस निर्जन वन में आने का क्या कारण है ।

**राम :** (दुखी होकर) नहीं ! तात सुग्रीवजी ! हम सताये हुए नहीं हैं। यह तो हमारा सौभाग्य था कि हम अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करने में समर्थ हुए। परन्तु ।

**सुग्रीव :** (अचरज से दुखी होकर) परन्तु..... । क्या प्रभो..... ।

**राम :** (दुखी होकर) हमारे बनवास का समय समाप्त होने ही को था कि दुर्भाग्य ने हम पर आक्रमण कर दिया। पंचवटी पर हमारी किस्मत धोखा दे गई। पत्नी सीता अकेली जाने कहाँ समा गईं। अब तुम्हीं बताओ...। मैं क्या करू... ! किधर जाऊं..... ! कैसे सीता का पता लगाऊँ..... !

**सुग्रीव :** (ठंडी सांस लेकर दुखी होकर) प्रभो ! यह तो आपके साथ बहुत धोखा हुआ है। (सोचते हुए) अरे..... ! हाँ..... ! याद आया..... । प्रभो ! एक दिन आकाश मार्ग से मैंने किसी नारी की करुण पुकार सुनी थी। भगवन !

मैं खड़ा हुआ एक दिवस, यहाँ अपना दिल बहलाता था।
आकाश मार्ग से रथ स्वामी, सुन्दर एक उड़कर जाता था।
सुकुमारी राजकुमारी एक, उस रथ में रोती जाती थी।
कहती थी राम-राम लक्ष्मण, रो-रोकर रुदन मचाती थी।
तब राम-राम कह सीता ने, आभूषण पट यहाँ डाले थे।
वे तुम्हें दिखाता हूँ, भगवन, जो अब तक मैंने संभाले थे।
हे तात हनुमान जी ! उन आभूषणों को ले आओ ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

(हनुमान का आभूषण लाकर सुग्रीव को देना)

(सुग्रीव द्वारा आभूषण राम के आगे करना)

**॥ चौपाई ॥**

मांगा राम तुरत तेहिं दीन्हा । पट उर लाइ सोच अति कीन्हा ।

**राम :** (आभूषणों में से कुण्डल हाथ में लेकर रोते हुए)

**॥ दोहा ॥**

है निशानी आज यह, मुझ दुखी के सामने ।
फाड़कर परदा निकल आओ, हा सीता पती के सामने ।
हा ! सीते ! यह वह ही कुण्डल है, जो कभी कान में रहता था ।
मैं इसके दर्शन को आता तब, यह ओट अलक ही गहता था ।
अब बिरहीं के हाथों आया, यह भूषण भी बिरही होकर ।
इसका भी जीवन नीरस है, मैं भी जीता हूँ रो रोकर ।
वैदेही की सुधि नहीं मिली, तो तेरा मिलना निष्फल है ।
लक्ष्मण ! तुम भी आगे आओ, देखो तो सीता का कुण्डल है ।

**लक्ष्मण :** (आगे आकर सिर झुकाकर) भैया ! शायद आप नहीं जानते..... ?

मैंने तो चरण निहारे हैं, देखे माता के कान नहीं।
मैं तो बिछुओं का सेवक हूँ, कुण्डल की कुछ पहिचान नहीं।
सिर झुकाता था सदा, चरणों में उनके नाथ में।
कुछ पता मुझको नहीं, क्या कान में क्या हाथ में।
पर, नाथ ! शकुन यह अच्छा है, खड़कन है तीर कमानों में।
जल्दी ही वह दिन आयेगा, कुण्डल होंगे उन कानों में।
कुन्डल वाली वैदेही का, इस भाँति हरण करने वाले।
अब सावधान होकर सोना, आते हैं रण करने वाले।

**हनुमान :** (गदगद होकर) धन्य हो ? धर्मावतार लक्ष्मण ! धन्य हो ?
हद नहीं मान की, और ज्ञान की सीमा नहीं।
पास भाभी के रहे, और कान तक देखा नहीं।

**सुग्रीव :** आप आदर्श भाई हैं, लक्ष्मण जी ! जिसने भाभी का मुँह तक भी देखना उचित न समझा और एक मेरा भाई बाली भी है। (राम के चरणों में गिरकर रोते हुए) ठीक आपकी ही तरह मेरी भी दुख भरी कहानी है, प्रभो !

**राम :** तब निसंकोच कह डालिये, सुग्रीव जी ! आखिर..... ?
तुम बन में किस कारण रहते हो..... ?

**॥ व्यास : दोहा ॥**

सखा बचन सुनि, हरषे कृपा सिंधु बलसींव ।
कारन कवन बसहु बन, मोहि कहहु सुग्रीव ।

**सुग्रीव :** (चरणों में गिरकर रोते हुए) हे रघुनन्दन !' एक समय की समय की बात है कि मयदानव का बेटा मायावी आधी रात को पम्पापुर में आया और मेरे भाई बाली को ललकारने लगा। बाली से सहा नहीं गया और वह दानव के सम्मुख आ गया तब वह दानव अपनी जान बचाकर डरकर भागा और एक गुफा में घुस गया।

**राम :** (गम्भीर होकर) फिर क्या हुआ ?

**सुग्रीव :** प्रभो ! मेरा भाई भी उस गुफा में घुस गया और मुझे

चेतावनी दे गया कि यदि एक माह तक मैं लौटकर न आऊँ तो घर जाकर मुझे मरा समझ लेना ।

**राम :** हूँ..... !

**सुग्रीव :** भगवन ! एक माह बाद उस गुफा से खून की धार निंकलने लगी तब मैं उस गुफा के मुँह पर पत्थर की सिला रखकर अपनी जान बचाने को भागा और पुरवासियों को सारा हाल सुना दिया तो पुरवासियों ने मुझे जबरदस्ती राजा बना दिया ।

**राम :** तब फिर..... !

**सुग्रीव :** प्रभो ! कुछ समय बाद मेरा भाई वापिस आ गया और मुझे राजा बना देख क्रोधित हो गया । उसने मेरा सारा राजपाट ही नहीं अपितु नारी समाज भी छीन लिया तब मैं जान बचाकर अपनी सुरक्षा के लिए इस पर्वत पर आ गया क्योंकि बाली मातंग मुनि के शाप के कारण यहाँ आने से डरता है ।

**॥ चौपाई ॥**

सुनि सेवक दुख दीनदयाला । फरकि उठीं द्वै भुजा बिसाला ॥

**राम :** (क्रोध से) बहुत हो चुका सुग्रीव जी !
बस,अधिक नहीं सुन सकता मैं, अब भुज को दंड तोलती है ।
मालूम मुझे यह होता है, उसके सिर मृत्यु बोलती है ॥
पी चुके बहुत शोणित अपना, अब उसका रक्त पिलायेंगे ।
सब राजपाट सुग्रीव तुम्हें, हम सन्धया तक दिलवायेंगे ।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) प्रभो ! हम दोनों की कहानी एक ही है क्यों ने हम आपस में एक दूसरे के मित्र बन जायें ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) बहुत सुन्दर विचार है । बानर राज ! (श्रीराम से) मैं आपसे भी विनती करूँगा प्रभो ! कि आप मैत्री का हाथ बढ़ायें ।

**राम :** (खुश होकर) तुमने तो हमारे मुँह की बात छीन ली, पवन

पुत्र !

**हनुमान :** तब फिर शुभ काम में देरी क्यों ! चलिये प्रभो ! अग्नि की साक्षी में मित्रता का प्रण करें ।

**राम :** हाँ..... !अवश्य ..... !

**सुग्रीव :** आइए प्रभो ..... ! मैं बानर हूँ और आप नर। मेरे साथ जो आप मैत्री करना चाहते हैं इसमें मेरा ही सत्कार है। यदि मेरी मैत्री आपको पसन्द हो तो मेरा यह हाथ फैला हुआ है आप इसे अपने हाथ में ले लें ।

**(श्रीराम द्वारा मुस्कराकर सुग्रीव का हाथ पकड़कर दबाना फिर सुग्रीव को छाती से लगा लेना हनुमान द्वारा दो लकड़ियों को रकड़ कर आग पैदा करना फिर फूलों द्वारा अग्निदेव का पूजन करना फिर श्रीराम और सुग्रीव के मध्य साक्षी रूप में रख देना। श्री राम और सुग्रीव द्वारा अग्नि की प्रदशिणा करना।)**

**॥ दोहा ॥**

तब हनुमंत उभय दिसि, की सब कथा सुनाय ।
पावक साक्षी देइ करि, जोरी प्रीति दृढ़ाइ ।

**राम :** सखे ! उपकार ही मित्रता का फल है और अपकार शत्रुता का लक्षण है। मित्र ! ये मेरे सूर्य के समान तेजस्वी तीखेबाण आज ही दुराचारी बाली का बध करेंगे ।

**॥ चौपाई ॥**

कह सुग्रीव सुनहु रघुबीरा । बालि महाबलि अति रनधीरा ।
दंदुभि अस्थि ताल देखराए । बिनु प्रयास रघुनाथ ढहाए ।

**सुग्रीव :** (डरते हुए) भला बाली से भी कोई लड़ सकता है... ? महाराज... !

**राम :** क्यों भाई... ? ऐसी क्या करामात है बाली में... ? ?

**सुग्रीव :** उसे अनोखा वरदान मिला हुआ है, प्रभो ! जब कोई उससे लड़ने आता है तो उसका आधा बल बाली में आ जाता है। बस... ? देखते-ही-देखते बाली उसे धूल चटा देता है।

**राम :** (विस्मय से) अच्छा . . . !

**सुग्रीव :** (चरणों में गिरकर) प्रभो ! आपके बाण प्रज्जवलित, तीक्ष्ण एवं मर्मभेदी हैं। यदि आप कुपित हो जायें तो इनके द्वारा समस्त लोकों को भस्म कर सकते हैं। मैं आपकी बाली से तुलना नहीं कर रहा हूँ और न अपमान ही कर रहा हूँ। मैंने अपने दुष्ट भाई का पराक्रम अपनी आँखों से देखा है (सामने की ओर इशारा करके) वह देखिये प्रभो. . . ! ये सात साल के विशाल एवं मोटे वृक्ष हैं। पूर्वकाल में बाली ने इन सातों वृक्षों को एक-एक करके कई बार बींध डाला है अतः प्रभो ! इनमें से किसी एक वृक्ष को एक ही बाण से छेद डालेंगे तो मुझे बाली के मारे जाने का विश्वास हो जायेगा।

**लक्ष्मण :** (मुस्कराकर) भैया राम के लिए यह कौन सी बड़ी बात है।

**सुग्रीव :** (चरणों में गिरकर) तो क्या इच्छा पूर्ति हो सकेगी प्रभो !

**राम :** (मुस्कराकर) क्यों नहीं. . . !

**(श्रीराम द्वारा सातों पेड़ों को एक बाण से एक साथ गिरा देना)**

**॥ चौपाई ॥**

देखि अमित बल बाढ़ी प्रीती । बालि बधव इन्ह भइ परतीती ॥
बार बार नावइ पद सीसा । प्रभुहि जानि मन हरष कपीसा ॥

**सुग्रीव :** (चरणों में गिरकर अचरज से) इतनी महान शक्ति . . . . . ! कहीं आप मानव रूप में . . . . . !

**राम :** (मुस्कराकर सुग्रीव को उठाकर) नहीं सुग्रीव जी ! बहुत छोटी सी उम्र में ही हमने बाण विद्या सीख ली थी तबसे हमेशा अभ्यास रहता है।

**सुग्रीव :** (खुश होकर) मुझे आपकी मित्रता पर गर्व है, प्रभो ! मुझे अब बाली से डरने की जरूरत नहीं रही।

**राम :** किन्तु डर हृदय से यों नहीं निकल पायेगा सुग्रीव जी ! बाली अपने को तब तक दुर्बल नहीं समझेगा जब तक

आप उसे अपनी शक्ति का सबूत न दे दें ।

**सुग्रीव :** (सोचते हुए) शक्ति का सबूत ..... ? किन्तु प्रभो ..... ? यह सब तो मेरे वश के बाहर की बात है । यदि आप मेरी सहायता करें तो ..... ?

**राम :** राम ने आपसे मित्रता का हाथ बढ़ाया है सुग्रीव ! उससे सहायता की बात न कहकर आज्ञा दीजिये । ये राम आपके साथ है क्योंकि बाली द्वारा आप पर अनर्थ हुआ है ।

**सुग्रीव :** (क्रोध से) और सुग्रीव उस अनर्थ का बदला चुकाना चाहता है ।

**राम :** तो फिर देर किस बात की है ?

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) आपके विश्वास की ।

**राम :** (गम्भीर होकर) दशरथ पुत्र विश्वासघाती नहीं कहलायेंगे, सुग्रीव !

**सुग्रीव :** (चरणों में गिरकर) तब ..... ? प्रभो ..... ! सुग्रीव भी आपको विश्वास दिलाता है कि वह सीता जी की खोज में कोई कसर बाकी नहीं रखेगा ।

**राम :** सुग्रीव जी ! हम लोग शीघ्र ही इस स्थान से किष्किन्धा को चलते हैं। तुम आगे जाओ और जाकर व्यर्थ ही भाई कहलाने वाले बाली को युद्ध के लिए ललकारो ।

**सुग्रीव :** (चरणों में झुककर) जैसी आज्ञा, प्रभो !

**(सुग्रीव का जाना। पीछे-पीछे राम-लक्ष्मण का हनुमान जी के साथ जाना और वन के भीतर वृक्षों की आड़ में अपने को छिपा कर खड़ा हो जाना।)**

**॥ चौपाई ॥**

तब रघुपति सुग्रीव पठावा । गर्जेसि जाइ निकट बल पावा ॥

# बाली वध

## (राम-सुग्रीव मित्रता लीला)

**सीन दूसरा**

**स्थान :** बाली के राजमहल का भीतरी भाग ।

**दृश्य :** बाली तारा के साथ बैठा है ।

**पर्दा गिरना**

**सुग्रीव :** (ललकारा) अरे दुष्ट बाली ! आतयायी ! बाहर आ.... ?

**बाली :** (अन्दर से व्यंग से) तारा ! लो देखो..... ? आज फिर उसे उल्टी समाई है । अरे दुष्ट सुग्रीव ! मृत्यु तुझे स्वयं ही यहाँ खीच लाई है ।

**सुग्रीव :** (क्रोध से) अरे..... ? अन्यायी..... ! क्या अब घर में छिपकर जान बचाना चाहता है ? पाप का फल भोगने के लिए बाहर क्यों नहीं आता है ?

**बाली :** ओ कायर ! कमीने ! अब भी तुझे लाज नहीं आई । अनेकों बार मेरे सामने से भागकर जान बचाई ।

**सुग्रीव :** आज सब मालूम हो जायेगा ।

**बाली :** (क्रोध से) तो ठहर..... ? अभी आता हूं । तेरा झगड़ा सदा के वास्ते मिटाता हूं ।

**॥ चौपाई ॥**

सुनत बाली क्रोधातुर धावा । गहि कर चरन नारि समुझावा ॥
सुन पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीवा । ते द्वौ बंधु तेज बल सींवा ॥
कोसलेस सुत लछिमन रामा । कालहु जीति सकहिं संग्रामा ॥

(बाली का चलना तब तारा द्वारा पैर पकड़ लेना)

**तारा :** (पैरों में गिरकर विनती करते हुए) हे स्वामी !

इस समय न रण करने जाओ, दिल मेरा बहुत धड़कता है ।
मैं नहीं समझती किस कारण, ये दायां नेत्र फड़कता है ।
रुक जाओ स्वामी ! हठ न करो, यह बात समझ में आई है ।
नहीं विजय मिलेगी आज तुम्हें, सुग्रीव के राम सहाई हैं ।

**बाली :** (विस्मय के साथ क्रोध से) कौन राम..... ?

राम जो बलवान है, तो मैं महाबलवान हूँ ।
गर वो है शक्तिमान, तो मैं सर्वशक्तिमान हूँ ।

छीन लूँ दुश्मन का, आधा बल मुझे वरदान है ।
युद्ध भूमि में तो बाली, भगवान का भगवान है ।
(तारा को धकेलते हुए) हट जाओ तारा..... ? मेरी वीरता पर कलंक मत लगाओ । मुझे कायर मत बनाओ ।

**॥ चौपाई ॥**

अस कहि चला महा अभिमानी । तृन समान सुग्रीवहिं जानी ॥

**बाली :** (सुग्रीव के सामने बाहर आकर क्रोध से) ठहर..... ? कमीने ! मुझे धोंस जमाता है ।
कयामत खींच लाई है, तुझे सुग्रीव मरने को ।
जरा तैयार हो जा कायर ! मेरे साथ लड़ने को ।

**सुग्रीव :** (क्रोध से)
कयामत किसकी आई है, यह समय ही बतायेगा ।
किया है कार्य जो तूने, फल अब उसका ही पायेगा ।

**बाली :** (क्रोध से)
बच निकल भागा था, छल कपट की चाल से ।
आज बचने न पायेगा, हरगिज अब मेरे हाथ से ।

**सुग्रीव :** (क्रोध से)
आज यह झगड़ा, मिटाना है सदा के वास्ते ।
बैर का बदला, चुकाना है सदा के वास्ते ।

**(दोनों में युद्ध होना)**

**॥ चौपाई ॥**

भिरे उभौ बाली अति तर्जा । मुठिका मारि महाधुनि गर्जा ॥
तब सुग्रीव बिकल होइ भागा । मुष्टि प्रहार बज्र सम लागा ॥
मैं जो कहा रघुवीर कृपाला । बंधु न होइ मोर यह काला ॥

**(बाली का सुग्रीव की छाती पर मुष्टि प्रहार करना । सुग्रीव का दाँव बचाकर श्री राम के पास आना)**

**सुग्रीव :** (घबड़ा कर हाँफते हुए)
हे राम ! तुम्हारे कहने से, यह झगड़ा मैंने मोल लिया ।

हे काल समान बालि मुझको, बल उसका मैंने तोल लिया ।
आज्ञा पर राम तुम्हारी ही, मेरे बाजू लड़ते ही रहे ।
तुम खड़े-खड़े तकते ही रहे, मुझ पर मुक्के पड़ते ही रहे ।

॥ चौपाई ॥

एक रूप तुम्ह भ्राता दोऊ । तेहि भ्रम तें नहिं मारेऊं सोऊ ।
कर परसा सुग्रीव सरीरा । तनु भा कुलिस गई सब पीरा ।

**राम :** हे तात सुग्रीव जी ! मुझे गलत मत समझिये..... ?

मैं सोच रहा था खड़ा-खड़ा, दोनों का वैर निकलने दूँ ।
यह दोनों भाई-भाई हैं, यदि मिल जायें तो मिलने दूँ ।
इतने पर भी मैं बार-बार, धन्वा पर बाण चढ़ाता था ।
तुम दोनों एक रूप के हो, इससे भी धोखा खाता था ।
अच्छा यह हार पहिन जाओ, जिससे मुझको पहिचान रहे ।
यह तुम पर कवच समान रहे, उसको भी हार का ध्यान रहे ।

(हार पहनाकर) अच्छा तात सुग्रीव जी !

जाओ और उससे लड़ो, बस केवल इतनी देर है ।
देख लेना तुम भी फिर, बाली यहीं पर ढेर है ।

**सुग्रीव :** (चरणों में सिर नवाकर) जैसी आज्ञा, प्रभो !

(सुग्रीव का दुबारा लड़ने जाना)

॥ चौपाई ॥

मेली कंठ सुमन कै माला । पठवा पुनि बल देइ बिसाला ।
पुनि नाना बिधि भई लराई । बिटप ओट देखहिं रघुराई ।

**सुग्रीव :** (ललकारते हुए) ओ दुष्ट बाली ! अबकी बार मैं तुझे जीवित नहीं छोडूँगा । ब्रह्माजी का वरदान पाकर तू ताकत के मद में चूर है । किन्तू मूर्ख ! तू नहीं जानता ! नीच कर्म करने से तेरी मन्जिल अब दूर है ।

**बाली :** (क्रोध से) अरे मूर्ख अज्ञानी ! बाली को शिक्षा देने का ध्यान ! सुन गीदड़ की जब मौत आती है तब वह बस्ती की ओर भागता है । इसलिये आ गया मुरदार ! तू आज मरने

के लिये।

**(व्यंग से)**

लो देखो आ गया, मुझे नीति बताने को।
चला है तुच्छ दीपक, चाँद को रास्ता दिखाने को।
अरे मूर्ख ! क्यों बुलाता मौत अपनी, आज मेरे हाथ से।
लौट जा यहाँ से अभी, समझा रहा हूँ बात से।

**सुग्रीव :** (क्रोध से) ओ दुष्ट पापी ! आ गया है काल तेरा नाश करने के लिये।

किया अपमान जो मेरा, मजा उसका चखाता हूँ।
तेरा विध्वंस करके, लाश कुत्तों को खिलाता हूँ।
न छोडूँगा जगत में, ऐसे पापी का निशां बाकी।
उड़ेंगे व्योम में पुरजे, न होंगी धज्जियाँ बाकी।
बनुँगा क्रोध की बिजली, झुलसा दूँगा जला दूँगा।
मिटाकर पल में जीवन, लाश कुत्तों को खिला दूँगा।

**बाली :** (व्यंग से) खूब ! बहुत खूब ! मालूम पड़ता है कि आज चींटी के भी पर निकल आये हैं। ओ दुष्ट काल तेरा है या मेरा यह समय बतायेगा।

न बाज आता है बोलने से, जबान फर-फर चला रहा है।
सहन मैं क़रता रहा हूँ जितना, डिठाई करता ही जा रहा है।
करेगा बक-बक जो अब भी, तो जीभ तेरी निकाल लूँगा।
पटक के पृथ्वी पै इक घड़ी में, यह जान तेरी निकाल दूँगा।
जबान को लगाम लगा पापी, क्या जीने से तंग आया है।
सामने आया है निडर होकर, न मेरा खौंफ खाया है।

**सुग्रीव :** (क्रोध से) अरे पापी ! तू उसे मारेगा क्या जिसका सहायक राम है।

सहे हैं सिर झुकाकर, आज तक कडुवे वचन तेरे।
पिये हैं विष के घूंट, सुन कर पापी वचन तेरे।
समझ ले कि मर गया तू, अपने ही अभिमान से।

बच गया तो मारा जायेगा, राम के इक बाण से ।

**बाली :** (क्रोध से) ओ दुष्ट पापी ! ठहर..... ?

चढ़ गया सिर पर घमण्डी, नीच पापी बेहया ।
इस कदर वाचाल जो, जवाँ पर आया कह गया ॥
सुन..... ? क्या तू नहीं जानता..... ?
मेरे आतंक से वैभव, कलेजा थाम लेता है ।
हैं क्या गिनती में वे, जिनका तू नाम लेता है ।

**सुग्रीव :** (क्रोध से) अरे मूर्ख अज्ञानी !

तुझे जब काल का, प्रहार आकर दबा लेगा ।
लगाकर ठोकरें कोई, तेरा शीश उछालेगा ।
तभी मूल्य समझेगा तू, जीवन की कहानी का ।
चिनगारी आग की थी, या बुलबुला तू पानी का ।

**बाली :** बुलबुला... पानी का... आ... हा... हा... अरे मूर्ख ! सुन...? बाली वह पर्वत है जिस पर दृष्टि जाना भी असम्भव है ।

खेल खेले बालकों में, वीर तो पाया न था ।
बच रहा था सामने, जब तक मेरे आया न था ।

**सुग्रीव :** ठीक है..... ?

बुरा भी जीव का अच्छा भी कर्माधीन होता है ।
किसी का नाश हो तो पहले, बुद्धिहीन होता है ।
राम के सम्मुख जो ठहरे, ऐसा न कोई इन्सान है ।
मनुष्य के चोले में आया, समझ ले साक्षात भगवान है ।

**(दोनों का लड़ना)**

**॥ चौपाई ॥**

बहु छल बल सुग्रीव कर, हियं हारा भय मानि ।
मारा बालि राम तब, हृदय माझ सर तानि ॥

(पटाखे की आवाज पर राम द्वारा छिपकर बाण मारना)

**बाली :** (बाण को पकड़े हुए घाव पर हाथ रखकर छटपटाते हुए)

आह ! दगा ! दगा ! धोखा ! धोखा ! ये किसका तीर करारा है ।
इन पेड़ों के पीछे छिप कर, मुझको किसने संहारा है ।
हाय ! किस पापी ने, चालाकी मेरे साथ की ।
चोट आ करके लगी है, तीसरे के हाथ की ।

**(बाली का जमीन पर गिर जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

परा बिकल महि सर के लागें । पुनि उठि बैठ देखि प्रभु आगें ।
हृदयं प्रीति मुख बचन कठोरा । बोला चितइ राम की ओरा ॥
धर्म हेतु अवतरेउ गोसाईं । मारेहु मोहि व्याध की नाईं ॥
मैं बैरी सुग्रीव पिआरा । अवगुन कवन नाथ मोहि मारा ॥

**राम :** (सामने आकर)
क्षत्री का धन्वा उठता है, निस्सार काम के लिये नहीं ।
खलदल जब तक संहार न हो, विश्राम राम के लिये नहीं ।

**बाली :** (कराहते हुए) हे भगवान..... !
होकर सुकंठ के संरक्षक, तुमने ही उसे उबारा है ।
इन वृक्षों के पीछे छिपकर, क्या मुझे तुम्हीं ने मारा है ।
बैरी को छल से वध करना, है शूरवीर का कर्म नहीं ।
छुपकर जो मेरा प्राण लिया, यह रघुवंशी का धर्म नहीं ।

**राम :** बाली ! हम तेरे पराक्रम को पहले से ही जानते थे ।
तूने वर ऐसा माँगा था, प्रत्यक्ष न मारा जायेगा ।
सम्मुख लड़ने वाले का, आधा बल तुझमें आ जायेगा ।
वरदान ब्रह्मा का नष्ट करें, ऐसा न स्वभाव हमारा है ।
बस, इन्हीं विचारों से हमने, छुपकर के तुझको मारा है ।

**बाली :** परन्तु प्रभो !
सुग्रीव हमारा भाई है, भाई-भाई हैं हम दोनों ।
समदर्शी की तो नजरों में, चाहिए एक ही सम दोनों ।
सुग्रीव मित्र है बालि शत्रु, यह कैसा न्याय विलक्षण है ।
रघुकुल के नायक उत्तर दें, वध करने का क्या कारण है ।

**॥ चौपाई ॥**

अनुज वधू भगिनि सुत नारी । सुनु सठ कन्या सम ए चारी ॥
इन्हहि कुदृष्टि बिलोकइ जोई । ताहि बंधें कछु पाप न होई ॥
मूढ़ तोहि अतिसय अभिमाना । नारि सिखावनि करसि न काना ॥
मम भुजबल आश्रित तेहि जानी । मारा चहसि अधम अभिमानी ॥

**राम :** वह कारण भी तुम्हें बताता हूँ, बाली !
कन्या, भगिनी, सुत की पत्नी, ये छोट भाई की नारी ।
जो इन्हें कुदृष्टि देखता है, वह वध के योग्य दुराचारी ।
सुग्रीव अनुज की भार्या को, तूने अपने घर में डाला है ।
इस कारण हमने बाण मार, तुझको समाप्त कर डाला है ।
हे मूर्ख ! तुझे अति अभिमान है । तूने स्त्री के सिखाने पर भी कान नहीं दिया । मेरे बाहुबल के आश्रित जानकर भी तू उसे मारना चाहता था ।
पावक को साक्षी देकर हम, बन चुके मित्र क्या सुना नहीं ।
दुख मित्र-मित्र का हरते हैं, यह वाक्य नीति का सुना नहीं ।
जो मेरी बिछुड़ी सीता को, मुझसे प्रण करे मिलाने को ।
क्या मैं कुछ भी न करूँ, उसकी तकलीफ मिटाने को ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

सुनहु राम स्वामी सन, चल न चातुरी मोरि ।
प्रभु अजहूँ मैं पापी, अंतकाल गति तोरि ।

**बाली :** (राम के पैर पकड़कर) हे प्रभो ! आपसे मेरी चतुरता नहीं चल सकती । किन्तु प्रभो ..... ?

सुग्रीव मित्र का तो प्रभु ने, मिलते ही कष्ट हटाया है ।
उसके कारण पृथ्वी पर से बानरपति बालि मिटाया है ।
अब खुद देखोगे सीता से, कब तक सुग्रीव मिलाता है ।
यह ध्यान रहे प्रभुता पाकर, सज्जन दुर्जन हो जाता है ।
निर्बल सुकंठ से यह आशा, वह सीता सुधि का काम करे ।
गीदड़ में शक्ति कहाँ है यह, जो नाहर से संग्राम करे ।

हाँ...? मुझसे प्रभु पहले मिलते, तो मैं अवश्य दिखला देता ।
पावक की साक्षी फिर होती, सीता से प्रथम मिला देता ।
मैं उसको खूब जानता हूँ, जो उन्हें चुराकर भागा है ।
मैंने उस तुच्छ अनाड़ी को, छै मास काँख में दाबा है ।
अच्छा जो बीती बीत गई, अब बकने से क्या होता है ।
अब तो सुकंठ का भाग जगा, यह बालि सदा को सोता है ।

॥ चौपाई ॥

सुनत राम अति कोमल बानी । बालि सीस परसेउ निज पानी ।
अचल करौं तनु राखहु प्राना । बालि कहा सुनु कृपा निधाना ।

**राम :** (बाली के सिर पर हाथ फेरते हुए) हे बाली..... !

अब तक न जानते थे हम यह, तू ऐसा है तू इतना है ।
बातें कुछ हो जाने पर तुझको, समझे हैं तू कितना है ।
जो कुछ इच्छा हो माँग बालि, बतला हम तुझको क्या वर दें ।
यदि मरना नहीं चाहता हो तो, अभी तुझे जिंदा कर दें ।

**बाली :** (व्यंग से मुस्कराकर)

॥ दोहा ॥

हे प्रभु ! क्या इसलिए ? जिन्दा करते आप ।
मेरे द्वारा सिया से, हो अति शीघ्र मिलाप ॥

**राम :** (सकुचाकर) नहीं बाली..... ! ऐसी बात नहीं है । मैं तो सरल स्वभाव वश कह रहा था ।

**बाली :** (चरण पकड़कर) हे स्वामी !

बरसों ऋषि मुनि हे स्वामी, तप करके कष्ट उठाते हैं ।
लेकिन मरने के ठीक समय, मुख से न राम कह पाते हैं ।
वह राम सामने है मेरे, ऐसा तो बड़भागी हूँ मैं ।
अब प्रभु ! तुम्हीं बतलाओ, जीकर और क्या करूँ मैं ।
वर देने को जब स्वयं कहा, तो अच्छा है कुछ ले लूँ मैं ।
अनुराग आप से हो मेरा, जिस जगह कर्मवश जन्मूँ मैं ।

(अंगद का हाथ श्री राम के हाथ में देकर)

इस अपने बालक अंगद का, यह हाथ में लो भगवन ।
अब अधिक नहीं बोला जाता, सेवक को आज्ञा दो भगवन ।

प्रभो ! अब मैं निश्चिंत होकर प्राण त्याग सकूँगा । आह ?
गला सूखा जाता है । अब नहीं बोला जाता है । आह.. !
राम ..... ! रा... म... ! रा... म !

(बाली का प्राण त्यागना)

॥ दोहा ॥

राम चरन दृढ़ प्रीति करि, बालि कीन्ह तनु त्याग ।
सुमन माल जिमि कण्ठ ते, गिरत न जानइ नाग ॥

॥ चौपाई ॥

राम बालि निज धाम पठावा । नगर लोग सब व्याकुल धावा ।
नाना विधि बिलाप कर तारा । छूटे केस न देह संभारा ।

**तारा :** (बाली के मृतक शरीर पर गिरकर) हा... ! प्राणनाथ... !
जीवन अधार..... !
जा रहे हो अब छोड़कर, मुझको कहाँ मंझधार में ।
आपके बिन कौन है, मेरा सकल संसार में ।
हाय..... ? हाय..... ? ? मेरे लिये संसार सूना हो गया । मैं किसके सहारे जीवित रहूँगी ?
उठता है हाय मेरा, संसार से सहारा ।
छोड़ा है किस पर, अंगद मेरा दुलारा ॥

## तारा का विलाप

तारा रानी यों रो-रो पुकारे, अब मैं जीऊँगी, किसके सहारे ।
गये थे लड़ने पती जो हमारे, मार डाले गये प्राण प्यारे ।
तारा रानी...
मैंने तुमको बहुत समझाया, पर तुम्हारी समझ में ने आया ।
तुम रणभूमि में क्यों सिधारे, अब मैं जीऊँगी किसके सहारे ।
तारा रानी...
रोती स्वामी तुम्हारी ये तारा, रोता अंगद तुम्हारा दुलारा ।

क्यों धोखा दिया प्राण प्यारे, अब मैं जीऊँगी किसके सहारे ।
तारा रानी...
आके बोली अमोली सुनाओ, मेरे दिल को तसल्ली बंधाओ ।
दिल के टुकड़े हुए अब हमारे, अब मैं जीऊँगी किसके सहारे ।
तारा रानी...
पिया मेरी तुम्हारी ये जोड़ी, तुमने मंझधार में क्यों छोड़ी ।
तुम अकेले हो सुरपुर सिधारे, अब मैं जीऊँगी किसके सहारे ।
तारा रानी...

**(श्री नन्ने खाँ अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**॥ चौपाई ॥**

तारा बिकल देखि रघुराया । दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया ॥
छितिजल पावक गगन समीरा । पंच रचित अति अधम सरीरा ॥

**राम :** देवी ! शान्ति करो ।

इस नाशवान के लिये तुम, क्यों इतना रंज मनाती हो ।
इक रोज सभी को जाना है, किसलिये फेर पछिताती हो ।
क्यों शोक वृथा अब करती हो, त्यागो इस शोक की माया को ।
यह दुनियाँ आनी जानी है, पहिचानो इसकी छाया को ।

**॥ चौपाई ॥**

उपजा ग्यान चरन तब लागी । लीन्हेसि परम भगति बर माँगी ।

**तारा :** (राम के चरणों में गिरकर) प्रभो ! अंगद को अपनी शरण में लीजिये और मेरा जीवन सार्थक कीजिये ।

**राम :** देवी ! चिन्ता मत करो । अंगद अब तुम्हारा नहीं, मेरा बेटा है ।

**तारा :** धन्य हो प्रभु ! आपके समान दयावान कौन हो सकता है ? जो शत्रु की संतान पर भी पुत्रवत् प्रेम करे ।

**॥ चौपाई ॥**

तब सुग्रीवहि आयसु दीन्हा । मृतक कर्म विधिवत सब कीन्हा ॥

**राम :** अच्छा..... ? सुग्रीव जी ! अब बाली का दाह संस्कार

करो ताकि उसकी आत्मा को शान्ति मिले ।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा प्रभो !

**(सुग्रीव का हनुमान तथा अंगद के साथ बाली की लाश को उठाना तभी तारा का अन्य स्त्रियों के साथ विलाप करना ।)**

| **तारा** | **सब स्त्रियाँ** |
|---|---|
| हा बाली ! बलवान शरीरा । | हाय बाली हाय रे ॥ |
| धरणी परा कैसा रणधीरा । | हाय बाली हाय रे ॥ |
| अंगद सुअन अनाथ बनाऔ । | हाय बाली हाय रे ॥ |
| तारा नारी कहाँ बिसराऔ । | हाय बाली हाय रे ॥ |

**(बाली की लाश को उठा ले जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

राम कहा अनुजहि समुझाई । राज देहु सुग्रीवहि जाई ॥
रघुपति चरन नाइ करि माथा । चले सकल प्रेरित रघुनाथा ॥

(सुग्रीव का हनुमान तथा अंगद के साथ राम-लक्ष्मण के पास लौट आना)

**राम :** भाई लक्ष्मण ! अब किष्किन्धा नगरी का राज्य राजा के बिना सूना पड़ा हुआ है इसलिये तुम जाकर पुरवासियों, ब्राह्मणों तथा पुरोहितों को बुलाओ और सुग्रीव को विधि पूर्वक राजा बनाओ और अंगद को युवराज पद से सुशोभित करो ।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा प्रभो !

**हनुमान :** (चरणों में गिरकर) प्रभो ! राजतिलक का कार्य तो आपके हाथों होना चाहिए । वानर समाज की ऐसी ही इच्छा है ।

**राम :** (हनुमान को उठाकर) तात हनुमान जी ! मैं पिताजी की आज्ञा वश चौदह वर्ष तक नगरी में प्रवेश नहीं कर सकता इसलिये तुम लक्ष्मण को साथ ले जाओ और सब काम विधिपूर्वक कराओ ।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) प्रभो ! पहले जानकी जी का पता लगाना चाहिये । यह कार्य तो बाद में भी होता रहेगा ।

**राम :** नहीं . . . सुग्रीव जी . . . . . ? ऐसे शुभ कार्य में देरी करना उचित नहीं है। इसके अलावा अब वर्षा का मौसम शुरू होने वाला है। आवागमन में कठिनाई होने के कारण सीता जी की खोज होना भी कठिन हो जायेगा। अत: मैं यहाँ पास ही पर्वत पर कुटी छाकर रहूँगा। तुम अंगद सहित राज्य करो और मेरे कार्य का सदा हृदय में ध्यान रखना।

**हनुमान :** (चरणों में गिरकर) धन्य हैं प्रभो ! आपकी उदारता धन्य है !
दे दिया प्रेमी को सब कुछ, पास रखा कुछ नहीं।
मित्र की चिन्ता है केवल, अपनी चिन्ता कुछ नहीं ॥

**सुग्रीव :** (गदगद होकर) ठीक कहते हो हनुमान जी ! मैं पतित, अपावन वानर जाति और नीच प्राणी था किन्तु भगवान ने मुझे भी पवित्र पावन और लोक का भूषण बना दिया। इससे कोमल स्वभाव और क्यो हो सकता है ?

**राम :** सुग्रीव जी ! इन बातों को छोड़िये और नगर में जाकर प्रजा का पालन कीजिये। भाई लक्ष्मण ! अब तुम इनके साथ चले जाओ और विधि पूर्वक राजतिलक का कार्य सम्पन्न कराओ।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा।

**॥ दोहा ॥**

लछिमन तुरत बोलाए, पुरजन विप्र समाज ।
राजु दीन्ह सुग्रीव कह, अंगद कहँ जुबराज ॥

**(सुग्रीव का राजतिलक)**

**आरती**

**सम्मिलित स्वर : बोलो . . . ? सुग्रीव महाराज की जय**

**सुग्रीव :** (सकुचाकर) नहीं . . . . . ? तात हनुमान जी ! यह सब भगवान राम की कृपा का फल है इसलिये जयकारे लगाओ . . . . . ? भगवान राम की जय।

**सम्मिलित स्वर : बोलो . . . ? भगवान राम की जय**

पर्दा गिरना

# सीता की खोज

## (राम-सुग्रीव मित्रता लीला)

### सीन तीसरा

**स्थान :** किष्किन्धा की तलहटी के पास का पर्वत।

**दृश्य :** राम लक्ष्मण के साथ दुखी हालत में बैठे हैं।

पर्दा गिरना

**॥ चौपाई ॥**

बरषा बिगत शरद रितु आई । सुधि न तात सीता कै पाई ॥
सुग्रीवहु सुधि मोरि बिसारी । पावा राज कोस पुर नारी ॥

**राम :** (दुखी होकर) भैया लक्ष्मण ! वर्षा का आगमन संसार को कितना सुन्दर और सुहावना बना देता है? परन्तु वियोगी के हृदय में विरद की अग्नि को भड़का देता है।

बन, नदी, नाले, सरोवर, सब ही हैं मनहर बने।
वृक्ष, पत्ते, फूल, फल, नित ये नये सुन्दर बने।
मोर, सारस, मीन, दादुर, मगन हैं रसधार में।
इक वियोगी ही अकेला, रो रहा है संसार में।

**लक्ष्मण :** (चरणों में गिरकर रोते हुए) आप सही कह रहे हैं, भैया? माता जानकी जी का भी यही हाल होगा। न जाने वे किस तरह विपदा में दिन बिता रही होंगी? याद में आँखों से आँसू बहा रही होंगी।

**राम :** (लक्ष्मण को उठाकर आँसू पौंछते हुए) तुम ठीक कहते हो लक्ष्मण . . . . . ? यह बिछोह रूपी बज्र जिस हृदय पर गिरता है उसी को चूर-चूर कर देता है।

विरह की वेदना जड़-जीव, सबके प्राण हरती है।
जहाँ गिरती है यह बिजली, वहीं विध्वंस करती है।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) स्वीकार करता हूँ ! किन्तु, एक प्रार्थना है . . ?

आज्ञा हो तो कह डालूँ..... ?

**राम :** हाँ..... ? हाँ..... ? अवश्य कहो..... ?

**लक्ष्मण :** (चरणों में गिरकर) प्रभो ! आप जैसे धीरवीर और गम्भीर पुरुष के लिए मुसीबत में इस प्रकार अधीर होना कहाँ तक शोभा देता है ? क्या पुरुषार्थ के बिना संकट को कोई बाँट लेता है ?

**राम :** (लक्ष्मण को उठाकर) तुम ठीक कहते हो लक्ष्मण ! भाग्य का दूसरा नाम ही पुरुषार्थ है इसीलिये कहता हूँ कि एक बार जानकी का पता पा जाऊँ तो काल को भी जीतकर मुसीबत से निकाल लाऊँ। परन्तु... ? अफसोस... ?

हे लक्ष्मण ! वर्षा बीत गई, अब शरद ऋतु आई है।
मैं बड़ा अभागा हूँ अब तक, सुधि नहीं सिया की पाई है।
कपिपति का मुझे भरोसा था, वह भी तो मुझसे दूर हुआ।
माया की महा तरंगों में, वचनों का बेड़ा चूर हुआ।

**॥ चौपाई ॥**

लछिमन क्रोधवंत प्रभु जाना । धनुष चढ़ाइ गहे कर बाना ॥

**लक्ष्मण :** (धनुष पर बाण चढ़ाकर चरणों में सिर नवाकर क्रोध से) प्रभो ! यदि आज्ञा पाऊँ तो सबसे पहले उस कपटी मित्र को ही ठिकाने लगाऊँ जिसने आज तक भी मुँह नहीं दिखाया। वचन देकर भी माता जानकी का कोई भी पता नहीं लगाया।

भरपूर उसे मैं शिक्षा दूँगा, जो झूठा बनकर बैठा है।
सब गर्व मिटाऊँगा उसका, जो राजा बनकर बैठा है।

हे नाथ ! चरणों की कसम खाता हूँ उसे अभी और इसी समय फरेब का मजा चखाऊँगा।

**राम :** (गम्भीर होकर) नहीं..... ? भाई लक्ष्मण..... ? जिसको एक बार मित्र बना लिया है उसकी भूल पर भी उसका सम्मान नहीं खोना चाहिए। तुम जाओ..... ?

और सुग्रीव को भय दिखाकर यहाँ ले आओ।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा प्रभो !

**(लक्ष्मण का जाना)**

**।। दोहा ।।**

तब अनुजहि समुझायऊ । रघुपति करुना सींव ।
भय देखाइ ले आबहु, तात सखा सुग्रीव ॥

**पर्दा गिरना**

## सीन चौथा

**स्थान :** सुग्रीव दरबार।

**दृश्य :** दरबार लगा है। सुग्रीव के साथ हनुमान, अंगद, जामवंत, नल, नील बैठे हुए हैं।

**।। चौपाई ।।**

इहाँ पवनसुत हृदयं बिचारा। राम काजु सुग्रीव बिसारा ॥
निकट जाई चरनन्हि सिरु नावा । चारिहु विधि तेहिकहि समुझावा ॥

**हनुमान :** (खड़े होकर सिर नवाकर) महाराज ! वर्षा ऋतु समाप्त हो गई है। यात्री भी आने-जाने लगे हैं। परन्तु..... ? आपने जो वचन दिया था क्या वह भी याद है..... ?

श्री महाराज तो महलों में, आनन्द राज का करते हैं।
उन मित्रों की भी सुधि है कुछ, जो गिरि कुटिया में रहते हैं।
दीखता मुनासिब तो यह है, अपना भी फर्ज चुका दें हम।
वे हमें राजपद दिला चुके, सीता से उन्हें मिला दें हम।

**।। चौपाई ।।**

सुनि सुग्रीव परम भय माना । बिषयं मोर हरि लीन्हेउ ग्याना ।

**सुग्रीव :** (भयभीत होकर) हे तात हनुमान जी ! तुम ठीक कहते हो। इस माया ठगिनी ने मेरा सारा ज्ञान हर लिया। मैं स्वयं शर्मिंदा हो रहा हूँ। अब ? अब क्या होगा ? हनुमान जी ! (माथे पर हाथ रखकर दुखी मन से) हे तात हनुमान जी !

इस राज मुकुट की ज्वाला ने, कर डाला ज्ञान भस्म मेरा।
मुँह कैसे उनको दिखलाऊँ अब, जब रहा न वहाँ मान मेरा।
वे शरणागत वत्सल हैं पर, यह भी सच है रघुवंशी हैं।
अपनायें तो पानी से हैं, बिगड़े तो सूरज वंशी हैं।
इसलिए हे तात हनुमान जी ! अब तुम सीता जी की खोज के लिए कुछ वानरों को चारों दिशाओं में भेजो और तुम स्वयं भी देश देशों में जाकर वानर सेना इकट्ठी करो।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

**॥ चौपाई ॥**

एहि अवसर लछिमन पुर आए । क्रोध देखि जहं तहं कपि धाए ।
तारा सहित जाइ हनुमाना । चरन बंदि प्रभु सुजस बखाना ।

**दूत :** (प्रवेश करके घबड़ाये हुए चरणों में गिरकर) महाराज ! अनर्थ हो गया ..... ? लक्ष्मण जी महान क्रोधित हुए किष्किन्धापुरी में पधार रहे हैं।

**सुग्रीव :** (भयभीत होकर) सुना ..... ? तात हनुमान जी ! आप जाइये और विनती करके लक्ष्मण जी को समझाइये।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

(हनुमान का जाना)

**लक्ष्मण :** (प्रवेश करके धनुष पर बाण चढ़ाकर क्रोध से)
इस पम्पापुर को देख अभी, इक बाण से इसे उड़ा दूँगा।
जो धोखा साथ किया मिलके, उसका सब मजा चखा दूँगा।

**हनुमान :** (चरणों में गिरकर) प्रभो ! आपकी जय हो। हे महाराज ! मन में शान्ति रखिये तथा दरबार में पधारिये।

**लक्ष्मण :** अच्छा ..... ? तात हनुमान जी ! चलिये।

**॥ चौपाई ॥**

करि बिनती मंदिर लै आए, चरन पखारि पलंग बैठाए ॥
तब कपीस चरनन्हि सिरुनावा । गहि भुजलछिमन कंठलगावा ॥

**(लक्ष्मण का हनुमान के साथ दरबार में जाना)**

**सुग्रीव :** (सिंहासन से उठकर चरणों में गिरकर) आपकी जय हो, प्रभो ! आसन ग्रहण कीजिए।

**(लक्ष्मण का सिंहासन पर बैठ जाना)**

**सुग्रीव :** (चरणों में गिरकर) हे नाथ ! मुझे क्षमा कीजिये। मैं स्वयं लज्जित हो रहा हूँ।

**॥ दोहा ॥**

दोष नहीं मेरा प्रभु, क्षमा करो भगवान ।
यह माया ठगिनी बड़ी, भुला दिया था ज्ञान ॥

**लक्ष्मण :** अच्छा ..... ? तात सुग्रीव जी ! अब आप सब हमारे साथ भगवान राम जी के पास चलिये।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

(सबका जाना)

**पर्दा गिरना**

**॥ दोहा ॥**

हरषि चले सुग्रीव तब, अंगदादि कपि साथ ।
रामानुज आगें करि, आए जहँ रघुनाथ ॥

## सीन पाँचवाँ

**स्थान :** किष्किन्धा पर्वत।

**दृश्य :** श्री राम व्याकुल बैठे हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

नाइ चरन सिरु कह करजोरी । नाथ मोहि कछु नाहिन खोरी ।
अतिसय प्रबल देव तब माया । छुटइ राम करहु जौ दाया ।

(सबका सिर नवाकर भगवान राम को प्रणाम करना)

**सुग्रीव :** (चरणों में गिरकर) भगवान !
माया के चक्कर में पड़कर, मेरी दुर्दशा हो गई है।
मैं खड़ा हुआ हूँ पागल सा, मति गति सब खो गई है।

बिरला ही है वह महापुरुष, जो कामिनी कंचन लिप्त नहीं ।
अन्यथा जगत की माया ने, कर दिया किसे विक्षिप्त नहीं ।
रघुवीर ! बाण भी रखा है, अपराधी भी चरणों में है ।
चाहे मारो या क्षमा करो, निर्णय प्रभु के हाथों में है ।

॥ चौपाई ॥

तब रघुपति बोले मुसुकाई । तुम्ह प्रिय मोहि भरत सम भाई ।
अब सोइ जतनु करहु मनलाई । जोहि बिधिसीता कै सुधि पाई ॥

**राम :** (सुग्रीव को उठाकर मुस्कराकर) हे तात सुग्रीव जी ! आप मुझे भरत के समान प्रिय हैं । अब..... ?
पिछली बातों को जाने दो, आगे का ध्यान धरो भाई ।
सीता का जिससे पता लगे, अब वह उपाय करो भाई ।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) बहुत अच्छा भगवन ! (हनुमान से) हे तात हनुमान जी ! समस्त वानर सेना हमारे सामने उपस्थित करो ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

॥ चौपाई ॥

ठाढ़े जहं तहं आयसु पाई । कह सुग्रीव सबहि समुझाई ॥

**सुग्रीव :** हे वानर, भालुओं ! प्रभु रामचन्द्र जी का कार्य मन लगा कर करो, इसी में सबकी भलाई है । तुम सब चारों दिशाओं में फैल जाओ और सीताजी का पता लगाओ । मगर याद रखना..... ? यदि एक माह के अन्दर सीताजी का पता लगाकर वापिस नहीं लौटे तो तुम सब मेरे हाथों मारे जाओगे ।

**बानर दल :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

**"भगवान राम की जय"**

(सबका जाना)

॥ दोहा ॥

वचन सुनत सब बानर, जहँ जहं चले तुरंत ।

तब सुग्रीव बोलाए, अंगद, नल, हनुमंत ॥

**सुग्रीव :** हे धीरमति सुजान नल, नील, जामवंत, अंगद और हनुमान ! सुनो . . . ? तब सब योद्धा दक्षिण दिशा को जाओ और सब किसी से सीताजी का पता पूछना। मन, क्रम, वचन से यही उपाय बिचारना जिससे राम जी का कार्य पूर्ण कर सको।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) ऐसा ही होगा महाराज !

**॥ चौपाई ॥**

आयसु माँगि चरन सिरु नाई, चले हरषि सुमिरत रघुराई ।
पाछें पवन तनय सिरु नावा, जानि काज प्रभु निकट बोलावा ।
परसा सीस सरोरूह पानी, कर मुद्रिका दीन्हि जन जानी ।
(सबका सुग्रीव को सिर नवाकर भगवान राम की जय बोलना)
(हनुमान जी का सिर नवाकर श्री राम के चरणों का स्पर्श करना)

**राम :** हे तात हनुमान जी ! तुम्हारे स्पर्श मात्र से मेरी अर्न्तआत्माओं में यह विश्वास हो चला है कि यह कार्य तुम्हारे ही द्वारा पूर्ण होगा।

**॥ दोहा ॥**

जाओ आना शीघ्र ही, सुधि लेकर बलवीर ।
वैदेही के दुख से, मेरा दुखी शरीर ।
सब प्रकार उनकी कुशल पूछ, फिर मेरी दशा सुना देना ।
निज दल बल का परिचय देकर, धीरज भी उन्हें बँधा देना ।
उनकी हा मणिमुदरी है यह, बजरंग उन्हें देते आना ।
मेरे हित भी प्रेमोपहार, तुम लौटती बार लेते आना ।

(मुँदरी देते हुए) हे तात हनुमान जी ! यह वही मुँदरी है जो सीता जी ने केवट को दी थी।

**हनुमान :** (चरणों में गिरकर) ऐसा ही होगा प्रभो ! आप किसी बात की चिन्ता न करें। आपका आशीर्वाद हमारे साथ है।

**बोलो सियापति रामचन्द्र की जय।**

(हनुमान कां सबके साथ जाना)

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

हनुमत जन्म सुफल करि माना, चलेउ हृदयं धरि कृपानिधाना ।

**॥ दोहा ॥**

चले सकल बन खोजत, सरिता सर गिरि खोह ।
राम काज लयलीन मन, बिसरा तन कर छोह ॥

**सीन छठवाँ**

**स्थान :** समुद्र का किनारा ।
**दृश्य :** सभी बानर सोच में बैठे हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

इहां बिचारहिं कपि मन माहीं, बीती अवधि काज कछु नाहीं ।
अस कहि लवन सिंधु तट जाई, बैठे कपि सब दर्भ डसाई ॥

**नल :** (दुखी होकर) अहा ..... ! वन, नदी, पर्वत और गुफाओं में बहुत कुछ ढूँढा । परन्तु ..... ? जानकी जी का पता कहीं नहीं पाया । अब ..... ? अब कौन सा मुँह लेकर हम वापिस जायेंगे ..... ?

**अङ्गद :** (आँखों में आँसू भरकर) आप ठीक कहते हैं । महाराज सुग्रीव ने हमें जो समय दिया था वह समाप्त होने को आया । यहाँ से वापिस जाने पर हम सबकी मौत निश्चित है । पिताजी के मारे जाने पर सुग्रीव मुझे भी उसी समय मार देते । परंतु ..... ? भगवान राम ने मुझे बचा लिया था इसलिए हे भाइयो ! हमें सुग्रीव का कोई भरोसा नहीं है और हम सबके मारे जाने में कोई सन्देह नहीं है ।

**॥ चौपाई ॥**

जामवंत अंगद दुख देखी, कही कथा उपदेश बिसेषी ।

**जामवंत :** हे तात अंगद जी ! श्री राम जी साधारण मनुष्य नहीं हैं। वे अवतारी हैं और हम सब बड़े भाग्यशाली हैं जो हमें प्रभु राम जी की सेवा करने का अवसर मिला है। हे वीरो ! मन में धैर्य धारण करो।

घबड़ाते क्यों हो बलबीरों, दुनियाँ की यह ही रंगत है ।
राहत के बाद मुसीबत, फिर वही मुसीबत राहत है ।
उपकार मार्ग पर जाते हैं, क्या डर है जो मर जायेंगे।
मरकर भी नहीं मरेंगे हम, जब नाम अमर कर जायेंगे।

हे भाइयों ! प्रभु पर भरोसा रख मन-क्रम-वचन से उन्हीं को याद करो।

(सबका मिलकर रामधुन गाना)

"रघुपति राघव राजा राम । पतित पावन सीता राम ॥"

**॥ चौपाई ॥**

एहि बिधि कथा कहहिं बहु भाँती । गिरी कंदराँ सुनी संपाती ॥
बाहेर होइ देखि बहु कीसा । मोहि अहार दीन्ह जगदीसा ॥

**संपाती :** (कन्दरा से बाहर निकलकर वानरों की तरफ देखकर) अहा ? विधाता..... ! तुम धन्य हो तुमने आज घर बैठे ही भोजन भेज दिया।

बरसों से भूखा प्यासा हूँ, भरपेट न भोजन पाया है।
विधना ने आज अनुग्रह कर, सब एक साथ भिजवाया है।
दो चार निमिष ही में आकर, दस बीस ग्रास कर जाता हूँ।
भागो मत बैठे रहो वही, तुम सब को आकर खाता हूँ।

**अङ्गद :** (वानरों की तरफ इशारा करके) हे वीरों ! डरते क्यों हो ? तुमसे जटायु ही धन्य था जिसने श्री राम जी के काम में अपने शरीर को त्याग दिया और भगवान के धाम को चला गया।

**संपाती :** (अचरज से दुखी होकर) क्या कहा ? जटायु मर गया ? वह तो मेरा भाई था.....

**॥ चौपाई ॥**

सुनि खग हरष सोक जुत बानी, आवा निकट कपिन्ह भय मानी ।
तिन्हहि अभय करि पूछेसि जाई, कथा सकल तिन्ह ताहि सुनाई ।

**संपाती :** (वानरों के पास आकर)

हे बानर ! ठहरो ! रुक जाओ, मत मुझसे दहशत खाओ तुम ।
क्या कही जटायु की बातें, कुल हाल मुझे समझाओ तुम ॥

**अङ्गद :** गीधराज ! तुम्हारे भाई जटायु ने परोपकार का एक अमिट उदाहरण पेश किया है जिसके आगे मानव भी शर्मिन्दा हो जाता है। भगवान राम भी उसके त्याग के आगे अपना सब कुछ हार गए। हे भाई सुनो !

कौशल की रानी सीता का, जब दण्डकवन में हरण हुआ ।
तब उन्हीं दिनों उपकार हेतु, वह गिद्धराज हरिशरण हुआ ।
जिसने सीता का हरण किया, उसने ही उसको मारा है ।
दण्डकबन का वह डाकू ही, हे भाई ! शत्रु तुम्हारा है ।
हम सब तलाश में हैं उसकी, तुम भी अब उसे तलाश करो ।
भाई का बदला लेना हो तो, तुम उस बैरी का नाश करो ।

**॥ चौपाई ॥**

सुनि संपाति बन्धु कै करनी । रघुपति महिमा बहु विधि बरनी ।

**संपाती :** निसन्देह जटायु बड़ा भाग्यशाली था जो परोपकार में मारा गया। हे भाइयों ! पहले मुझे समुद्र के किनारे ले चलो। मैं अपने भाई को जल दे दूँ फिर तुम्हारी सहायता करूँगा।

(सबका संपाती को समुद्र के किनारे ले जाना। संपाती का छोटे भाई की क्रिया करना)

**॥ चौपाई ॥**

अनुज क्रिया करि सागर तीरा, कहि निज कथा सुनहु कपि बीरा ।

**संपाती :** हे वीर वानरों ! सुनो . . . . . ? हम दोनों भाई प्रारम्भिक जवानी में उड़कर सूर्य के पास चले गये। जटायु सूर्य का तेज न सह सका इसलिए वह लौट आया परन्तु मैं

अभिमान में आकर सूर्य के पास जा पहुँचा। सूर्य के तेज से मेरे पंख जल गए तब मैं घोर चीत्कार करके पृथ्वी पर गिर पड़ा। वहाँ चन्द्रमा नाम के एक मुनि थे। मुझे देखकर उन्हें बड़ी दया आयी। उन्होंने मुझे बहुत ज्ञान देकर मेरे अभिमान को दूर किया और मुझसे बोले ..... ? त्रेता युग में साक्षात ब्रह्म मनुष्य शरीर धारण करेंगे। उनकी पत्नी को राक्षसों का राजा हरेगा। प्रभु उनको ढूँढ़ने दूत भेजेंगे। उनके मिलने पर तू पवित्र हो जायेगा और तेरे जले हुए पंख जम जायेंगे। चिन्ता न कर। तू उन्हें सीता जी को दिखा देना। मुनि की वह वाणी आज सत्य हुई। अब तुम मेरे वचन सुनकर प्रभु का कार्य करो। चित्रकूट पर्वत पर लंका बसी हुई है। वहाँ स्वभाव से ही निर्भय रावण रहता है। वहाँ अशोक नाम का उपवन है जहाँ वे रहती हैं। अब भी सीताजी सोच में डूबी बैठी हैं। मैं उन्हें देख रहा हूँ। तुम नहीं देख सकते क्योंकि गीध की दृष्टि अपार होती है। क्या करूँ ? मैं वृद्ध हो गया नहीं तो तुम्हारी कुछ सहायता अवश्य करता। जो सौ योजन समुद्र को लाँघ जायेगा वही श्री राम जी का कार्य पूरा कर सकेगा। मुझे देखकर मन में धैर्य धरो और श्री राम जी का कार्य पूरा करो। अच्छा... ? अब मैं चलता हूँ।

(संपाती का जाना)

॥ चौपाई ॥

असकहि गरुड़ गीध जब गयऊ, तिन्ह कें मन अति बिसमय भयऊ ।<br>
निज निज बल सब काहूँ भाषा, पार जाइ कर संशय राखा ।

**जामवंत :** हे भाइयों ! वृद्ध गीध हमको रास्ता बतला गया। मैं अब वृद्ध हो गया। अब जिसमें हिम्मत हो वह आगे आये।<br>
करने को तो इतना ही है, बस, एक छलाँग मारना है।<br>
यह युद्ध नहीं, संग्राम नहीं, सौ योजन सिंधु लाँघना है।

मेरी तरुणाई होती तो, उस पार पहुँच जाता अब तक ।
पीछे तुमसे बाते होतीं, सीता सुधि ले आता अब तक ।
वामन प्रभु ने जब बलि बाँधा, मेरा उन दिनों जमाना था ।
दो घड़ियों में भूमण्डल का, हो जाता आना-जाना था।
अब तो युवकों की बारी है, मेरी तो वृद्धावस्था है ।
यदि वहाँ तलक कोई न गया, तो यहीं डूबना अच्छा है ।

**अङ्गद :** (आगे आकर)

**॥ दोहा ॥**

हे जामवंत जी! मत कहो, कायरता की बात ।
असफल होकर डूबना, है कब अच्छी बात ॥
युवराज कहाकर मौन रहूँ, तो मुझ पर लाँछन आता है ।
इस कारण सिंधु लाँघने को, यह अंगद बालक जाता है ॥
उस पार पहुँच ही जाऊँगा, यह तो मेरा दृढ़ निश्चय है ।
लेकिन इस पार लौटने में, थोड़ा सा मुझको संशय है ॥
लाघूँगा सिंधु इधर से तो, जगदम्बा सम्मुख आयेंगी ।
वे अपना बल देकर मुझको, लंका नगरी पहुँचायेंगी ॥
पर सुधि लेकर जब लौटूँगा, तो पीठ उधर हो जायेगी ।
मेरी वह महाशक्ति पूजा, उस समय न कुछ कर पायेगी ॥

**जामवंत :** हे तात अंगद जी ! तुम योग्य हो और सबके नायक हो । हम तुम्हें कैसे भेज सकते हैं ? (हनुमान की ओर देखकर) हे हनुमान जी ! तुम क्यों चुप साध रहे हो । संसार में ऐसा कौन सा कठिन कार्य है जो तुमसे न हो सके। तुम्हारा अवतार राम कार्य को ही हुआ है । पहले अपने जन्म की कथा सुनो । तुम्हें अपना बल और पराक्रम स्वयं मालूम हो जायेगा । हिमाचल पर्वत पर कश्यप ऋषि साधू-सन्तों के साथ रहते थे । एक दिन वहाँ एक बड़ा हाथी आया और ऋषियों की ओर झपटा तब तुम्हारे पिता केसरी ने उसे मार डाला । उस पर खुश होकर ऋषियों ने वरदान दिया कि

तुम्हारे घर में पवन जैसे वेग वाला बलवान और बुद्धिमान पुत्र उत्पन्न होगा। एक दिन तुम्हारी माता अंजनी पर्वत पर बैठी थी कि पवनदेव ने उनके चीर को उड़ाकर शरीर को स्पर्श कर दिया जिससे तुम्हारा जन्म हुआ। एक दिन तुम्हारी माता तुम्हें गोद में लिये खड़ी थी कि तुमने उदय होते हुए लाल-२ सूर्य को पकड़ने के लिए बाँह उठाई इस पर इन्द्र ने कुपित होकर तुम्हारे बज्र मारा जिससे तुम्हारी ठोड़ी में दाग बन गया और तुम्हारा नाम हनुमान पड़ गया। किन्तु तुरत ही तुमने सूर्य को भक्षण कर लिया। अन्त में देवताओं ने तुम्हारे पिता केसरी से विनती की और तुम्हें अजर अमर होने का वरदान दिया तब तुमने सूर्य को मुँह से निकाला।

**हनुमान :** (पर्वताकार होकर गरजकर)

ओ जामवंत ! क्या कहते हों ? जाकर बादल पर गरजूँ मैं ।
पहले लंकेश्वर को मारुँ, या लंका को उल्टी कर दूँ मैं ॥
सौगन्ध पूर्वक कहता हूँ, जो कहता हूँ सो दिखलाऊँगा ।
अपनी माता सीता को, राघव से अभी मिलाऊँगा ॥

**जामवंत :** **॥ दोहा ॥**

शान्त-शान्त रण केशरी, रोको निज आवेश ।
उतना ही करिये बली, जितना है आदेश ॥
तुम केवल लंका में जाकर, माता का पता लगा लाना ।
आवश्यक समझो तो कुछ बल, रावण को भी दिखला आना ॥
हम यहीं मिलेंगे वीर तुम्हें, अति शीघ्र कार्य कर यहाँ आओ ।
शुभ आशीष साथ तुम्हारे हैं, बजरंग बली जाओ जाओ ॥

**॥ चौपाई ॥**

जामवंत के वचन सुहाए । सुनि हनुमन्त हृदय अति भाए ॥

**हनुमान :** हे तात जामवंत जी ! बल प्रभु से पाया है किन्तु बुद्धि आज आप से मिली है। हे भाई ! तुम दुख सहकर और

कन्द-मूल फल खाकर तब तक मेरी बाट देखना जब तक मैं सीता जी को देखकर न आऊँ।

उठ रही उमंग हृदय में हैं, उत्साह बढ़ रहा है तन में।
निश्चय ही कार्य सिद्ध होगा, यह कहता है कोई मन में।

(सबको सिर नवाकर)

**"बोलो सियापति रामचन्द्र की जय"**

**(हनुमान का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

यह कहि नाइ सबन्हि कहुँ माथा, चलेउ हरषिहियँ धरि रघुनाथा ।

**॥ राम-सुग्रीव मित्रता लीला समाप्त ॥**

◆ ◆ ◆

दसवाँ दिन (आठवाँ भाग)

# लंका दहन लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. लंका दहन

(क) अशोक वाटिका

(ख) लंका दहन

(ग) विभीषण की शरणागति

(घ) सेतुबन्ध रामेश्वरम्

(ङ) अंगद-रावण संवाद

## लंका दहन लीला

## (संक्षिप्त कथा)

लंका नगरी में हनुमान की प्रथम भेंट लंकिनी नामक राक्षसी से हुई। इससे भी हनुमान को बहुत बड़ा प्रकाश तथा साहस मिला। हनुमान खोजते-२ अशोक वाटिका में पहुच गये जहाँ सीता जी कई राक्षसनियों के पहरे में बन्दी थी। हनुमान ने अभागिनी सीता को साँत्वना देने के लिए श्री रामचन्द्र जी की मुद्रिका भेंट की और सीता जी की आज्ञा से अशोक वाटिका में फल खाने लगे। अपने पराक्रम से कई एक राक्षसों को मौत के घाट उतार दिया। अन्त में मेघनाद द्वारा हनुमान को रावण के सम्मुख लाया गया। वह क्रोध की ज्वाला में जले जा रहे थे। हनुमान जी का प्रस्ताव सीता जी को लौटा देने का था जिसका विभीषण ने समर्थन किया किन्तु रावण ने इन दोनों के प्रस्तावों को केवल ठुकराया ही नहीं अपितु कड़ी से कड़ी सजायें दीं। विभीषण का अपमान कर पद प्रहार करके उसे लंका से निकाल दिया जो हरि की शरण हुआ और अपने सैनिकों को आज्ञा दी की वानर की पूँछ को मशाल बनाकर उसमें आग लगा दी जाये।

रावण की आज्ञा पूरी की गई। हनुमान पूँछ की मशाल संभाले सारी लंका नगरी में घूमे फिर और वहाँ के मुख्य-२ भवन पलों में अग्नि की

लपटों को सौंप दिये ।

नल-नील द्वारा निर्मित सेतु पुल पार करके श्री राम की सेना समुद्र पार लंका की सीमा के निकट जा पहुँची । श्री राम ने चेतावनी स्वरूप पुनः अपने दूत अंगद को लंका नगरी के राजा रावण के पास भेजा । अंगद ने लंकेश को बहुत समझाया कि वह अपना निर्णय बदल दे । उन दुष्टकर्मों को त्याग दे जिनका परिणाम बुरा होता है किन्तु इस पर लंकेश और भी पाषाण बना गया । अन्त में अंगद को राजसभा में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करना पड़ा । अंगद ने अपना पाँव जमाकर ऐलान किया कि यदि मेरे पैर को उठा दिया गया तो मैं जानकी को हारकर लौट जाऊँगा । रावण के दरबार में वीरों में खलबली मच गई । उन्होंने भरपूर कोशिश की परन्तु विफल रहे । अंगद युद्ध की घोषणा करके लौट आया ।

⇔

# पात्र परिचय

## (लंका दहन लीला)

### पुरुष पात्र

| | |
|---|---|
| १. हनुमान | २. नील |
| ३. रावण | ४. राम |
| ५. माली दो | ६. लक्ष्मण |
| ७. अक्षय कुमार | ८. सुग्रीव |
| ९. मेघनाद | १०. प्रहरी रावण |
| ११. रावण का द्वारपाल | १२. गुप्तचर |
| १३. विभीषण | १४. रावण का सेनापति |
| १५. सभासद चार | १६. रावण का मंत्री |
| १७. अंगद | १८. राम का दूत |
| १९. जामवंत | २०. रावण का दूत |
| २१. नल | २२. रावण सुत |

२३. सागर देवता

**स्त्री पात्र**

१. सुरसा
२. लंकिनी
३. सीता
४. मन्दोदरी
५. त्रिजटा
६. राक्षसी दो
७. साकी
८. सरमा

# अशोक वाटिका

## (लंका दहन लीला)

### सीन पहला

**स्थान :** समुद्र का किनारा।
**दृश्य :** सुरसा का दिखाई देना।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

जात पवनसुत देवन्ह देखा। जानै कहुँ बल बुद्धि बिसेषा॥
सुरसा नाम अहिन्ह कै माता। पठइन्हि आई कही तेहिं बाता॥

**हनुमान :** (प्रवेश करके) "जय श्री राम" (सामने देखकर अचरज से) हैं..... ! कौन है जो मेरा रास्ता रोके हुए खड़ा है..... ?

**सुरसा :** (ललकार कर) आह..... ! मैं बहुत दिनों की भूखी हूँ। आज मुझे देवों ने भोजन दिया है।

**हनुमान :** हे माता ! सत्य कहता हूँ कि जब श्री राम जी का कार्य करके मैं लौट आऊँ और प्रभु को सीता जी का समाचार सुना दूँ तब तू मुझे खा लेना।

**सुरसा :** (क्रोध से) नहीं..... ?
हे हनुमत ! बकवाद छोड़, मन चीता अभी करूँगी मैं।
मुझको यह परमावश्यक है, निज मुख में तुझे धरूँगी मैं॥

**हनुमान :**

अच्छा माता यही इच्छा है तो, जो करना है झटपट कर ले ॥
ऐसी ही हठ है तेरी हे माता, जो निज मुख में मुझको तू धर ले ॥

**॥ चौपाई ॥**

जोजन भरि तेहिं बदनु पसारा, कपि तनु कीन्ह दुगुन बिस्तारा ॥
सोरह जोजन मुख तेहि ठयऊ, तुरत पवनसुत बत्तीस भयऊ ॥
जस जस सुरसा बदन बढ़ावा, तासु दून कपि रूप देखावा ॥
सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा, अति लघु रूप पवनसुत लीन्हा ॥

(हनुमान का लघु रूप धरकर सुरसा के मुँह में जाना फिर बाहर आना)

**॥ चौपाई ॥**

बदन पइठि पुनि बाहेर आवा । माँगा बिदा ताहि सिरु नावा ॥

**हनुमान :** (सिर नवाकर) हे माता ! अब मुझे जाने की आज्ञा दो। क्योंकि..... ?
मैं मुख में तेरे हो आया, तेरा ही कहा किया माता।
तू यही मांगती थी मुझसे, तो मैंने यही दिया माता॥

**सुरसा :** (आशीर्वाद देते हुए) हे पुत्र हनुमान ! मुझे देवताओं ने तेरी बुद्धि तथा बल की परीक्षा लेने भेजा था। तुम राम जी का कार्य सिद्ध करोगे। क्योंकि..... ?
हे कपि ! बलवान भी हो, और अकलमंद भी भारी हो ।
निश्चय ही विजय प्राप्त होगी, तुम श्रेष्ठ महाबल धारी हो ॥
जाओ लंका को हे पवनपुत्र, सीता का पता लगाओ तुम ।
कर डालो काम ये जाकर के, श्री रामभक्त कहलाओ तुम ॥

**हनुमान :** (सिर नवाकर) अच्छा माता प्रणाम... ! जय श्री राम... !

(हनुमान का जाना)

**पर्दा गिरना**

## सीन दूसरा

**स्थान :** लंका नगरी का प्रवेश द्वार।

**दृश्य :** लंकिनी पहरा दे रही है।

## पर्दा उठना

**॥ दोहा ॥**

पुर रखवारे देखि बहु, कपि मन कीन्ह बिचार ।
अति लघु रूप धरौं निसि, नगर करौं पइसार ॥

(हनुमान का लघु रूप धर कर आना)

**॥ चौपाई ॥**

नाम लंकिनी एक निसिचरी । सो कह चलेसि मोहि निंदरी ॥

**लंकिनी :** (रास्ता रोक के ललकार कर) मेरा निरादर करके कहाँ चला जा रहा है ? रे शठ ! तू मेरे मर्म को नहीं जानता । जो भी चोर हैं वे सब मेरे भोजन हैं ।

**हनुमान :** (आकार बढ़ाकर क्रोध से)
क्या कहती है दुष्ट चण्डाली, शामत तेरी आई है ।
हनुमान को क्या नहीं जानती, जो इतनी रार बढ़ाई है ।

**लंकिनी :** (गरज कर) अरे मूर्ख ! ठहर..... ! अभी तुझे खाती हूँ ।

**(लंकिनी का मुँह फाड़कर आगे बढ़ना । हनुमान का घूंसा मारना । लंकिनी का पृथ्वी पर गिरना)**

**॥ चौपाई ॥**

मुठिका एक महा कपि हनी, रुधिर बमत धरनी ढनमनी ॥
पुनि संभारि उठी सो लंका, जोरि पानि कर बिनय ससंका ॥

**लंकिनी :** (खड़ी होकर) महाराज ! क्या आप रामचन्द्र के दूत हैं ?

**हनुमान :** (मुस्करा कर) एक ही घूंसे में भूत याद आ गये । तूने मुझे सत्य पहचाना ।

**लंकिनी :** (शंकित हो हाथ जोड़कर विनती करते हुए) हे महाराज ! मेरे बहुत पुण्य हैं जो रामजी के दूत के दर्शन पाये हैं । हाँ..... ? याद आया..... ?
ब्रह्मा ने रावण को जब, लंकाधीश बनाया था ।
लंकिनी रूप मुझ लंका को, यह भविष्य बताया था ।
मुष्टिक प्रहार कर महावीर जिस दिन तुझ पर जय पायेंगे ।

बस, तभी समझ लेना निश्चय निश्चर सब मारे जायेंगे ॥
हे महावीर ! हे महाधीर ! रघुवर का तुम पर हाथ रहे ।
जाओ बेखटके लंका में, जय और सफलता साथ रहे ॥

॥ चौपाई ॥

अति लघु रूप धरेऊ हनुमाना । पैठा नगर सुमिरि भगवाना ॥

**(हनुमान का लघुरूप धर कर लंका में प्रवेश—"जय श्री राम"**

**पर्दा गिरना**

## सीन तीसरा

**स्थान :** लंका नगरी का भीतरी भाग ।

**दृश्य :** रावण मन्दोदरी के साथ महल में सो रहा है । विभीषण अपने मकान (जिसके बाहर श्री राम लिखा हुआ है) के अन्दर श्री राम का जाप कर रहे हैं । अशोक वाटिका में निश्चरियों के पहरे में सीता शोकाकुल बैठी हैं ।

**पर्दा उठना**

॥ चौपाई ॥

सयन किएँ देखा कपि तेही । मंदिर महुं न दीखि बैदेही ॥

**हनुमान :** (रावण के शयन गृह का चक्कर लगाकर थककर)
राज मन्दिर घर गली, कूँचे सरोवर ताल बन ।
देख डाला कोना-२, छान डाले सब भवन ॥
है ठिकाना कौन सा, जिसको देख आया नहीं ।
जानकी का पर नहीं, अब तक पता पाया नहीं ॥

॥ चौपाई ॥

भवन एक पुनि दीख सोहावा । हरि मंदिर तहँ भिन्न बनावा ॥

**हनुमान :** (सामने मन्दिर देखकर अचरज से) हैं..... ! हैं..... ! राम नाम..... ! अरे..... ? लंका में इसका क्या है काम..... ? चलकर इसका पता लगाऊँ । लंका में तो निश्चर वास करते हैं । यहाँ सज्जन का निवास कैसे हुआ ?

(हनुमान का ब्राह्मण का रूप धारण करके जाना)

॥ चौपाई ॥

बिप्र रूप धरि बचन सुनाए । सुनत विभीषन उठि तहँ आए ॥
करि प्रनाम पूछी कुसलाई । बिप्र कहहु निज कथा बुझाई ॥

**हनुमान :** (विस्मय से) अरे..... ? यह तो हर जगह श्री राम लिखा हुआ है । शायद माता जानकी जी का यहीं पता लग जाए । आवाज लगाकर देखूँ..... ?

**(हनुमान का आवाज लगाना "जय श्री राम")**

**विभीषण :** (बाहर आकर सिर नवाकर) विप्रवर प्रणाम ।

॥ दोहा ॥

हुआ धन्य हूँ आज मैं, पा ऐसा मेहमान ।
क्या आज्ञा है दास को, बतलायें श्रीमान ॥
हे विप्र ? आपको देख-देख, यह हृदय आप ही खिंचता है ।
हैं निश्चय आप भक्त कोई, यह मुझे दिखाई पड़ता है ॥

(गदगद होकर) हे विप्रवर ! क्या आप हरि भक्तों में से कोई हैं ? क्योंकि आपको देखकर मेरे हृदय में अत्यन्त प्रेम उड़ रहा है ? अथवा आप दोनों से प्रेम करने वाले स्वयं श्री राम जी ही हैं जो मुझे घर बैठे दर्शन देकर कृतार्थ करने आये हैं ।

**हनुमान :** (असली भेष में आकर) हे भक्तराज !
ब्राह्मण शरीर का धोखा है, मैं हनुमान हूँ वानर हूँ ।
सीता सुधि लेने आया हूँ, श्री रामचन्द्र का अनुचर हूँ ॥

**विभीषण :** (हनुमान को छाती से लगाकर)
धन्य-धन्य खुल गया भाग्य, आये श्री राम दुलारे हैं ।
ब्राह्मण से भी वह बड़े मुझे, मेरे प्यारे के प्यारे हैं ॥
हे हनुमान जी ! हैं धन्य आप, जो राघवेन्द्र के अनुचर हैं ।
प्रत्येक दिवस प्रत्येक घड़ी, प्रभु की सेवा में तत्पर हैं ॥
क्या मुझ अनाथ निश्चर के भी, रघुनाथ बनेंगे नाथ कभी ।

क्या मुझसे अधमदास को भी, रखेंगे राघव साथ कभी ॥
सीता की सुधि पीछे लेना, पहले सुधि मेरी लो भाई ।
जिन चरणों में रह रहे आप, मुझको भी पहुँचा दो भाई ॥

**हनुमान :** हे तात विभीषण जी !
भगवान तो दयानिधि हैं, सबको नित अपनाते हैं ।
जो जन उनकी शरणागत हो, छाती से उसे लगाते हैं ॥
हो सकता है वह दिन आये, जब भाग्य इस तरह चमका हो ।
सिर पर हों राम विभीषण के, चरणों पर सारी लंका हो ॥
परन्तु ..... ?
असुरों में कैसे भक्तराज, तुम जीवन यापन करते हो ।
रावण की सेवा में रहकर, श्री रामोपासन करते हो ॥

**विभीषण :** हे पवन पुत्र ! जैसे जिह्वा है, बत्तीस नुकीले दाँतों में ।
रहता है दास विभीषण भी, बस उसी प्रकार राक्षसों में ॥

**हनुमान :** हे भक्तराज ! मुँह की बत्तीसी, सब टूट-फूट गिर जायेगा ।
पर जिह्वा जीवन भर रहकर, श्री राम नाम गुण गायेगी ॥

**विभीषण :** अच्छा !
अब जिस कारण आये, उस सेवा में जाओ भाई ।
हैं मात अशोक वाटिका में, सुधि उनकी ले आओ भाई ।
हे तात हनुमान जी ! आप सीधे हाथ पर जाकर बायीं ओर मुड़ जाना वहीं अशोक वन में माता जानकी जी मिल जायेंगी ।

**हनुमान :** अच्छा ..... ? महाराज ! धन्यवाद ।

**(हनुमान का जाना "जय श्री राम")**

**॥ चौपाई ॥**

जुगुति विभिषन सकल सुनाई । चलेउ पवनसुत विदा कराई ॥
करि सोइ रूप गयउ पुनि तहवाँ । बन अशोक सीता रह जहवाँ ॥

**पर्दा गिरना**

## सीन चौथा

**स्थान :** अशोक वाटिका ।

**दृश्य :** सीता जी गमगीन बैठी हैं । निश्चरियाँ पहरा दे रही हैं ।

**पर्दा उठना**

**बैक ग्राउन्ड गाना**

पिंजरे के पंछी रे तेरा दर्द न जाने कोय, तेरा दर्द न जाने कोय ।
बाहर से तू खामोश रहे तू भीतर-२ रोए रे, भीतर-भीतर रोए ॥
तेरा दर्द न जाने कोय.....(१)
कह न सके तू अपनी कहानी, तेरी भी पंछी क्या जिन्दगानी रे ।
विधि ने तेरी कथा लिखी, अंसुवन में कलम डुबोय ।
तेरा दर्द न जाने कोय.....(२)
चुपके-चुपके रोने वाले, रखना छिपा के दिल के छाले रे ।
ये पत्थर का देश है पगले, कोई न तेरा होय ।
तेरा दर्द न जाने कोय.....(३)

**हनुमान :** (लघुरूप में प्रवेश करके मन में प्रणाम करके)
रघुबर में लीन प्राण इनके, रघुवर इनके प्राणों में है ।
इसलिये कष्ट सहकर भी यह, अब तक जीवित असुरों में है ॥
चरणों में अभी लोट जाऊँ, जी तो मेरा यह कहता है ।
घबड़ा जाए माता न कहीं, यह संशय मन में उठता है ।
अच्छा मन ही मन प्रणाम, शुभ दिन तो सम्मुख आया है ।
बड़भागी है यह रामदूत, माँ का दर्शन तो पाया है ॥
रावण भी अब आ रहा है, छुपकर देखूँ क्या होता है ।
सब भेद जानकर ही प्रगटूं, इस अवसर यह ही अच्छा है ॥

(हनुमान का पेड़ पर चढ़कर छुप जाना । रावण का मन्दोदरी के साथ प्रवेश)

**॥ चौपाई ॥**

तेहि अवसर रावनु तहँ आवा । संग नारि बहु किएँ बनावा ॥
बहु बिधि खल सीतहि समुझावा । साम दाम भय भेद देखावा ॥

# सीता रावण संवाद

**रावण :** (मंदोदरी के साथ प्रवेश करके एक पैर जोर से स्टूल पर

मारते हुए उस पर रखकर कोमल स्वर में) जानकी .... ! जानकी ... !! तुम्हारा तपसी अपनी लाचारी पर लज्जित होकर किसी नदी नाले में डूब मरा होगा। देखो ... ? तुम्हारे सामने तीनो लोकों का विजेता रावण खड़ा है। (सीता को चुप देखकर) जानकी ! मैं तुमसे सम्बोधित हूँ।

**सीता :** (सपाट स्वर में) किन्तु ..... ? मेरी तनिक सी भी इच्छा तुमसे सम्बोधित होने की नहीं है।

**रावण :** (खिन्न होकर) हुँह ..... ? तुम मुझे और मेरी शक्ति को जानती हो।

**सीता :** (व्यंग से) शक्ति नहीं, चोर कला कहो। शक्ति का तो कोई सबूत तुमने दिया ही नहीं। मैं कब से कह रही हूँ कि राम से युद्ध का साहस नहीं है, तो मुझे ही शस्त्र दो और मुझ से युद्ध कर देखो।

**रावण :** (हँसते हुए) खूब ? बहुत खूब ?? मैं जानता हूँ कि तुम आत्महत्या की बात सोच रही हो। तुम जानती हो कि राम यहाँ आ नहीं सकता और तुम यहाँ से जा नहीं सकतीं, इसलिये तुमने आत्महत्या का यह उपाय सोचा है। तुम मुझसे घोर युद्ध कर निश्चित मौत ? चाहती हो, किन्तु ? मैं तुम्हें मरने नहीं दूँगा। यह रूप नष्ट होने के लिये नहीं है। तुम उस संन्यासी के साथ रहकर जीवन के सुखों को भूल गई हो। जरा मेरी तरफ देखो ? मैं तुम्हारे सामने संसार के सब सुख रख दूँगा। एक बार अपनी इच्छा से मेरे महल की शोभा बढ़ा दो, राक्षसों का सारा राज्य तुम्हारा हो जायेगा। तुम अपनी मर्जी से उसका उपभोग करना।

**सीता :** (सतेज स्वर में) रावण ! सारे संसार में क्या तेरा एक भी हितू नहीं है, जो तुझे समझा सके कि यह तेरे नाश का मार्ग है। कोई तुझे समझाता नहीं, या किसी की तू सुनता ही नहीं।

**रावण :** (उपेक्षा भरे स्वर में) जानकी ! इन बेकार की बातों में क्या रक्खा है ? मानव जन्म बार-बार नहीं मिलता। इस शरीर के जरिये जो भी सुख मिल सकते हैं, उन्हें जी भरकर भोगो।

**सीता :** (शान्त स्वर में) मैं भी तुझे यही बता रही हूँ, रावण.... ! कि मानव शरीर पाकर भी उससे तू केवल पशु सुख का भोग कर पाया है। दूसरों के सुख के लिए अपने सुख का त्याग कर पाया गया सुख ही सच्चा मानव सुख है। अभी भी समय है कि तू अपनी हठ छोड़ दे। मुझे मेरे राम को सौंप दे और उनके चरणों में गिरकर उनसे क्षमा माँग ले।

**रावण :** (अटहास करते हुए) हा..... हा..... हा..... ! बन में रहकर तूने उन भिखारियों से त्याग का अच्छा पाठ पढ़ा है। भिखारियों को राम के सामने हाथ जोड़ते देख तूने सोचा होगा कि तीनों लोकों का विजेता रावण भी उसके सामने भिखारी बनकर जायेगा। परन्तु..... ? यह तेरी भूल है। हाँ... ? मैं तेरे सामने भिखारी बनकर खड़ा हूँ। तू इस रावण को अपना ले तो महारानी मन्दोदरी जैसी स्त्रियां तेरी दासी हो जायेंगी।

**सीता :** (रावण की ओर तीखी दृष्टि से देखते हुए उच्च स्वर में) अरे मूर्ख ! तूने समझा होगा... ? कि महारानी मन्दोदरी को मेरी दासी बनाकर मेरा गौरव बढ़ायेगा। दुष्ट ! तेरी नीचता की भी कोई सीमा है अथवा नहीं ! याद रख... ? जो अपनी पटरानी के सम्मान की रक्षा नहीं कर सकता वह दूसरों का सम्मान क्या करेगा ?

**रावण :** ओह..... ! इतनी कठोर..... ? सीते..... ! मैं तुमसे प्रेम की भीख मांगता हूँ।
द्वार पर आये भिखारी, महारानी ने फेर।

निर्दयी बनकर मेरी, आशाओं पर पानी न फेर ॥

**सीता :** (रोते हुए) रावण..... ! तू मुझे चैन क्यों नहीं लेने देता ?
ज्ञान का भण्डार बनकर, बे समझ रावण न बन ।
देख अपने आप अपने, नाश का कारण न बन ॥

**रावण :** कर चुका हूँ प्रेम की, विनती हजारों बार में ।
प्रेम की बातों को तू, क्यों खोती है तकरार मैं ॥

**सीता :** वासना के अन्धे न अब, अच्छे-बुरे का ज्ञान है ।
वेद का पाठी है और, कर्त्तव्य से अज्ञान है ॥

**रावण :** जानकी ! रावण के दुर्लभ, प्यार पर ठोकर न मार ।
तीनों लोकों के अतुल, भण्डार पर ठोकर न मार ॥

**सीता :** अरे दुष्ट ! इतना नीच काम न कर । वासना को प्रेम कहकर सच्चे प्रेम को बदनाम न कर ।
प्यार क्या जाने अधर्मी, काम में अन्धा है तू ।
वासनाओं में फँसकर, धर्म को भूला है तू ॥

**रावण :** (व्यंग से) धर्म .... ! हा ... हा ... हा ... धर्म किस चिड़िया का नाम है ?
रख लिया है मूर्खों ने, धर्म इक धोखे का नाम ।
धर्म कहती है तू जिसे, मन बहलाने का नाम ॥

**सीता :** ठीक है ... ? तेरे जैसा पापी धर्म अधर्म को क्या जाने ? हीरे की परख तो जौहरी ही जाने ।
नीच पामर के लिए, सुरताल पोखर एक हैं ।
ना समझ के वास्ते, लाल और पत्थर एक हैं ॥

**रावण :** (क्रोध से)
जुबाँ को रोक ले गुस्ताख, क्यों बकबक लगाई है ।
मैं वो बला हूँ काँपती, जिससे सारी खुदाई है ॥

**सीता :** समझ ले मौत अब पापी, तेरे नजदीक आई है ।
हे सीता आग जो तूने, खुद लंका में बुलाई है ॥

**रावण :** (क्रोध से) बस..... ! बस..... ! ओ हठीली..... !

मान ले कहना मेरा अब, मत बढ़ा तकरार देख।
अन्यथा गर्दन पै तेरी, होगी यह तलवार देख॥

**सीता :** मूर्ख ! तलवार का भय उनको होता है जो मरने से डरती हैं।
चाहे जो अन्याय कर, धुन मेरी जा नहीं सकती।
शक्तियाँ संसार की, पथ से डिगा नहीं सकती॥

**रावण :** (क्रोध से) ओ हठीली ! मेरा कहना मानती है या मौत स्वीकार है।

**सीता :** मौत..... !

**रावण :** क्यों..... ?

**सीता :** इसलिये कि—
मौत आ जाये तो छुट जाऊँ, इस बिरह जंजाल से।
मेरे बन्धन कट सकें तो, कट सकेंगे काल से॥

**रावण :** सीते ! क्यों तू पागल हो रही है जो इन तपसियों की याद में अपने प्राण खो रही है।
यदि इक बार हाँ कहने से तेरे होंठ हिल जायें।
तो सब आराम दुनियाँ के, तुझे जीवन में मिल जायें॥

**सीता :** तो क्या..... ? आराम का लालच देकर मुझे सत धर्म से गिराना चाहता है। सुखों का जाल फैलाकर झूठी वासनाओं में फंसाना चाहता है। ओ अधर्मी..... !
पाप करके लोक, और परलोक में रुसवा न बन।
वासनाओं में अरे, पापात्मा अन्धा न बन॥
राज, वैभव, भोग और, सुख सम्पदा को वार दूँ।
धर्म के आगे तेरी, लंका में ठोकर मार दूँ॥

**रावण :** (क्रोध से) अहंकार की प्रतिमा... ! धर्म की ठेकेदार.... ! मैं फिर कहता हूँ कि लंका के वैभव पर लात न मार नहीं तो मुझे शस्त्र उठाना पड़ेगा। जिस तरकीब को मैं अच्छा नहीं समझता उसे ही काम में लाना पड़ेगा।

सिर झुकाकर मान ले, कहना मेरा जिद्दी न बन।
काम ले बुद्धिमानी से, अभिमानी न बन क्रोधी न बन॥
फूल सी काया पर यह, अन्याय ढाती है क्यों।
राम के सन्ताप में, घुल-घुल मरी जाती है क्यों॥

**सीता :** बस.... ? बस.... ? ओ अधर्मी.... ! रहने दे..... ! मैं ऐसे उपदेश सुनना नहीं चाहती। जानकी को संसार में राम के अलावा कोई वस्तु नहीं सुहाती।

राम ही जीवन है मेरा, राम ही आराम है।
सब के सब नारी हैं जग में, पुरुष केवल राम है।

**रावण :** (क्रोध से) सीते..... ! तू बड़ी हठीली और अभिमान की पुतली है। ऐसी मूर्ख स्त्री मैंने संसार में आज तक नहीं देखी है।

**सीता :** और तेरे जैसा अधर्मी और दुराचारी भी देखने में नहीं आया है।

क्यों कुकर्मों पर कमर, बाँधे हुए तैयार है।
देख मुँह खोले हुए, पापी नरक का द्वार है॥

**रावण :** (क्रोध से) बस..... ? बस..... ? ओ नादान..... ! ऐसे कठोर शब्द जबान पर न ला। मेरे सोते हुए क्रोध को न जगा।

याद रख ? अब भी न सीधी, राह पर जो आयेगी।
तेरी ही हठ धर्मी के कारण, जान तेरी जायेगी॥

**सीता :** क्या कहा..... ? जान जायेगी।

एक दिन मरना है सबको, मौत की चिन्ता ही क्या।
धर्म जो रह जाय तो फिर, जान की परवा ही क्या॥

**रावण :** अरी नादान..... ! देख..... ?

धूम है तीनों लोकों में, मेरी इस तलवार की।
गूँजती है चारों ओर, आवाज जय-जयकार की॥
पल रहे हैं जल-पवन, यमराज रक्षा में मेरी।

देवता-दिगपाल सब, रहते हैं सेवा में मेरी ॥

**सीता :** तभी तो ..... ? तू अन्धा बना हुआ है। अरे ..... ! अभिमानी ... ! हृदय की आंख खोलकर तो देख .... ? संसार में कितने बड़े-बड़े बलवान हो चुके हैं। परन्तु आज न वे हैं न उनके बल बिरते हैं।

मिलाये खाक ने सबको, आखिर रंग में अपने।
जब आई मौत तो लेकर, मानी संग में अपने ॥

**रावण :** (क्रोध से) अच्छा तो ..... ? तू अपनी हठ से बाज न आयेगी। मेरी शक्ति के सामने सिर नहीं झुकायेगी।

**सीता :** नहीं ..... ? कदापि नहीं ..... ? आर्य ललनायें शक्ति से नहीं ..... ? धर्म से डरती हैं।

यह कलेजा वह नहीं, डर जाये जो करवाल से।
नारियाँ भारत की हरदम, खेलती हैं काल से ॥

**रावण :** (दांत पीसकर) हा ..... ? हा ..... ? मैं तुझे अभी काल से खिलाता हूँ। इस कोमल काया को पीसकर लंका की धूल में मिलाता हूँ।

॥ **चौपाई** ॥

सुनत बचन पुनि मारन धावा । मयतनयां कहि नीति बुझावा ॥

(रावण का तलवार सूँतकर आगे बढ़ना)

**मन्दोदरी :** (रावण का हाथ रोककर) शोक ..... ! महाशोक ..... ! लंका का राजा इतना डरपोक ..... !

आज जिसके नाम से, ब्रह्माण्ड भी भयभीत है।
एक अबला पर उठाये, हाथ यह अनुरीत है ॥

**रावण :** अच्छा ..... ? तुम्हारे कहने पर अपनी तलवार रोक लेता हूँ और इसे एक माह का समय और देता हूँ। हे निश्चरियों ! तुम सीता को खूब डराओ। हा ... हा ... हा ... !

**(रावण का मन्दोदरी के साथ जाना। निश्चरियों द्वारा सीता को भय दिखाना)**

**राक्षसी-१ :** (झुंझलाते हुए) पता नहीं ..... ? यह कैस कुलच्छिनी है। इसकी समझ में कोई बात ही नहीं आती। भला एक स्त्री चाहती क्या है? हमारे महाराज में कौन सी कमी है। सुदर्शन हैं, स्वस्थ हैं, शक्तिशाली हैं और फिर सम्राट हैं। धन, सत्ता, ऐश्वर्य सब कुछ है। उस कंगले तपसी के पीछे पागल हुई पड़ी है। खुद भी दुखी है और हमें भी परेशान कर रही है।

**राक्षसी-२ :** (उलाहना देते हुए) अरी ..... ! जिसके भाग्य में राजसुख न हो वंह कहाँ से भोग लेगी। महाराज बार-२ विनती करते हैं और यह दुष्टा उन्हें पैरों से ठुकराती है। वह तो कहो कि हमारे महाराज पर इस चुड़ैल की सुन्दरता का जादू चल गया है नहीं तो ..... ? कभी का काटकर डाल दिया होता इसे ..... !

**राक्षसी-३ :** ऐसी तो कोई सुन्दर भी नहीं है। हमारे महाराज को अब जाने क्या हो गया है जो इसकी मिन्नतें करते हैं। इसे बालों से पकड़कर अपने महल में घसीट ले जायें। अगर न माने तो फौरन इसका वध कर दें।

**राक्षसी-१ :** वह तो होना ही है, परन्तु जितनी देर होती जा रही है उतना ही इसका माँस सूखता जा रहा है। पता नहीं, इसका वह कंगला तपसी कैसा है जिसके विरह में यह सूख रही है। यदि एक मास तक यह इसी तरह सूखती रही तो इसमें रह ही क्या जायेगा।

**राक्षसी-२ :** अरी इसमें नहीं रहेगा तो उस तपसी में तो रहेगा जो इसे ढूँढते-२ यहाँ आयेगा। उसी को भोग लेना।

**राक्षसी-३ :** बावरी ! कौन भोगने देगा उसे तुमको? उसके लिए तो घात लगाये बैठी है।

**राक्षसी-१ :** कौन ..... ?

**राक्षसी-३ :** और कौन ..... ? महाराज की बहन सूपनखाँ !

**॥ चौपाई ॥**

हे त्रिजटानाम राक्षसी एका । राम चरन रति निपुन बिबेका ॥
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना । सीतहि सेइ करहु हित अपना ॥

**त्रिजटा :** निश्चरियों ! रुक जाओ । मैंने रात को एक सपना देखा है। सपने में एक बन्दर ने सारी लंका को जला दिया है और सारी राक्षसी सेना मार दी गई है। रावण नंगा है और गधे पर सवार है। उसके सिर मुंडे हुए हैं और बीसों भुजायें कटी हुई हैं। इस तरह वह दक्षिण दिशा को जा रहा है और लंका मॉनों विभीषण को मिली है। नगर में श्रीराम जी की दुहाई फिर गई है। तब प्रभु ने सीता जी को बुला भेजा है। मैं पुकार कर कहती हूँ कि मेरा यह सपना चार दिन बाद सत्य हो जायेगा। इसलिये सीताजी की सेवा करके अपना भला करो।

**॥ चौपाई ॥**

तासु बचन सुनि ते सब डरीं । जनक सुता के चरनन्हि परीं ॥

**राक्षसी :** (सीता के चरणों में गिरकर भयभीत होकर) हे सीताजी ! हमें क्षमा करिये।

**(राक्षसी का जाना)**

**॥ दोहा ॥**

जहँ तहँ गई सकल तब, सीता कर मन सोच ।
मास दिवस बीतें मोहि, मारिहि निसिचर पोच ॥

**सीता :** (रोते हुए)

पाप हो जब इस तरह, फिर किस तरह संतोष हो।
सुन रहे हो नाथ फिर, क्यों इस तरह खामोश हो॥

(विलाप करते हुए) हाँ ! स्वामी !

बिना श्रीराम के देखे, मुझे जीना न भाता है।
सकल संसार सूना सा, मेरी नजरों में आता है ॥ १ ॥
अरे ! जाकर कहो कोई, मेरी हालत दयानिधि से ।

कि दम घुटता है सीने में, कलेजा मुँह को आता है ॥ २ ॥
किये हैं दुष्ट रावण ने, मेरे ऊपर सितम लाखों ।
हजारों धमकियाँ देकर, मुझे पापी डराता है ॥ ३ ॥
अकेली निश्चरी दल में, पड़ी दिन रात रोती हूँ ।
दयानिधि कब खबर लेंगे, यही अब ख्याल आता है ॥ ४ ॥
न वह खुद आप आते हैं, और न कोई भेजते पाती ।
तुम्हारे बिन न अब जीवन, एक पल सुहाता है ॥ ५ ॥

**॥ चौपाई ॥**

त्रिजटा सन बोलीं कर जोरी । मातु बिपति संगिनि तै मोरी ॥

**सीता :** (रोते हुए)
हे त्रिजटा ! तू मेरी धर्म की माता है, मन की तुझसे कहती हूँ ।
पति बिरह बिपत्ति सहते-सहते, जीते जी मैं पूर्ण मर चुकी हूँ ॥
लकड़ियाँ बीन मैं लाती हूँ, तू भी कुछ मुझे सहारा दे ।
मैं चिता बनाये लेती हूँ, जा आग कहीं से तू ला दे ॥

**त्रिजटा :** हे सीता ! अब रात का समय है । आग कहीं नहीं मिल सकती । मन में धीरज धरो ।
थोड़े दिन और रह गये हैं, धीरज ही धारो बैदेही ।
जिस ब्रत को अब तक पाला है, आगे भी पालो बैदेही ॥
अच्छा ..... ? अब रात काफी हो चुकी है । तुम आराम करो । मैं अब जा रही हूँ ।

**॥ चौपाई ॥**

निसिन अनल मिलि सुन सुकुमारी । असकहिसो निजभवन सिधारी ।
कह सीता बिधि भा प्रतिकूला । मिलिहि न पावक मिटिहि न सूला ॥

**सीता :** (रोते हुए) हाय ..... ? अब मैं क्या करूँ ..... ? विधाता भी मुझसे रूठ गया है । न आग मिलेगी और न मेरी पीड़ा मिटेगी । आकाश में अंगारे साफ दीख रहे हैं परन्तु पृथ्वी पर एक भी तारा नहीं आता ।

**॥ चौपाई ॥**

देखि परम बिरहाकुल सीता । सो छन कपिहि कलप सम बीता ॥

**॥ सोरठा ॥**

कपि करि हृदयं बिचारि, दीन्हि मुद्रिका डारि तब ।
जनु अशोक अङ्गार, दीन्ह हरषि उठि कर गहेउ ॥

**(हनुमान जी द्वारा सीता जी के सामने अंगूठी गिरा देना)**

**सीता :** (अंगूठी की चमक देखकर) धन्य हो प्रभु..... ! आखिर तुमने अबला की पुकार सुन ही ली । (पास आकर गौर से देखकर विस्मय से) हैं..... ? यह क्या..... ? (अंगूठी उठाकर) यह तो प्राणनाथ की अंगूठी है । नाथ..... ? तुम कहाँ हो..... ? अंगूठी..... ! अब तू ही बता..... ? किधर जाऊँ..... ? स्वामी का पता कैसे लगाऊँ..... ?

साँचु बताइदै मेरे स्वामी की मुदरिया ।
कौन लायौ हे यहाँ, मेरे स्वामी हैं कहाँ ॥
मोय भेद बता, मोय भेद बता । साँचु.....
भारी भीड़ जुड़ी थी एक दिन, जनकपुरी दरम्यान हो ।
तोड़ धनुष शिवजी का डाला, मारे सबके मान हो ॥
मात-पिता की आज्ञा पाकर, वन को किया पयान हो ।
केवट से कही थी पार कर मेरे भैया ।
कौन लायौ है यहाँ, मेरे स्वामी हैं कहाँ ॥
मोय भेद बता.....
वहाँ से चलकर पंचवटी पै, प्रभु ने किया पयान हो ।
सुपनखा की नाक भी काटी, मारे दैत्य तमाम हो ॥
मेरे कारण मृगा मारन, धाये सुख के धाम हो ।
आयी थी पुकार मैंने भेजे थे, लछमन जी दिवरिया ॥
कौन लायौ है यहाँ, मेरे स्वामी हैं कहाँ ।
मोय भेद बता.....
नाथ..... ! तुम कहाँ हो..... ?
बिन तुम्हारे नाथ अब, जीवन मुझे भाता नहीं ।
हाय ! अबला नारि का, कुछ ध्यान भी आता नहीं ॥

**हनुमान :** (पेड़ से कूदकर) आता है माता. . . ! श्री राम को आपका ध्यान हर समय आता है ।

**सीता :** (पीछे हटकर क्रोध से) भेष बदलकर फिर आ गया, दुराचारी ।

**हनुमान :** (पैरों में गिरकर) माता . . . . . ! मैं हूँ रामदूत ।

**सीता :** (पीछे हटते हुए) क्या है सबूत ?

**हनुमान :** (अंगूठी की ओर इशारा करके) इस शंका को मिटाने के लिए यह निशानी है, जो आपने केवट को दी थी ।

**सीता :** मगर . . . . . ? इस निशानी के साथ तेरी क्या कहानी है ?

**हनुमान :** माता जी ! जब दुष्ट रावण आपको पंचवटी से हरकर ले गया तो प्रभु रामचन्द्र जी ने आपको खोजते-खोजते किष्किन्धा के महाराज सुग्रीव को अपना मित्र बनाया। जहाँ आपने अपने आभूषण फैंके थे । अनेको बानर चारों दिशाओं में आपकी खोज कर रहे हैं । मेरे बड़े भाग्य हैं जो आपका दर्शन पाया । माताजी ! मैं महाराज सुग्रीव जी का मंत्री हनुमान हूँ ।

**॥ चौपाई ॥**

कपि के बचन सप्रेम सुनि, उपजा मन बिस्वास ।
जाना मन क्रम वचन से, यह कृपासिंधु कर दास ॥

**॥ चौपाई ॥**

हरिजन जानि प्रीति गाढ़ी । सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी ।

**सीता :** (हनुमान को उठाकर गदगद होकर) उपकार . . . . . ! पुत्र हनुमान तुम्हारा उपकार . . . . . !

मुद्रिका को देखकर, हृदय कमल भी खिल गये ।
यह निशानी क्या मिली, राम मानो मिल गये ॥
अच्छा ! पहले बतलाओ, वे अनुज सहित अच्छे तो हैं ।
खर-दूषण-त्रिशरा संहारक, मेरी चर्चा करते तो हैं ॥

॥ चौपाई ॥

देखि परम बिरहाकुल सीता । बोला कपि मृदु बचन बिनीता ॥

**हनुमान :** (चरणों में सिर नवाकर)

हे माता ! सुधि नहीं रखते तो, सुधि लेने को क्यों भेजा है ।
माँ ! वहाँ और कुछ बात नहीं, दिन रात आपकी चर्चा है ॥
लंका पर रघुकुल का डंका, हे माँ ! अब बजने वाला है ।
वह नौका डूब नहीं सकती, जिसका राघव रखवाला है ॥
माँ ! आज्ञा नहीं नाथ की है, अन्यथा दास दिखला जाता ।
लंका को क्षण में चौपट कर, मैं तुमको अभी लिवा जाता ॥

॥ चौपाई ॥

मोरें हृदय परम संदेहा । सुनि कपि प्रगट कीन्ह निज देहा ॥

**सीता :** हे पुत्र ! क्या सब बन्दर तुम्हारे ही समान हैं। यहाँ राक्षस बड़े बलवान हैं इसलिये मेरे हृदय में बड़ा संदेह है ।

(हनुमान द्वारा सुमेरु पर्वत के आकार का शरीर प्रगट करना)

॥ चौपाई ॥

सीता मन भरोस तब भयऊ । पुनि लघु रूप पवनसुत लयऊ ॥

**हनुमान :** (लघु शरीर धारण करके पैरों में गिरकर)

हे माता ! मेरे मन की श्रद्धा, अब होठों पर आ पहुँची है ।
जिस जन के आगे प्रभु न छुपे, माता कैसे छुप सकती है ॥
पृथ्वी का भार हटायेंगे, जब प्रभु की हुई प्रतिज्ञा यह ॥
तब अपना हरण करा माँ ने, कर डाली सम्पूर्ण पूर्ण समस्या यह ॥

**सीता :** (हनुमान के सिर पर हाथ फेरते हुए) हे बेटा !

माता का आशीर्वाद यही, हो जाओ अजर अमर बेटा ।
रघुनाथ तुम्हारे नाथ रहें, तुम सदा रहो अनुचर बेटा ॥
श्रीराम चरित के पृष्ठों में, तेरा भी नाम महान हुआ ॥
श्रीराम चरित के साथ-साथ, तू भी प्रसिद्ध हनुमान हुआ ।
यदि कहीं राम मन्दिर होगा, तो राम दुलारा भी होगा ।
सीता-लक्ष्मण के साथ-साथ, यह हनुमत प्यारा भी होगा ॥

**॥ चौपाई ॥**

सुनहु मातु मोहि अतिसय भूखा । लागि देखि सुन्दर फल रूखा ॥
सुनु सुत करहिं बिपिन रखवारी । परम सुभट रजनीचर भारी ॥

**हनुमान :** (पैरों में गिरकर)

हे माता ! मेरी सुनिये विनती, यद्यपि कुछ हृदय हिचकता है ।
फिर भी मुख खोल कहे माँ से, बालक का चित्त मचलता है ॥
आया हूँ सिन्धु लाँघकर मैं, इस कारण भूख सताती है ।
ये पेड़ फलों से लदे देख, इच्छा भी बढ़ती जाती है ॥
रखवाली पर जो माली हैं, उनका किंचित भय नहीं मुझे ।
जब कृपा दृष्टि माता की है, तो सकुचाहट अब नहीं मुझे ॥

**सीता :** (आशीर्वाद देते हुए) जाओ, हे तात ! हृदय में श्रीरघुनाथजी के चरणों को धारण कर मधुर फल खाओ ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा माँ ! जय श्री राम ।

**(हनुमान का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

चलेउ नाइ सिरु पैठेउ बागा । फल खाएसि तरु तौरे लागा ॥
रहे तहां बहु भट रखवारे । कछु मारेसि कछु जाइ पुकारे ॥

## सीन पाँचवाँ

**स्थान :** बाग ।

**दृश्य :** हनुमान का पेड़ उखाड़ कर फल तोड़ कर खाते हुए दिखाना ।

**पर्दा गिरना**

**माली नं. १ :** (प्रवेश करके) अरे ! वानर ! क्या तेरी मौत आई है जो महाराज रावण के बाग में घुस आया है । अरे..... ? यह क्या करता है ?

**हनुमान :** (गरजकर) आगे बढ़कर देख ..... ? तू किस तरह तू

मरता है ?

(माली का तलवार से वार करना । हनुमान का उसे मार देना)

**माली नं. २ :** (भयभीत होकर) अरे..... ? यह बानर तो बड़ा बलवान है । जाकर महाराज को खबर करता हूँ ।

(माली का जाना)

पर्दा गिरना

# लंका दहन

## (लंका दहन लीला)

### सीन छठवाँ

**स्थान :** रावण दरबार ।

**दृश्य :** रावण—मंत्री, सेनापति, सभासद, मेघनाद तथा अक्षय कुमार के साथ दरबार में विराजमान हैं ।

पर्दा उठना

**रावण :** कौन शत्रु है जगत में, पाताल और परलोक में ।
बज रहा है मेरे नाम का, आज डंका तीनों लोक में ॥

**साकी :** (प्रवेश करके शराब पेश करते हुए झुककर) हाजिर है, अन्नदाता !

**रावण :** ऐसी पिला दे साकिया, दुनियाँ का गम न हो ।
बढ़ता रहे सरूर भी, मस्ती भी कम न हो ।

**साकी :** (झुककर)
आज तो रंगत नई, सरकार ! मयखाने में है ।
सारी दुनियाँ की मस्ती, इस एक पैमाने में है ।

**माली :** (प्रवेश करके चरणों में गिरकर घबड़ाते हुए) सरकार की दुहाई है..... ! दुहाई है..... !

**रावण :** (झुंझलाकर) क्या आफत आई है ?

**माली :** अन्नदाता ! अशोक वाटिका में एक वानर आया है । उसने सारे बाग को उजाड़ डाला है । जब हममें से एक ने उसे

रोका तो उस वानर ने उसको जान से मार डाला ।

**॥ चौपाई ॥**

पुनि पठयउ तेहिं अच्छकुमारा । चला संग लै सुभट अपारा ॥

**रावण :** बेटा अक्षयकुमार !

**अक्षयकुमारः** (खड़ा होकर सिर नवाकर) आज्ञा पिताजी !

**रावण :** बेटा ! तुम अभी जाओ और उस दुष्ट वानर को जिंदा या मुर्दा जैसे भी हो पकड़ लाओ ।

**अक्षयकुमारः** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा पिताजी !

(अक्षयकुमार का योद्धाओं के साथ जाना)

**पर्दा गिरना**

**सीन सातवाँ**

**स्थान :** अशोक वाटिका ।

**दृश्य :** हनुमान का बाग उजाड़ते हुए दिखाना ।

**पर्दा उठना**

**अक्षयकुमारः** (प्रवेश करके क्रोध से) कहाँ है वह दुष्ट वानर..... ! जिसने सारी बाटिका को वीरान बनाया है ।

कौन है जो काल के, चक्कर में फंसकर आ गया ।
कोई आ सकता नहीं, फिर तू कैसे यहाँ पर आ गया ॥

**हनुमान :** (सामने आकर व्यंग से) अरे बालक !

जिस दाँतों का दूध, न सूखा हो दुख होता है उन्हें तोड़ने में ।
इसलिये लौट जा तू घर को, खुश है हनुमान को छोड़ने में ॥

**अक्षयकुमारः** (क्रोध से) धूर्त वानर !

दुध मुंहा कहता है क्या, विष का बुझा मैं तीर हूँ ।
नाग का बच्चा हूँ मैं, तेरी मौत की तस्वीर हूँ ॥

**हनुमान :** मौत की तस्वीर को भी, चूर कर देते हैं हम ।
तेरे जैसों को मसलकर, चकनाचूर कर देते हैं हम ।

**अक्षयकुमार** ठहर पाजी ! अब मजा, सारा चखा देता हूँ मैं ।
हड्डियों को पीस कर, सुरमा बना देता हूँ मैं ॥

**हनुमान :** अरे ? नासमझ, अज्ञानी बालक !
खेलकर मुष्टिक से क्यों, सिर पर बला लेता है तू ।
किसलिये बेटे का दुख, माँ-बाप को देता है तू ॥

**अक्षयकुमारः** (व्यंग से) ओह..... ? एक गरीब माली को मारकर अब अक्षयकुमार के सिर पर भी चढ़ा जाता है । अच्छा..... ? अब मरने के लिए तैयार हो जा ।

(दोनों में युद्ध होना । अक्षयकुमार का मारा जाना)

**पर्दा गिरना**

**सीन आठवाँ**

**स्थान :** रावण दरबार ।

**पर्दा गिरना**

**रावण :** ओह ! एक साधारण से वानर का इतना साहस कि मेरा तनिक भी भय न खाये और निडर होकर लंका में चला आया ।

**माली :** (प्रवेश करके चरणों में गिरकर) महाराज ! अनर्थ हो गया । उस अन्यायी वानर ने राजकुमार को भी मार डाला ।

**रावण :** (अचरज से) हैं..... ? क्या कहा..... ? अक्षयकुमार को भी मार डाला ।

**माली :** (सिर नवाकर) हाँ महाराज ! वह वानर बड़ा बलिष्ठ मालूम पड़ता है ।

**॥ चौपाई ॥**

सुनि सुत बध लंकेस रिसाना । पठएसि मेघनाद बलवाना ॥
मारसि जनिसुत बाँधेसु ताही । देखिअ कपिहि कहाँ कर आही ॥

**रावण :** बेटा मेघनाद !

**मेघनाद :** (उठकर सिर नवाकर) आज्ञा पिताजी !

**रावण :** बेटा ! तुम जाओ और उस दुष्ट बानर को बाँधकर ले आओ ।

**मेघनाद :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा पिताजी !

**॥ चौपाई ॥**

चला इंद्रजित अतुलित जोधा । बंधु निधन सुनि उपजा क्रोधा ॥
कपि देखा दारुन भट आवा । कटकटाइ गर्जा अरु धावा ॥

(मेघनाद का जाना)

**पर्दा गिरना**

**सीन नवाँ**

**स्थान :** अशोक बाटिका ।

**दृश्य :** हनुमान जी बाग में टहल रहे हैं ।

**पर्दा उठना**

**मेघनाद :** (प्रवेश करके क्रोध से) कहाँ है वह उपद्रवी बानर ! अब जरा मेरे सामने आ और अपना पराक्रम दिखा ।

**हनुमान :** (सामने आकर क्रोध से) क्या तू मुझे पराक्रम दिखाने से रोक सकता है । (गरजकर) अरे दुष्ट ! मैं तेरा काल हूँ ।

**मेघनाद :** बस . . . बस . . . . . ! बातें न बना । मेघनाद को भय न दिखा ।

काल कहता है जिसे, वह काल इस सरकार में ।
हथकड़ी पहने हुए है, बन्दी हमारे कारागार में ॥

**हनुमान :** अच्छा ? अब अपना पराक्रम दिखा । ज्यादा बातें ने बना ।

जो चढ़ा आकाश पर, इक दिन गिरा है गार में ।
सच बता किसका रहा है, बल सदा संसार में ॥

(दोनों का युद्ध होना । मेघनाथ का थक जाना)

**मेघनाद :** (एक ओर होकर) ओह . . . . . ? यह बानर तो बड़ा बलवान है । यदि इस पर ब्रह्मपाश नहीं चलाया तो यह काबू में नहीं आयेगा ।

(मेघनाद का ब्रह्मपाश चलाना)

**॥ चौपाई ॥**

ब्रह्मवान कपि कहुँ तेहिं मारा । परतिहुँ बार कटकु संघारा ॥
तेहिं देखा कपि मुर्छित भयऊ । नागपास बाँधेसि लै गयऊ ॥

**हनुमान :** (मूर्छित होते हुए)

**॥ दोहा ॥**

हे इन्द्रजीत सुन, अब पूर्ण हुआ संग्राम ।
बन्धन है यह धर्म का, बल का अब क्या काम ।
बन्धन काटूँ ब्रह्मा का, पर प्रश्न धर्म का है इसमें ।
अतएव नाथ के कार्य हेतु, यह अनुचर बंधता है इसमें ।
(मेघनाद द्वारा हनुमान को ब्रह्मपाश में बाँधकर ले जाना)

**पर्दा गिरना**

**सीन दसवाँ**

**स्थान :** रावण दरबार ।

**दृश्य :** दरबार लगा है ।

**पर्दा उठना**

**रावण :** (विस्मय से) ओह..... ? एक वानर को पकड़ने में इतनी कठिनाई..... ? मेघनाद ने भी इतनी देर लगाई..... ?

**द्वारपाल :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो । इन्द्रजीत उस वानर को बन्दी बनाकर ले आये हैं ।

**रावण :** (खुश होकर) अच्छा..... ? आने दो ।

**मेघनाद :** (हनुमान सहित प्रवेश करके सिर नवाकर) पिताजी ! जय शंकर की । लीजिये पिताजी ? यह दुष्ट वानर हाजिर है ।

**॥ चौपाई ॥**

कपि बंधन सुनि निसिचर धाए । कौतुक लागी सभाँ सब आए ॥
दसमुख सभा दीखि कपि जाई । कहि न जाइ कछु अति प्रभुताई ॥

(रावण हनुमान संवाद)

**रावण :** (हनुमान की ओर इशारा करके)
तू कौन ? कहाँ से आया है, कुछ अपनी बात बता बन्दरे ।
बाग उजाड़ा क्यों मेरा, क्या कारण था बतला बन्दरे ॥
मारा अक्षय कुमार मेरा, तो तेरा अब क्यों न संहार करूँ ।

तू ही न्यायी बनकर कह दे, तुझसे कैसा व्यवहार करूँ ॥

**हनुमान :** (सहजभाव से) सुनो लंकेश..... ?

जो दशरथ अजिर बिहारी हैं, कहलाते रघुकुल भूषण हैं ।
रीझी थी जिन पर सूपनखा, हारे जिनसे खर-दूषण हैं ॥
फिर और ध्यान दे लो जिनकी, नारी को हरलाये हो ।
मैं उन्हीं राम का सेवक हूँ, जिनसे तुम बैर बढ़ाये हो ॥
अब सुनिए ? लंका आया था, माता का पता लगाने को ।
इतने में भूख लगी ऐसी, हो गया विवश फल खाने को ॥
अक्षय वध का उत्तर है यह, सबको अपना तन प्यारा है ।
उसने जब मुझको मारा तो, मैंने भी उसको मारा है ॥

**॥ दोहा ॥**

अब मेरी कुछ प्रार्थना, सुनिये देकर ध्यान ।
बिना कहे बनती नहीं, कहना पड़ा निदान ॥
सीता माता को लंका में रख, तुम भारी भूल कर रहे हो ।
जीवन में अपयश अर्जन कर, बिन आई मौत मर रहे हो ॥
है यही उचित ? शत्रुता छोड़, लौटाओ माता सीता को ।
श्री राघवेन्द्र की छाया में, फैलाओ राज प्रतिष्ठा को ॥

**रावण :**

है धाक धरनि में गगन तलक, रचना समस्त मुझ ही में है ।
आज्ञाकारी हैं सूर्य-चन्द्र, सब उदय-अस्त मुझ ही में हैं ॥
मेरी त्यौरी के चढ़ते ही, त्रैलोक्य कांपने लगते हैं ।
ग्रह, काल, सुरेश, कुबेर, सब मेरे घर पानी भरते हैं ॥
आती है बड़ी हँसी मुझको, यह ऊट-पटाँग बात सुनकर ।
उस अधम तपस्वी बच्चे को, किस भाँति बखाना चुन-२ कर ॥
ना समझे किस घमण्ड में है, स्वामी को अपने समझा ले ।
उस बानर वाले तपसी से, क्या डर जायें लंका वाले ॥

**हनुमान :** (क्रोध से)

तूने जो अधम कहा इससे, कब उनकी महिमा घटती है ।

कितना ही फेंको धूलि किन्तु सूरज तक नहीं पहुँचती है ॥
आ गया मृत्यु का दिन समीप, उसने ही तुझे घुमाया है ॥
कहना सुनना है व्यर्थ सभी, तू तो सचमुच बौराया है ॥
मेरा-मेरा जो बकता है, यह कुछ भी काम न आयेगा ।
तब मुट्ठी बाँधे आया था, अब हाथ पसारे जायेगा ॥

**रावण :** (व्यंग्य से) ओर बानर अज्ञान..... ! रावण को शिक्षा देने का ध्यान..... !

लो देखो ? आ गया बानर, मुझे नीति बताने को।
चला है तुच्छ दीपक, चाँद को रास्ता दिखाने को ॥
जानकी लेने यहाँ पर, जो मनुष्य भी आयेगा।
समझ ले ? मूर्ख वह, जिन्दा न वापस जायेगा ॥

**हनुमान :** (क्रोध से) ओह..... ? इतना अभिमान..... ?

अभिमान रहा किसका जग में, जो चढ़ता है सो गिरता है ।
वह बादल भी फट जाता है, जो गरज-२ कर घिरता है ॥
जानकर अनजान न बन, वरना फिर पछतायेगा।
जिन्दगी बन जायेगी तेरी, चरणों में गर तू जायेगा ॥

**रावण :** (क्रोध से) ओ दुष्ट बानर! जबान पर लगाम लगा। वरना ?

जवाँ जो चल रही है, उसके सौ टुकड़े बना दूँगा।
मसलकर धूल कर दूँगा, तुझे नभ में उड़ा दूँगा ॥
राम की हस्ती को मैं, मिटा दूँगा इस संसार से ।
सर कलम दोनों का होगा, मेरी इस तलवार से ॥

**हनुमान :** (क्रोध से) ओ अक्ल के दुश्मन !

आयेगा जब काल सिर पर, पल भर में जीवन का नाश होगा ।
अकड़ता है जिस वैभव पर, वह जल के पल में खाक होगा ॥
राम के सम्मुख जो ठहरे, ऐसा न कोई इन्सान है।
मनुष्य के चोले में आया, समझ ले ? साक्षात भगवान है ॥

**रावण :** हा... हा... हा...

मैं अमर हूँ मर नहीं सकता, हरगिज किसी इन्सान से।
मनुष्य वानर तो तीज क्या, टकराऊँगा खुद भगवान से ॥

**हनुमान :** यह मान, संपदा, यह वैभव, न अन्त में पास होगा।
जो काल है तेरे वश में, उसी का तू ग्रास होगा ॥

**रावण :** ओह..... ? इतना मुँह फट... इतना वाचाल..... !
(दाँत पीसकर) ओ चाण्डाल..... ?

करेगा बक-बक जो अब भी पाजी, तो जीभ तेरी निकाल लूँगा।
पटक के पृथ्वी पै इस घड़ी में, यह जान तेरी निकाल लूँगा ॥
न तीनों लोकों में होगी रक्षा, कोई बहाना नहीं मिलेगा।
समझ ले? बैरी को मेरे जग में, कोई ठिकाना नहीं मिलेगा ॥

**हनुमान :** (अकड़ते हुए क्रोध से) क्या कहा..... ?

कहीं ठिकाना नहीं मिलेगा, अरे? छिपाने वाला नहीं मिलेगा।
पड़ी सड़ेगी लाश तेरी, उठाने वाला नहीं मिलेगा ॥

**रावण :** (घुटने में हाथ मारकर क्रोध से)
न बाज आता है बोलने से, जबान फर-फर चला रहा है।
सहन मैं करता रहा हूँ जितना, डिठाई करता ही जा रहा है ॥

**हनुमान :** डिठाई करता ही जा रहा हूँ, अकड़ में भरता ही जा रहा है।
मैं दूत हूँ इसलिए चुप हूँ, तू सिर पै चढ़ता ही जा रहा है ॥

**रावण :** तू बनके जिनका दूत आया, बड़ाई जिनकी बखानता है।
हैं मेरे दासों के दास ऐसे, तू जिनको भगवान मानता है ॥

**हनुमान :**

मैं जिनको भगवान मानता हूँ, वे तीन लोकों के हैं विधाता।
जो तू है सेवक तो वे हैं स्वामी, जो तू है भिखारी तो वे हैं दाता ॥

**रावण :** जबान को लगाम लगा वानर, क्या जीने से तंग आया है।
खड़ा हुआ है निडर होकर, न मेरा खौफ खाया है ॥

**हनुमान :** ठीक है..... ?
बुरा भी जीव का अच्छा भी, कर्माधीन होता है।
किसी का नाश हो तो, पहले बुद्धिहीन होता है ॥

**रावण :** (झुंझलाकर क्रोध से) बस, अब सहा नहीं जाता है । देखता हूँ तुझे कौन बचाता है ?

किया अपमान जो मेरा, मजा उसका चखाता हूँ ।
तेरा विध्वंस करके, लाश कुत्तों को खिलाता हूँ ॥

(सभा को इशारा करके)

हे राज सभा के सचिव वरो ! वानर सचमुच उन्मादी है ।
सीधा साधा सा लगता है, वास्तव में बड़ा विवादी है ॥
निश्चय ही बल पर फूला है, उन दोनों तपसी बच्चों के ।
सिर इसका अभी काट डालो, सामने मेरी इन आँखों के ॥

**॥ चौपाई ॥**

सुनत निसाचर मारन धाए । सचिवन्ह सहित विभीषनु आए ॥

**विभीषण :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) भाई सहाब ! जय शंकर !

हे भाई ! कुछ सोचो समझो, सर्वत्र क्षमा है दूतों को ।
ऐसा न करो जग धिक्कारे, लंका पति की करतूतों को ॥
फिर राजसभा है यह राजन ! अन्याय न यहाँ कीजियेगा ।
देना ही है यदि दण्ड इसे, तो अवसर देखि दीजियेगा ॥

**रावण :** अच्छा..... ! सभासदो..... !

बे पूंछे पूंछ घुमा इसने बाग उजाड़ा सारा है ।
अतएव निपूंछा करो इसे, यह आदेश हमारा है ॥
घी और तेल से वस्त्र भिगो, बाँधों पूंछ में बानर की ।
फिर कर में लेकर मशाल, लगाओ पूँछ में बानर की ।
जब जली पूँछ से जायेगा, तो स्वामी को भड़कायेगा ।
लड़ने के लिए तपसियों को, अति शीघ्र यहाँ ले आयेगा ॥

**सभासद :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज !

**॥ चौपाई ॥**

जरइ नगर भे भोग बिहाला । झपट लपट बहु कोटि कराला ।
जारा नगरु निमिष एक माहीं । एक विभीषन कर गृह नाहीं ॥
उलटि पलटि लंका सब जारी । कूदि परा पुनि सिंधु मझारी ॥

(हनुमान जी की पूँछ में कपड़ा लपेटकर घी-तेल में डालकर सभासदों द्वारा आग लगाना। हनुमान जी द्वारा लंका जलाना। लंका में हा-हाकार मचना)

पर्दा गिरना

**सीन ग्यारहवाँ**

**स्थान :** अशोक वाटिका।

**दृश्य :** सीता जी व्याकुल बैठी हैं।

पर्दा गिरना

॥ दोहा ॥

पूँछ बुझाइ खोई श्रम, धरि लघु रूप बहोरि ।
जनक सुता के आगे, ठाढ़ भयउ कर जोरि ॥

**हनुमान :** (प्रवेश करके सीता के चरणों में गिरकर) माता जी प्रणाम ! हे माता ! मैं रावण से मिल आया हूँ और चेतावनी के रूप में लंका भी जला आया हूँ।

अच्छा ? अब चित्त उचटता है, अतएव विदा करियेगा माँ ।
फिर हाथ कृपा का इस सिर पर, चलती बिरीयाँ धरियेगा माँ ॥
प्रभु ने जैसे मुदरी दी थी, दें चिह्न मात भी निज कर से ।
संदेश कहें जो कहना हो, कह दूँगा श्री रघुबर से ॥

**सीता :** (हनुमान को उठाकर चूणामणि देते हुए दुखी हृदय से)

यह लो मेरी चूणामणि, उनके चरणों में रख देना ।
कर जोर ओर से फिर मेरी, इस भाँति निवेदन कर देना ।
कर्त्तव्य समझ कर वे अपना, मेरा संकट हरण करें ।
जो बाण जयंता पर छोड़ा, वह कहाँ गया फिर ग्रहण करें ॥
यदि एक मास के भीतर ही, प्रभु आकर नहीं छुड़ायेंगे ।
तो कह देना, जतला देना, फिर मुझे न जीती पायेंगे ॥
बलवीर ! इधर तुम जाते हो, क्या पता उधर क्या होना है ।
सांत्वना मिली थी कुछ तुमसे, फिर वही रात दिन रोना है ॥

पर, क्या करूँ? परवशता है, इस कारण धीर धर रही हूँ।
छाती पर पत्थर सा रखकर, मैं तुमको विदा कर रही हूँ॥

**हनुमान :** (चरणों में गिरकर) अच्छा..... ? माताजी ! इस दास का प्रणाम लीजिये। और अपने दिल में धीरज धारण कीजिए।

**(हनुमान का जाना। "जय श्री राम")**

**पर्दा गिरना**

**॥ दोहा ॥**

जनक सुतहि समुझाइ करि, बहु विधि धीरजु दीन्ह ।
चरन कमल सिरु नाइ कपि, गवनु राम पहिं कीन्ह ॥

**सीता :** (रोते हुए)

**गाना—फिल्म "दो बदन"**

लो आ रहीं उनकी यादें, पर वो नहीं आये-२
दिल उनको ढूँढता है, गम का श्रृंगार करके ।
आँखें भी थक गई हैं अब इन्तजार करके ॥
इक साँस रह गई है, वो भी न टूट जाये।
लो आ रहीं.....(१)
रोती हैं आज हम पर तन्हाइयाँ हमारी।
वो भी न आये शायद, परछाइयाँ हमारी॥
बढ़ते ही जा रहे हैं, मायूसियों के साए।
लो आ रही.....(२)

## सीन बारहवाँ

**स्थान :** समुद्र का किनारा।

**दृश्य :** जामवंत, नल, नील, और अङ्गद प्रतीक्षा कर रहे हैं।

**पर्दा उठना**

**अङ्गद :** (चिन्तित होकर) हे तात जामवंत जी ! समय बीता जा रहा है। किन्तु ? हनुमान जी अभी नहीं आए अब क्या होगा ?

**जामवंत :** (सांत्वना देते हुए) बेटा ! तुम हनुमान जी के पराक्रम को नहीं जानते । वे सीता जी की खोज करके आते ही होंगे.।

**॥ चौपाई ॥**

नाधि सिंधु एहि पारहि आवा । सबद किलकिला कपिन्ह सुनावा ॥
हरषे सब बिलोकि हनुमाना । नूतन जन्म कपिन्ह तब जाना ॥
मुख प्रसन्न तन तेज बिराला । कीन्हेसि रामचन्द्र कर काजा ॥
मिले सकल अति भए भिखारी । तलफल मीन पाव जिमि बारी ॥

**हनुमान :** (प्रवेश करके) जय श्री राम ! हे भाइयो ! मैं सीता माता का पता लगा आया हूँ और लंका नगरी को जला कर आया हूँ ।

**नल :** (गले लगकर)
हे हनुमत ! तुमने आज, बढ़ाया सबका मान ।
दिया है तुमने आज, सबको जीवन दान ॥

**नील :** (माथा चूमकर)
यदि लौट यहाँ आते तुम, सीता माँ की सुधि लिए बिना ।
तो प्राणदण्ड देते सुकण्ठ, होते न शान्य यह किये बिना ॥

**जामवंत :** (पीठ पर हाथ फेरकर)
यदि ठीक समय पर हनुमत तुम, मुद्रिका देते नहीं वहाँ ।
तो उन वैदेही सीता को, जीवित पाते नहीं वहाँ ॥

**अङ्गद :** (छाती से लगाकर)
हे तात ! सुयश के भागी हो, सब प्रभु का कार्य संभाला है ।
सीता माँ की सुधि लेकर के, प्रभु में जीवन डाला है ॥

**हनुमान :** हे भाइयो ! इस कार्य में, नहीं मेरी बड़ाई है ।
श्रीराम कृपा का बल है सब, जो मेरा हुआ सहाई है ॥

**जामवंत :** भाइयो ! समय काफी बीत चुका है। प्रभु रामचन्द्र जी व्याकुल हो रहे होंगे। इसलिये अति शीघ्र चला जाये ।

**सम्मिलित स्वर : बोलो सियापति रामचन्द्र की जय**

॥ चौपाई ॥

चले हरषि रघुनायक पासा । पूँछत कहत नवल इतिहासा ॥

## सीन तेरहवाँ

**स्थान :** राम का शिविर ।

**दृश्य :** श्री राम लक्ष्मण तथा सुग्रीव सहित चिंतित मुद्रा में बैठे हुए हैं ।

**पर्दा उठना**

**राम :** (व्याकुल होकर) हे भैया लक्ष्मण ! यह बिरह रूपी अग्नि मेरे हृदय को बेचैन कर रही है । समय भागा जा रहा है । ओह... क्या वह समय अब लौटकर नहीं आयेगा... ?

जब दिवस आनन्द के थे, जब सुहानी रात थी ।
बन नहीं लगते थे बन, महलों ही जैसी बात थी ॥

**लक्ष्मण :** (दुखी होकर धीरज बँधाते हुए) भैया ! आज इतने अधीर क्यों हो रहे हो ? साहस से काम लो, भैया..... !

मोह था जिसको न सुख से, राज से दरबार से ।
जो चला आया था नाता, तोड़कर घरबार से ॥
आज तक विचलित हुआ था, जो न दुख की मार से ।
आज वह मन दब रहा क्यों, संकटों के भार से ॥

**सुग्रीव :** (साँत्वना देते हुए) महाराज ! वानरों को गये हुए बहुत समय बीत गया । अब वे आते ही होंगे ।

॥ चौपाई ॥

राम कपिन्ह जब आवत देखा । किएँ काजु मन हरष बिसेषा ॥
फटिक सिला बैठे द्वौ भाई । परे सकल कपि चरनन्हि जाई ॥

**वानर समूह :** (प्रवेश करके श्रीराम के चरणों में गिरकर) जय श्री राम ।

॥ दोहा ॥

प्रीति सहित सब भेंटे, रघुपति करुना पुंज ।
पूँछी कुसल नाथ अब, कुसल देखि पद कुंज ॥

**जामवंत :** हे नाथ ! आपकी कृपा से सब कार्य पूरा हुआ है। आज हमारा जन्म सफल हो गया। हनुमान जी ने जो कार्य किया है उसकी बड़ाई सहस्त्र मुखों से भी नहीं की जा सकती।

**॥ चौपाई ॥**

सुनत कृपानिधि मन अति भाए । पुनि हनुमान हरषि हियँ लाए ॥

(हनुमान जी का श्रीराम के चरणों में गिरकर आँसू बहाना)

**राम :** (हनुमानका चेहरा ऊपर उठाकर विस्मय से आँसू पौंछते हुए) अरे ! पवनपुत्र..... ! तुम रो रहे हो। बोलो..... ? बोलो पवन पुत्र..... ? मेरा मन अधीर हो रहा है।

**हनुमान :** (सुबकते हुए) प्रभो !

क्या कहूँ कैसे कहूँ, कुछ कहा जाता नहीं।
लेकिन बिना बताये भी, अब तो रहा जाता नहीं॥
लंका से मैं आया हूँ, सुनिये दयानिधान।
रोती हैं जनक दुलारी, क्या भूल गये भगवान॥

**राम :** (आँसू गिराते हुए)

हाँ ऐसी पतिव्रता नारी, ऐसे संकट के मुख में है।
जिसका मुझसा पति जीवित है, वह पत्नी इतने दुख में है॥

**हनुमान :** प्रभो !

लंका में जाकर माता का, कहीं पता नहीं पाया।
एक भक्त था प्रभु आपका, उसने ही बतलाया॥
भाई था वो रावण का, पर जपता था श्रीराम।
रोती हैं जनक दुलारी, क्या भूल गये भगवान॥
एक बाग था अशोक का, जिसमें था एक वृक्ष भारी।
बैठीं उसी के नीचे थी, प्रभु मिथिलेश कुमारी॥
मैंने जाकर जग जननी को, प्रणाम किया श्रीराम।
रोती हैं जनक दुलारी, क्या भूल गये भगवान॥
माता को देकर मुद्रिका, शपथ आपकी खाई।
माँ धीरज रखिये अब, जल्दी आवेंगे रघुराई॥

बदले में चूड़ामणि लाया, स्वीकार करो श्रीराम ।
रोती हैं जनक दुलारी, क्या भूल गये भगवान ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि सीता दुख प्रभु सुख अयना । भरि आए जल राजिव नयना ॥

राम : (चूड़ामणि हाथ में लेकर) हा..... ! सीते..... !
आती है याद तेरी, ज्यादा ना सताओ ।
रोते हुए राघव को, थोड़ा धीर बँधाओ ॥
मेरी सीता प्यारी ! ओ जनक दुलारी !
भेजे थे तेरी खातिर ही, हनुमान लंका में ।
लेकर के चूड़ामणि लौटे, अपनी ही शंका में ॥
हर हाल में तुम उनका, सब हाल बतलाओ ॥ रोते...
लंका में कैसे बीता है, जीवन उस सीता का ।
मुझको बता दे चूड़ामणि, सब हाल सीता का ॥
दिल घबड़ाये ये मेरा, अब और ना रुलाओ । रोते...

हनुमान : वहाँ निशाचरों का पहरा, प्रभु हरदम रहता है ।
रावण भी जी भर-भर के, दुख माँ को देता है ॥
दुष्टों का वध करने को, अब जल्दी चलो श्रीराम ।
रोती हैं जनक दुलारी, क्या भूल गये भगवान ॥
प्रभो !
सूखकर कांटा बनी हैं, धीर प्राणों में नहीं ।
मन लुटा बैठा है साहस, नींद आँखों में नहीं ॥
रट लगी है आपके ही, नाम की हर साँस में ।
प्राण हैं अटके हुए, केवल मिलन की आस में ॥
इतना ही नहीं प्रभो..... !
चलते समय कहा मुझसे, सब मेरी व्यथा सुना देना ।
छोड़ा जो बाण जयन्ता पर, उसकी भी याद दिला देना ॥
अपराध हुआ है क्या मुझसे, जो मुझे बिसारे बैठे हैं ।
प्रण पालक कहलाकर फिर, क्यों प्रणहारे बैठे हैं ॥

इक महीना और मैं, रक्षा करूँगी प्राण की ।
जो न आये प्रभु तो, फिर न मिलेगी जानकी ॥

**राम :** (हनुमान को छाती से लागकर) हे तात हनुमान जी !
जानकी के वास्ते, बाजी लगेगी जान की ।
जानकी ही जब नहीं, परवाह फिर क्या जान की ॥
हे महाबली ! हे महावीर, तुझ पर गर्वित हूँ मैं ।
क्या दूँ तुझको बदले में, अब लज्जित हूँ मैं ॥
भूलूँगा नहीं उपकार तेरा, इस अवसर यही कहूँगा मैं ।
जब तक पृथ्वी आकाश रहे, तब तक रहूँगा मैं ॥

॥ **चौपाई** ॥

नाथ भगति अति सुखदायनी । देह कृपा करि अनपायनी ॥
सुनि प्रभु परम सरल कपि बानी । एवमस्तु तब कहेउ भवानी ॥

**राम :** (हनुमान से)
वर माँग हे राम दुलारे तू, अब तू ही प्राण हमारा है ।
भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण से, सीता से बढ़कर प्यारा है ॥

**हनुमान :** (चरणों में गिरकर) हे नाथ ! मुझे कृपा करके अति सुखदायी अपनी निश्छल भक्ति दीजिये ।

**राम :** (सिर पर हाथ रखकर) ऐसा ही हो । हे सीते ! तुम धन्य हो ।
जब तक चलता रहेगा, चक्र इस संसार का ।
मान लोगों में रहेगा, धर्म के व्यवहार का ॥
जब तक आकाश में, चमकेंगे तारे शाम को ।
अब तक याद रखेगा, जगत इस नाम को ॥

॥ **चौपाई** ॥

सुनि प्रभु बचन कहहिं कपिबृन्दा । जयजयजय कृपालु सुखकंदा ॥
तब रघुपति कपि पतिहि बोलावा । कहाँ चलैं कर करहु बनावा ॥

**राम :** (सुग्रीव से) हे तात सुग्रीव जी ! अब आप सेना तैयार कराइए और लंका की ओर कूँच कीजिये ।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज ! हम सब तैयार हैं ।

॥ चौपाई ॥

हरषि राम तब कीन्ह पयाना । सगुन भए सुन्दर सुभ नाना ॥

**(सबका प्रस्थान) बोलो सियापति रामचन्द्र की जय**

**पर्दा गिरना**

॥ दोहा ॥

एहि बिधि जाइ कृपानिधि, उतरे सागर तीर ।
जहँ तहँ लागे खान फल, भागु बिपुल कपि बीर ॥

राम : देखो भाई ..... ? समुद्र का किनारा आ गया। तुम सब अपनी भूख शान्त करके अब विश्राम करो।

सुग्रीव : (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

# विभीषण की शरणागति

## (लंका दहन लीला)

### सीन चौदहवाँ

स्थान : रावण का शयनागार।

दृश्य : रावण मन्दोदरी सहित बैठा है।

**पर्दा उठना**

॥ चौपाई ॥

दूतिन्ह सन सुनि पुरजन बानी । मंदोदरी अधिक अकुलानी ॥
रहसिजोरि कर पति पग लागी । बोली बचन नीति रस पागी ॥

मन्दोदरी : (चरणों में गिरकर) हे नाथ ! हरि से द्रोह त्याग दीजिये। उनके दूत का बल आप स्वयं अपनी आँखों से देख चुके हैं। हे नाथ ! यदि आप कल्याण चाहते हैं तो अपने मंत्री को बुलाकर साथ में उनकी पत्नी को भेज दीजिये।
हे प्राणनाथ ! हे प्रजानाथ ! हे भूमण्डल के भूप प्रभो।
मेरी आँखों में घूम रहा, अब घोर प्रलय का रूप प्रभो ॥
हनुमत से जिनके पायक हैं, वे कैसे मारे जायेंगे।
तुम लड़के जिन्हें समझते हो, वे लड़के तुम्हें हरायेंगे ॥

॥ चौपाई ॥

श्रवन सुनी सठ ता करिबानी । बिहसा जगत बिदित अभिमानी ॥

**रावण :** हा . . . हा . . . हा . . . सत्य ही स्त्रियों का स्वभाग डरपोक होता है। यदि बानरी सेना आ भी जायेगी तो राक्षस उन्हें खा-खाकर जियेंगे। जिसके भय से लोकपाल भी काँपते हैं उसकी पत्नी भयभीत हो यह बड़ी हँसी की बात है। सुनो..... ?

वह शूर नहीं, वह कायर है, जो रण में डटकर हट जाये।
वह मर्द नहीं नामर्द है जो, कहकर बात पलट जाये॥
उस वानर वाले तपसी से, क्या मेरी प्रभुताई कम है।
दूँगा न कदापि जानकी को, जब तक मेरे दम में दम है॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि बिहसि ताहि उर लाई । चलेउ सभा ममता अधिकाई ॥

**रावण :** (मन्दोदरी को उठाकर छाती से लगाकर) अच्छा ? अब मैं दरबार में जाता हूँ। तुम किसी बात की चिन्ता मत करो।

(रावण का जाना)

पर्दा गिरना

**सीन पन्द्रहवाँ**

**स्थान :** रावण दरबार।

**दृश्य :** मंत्री, सेनापति मेघनाद तथा सभासद यथा स्थान बैठे हैं। प्रहरी दरवाजे पर खड़ा है।

पर्दा उठना

**प्रहरी :** सावधान ! श्री श्री १००८ श्री लंकाधिपति महाराज रावण पधार रहे हैं।

(सबका यथा स्थान खड़े हो जाना)

**रावण :** (प्रवेश करके) हा... हा... हा...

इन्द्र, यम, अग्नि, वरुण, दिग्पाल, दानव, चर, अचर ।

दास की सूरत खड़े, रहते हैं मेरे द्वार पर ॥
हा . . . हा . . . हा . . . (सिंहासन पर बैठने पर सबका बैठ जाना)

**मंत्री :** (सिर नवाकर) अन्नदाता ! आपके प्रताप को कौन नहीं जानता ।
बस में किया है इन्द्र को, यम को मसल दिया ।
जिसने उठाया सिर उसे, फौरन कुचल दिया ॥

**रावण :** हा . . . हा . . . हा . . . साकी ! जल्दी लाओ ।

**साकी :** (कोर्निश करके शराब पेश करते हुए) हाजिर है अन्नदाता !

**रावण :** (शराब की बोतल हाथ में लेकर)
जाम पर जाम पिला, रंग जमा दे साकी ।
जिसको आदत न हो, उसको भी पिला दे साकी ॥
एक दो तीन नहीं, दौर चला दे साकी ।
सारे दरबार को, मदहोश बना दे साकी ॥

॥ चौपाई ॥

बैठेउ सभाँ खबरि असि पाई । सिंधु पार सेना सब आई ॥
बूझेसि सचिव उचित मत कहहू । ते सब हँसे नष्ट करि रहहू ॥

**गुप्तचर :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज ! जय शंकर की ।

**रावण :** कहो . . . . . ? क्या खबर लाये हो ?

**गुप्तचर :** (सिर नवाकर) महाराज ! वानर सेना समुद्र तट पर आ पहुँची है ।

**रावण :** लंका के वीरो ! सुना . . . . . ? तपसी की सेना हमारी सीमा के निकट आ पहुँची है ।

**सेनापतिः** (खड़ा होकर सिर नवाकर व्याकुल होकर) परन्तु . . . . . ? महाराज ! यह तो हमारे लिये बड़े दुख का समाचार है ।

**रावण :** (क्रोध से) और यही सब कुछ पहले सोच लिया जाता तो ? आज इतना सुनने का अरसर नहीं मिलता । तपसी की सेना का समुद्र तट पर आना तुम्हारे लिये शर्म की बात हो

सकती है किन्तु ..... ? रावण के लिये यह एक कलंक का विषय है । जिस लंकेश की ओर कोई आँख उठाने का साहस नहीं कर सकता था । आज केवल दो तपसी छोकरे उससे युद्ध करने का साहस कर रहे हैं ।

**सेनापतिः** (सिर नवाकर) इस संग्राम में उन्हें मुँह का खानी पड़ेगी, महाराज !

**सभासदः** (खड़ा होकर सिर नवाकर) उनके पास है भी क्या? महाराज ! केवल मुट्ठी भर भुनगे मच्छर जेसी वानर सेना ! वह तो हमारा भोजन हैं ।

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) निःसन्देह महाराज ! आप आज्ञा करें तो समस्त वानर सेना बन्दी बनाकर आपके सामने उपस्थित कर दी जायेगी और यदि आज्ञा हो तो उन्हें रणभूमि में ही गाजर मूली की तरह चबा लिया जाये ।

**मेघनाद :** (खड़ा होकर) पिताजी !मैंने तो उसी समय आपको चेतावनी दी थी अगर हनुमान को उसी समय समाप्त कर दिया जाता तो शायद हमारे दुर्गा का भेद रामादल में नहीं पहुँचता ।फिर भी चिन्ता की कोई बात नहीं । आपने शत्रु की पत्नी का हरण कर हमारा सिर गौरव से ऊँचा कर दिया ।

**॥ चौपाई ॥**

अवसर जानि बिभीषनु आवा । भ्राता चरन सीस तेहिं नावा ॥

**विभीषण :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) क्षमा हो महाराजाधिराज ! असहाय नारी के हरण में मुझे कोई वीरता दिखाई नहीं देती ।

**रावण :** (घृणा के भाव से) यह राजनीति है विभीषण ! शत्रु को अपमानित करने के लिये सामरिक महत्व की एक चाल ? हा. . . . .हा. . . . .इतने दिनों तक राजसभा में रहकर भी तुम्हारी राजनीतक बुद्धि का विकास नहीं हुआ ।

**विभीषण :** (आवेश से कठोर स्वर में) कदाचित नहीं हुआ महाराजाधिराज ! विभीषण स्त्री के अपहरण को सामाजिक तथा मानवीय अपराध मानता है। यह राजनीतिक चाल नहीं है। यह नारी का अपमान करने का खुला प्रदर्शन है।

**मेघनाद :** (खड़ा होकर) महाराजाधिराज के कर्मों को सुशोभित क़रने में क्या दोष है..... ? चाचाजी !

**विभीषण :** (मुस्कराकर व्यंग से) दोष कहाँ है? माहाराजधिराज के द्वारा एक सीता का अपहरण होता है तो लंका में बीसियों सागरिकाओं का अपहरण होता है।

**मेघनाद :** (दाँत पीसकर) यह पिता जी को अपयश देने का प्रयत्न है।

**विभीषण :** (शाँत और गम्भीर स्वर में) मैं अपयश की नहीं..... ? परम्परा की बात कर रहा हूँ... बेटे ! प्रजा के सामने दुष्ट उदाहरण रखने से दुष्ट तत्वों को बल मिलता है। न इसमें राजनीति है और न वीरता..... । मूलरूप में यह एक असहाय नारी के अपहरण की बात है।

**मेघनाद :** (क्रोध मिश्रित व्यंग से) किन्तु वह शत्रु-पत्नी है, चाचाजी !

**रावण :** (शुष्क स्वर में) रहने दो बेटे ! इस वैरागी को फिर उपदेश देने का दौरा पड़ा है। इसकी आँखें अब कुछ नहीं देखेंगी। कान कुछ नहीं सुनेंगे। इस खर दिमाग को हमारा प्रत्येक शत्रु अपना मित्र दिखाई पड़ता है। हमारा गौरव इसे कुकृत्य लगता है।(क्रोध से)

बस मौन विभीषण हो जा अब, अनुचित है दण्ड सहोदर को।
इस समय और होता कोई, तो अभी काट देता सर को॥

**विभीषण :** (चरण पकड़कर) नहीं... तात..... !

जो मन में भाव था मेरे, कहा बिल्कुल सफाई से।
बुरा हो लाख जन्मों तक, कपट रखूं जो भाई से॥

हे तात ! आज ये सब लोग राम को अपना शत्रु बता रहे हैं किन्तु अब तक क्या किया है श्रीराम ने ?

**रावण :** (क्रोध से) ओ वाचाल ..... ! शत्रु को श्री लगाते तुम्हें शर्म नहीं आती ।

आज लंकेश से सूझी, तुझे भी वैर की ।
कर रहा भाई होकर, बड़ाई गैर की ॥

**विभीषण :** क्षमा करें महाराज ! मित्रों को शत्रु कहकर उनका सब कुछ छीनना ही आपकी नीति है । हाँ ... ! याद आया .... ? किसी समय एक मित्र सहस्त्रार्जुन था क्योंकि आप उससे पराजित हो गये थे । एक मित्र बाली है क्योंकि आप उसकी ताकत से भयभीत हैं ।

**रावण :** (क्रोध से) ओ कायर !

विश्व में बदनाम मैं, तेरी जुबाँ से हो गया ।
शर्मकर निर्लज्ज तू, कायर कहाँ से हो गया ॥

**विभीषण :** (पैर पकड़कर) तात !

सोचकर देखो गले, नागिन को लिपटाते हो तुम ।
कूँदते हो आग में, पर्वत से टकराते हो तुम ॥

किसी असहाय नारी को चुरा लाना वीरता नहीं है । वीर तो राम हैं । सूपनखा ने उनकी पत्नी की हत्या करनी चाही फिर भी उनके भाई ने केवल अपमान की निशानी देने के लिये नाक-कान काटकर छोड़ दिया । वे नारी का सम्मान करना जानते हैं अन्यथा आपकी नीति के अनुसार उन्हें सूपनखा का भोग करना चाहिये था ।

**रावण :** (झुंझलाकर) अरे दुष्ट !

बैठकर तुझसे सुनें हम, गैर के गुणगान को ।
इस तरह की है नहीं, आदत हमारे कान को ॥

**विभीषण :** हे तात ! आप ज्ञानवान हैं ..... ?

अकल से सोचो जरा, बुद्धि से अपनी काम लो ।
दिल चला है पाप के, रस्ते पै इसको थाम लो ॥

अपनी कुटिलता को आप वीरता कहते हैं । अगर

स्त्री-अपहरण वीरता है तो जब विधुजिव्ह सूपनखाँ को लेने आया था तब आपने उसकी वीरता का सम्मान क्यों नहीं किया..... ? क्यों उससे युद्ध किया..... ? और अन्त में उसकी हत्या कर दी..... ! जबकि सूपनखा स्वेच्छा से अपने चुने हुए प्रेमी के साथ जाना चाहती थी।

॥ चौपाई ॥

सुनत दसानन उठा रिसाई । खल तोहि निकट मृत्यु अब आई ॥
अस कहि कीन्हेसि चरन प्रहारा । अनुज गहे पद बारहिं बारा ॥

**रावण :** (सिंहासन से उठकर विभीषण के पास आकर कुटिल मुस्कान से) काफी समझदार हो गये हो। आज का व्यवहार हमें बहुत पसन्द आया। हा... हा... हा... (लात मारकर क्रोध से) ओर..... ! नीच..... ! पापी..... !

अब उतर आया है ऐसी, नीचता के काम पर।
थू है तेरी कीर्ति पर, थू है तेरे नाम पर ॥
डूब मर जाकर कहीं, बदली है क्या हालत तेरी।
चल निकल जा दूर हो, भाती नहीं सूरत तेरी ॥

**(सभा में सामूहिक हँसी)**

**विभीषण :** (रोते हुए) स्वाभिमान के बदले अपमानित होकर जीना मौत से भी बुरा है। सभासदों ! तुम्हारी यह हँसी तुम्हारे विनाश का कारण बनेगी।

**(विभीषण का आगे चलना)**

**शुभचिन्तक:** (विभीषण के पास आकर दुखी मन से) महाराज ! अब ?

**विभीषण :** (रोते हुए) मेरे मित्र ! अब तुम्हीं बताओ..... ? मैं क्या करूँ..... ??

**शुभचिन्तक** आप श्रीराम जी की शरण में जाइए और उनका विश्वास प्राप्त कीजिए।

**विभीषण :** (विस्मय से) किन्तु..... ? क्या वे यह जानकर कि मैं शत्रुपक्ष का हूँ, मुझे अपना लेंगे।

**शुभचिन्तक:** महाराज ! जब मौत निश्चित है तो क्यों ने श्रीराम के हाथों ..... ? और यदि अपना लिया तो ..... ? ?
"महाराज की जय"

**विभीषण :** (मुस्कराकर) ठीक है ..... ? अब मैं अपनी भार्या के पास जा रहा हूँ और वहीं अपना अन्तिम निर्णय लूँगा ।

**(विभीषण का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**दृश्य परिवर्तन**

**स्थान :** विभीषण का महल ।

**दृश्य :** शयनागार में पत्नी सरमा बैठी हुई प्रतीक्षा कर रही है ।

**पर्दा उठना**

(विभीषण का दुखी मन से लज्जित होकर प्रवेश करना)

**सरमा :** (मुस्कराकर) आज समय कुछ अधिक लग गया महाराज ! (मुख की ओर देखकर विस्मय से) हैं ..... ? आप दुखी दिखाई दे रहे हैं ।

**विभीषण :** (दुखी मन से) हाँ ..... ! समय तो अधिक लगना ही था । महाराजधिराज विजयी होकर लौटे ..... ! तो सभासदों को अपनी स्वामी भक्ति दिखाने के लिये अधिक समय चाहिए ही ।

**सरमा :** (कौतुक भरे स्वर में) कौन सी नयी विजय कर आये महाराजाधिराज ..... ? जिसने आपको थका दिया ।

**विभीषण :** तुम ठीक कहती हो प्रिये ! महाराजधिराज विजयी होकर लौटते हैं तो मेरे लिये परेशानी बढ़ जाती है ।

**सरमा :** (दुखी होकर) आप व्यर्थ परेशान क्यों होते हैं ? अपने काम से काम रखिये । संसार भर की बातें सोच-सोचकर स्वयं को दुखी क्यों करते हैं ?

**विभीषण :** (मुस्कराकर) प्रिये ! कुछ लोगों की आदत ऐसी होती है कि वे संसार भर की बातें सोचे बिना नहीं रह सकते । वे अपने

काम से काम रख नहीं सकते और फिर अपनी आँखें बन्द कर लेने से ही हम समाज से अलग नहीं हो जाते । आखिर रहना तो इसी समाज में है ।

**सरमा :** (क्रोध मिश्रित व्यंग से) आखिर मैं भी तो सुनूँ...... ? कौन-सा मोर्चा मार आये महाराजाधिराज..... ?

**विभीषण :** (व्यंग्य से) बहन पती के साथ नहीं जा सकी तो भाई पत्नी का अपहरण कर लाया ।

**सरमा :** (दुखी होकर) ओह..... ! वैदेही का अपहरण..... !

**विभीषण :** हाँ..... ! सूचना मिल गई है ।

**सरमा :** यह सूचना तो लंका की हवा में तैर रही है पर..... ? मैंने सुना है कि इस अपहरण के लिये महाराजाधिराज को उकसाने वाली बहन सूपनखाँ भी अब इससे खुश नहीं है और बहन मन्दोदरी की भी इस विषय में महाराजाधिराज से खूब कहा सुनी हुई है ।

**विभीषण :** भाभी का तो मुझे पता नहीं किन्तु अपनी बहन के विषय में निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि वह इससे खुश नहीं होगी । उसकी जलन की कोई सीमा नहीं ।

**सरमा :** (मुस्कराकर) बहन तो जलन के कारण परेशान है परन्तु आप क्यों परेशान हैं ? आपके मन में तो कोई जलन नहीं है ।

**विभीषण :** प्रिये ! मैं तो समाज में फैलती पशुता के कारण परेशान हूँ । इस जहर के कारण संसार में आज तक कोई भी कहीं भी सुरक्षित नहीं है ।

**सरमा :** आप तो हैं ।

**विभीषण :** (दुखी होकर) इस प्रकार सांत्वना न दो प्रिये ! मैं कैसे सुरक्षित हूँ । जल सेनाअधिनायक की बेटी सागरिका और उसका छोटा भाई वरुण के अपहरण से क्या मेरा मन नहीं रोया और यदि अपने तक ही सीमित होकर जीना है तब

भी सोचना पड़ेगा कि जब समाज में पशुता की ऐसी आँधी चल रही हो तो जाने उसकी चपेट में कब कौन आ जाये । कौन कह सकता है प्रिये ! कल तुम्हारा ही अपहरण हो जाये..... !

**सरमा :** (घबड़ाकर मुस्कराते हुए) कौन करेगा ऐसा साहस मैं वीरवर विभीषण की पत्नी हूँ। महाराजाधिराज के अनुज की पत्नी ।

**विभीषण :** मदिरा में मदहोश पशु जब शिकार के लिए निकलते हैं तो उन्हें अपना पराया कुछ भी नहीं सूझता । मान लो..... ? महाराजाधिराज का ही मन तुम पर आ जाये ।

**सरमा :** (सहमकर) नहीं..... ! मैं उनके भाई की पत्नी हूँ ।

**विभीषण :** पशुता इन सम्बन्धों को नहीं पहचानती प्रिये ! आज मैं उनका भाई हूँ परन्तु अपनी नीतियों का विरोध करते देख कल वे मुझे अपना शत्रु घोषित कर दें तो..... ? क्या देर लगेगी तुम्हारा हरण होते ? यही न कि उसके पति को महाराजाधिराज ने अपना शत्रु घोषित कर दिया है ।

**सरमा :** (भयभीत स्वर में) फिर भी मैं उनकी अनुज वधू हूँ। को इतना पशु कैसे हो सकता है ?

**विभीषण :** रूमा भी बालि की अनुज वधू थी। प्रिये ! आज मैंने पहली बार देखा है कि पुत्र पिता की कामुकता का समर्थन करता है । आज इस अत्याचार के खिलाफ मेरे गदा उठती है तो उसे रोकने के लिए रावण का खडग उठेगा ।

**सरमा :** स्वामी ! यदि आप में साहस है तो सबसे पहले महाराजाधिराज की पशुता का ही विरोध करिये । रक्षा करनी है तो सबसे पहले वैदेही की रक्षा कीजिये ।

**विभीषण :** प्रिये ! तुम समझती क्यों नहीं ? जिस रावण ने अपने बहनोई का वध कर दिया हो तो क्या वह मुझे छोड़ देगा । और इन्द्रजीत ! रावण के मन में अपने भाई के प्रति करुणा

भी जाग सकती है किन्तु इन्द्रजीत के मन में कोमलता कहाँ है ?

**सरमा :** (घबड़ाकर) तब फिर..... ?

**विभीषण :** आज कुम्भकरण सही दशा में होता तो वह रावण की नीतियों का खुलकर विरोध करता परन्तु रावण ने उसे हमेशा के लिए मदिरा के सागर में डुबोकर अचेत कर रखा है। वह भी रावण की हाँ में हाँ मिलाने वाला एक साधारण सभासद बना हुआ है।

**सरमा :** तब आपके पास क्या उपाय है ?

**विभीषण :** मौत..... ! अपनी सुरक्षा के लिए या तो अत्याचार से समझौता किया जाए या उसकी ओर से आँखें मूंद ली जाए। मेरे हृदय में उठे विरोध की आत्म रक्षा के भाव ने दबा दिया है और मैं कभी नहीं कह सकता कि रावण अत्याचारी है..... ?

**सरमा :** किन्तु स्वामी ! आज तक आप महाराजाधिराज के आमोद-प्रमोद से तनिक सा भी सुख नहीं पा सके फिर क्यों नहीं उनसे टकरा जाते। नतीजा चाहे कुछ भी हो।

**विभीषण :** तुम ठीक कहती हो प्रिये ! किसी दिन तो मुझे रावण की उठी हुई भुजा थामनी ही होगी फिर चाहे रावण की भुजा कटे या विभीषण का सिर। कब वह दिन आयेगा जब न्याय का भाव आत्म-रक्षा के भाव से प्रबल होगा। इस अपमानित जीवन से तो मृत्यु ही अच्छी है किन्तु प्रिये ! तुम्हारी रक्षा कौन करेगा ?

**सरमा :** नाथ ! मेरी रक्षा आपका धर्म है किन्तु न्याय और धर्म की मर्यादा इतनी ही नहीं है कि अपनी पत्नी की सुरक्षा का दंभ किया जाये, क्या आपने उस अबला के बारे में भी सोचा है जिसका अपहरण होकर लंका में आ चुकी है।

**विभीषण :** प्रिये ! उड़ता-उड़ता समाचार मिला था कि महारानी

मन्दोदरी ने महाराजाधिराज को बाध्य किया है कि सीता को अपने पति को भूलने के लिए एक माह का समय दिया जाए। समझ में नहीं आता कि भाभी सीता की सुरक्षा क्यों चाहती हैं? क्या उन्हें राम के कोप का डर है? क्या वे सीता की रक्षा कर राम के क्रोध से अपने परिवार को बचाना चाहती हैं या वे समझती हैं कि एक माह में राम आकर सीता को छुड़ा ले जायेंगे।

**सरमा :** बहन मन्दोदरी राम के भय से सीता की सुरक्षा नहीं करवा रही हैं। वे नारी धर्म का पालन कर रही हैं।

**विभीषण :** प्रिये ! रावण के होते हुए मैं सुरक्षा नहीं कर सकूँगा। हाँ ! अपना विरोध प्रगट करके उसका मनोबल कुछ कम कर सकता हूँ।

**सरमा :** नहीं नाथ ! आप महाराजाधिराज की क्रूर प्रवृत्ति का खुलकर विरोध करिये।

**सरमा :** मुझे माता केकस ने बताया था जो उन्हें पिताजी पुलस्त्य रिसि से मालूम हुआ था कि आप जब रावण द्वारा अपमानित होंगे तभी से उसका विनाश शुरू हो जायेगा और आप "लंकेश्वर"..... ?

**विभीषण :** तुम ठीक कहती हो प्रिये ! आज तुमने मेरे मन की आँखें खोल दीं। अब मेरे मन में रावण के प्रति कोई स्नेह नहीं है। मैं अपने भाई के शत्रु की सहायता करूँगा। अब मैं जा रहा हूँ प्रिये ! जा रहा हूँ।

(नरेन्द्र कोहली द्वारा लिखित "विभीषण" के सौजन्य से मनोरमा १९८० अंक ६५)

**(विभीषण का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

चलेउ हरषि रघुनायक पाहीं । करत मनोरथ बहु मन माहीं ॥

## सीन सोलहवाँ

**स्थान :** राम का शिविर।

**दृश्य :** श्री राम अपने दल के साथ विराजमान हैं।

### पर्दा उठना

### ॥ चौपाई ॥

एहि बिधि करत सप्रेम बिचारा, आयउ सपदि सिंधु एहिं पारा ।
कपिन्ह बिभीषनु आवत देखा, जाना कोउ रिपु दूत बिसेषा ।
ताहि राखि कपीस पहिं आए, समाचार सब ताहिं सुनाए ।

**(विभीषण का जाना)**

**दूत :** (विभीषण को रोककर) कौन हो तुम..... ?

**विभीषण :** भाई ! मैं रावण का भाई विभीषण हूँ। भगवान की शरण में आया हूँ।

**दूत :** अच्छा..... ? ठहरो..... ? हम अभी खबर करते हैं। (प्रवेश करके सिर नवाकर) प्रभु की जय हो।

**राम :** कहो..... ? क्या खबर लाए हो..... ?

**दूत :** (सिर नवाकर) महाराज ! लंका से एक राक्षस आया है। अपना नाम विभीषण बताता है और आपकी शरण चाहता है।

**सुग्रीव :** हे रघुनाथ जी ! रावण का भाई विभीषण आपसे मिलने आया है।

**राम :** हे तात सुग्रीव जी ! आप इसका अर्थ क्या समझते हो ?

**सुग्रीव :** हे नाथ ! सुनिए..... ? राक्षसी माया जानी नहीं जाती। यह हमारा भेद लेने आया है। इसे बाँध कर रक्खा जाय। मुझे तो यही अच्छा लगता है। प्रभो ! मुझे इसमें दुश्मन की कुछ चाल मालूम होती है।

रजनीचर सब मायावी हैं, सीधा न समझिएगा इनको ।
उत्तर का मार्ग बताते हैं, जब जाते हैं दक्खिन को ॥
मेरा विचार तो ऐसा है, सब स्वाद चखा दू इसको मैं ।

बँधवाकर अब वानरों से, बन्दी करवा दूँ इसको मैं ॥
भाई को बन्दी समझ यहाँ, घबराकर आएगा रावण ।
सीता माँ को दे जाएगा, इसको ले जाएगा रावण ॥

**राम :** (मुस्कराकर) हे सखा ! तुमने नीति तो अच्छी बिचारी किन्तु ? मेरा प्रण शरणागतों के भय हरने को है ।
मैं उसका सच्चा साथी हूँ, जो सब प्रकार से आरत है ।
मैं उसका सच्चा साथी हूँ, जो जन मेरा शरणागत है ॥

**॥ चौपाई ॥**

सुनि प्रभु बचन हरष हनुमाना । सरनागत बच्छल भगवाना ॥

**हनुमान :** (चरणों में सिर नवाकर) धन्य हैं प्रभु..... ?
मित्र है शत्रु है, इसकी कुछ नहीं पहिचान है ।
जो शरण में आ गया, उसका ही बस कल्याण है ॥
हे नाथ ! सारी लंका में मेरा हित साधन इसी विभीषण ने किया था। प्रभो ! यदि युक्ति से काम लिया जाए तो हमको तो महालाभ ही है जो हमें घर का भेदी मिल रहा है ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

उभय भाँति तेहि आनहु, हँसि कह कृपानिकेत ।
जय कृपाल कहि कपि चले, अंगद हनु समेत ॥

**राम :** (मुस्कराकर) हे तात ! हनुमान जी ! जाइए और आदर सहित लिवा लाइए ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा प्रभो !

(हनुमान का जाना । कृपालु प्रभु की जय हो)

(विभीषण के पास आकर) "जय श्री राम"

**विभीषण :** (सिर नवाकर) मित्रवर प्रणाम !

**हनुमान :** हे सखा ! प्रभु आपका ही इन्तजार कर रहे हैं ।

**विभीषण :** (गदगद होकर) अहोभाग्य... ? चलिए तात हनुमान जी !

॥ चौपाई ॥

सादर तेहि आगें करि बानर, चले जहाँ रघुपति करुनाकर ।
नयन नीर पुलकित अति गाता, मन धरि धीर कही मृदु बाता ।

**विभीषण :** (श्री राम के चरणों में गिरकर) स्वामी ..... ? मेरी रक्षा कीजिए..... ? मेरी रक्षा कीजिए..... ? प्रभो ! रावण ने भरी सभा में मुझ पर लात प्रहार कर मुझे अपमानित किया है इसलिये अपने सब भाई-बान्धवों को छोड़कर आपकी शरण में आया हूँ।

निश्चर कुल में पैदा होकर, अब तक बहुत भरमाया हूँ ।
रघुनायक ! मेरी बाँह गहो, मैं शरण आपकी आया हूँ ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि करत दंडवत देखा । तुरत उठे प्रभु हरष बिसेषा ॥
अनुज सहित मिलि ढिग बैठारी । बोले बचन भगत भयहारी ॥

**राम :** (उठाकर छाती से लगाकर) हे लंकेश ! तुम मुझे अत्यन्त प्रिय हो। जिसका संसार में कोई नहीं होता उसका सब कुछ भगवान होता है।

कहिये लंकेश कुशल तो है, क्यों इतने घबराये हो ।
क्या आज्ञा है मुझको, क्यों कर यहाँ तुम आये हो ॥
तुम ज्ञानवान सज्जन होकर, लंका में कैसे रहते हो ।
किस भाँति धर्म की रक्षाकर, अत्याचारों को सहते हो ॥
जो सच्चा है समदर्शी है, अपने प्राणों से प्यारा है ।
वह ही मुझसे मिल सकता है, जिसने अपमान मारा है ॥

**विभीषण :** (पैर पकड़कर) हे नाथ ! सुनिये ? ये जिह्वा जिस प्रकार दाँतों के बीच रहती है उसी प्रकार मैं लंका में रहता था फिर भी ?

दुख उसको होता है जग में, जो प्रभु चरणों की शरण न हो ।
है उसी ठौर दुख या संकट, जिस ठौर प्रभु स्मरण न हो ॥
अब तो मैं यही चाहता हूँ, इन चरणों के पास रहूँ ।

इन चरणों में हो भक्ति मेरी, इन चरणों का ही दास रहूँ ॥

**॥ चौपाई ॥**

एवमस्तु कहि प्रभु रनधीरा । माँगा तुरत सिंधु कर नीरा ॥
जदपि सखा तब इच्छा नाहीं । मोरे दरसु अमोघ जग माहीं ॥
अस कहि राम तिलक तेहि मारा । सुमन बृष्टि नभ भई अपारा ॥

**राम :** (मुस्कराकर) ऐसा ही हो । हे तात हनुमान जी ! तुम जाकर शीघ्र ही समुद्र का जल ले आओ ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा भगवन !

**हनुमान :** (प्रवेश करके जल पात्र देते हुए) लीजिये भगवन !

(श्रीराम द्वारा जल से विभीषण का राजतिलक करना)

सम्मिलित : बोलो ..... ? भगवान राम की जय ।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) धन्य हैं प्रभो ..... ! आपकी उदारता को धन्य है..... ! परन्तु प्रभो ..... ?

दे दिया राज्य लंका का, जब विभीषण आरत हुआ ।
देंगे कहाँ का राज्य तब, रावण भी यदि शरणागत हुआ ॥

**राम :** (मुस्कराकर) हे तात सुग्रीव जी !

हम आर्य देश के वासी हैं, शरणागत धर्म निभायेंगे ।
इनको लंकेश बनाया है, तो उनको अवधेश बनायेंगे ॥
अब तक दो भाई फिरते हैं, बन में बनवासी होकर ।
फिर चारों भाई घूमेंगे, बन में संन्यासी होकर ॥

**॥ चौपाई ॥**

बोले बचन नीति प्रति पालक । कारन मनुज दनुज कुल घातक ॥
सुनु कपीस लंकापति बीरा । केहि बिधि तरिअ जंलधि गंभीरा ॥

**राम :** हे वीर सुग्रीव और लंकापति विभीषण जी ! इस गम्भीर समुद्र को किस प्रकार पार किया जाय ? मगर, सर्प और अनेकों जाति की मछलियों से भरा हुआ अत्यन्त गहरा समुद्र पार करने में सब भाँति दुस्तर है । विभीषण जी आप तो आकाश मार्ग से आने जाने की विद्या जानते हैं ।

**विभीषण :** (हाथ जोड़कर) हे प्रभो ! हमारी यह विद्या राक्षसी माया है। जो नर-वानर पर काम नहीं करेगी। हालाँकि आपका बाण करोड़ों समुद्रों को सोखने वाला है फिर भी नीति कहती है... ?

संकोच यही अब होता है, है सागर पूज्य रघुकुल का।
इसलिये विनीत भाव से ही, माँगिये मार्ग उससे पुल का।

**राम :** (खुश होकर) हे सखा ! तुमने उपाय ठीक बतलाया। यही किया जाय।

**लक्ष्मण :** (दुखी होकर) नहीं..... ? भैया..... ? नहीं..... ? नाथ ! देव का कौन भरोसा..... ?

जो कार्य शीघ्र ही करना है, होगा न विनय की बातों से।
लातों के भूत नहीं मनते, बस कोरी-कोरी बातों से॥
चढ़ जाय धनुष पर बाण अभी, तो उसका गर्व हरण होगा।
फिर सागर हो या महासागर, आरत हो चरण शरण होगा॥

**राम :** (हँसकर) हे लक्ष्मण ! ध्यान रखो ? शक्ति में विनम्रता होनी चाहिए, तुम अपने मन में धैर्य धारण करो। मैं समुद्र से रास्ता माँगूगा।

**॥ चौपाई ॥**

अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई । सिंधु समीप गए रघुराई ॥
प्रथम प्रणाम कीन्ह सिरु नाई । बैठे पुनि तट दर्भ डसाई ॥

(समुद्र के पास जाकर प्रणाम करके)

हे समुद्र देवता ! दशरथ पुत्र राम आपको प्रणाम करता है। मुझे मार्ग दीजिए जिसके लिए मैं अन्न-जल त्यागकर आपकी आराधना कर रहा हूँ।

(राम का आराधना करने बैठ जाना)

**॥ चौपाई ॥**

जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए । पाछें रावन दूत पठाए ॥

(रामादल में दूतों का आना)

**वानर :** (दूतों को देखकर विस्मय से) अरे ..... ? ये राक्षस यहाँ कैसे आ गये ..... ? चलो ..... ? इनको पकड़ कर सुग्रीव के पास चलते हैं।

(वानरों द्वारा दूतों को पकड़कर सुग्रीव के पास ले जाना)

**॥ चौपाई ॥**

रिपु के दूत कपिन्ह तब जाने । सकल बाँधि कपीस पहिं आने ॥

**वानर :** (सिर नवाकर) महाराज ! ये शत्रु के दूत हैं।

**सुग्रीव :** (क्रोध से) अच्छा...? इन राक्षसों के नाक-कान काट लो।

(वानरों द्वारा राक्षसों को पीटना)

**दूत :** (घबड़ाकर) जो हमारे नाक-कान काटेगा उसे श्री राम जी की आन है।

**॥ चौपाई ॥**

सुनिलछिमन सब निकट बोलाए । दया लागि हँसितुरत छोड़ाए ॥
रावन कर दीजहु यह पाती । लछिमन बचन बाचु कुलघाती ॥

**लक्ष्मण :** (आगे आकर) हे भाई ! इनके बन्धन खोल दो।

(वानरों द्वारा दूतों को आजाद कर देना)

**दूत :** (लक्ष्मण के पैरों में गिरकर) प्रभो ! हम रावण के भेजे हुए दूत हैं। अब हमारी रक्षा कीजिए।

**लक्ष्मण :** (चिट्ठी देकर) जाओ ..... ? रावण के हाथ में यह पत्रिका देना और कहना ..... ?

आँखों के रहते अन्धा है, जो बीज जहर का बोता है।
चोरी से हरकर पर नारी, अब रण में सम्मुख होता है ॥
इस उल्टी मति के कारण ही, लंका की सत्यनाशी है।
यह बारम्बार जता देना, जानकी जान की प्यासी है ॥

**दूत :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा प्रभो !

(दूतों का जाना)

**पर्दा गिरना**

**।। चौपाई ।।**

तुरत नाइ लछिमन पद माथा। चले दूत बरनत गुन गाथा ॥
कहत राम जसु लंका आए। रावन चरन सीस तिन्ह नाए ॥
बिंहसि दसानन पूँछी बाता। कहसि न सुक आपनि कुसलाता ॥

**सीन तेरहवाँ**

**स्थान :** रावण दरबार।

**दृश्य :** दरबार लगा है।

**पर्दा गिरना**

**दूत :** (प्रवेश करके चरणों में गिरकर) महाराज जय शंकर की।

**रावण :** (मुस्कराकर) कहो.... ? रामादल का क्या हाल है.... ?
पहले तो सब हाल कहो, उस बुद्धिहीन विभीषण का।
जो देश, जाति का द्रोही है, बागी भाई है रावण का ॥
फिर उन लड़कों की बात कहो, जो निज प्राणों पर खेले हैं।
फिर जिसने लंका दहन किया, उस जैसे कितने बनरे हैं ॥

**दूत :** (सिर नवाकर) सुनिये..... ? दयानिधान..... ?
पहले तो दिया रामजी ने, लंका का राज्य विभीषण को।
फिर हम दोनों को जब समझा, तो आया क्रोध कीस गण को ॥
लक्ष्मण जी को आ गई दया, हमने जिस समय दुहाई दी।
मुख से भी कुछ संदेश कहा, चिट्ठी भी लिखी विदाई दी ॥

(दूत द्वारा रावण को चिट्ठी देना)

**रावण :** (पाती पर नजर डाल कर) हा... हा... हा... यह छोटा तपसी पृथ्वी पर रह कर आकाश को छूना चाहता है।

**दूत :** (सिर नवाकर) हे नाथ ! पत्र की सब बातें सत्य हैं। श्रीराम जी से वैर त्याग दीजिये। वे अत्यन्त दयालु हैं। आपका भी अपराध क्षमा कर देंगे। आप जानकी श्री रघुनाथजी को दे दीजिये।

**रावण :** (क्रोध से) चुप रह नालायक..... ? शत्रु को श्री लगाते

तुझे शर्म नहीं आती। मालमू पड़ता है कि तू भी विभीषण से मिल गया है। जा... ? तू भी उसी के पास जा.... ?

बानर, भालू की चिन्ता क्या, वह तो असुरों के भोजन हैं।
रावण से लड़ने आते हैं बस, लड़कों का यही लड़कपन है॥
देखो तो छोटे तपसी को, कैसी बकवादें करता है।
मृग शावक शशि के छूने को, चौकड़ी छलागें भरता है॥
हा... हा... हा...

**दूत :** (रावण के पैर पकड़कर) अन्नदाता ! मेरी स्वामी भक्ति पर शंका मत कीजिए। समय आने पर मैं अपना सिर कटा दूँगा।

**रावण :** अच्छा..... ? आगे ध्यान रखना..... ? ?

### पर्दा गिरना

### ॥ चौपाई ॥

नाइ चरन सिरु चला सो तहाँ । कृपासिंधु रघुनायक जहाँ ॥
करि प्रनामु निज कथा सुनाई । राम कृपाँ आपनि गति पाई ॥

# सेतुबन्ध रामेश्वरम्

## (लंका दहन लीला)

### सीन अठारहवाँ

**स्थान :** समुद्र तट।

**दृश्य :** श्रीराम समुद्र से प्रार्थना कर रहे हैं। देव... ! हे देव... !

### पर्दा उठना

### ॥ चौपाई ॥

बिनय न मानत जलधि जड़, गए तीनि दिन बीति ॥
बोले राम सकोप तब, भय बिनु होइ न प्रीति ॥

**राम :** (कुपित होकर) भय के बिना प्रीति नहीं होती। हे लक्ष्मण ! धनुष बाण लाओ। मैं अग्नि बाण से समुद्र को सुखा डालूँ।

**(लक्ष्मण द्वारा धनुष, बाण देना। रामजी द्वारा धनुष पर बाण चढ़ाना)**

**॥ चौपाई ॥**

सभय सिंधु गहि पद प्रभु केरे । छमहु नाथ सब अवगुन मेरे ॥

**सागर :** (ब्राह्मण भेष में प्रगट होकर भयभीत होकर श्रीरामजी के चरण पकड़कर)

क्षमा, क्षमा हे राघवेन्द्र ! तुम कृपासिंधु हो, दानी हो।
जलने जलने की ठहरा दी, आबरु न पानी-पानी हो ॥
प्रभु के प्रताप से क्षण भर में, शोषण हो सकता है मेरा।
पर, इतना ध्यान रहे भगवन, गौरव भी मिटता है मेरा॥
क्यों ने वह कार्य किया जाये, जिसकी युग-युग तक याद रहे।
हो जाय विजय भी राघव की, सागर की भी मर्याद रहे ॥

**राम :** (मुस्कराकर) हे तात ! जिस प्रकार वानरी सेना पार उतर जाय वही उपाय कहो ।

**सागर :** हे नाथ ! नील और नल नामक दोनों भाई बालापन में ऋषियों से आशीर्वाद पा चुके हैं। उनके स्पर्श से पहाड़ भी आपके प्रताप से समुद्र पर तैर जायेंगे और मैं भी प्रभु की प्रभुता को हृदय में रखकर अपनी शक्ति के अनुसार सहायता करूँगा ।

नल-नील बड़े बरदानी हैं, वे जल पर सेतु बनायेंगे।
अपने हाथों में रखेंगे, तो पत्थर भी तैरायेंगे ॥
फिर मदद करेगा सागर भी, मन में यह छुपी भावना है ।
पुल बंधे विजय हो लंका पर, मेरी भी यही कामना है ॥

**राम :** अच्छा..... ? ऐसा ही होगा। तुम शान्ति से रहो ।

**सागर :** (चरण पकड़कर) जय श्री राम ।

(समुद्र देवता का जाना)

**॥ चौपाई ॥**

सकल चरितकहि प्रभुहि सुनावा । चरन बंदि पायोधि सिधावा ॥

**राम :** हे तात सुग्रीवजी ! नल-नील द्वारा पुल तैयार कराइये ।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा प्रभो ! (नल-नील से) हे भाई ! श्रीराम प्रताप को याद कर सेतु निर्माण करो ।

**नल-नील :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा, महाराज !

**(नल-नील और वानरों द्वारा पुल तैयार करना)**

**॥ चौपाई ॥**

देखि सेतु अति सुन्दर रचना । बिंहसी कृपानिधि बोले बचना ॥

**राम :** (हँसकर) हे भाइयो ! यह भूमि परम रमणीय और उत्तम है । मैं यहाँ शम्भु की स्थापना करूँगा । यह मेरा संकल्प है ।
जो कार्य नहीं हो सकता है, सम्राटों से भी बरसों में
है साधुवाद वीरों तुमको, कर दिखलाया कुछ दिवसों में ॥
अच्छा, अब मेरी इच्छा है, संस्थापन हो शिवशंकर का ।
लंका पर चढ़ने से पहले, आराधन हो शिवशंकर का ॥

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) प्रभो ! आपका विचार अति श्रेष्ठ है । (हनुमान से) हे तात हनुमान जी ! आप जाइये और ऋषि मुनियों को साथ लेकर आइये ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

**॥ चौपाई ॥**

सुनि कपीस बहु दूत पठाए । मुनिबर सकल बोलि लै आए ॥

**(हनुमान का मुनियों के साथ आना । सबका चरणों में गिरकर प्रणाम करना । सबका बैठना)**

**राम :** (सबके साथ बैठकर शंकर की मुर्ति की स्थापना करके आराधना करना) ओ३म् नमः शिवाय ..... ! ओ३म् नमः शिवाय ..... ! (शिवजी का प्रकट होना)

**राम :** (हाथ जोड़ते हुए सिर नवाकर) हे प्रभो ! आपने दर्शन देकर मुझे कृतार्थ कर दिया । आपके अनेकों नाम हैं । आज से आप एक और नाम रामेश्वरम् अपना लीजिए ।

**हनुमान :** प्रभो ! इस नाम की व्याख्या कर दीजिए ।

**राम :** तात हनुमान जी ! श्री महादेव जी ! राम के इष्ट देव हैं । राम तो सदा उनके चरणों का दास है ।

**शिवजी :** (मुस्कराकर हाथ जोड़ते हुए) धन्य हो प्रभु ! शंकर तो वैसे ही भोला-भाला है ।

**सम्मिलित स्वर : हर-हर महादेव**

**(शंकर जी का अर्न्तध्यान होना)**

**राम :** हे मुनिगण ! शिवजी के समान मुझे दूसरा कोई भी प्रिय नहीं है । जो मेरे द्वारा स्थापित रामेश्वर जी के दर्शन करेंगे वे शरीर त्याग कर मेरे धाम को जायेंगे ।

हे मुनिगण ! शंकर और मुझमें, हे लेशमात्र भी भेद नहीं ।
जो जन उनके उपासक हैं, होता है मुझको खेद नहीं ॥
जैसे नदियों का पानी, सागर में ही तो आता है ॥
वैसे ही सब देवों का पूजन, परमात्मा ही में आता है ॥

**ऋषिगण :** (खड़े होकर) बोलो ..... ? भगवान राम की जय । अच्छा प्रभो ..... ? अब हम चलते हैं ।

**(ऋषि-मुनियों का जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

राम बचन सबसे जिय भाए । मुनिबर निज निज आश्रम आए ॥

**राम :** तात सुग्रीव जी ! अब सेना को पुल पर चढ़ाकर समुद्र पार ले चलो ।

**सुग्रीव :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा प्रभो !

**(वानर सेना का पुल पार करना)**

**॥ चौपाई ॥**

चला कटकु प्रभु आयसु पाई । को कहि सक कपिदल बिपुलाई ॥

**गाना—बैक ग्राउन्ड (वानर सेना पुल पार कर रही है)**

अजब तेरी कारीगरी करतार ।...
समझ न आये माया तेरी, बदले रंग हजार ॥ अजब...
एक दिन रानी कैकई ने, घर में आग लगाई ।

राज करे क्यों सौत का जाया, ऐसी मन में आई।
कैकई तेरी अजब कहानी, तू क्यों करती है नादानी।
दशरथ गये बचन को हार ।अजब...
मात-पिता की आज्ञा पाकर, बन को चले रघुराई।
रघुकुल रीति निभाने संग में, चली जानकी माई॥
महिमा तेरी सबने जानी, लक्ष्मण जी ने एक न मानी।
सौंपा भी भरत को भार ।अजब...
मायापति को माया मृग ने, छल करके बहकाया।
जोगी बनकर रावण पापी, पंचवटी पर आया॥
जोगी बाबा ने दिल में ठानी, अपनी इसको बनाऊँ रानी।
सीता रोती आँसू डार ।अजब...
रामादल के योद्धा पहुँचे, रावण की रजधानी में।
प्रभु की ऐसी महिमा देखो, पत्थर तैरे पानी में॥
सोने की लंक पजारी, रामादल में योद्धा भारी।
गये थे समुन्दर पार ।अजब...

पर्दा गिरना

# अंगद-रावण संवाद

## (लंका दहन लीला)

### सीन उन्नीसवाँ

**स्थान :** समुद्र का किनारा।

**दृश्य :** श्रीराम जी बानर दल सहित विराजमान हैं। सुग्रीव तथा विभीषण पास बैठे हैं। जामवंत, नल-नील सहित एक ओर खड़े हैं। हनुमान तथा अंगद पैरों के पास बैठे हैं। लक्ष्मण जी धनुष बाण लिये वीरासन से प्रभु के पीछे बैठे हैं।

पर्दा उठना

॥ चौपाई ॥

सिंधु पार प्रभु डेरा कीन्हा ।सकल कपिन्ह कहुं आयसु दीन्हा ॥

इहाँ प्रात जागे रघुराई । पूछा मत सब सचिव बोलाई ॥

**राम :** हे भाई बतलाओ आगे अब, कैसे पाँव बढ़ाना है।
लंकापति तो चुप बैठा है, कुछ खबर नहीं क्या ठाना है ॥
हम तो उसके घर आ पहुँचे, वह नहीं युद्ध में आया है।
लंका के द्वार बन्द क्यों हैं, कुछ भेद न इसका पाया है ॥

**विभीषण :** हे प्रभो !
दरवाजे बन्द देखकर ही, यह समझ न लें डरता होगा।
अपने सचिवों के साथ वहाँ, वह भी विचार करता होगा ॥
कुछ दिन और देखिए राह, यह वीत नीति बतलाती है।
रिपु को भी युद्ध प्रबन्ध हेतु, थोड़ी सी मोहलत दी जाती है ॥

**हनुमान :** (व्याकुल होकर क्रोध से) नहीं... ! प्रभो... ! नहीं.... !
दो चार दिनों में यह मोहलत, मुझको तो बहुत खटकती है।
एक-एक घड़ी सीता माता को, बरसों की नाई कटती है ॥
जब राजभवन को तोड़ेंगे, तब तो निश्चर घबड़ायेगा।
तब सीता माँ को दे जायेगा, या खुद लड़ने को आयेगा ॥

**सुग्रीव :** शान्त..... ! केशरी नन्दन..... ! शान्त..... ! प्रभो !
मेरी तो निज सम्मति यह है, दूत प्रथम भेजा जाए।
जो बैरी के मन का बल का, सारा ही भेद लगा लाए ॥
तुम बुद्धिमान हो हनुमान, कहते हो बात ठिकाने की।
फिर एक बार बस तुम्हीं वहाँ, तकलीफ उठाओ जाने की ॥

**जामवंत :** प्रभो ! हनुमान ही क्यों जाए..... ?
रावण यह समझेगा मन में, सारा आधार इसी पर है।
आता है यह ही बार-२, इस कारण यही दिलावर है ॥
जो कुछ सुझाव रखता हूँ मैं, इसमें है नीति मान भी है।
इस बार भेजिये अंगद को, ये समझदार बलवान भी है ॥

**राम :** (अंगद के सिर पर हाथ रखकर) ठीक है... ! परन्तु.... ?
हे बालितनय ! तुमको हम, निज पुत्र समान समझते हैं।
लंका में दुश्मन के घर में, हम तुम्हें भेजते डरते हैं ॥

फिर उचित नहीं है दूत कार्य, किष्किन्धा के युवराज तुम्हें ।
कपिसेना संचालन का भार, शोभा देता है युवराज तुम्हें ॥

**अङ्गद :** (चरणों में सिर नवाकर) प्रभो !

जिस जन पर कृपा आपकी हो, वह जाकर लड़े रसातल तक ।
निर्भय है उसको भय न कहीं, उदयाचल से अस्ताचल तक ॥
निश्चय ही धाक जमाऊँगा, मैं रावण की रजधानी पर ।
प्रभु का प्रताप ही ऐसा है, पत्थर तैरे हैं पानी पर ॥
जन से हो कार्य जनार्दन का, इससे बढ़कर सम्मान नहीं ।
युवराज आपका दूत बने, तो कुछ घटता है मान नहीं ॥
मैं भी श्री हनुमत के समान, सेवा करने को उत्सुक हूँ ।
हे मेरे सर्वस्व ! आज्ञा दो, सत्वर जाने को उत्सुक हूँ ॥

**राम :** (सिर पर हाथ रखकर आशीर्वाद देते हुए) अच्छा ..... ? जाओ ..... ?

**राम :** रावण से कह देना ..... ? यदि वह सम्मान के साथ सीता जी को रामादल में पहुँचा दे और अपने अपराध की क्षमा मांग ले तो हम उसे क्षमा कर देंगे ।

**लक्ष्मण :** (क्रोध से) नहीं ..... ! भैया ..... ! ! नहीं ..... ! ! ! माता सीता का हरण करने वाला नीच पापी ! पिता तुल्य महात्मा जटायू का वध करने वाला क्षमा के योग्य नहीं है ।

**राम :** लक्ष्मण ! सामर्थवान को सब कुछ अधिकार होता है । यदि एक पापी को क्षमा करने से लाखों बेकसूरों की जान बचती हो तो उसे क्षमा कर देना चाहिए । यही राजधर्म है ।

**जामवंत :** धन्य हो प्रभो ! आपके धैर्य की भी सीमा नहीं ।

**राम :**

युवराज जानते हैं हम यह, सच्चे व्यवहार कुशल तुम हो ।
बलवान बाप के बेटे हो, सब भाँति समर्थ सबल तुम हो ॥
कुछ धर्मनीति कुछ राजनीति, कुछ बल भी दिखलाते आना ।
बलवीर जहाँ तक सम्भव हो, सब झगड़ा निबटाते आना ॥

याद रखना..... ? राजदूत का मान अपमान उसके राजा का मान अपमान होता है।

**विभीषण :** हे तात अंगद जी !

दो एक संदेश हमारे भी, कह देना हठी दशानन से।
जिसने कि किया था पद प्रहार, मुझ पर उठकर सिंहासन से॥
मैं मूर्ख और विद्रोही हूँ, वह तो सब बात समझता है।
अब देखें लंका नगरी की, किस भाँति वह रक्षा करता है॥
यह भली भाँति जतला देना, उस महाभिमानी रावण को।
घर भर में एक विभीषण ही, रह जाएगा बस तर्पण को॥

**(अङ्गद का राम के चरण छूकर जाना। "जय श्री राम")**

**॥ चौपाई ॥**

बंदि चरन उर धरि प्रभुताई । अंगद चले सबहिं सिरु नाई ॥

**पर्दा गिरना**

## सीन बीसवाँ

**स्थान :** लंका नगरी का बाहरी भाग।

**दृश्य :** रावण सुत गेंद उछाल रहा है।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

पुर पैठत रावन कर बेटा । खेलत रहा सो होइ गै भेटा ॥

**अङ्गद :** (प्रवेश करके) "जय श्री राम"

**रावण सुत :** (अंगद को देखकर क्रोध से)

आगे से मेरे हटा नहीं, हे दुष्ट ! कौन है? अज्ञानी।
जाता है बिना प्रणाम किये, क्या नहीं जानता अभिमानी॥

**अङ्गद :** (क्रोध से) अरे मूर्ख !

हम जिसके भेजे आये हैं, वह स्वामी भूमण्डल का है।
आगे से हटें प्रणाम करें, क्या तेरे बाप का कर्जा है।
हम बलिराज के बालक हैं, जो अपने बल में पूरा था।

तू क्या है तेरे रावण को, छः मास काँख में रखा था।

**रावण सुत :** (क्रोध से) ओ बदजुबान ! जबान को लगाम लगा।
क्या दूत उन्हीं लड़को का है, जो मारे-मारे फिरते हैं।
छुटा है जिनका राजपाट, बन-बन दुखियारे फिरते हैं॥
जिनकी वह सुन्दर सी नारी, लंका के बन्दी घर में है।
उनका गुलाम बन बेवकूफ, क्यों आया राजनगर में है॥

**अङ्गद :** (व्यंग्य से) वाह.... ! वाह.... ! क्या बात कही.... ?
चोर पिता के पूत।
ले आये हो पर नारी को, भिक्षुक बाबा बन चोरी से।
तारीफ तुम्हारी तो तब थी, लातें लड़कर शहजोरी से॥
अब समय हमारा आया है, ठहरो तुमको दिखलायेंगे।
लंका में कर भीषण संहार, सीता माँ को ले जायेंगे॥
हम उनके हैं जिनकी प्रभुता, पत्थर तैराती पानी पर।
आ गये बनाकर सेतु मार्ग, तेरी लंका रजधानी पर॥

**रावण सुत :** (क्रोध से) ओ दुष्ट ! क्या मौत तुझे यहाँ खींच लाई है ?
अच्छा..... ? अब युद्ध कर।

**(दोनों में युद्ध होना। रावण सुत का मारा जाना)**

## दृश्य परिवर्तन

**स्थान :** रावण दरबार।

**दृश्य :** दरबार लगा है। रावण महाराज सिंहासन पर विराजमान हैं। सभासद मंत्री तथा मेघनाद यथा स्थान विराजमान है। द्वारपाल पहरे पर खड़ा है।

## पर्दा उठना

### ॥ व्यास : दोहा ॥

गयउ सभा दरबार तब, सुमिरि राम पद कंज ।
सिंह ठवनि इत उत चितव, धीर बीर बल पुंज ॥

### ॥ चौपाई ॥

तुरत निसाचर एक पठावा ।समाचार रावनहि जनावा ॥

सुनत बिहँसि बोला दससीसा । आनहु बोलि कहाँ कर कीसा ॥

**अङ्गद :** (आगे बढ़कर द्वारपाल को देखकर) हे द्वारपाल ! तुम लंकेश से जाकर कहो कि रामादल से एक दूत आया है और वह शान्ति सन्देश लाया है ।

**द्वारपाल :** (प्रवेश कर सिर नवाकर) महाराज ! जय शंकर की ।

**रावण :** कहो..... ? क्या खबर लाये हो..... ?

**द्वारपाल :** (सिर नवाकर) अन्नदाता !

तपसी बच्चों की सेना से, अंगद नामक कपि आया है ।
अपने को दूत बताता है, कुछ राज सन्देशा लाया है ॥
है खड़ा मस्त हाथी समान, मिलने की प्रबल प्रतीक्षा में ।
यदि आज्ञा हो तो आने दूँ, राजाधिराज की सेवा में ॥

**मंत्री :** (उठकर सिर नवाकर)

श्रीमान ! वही वानर होगा, जो अभी नगर में आया है ।
दूतों ने जिसकी बात कही, घर-२ जिसका भय छाया है ॥
है उचित द्वार ही से उसको, काराग्रह में भिजवा दें हम ।
चौरस्ते ही में सन्ध्या को फिर, शूली पर चढ़वा दें हम ॥

**रावण :** (क्रोध से) चुप रह मूर्ख..... ? उस वानर की ताकत का अनुमान कर..... ?

बहतर है यहाँ करें स्वागत, आदर से उसे बुलायें हम ।
ऐसे योद्धा को कौशल से बस, अपनी ओर मिलायें हम ॥
फिर राजदूत का वध अनुचित, इसलिये मेरा मत है यह ।
आने दो उसको सभा मध्य, आदेश न्याय संगत है यह ॥

**द्वारपाल :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज ! (द्वारपाल का बाहर आना)

**द्वारपाल :** (अंगद से) जाइए महाराज ! (अंगद का गदा लेकर जाना)

**द्वारपाल :** (अंगद से) ठहरिये महाराज..... ? राजदरबार में हथियार लेकर नहीं जाया जाता ।

**अंगद :** (गदा एक ओर रखते हुए मुस्कराकर) काफी समझदार

मालूम होते हो ।

(अंगद का जाना)

**मंत्री :** (सिर नवाकर) लंकापति की जय हो ।

**रावण :** लंकापति नहीं, त्रिभुवनपति कहो, मंत्री !

**मंत्री :** त्रिभुवनपति महाराज लंकेश की जय ।

**सभासद :** (खड़े होकर) त्रिभुवनपति लंकेस की जय ।

**अङ्गद :** (प्रवेश कर) लंकेश प्रणाम ! लंकेश ! यह झूठे जयकारे लगा देने से जय नहीं हो जाती । यह ऊँची-ऊँची कल्पनायें केवल क्षण भर की ही मुस्कान है जो दूसरे ही क्षण आँसुओं में भी बदल सकती है ।

**रावण :** (क्रोधित होकर) कौन हो तुम ..... ?

**अङ्गद :** (व्यंग्य से) आँखों से यह अभिमान का पर्दा उठा कर देखो तो ..... ? एक मानव ही नजर आऊँगा ।

**रावण :** मैं परिचय जानना चाहता हूँ ।

हे बनरे ! तू कौन है ? बतला अपना नाम ।<br>
हुआ कहाँ से आगमन, क्या है मुझसे काम ॥

**अङ्गद :** (मुस्कराकर व्यंग्य से) अब बनी बात ... ? परन्तु ... ? शायद आप में सभ्यता नहीं है जो एक राजदूत को आसन नहीं दे सके ।

**रावण :** हा ... हा ... हा ... (व्यंग से) राजदूत ! हा ... हा ... हा ... अरे मूर्ख ! राजदूत उसे कहते हैं जो एक राजा द्वारा भेजा जाता है ।

**अङ्गद :** महाराज रावण ! हमारे राजा राजाओं के भी राजा हैं । वे राज राजेश्वर हैं ।

**रावण :** (व्यंग से) क्या कहा ..... ? वे राज राजेश्वर हैं । क्या वे ब्रह्मा हैं, विष्णु हैं, या महेश हैं । हा ... हा ... हा ...

**अङ्गद :** ठीक है ..... ? यदि आप मुझे आसन नहीं दे सकते तो मैं अपना आसन स्वयं बना लेता हूँ । क्योंकि एक राजदूत का

अपमान उसके राजा का अपमान होता है ।

(अंगद द्वारा पूँछ बढ़ाकर आसन बना कर उस पर बैठ जाना)

**अङ्गद :** (मुस्कराकर) सुनिये लंकेश ! मैं श्री रामचन्द्र जी का दूत बालि का पुत्र अंगद हूँ । मैं आपके कर्मों पर प्रकाश डालना चाहता हूँ, लंकेश ! आप कुल के श्रेष्ठ हैं । मुनि पुलस्त्य के नाती हैं । आपकी अटल भक्ति ने शिव ब्रह्मा का वरदान पाया है और आपने सब देवताओं को अपने वश में कर लिया है ।

**रावण :** (मुस्कराकर) सत्य है ।

**अङ्गद :** और यह भी सत्य है कि आप वेदों के ज्ञाता हैं ।

**रावण :** निःसन्देह..... !

**अङ्गद :** (दुखी मन से) किन्तु..... ? इतने विद्वान होते हुए भी आप नीच कर्म कर बैठे हैं, लंकेश !

हैं पूज्य पिता के मित्र आप, इस कारण मिलने आया हूँ ।
जानकी लौटा दो श्रीराम को, बस, यही कहने आया हूँ ॥

**रावण :** (अचरज से) कौन बालि या राम..... ! मैं इनको जानता तक नहीं..... !

**अङ्गद :** (मुस्कराकर व्यंग्य से) जरूर नहीं जानते होंगे । क्योंकि ?

शायद तुमको ध्यान न हो, कारण तब बुरी अवस्था थी ।
जब बालि काँख में बन्दी थे, उस समय आपको मूर्छा थी ।
इसलिए बालि को भूल गये, तो बड़ी न भूल महोदय की ।
इसमें अचरज है नहीं मुझे, पर एक बात है विस्मय की ।
भगिनि श्री सूपनखा को, प्रतिदिन दशबदन देखते हैं ।
इसलिये अचम्भा तो यह है, श्री राम नाम को भूलते हैं ॥
अब जान गये तुम राम कौन, या पिछली और कथा कह दूँ ॥
ले जाऊँ ध्यान जनकपुर में, इतिहास स्वयम्बर का कह दूँ ॥
श्री राम राज राजेश्वर हैं, पुरुषोत्तम हैं, परमेश्वर हैं ॥
बानर की तो गिनती ही क्या, सुर, नर, मुनि उनके अनुचर हैं ॥

उनका ही सेवक अंगद यह, कर्त्तव्य चुकाने आया है॥
इस उल्टी राजसभा में कुछ, सीधी समझाने आया है॥

**रावण :** (धिक्कारते हुए) चुप..... ? बकवादी अज्ञानी..... ! बाली का नाम मिटाने का अनर्थ कर तूने अपने कुल पर कलंक लगाया है, अंगद ! तू ! मेरे मित्र की निशानी है और मुझे अपने बेटे के समान प्रिय है इसलिये मैं तेरी बातों को अनसुनी किए जा रहा हूँ।

यदि तेरा गर्भ नष्ट होता, तो होता आज अकाज नहीं।
तपसी का दूत कहाने में, आती है तुझको लाज नहीं।
संहारा जिसने बाली बाप, धिक है तु उसका दास हुआ।
जो मित्र पिता का है तेरे, उस पर न तुझे विश्वास हुआ।
वास्तव में तू मेरा होता, या मेरी ओर मिला होता।
तो देख ? प्रतापभानु मेरा, तेरा यश कमल खिला होता।
अब भी तू मेरा हो जा, तो तेरी शुभगति हो जाए।
इस बड़े राज्य लंका का तू, कल से सेनापति हो जाए।
याद रख... ? मैं तुझे तेरा खोया हुआ राज्य दिलाऊँगा।

**अङ्गद :** नहीं महाराज रावण ! मेरे पिताजी ने मरते समय मुझसे कहा था कि तू जीते जी भगवान राम की सेवा करना। (मुस्कराकर व्यंग्य से) लंकेश ! क्या लंका की गोद अभी तक सेनापति से खाली है ?

मैं यह सेवा करता परन्तु, मुझमें इतनी योग्यता कहाँ।
लंका का सेनाध्यक्ष बनूँ, वह बुद्धि और वीरता कहाँ।
सेनापति अगर चाहते हो, तो रामादल में फाजिल हैं।
दो चार नहीं सैकड़ों वहाँ, सेनापति बनने के काबिल हैं।
पर, शायद ही स्वीकार करे, कोई इस मैले गहने को।
नारियाँ चुराई जाए जहाँ ऐसे कुराज में रहने को।
(सोचते हुए) हाँ..... ? ध्यान आया..... ?
अलबत्ता एक विभीषण तो, इस सेवा को आ सकता है।

सेनापति क्या तुम चाहो तो वह राज भी चला सकता है।
अन्यथा संदेशा है उसका, इस लंकाधीश्वर रावण को।
सारी लंका में एक वही, बस शेष रहेगा तर्पण को।
इसलिये त्यागकर बैरभाव, उज्जवलमन का दर्पण करिये।
कीजिए सन्धि रघुनायक से, सीता उनके अर्पण करिये।
यह खूब समझ लीजिये कीश, लंका में पाँव धर चुके हैं।
निश्चर से हीन करूँ पृथ्वी, यह प्रण रघुवीर कर चुके हैं॥

रावण : हा... हा... हा... यह सब बकवास है। जब निश्चर उनके साथ हैं।

मेरे शरणार्थी भाई को, भाई की भाँति पालते हैं।
मिलते ही अभयदान देते, लंकेश्वर बना डालते हैं।
जब तलक विभीषण निश्चर, रामादल में शोभा पायेगा।
निश्चर से हीन करूँ पृथ्वी, यह प्रण बकवास कहायेगा।

अङ्गद : (मुस्कराकर) धन्य हो लंकेश ! आपकी समझ को बलिहारी है। आपने शरीर को ही निश्चर का रूप मान लिया है।

तन से कोई भी प्राणी, सुर-असुर न माना जाता है।
आचरणों से देवता और, असुर पहिचाना जाता है।
जब गया विभीषण राम शरण, तो कैसे मानें निश्चर है।
जाता जो नहीं शरण उनकी, वह ही यथार्थ में निश्चर है।

रावण : (मुस्कराकर) अंगद ! तेरी समझ को बलिहारी है। मैं तेरी बात मान लेता हूँ, बशर्ते..... ?

अच्छा, यदि संधि चाहते हैं, स्वीकार मुझे इन नियमों पर।
पहले दें भेज विभीषण को, सिर रखे मेरे चरणों पर।
फिर तोड़े सेतु समुन्दर को, आ सके न कोई लंका में।
फिर हनुमान का मान मिटा, भेजें रावण की सेवा में।
इस समय दबा तृण दाँतों में, शरणागत हों इन बाणों की।
कर जोरें मेरे राम-लषण, भिक्षा माँगें निज प्राणों की।

अङ्गद : (मुस्कराकर व्यंग्य से) खूब..... ? बहुत खूब..... ?

बस, यही या कुछ और, ये तो माँगें साधारण हैं।
मैं जाकर उनसे कह दूँगा, चारों बातें साधारण हैं।
जिन हाथों ने पुल बाँधा है, वे उसे तोड़ भी डालेंगे।
लंका का माल विभीषण है, लंका में उसे भेज देंगे।
हो चुकी हानियाँ जो अब तक, उन सबको तो भर देंगे।
पर एक हुई है महा हाँनि, वह कैसे पूरी कर देंगे।
जब-जब तुम घर में जाओगे, तब-तब नजरों में आयेगी।
सूपनखा की कटी नाक, किस तरह से जोड़ी जायेगी।

**रावण :** (क्रोध से)

॥ दोहा ॥

ओ ढीठ वानर, हो जा अब तू मौन।
लंकापति से रण करे, ऐसा जग मैं कौन ॥
मालिक तेरा नाबालिग है, फिर नारी का दुख सहता है।
उसके दुख से भाई उसका, हर समय दुखी ही रहता है।
वानर सब मूली गाजर हैं, सुग्रीव पेड़ सरिता तट का।
जिस जामवंत पर फूले तुम, चौथापन है अब उस भट का।
नल और नील शिल्पी कोरे, सीखे न युद्ध में आना वह।
है भक्त विभीषण भक्त निरा, क्या जाने खड़ग उठाना वह।
हाँ याद आया ?
कुछ है तो एक वही कुछ है, जो आकर लंका जला गया।
क्या कहूँ तोड़कर तीली को, धोखे से पक्षी चला गया।

**अङ्गद :** (विस्मय से) क्या कहा..... ? क्या सचमुच वह छोटा सा वानर लंका दहन करके चला गया..... ?

वह क्या जाने रण कौशल को, बस, पूँछ नचाया करता है।
है भाग दौड़ में नामी वह, चिट्ठियाँ घुमाया करता है।
कपिपति ने चलते समय उसे, कर्त्तव्य चार समझाये थे।
आ गये ध्यान में वह अब मेरे, जो उसको काम बताये थे।
पहले लंका में जाते ही, सीता माता की सुधि लेना।

फिर लंका नगर को ढाकर, सागर के मध्य बहा देना।
तीसरा काम सीताजी को, कन्धों पर बिठलाके ले आना।
चौथे बन्दी कर रावण को, साथ ही साथ लेते आना।
यह आज इस समय प्रगट हुआ, कुछ काज न वह कर पाया है।
इसलिये वहाँ पहुँचा न अभी, शायद मुँह तक न दिखाया है।
कुछ ज्ञान नहीं किस ओर गया, जा छुपा कौन से जंगल में।
जो तुम्हें खटकता है राजन, वह है ही नहीं रामादल में।

**रावण :** (क्रोध से) अरे दुष्ट ! छोटा मुँह बड़ी बात..... !
क्या तुझको ज्ञान नहीं, मैं काल जीत मतवाला हूँ।
जिसके काटे का मंत्र नहीं, ऐसा भुजंग विषवाला हूँ।
मेरी इन बड़ी भुजाओं ने, कैलाश पहाड़ उठाया है।
यम, इन्द्र, कुबेर, वरुण, मंडल, इन बाणों से थर्राया है।
श्री सूर्यदेव मेरे संकेतो पर, पूरब से पश्चिम जाता है।
इच्छा पर मेरी ही पवन देव, ठंडाता है गर्माता है।
मुझसा पंडित मुझसा योद्धा, त्रिभुवन में और न दूजा है।
अपने शीशों को काट-काट कर शंकर को मैंने पूजा है।

**अङ्गद :** (मुस्कराकर व्यंग्य से) धन्य हो लंकेश ! अपने मुँह अपनी बड़ाई करते लाज भी नहीं आती।
जो करनी करने वाला है, वह करता है कहता कब है।
यह तो मशहूर कहावत है, जो गरजा है बरसा कब है।
श्रीमान कभी पाताल गये, बलि राजा के बल भंजन को।
कुछ छोटे-२ बच्चों ने, कर दिया खत्म योधापन को।
घुड़शाला में दशमुण्डों का, जब दीपाधार बनाया था।
तब दया आ गई थी बलि को, खुद जाकर तुम्हें छुड़ाया था।
उस रोज सहस्त्रबाहु ने भी, सब शान किरकिरी कर दी थी।
सुधि है धनुष महोत्सव ने, जो सौ पर बिन्दी धर दी थी।
क्या कहा आपने शीश काट, शंकर को भेंट चढ़ाये हैं।
काटें तन इन्द्र जालिये यदि, तो योधा नहीं कहाये हैं।

जतलाते बारम्बार मुझे, मैं बड़ा हठी हूँ क्रोधी हूँ।
बलिहारी यह भी तो कहिये, मैं बालि काँख का कैदी हूँ।

**रावण :** (क्रोध से गरजकर) ओ दुष्ट बानर ! जबान पर लगाम लगा, वरना..... ?

न छोड़ूँगा जगत में ऐसे, पापी का निशां बाकी।
उड़ेंगे व्योम में पुरजे, न होंगी धज्जियाँ बाकी।
बनूँगा क्रोध की बिजली, झुलसा दूँगा जला दूँगा।
मिटाकर पल में जीवन, लाश कुत्ते को खिला दूँगा।

**अङ्गद :** (क्रोध से आगे बढ़कर) ओ अभिमानी !

समझ ले कि मर गया तू, अपने ही अभिमान से।
बच गया तो मारा जाएगा, राम के इक बाण से।
तख्त को तेरे उलट कर, नाश कर देता अभी।
काट कर सिर राम के, चरणों में धर देता अभी।

**रावण :** (क्रोध से झुँझलाकर) ओ दुष्ट वानर ! क्या तू मेरी ताकत को नहीं जानता..... ?

मही डोले गगन काँपे, कदम मेरे जमाने से।
हिल जाते हैं पर्वत भी, जरा उँगली हिलाने से।
सहम जाते हैं दानव-देव, सब आँखें दिखाने से।
हुआ है काल भी भयभीत, अब लंका में आने से।
मेरे आतंक से वैभव, कलेजा थाम लेता है।
है क्या गिनती में वे, जिनका तू नाम लेता है।

**अङ्गद :** (क्रोध से तड़पकर) नहीं..... ?

जो सेवक अपने कानों से, स्वामी की निन्दा सुनता है।
उसको गोहत्या के समान, अति भारी पाप लगता है।
सहे हैं सिर झुकाकर, आज सब कड़ुवे वचन तेरे।
पिये हैं विष के घूँट, सुनकर पापी वचन तेरे।
बनकर न आता दूत, तो लेखा चुका देता।
आटे दाल का पल में, भाव तुझको बता देता।

**रावण :** (क्रोध से) अरे दुष्ट वानर !
चढ़ गया सिर पर घमण्डी, नीच, पापी, बेहया।
इस कदर वाचाल जबाँ पर, जो आया सो कह गया।
याद रख अब भी अगर, बकवास करता जायेगा।
ठोकरें गलियों में पाजी, शीश तेरा खायेगा।

**अङ्गद :** (क्रोध से) अरे दुष्ट ! तुझे जब काल का, प्रहार आकर दबा लेगा ।
लगाकर ठोकरें कोई, तेरा शीश उछालेगा।
तभी मूल्य समझेगा, तू जीवन की कहानी का।
चिनगारी आग की थी, या बुलबुला तू पानी का।

**(हरी शंकर शर्मा अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

आदमी..... ! पानी का बबूला है,
कर गुमान क्यों फूला है। आदमी...
वचन गरभ में देकर आया,
बाहर आकर सभी भुलाया।
कर जुबान तू भूला है। आदमी...
यम के दूत करें जब तंगी,
साथ न जायें कोई संगी।
कर पाप तू भूला है। आदमी...
स्वप्न समान सम्पत्ति तेरी,
क्यों कहता तू मेरी मेरी।
कर उफान तू फूला है। आदमी...

**रावण :** (अट्टाहस करते हुए व्यंग्य से) पानी का बबूला... ? मूर्ख ! रावण वह पर्वत है जिस पर दृष्टि तक जाना असम्भव है।

**अङ्गद :** (व्यंग्य से) ठीक है लंकेश ! अपने कर्मों का फल तू स्वयं ही भोगेगा।

**फिल्म—कर्मयोगी**

तेरे जीवन का है कर्मों से नाता, तू ही अपना भाग्य विधाता।

आज तू जिसको अच्छा समझे, जान ले उसका फल क्या है ।
सोच ले चलने से पहले तू, उन राहों की मंजिल क्या है ॥
जो भी किया है आगे आता, तू इतना भी सोच न पाता ॥
तेरे जीवन...

माना कि काले कर्मों से, तुझको सुख मिलता है।
आसमाँ को छूने वाला भी, कितने दिन चलता है ॥
जो भी किया है आगे आता, तू इतना भी सोच न पाता ।
तेरे जीवन...

किसी को क्या गर्ज है, तेरी हस्ती मिटाने को।
तेरे दुष्कर्म ही काफी हैं, तुझे मिट्टी चटाने को।
कोई दिन में ही, लंका में अंधेरा होने वाला है।
दिशायें कह रही हैं, अब नाश तेरा होने वाला है।

**(अंगद आसन से नीचे उतरकर भूमि पर हाथ मारते हुए)**

नीच ! अपने पाप, कर्मों का तमाशा देख ले ।
शक्तियाँ भी छोड़ती हैं, साथ तेरा देख ले।

(रावण के मुकुट गिरना । अंगद का उन्हें उठाकर फेंकना)

**॥ चौपाई ॥**

कटकटाइ कपि कूँजर भारी । दुहु भुजदंड तमकि महि मारी ॥
गिरत सँभारि उठा दसकंधर । भूतल परे मुकुट अति सुंदर ॥
कछु तेहिं लै निज सिरन्हि संवारे । कुछ अंगद प्रभु पास पसारे ॥

**॥ दोहा ॥**

उहाँ सकोपि दसानन, सब सन कहत रिसाइ ।
धरहु कपिहि धरि मारहु, सुनि अंगद मुसुकाइ ॥

**रावण :** (क्रोध से गरजकर) हे योद्धाओं ! इस बनरे को रावण की ताकत का ज्ञान करा दो ।
पकड़ो इस ढीठ बानरे को, रस्सियाँ बाँधने को लाओ ॥
लोहे की गर्म छड़ें लेकर, सारा तन इसका झुलसाओ ।
इस तरह पीस डालो इसे, कोई नाम तक न पा सके ।

धूल भी उड़कर न इसकी, रामादल में जा सके ।

**अङ्गद :** (क्रोध से) हे नारी चोर ! तू सन्निपात के रोगी की तरह बक रहा है । तू काल के वश हो गया है । श्री राम कृपा से पहले तू मेरी शक्ति का आभास कर ।

(पैर जमाकर)

मेरा यह पांव चलायमान, जो कोई भी असुर ताड़ गया ।
तो रामचन्द्र फिर जायेंगे, और मैं निश्चय ही हार गया ।

**॥ चौपाई ॥**

समुझि राम प्रताप कपि कोपा । सभा माझ पन करि पद रोपा ।
जौं मम तरन सकहि सठ टारी । फिरहिं रामु सीता मैं हारी ॥
इन्द्रजीथ आदिक बलवाना । हरषि उठे जहँ तहँ भट नाना ॥
झपटहिं करि बल बिपुल उपाई । पद न टरइ बैठहिं सिरु नाई ॥

**रावण :** (गरजकर) हे लंका के वीरों ! अब क्या देखते हो ? इसका पैर तुरन्त उखाड़ दो । इसको भूमि पर पछाड़ दो ।

**सभासद-१ :** (खड़ा होकर सिर नवाकर)

हुआ है हुक्म जो सरकार का, फौरन बजा लाऊँ ।
उठा दूँ पैर पृथ्वी से, तभी बलवान कहलाऊँ ।

(जोर लगाकर थककर बैठ जाना)

**सभासद-२ :** (खड़ा होकर अंगद के पास आकर)

हिलाऊँ पैर क्या इसका, भोजन समझकर खा डालूँ ।
अगर हो हुक्म तो, इक आन में भूमि हिला डालूँ ।

(जोर लगाकर हारकर बैठ जाना)

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर गरजकर)

यह पग तो चीज क्या, फौलाद का खम्भा हिला दूँगा ।
हिमाचल की जड़ें भी, खोखली करके दिखा दूँगा ।

(जोर लगाकर बैठ जाना)

**सेनापति :** नहीं पहुँचा है इसका पग, तो भूमि के धरातल तक ।
उठाकर फैंक दूँ अगर, पहुँचे रसातल तक ।

(जोर लगाकर लज्जित होकर बैठ जाना)

**रावण :** बेटा मेघनाद !

**मेघनाद :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) आज्ञा पिताजी ।

**रावण :** देखता क्या है, उठाकर फैंक दे आकाश पर ।
कुत्ता न रोये कोई ऐसे, बेहया की लाश पर ।

**मेघनाद :** (सिर नवाकर व्यंग्य से) पिताजी !
देर भी बस हुक्म की, अब देर पल की नहीं ।
है इशारे की ही केवल, बात कुछ बल की नहीं ।

(जोर लगाकर थककर)

आह..... ?
एक तिल सरका न पग, शक्ति यों ही बरबाद की ।
बज्र का खम्भा है मानो, लाट है फौलाद की ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

भूमि न छाँड़त कपि चरन, देखत रिपु मद भाग ।
कोटि विघ्न ते संत कर, मन जिमि नीति न त्याग ॥

**॥ चौपाई ॥**

कपि बल देखि सकल हियँ हारे । उठा आपु कपि कें परचारे ॥
गहत चरन कह बालि कुमारा । मम पद गहें न तोर उबारा ॥
गहसि न राम चरन सठ जाई । सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥

**रावण :** (अचरज से) ओह..... !
है कोई जादू या टौना, या छलावा है कोई ।
देखता हूँ पैर है इसका, कि धोखा है कोई ।

(रावण का पैर उठाने को झुकना)

**अङ्गद :** (पाँव को उठाकर समझाते हुए) लंकेश ! तुम्हारी शक्ति का अनुमान हो गया ।
अरे ज्ञानी होकर भी तू, अज्ञान के पथ पर चला ।
पाँव छूने से मेरे, होगा नहीं तेरा भला ।
नेक कर्म कर जिससे, गुजरे जिन्दगी आराम की ।

चाहता है मोक्ष तो, जाकर शरण ले राम की।
जनक नन्दिनी को लौटा, इसी में तेरा कल्याण है।
अन्यथा अब युद्ध का, ऐलान है, ऐलान है।

(अंगद का जाना। रावण का लज्जित होकर बैठ जाना)

पर्दा गिरना

॥ चौपाई ॥

रिपुमद मति प्रभु सुजसु सुनायो। यह कहिचल्यो बालिनृप जायो।

## सीन इक्कीसवाँ

**स्थान :** समुद्र का किनारा।

**दृश्य :** रामादल बैठा हुआ है।

पर्दा गिरना

॥ व्यास दोहा ॥

रिपु बल धरषि हरषि कपि, बालितनय बल पुंज।
पुलक सरीर नयन जल, गहे राम पद कंज॥

**अङ्गद :** (प्रवेश कर गदगद होकर राम के चरणों में गिरकर) "जय श्री राम"

**राम :** (छाती से लगाकर) बना कुछ काम हे तात !

**अङ्गद :** प्रभो ! वही ढाक के तीन पात।

**हनुमान :** (चारों मुकुट लाकर) प्रभो ! इनका रहस्य क्या है ?

**राम :** (मुस्कराकर) ये रावण के चार मुकुट हैं।

**अङ्गद :** (पैर पकड़कर) हे भक्त सुखदायक ! सुनिए..... ? ये मुकुट नहीं, राजा के चार गुण हैं। हे नाथ ! वेद कहते हैं कि साम, दाम, दण्ड और भेद ये चारों राजा के हृदय में बसते हैं। ये नीति धर्म के चार सुन्दर चरण हैं। ऐसा जी में जानकर ये स्वामी के पा आ गये। रावण धर्म से रहित, प्रभु के चरणों से विमुख और काल के वशीभूत है इसलिंये वे गुण उसको छोड़कर आपके पास आ गये हैं।

**सम्मिलित स्वर : बोलो . . . ? सियापति रामचन्द्र की जय**

**॥ व्यास दोहा ॥**

परम चतुरता श्रवण सुनि, बिहँसे रामु उदार ।
समाचार पुनि सब कहे, गढ़ के बालि कुमार ॥

**पर्दा गिरना**

**॥ लंका दहन लीला समाप्त ॥**

◆ ◆ ◆

### ग्यारहवाँ दिन (नवाँ भाग)

# लक्ष्मण शक्ति लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. लक्ष्मण-शक्ति

(क) लक्ष्मण शक्ति

(ख) कुम्भकरण वध

## लक्ष्मण शक्ति लीला

### (संक्षिप्त कथा)

युद्ध आरम्भ हो गया। राम-रावण युद्ध ! और घमासान युद्ध में मेघनाथ के शक्ति बाण से लक्ष्मण मूर्छित हो गये। रामादल में हाहाकार मच गया। श्री राम के लिये इससे बड़ा कोई आघात नहीं था। श्रीराम बिलख रहे थे भ्राता लक्ष्मण की मूर्छित दशा पर ! वैद्यराज सुषेन के परामर्श पर पवनपुत्र हनुमान को संजीवनी बूटी लाने का कार्य सौंपा गया। हनुमान जी लंकेश की माया शक्तियों का मुकाबला करते हुए संजीवनी लाने में सफल हुए। श्रीराम के अधीर ह्रदय को सांत्वना मिली। लक्ष्मण जी पुनः होश में आ गये। उन्हें नव जीवन और राम की लुटती हुई मुस्कान मिल गई। और पुनः युद्ध की घोषणा कर दी गई।

रावण मस्ती में चूर था। वह खुशी का जश्न मना रहा था कि तभी लक्ष्मण जी के पुनः होस में आने की खबर सुनकर वह बौखला उठा और उसने घोर निद्रा में सोये हुए अपने भाई को झकझोर डाला तथा असीमित माँस-मदिरा का सेवन कराके उसकी बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया। तब कुम्भकरन भी भगवान राम के हाथों मुक्ति पा गया।

⇔

## पात्र परिचय

### (लक्ष्मण शक्ति लीला)

#### पुरुष पात्र

१. राम
२. लक्ष्मण
३. हनुमान
४. सुग्रीव
५. अंगद
६. जामवंत
७. नल
८. नील
९. विभीषण
१०. वानर सेना
११. रावण
१२. मेघनाद
१३. रावण का मंत्री
१४. रावण का द्वारपाल
१५. रावण का दूत
१६. सुषैन वैद्य
१७. राक्षस सेना
१८. कालनेमि
१९. भरत
२०. कुम्भकरण

**स्त्री पात्र**

१. डंकिनी
२. साकी

# लक्ष्मण शक्ति

## (लक्ष्मण शक्ति लीला)

**सीन पहला**

**स्थान :** समुद्र का किनारा

**दृश्य :** रामादल बैठा हुआ है ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

रिपु के समाचार जब पाए । राम सचिव सब निकट बोलाए ॥
लंका बाँके चारि दुआरा । केहि बिधि लागि करहु बिचारा ॥

**राम :** हे तात सुग्रीव, विभीषण तथा जामवंत जी ! लंका के चार विकट द्वार है । उन पर कैसे चढ़ाई की जाये ?

**सुग्रीव :** (चरणों में सिर नवाकर) हे प्रभो ! मेरे विचार से चारों दुर्गों पर एक साथ चढ़ाई की जाये ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) आपका विचार अतिश्रेष्ठ है, महाराज !

**सुग्रीव :** (मुस्कराकर) तब फिर देर किस बात की है ?

**हनुमान :** प्रभु की आज्ञा की ।

**राम :** (मुस्कराकर) मेरा आशीर्वाद सबके साथ है ।

**हनुमान :** (श्रीराम के चरणों में सिर नवाकर) जय श्रीराम ।

**सम्मिलित स्वर : जय श्रीराम**

**(हनुमान का वानर सेना सहित प्रस्थान)**

**॥ चौपाई ॥**

हरषित रामचरन सिरनावहिं । गहिगिरिसिखर वीरसबधावहिं ॥
जानत परम दुर्ग अति लंका । प्रभु प्रताप कपि चले असंका ॥

## सीन दूसरा

**स्थान :** रावण दरबार ।

**दृश्य :** दरबार लगा है ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

लंकाँ भयउ कोलाहल भारी । सुना दसानन अति अहँकारी ॥
सुभट सकल चारिहुँ दिसि जाहू । धरि धरि भालु कीस सब खाहू ॥

**दूत :** (घबड़ाया हुआ प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की दुहाई है ।

**रावण :** (क्रोध से) क्या आफत आई है ?

**दूत :** (सिर नवाकर) अन्नदाता ! वानर सेना ने समस्त नगर को घेर लिया है ।

**रावण :** कोई चिन्ता नहीं । हा... हा... हा...
इस तरह डर जाय यह, रावण ने सीखा ही नहीं ।
भय से हों भयभीत हम, ऐसा कलेजा ही नहीं ॥
बेटा मेघनाद !

**मेघनाद :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) आज्ञा पिताजी !

**रावण :** बेटा ! तुम अपनी सेना लेकर लंका के चारों दुर्गों पर चढ़ाई

कर दो। वानर-भालुओं के चुन-चुनकर खा जाओ और उन पाखण्डियों को उनकी करतूतों का मजा चखाओ।

सेना अपनी साथ ले, पहुँचा रण में जाय।
जितना कपिदल है वहाँ, सबको दो मरवाय।

**मेघनाद :** (सिर झुकाकर) जैसी आज्ञा पिताजी ! सवेरे मेरा कौतुक देखना, पिताजी !

है निश्चर दल मेरा भारी, परिमान का भी नहीं योजन है।
ये निश्चरों के कपि भालू, वैसे भी देखो भोजन हैं।

**अच्छा पिताजी ! जय शंकर की।**

**(मेघनाद का सेना सहित जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन तीसरा

**स्थान :** लंका का दुर्ग।

**दृश्य :** हनुमान जी वानर सेना सहित दुर्ग पर चोट कर रहे हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

**मेघनाद :** (सेना के साथ प्रवेश करके गरजकर) जय शंकर की। कहाँ हैं वे अयोध्या के बनवासी ? कहाँ हैं वह कुलघाती !

आये हैं जितने यहाँ, एक-एक मारा जायेगा।
आज सारे पाप का, बदला चुकाया जाएगा।

**वानर :** (आगे आकर) अरे पाखण्डी ! जरा इधर तो आ। राम को पीछे दिखाना, पहले हमें ही अपना पराक्रम दिखा।

**मेघनाद :** (व्यंग्य से) अरे जंगली पशुओ ! तुम मुफ्त में क्यों जान गंवाते हो ? मेघनाद के सामनेआकर काल के मुँह में क्यों जाते हो ?

जंगलों के तुम पशु, तुमको किसी की क्या पड़ी।
आके मरने दो उसे, जिसके सिर पर आ पड़ी।

**वानर :** (क्रोध से) ज्यादा बातें न बना अपना पराक्रम दिखा ।

**(युद्ध होना। वानरों में भगदड़ मचना)**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

दस दस सर सब मारेसि, परे भूमि कपि बीर ।
सिंहनाद करि गर्जा, मेघनाद बल धीर ।

**॥ चौपाई ॥**

देखि पवनसुत कटक बिहाला । क्रोधवंत जनु धायउ काला ॥
महासैल एक तुरत अपारा । अति रिस मेघनाद पर डारा ॥

**हनुमान :** (आगे आकर क्रोध से) बस ! बस ! ओ अन्यायी मेघनाद इतने अभिमान में क्यों आ रहा है? निर्दोष वानरों को मारकर पाप की संख्या क्यों बढ़ा रहा है ?

**मेघनाद :** (क्रोध मिश्रित व्यंग्य से) ओ लंका को जलाने वाले दुष्ट वानर ! बातें न बना । अपना पराक्रम दिखा ।

**(दोनों का भीषण युद्ध होना)**

## सीन चौथा

**स्थान :** समुद्र तट ।

**दृश्य :** रामादल बैठा है ।

**पर्दा उठना**

**दूत :** (घबड़ाये हुए प्रवेश करके श्री राम के चरणों में गिरकर) प्रभु की दुहाई है ।

**राम :** इतने क्यों घबड़ाये हो ।

**दूत :** हे स्वामी ! दुष्ट मेघनाद ने समस्त वानर सेना को धराशायी कर दिया है । हनुमान जी उससे भिड़े हुए हैं ।

**लक्ष्मण :** (चरणों में गिरकर क्रोध से) भैया ! सेवक को आज्ञा दीजिये ।

**राम :** अंगद आदि कपियों को साथ लेकर मेघनाद का सामना करो ।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा प्रभो ! जय श्री राम ।

**(लक्ष्मण का अंगद आदि के साथ प्रस्थान)**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

आयसु मगि राम पहिं, अंगदादि कपि साथ ।
लछिमन चले क्रुद्ध होइ, बान सरासन हाथ ।

**विभीषण :** (मेघनाद के सामने आकर) ठहर मेघनाद ! क्या कर रहा है ?

**मेघनाद :** (क्रोधमिश्रित व्यंग्य से) कुलघातक, देशद्रोही चाचा ! आओ ..... ! आज तुमको भाई से बैर बढ़ाने का फल चखाऊँगा ।

किया गैरों को अपना, आँख अपनों से बदल बैठे ।
जरा नमीं जहाँ देखी, वहीं फौरन फिसल बैठे ।

**विभीषण :** मेघनाद ! तू अभी बालक है । इतने क्रोध में न आ ? अग्नि में कूदकर अपने प्राण न गँवा ।

समझ में किस तरह आए, फंसे हो मृत्यु के चक्कर में ।
किया उपदेश जो तुमको, लगाई है जौंक पत्थर में ।

**मेघनाथ :** (क्रोध मिश्रित व्यंग्य से) पत्थर में जौंक लगाने का स्वाद तो उसी दिन मिल जाता जिस दिन पिता जी के विरुद्ध जबान खोली थी । भरे दरबार में अनुचित बोली थी खैर..... ? आज सब बदला चुकाऊँगा ।

**विभीषण :** बेटा ! यह दौलत और हुस्न तो आनी जानी है ।
मुस्कराले..... ? जब तक यह जवानी है ॥
मेघनाद ! मुझे तेरी जवानी पर तरस आता है ।

**मेघनाद :** (क्रोध से) मेघनाद से टकराकर बुढ़ापे में क्यों अपनी इज्जत गंवाता है ?

**विभीषण :** (व्यंग् से) बुढ़ापा..... ? (हँसना)
बुढ़ापे में जवानी से भी, ज्यादा जोश होता है ।
भड़कता है चिरागे सह, जब खामोश होता है ।

अच्छा..... ! आ..... ! अब युद्ध कर।

(युद्ध होना)

**अङ्गद :** (आगे आकर क्रोध से) बस..... ! बस..... ! क्या करता है नादान ?

**मेघनाद :** (व्यंग्य से) अब आ गया बलवान ! मूर्ख ! यह सभा नहीं रणभूमि है।

(युद्ध होना)

**लक्ष्मण :** (आगे आकर क्रोध से) ओ नारी चोर की औलाद ! ठहर !
क्यों बुलाता मौत अपनी, आज मेरे हाथ से।
लौट जा घर को अभी, समझा रहा हूँ बात से।

**मेघनाद :** (क्रोध से) आ..... ! ओ मौत के खरीदार ! इधर आ !
मैं तुझे बहुत देर से ढूंढ रहा था।
खेल खेले बालकों में, वीर तो पाया न था।
बच रहा था सामने, जब तक मेरे आया न था।

**लक्ष्मण :** (क्रोध से) ओ अहंकार के पुतले ! आज मैं तेरा सारा अभिमान धूल में मिलाऊँगा।
काल भी जो युद्ध में, सम्मुख लड़ने आयेगा।
लक्ष्मण से बचकर, वह भी न जाने पायेगा।

**मेघनाद :** (व्यंग से) क्यों नहीं..... ? क्यों नहीं..... ? अरे मूर्ख !
मैं उस बाप का बेटा हूँ, जिसके पवन लगाये बुहारी है।
उसके बेटे से टक्कर ले, क्या गीदड़ मजाल तुम्हारी है।

**लक्ष्मण :** (क्रोध से)
ओ दुष्ट ! मुझे सीधा न जान, जहर का बुझा तीर हूँ मैं।
अभी मालूम तुझे पड़ जायेगा, कि कितना वीर हूँ मैं।

**मेघनाद :** (क्रोध से) जा..... ? जा..... ? वीरता की जाँच करने वाले बातों के तीर नहीं चलाते।
कर चुका है बहुत बातें, रार भी तकरार भी।
जानता है युद्ध करना, तो चला हथियार भी।

**लक्ष्मण :** (क्रोध से) अच्छा..... ! तो ले संभल..... !
जो अब तक मर चुके हैं, उनकी गिनती बढ़ा जाकर।
किये हैं पाप जो तूने, भोग ले उनकी सजा जाकर।

(दोनों में युद्ध होना)

॥ **चौपाई** ॥

लछिमन मेघनाद द्वौ जोधा । भिरहिं परस्पर करि अति क्रोधा ॥
रावण सुत निज मन अनुमाना । संकट भयउ हरिहि मम प्राना ॥

**मेघनाद :** (थककर एक ओर होकर) ओह..... ? देखने में तो बालक ही दिखाई देता है, किन्तु..... ? इसने तो मेरे सब हथियारों को ही काट डाला। अब यदि ब्रह्म शक्ति नहीं चलाता हूँ तो इसके हाथों मारा जाऊँगा। (पलटकर) ओ रघुवंशी ! संभल !
अब तक खेल खिलाता था, अब खा जाने की बारी है।
इस शक्तिबाण का रूपधार, आ पहुँची मृत्यु तुम्हारी है।
इसका मारा बेसुध होत, दिन उगते प्राण गंवाता है।
जब यह तन पर पड़ती है, तन मृतक तुल्य हो जाता है।
इसलिए संभल ओ रघुवंशी, तू आज न बचने पायेगा।
यह इन्द्रजीत भूमण्डल पर, अब लषणजीत कहलायेगा।

**लक्ष्मण :** जो भी हथियार तुम्हारे थे, उन सबने हार मानी है ।
जब शस्त्र युद्ध में हार गये, तो ब्रह्मयुद्ध की ठानी है।
कितने ही आज पतित हो तुम, पर ब्राह्मण वंश तुम्हारा है।
यह ब्रह्मशक्ति का आदर है, जिससे सर झुका हमारा है।
क्या चिंता ब्रह्मपाश द्वारा, यह क्षत्री हारा जाता है।
चमकेगा कुछ घड़ियों को, अब चन्द्र ग्रहण में आता है।

॥ **चौपाई** ॥

वीरघातिनी छाँडिसि साँगी । तेज पुंज लछिमन उर लागी ।

**मेघनाद :** (ब्रह्मबाण छोड़ते हुए) ओ रघुवंशी !
क्यों खड़ा है सामने, कर में धनुष तोले हुए।

आ रहा है देख तेरा, काल मुँह खोले हुए ।

**लक्ष्मण :** (मूर्छित होकर गिरते हुए) आह पापी ! कौन सा शस्त्र चला दिया ?

**॥ व्यास : दोहा ॥**

मेघनाद सम कोटि सत, जोधा रहे उठाइ ।
जगदाधार सेष किमि, उठे चले खिसिआइ ।

**मेघनाद :** (लक्ष्मण को उठाते हुए असफल होने पर) हे मेरे वीरों ! अब चलो । इसे यहीं छोड़ चलो । अब तो यह मर गया ।

(मेघनाद का सेना के साथ जाना)

**हनुमान :** (लक्ष्मण के पास आकर रोते हुए) आह विधाता ! यह क्या हो गया ।

भाग्य ने लूटा है अब, किस्मत दे गई धोखा हमें ।
देखिये विधना दिखाये, दुख अब क्या क्या हमें ।
शान्ति संतोष के, सामान थे सारे गये ।
लुट गये भगवान, जीते जागते मारे गये ।

(हनुमान द्वारा लक्ष्मण को उठाकर ले जाना)

**राम :** (उदास होकर) हैं ..... ? आज मन अधीर क्यों हो रहा है ? विधाता ! कुशल तो हैं ।

छाती उमड़ रही है, आँसू से फूटते हैं ।
आँखों के सामने, कुछ तारे से टूटते हैं ।
मन घबड़ा रहा है, संतोष खो रहा है ।
आता नहीं समझ में, क्या भेद हो रहा है ।

**॥ चौपाई ॥**

तब लगि लै आयउ हनुमाना, अनुज देखि प्रभु अति दुख माना ।

(हनुमान का सेना सहित लक्ष्मण को लिए हुए प्रवेश)

**राम :** (खड़े होकर घबराकर) हैं..... ! यह क्या..... ? लक्ष्मण को क्या हो गया..... ?

(लक्ष्मण को अपनी गोद में लिटा लेना)

**हनुमान :** (रोते हुए) हाँ प्रभो ! पापी मेघनाद ने शक्ति बाण चलाया और बड़ा घातक आघात पहुंचाया ।

**राम :** (सिर पटकते हुए) बस..... ! बस..... ! अब क्या रह गया है ? हाय..... ! हाय..... ! मैं सब तरह से लुट गया । (लक्ष्मण की छाती पर गिरकर रोना)

**।। व्यास : ।।**

लक्ष्मण गिरे घननाद की, जब शक्ति आ उर में लगी ।
रोके रुकी रण में नहीं, भयभीत कपि सेना भगी ।
अति दीन मुख गति देखि, लक्ष्मण को लखा जब राम ने ।
होकर विकल करने लगे, रोदन सभी के सामने ।

**राम :** (ऊपर को धीरे-धीरे सिर उठाकर रोते हुए) हा ! भैया... ! लक्ष्मण..... !

नाहीं करी माना नहीं, धाया करन को जंग है ।
सोया समर की सेज पर, तज करके मेरा संग है ।
धोखा न दो भैया मुझे इस भांति आकर के यहाँ ।
मझँदार में मुझको बहाकर, तात जाते तुम कहाँ ।
सीता हरण, तेरा मरण, सुन कैकई होवै सुखी ।
पर शेष मातायें भला, कैसे न होवेंगी दुखी ।
अन्तिमक्रिया मैंने पिता की, की नहीं की गिद्ध की ।
उपकार के सत्कार में, उसको मिली गतिसिद्ध की ।
जा सकूँगा अब ना वापिस, लौटकर लंका से मैं ।
अब गई दुनियाँ मेरे से, और गया दुनियाँ से मैं ।
मिटाओ इस तरह संसार से, मुझको न हे भाई ।
करो कुछ तो दया आँखों ने, है जलधार बरसाई ।
हाय कैसा पाप जीवन में कमाया राम ने ।
ठहर मैं भी तो चलूँ, साथ निभाने के लिए ।
तुमने घर बार तजा, साथ में आने के लिए ।
मौत आ जाये मेरी, काश अब लक्ष्मण के साथ ।

सारी आशायें गई है, भाई के जीवन के साथ।
जिसमें थे आराम के, साधन वह दुनियाँ ही गई।
लक्ष्मण क्या चल दिया, जीने की आशा ही गई।
हा..... ! भैया..... ! लक्ष्मण..... !

(राम का लक्ष्मण की छाती पर सिर रखकर रोना)

**॥ चौपाई ॥**

जामवंत कह बैद सुषेना। लंका रहइ को पठई लेना॥

**जामवंत :** (राम के कन्धे पर हाथ रखते हुए) महाराज ! शान्ति से काम लीजिए और लक्ष्मण के प्राण बचाने का कोई उपाय कीजिये।

**राम :** (सिर ऊपर उठाकर रोते हुए) बताओ..... ? जामवंत जी ! तुम ही कोई उपाय बताओ ? संकट के समय तुम्हीं कुछ धीर बंधाओ ?

**जामवंत :** महाराज ! लंका में सुषैन नाम का एक वैध रहता है। जो लंका से परिचित हो उसे भेजकर वैध जी को बुलवाइये और लक्ष्मण जी की नाड़ी दिखलाइये।

(श्री राम का हनुमान की ओर निहारना)

**हनुमान :** (सिर नवाकर) प्रभो ! आप धीरज रखिये। मैं अभी जाता हूँ और वैध जी को अपने साथ लाता हूँ।

**(हनुमान का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

धरि लघु रूप गयउ हनुमंता। आनेउ भवन समेत तुरंता॥

## सीन पाँचवाँ

**स्थान :** सुषैन का शयनागार।

**दृश्य :** वैद्य जी गहरी नींद में सो रहे हैं।

**पर्दा उठना**

**हनुमान :** (वैद्य जी को सोता हुआ देखकर मन में सोचते हुए) वैद्य जी सो रहे हैं। जगाने पर शोर होगा। चलो, चारपाई सहित ले चलूँ।

(हनुमान का वैद्य को लेकर राम के पास आना)

**सुग्रीव :** (राम से) लीजिये महाराज ! वैद्य जी आ गये।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

राम पदारविंद सिर, नायउ आइ सुषैन ।
कहा नाम गिरि औषधि, जाहु पवनसुत लेन ।

**सुषेन :** (जागकर श्री राम के चरणों में सिर नवाकर) कहिये प्रभु ! सेवक को क्या आज्ञा है।

**राम :** वैद्यराज ! कृपा करके लक्ष्मण की नाड़ी देखिये और रोग का कोई उपचार बतलाइये।

**सुषेन :** (सकुचाते हुए) परन्तु महाराज !

**राम :** (विस्मय से) परन्तु क्या ?

**सुषेन :** (सिर नवाकर)

प्रभो ! मैं वैद्य दशानन के घर का, किस तरह आपका काम करूँ।
अनुचित होगा यदि बैरी को, लंकापति के आराम करूँ।
जिसमें प्रत्यक्ष बुराई है, कैसे वह कर्म किया जाये।
हे राम ! आज्ञा देते हो, इस समय अधर्म किया जाये।

**राम :** (सिर नीचा करके) नहीं वैद्यराज !

जिस धर्म हेतु निज राज्य गया, श्री पितृदेव का मरण हुआ।
जिस धर्म हेतु प्रिय भरत छुटा, सीता प्यारी का हरण हुआ।
उस धर्म सत्य पर लक्ष्मण भी, यदि मर जाए तो मर जाए।
आवाज यही होगी अपनी, हाँ धर्म नहीं जाने पाए।

**सुषेन :** (चरण पकड़कर) धन्य हो प्रभु ! मैं तो सिर्फ आपकी परीक्षा ले रहा था।(नाड़ी देखकर) महाराज ! लक्ष्मण जी के मर्म स्थान पर चोट आयी है।

**राम :** (ठंडी साँस लेते हुए) तो . . . क्या . . . . . ? इसका कोई

उपाय नहीं..... ?

सुषेन : (दुखी होकर) उपाय तो है..... ! परन्तु..... ?

राम : (घबड़ाकर) परन्तु क्या..... ? बतलाइये वैद्यराज ! शीघ्र बतलाइए। निराशा में डूबते को कुछ तो आशा बँधाइए।

सुषेन : (निराशा भरे स्वर में) महाराज ! इस रोग की केवल एक ही औषधि है जिसे संजीवनी बूटी कहते हैं। और यह द्रोणाचल पर्वत पर मिलती है।

हनुमान : (आगे आकर) तो मैं अभी जाता हूँ, वैद्यराज ! और उसे लेकर शीघ्र लौट आता हूँ।

सुषेन : हाँ... हाँ... ! जाइए। परन्तु..... ? इतना ध्यान रहे कि इस रोग के रोगी में कुछ ही घन्टे प्राण रहते हैं। यदि आप संजीवनी लेकर सूरज निकलने से पहले लौट आयेंगे तो लक्ष्मण जी के प्राण बच जायेंगे।

हनुमान : (गरजकर)

भूतल में हो या नभ में हो, पर्वत में हो या सागर में।
लाएगा दास अभी उसको, चाहे हो ब्रह्मा के घर में।
बतलाओ उसका रंग रूप, किस ठौर हाथ वह आयेगी।
रघुराई अगर सहाई है तो, रात रहे वह आ जायेगी।

सुषेन : सो तो ठीक है।

अच्छा बलबीर बढ़ो आगे, तुम ले आओगे औषधि वह।
उत्तर में जो द्रोणागिरि है, उस पर पाओगे औषधि वह।
संजीवन उसको कहते हैं, ज्वाला की भाँति चमकती है।
यदि नहीं भोर तक आई वह, तो जान नहीं बच सकती है।

राम : (लक्ष्मण की छाती पर सिर रखकर हनुमान की तरफ इशारा करके)

सुन पवनपुत्र हनुमान-२, संजीवन बूटी लाना।
लखन के प्राण बचाना।
समय समय पर सबको, धीर बँधाया था।

कर सीता की खोज, हमें हर्षाया था।
पहुँचे लंका दरम्यान-२, हृदय को धीर बंधाना।
लखन के प्राण बचाना।...(१)
लखन लाल की दैह में, विष अब व्यापौ है।
भाई भरत है अवध, न कोई आपौ है।
सुन लो चतुर सुजान-२, लाज रघुकुल की बचाना।
लखन के प्राण बचाना।...(२)
जो सुन पाएँ मात तो, रुदन मचायेंगी।
वधू उर्मिला को कैसे, धीर बंधायेंगी।
वीरों में तू बलवान-२, मेरा संताप मिटाना।
लखन के प्राण बचाना।...(३)
छूटे लक्ष्मण भ्रात को, प्राण गँवाऊ मैं।
सीता को फिर कैसे, धीर बँधाऊ मैं।
दुखियों की राखि शान-२, पवनसुत जल्दी आना।
लखन के प्राण बचाना।...(४)
हे वीर! अब रघुकुल की लाज तेरे हाथ है।
कपिपति की तुमने रक्षा की, कपियों को तुमने तारा है।
बन में अशोक के तुमने ही, सीता का प्राण उबारा है।
अब जान डालकर लक्ष्मण में, राघव को पूर्ण सुखी करना।
जो सदा तुम्हारा ऋणी रहा, उसको फिर आज ऋणी करना।

**हनुमान :** (चरणों में सिर नवाकर) आप निश्चिंत रहें प्रभु "जय श्री राम"

**(हनुमान का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

राम चरन सरसिज उर राखी । चला प्रभंजन सुत बल भाषी ॥

**सीन छठवाँ**

**स्थान :** रावण दरबार।

**दृश्य :** दरबार लगा है।

**पर्दा उठना**

**रावण :** हा... हा... हा... पीओ पिलाओ। विजय के उपलक्ष में आनन्द मनाओ। अप्सराओं को बुलाकर नाच रंग कराओ।

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) जैसी, आज्ञा महाराज !

**साकी :** (प्रवेश करके कोर्निश करते हुए) अन्नदाता !

**रावण :** साकी !

भर भर के जाम सबको, बराबर पिलाये जा।
मदिरा के साथ-साथ ही, मस्ती लुटाये जा।
हा... हा... हा...

**मंत्री :** साकी ! ओ साकी ! अब कुछ न रख बाकी।

बोतल का उड़ता हुआ, आज काग चाहिये।
गम को चला दे आज, वही आग चाहिये।

**साकी :** लीजिए महाराज ! ऐसा ही लीजिए।

खिलता हुआ शराब का, नक्शा है देखिये।
बहता हुआ सरूर का, दरिया है देखिये।

**(सबका शराब पीना। अप्सरा का गाना)**

गुजरी है रात किस तरह, जख्मी जिगर से पूँछ।
किस दिल पै तीर चल गये, अपनी नजर से पूँछ।

**रावण :** हा... हा... हा... वाह ! वाह ! आज तो आनन्द लुट रहा है। खुशी की लहर आ रही है। मेघनाद ! तू वास्तव में बलवान है। लक्ष्मण को मारना तेरा ही काम है। अब राम अकेला क्या करेगा ? स्त्री और भाई के वियोग में सड़ मरेगा।

**मेघनाद :** (खड़ा होकर घमण्ड से) अभी क्या है ? देखते जाइये पिताजी ! एक-एक की छाती को इसी प्रकार तोड़ूँगा जितने

लंका पर चढ़कर आये हैं एक को भी जीवित नहीं छोड़ूँगा।

**रावण :** (घमण्ड से) क्यों नहीं? क्यों नहीं मुझे तुमसे ऐसी ही उम्मीद है। हा... हा... हा..।

युद्ध में करके पराजित, इक न इक दिन राम को।
है मुझे विश्वास तू, रोशन करेगा नाम को।

**॥ चौपाई ॥**

उहाँ दूत एक मरमु जनावा । रावनु कालनेमि गृह आवा ॥

**दूत :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो अन्नदाता! रामादल में लक्ष्मण के रोग का उपचार किया जा रहा है।

**रावण :** (अचरज से) उपचार किया जा रहा है।

**दूत :** हाँ महाराज! संजीवनी बूटी लाने के लिये हनुमान द्रोणाचल पर्वत पर जा रहा है। यदि वह प्रातःकाल से पहले बूटी ले आयेगा तो लक्ष्मण ठीक हो जायेगा।

**रावण :** (खड़ा होकर क्रोध से) कदापि नहीं..... ? मैं ऐसा कभी नहीं होने दूँगा? जाओ..... ? इसी दम कालनेमि को बुलाकर लाओ।

**दूत :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज! (दूत का जाना)

**कालनेमि :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज जय शंकर की।

**रावण :** जय शंकर की। कालनेमि! तुम लंका के पुराने हितैषी और आज्ञाकारी हो। साथ ही कपट की चालों में माहिर हो। हनुमान संजीवनी बूटी लेने द्रोणाचल पर्वत पर जा रहा है। तुम मार्ग में पहुँच कर कोई मायावी जाल फैलाओ और हनुमान को अपनी चाल में फंसाओ जिससे वह पर्वत पर पहुँचने ही न पाये और सूरज निकल आये।

**कालनेमि :** (काँपते हुए) महाराज! जिसने आपके देखते-देखते नगर जला दिया उसका रास्ता रोकने वाला कौन है? हे नाथ! मिथ्या बकवाद छोड़ दो और श्री रघुनाथजी को भजकर

अपना भला करो।

**रावण :** (क्रोध से) मैंने उपदेश सुनाने को नहीं बुलाया, कालनेमि !
मैं कहता हूँ सो कर अभी, बकवाद सब बेकार है।
अगर फिर से न कहा तो, सिर पर मेरी तलवार है।

**कालनेमि :** (तिरछा होकर)
बुरा भी और अच्छा भी, कर्माधीन होता है।
अगर किसी का नाश होता हो, तो पहले बुद्धीहीन होता है।
इसलिए इस पापी के हाथों मरने से तो श्रीराम के दूत के हाथों मरना अच्छा है।
(पलटकर) मुझे आपकी आज्ञा स्वीकार है, महाराज !

**रावण :** (खुश होकर) शाबास ..... ! मुझे तुमसे ऐसी ही आशा थी और देखो ..... ? यह काम बनाकर लाओगे तो मुँह माँगा इनाम पाओगे।

**कालनेमि :** (सिर नवाकर) आप निश्चिंत रहें, महाराज !

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

अस कहि चला रचिसि मग माया । सर मंदिर बर बाग बनाया ॥
मारुतसुत देखा सुभ आश्रम । मुनिहि बूझि जल पियौं जाय श्रम ॥

## सीन सातवाँ

**स्थान :** जंगल का रास्ता।

**दृश्य :** कालनेमि मुनि के भेष में आश्रम बनाकर बैठा है।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

राच्छस कपट बेष तहँ सोहा । मायापति दूतहिं चहँ मोहा ॥
जाइ पवनसुत नायउ माथा । लाग सो कहै राम गुन गाथा ॥

**हनुमान :** (प्रवेश करके) जय श्रीराम। (थककर) अहा ..... ! प्यास बहुत लग रही है और कुछ-कुछ थकान भी होने लगी है।

(सामने की तरफ देखते हुए) सामने किसी मुनि का आश्रम जान पड़ता है इसलिये कुछ देर के लिये वहीं चलूँ और मुनि से पूछकर जल पीऊँ।

(हनुमान का आश्रम की ओर जाना)

**कालनेमि :** (हनुमान को आता देखकर) जय कौशलाधीश श्री रामचन्द्र की जय। संकट मोचन पतित पावन श्री भगवान की जय।

**हनुमान :** (प्रवेश करके चरणों में सिर नवाकर) मुनिवर प्रणाम।

**कालनेमि :** (आशीर्वाद देते हुए) जीवित रहो। कल्याण हो।

**हनुमान :** मुनिराज ! आजकल रावण और श्रीराम जी में महायुद्ध हो रहा है। इसका क्या परिणाम निकलेगा ?

**कालनेमि :** हाँ..... ? यह संग्राम मैं अपनी ज्ञान दृष्टि से साक्षात देख रहा हूँ। इस युद्ध में रामजी जीतेंगे इसमें सन्देह नहीं है।

**हनुमान :** (चरण पकड़कर) धन्य हो मुनिराज ! अच्छा मुनिवर ! मुझे बड़े जोर से प्यास लग रही है। यदि कुछ जल हो तो मेरी प्यास बुझाओ।

**कालनेमि :** (कमंडल देकर) लो..... ? इसमें कुछ जल है। इसे पीकर अपनी प्यास बुझाओ।

**हनुमान :** महाराज ! इस थोड़े से जल से मेरी प्यास नहीं बुझेगी।

**कालनेमि :** अच्छा..... ? तो सामने तालाब है वहाँ चले जाओ और अच्छी तरह अपनी प्यास बुझाओ परन्तु लौट कर फिर मेरे पास आना। मैं तुम्हें दीक्षा दूँगा जिससे तुम्हें ज्ञान प्राप्त हो।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) बहुत अच्छा मुनिवर !

(हनुमान का तालाब की ओर जाना)

**॥ व्यास : दोहा ॥**

सर पैठत कपि पद गहा, मकरीं तब अकुलान ।
मारी सो धरि दिव्य तनु, चली गगन चढ़ि जान ॥

(हनुमान का तालाब में घुसकर जल पीना और डंकिनी का पांव पकड़ना)

**हनुमान :** (अचरज से) हैं..... ? मेरे पैरों में यह कौन लिपट गया। (हनुमान का पैर से दबाकर डंकिनी को मारना और उसका दिव्य शरीर पाकर प्रकट होना)

**डंकिनी :** (हाथ जोड़कर) धन्य हो ! राम भक्त हनुमान धन्य हो... !

**हनुमान :** (अचरज से) हैं..... ? तुम कौन हो ?

**डंकिनी :** (हाथ जोड़कर) हे नाथ ! मैं स्वर्ग की अप्सरा हूँ। दुर्वासा मुनि के शाप से डंकिनी रूप में इस तालाब में पड़ी हुई थी। आज आपके चरण छूकर कल्याण हो गया। हे महाराज ! यह मुनि नहीं है। रावण का भेजा हुआ राक्षस है जो आपके मार्ग में बाधा डालने के लिये कपट का भेष बनाकर बैठा हुआ है। आप उससे सावधान रहिये। मैं अपने लोक को जाती हूँ।

(डंकिनी का अदृश्य होना)

**॥ चौपाई ॥**

असकहि गई अपसरा जबहीं । निसिचर निकट गयउ कपितबहीं ॥
कह कपि मुनि गुरु दछिना लेहू । पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहू ॥

**हनुमान :** (मुनि के पास आकर मुष्टिक प्रहार करते हुए) हे मुनि ! पहले गुरुदक्षिणा ले लीजिए पीछे आप मुझे मंत्र सिखाना।

**कालनेमि :** (कराहते हुए) हाय मैया ! मैं तो मर गया। दुष्ट का साथ देने का फल अच्छी तरह मिल गया।

(कालनेमि का मरना और हनुमान का आगे बढ़ना) "जय श्रीराम"

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

राम राम कहिछांड़ेसि प्राना । सुनिमन हरषि चलेउ हनुमाना ॥

## सीन आठवाँ

**स्थान :** द्रोणाचल पर्वत।

**दृश्य :** हनुमान संजीवनी बूटी तलाश कर रहे हैं।

## पर्दा उठना

### ॥ चौपाई ॥

देखा सैल न औषध चीन्हा । सहसा कपि उपारि गिरि लीन्हा ॥
गहि गिरि निसि नभ धावत भयऊ । अवधपुरी ऊपर कपि गयऊ ॥

**हनुमान :** हैं..... ? इस पर्वत पर चारों ओर आग जल रही है । बूटी की पहचान कठिन है तब फिर इस पर्वत को ही उखाड़ कर ले चलूँ ।

(हनुमान का पर्वत लेकर नन्दी ग्राम के ऊपर होकर गुजरना)

**"जय श्रीराम"**

## दृश्य परिवर्तन

**स्थान :** नन्दी ग्राम ।

**दृश्य :** भरत भजन कर रहे हैं ।

### ॥ व्यास : दोहा ॥

देखा भरत बिसाल अति, निसिचर मन अनुमानि ।
बिनु फर सायक मारेउ, चाप श्रवन लगि तानि ॥

**भरत :** (आकाश की ओर देखकर विस्मय से) अरे..... ? यह तो कोई राक्षस है । यह पर्वत लेकर जा रहा है । अगर इसने अवधपुरी पर यह पर्वत गिरा दिया तो बड़ा अनर्थ हो जायेगा । इस कारण इसे बाण मार कर यहीं गिरा दूँ ।

(भरत का बाण मारना)

**हनुमान :** (पृथ्वी पर गिरते हुए) आह राम ! मैं विवश हो गया । अब मैं प्रातःकाल से पहले आपके पास कैसे पहुँच पाऊँगा ? हे नाथ ! मुझे क्षमा करना ।

(मूर्छित होना)

### ॥ चौपाई ॥

सुनि प्रिय बचन भरत तबधाए । कपि समीप अति आतुर आए ॥

**भरत :** (घबड़ाकर) अरे..... ? यह तो कोई राम भक्त है । (हृदय से लगाकर जगाते हुए) उठो भाई ! तुम कौन हो ? (रोते

हुए) मुझसे बड़ा अपराध हो गया। हे कपिराज ! यदि मैं मन, वचन और शरीर से प्रभु के चरणों में प्रीति रखता हूँ तो तुम बाण की चोट से मुक्त हो जाओ और सारी थकान खोकर प्रभु का समाचार सुनाओ। तुम अवधपुरी में हो। अभागा भरत तुम्हारे सामने है।

**हनुमान :** (उठते हुए) जय कौशलाधीश प्रभु रामचन्द्र की जय।

**भरत :** हे तात ! लक्ष्मण व माता जानकी सहित सुखनिधान प्रभु की कुशल कहो।

**हनुमान :** (रोते हुए) कुछ न पूछो महाराज ! इस समय प्रभु रामचन्द्र जी पर महान संकट आया हुआ है। मेघनाद ने शक्तिबाण से लक्ष्मण जी को मूर्छित कर दिया है। मैं उनके लिए संजीवनी लेकर सीधा लंका को जा रहा था। हे तात ! मैं किष्किन्धानरेश महाराज सुग्रीव जी मंत्री पवनपुत्र हनुमान हूँ।

**भरत :** (दुखी होकर) आह विधाता ! मैं कितना अभागा हूँ? प्रभु के एक भी काम न आया।

किये हैं पाप ही अब तक, न मुँह देखा भलाई का।
जगत में कौन है भाई, इस तरह शत्रु भाई का।

**हनुमान :** महाराज ! धैर्य धारण कीजिए और मुझे जाने की आज्ञा दीजिये क्योंकि समय निकल गया तो लक्ष्मण जी का सचेत होना असम्भव हो जायेगा।

**भरत :** हे तात ! तुमको जाने में देरी होगी और सवेरा होते ही काम बिगड़ जायेगा। इसलिये पर्वत सहित मेरे बाण पर चढ़ जाओ। मैं तुमको वहाँ पहुँचा दूँगा जहाँ कृपा धाम रामजी हैं।

**हनुमान :** नहीं महाराज ! मैं प्रभु के प्रताप को हृदय में रखकर बाण के समान ही जाऊँगा।

**भरत :** अच्छा प्यारे ! अब देर न लगाओ और तुरन्त जाओ।

## (हनुमान का जाना) "जय श्रीराम"

॥ व्यास : दोहा ॥

तब प्रताप उर राखि प्रभु, जैहऊं नाथ तुरंत ।
अस कहि आयसु पाइ पद, बंदि चलेउ हनुमंत ॥

**भरत :** (हनुमान को जाते हुए देखकर)

**गाना (फिल्म दशहरा)**

दूसरों का दुखड़ा दूर करने वाले, तेरे दुख दूर करेंगे राम ।
किये जा तू जग में भलाई का काम, तेरे दुख दूर करेंगे राम ।
सत का है पथ ये धरम का मारग, संभल-संभल चलना प्राणी ।
पग-पग पर हैं यहाँ रे कसौटी, कदम-कदम पर कुर्बानी ।
मगर तू डाँवाडोल न होना, तेरी सब पीर हरेंगे राम ।
दूसरों का दुखड़ा...

क्या तूने पाया क्या तूने खोया, क्या तेरा लाभ है क्या हानी ।
इसका हिसाब करेगा वो ईश्वर, तू क्यों फिकर करे रे प्रानी ।
तू बस अपना काम किये जा, तेरा भंडार भरेंगे राम ।
दूसरों का दुखड़ा...

**पर्दा गिरना**

**सीन नवाँ**

**स्थान :** समुद्र का किनारा ।

**दृश्य :** लक्ष्मण राम की गोद में अचेत पड़े हैं । पास में शोकाकुल रामादल सुषैन वैद्य के साथ बैठा है ।

**पर्दा उठना**

॥ चौपाई ॥

उहाँ राम लछिमनहि निहारी । बोले बचन मनुज अनुसारी ॥
अर्ध राति गइ कपि नहिं आयउ । राम उठाइ अनुज उर लायउ ॥

॥ राम : दोहा ॥

देर . हुई अब तक नहीं, आया हनुमत बीर ।

हाय विधाता किस तरह, हृदय धरूँ में धीर ॥
क्या जाने उस द्रोणागिरि तक, जाही न सका कपिराई हो ।
डूबा हो कहीं राह में ही, योद्धा है लज्जा आई हो ।
यदि लषण लाल के साथ-साथ, उसने भी दुनियाँ छोड़ी है ।
तब तो बिधना तूने मेरी, दूसरी भुजा भी तोड़ी है ।

॥ दोहा ॥

पुत्रादिक सब पालते, मुंह देखे की नीति ।
भाई से भाई सदा, करता सच्ची प्रीति ॥
कारणवश भाई-भाई में, चाहे कितनी भी अनबन हो ।
पर बिपत पड़े पर भाई ही, देता है साथ एक मन हो ।
पर भाई चारे को देखो, जब भाई पर दुख आया है ।
तो भाई ने युद्ध स्थल में, पहले निज प्राण गंवाया है ।
संसार देखले अदा किया, हक अपना क्योंकर भाई ने ।
आया था काल मुझे लेने, ले लिया शीश पर भाई ने ।

॥ दोहा ॥

पहले तो मिलना कठिन, जग में उजियाला भ्रात ।
फिर वह भी सौमित्र सा, संयम वाला भ्रात ।
बनवास मिला था जब मुझको, तब उबल उठा भाई यह ।
भाई की सेवा को पहले, तैयार हुआ था भाई यह ।
मैंने तो मां की आज्ञा से, शाही पौशाक उतारी थी ।
पर इसने तो भ्रात भाव पर ही, महलों को ठोकर मारी थी ।
लक्ष्मण से भाई को खोकर, धिक्कार राम के जीने पर ।
हे ब्रह्मशक्ति छोड़ इसे, आ जा अब मेरे सीने पर ।
यह छोटा और बड़ा हूं मैं, अनुचित इसका मरना पहले ।
हे काल इसे पीछे लेना मुझको समाप्त करना पहले ।

॥ दोहा ॥

जब लक्ष्मण ही नहीं, तो जीने से क्या काम ।
बन्धुवरो ! तुमसे विदा, होता, अब यह राम ॥

इतना करना हम दोनों की, छातियाँ मिला देना भाई।
एक ही वस्त्र में दोनों को, कसकर लिपटा देना भाई।
गर चिता बनानी मुश्किल हो, तो जल में यहीं बहा देना।
सागर की ठंडी लहरों में, दोनों को मध्य सुला देना।
हम दोनों के रुधिरों में से इतना, लिख देना सागर के तट पर।
भाई-भाई की यादगार है इसी सागर के मरघट पर।
हा..... ! भैया लक्ष्मण ! !

**सुग्रीव :** (राम को कन्धे से पकड़ते हुए) महाराज ! धीरज रखिये।

**राम :** (रोते हुए) धीरज..... ! कैसे धरूँ सुग्रीव जी ! मेरा अब कौन है, जो मन को धीरज बंधायेगा। ऐसा आज्ञाकारी भाई कहां से आयेगा ?
सुख के लाखों साथी हैं, मगर दुख का न कोई सहाई है।
सभी मिलता है जग में, नहीं मिलता लक्ष्मण सा भाई है।

**विभीषण :** (राम के आँसू पौंछते हुए) यह तो ठीक है महाराज ! परन्तु रोने से क्या फल मिलेगा ?

**राम :** क्या बताऊँ विभीषण जी ?
दिया था हाथ भाई का, मेरे हाथ में माता ने।
किया था प्रेम से विदा, एक साथ माता ने।
बताओ अब वहाँ मैं, कौन-सा मुंह लेके जाऊँगा।
पता पूछेंगी लक्ष्मण का, तो फिर मैं क्या बताऊँगा।

**विभीषण :** परन्तु भगवन ! इतने घबराने की बात ही क्या है ? हनुमान संजावनी लेने गया ही हैं। अब केवल उनके आने की देर है।

**राम :** (आकाश की ओर निहारते हुए) यह तो ठीक है परन्तु... ? वह देखो... ? पूर्व दिशा में हल्की-२ लाली नजर आने लगी है, जो प्रातःकाल के समीप होने की सूचना बताने लगी है। आह... ! अब क्या होगा ? यदि अब भी हनुमान न आये तो क्या होगा ? आह विधाता !

भाई कोई मुझे यह बताये, किसने दुनिया में दुख ऐसे पाये ।
किस पै यूं बज्रभीषण गिरा है, किसका यूँ छोटा भाई मरा है ।
देश से हों विदेशों में आना।
युद्ध भी ऐसा भीषण हो ठाना।
किसको दिन देखना यह पड़ा है।
किसका यूँ छोटा भाई मरा है। भाई कोई...
जो कि बे बाप का हो बनों में।
जिसकी माँ फूट डाले घरों में।
कौन ऐसा आभागा जिया है।
किसका यूँ छोटा भाई मरा है। भाई कोई...
जिसको गद्दी के बदले कुटी को।
जिसकी नारी हरी जा चुकी हो।
ऐसा राजा भला कौन-सा है।
किसका यूँ छोटा भाई मरा है। भाई कोई...
अन्त में देखी ऐसी घड़ी हो।
लाश भाई की आगे पड़ी हो।
कौन इतने पै भी जी रहा है।
किसका यूँ छोटा भाई मरा है। भाई कोई...

**(लक्ष्मण को झकझोरते हुए)**

बोलो लक्ष्मण ! अब तो बोलो ! ! हे भाई ! अब तो मौन खोलो ! आह..... ! मैं क्या जानता था कि वन में भाई का वियोग होगा। यदि यह मालूम होता तो पिता के वचनों को भी नहीं मानता ।

बुरा बन कर ही जी लेता, सहन करता बुराई को।
जगत की गालियाँ सहता, मगर खोता न भाई को।

**सुग्रीव :** (हनुमान को आता हुआ देखकर) लीजिये महाराज ! वह देखिये..... ? हनुमान चले आ रहे हैं। कैसी शीघ्रता से पाँव बढ़ा रहे हैं ?

॥ चौपाई ॥

हरषि राम भेटेउ हनुमाना। अति कृतग्य प्रभु परम सुजाना ॥
तुरत वैद तब कीन्हि उपाई। उठि बैठे लछिमन हरषाई ॥

**हनुमान :** (राम के चरणों में गिरकर) भगवान प्रणाम।

**राम :** (हृदय से लगाकर) धन्य हो ! केशरी नन्दन ! तुम धन्य हो !

**सुषैन :** लाइये हनुमान जी ! संजीवनी लाइये। अब अधिक देर न लगाइये।

**हनुमान :** वैद्यराज ! मैं संजीवन पहिचान नहीं पाया। इसलिए सारा पर्वत ही उठा लाया। अब आप बूटी की स्वयं पहिचान कर लीजिए और लक्ष्मण जी को प्राणदान दीजिए।

**सुषैन :** (बूटी को लक्ष्मण के मुंह में निचोड़कर) लक्ष्मण जी ! अब चेत जाइये।

**लक्ष्मण :** (उठकर) कहाँ है वह अभिमानी मेघनाद ?

**राम :** (लक्ष्मण को छाती से लगाकर) शान्त . . . . . ! लक्ष्मण शान्त ! तुमने नया जीवन पाया है।

**हनुमान :** चलिये वैद्यराज ! अब मैं आपको नगरी में पहुंचा आता हूँ।

**(हनुमान का सुषैन को लेकर जाना)**

॥ चौपाई ॥

हृदयँ लाई प्रभु भेटेउ भ्राता। हरषे सकल भालु कपि ब्राता ॥
कपि पुनिबैद तहाँ पहुँचावा। जेहिबिधि तबहिं ताहि लइ आवा ॥

# कुम्भरण वध

## (लक्ष्मण शक्ति लीला)

### सीन दसवाँ

**स्थान :** रावण दरबार।

**दृश्य :** दरबार लगा है।

**पर्दा उठना**

**रावण :** (प्रवेश करते हुए) हा .....हा ..... हा ..... लंका की शान भी क्या शान है ?

बन चुके हैं दास सब ही, रंक से भूपाल तक ।
जा पड़ी है नींव मेरे, राज्य की पाताल तक ।
सामने जो आ गया, फौरन मसल डाला गया।
सिर उठाया जिसने, उसको कुचल डाला गया ।

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) यथार्थ है महाराज !

जिस तरफ देखो उधर, लंकेश की सरकार है ।
सारे भूमण्डल में गूँजी, आज जय जयकार है ।

**रावण :** (घमण्ड से) हमारा विश्वास है कि शक्ति बाण अवश्य अपना काम करेगा । और लक्ष्मण ..... ? कायर की मौत मरेगा । इसलिए पिओ, पिलाओ और आनन्द मनाओ । कल लक्ष्मण की तरह राम को भी ठिकाने लगाओ ।

युद्ध भी चलता रहे, आनन्द का दरबार भी ।
रण के बाजे बजें, पायल की झँकार भी ॥

**॥ चौपाई ॥**

यह बृतांत दसानन सुनेऊ । अति विषाद पुनि पुनि सिर धुनेऊ ॥

**दूत :** (घबड़ाते हुए प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो । अन्नदाता ! झँकार नहीं दुश्मन की हुँकार सुनिये ।

**रावण :** (क्रोध से) क्यों रंग में भंग डाला है ?

**दूत :** (सिर नवाकर) महाराज ! साक्षात मौत से पड़ गया पाला है ।

**रावण :** (फटकारते हुए) पहेली न बुझा । साफ-साफ बता ।

**दूत :** महाराज ! लक्ष्मण जी की मूर्छा खुल गई और शत्रु फिर युद्ध की तैयारी कर रहा है ।

**रावण :** (अचरज से) क्या कहा ? मूर्छा खुल गई ।

**दूत :** हाँ महाराज !

**रावण :** (दुखी होकर) अनर्थ हो गया । बना बनाया ही सब काम

बिगड़ गया ।

**मेघनाद :** (खड़ा होकर घमण्ड से) कोई चिन्ता नहीं, पिताजी ! जिन भुजाओं ने उसे मूर्छित किया था वे अब उसको यमलोक पहुँचायेंगी ।

**रावण :** (दुखी मन से) नहीं..... ? पहले मुझे सोच लेने दो । तुम सब लोग जाओ और आराम करो ।

**(सबका जाना)**

**रावण :** (स्वयं दुखी होकर) ओह..... ! अफसोस..... ! अब मैं क्या करूँ ?

मुकद्दर का पांसा, पलटने लगा है ।
बना हुआ काम, बिगड़ने लगा है ।

क्या मालूम था कि शक्ति भी बेकार हो जाएगी ? अब क्या करूँ ? आये हुए संकट को कैसे टालूँ ?

(सोचकर विस्मय से)

अरे..... ?

रण में सोकर जग उठे, अवधेश्वर का भ्रात ।
घर में सोता ही रहे, लंकेश्वर का भ्रात ।

बस..... ! बस..... ! अब यही उचित है कि कुम्भकरण के शयन गृह में जाऊँ और उसे जगा लाऊँ । यदि वह युद्ध भूमि में चला जायेगा तो काल के समान सबको खा जायेगा ।

**(रावण का जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन ग्यारहवाँ

**स्थान :** कुम्भकरण का शयनगार ।

**दृश्य :** कुम्भकरण गहरी नींद में सो रहा है ।

**पर्दा उठना**

**।। चौपाई ।।**

व्याकुल कुम्भकरनपहिं आवा । विविध जतन करि ताहि जगावा ॥

**रावण :** (मंत्री तथा सैनिकों के साथ प्रवेश करके) कुम्भकरण.... ! भैया कुम्भकरण... ! (अति जोर से) भैया कुम्भकरण... !

(कुम्भकरण का गहरी नींद में सोते रहना)

**रावण :** मंत्री ! इसके कान पर ढ़ोल नगाड़े बजवाओ

**मंत्री :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज !

**(कुम्भकरण के कान पर ढ़ोल नगाड़े का बजना)**

**।। चौपाई ।।**

जागा निसिचर देखिअ कैसा । मानहुँ कालु देह धरि वैसा ॥
कुम्भकरण बूझा कहु भाई । काहे तब मुख रहे सुखाई ॥
कथा कही सब तेहिं अभिमानी । जेहि प्रकार सीता हरि आनी ॥

**कुम्भकरण :** (नींद से जागकर) हैं..... ? वह पापी कौन है जिसने मुझे कच्ची नींद से जगाया है ?

**रावण :** (सामने आकर) हे भाई ! मुझ पर महान संकट आया है इसलिए मैंने तुम्हें जगाया है ।

**कुम्भकरण :** (अचरज से) कौन..... ? रावण ! हे भाई ! कहो..... ? तुम्हारे मुख क्यों सूख रहे हैं ।

**रावण :** (दुखी होकर) हे भाई ! पँचवटी पर अयोध्या के राजकुमार आये हैं । उन्होंने बहन सूपनखा के कान, नाक काटकर अनर्थ कर डाला और खर-दूषण जब अपना बदला लेने गये तो उनको भी मार डाला, तब मैंने उनकी स्त्री सीता का हरण कर डाला । इस पर उस कुलद्रोही विभीषण ने मुझे शिक्षा देने की जुर्रत की तो मैंने लात मारकर निकाल दिया । अब वह कायर ! उन तपस्वियों से जाकर मिल गया है और मेरा उनसे युद्ध ठन गया है, जिसमें बड़े-बड़े योद्धा काम आ चुके हैं । इसलिए हे भाई !
अब काम तुम्हें यह करना है, लंका की शान बढ़ानी है ।

उन अवधभूप के लड़कों को, यमराज की भेंट चढ़ाना है।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

सुनि दसकंधर के बचन तब, कुम्भकरन बिलखान ।
जगदंबा हरि आनि अय, सठ चाहत कल्यान ॥

**कुम्भकरण :** (दुखी होकर) अरे मूर्ख ! विश्वमाता वैदेही को हर लाया। अब तू कल्याण चाहता है। हे राक्षसराज ! तूने अच्छा नहीं किया। अब आकर मुझे किसलिए जगाया? हे तात ! अब भी गर्व त्यागकर श्री राम को भजो तो तुम्हारा कल्याण होगा। हे रावण ! नारद मुनि ने जो मुझसे कहा था वह मैं तुमसे कहता हूँ। परन्तु ..... ? अब तो समय बीत गया। भाई !

क्यों गई वहाँ पर सूपनखा, क्या काम भला था जाने का।
कोई तो कारण होगा ही, लड़कों से नाक कटाने का।
जिस सीता को हर लाये हो, वह साक्षात जगत की माता है।
लंका की सत्यनाशी है, नारद का वचन याद आता है।
जिसको तुम कायर कहते हो, वह ही सब युद्ध करायेगा।
मानो या मत मानो तुम, घर का भेदी लंका ढ़ायेगा।
इसलिए मानो कहना मेरा, सीता को साथ में लेकर के।
देकर के मौज करो भाई, लो चरण पकड़ श्री रघुबर के।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

खाना खाओ प्रेम से, खूब करो आराम ।
इन बातों से नहीं, भाई तुमको काम ॥
मंत्री जी ! तुरन्त माँस मदिरा का प्रबन्ध किया जाए।

**मंत्री :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज !

(मंत्री द्वारा कुम्भकरण को माँस मदिरा का सेवन कराना)

**॥ चौपाई ॥**

महिष खाई करि मदिरा पाना। गर्जा बज्रपात समाना।
कुम्भकरन दुर्मद रन रंगा। चला दुर्ग तजि सेन न संगा ॥

**रावण :** (दुखी मन से) से भाई कुम्भकरण !
क्या तुम कायर बन बैठे, पुरखों की बात डुबोओगे।
या अपने भाई रावण की, मिट्टी में शान मिलाओगे।
चढ़ आया बैरी लंका पर भगिनी की नाक काट लीनी।
मिल गया विभीषण जा उनसे, सब कुल की बात डुबा दीनी।
क्या भाई होकर भाई का, अब साथ नहीं दोगे भाई।
पहले ही भ्रात विभीषण ने, मम गर्दन नीची करवाई।

**कुम्भकरण :** हा..... ! हा..... !हा..... ! हे भाई ! अब तुम किसी बात की चिन्ता मत करो।
है कौन शूर इस दुनिया में, जो चढ़ लंका पर आयेगा।
मुझ कुम्भकरण के आगे से, वह लौट न जिंदा जायेगा।
जाता हूँ मैं लड़ने के लिए, उन सबको मार गिराऊँगा।
यदि कर न सका ऐसा भाई, तो नहीं लौट के आऊँगा।

**(कुम्भकरण का जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन बारहवाँ

**स्थान :** समुद्र का किनारा।
**दृश्य :** रामादल बैठा हुआ है।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

देखि विभीषनु आगें आयउ। परेउ चरन निज नाम सुनायउ॥
अनुज उठाइ हृदयँ तेहि लायो। रघुपति भक्त जानि मन भायो॥

**कुम्भकरण :** (प्रवेश कर) हा..... हा..... हा..... ।

**विभीषण :** (पास आकर चरणों में गिरकर) भ्राता जी ! जय शंकर की। हे तात ! बड़े हित की बात कहने पर भी रावण ने मुझे लात मार कर निकाल दिया, तब मैं श्री राम जी के पास आया। दीन देखकर उनको मैं प्यारा लगा।

**कुम्भकरण :** (उठाकर छाती से लगा) हे भाई ! सुन . . . . . ? रावण तो काल के वश हो गया है, वह अब क्या श्रेष्ठ शिक्षा मानेगा । हे विभीषण ! तू धन्य है जो श्री राम का भजन किया और राक्षस कुल का भूषण हो गया । है भ्राता ! मैं तो काल के वश हो गया हूँ । मुझे अपना पराया नहीं सूझ रहा । इसलिए अब तुम जाओ ।

**(विभीषण का राम के पास आना)**

**॥ चौपाई ॥**

बंधु बचन सुनि चला विभीषन । आयउ जहँ त्रैलोक विभूषन ॥
नाथ भूधराकार सरीरा । कुम्भकरन आवत रनधीरा ॥

**विभीषण :** (श्री राम के चरणों में गिरकर) हे नाथ ! पर्वत के समान शरीर वाला कुम्भकरण आ रहा है ।

**राम :** (खड़े होकर) कोई चिन्ता नहीं . . . . . ? आज उसे भी अपना पराक्रम दिखाने दो ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

सुनु सुग्रीव विभीषन, अनुज संभारेहु सैन ।
मैं देखउँ खल बल दलहि, बोले राजिव नैन ॥

**राम :** (बाहर जाते हुए) हे तात सुग्रीव तथा विभीषन जी ! तुम लक्ष्मण सहित सेना की रक्षा करना । मैं इस दुष्ट की ताकत को जाकर देखता हूँ ।

**(राम का जाना)**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

कर सारंग साजि कटि भाथा । अरि दल दलन चले रघुनाथा ॥

**कुम्भकरण :** (आगे बढ़कर) हा . . . . . हा . . . . . हा . . . . . कहाँ हां ? लक्ष्मण-राम । आज कर दूंगा उन सबका काम तमाम ।

**राम :** (सामने आकर) बस, खड़ा रह . . . ? आगे कहाँ आता है ?

**कुम्भकरण :** हा . . . हा . . . हा . . . यह अवस्था और इतना साहस ।
मच्छर उड़ा है चाँद, पकड़ने को देखना ।

चींटी चली है शेर से, लड़ने को देखना।

**राम :** अरे अभिमानी ! इतने अहँकार में क्यों आता है ? आगे बढ़कर हाथ क्यों नहीं दिखाता ?

**कुम्भकरण :** (व्यंग्य से) हाथ तुझे दिखाऊँ। हा.... हा..... हा..... ।
बच्चों का खेल युद्ध को, पामर समझ लिया।
क्या कुम्भकरण भी कोई, कायर समझ लिया।

**राम :** कुम्भकरण ! साहसी पुरुष कहते नहीं करके दिखाते हैं।
न बरसने वाले बादल गरज-२ कर आते हैं।
कर्म से डरते हैं जो, बातें बनाते हैं वही।
कान के कच्चे हैं जो, जिह्वा चलाते हैं वही।
कर्म का करना कठिन, कहना जिन्हें आसान है।
कायरों की जगत में, यही पहिचान है।

**कुम्भकरण :** (क्रोध से) मुझे क्यों जोश दिलाता है ? आगे को क्यों नहीं आता है ? याद रख..... ?
मैं नहीं बच्चा जिसे, बातों से तू बहकायेगा।
बात कितनी भी बना, लेकिन न बचने पायेगा।
आज रणचण्डी भयँकर, रूप धरकर आयेगी।
मैं चलूँगा जिस तरफ, जय साथ होती जाएगी।

**राम :** जय धर्म की होती है।
कर्म से जय और पराजय, है सदा इन्सान की।
कर्म से ही प्राप्ति है, मान और अपमान की।
कर्म जब अच्छे नहीं, तो जीत फिर होगी कहाँ।
देख कड़वे नीम में, लगती हैं कब नारंगीयाँ।

**कुम्भकरण :** (क्रोध से) अच्छा..... ? अब बातें न बना। युद्ध कर और कुछ करके दिखा।

**राम :** (धनुष चढ़ाकर) कुम्भकरण ! आज मैं तेरा सारा नशा उतारूँगा।
याद रख तुझे युद्ध में अवश्य मारूँगा।

कह दिया है मुँह से जो, करके उसे दिखाऊँगा।
है मेरा निश्चय कि मैं, सुरपुर तुझे पहुँचाऊँगा।

**(दोनों में युद्ध होना। कुम्भकरण का मारा जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

तब प्रभु कोपि तीव्रसर लीन्हा। धर ते भिन्न तासु सिर कीन्हा॥

**॥ लक्ष्मण शक्ति लीला समाप्त ॥**

◆ ◆ ◆

बारहवां दिन (दसवां भाग)

# सुलोचना सती लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. सुलोचना सती

## सुलोचना सती लीला

### (संक्षिप्त कथा)

कुम्भकरण वध की खबर सुनकर एक बार फिर रावण को निराशाओं ने आ घेरा, परन्तु पुत्र मेघनाद से हौंसला पाकर उसके मन को धीरज बँधा और युद्ध शुरू हो गया। लक्ष्मण-मेघनाद युद्ध नारद मुनि के चेतावनी मिलने पर भी सुलोचना सती के मेघनाद को युद्ध में जाने से रोकने के सारे प्रयास असफल रहे और मेघनाद लक्ष्मण जी के हाथों वीरगति को प्राप्त हुआ। सुलोचना का ह्दय काँप उठा। पति के साथ सती होने की बेचैनी रावण के पास खींच ले गई, ताकि रामादल से अपने पति का कटा शीश प्राप्त कर सके, परन्तु रावण इस अपमान को सह नहीं सका और उसने सुलोचना को फटकार दिया ताकि वह अपने महलों में चुपचाप रहे। सुलोचना उस अपमान से तिलमिला उठी और उसने अपनी सास मन्दोदरी को रामादल से कटा शीश लाने की आज्ञा देने को बाध्य कर दिया। भगवान श्रीराम सती के तेज के आगे नतमस्तक हो गये और मेघनाद का शीश लाने की आज्ञा दे दी। रामादल को शंकाओं ने आ घेरा तब सती ने अपने तेज से चमत्कार किया कि मेघनाद का शीश सती के सम्मुख हँस पड़ा, तब सबके शीश सती के सम्मुख स्वत: ही झुक गये और लंका में आकर सुलोचना अपने पति के साथ सबके देखते-२ सती हो गई।

## पात्र परिचय

### (सुलोचना सती लीला)

**पुरुष पात्र**

१. रावण
२. रावण का मंत्री
३. रावण का गुप्तचर
४. मेघनाद
५. नारद जी
६. शिवजी
७. राम
८. लक्ष्मण
९. सुग्रीव
१०. हनुमान
११. अँगद
१२. जामवंत
१३. नल-नील
१४. विभीषण
१५. वानर सेना
१६. राक्षस सेना
१७. रामादल का दूत

**स्त्री पात्र**

१. सुलोचना
२. सखी (सुलोचना)
३. पार्वती
४. उर्मिला

# सुलोचना सती लीला

## सीन पहला

**स्थान :** रावण दरबार

**दृश्य :** रावण सिंहासन पर विराजमान है। मंत्री, सेनापति, सभासद यथास्थान बैठे है।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

बहु विलाप दसकंधर करई। बंधु सीस पुनि-पुनि उर धरई॥

**रावण :** युद्ध दिन प्रतिदिन भयँकर होता जाता है, परन्तु हमारा पक्ष जीतने में नहीं आता है। देखो...? आज का संग्राम किसके हाथ रहे? कुम्भकरण की कहाँ तक बात रहे।

**दूत :** घबड़ाये हुए प्रवेश करके सिर झुकाकर) महाराज की जय हो। पृथ्वीनाथ! अँधेरा हो गया। बली कुम्भकरण... ?

**रावण :** (चौंककर) हैं.... ? क्या कहा.... ? क्या कुम्भकरण

मारा गया.... ?

**दूत :** (दुखी होकर सिर झुकाकर) हाँ..... ! महाराज !

**रावण :** (दुखी होकर) बस... ! बस... ! अब निसन्देह लंका के बुरे दिन आ गये जो ऐसे-२ योद्धा भी काल के गाल में समा गये। अफसोस... ?

बढ़ती हुई विजय की, पताका ही रुक गई।
आशाओं की हरी भरी, शाखा ही झुक गई।

(सिर झुकाकर बाँया हाथ माथे पर रखकर शोकमुद्रा में बैठ जाना)

**॥ चौपाई ॥**

मेघनाद तेहि अवसर आयउ। कहि बहु कथा पिता समुझायउ ॥

**मेघनाद :** (प्रवेश करके सिर झुकाकर) पिताजी ! जय शंकर की। आप इतने निराश क्यों हैं? आप देखेंगे कि मैदान हमारे हाथ है।

**रावण :** (शोकाकुल होकर) नहीं..... ? नहीं..... ? अब हमारा उन पर विजय पाना कठिन है।

**मेघनाद :** (विस्मय से) क्या कहा कठिन है। किसलिए..... ? क्या मैं बलहीन हो गया..... ? क्या देवताओं को परास्त करने वाला बल सो गया..... ? नहीं ! नहीं ! आप घबराइये नहीं पिताजी !

कसम है आपकी मैं आज, वह कौतुक दिखाऊँगा।
कि इक के चार और फिर, चार के सौ-सौ बनाऊँगा।
समय बतलायेगा जब, साम का परिणाम क्या होगा।
प्रलय का नाच होगा, आज का संग्राम क्या होगा।

**रावण :** (खुश होकर) अच्छा..... ? तो जाओ और युद्ध में वह कौशल दिखलाओ कि त्रिलोकी की त्राहि त्राहि बोल जाए और भय के कारण शत्रुओं की छाती दहल जाए।

युद्ध की भूमि से उठे, जीत जिसका नाम है।
कह उठे दुनिया कि रावण, तू ही बस सरनाम है।

हा ..... हा ..... हा .....

**मेघनाद :** (सिर झुकाकर) ऐसा ही होगा, पिताजी ! अच्छा ..... ? पिता जी ! जय शंकर की !

**(मेघनाद का जाना)**

## सीन दूसरा

**स्थान :** सुलोचना का महल

**दृश्य :** सुलोचना सखी के साथ बैठी है ।

**पर्दा उठना**

**गाना**

सारी सारी रात तेरी याद सताये रे ।
प्रीत जगाए हमें नींद न आये रे
नींद न आये रे ।...
एक तो बलम तेरी याद सताए,
दूजे चन्दा आग लगाए रे
आग लगाए तेरी प्रीत जगाए रे,
नींद न आए रे । (१)
तेरी लगन बनी रोग सगँवरिया,
कैसे बीते मेरी बाली उमरिया
बाली उमरिया मोरी बड़ा तड़पाये रे,
नींद न आए रे । (२)

**सुलोचना :** प्यारी सखी ! आज कई दिन से अपने स्वामी के दर्शन नहीं हुए । क्या कारण है ? आज मेरा हृदय भी घबड़ा रहा है । दाहिनी भुजा फड़क रही है । और न जाने यह अपशकुन क्यों हो रहे हैं ?

**सखी :** महारानी जी ! मन में धीरज रखिये । कुँवर जी आते ही होंगे । इन्द्रजीत को परास्त करने की शक्ति देवताओं में भी नहीं है ।

सुलोचना : सखी ! तू ठीक कहती है। स्वामी को परास्त करने की शक्ति किसी में भी नहीं है। काल भी उनके सामने ठहर नहीं सकता। फिर भी, मेरा मन व्याकुल हो रहा है। सखी ! आज मुझे विचित्र-२ सपने भी दिखाई पड़े हैं।

जब से देखा है स्वप्न मैंने, हृदय बड़ा घबराता है।
न मन को शान्ति मिलती है, मुख मलीन हो जाता है।

सखी : महारानी जी ! आप सती हैं। आपके सतीत्व के आगे किसका सत्व है, जो आपका कुछ बिगाड़ सके। महारानी जी ! आप मत घबड़ाइये। ऐसी किसी की ताकत नहीं जो कुँवर जी बलधारी को युद्ध में परास्त कर सके।

नारद जी : (प्रवेश करके) नारायण ! नारायण !

**(सखी का हट जाना)**

सुलोचना : आइए मुनिराज ! पधारिये ! आज मेरे भाग्य उदय हुए हैं।

नारद जी : (दुखी मन से) बेटी ! आज बैठने नहीं कुछ समझाने आया हूँ।

सुलोचना : महामुनि ! अवश्य समझाइये। (नारद जी की ओर देखकर) हैं . . . ? आपका मुख कमल उदास क्यों हो गया? महामुनि ! शीघ्र बताइये . . . . . ? ऐसी क्या बात है?

नारद जी : बेटी ! क्या बताऊँ? बताते हुए मेरा मन दुखी हो रहा है। परन्तु . . . . . ? बिना बताये रहा भी नहीं जाता। बेटी ! क्या सुन सकोगी?

सुलोचना : (व्याकुल होकर) महामुनि ! पहेलियाँ न बुझाइये। शीघ्र बताइये . . . . . ? मेरा हृदय व्याकुल हो रहा है।

नारद जी : तो . . . . . ? सुनो . . . . . ? बेटी ! कल युद्ध में तुम्हारे पति का मरण हो जाएगा।

सुलोचना : (काँपते हुए कानों पर हाथ रखकर) नहीं मुनिराज . . . . . ! नहीं . . . . . ! ऐसा मत कहिये मुनिराज. . . . . ! ऐसा मत कहिये . . . . . ! क्या मेरा पतिव्रत धर्म और भगवान शंकर

की भक्ति कोई भी काम नहीं आयेगी ?

**नारद जी :** यह तो ठीक है, परन्तु ..... ? बेटी ! क्या बताऊँ ? तुम्हारा भाग्य ही हेटा है । सती उर्मिला का सत्व तुमसे ऊँचा है ।

**सुलोचना :** (दुख मिश्रित व्यंग्य से) क्या सत्व है उर्मिला बहन का... ? मुनिवर ! वे दिन कहाँ गये जब मेरे स्वामी के शक्तिबाण से लक्ष्मण को धराशायी होना पड़ा था ? उस समय उर्मिला का सत्व कहाँ गया था ? बोलिये . . . ? मुनिवर ! क्या मेरा पतिव्रत धर्म फरेब है, झूठ है, पाखण्ड है ।

**नारद जी :** नहीं . . . ? बेटी ! तुम्हारा आदर्श काफी ऊँचा है । जिस प्रकार चाँद पर कभी-२ काला धब्बा आ जाता है, उसी प्रकार लक्ष्मण को सती उर्मिला का मोह फँस गया था । इसी कारण उनको मूर्छा आ गई थी, परन्तु ..... ?

**सुलोचना :** (विस्मय से) महामुनि ! यह कैसे हो सकता है ?

**नारद जी :** यदि विश्वास न हो तो मैं तुम्हें दिव्य ज्योति प्रदान करता हूँ ।

### दृश्य परिवर्तन

(उर्मिला का सीन दिखाना)

देखो . . . ? सती नारी का तेज और शक्ति । चौदह वर्षों की वियोगिनी अपने पति की प्रतीक्षा में एक पल को भी ध्यान न हटाते हुए एक पैर से खड़ी है । एक हाथ में दिव्य ज्योति को लिये हुए अपने पति के ही ध्यान में लीन है ।

**सुलोचना :** (घबराकर) नहीं ..... ! नहीं ..... ! ऐसा कभी नहीं हो सकता ..... ? ऐसा कभी नहीं हो सकता ..... ? हे भोले शंकर मेरी रक्षा करो । अब मैं क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? मेरे सामने अन्धकार ही अन्धकार है । है महामुनि ! आप ही कोई इसका उपाय बताइये जिससे मेरे सुहाग की रक्षा हो सके ।

**नारद जी :** बेटी ! क्या बताऊँ ? कुछ समझ में नहीं आता । (सोचते

हुए) हाँ बेटी ! एक उपाय है ।

**सुलोचना :** (अधीर होकर) क्या..... ? शीघ्र कहिये, मुनिवर !

**नारद जी :** तो सुनो, बेटी ! अपने पति को कल युद्ध में जाने से रोक लो । तेरा सुहाग बच जायेगा । अच्छा..... ? अब मैं चलता हूँ । नारायण ! नारायण !

(नारद जी का जाना)

**सुलोचना :** (स्वयं से) महामुनि सच ही कहते हैं यदि कल अपने पति को युद्ध में जाने से रोक लूँ तो मेरा सुहाग बच जायेगा । बहन उर्मिला ! तू धन्य है जो अपनी अटल भक्ति के कारण मुझ अभागिनी से ऊँची हो गयी । (घबड़ाकर) नहीं..... ! नहीं..... ! ऐसा कभी नहीं हो सकता ? मैं कदापि नहीं जाने दूँगी । मेरे देवता..... !

**फिल्म—खानदान**

तुम्हीं मेरे मन्दिर, तुम्हीं मेरी पूजा, तुम्हीं देवता हो ।
कोई मेरी आँखों से देखे तो समझे कि तुम मेरे क्या हो ।
जिधर देखती हूँ, उधर तुम ही तुम हो ।
न जाने मगर किन ख्यालों में गुम हो ।
मुझे देखकर तुम जरा मुस्करा दो ।
नहीं तो मैं समझूँगी, मुझसे खफा हो ।
तुम्हीं मेरे.....
तुम्हीं मेरे माथे की बिंदिया की झिलमिल ।
तुम्हीं मेरे हाथों के गजरों की मँजिल ।
मैं हूँ एक छोटी-सी माटी की गुड़िया ।
तुम्हीं प्राण मेरे तुम्हीं आत्मा हो ।
तुम्हीं मेरे.....

**मेघनाद :** (रण का बाना पहने हुए प्रवेश करके) दौज के चन्द्रमा की तरह खिलने वाली मृगनयनी ! आज मैं अपने को धन्य समझता हूँ प्रिये ! अधर खोलो और सरस का पान

कराओ।

**सुलोचना :** (छाती से लगकर विस्मय से) हैं..... ? आज जब विहार का समय आया तब आप रण का बाना क्यों पहने हुए हैं? फूलों की सेज आपकी बाट जोह रही है। चलिये नाथ! चलकर विश्राम कीजिए और इस दासी को अपने गले का हार बनाइये।

**फिल्म—"प्यासा"**

आज सजन मोहे अँग लगा लो, जन्म सफल हो जाये।
हृदय की पीड़ा देह की अग्नि, सब शीतल हो जाये।
आज सजन.....
किये लाख जतन, मोरे मन की तपन
मोरे तन की जलन नहीं जाये।
कैसी लागी यह लगन कैसी जागी यह अगन
जीया धीर धरन नहीं पाये॥
आज सजन.....
मेरी बाँह पकड़ मेरे सजना, मैं जनम-२ की दासी।
मेरी प्यास बुझा दो मनहर, मैं हूं अन्तर घट तक प्यासी।
आज सजन.....

**मेघनाद :** प्रिये! आज तुम्हें क्या हो गया है? जो वीरता की बातें छोड़कर कायरता की बातें कर रही हो। तुम्हें कुछ पता है? कल लक्ष्मण से मेरा भयानक युद्ध होगा।

**सुलोचना :** (घबड़ाकर) हैं... ? क्या कहा... ? लक्ष्मण से युद्ध...? नहीं..... ! नहीं..... ! ऐसा नहीं होगा, नाथ! ऐसा नहीं होगा। इस दासी पर अत्याचार मत कीजिए। संसार की सभी शक्तियों से लड़िये परन्तु, लक्ष्मण से युद्ध न कीजिए। मेरा हृदय काँप रहा है।

**मेघनाद :** प्रिये! तुम कैसी बातें कर रही हो? तुम जैसी वीर नारी के मुँह से कायरता की बातें शोभा नहीं देतीं। मैं लक्ष्मण से

अवश्य युद्ध करूँगा ।

**सुलोचना :** (पैर पकड़कर रोते हुए) नहीं ..... ! नाथ ..... ! ऐसा न करो । सती उर्मिला के तप के सामने आप टिक न सकेंगे । मैं आँचल पसारकर भीख माँगती हूँ । स्वामी ! मेरे सुहाग की रक्षा कीजिये । न जाइये नाथ ! न जाइये ।

**मेघनाद :** (क्रोध से) क्या कहा ? युद्ध में न जाऊँ ! लक्ष्मण से युद्ध न करूँ । आखिर क्यों ..... ? कायर बनकर महलों में बैठा रहूं । क्या तुझे अपने पति की वीरता पर सन्देह है ? क्या तुझे अपने सतीत्व पर भरोसा नहीं ? खबरदार ..... ? आगे ऐसे वचन कहे तो मैं तेरे टुकड़े-२ कर दूँगा ।

**सुलोचना :** (पैरों पर गिरकर रोते हुए) अवश्य स्वामी ! आप मेरे भले ही टुकड़े-२ कर दें परन्तु, इतना अन्याय न करें । क्या मुझको इतनी सी भीख न मिलेगी ? मुझे आपकी शक्ति और अपने सतीत्व पर पूरा भरोसा है परन्तु, क्या करूँ ? मेरा हृदय घबड़ा रहा है । क्या इस दासी के सुहाग की रक्षा न हो सकेगी, नाथ ! दया करो स्वामी ! दया करो ।

**मेघनाद :** (दूर हटाते हुए क्रोध से) ओ कायर और डरपोक औरत ! तुझ जैसी बुजदिल औरत से बात करना भी मेरा अपमान है । भाड़ में जाये तू और तेरा सुहाग । मैंने जो ठानी है उसे अवश्य पूरा करूँगा । हट जा ?

**सुलोचना :** (आँसू पौंछते हुए) अच्छा नाथ ! यदि आप नहीं मानते. . ? तो . . . ठहरिये. . . ? (दौड़कर आरती का थाल लाकर आरती करने पर थाली का गिर जाना) स्वामी ! देखिए ? ये भारी अपशकुन हो गया । नाथ ! मुझ अभागी नारी को दया का दान दे दो । (पैर पकड़ लेना)

**मेघनाद :** (धक्का देकर क्रोध से) ओ नीच बुद्धि वाली नारी ! तुझे अपने ऊपर भरोसा नहीं । शूरवीरों के सामन कायरता की बात करते हुए लज्जा नहीं आती । दूर हो जा ..... ? मेरी

आँखों के सामने से दूर हो जा..... ? आज मुझे कोईभी नहीं रोक सकता? जाऊँगा..... ? मैं युद्ध में अवश्य जाऊँगा।

**सुलोचना :** (पैर पकड़कर रोते हुए) नहीं नाथ ! आप मत जाइये। मैं आपके पाँव पड़ती हूँ।

**मेघनाद :** (धक्का देकर क्रोध से) हट जा..... ? हतभागिनी ! मेरे सामने से हट जा। अब मुझे तेरी सूरत से भी नफरत है।

**(धक्का देकर जाना)**

**सुलोचना :** (चिल्लाकर) नहीं नाथ ! मैं कह रही हूँ लक्ष्मण से युद्ध मत करना। मैं कह रही हूँ चाहे राम से युद्ध कर लेना परन्तु, लक्ष्मण से युद्ध मत करना। नाथ..... ? (सुलोचना का गश खाकर गिर जाना)

**गाना**

दिल के अरमाँ आँसुओं में बह गये।
हम वफा करके भी तन्हा रह गये।
दिल के अरमां.....
जिन्दगी एक प्यास बनकर रह गई।
प्यार के किस्से अधूरे रह गये।
हम वफा.....
शायद उनका आखिरी हो ये सितम।
हर सितम ये सोचकर हम सह गये।
हम वफा.....

भगवान शंकर ! मेरी रक्षा करो। ओ३म् नमः शिवाय ! ओ३म् नमः शिवाय !

**दृश्य परिवर्तन**

**स्थान :** कैलाश पर्वत।

**दृश्य :** शिवजी समाधि में लीन हैं। वामाँग पार्वती बैठी हुई हैं।

**पर्दा उठना**

(कैलाश पर्वत का हिलना। शंकर जी की समाधि टूटना)

**शिवजी :** (व्याकुल होकर) हैं . . . ? आज किस भक्त ने मेरा यह कैलाश पर्वत हिला डाला . . . ? मालूम पड़ता है मेरे किसी भक्त पर संकट आया हुआ है। (पार्वती से) क्यों ? देवी ! कुछ कारण पता है ? बताओ . . . ? महासती ! क्या कारण है ?

**पार्वती :** (शिवजी के चरण पकड़कर) स्वामी ! आप तो स्वयं ज्ञानी हैं। भला मुझको क्या पता ? आप जानकर अनजान बन रहे हैं।

**शिवजी :** अच्छा . . . . . ? मैं ध्यान लगाकर अभी पता लगाता हूँ।

**(शिवजी का ध्यान लगाना)**

(हड़बड़ाकर खड़े होकर क्रोध से) हैं . . . ? यह क्या. . . . ? कल युद्ध में मेघनाद मारा जाएगा। सती सुलोचना का सुहाग उजड़ जायेगा। आखिर मेरे वरदान का क्या होगा ? नहीं . . . . . ? ऐसा कभी नहीं हो सकता . . . . . ? नन्दी ! कहाँ हो ? शीघ्र आओ। आज लक्ष्मण शंकर से टकरा रहा है, परन्तु वह भूलता है कि मेरे तीसरे नेत्र के सामने सारा ब्रह्माण्ड काँपता है। आज किसी की भी महान् शक्ति काम नहीं आयेगी, महासती ! अगर आज विष्णु भगवान भी मेरे सामने आयेंगे तो मेरे क्रोध के सामने वे भी न टिक सकेंगे। हे चारों दिशाओ। कान खोलकर सुन लो . . . . . ? आज त्रिलोचन के आगे सारी शक्तियां निष्फल हो जायेंगी। नन्दी . . . . . !

**पार्वती :** (पैर पकड़कर) हे नाथ ! रुक जाइये वरना प्रलय हो जाएगी। उर्मिला के तप के आगे क्या आप टिक सकेंगे ? नहीं . . . . . ? नाथ ! ऐसा अनर्थ मत कीजिए। आप नहीं जानते सुलोचना शेषनाग की कन्या है और शेषनाग ने

सुलोचना के पति को मारने की प्रतिज्ञा की थी। शेषनाग के स्वामी विष्णु भगवान आपके आराध्य देव हैं। हे नाथ ! क्या मेरे सुहाग की रक्षा न हो सकेगी। आप स्वयं अर्न्तयामी हैं। आप घट-घट के वासी हैं। आप सब जानते हैं। अनजान बन रहे हैं।

**शिवजी :** (अचरज से) हैं..... ? देवी ! यह तुम क्या कह रही हो ? क्या यह सत्य है कि सुलोचना शेषनाग की कन्या है ? तब तो मेरा वरदान निष्फल जायेगा। मैं बेटी सुलोचना की कुछ भी मदद नहीं कर सकूँगा। अच्छा..... ? मैं अपनी ज्ञान शक्ति द्वारा अभी पता लगाता हूं।

**(शिवजी का ध्यान लगाना)**

**पर्दा गिरना**

**सीन तीसरा**

**स्थान :** लंका नगरी।

**दृश्य :** मेघनाद महल की छत पर खड़ा है और नीचे समुद्र की ओर देख रहा है।

**पर्दा उठना**

**मेघनाद :** (समुद्र में परछाई देखकर) हैं..... ? यह कौन है, जो मेरी शक्ति को चुनौती देना चाहता है ? मैं अभी जाकर देखता हूँ।

**(मेघनाद का समुद्र में छलाँग लगाकर सीधे पाताल पुरी पहुँचना)**

**सुलोचना :** (मेघनाद को देखकर शर्माते हुए) आह..... ! क्या छवि पाई है ? (घबड़ाकर) आप कौन हैं ? यहाँ कैसे आये ? आप यहां से शीघ्र चले जाइये। मेरे पिता को मालूम पड़ गया तो अनर्थ हो जायेगा।

**मेघनाद :** आह प्यारी ! तुम कौन हो ? मैं किसी भी शक्ति से नहीं डरता। तुमको पता नहीं..... ? मैं महाराजाधिराज श्री

श्री १०८ श्री लंकापति महाराज रावण का पुत्र मेघों के समान गरजने वाला मेघनाद हूं। तुम्हारा क्या नाम है।

**सुलोचना :** मैं श्री शेषनाग की कन्या सुलोचना हूं। अब मुझे जान पड़ता है कि आप तो वो ही हैं, जिन्हें मैंने रात को सपने में देखा था। अब मैं समझती हूँ कि मेरी इच्छा पूरी होगी। हे देव! आप यहां से जल्दी वापिस चले जाइये। मेरे पिता जी के समान इस संसार में कोई भी बलवान नहीं है।

**मेघनाद :** (हँसकर व्यंग्य से) क्या कहा? कायर और डरपोक होकर चला जाऊँ। यह कभी नहीं हो सकता? प्रिये! मेरी एक इच्छा है, यदि तुम्हें पसन्द हो तो प्रगट करूँ।

**फिल्म—'धूल का फूल'**

**मेघनाद :** तेरे प्यार का आसरा चाहता हूँ
वफा कर रहा हूँ वफा चाहता हूँ, तेरे प्यार का.....

**सुलोचना :** हसीनों से अहले वफा चाहते हो
बड़े ना समझ हो ये क्या चाहते हो

**मेघनाद :** तेरे नर्म बालों में तारे सजाकर
तेरी शोख कदमों में कलियाँ बिछाकर,
मौहब्बत का छोटा सा मन्दिर बनाकर,
तुझे रात दिन पूजना चाहता हूँ, वफा कर रहा हूं.....

**सुलोचना :** जरा सोच लो दिल लगाने से पहले,
खोना भी पड़ता है पाने से पहले
इजाजत तो ले लो जमाने से पहले,
कि तुम हुस्न को पूजना चाहते हो, बड़े ना समझ हो.....

**मेघनाद :** कहाँ तक जियें तेरी उल्फत के मारे,
गुजरती नहीं जिन्दगी बिन सहारे
बहुत हो चुके दूर रहकर इशारे
तुम्हें पास से देखना चाहता हूँ, वफा कर रहा हूँ.....

**सुलोचना :** मुंहब्बत की दुश्मन है सारी खुदाई,

मोहब्बत की तकदीर में है जुदाई
जो सुनते हैं दिलों की दुहाई,
उन्हीं से मुझे माँगना चाहते हो, बड़े ना समझ हो .....

**मेघनाद :** दुपट्टे के कोने मुँह में दबाके,
जरा देख लो इस तरफ मुस्कराके
मुझे लूट लो मेरे नजदीक आके,
कि मैं मौत से खेलना चाहता हूं, वफा कर रहा हूँ.....

**सुलोचना :** गलत सारे वादे गलत सारी कसमें
निभेंगी यहाँ कैसे उल्फत की रस्में,
यहाँ जिन्दगी है रिवाजों के वश में
रिवाजों को तुम तोड़ना चाहते हो, बड़े नासमझ हो .....

**मेघनाद :** रिवाजों की परवा ना रस्मों का डर है,
तेरे आँख के फैसले पर नजर है
मैं इस हाथ को थामना चाहता हूँ, वफा कर रहा हूँ.....

**सुलोचना :** (शर्माते हुए) स्वामी ! मैंने आपकी इच्छा जान ली । जब से मैंने आपको देखा था तभी से आपके चरणों की दासी हो गयी हूँ ।

**मेघनाद :** यदि ऐसी बात है तो मेरे साथ चलो । हम लोक रीति से विवाह कर लेंगे, फिर तुम पटरानी कहलाओगी ।

**सुलोचना :** परन्तु ..... ? मेरे आराध्यदेव ! मैं अपने पिताजी की आज्ञा बिना कैसे जा सकती हूँ ? उनसे आज्ञा लेनी होगी ।

**मेघनाद :** क्या कहा ? पिताजी से आज्ञा ! नहीं ..... प्रिये ! तुम नहीं जानती ..... ? मैं जब भी कोई बात विचार लेता हूँ उसे तुरन्त पूरा कर डालता हूँ । यदि तुमको मुझसे प्रेम है तो जल्दी मेरे साथ चलो, वरना ..... मैं समझूँगा ..... ? कि तुम्हारा प्रेम, एक दिखावा था ।

**सुलोचना :** नहीं ..... नाथ ! ऐसा मत सोचिये । जो सत्य पर चलने वाली बालायें होती हैं वे एक बार ही वरण करती हैं । यदि

आप नहीं मानते तो मैं चलने को तैयार हूँ। चलिये नाथ! चलिये।

(मेघनाद का सुलोचना का हाथ पकड़कर जाना)

**शेषनाग :** (आकर रोकते हुए) कौन है जो मेरे लोक में आया है। (देखकर विस्मय से) मेघनाद! अरे दुष्ट! तू यहाँ कैसे आया? मेरी बेटी को फुसलाकर कहाँ ले जा रहा है? ठहर? आज यहाँ से जिन्दा नहीं जा सकता।

**मेघनाद :** (क्रोध से) कौन..... ? शेषनाग! जाओ..... ? मेरे सामने न आओ, वरना..... ? तुम्हारे पाताल लोक का पता नहीं चलेगा।

**शेषनाग :** (क्रोधित होकर) क्या कहा? हट जाऊँ। ओ नादान छोकरे! काल का ग्रास न बन। मेरी कन्या को छोड़ दे, वरना..... ? सारी लंका को पल भर में चौपट कर दूँगा।

**मेघनाद :** बातें न बना। सामने आकर युद्ध कर, तब तेरी वीरता का पता चलेगा।

(दोनों में युद्ध होना)

**विष्णु :** (प्रगट होकर) शान्त शेषनाग! शान्त! आपस में युद्ध मत करो, वरना... ? प्रलय हो जायेगी। जब तुम्हारी बेटी स्वयं मेघनाद के साथ जाने को तैयार है तो उसे क्यों रोक रहे हो?

**शेषनाग :** (कानों पर हाथ रखकर) ओ भगवन! यह मैं क्या सुन रहा हूँ? क्या देवलोक की कन्या असुर को ब्याही जायेगी? ओ निर्लज्ज! कलमुंही! जा इस पाताल नगरी को छोड़कर तुरन्त चली जा। ओ सपोले!! जा! और मेरा श्राप ले जा? जब मैं पृथ्वी पर स्वयं भगवान के साथ अवतार लूँगा तब तुझे मार कर अपनी छाती ठण्डी करूँगा। जा कुलटा जा! और हो जा विधवा। यह मेरा श्राप है।

(शेषनाग का जाना)

## सीन चौथा

**स्थान :** लंका नगरी।

**दृश्य :** युद्ध स्थल।

**पर्दा उठना**

**मेघनाद :** (सेना के साथ प्रवेश करके) कहाँ हे राम और लक्ष्मण ! आज मैं किसी को भी जिन्दा नहीं छोड़ूँगा।

**जामवंत :** (प्रवेश करके) अरे दुष्ट ! खड़ा रह..... ?
क्यों बुलाता मौत अपनी, आज मेरे हाथ से।
लौट जा घर को अभी, समझा रहा हूँ बात से।

**मेघनाद :** (क्रोध से) अरे शठ ! मैं तुझे वृद्ध जानकर कुछ नहीं कहता परन्तु तू मुझे ही ललकारने लगा। तू नहीं जानता..... ?
मेघनाद मेरा नाम है, मैं काल हूँ, विकराल हूँ।
अन्यायियों के वास्ते, विकराल हूँ, महाकाल हूँ॥

**जामवंत :** (व्यंग्य से) खूब.... ? बहुत खूब.... ? परन्तु बेटे.... ?
रण की भूमि है यह, कोई बच्चों का न खेल है।
सामने से मरदूद हट, तेरा मेरा क्या मेल है।

**मेघनाद :** (क्रोध से) हूँ..... ? अरे..... ?
बातें बनाना छोड़ दे, न मुझसे तकरार कर।
यमलोक जाने के लिये, तू रास्ता तैयार कर।

**जामवंत :** (व्यंग्य से मुस्कराकर) अवश्य..... ?
जिन दाँतों का सूखा न दूध, दुख होता उन्हें तोड़ने में।
इसलिये लौट जा तू घर को, खुश है जामवंत छोड़ने में।

**मेघनाद :** (क्रोध से) हूँ..... ?
दुध मुँहा कहता है क्या, विष का बुझाया तीर हूँ।
नाग का बच्चा हूँ मैं, तेरी मौत की तस्वीर हूँ।

**जामवंत :** (क्रोध से) जानता है..... ?
मौत की तस्वीर को भी, चूर कर देते हैं हम।
तेरे जैसों को मसलकर, चकनाचूर कर देते हैं हम।

**मेघनाद :** (क्रोध से दाँत पीसकर)
ठहर ! पाजी ! अब मजा, सारा चखा देता हूँ मैं।
हड्डियों को पीस कर, सुरमा बना देता हूँ मैं।

**जामवंत :** (क्रोध से)
खेलकर मुष्टिक से क्यों, सिर पर बला लेता है तू।
किसलिये बेटे का दुख, माँ-बाप को देता है तू।

**मेघनाद :** (क्रोध से) जानता है..... ?
खेल खेले बालकों में, वीर तो पाया न था।
बच रहा था सामने, जब तक मेरे आया न था।

**जामवंत :** (क्रोध से)
होश में आकर के देख, क्या है वीर तेरे सामने।
आ गया जामवंत बनकर, अब काल तेरे सामने।

**मेघनाद :** (हँसकर) काल..... ? हा... हा... हा...
काल कहता है जिसे, वह काल इस सरकार में।
हथकड़ी पहने हुए है ? बन्दी हमारे कारागार में।

**जामवंत :** अरे दुष्ट ! इतना घमण्ड क्यों करता है ? याद रख..... ?
जो चढ़ा आकाश पर, इक दिन गिरा है गार में।
सच बता किसका रहा, बल सदा संसार में।

**मेघनाद :** (क्रोध से) ओ बूढ़े नादान ! मेघनाद को शिक्षा देने का ध्यान !
मैं नहीं बच्चा जिसे, बातों से तू बहकायेगा।
बात कितनी भी बना, लेकिन न बचने पायेगा।

**जामवंत :** (क्रोध से) अच्छा अब..... ?
कर चुका है बहुत बातें, रार भी तकरार भी।
जानता है युद्ध करना, तो चला हथियार भी।

**(दोनों में युद्ध होना। मेघनाद द्वारा त्रिशूल से वार करना। जामवंत द्वारा त्रिशूल छीनकर मेघनाद की छाती में मारना। मेघनाद का चक्कर खाकर पृथ्वी पर गिर पड़ना।)**

॥ चौपाई ॥

मारिसि मेघनाद कै छाती । परा भूमि घुर्मित सुरघाती ॥
पुनि रिसाइ गहि चरन फिरायो । महि पछारि निज बल देखरायो ॥

**जामवंत :** (मेघनाद के पास आकर अचरज से) अरे ..... ? यह दुष्ट तो अभी तक जिन्दा है । वरदान के प्रताप से मारने पर भी नहीं मरता । अब इसे लंका में फैंक देना चाहिए ।

**(जामवंत द्वार मेघनाद का पैर पकड़कर लंका में फैंक देना)**

॥ चौपाई ॥

बर प्रसाद सो मरइ न मारा । तब गहि पद लंका पर डारा ॥
मेघनाद कै मुरछा जागी । पितहि बिलोकि लाज अति लागी ॥

**(मेघनाद का मूर्छित हो जाना । रावण द्वारा मूर्छित अवस्था में उसे देख लेना)**

**मेघनाद :** (होश में आकर दुखी मन से) हैं ..... ? मुझे मुर्छित अवस्था में पिताजी ने देख लिया है और शत्रु भी बलवान है । अब मुझे किसी कन्दरा में जाकर शत्रुनाशक यज्ञ करना चाहिए ।

**(मेघनाद का जाना)**

॥ चौपाई ॥

तुरत गयउ गिरिवर कंदरा । करौं अजय मख अस मन धरा ॥

**पर्दा गिरना**

**सीन पाँचवाँ**

**स्थान :** समुद्र तट ।

**दृश्य :** रामादल ।

**पर्दा उठना**

॥ चौपाई ॥

इहाँ विभीषन मंत्र बिचारा । सुनहु नाथ बल अतुल उदारा ।
मेघनाद मख करइ अपावन । खल मायावी देव सतावन ।

**विभीषण :** भगवन ! अभी खबर मिली है कि मेघनाद शत्रुनाशक यज्ञ एक गुफा में कर रहा है। हे प्रभो ! यदि उसका यज्ञ पूरा हो गया तो उसे जीतना कठिन हो जायेगा। इसलिए उसका यज्ञ विध्वंस कराइये।

**हनुमान :** (खड़ा होकर) हे नाथ !

जग में जब अपने पौरुष से, लाचार पुरुष हो जाता है।
तो देवी और देवताओं को, कायर भी भाँति मनाता है।
पागल है वह देवी के, मन्दिर पर नाक रगड़ता है।
देवी तो उसकी रक्षक है, जो युद्ध धर्म पर करता है।

**॥ चौपाई ॥**

सुनि रघुपति अतिसय सुखमाना । बोले अंगदादि कपि नाना ।
लछिमन संग जाहू सब भाई । करहु विध्वंस जग्य कर जाई ॥

**राम :** हे तात अंगद और हनुमान जी ! आप लक्ष्मण के साथ जाइए और यज्ञ विध्वंस कर उस पर विजय प्राप्त कीजिए।

**॥ चौपाई ॥**

प्रभु प्रताप उर धरि रनधीरा । बोले घन इव गिरा गम्भीरा ।

**लक्ष्मण :** (श्री राम के चरणों में सिर नवाकर) हे प्रभो ! मैं आप के चरणों की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि मैं आज उसे अवश्य मारूँगा।

रघुकुल आन है मुझको, धनुष और तीर की सौगन्ध है।
कसम है मात सुमित्रा की, मुझे रघुवीर की सौगन्ध है।
लड़ूँगा विश्व शक्ति से, न पग पीछे हटाऊँगा।
यदि यमराज भी होगा, तो वध करके ही आऊँगा।

**राम :** हे लक्ष्मण ! तुम उसे युद्ध में मारना, परन्तु याद रखना... ?

मेघनाद साधु है, तपसी है, बलशाली है, वरदानी है।
संयमी नारिब्रत वाला है, एक ही प्रमीला रानी है।
वह योगी स्वयं योग द्वारा, यदि चाहे तो मर सकता है।
मरकर वह अपने प्राणों को, तन में प्रवेश कर सकता है।

इस कारण ऐसे योद्धा का, तन छिन्न-भिन्न कर आना तुम।
सिर को हाथों ही हाथों में, सादर मेरे पास लाना तुम।
इस महाकार्य के साथ-साथ, कुछ और गुपत भी कारण हैं।
इस कारण पर आधारित, अपनी जय और अपना रण है।
वह सती प्रमीला सुलोचना, जो मेघनाद की नारी है।
त्रिभुवन विख्यात साध्वी है, वासुक की राजकुमारी है।
ऐसी सतवन्ती के पति का सिर, अगर भूमि पर आयेगा।
कपिदल तो किस गिनती में है, संसार भस्म हो जायेगा।
अच्छा जाओ वध करने को, अब और नहीं कुछ कहना है।
दुनियाँ तो आनी जानी है, आखिर तक किसको रहना है।

(लक्ष्मण का भगवान के चरणों में सिर नवाकर जय-२ कार बोलना)

**॥ व्यास : दोहा ॥**

रघुपति चरन नाइ सिरु, चलेउ तुरन्त अनन्त ।
अंगद नील मयंद नल, संग सुभट हनुमन्त ॥

**पर्दा गिरना**

## सीन छठवाँ

**स्थान :** गुफा।
**दृश्य :** मेघनाद यज्ञ कर रहा है।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

कीन्ह कपिन्ह सब जग्य विधंसा, जब न उठइ तब करहिं प्रशंसा ।
लै त्रिशूल धावा कपि भागे, आए जहाँ रामानुज आगे ।

**(वानरों द्वारा यज्ञ विध्वंस करना)**

**मेघनाद :** (ललकार कर क्रोध से उठकर) आओ ..... ? हे मौत के सौदागरों ! आगे आओ। आज देखना है कि रामादल में से कौन बचकर जाएगा ?
कौन मरने की सुबह से, आरजू लेकर बैठा है।
कौन है दुनिया से जिसका, बोरिया बिस्तर उठा है।

**(मेघनाद के प्रहार से रामादल में भगदड़ मचना)**

**लक्ष्मण :** (आगे आकर क्रोध से ललकार कर) ठहर? पाजी ! उस दिन तू धोखा दे गया था लेकिन आज बचना कठिन है।

**मेघनाद :** (व्यंग्य से) ओह लक्ष्मण ! क्या तू मेरे सामने मरने के लिए फिर आ गया? क्या तू नहीं जानता कि मैं देवताओं का शत्रु इन्द्रजीत हूँ।

जो विजेता लोक का है, और विष्णु धाम का।
विश्व में डंका बजा है, आज जिसके नाम का।
जिसने बालक समझकर, पहले तुझे मारा नहीं।
आज फिर आ गया सामने, तूने कुछ विचारा नहीं।

**लक्ष्मण :** (व्यंग्य मिश्रित क्रोध से) विचार लिया और तू भी विचार ले। इस बाण की ओर देख विष्णु भगवान के वरदान की ओर देख..... ?

किया है शैन तेरह बरस, इस भूमि की शैया पर।
किया भोजन फलों का, और विजय पाई निद्रा पर।
किया है काम को बस में, लगाई चैन को ठोकर।
मिटाया अपने जीवन को, चला संन्यास के पथ पर।
उठाये कष्ट इतने सब, कही पूरा परण होगा।
समझ ले आज निश्चय ही, तेरा अभी मरण होगा।

**मेघनाद :** (क्रोध से) हूँ..... ? नादान लड़के..... ! तू मेरी ताकत को नहीं जानता।

जिस तरफ की आँख फेरी, देवता तक डर गए।
क्रोध की अग्नि से लाखों, वीर जल-२ मर गए।
जिसको पकड़ा काल के, पँज़े से गोया फँस गया।
जिसको दाबा वह रसातल, तक जमीं में धँस गया।

**लक्ष्मण :** (व्यंग्य से) खूब..... ? बहुत खूब..... ? अपनी बड़ाई करते शर्म भी नहीं आती। अरे दुष्ट..... ?

कुछ बड़ाई हो नहीं सकती, बड़े आकार से।

हार जाते हैं बड़े, छोट ही हथियार से।
कर्म जिसका है बड़ा, वह ही बलवान है।
देह तो मिट्टी है केवल, आत्मा ही ज्ञान है।

**मेघनाद :** (झुंझलाकर क्रोध से) अधिक बातें न बना ..... ? यदि साहस है तो युद्ध कर।

**(दोनों में भयंकर युद्ध होना)**

**॥ चौपाई ॥**

सुमिरि कोसलाधीस प्रतापा । सर संधान कीन्ह करी दापा ॥
छाँड़ा बान माझ उर लागा । मरती बार कपटु सब त्यागा ॥

**॥ दोहा ॥**

रामानुज कहँ रामु कहँ, अस कहि छाँड़ेसि प्रान ।
धन्य-धन्य तब जननी, कहँ अंगद हनुमान ॥

**लक्ष्मण :** (बाण मारते हुए) जय सिया राम।

**मेघनाद :** (चक्कर खाकर गिरते हुए) आह लक्ष्मण ? कहाँ हो ! आह राम ! कहाँ हो।

**अंगदहनुमानः** (आगे आकर मेघनाद को भुजाओं में लेते हुए) मेघनाद तेरी माता को धन्य है। धन्य है।

**(लक्ष्मण द्वारा मेघनाद का सिर काटना। हनुमान का हाथों में लेना। अंगद द्वारा अंग छिन्न-भिन्न करना। मेघनाद का जमीन पर गिर जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

अस्तुति करि सुर सिद्ध सिधाए । लछिमन कृपासिंधु पहिं आए ॥

## सीन सातवाँ

**स्थान :** सुलोचना का महल।

**दृश्य :** शिवलिंग के सामने सुलोचना का ध्यान मग्न है। पास में सखी बैठी है।

## पर्दा उठना

**सुलोचना :** (शिवजी के पैरों में गिरकर रोते हुए) हे भगवन ! मेरी रक्षा करो..... ? मेरी रक्षा करो..... ? आज मुझे मेरे सुहाग की भीख दे दो प्रभु !

आओ कैलाश के वासी, मुझे भाग्य ने आ घेरा।
सिवा तुम्हारे किसे पुकारूँ, कोई नहीं है मेरा।
मैं दुखियारी हूँ, अबला नारी हूँ, नारी हूँ।
नाव पड़ी मझधार, प्रभु जी अब पार करो।
पति ने अब तो रण करने की, मन अपने में ठानी है।
विनती कर करके मैं हारी, एक बात ना मानी है।
रण की ठानी है, संकट भारी है, भारी है।
मैं दुखियारी...
जब से सुना है जग अंधियारा, छोड़ चले हैं सहारे।
कोई न दीखे मेरा सहारा, अबला तुझे पुकारे।
बिपत की मारी हूँ, अबला नारी हूँ, नारी हूँ।
नाव पड़ी मझधार, प्रभु जी अब पार करो।
मैं दुखियारी...
दीन बन्धु भगवान भोले, जान के तुम्हें पुकारा।
आकर दर्शन दे दो भगवन, दे दो मुझे सहारा।
मैं अबला नारी हूँ, शरण तिहारी हूँ, तिहारी हूँ।
नाव पड़ी मझधार, प्रभु जी अब पार करो॥

**(स्वर्गीय देवदास चिडरई वालों के सौजन्य से)**

**(सुलोचना का बेहोश होकर गिर जाना)**

**सखी :** (सम्हालते हुए) राजकुमारी जी ! राजकुमारी जी ! होश में आइये। भगवान पर भरोसा रखकर कोई उपाय कीजिये।

**सुलोचना :** (रोते हुए) तू ठीक कहती है, प्यारी सखी ! परन्तु क्या करूँ? कहाँ जाऊँ? सब्र होता नहीं..... ? धीरज टूट गया। ओ निर्दयी भगवन ! तुझे जरा भी दया नहीं आई।

**सखी :** राजकुमारी ! आज हृदय में कैसी पीर है ? सदा प्रसन्न रहने वाला मन आज अधीर क्यों है ?

**सुलोचना :** कुछ न पूछो, सखी ! जब से स्वामी युद्ध में गए हैं तभी से मन की गति निराली हो रही है । निराशा प्राण खो रही है ।

**सखी :** (विस्मय से) हैं ..... ? आज ये कैसी बात कर रही हैं, राजकुमारी जी ! हमारे राजकुमार को हराने वाला कौन यौद्धा है ? जिन्होंने बारह बरस तक स्त्री और नींद का त्याग किया हो ऐसा ब्रह्माण्ड में कौन जन्मा है ?

**सुलोचना :** यह तो ठीक है परन्तु सखी ! विधाता की गति जानी नहीं जाती है ।

सभी बनते बिगड़ते हैं, जगत केवल खिलौना है ।
लिया है जन्म जिसने, नाश भी निश्चय ही होना है ।

**॥ चौपाई ॥**

अब सो सुनहु भुजा तेहि केरी । खग जिमि गई लंक सर प्रेरी ॥
मेघनाद आँगन में परी । बान बेधि सोनित सन भरी ॥

**(आँगन में भुजा गिरना)**

**सखी :** (चौंककर) हैं ..... ? यह क्या ..... ? कोई भारी वस्तु आकर गिरी । (भुजा को देखकर) उफ ..... ? कैसा भयंकर युद्ध हो रहा है ..... ? मानो अखण्ड का खण्ड हो गया है ।

**सुलोचना :** क्या है, सखी ! देखूँ ..... ? ज़रा मेरे निकट तो ला ।

**सखी :** (पास लाते हुए) कुछ नहीं, राजकुमारी जी ! किसी वीर की भुजा है । युद्ध में कटकर आ गिरी है । देखो तो ..... ? अभी तक रक्त बह रहा है ।

**सुलोचना :** (भुजा को ध्यान से देखकर सिर धुनते हुए) हाय ..... ? हाय ..... ! यह तो मेरा ही नाश हुआ है ।

मेरी तकदीर लौटी है, मेरा ही भाग्य फूटा है ।
दिया धोखा विधाता ने, मेरा सुख चैन लूटा है ।

**सखी :** (दुखी होकर विस्मय से) वीर बाला ! कैसी बातें करने लगीं ? क्या आपके पति कोई साधारण योद्धा हैं। उन्होंने देवताओं को जीतकर काल को अपने बस में कर रखा है।

**सुलोचना :** (रोते हुए) यह ठीक है परन्तु यह भुजा अवश्य स्वामी की है।

**सखी :** नहीं..... ? क्या ऐसा होना सम्भव है ?

**सुलोचना :** अच्छा ..... ! यदि तुझे ऐसा ही भ्रम है तो तेरा संदेह मिटाती हूँ। तू जा और खड़िया ले आ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

करि बिचार मन टेक दे, मैं पति देवत नारि ।
भुज लिखि मेटहु दुचितई, सुनि कर दीन पसारि ।

**सुलोचना :** (हाथ में खड़िया देकर) यदि मैं पतिव्रता स्त्री हूँ, तो हे भुजा ?

यदि तू पति का हाथ है, नहीं किसी की चाल।
तो तुझको मेरी शपथ, लिख दे सच्चा हाल।

**॥ व्यास : ॥**

इन शब्दों से सती के, डोल उठा भूगोल ।
आत्मा उस घननाद की,पड़ी भुजा में बोल ।

**॥ चौपाई ॥**

तेहि सिर गयौ दरस रघुराई। तव प्रतीत लगि भुजा पठाई ॥
इहि विधि लिखेउ सकलभुज बाता। परी भूमि तव अति बिलखाता ॥

**सुलोचना :** (रोते हुए) वह लिक्खा ? देखो सखी ! वह लिक्खा.... ?

**(पर्दे के पीछे से आवाज)**

हे प्रिये ! मेरा सिर राम जी के दर्शन को गया है। तेरे विश्वास को भुजा यहाँ भेज दी है।

वीर लखन के हाथ से, सुरपुर हुआ निवास।
प्राण पखेरू स्वर्ग में, भुजा तुम्हारे पास।

**सुलोचना :** (रोते हुए) लुट गई, भगवन ! मैं अच्छी तरह लुट गई।

(भुजा को छाती से लगाकर)

जिन हाथों ने रक्षा के हित, तुमको सर्वस्व बनाया था।
बदले में भारी से भारी, सेवा का भार उठाया था।
हे पति के हाथ बता इतना, उन हाथों को क्यों छोड़ा है।
पंचों में जिनको पकड़ा था, उनसे क्यों नाता तोड़ा है।
तू छोड़ रहा इन हाथों को, यह हाथ न तुझको छोड़ेंगे।
सम्बन्ध जन्म जन्मान्तर का, तोड़ा है और न तोड़ेंगे।
इस दिव्य जगत में नारी को, शोभा सारी पति ही से है।
यह दुनियाँ भी पति सही से है, वह दुनियाँ भी पति ही से है।

नहीं..... ! नहीं..... ! भगवन ! तू कपटी है, तू हत्यारा है। सब तूने ही खेल खिलाया है।

**फिल्म : "अनमोल घड़ी"**

क्या मिल गया भगवान, मेरे दिल को दुखा के।
अरमानों की नगरी में, मेरी आग लगा के।
हम सोच रहे थे अभी, दिल से मिलेंगे।
जीवन में अभी मुहब्बत के, फूल खिलेंगे।
ये क्या थी खबर तुमको न आयेगी दया भी।
रख दोगे किसी दिन मेरी दुनियाँ को मिटा के।
अरमानों की नगरी में .....(१)
आकाश ही दुश्मन, नहीं दुश्मन है जमीं भी।
दुख दर्द के मारों को, नहीं चैन कहीं भी।
इस जीने से अब मौत ही आ जाये तो अच्छा।
जब छुट गया हाथ उनका, मेरे हाथ में आके।
अरमानों की नगरी में .....(२)

प्यारी सखी ! बस अब मेरी एक ही इच्छा है।

**सखी :** क्या इच्छा है, राजकुमारी जी ! बताइये।

**सुलोचना :** हाय दासी ! पति का शरीर कहीं खराब न हो जाये। सिर्फ पति का शीश मुझे मिल जाये तो चिता सजा कर पति के

शीश के साथ सती हो जाऊँ।

**सखी :** परन्तु राजकुमार का शीश तो रामादल में होगा। अपने ससुर से कहकर पति का शीश मंगा ले।

**सुलोचना :** सखी ! मैं वहाँ कैसे जाऊँ? क्या ससुर महाराज ! पति का शीश लाने की आज्ञा दे देंगे? क्या उनकी शान में बट्टा नहीं लग जायेगा?

**सखी :** नहीं, राजकुमारी जी ! आप उनके पास जाकर तो देखिये।

**सुलोचना :** अच्छा, दासी ! मैं जा रही हूँ।

**(सुलोचना का जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन आठवाँ

**स्थान :** रावण दरबार।

**दृश्य :** दरबार लगा है।

**पर्दा उठना**

**रावण :** हा... हा... हा... आज मेघनाद ने अवश्य ही राम को मार दिया होगा और सारा झगड़ा सदैव को मिटा दिया होगा।

**॥ चौपाई ॥**

सुत बध सुना दसानन जबहीं मूर्छित भयउ परेउ महि तबहीं ॥

**दूत :** (घबड़ाकर) क्या हुआ?

**दूत :** (रोते हुए) अन्नदाता ! राज कुमार मेघनाद युद्ध में..... !

**रावण :** (रूँआसा होकर) कहो... ? कहो... ? जल्दी कहो... ?

**दूत :** (फूट-फूटकर रोते हुए) महाराज..... !

**रावण :** (एक ओर गिरते हुए) नहीं..... ? नहीं..... !

किस तरह खाया है चक्कर, आज यह आकाश ने।
कर दिया है नाश मेरा, पुत्र तेरे नाश ने।

**मंत्री :** (रावण के पास आकर उठाते हुए) सावधान..... !

महाराज सावधान..... !

**रावण :** (क्रोध से) बस..... ! अब न छेड़ो तान। मेरा जोश मध्यम नहीं पड़ सकता। लूँगा.... ? अवश्य लूँगा... ?
अपने पुत्र की मृत्यु का बदला अवश्य लूँगा।
मिटाकर अपने शत्रु को, जगत से आज दम लूँगा।
मैं सारे नाश का बदला, अभी और एक दम लूँगा।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

द्वारपाल दसकंध कहँ, खबरि जनाई जाए ।
भयउ रजायसु बेगि तब, वचन कहति बिलखाय ।

**द्वारपाल :** (प्रवेश करके झुककर) महाराज की जय हो। राजकुमार मेघनाद की पत्नी आई है। दरबार में हाजिर होना चाहती है।

**रावण :** उसे सादर बुलाया जाए।

**सुलोचना :** (प्रवेश करके सिर झुकाकर) पिताजी ! इस अभागिन का प्रणाम लीजिए। (सुलोचना का रोना)

**रावण :** (सुलोचना की दशा पर पसीज कर)
बेटी क्यों रोती हो, क्यों करुणा नदी बहाई है।
तुम तो उसकी पत्नी हो, जिसने महान गति पाई है।

**सुलोचना :** पिताजी ! इस अभागिन को पति का शीश मँगा दीजिए।

**रावण :** बेटे का बदला लेने को, मैं अभी समर में जाता हूँ ।
उस शीश के बदले में, लाखों शीशों को लाता हूँ ।
बेटी !तुम निश्चिंत रहो और महलो में विश्राम करो।

**सुलोचना :** क्या कहा, पिताजी ! मैं निश्चिंत रहूँ। क्या आपको मेरी दशा का ज्ञान नहीं है।

श्री महाराज यह बेटी तो, केवल आशीष चाहती है।
लाखों शीशों का क्या होगा, निजपति का शीश चाहती है।
वे गये वीर गति पाकर हैं, मैं नारी उचित गति पाऊँगी।
पति का शीश चिता में ले, सानन्द सती हो जाऊँगी।

**रावण :** (अपमान महसूस करते हुए क्रोध से) नहीं..... ? कदापि नहीं..... ? मैं शत्रुओं के दल में जाऊँ और शीश माँगू। लंका का महान ज्ञानी पंडित किसी के आगे हाथ पसारे। क्या यह लज्जा की बात नहीं। जाओ महलों में आराम करो।

**सुलोचना :** (व्यंग्य से) नहीं... पिताजी ! लज्जा तो उस समय आनी थी जब संन्यासी बनकर भीख माँगी थी। पर नारी का हरण किया था। पिताजी ! मैं आपके पैरों पड़ती हूँ। यदि आप नहीं जाते तो मुझे ही जाने की आज्ञा दीजिए।

मेरी सुनो ससुर महाराज-२, इजाजत तिहारी पाऊँ।
शीश को माँगन जाऊँ।...
पति गए स्वर्ग सिधार, विधाता रूठौ है।
उजड़ गयौ मेरो सुहाग, मुकद्दर फूटौ है।
सब बिगड़ गये मम काम-२, इजाजत तिहारी पाऊँ।
शीश को माँगन जाऊँ।...
करि-करि पति की याद, फटो मेरो सीना है।
बिना पति के मुश्किल, अब मेरो जीना है।
लुट गयो सुहाग कौ ताज-२, इजाजत तिहारी पाऊँ।
शीश को माँगन जाऊँ।...
हालत मेरी देखि, दया वो कर देंगे।
मेरे पति का शीश, मुझे वो दे देंगे।
मैं जाऊँ प्रभु के पास, इजाजत तिहारी पाऊँ।
शीश को माँगन जाऊँ।...

**(श्री अशोक पचौरी अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

**रावण :** नहीं..... ! कभी नहीं..... ! बेटी ! तुम समझती क्यों नहीं..... ? रावण की पुत्रवधू रामादल में जाए। दर दर की ठोकरें खाए। ऐसा कदापि नहीं होगा। जाओ..... ? और अपने महलों में आराम करो।

**सुलोचना :** (रोते हुए) भाग्य जब फूटा है तो ठोकरें खानी हैं। यदि अधिक कहती हूँ तो विवाद होगा। इससे तो अच्छा है कि माताजी के पास जाकर आज्ञा माँगू।

**(सुलोचना का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

तुरतहि उठी सुलोचना, गई मयतनया पास ।
पद गहि रोवत सकल कहि, प्रगट सोक इतिहास ।

**सीन नवाँ**

**स्थान :** मन्दोदरी का महल।

**दृश्य :** मन्दोदरी पुत्र शोक में बैठी है।

**पर्दा उठना**

**मन्दोदरी :** (रोते हुए) हे भगवन ! क्या करूँ हाय मेरा सपूत अपनी माँ को धोखा दे गया। हा विधाता ! तुझे जरा भी दया नहीं आई। ओ बेटा ! तू गया और अपनी दुखियारी माँ को रोता बिलखता छोड़ गया।

**सुलोचना :** (प्रवेश करके मन्दोदरी के चरणों में गिरकर रोते हुए) माँ.. !

**मन्दोदरी :** (उठाकर छाती से लगाकर) आह बेटी ! तुझे किन आँखों से देखूँ। तेरा यह विधवा भेष देखा नहीं जाता। बेटी ! मेरा घर उजड़ गया, तेरा सुहाग लुट गया।
किस तरह देखूँ तेरे, सिंदूर लुट जाने के दिन।
हो गई विधवा कि यहीं, थे खेलने खाने के दिन।

**सुलोचना :** (सिसकियाँ लेते हुए) माताजी ! यह सब कर्मों का फल है। भाग्य के आगे संसार लाचार है। भाग्य में ही नहीं थे खेलने खाने के दिन।

**मन्दोदरी :** (सुलोचना के आँसू पौछते हुए) हाँ बेटी..... !

पुत्र के मरते ही मेरी, गोद खाली हो गई ।
नष्ट बेटी अब तेरी, माँग की लाली हो गई ।

**सुलोचना :** माताजी ! जो होना था वह हो गया । मेरा और आप का भाग्य अन्धकार में सो गया । परन्तु अब धैर्य से काम लीजिये और मुझे देवलोक जाने की आज्ञा दीजिये ।

**मन्दोदरी :** (रोते हुए) किस तरह आज्ञा दूँ, बेटी ! पुत्र तो चला गया अब तुम्हें भी जाने की आज्ञा दे दूँ । बेटी ! मेरी दशा की ओर भी तो ध्यान कर ।

हर तरह मेरा सहारा, तो न खोना चाहिये ।
मेरे जीने के लिए, कोई तो होना चाहिये ।

**सुलोचना :** परन्तु ..... ! माताजी ! मुझे तो जाना ही होगा । जीवन साथी का साथ तो निभाना ही होगा ।

मोह के बंधन में फंसकर, धर्म कैसे छोड़ दूँ ।
टूटने वाला नहीं वह, सम्बन्ध कैसे तोड़ दूँ ।

**मन्दोदरी :** बेटी ! मैं तेरे पतिव्रत धर्म को जानती हूँ परन्तु आज्ञा तो महाराज से लेनी चाहिये ।

**सुलोचना :** उनसे तो मैं कह चुकी परन्तु वे कोई ध्यान नहीं देते । माताजी ! अब आप ही इस अभागिन की विनती स्वीकार कीजिये और मुझे जाने की आज्ञा दीजिये ।

**मन्दोदरी :** (सुलोचना के सिर पर हाथ फेरते हुए) अच्छा बेटी ! जाओ और अपना पतिव्रत धर्म निभाओ । मैं उनको समझा दूँगी ।

**सुलोचना :** (पैर पकड़कर) उपकार..... ! माताजा उपकार..... !

**(सुलोचना का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**।। चौपाई ।।**

सुनत तासु मुख हितकर बानी , जाहुँ राम पहँ अस जिय जानी ।
बार बार चरनन सिर नाई, चली जहाँ लछिमन रघुराई ।

## सीन दसवाँ

**स्थान :** समुद्र तट।
**दृश्य :** रामादल।

**पर्दा उठना**

**सुलोचना :** (गाते हुए प्रवेश करके) आह भगवन ! अब किस्मत में बड़ी ठोकरें खानी पड़ रही हैं। हे पृथ्वी ! तू ही मुझे स्थान दे दे। हा प्राणनाथ ! अब क्या करूँ ? भगवन..... !

**फिल्म—"बहार"**

भगवान दो घड़ी जरा इन्सान बन के देख।
धरती पै चार दिन कभी मेहमान बन के देख।
है जिनको तेरी याद कभी उनकी भी ले खबर।
ओ आसमान वाले जरा गरीबों पै कर नजर।
दिल में किसी गरीब के अरमान बन के देख।
भगवान दो घड़ी.....(१)
जो कुछ भी हो रहा सब तेरी नजर में है।
ओ देख मेरी लाज की नैया भंवर में है।
सब जानते हुए भी न अन्जान बन के देख।
भगवान दो घड़ी.....(१)
तुझको खबर नहीं कोई कितना निराश है।
तिनके की डूबते को ओ मालिक तलाश है।
इन्सान बन सके न तो भगवान बनके देख।
भगवान दो घड़ी.....(१)

**राम :** आह..... ? सुनो..... ? यह किसकी पुकार है..... ?

**दूत :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो। रावण की पुत्र वधु उपस्थित होना चाहती है।

**राम :** अच्छा जाओ और आदर सहित उसे ले आओ।

**दूत :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज !

**(दूत का जाना)**

## ॥ चौपाई ॥

करत प्रनाम प्रेम नहिं थोरे । करुना बचन कहत कर जोरे ॥

**सुलोचना :** (प्रवेश करके हाथ जोड़कर) हे भक्तजन हिताकारी ! आपकी जय हो ।

**विभीषण :** महाराज ! यह रावण की पुत्र वधू और मेघनाद की पत्नी सुलोचना है । संसार में धर्म परायण और पतिव्रत धर्म की प्रतिमा है ।

**राम :** (सिर झुकाकर)

बल पर ही सती नारियों के, ठहरा भूमण्डल सारा है।
झुकता नित पतिव्रताओं के, आगे यह शीश हमारा है।
देवी अपने आने का कारण कहो..... ?

**सुलोचना :** हे भगवन ! आप अन्तर्यामी हैं । जब मेरे स्वर्गवासी स्वामी की कटी हुई भुजा ने आपकी महिमा लिखकर समझाई तब मैं आपसे कुछ विनती करने आई हूँ ।

मेरी विनय सुनो रघुवीर-२, मुसीबत मुझ पर छाई।
शीश को माँगन आई ।
गढ़ लंका के बीच, हुआ ये सपना है।
प्राणनाथ के बिना, न कोई अपना है।
अब कैसे बाँधू धीर-२, मुसीबत मुझ पर छाई है ।
शीश को माँगन आई ।
मेरी विनय .....(१)
महल गिरी पति, भुजा ने हाल बताओ है।
तब से मेरा हृदय, बहुत घबड़ायो है।
मेरी फूट गई तकदीर-२, मुसीबत मुझ पर छाई ।
शीश को माँगन आई ।
मेरी विनय .....(१)
विनती कर बारम्बार, दया तुमरी पाऊँ ।
दे दो पति का शीश, सती मैं हो जाऊँ ।

मेरी मिटे हृदय की पीर-२, मुसीबत मुझ पर छाई।
शीश को मांगन आई।
मेरी विनय .....(१)

**(श्री अशोक पचौरी अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

महाराज..... !
मैं आज विपत की मारी हूँ, मैं दुख की आज सताई हूँ।
अपना सिर नीचा किए हुए, पति का सिर लेने आई हूँ।
यदि राम दयासागर हैं तो, रखेंगे टेक भिखारिन की।

**राम :** मेरी सुनो सती देवी-२, दुख जो तेरा जाने ।
लगे वो भी घबड़ाने।
तुम तो रोती उधर, मैं मन में रोता हूँ।
तेरे दुख को मैं, आँसुओं से धोता हूँ।
अब सच है यह देवी-२, दुख जो तेरा जाने।
लगे वो भी घबड़ाने।
मेरी सुनो .....(१)
मन में आता है कैसे भी, वो प्रतिफल से।
जीवित हो जाये मेघनाद, अपने बल से।
इच्छा है ये देवी-२, दुख जो तेरा जाने।
लगे वो भी घबड़ाने।
मेरी सुनो .....(१)
शीश मैं तुमको, अभी मंगाये देता हूँ।
ऐसा था नहीं वीर, मैं फिर भी कहता हूँ।
कुछ सब्र करो देवी-२, दुख जो तेरा जाने।
लगे वो भी घबड़ाने।
मेरी सुनो .....(१)

**(श्री अशोक पौचरी अवागढ़ वालों से सौजन्य से)**

हे देवी तुम पर दुख देख, मैं भी अति दुखी हो रहा हूँ।
तुम रोती हो प्रत्यक्ष उधर, मैं मन में इधर रो रहा हूँ।

दुर्लभ है ऐसा जग विजयी, जिस पर सबको गौरव है।
वह शूर वीरता वह साहस, पृथ्वी पर मिले असम्भव है।
यदि किसी भाँति यदि किसी तरह, आत्मा के या तप के बल से।
जीवित हो जाये मेघनाद, सत्कर्म धर्म के प्रतिफल से।
तो हर्ष पूर्वक मैं अपने, सब सुकृत दान कर सकता हूँ।
लंका की राज पतोहू का, इस भाँति मान कर सकता हूँ।

हे देवी... ! मैं आज तेरे स्वामी को जिला दूँ। तुम सौ कल्प तक लंका का राज्य भोगो। अब शोक छोड़कर मन में हर्षित हो जाओ और तुरन्त ही अपने घर लौट जाओ।

**सुलोचना :** प्रभो ! आप उद्धार और सब कुछ देने योग्य हैं। मेरे स्वामी ने बाहुबल से सब लोकों को जीत के वश में किया तथा चौदह लोकों का भोग किया। अब भी युद्ध तीर्थ में बड़े याचक लक्ष्मण को पहचान कर उन्हें प्राण धन दान कर दिया। अब उचित नहीं कि स्वामी का दिया हुआ उपहार लौटा लूँ।

लक्ष्मण से तपसी का पति ने, सब भाँति पूर्ण सम्मान किया।
पूजा करते याचक आया, उसको प्राणों का दान दिया।
भ्राता से उसके प्राण दान, ले सकती नहीं प्रमीला है।
दी हुई भीख वो क्या लेगी, यदि दे सकती नहीं प्रमीला है।

**(लक्ष्मण से)**

**॥ दोहा ॥**

लक्ष्मण तुम इस बात का, करना मत अभिमान।
मारा है घननाद को, हूँ मैं अति बलवान।
घननाद लक्ष्मण का महायुद्ध, बस एक ऊपरी पर्दा था।
वास्तव में दो सतियों का सत, संग्राम भूमि में लड़ता था।
जो अवधपुरी में बैठी है, उस तपसिन से था रण मेरा।
निज पति को रक्षित रखूँगी, यह महाकठिन प्रण था मेरा।

पर पति तो उसके साथी थे, पर-पत्नी जो हर लाया है ।
बस इसी एक दुर्बलता ने, मुझको यह दिन दिखलाया है ।
मैं तो इस ओर अकेली हूँ, इस ओर साथ में सीता है ।
इसलिये प्रमीला से यह रण, उर्मिला सती ने जीता है ।

॥ चौपाई ॥

लीन्हेउ राम कपीस बुलाई । मेघनाद सर दीन्ह मंगाई ।
पाय कृतारथ मानेउ आपू । मिटा विरह संभव परितापू ॥

**राम :** हे देवी !

कह सकता कौन तुम्हें अब यह, तुम निश्चर कुल की दारा हो ।
तुम लंका के मरु जंगल में, सुरसरि की पावन धारा हो ।
सत का प्रभाव पड़ता ही है, कब किसके रोके रुकता है ।
तुम इतने ऊँचे पथ पर हो, राघव का मस्तक झुकता है ।

हे तात सुग्रीव जी ! मेघनाद का सिर लाकर देवी सुलोचना को दे दो ।

**(सुग्रीव द्वारा मेघनाद का सिर लाकर सुलोचना को देना)**

॥ चौपाई ॥

देखि संदेह कहत सुग्रीवा । भुज महि लिखित जीहबिन ग्रीवा ॥
हँसिहहि बदन तो ह्वै है साँची । नातर निसिचर माया जाँची ॥

**सुग्रीव :** (सन्देह करके) हे प्रभो ! बिना जीभ व कंठ के भुजा लिख सकती है । यह राक्षसी माया तो नहीं है ।

पृथ्वी के ऊपर कटी भुजा, किस भाँति भला लिख सकती है ।
जो बात प्रकृति के है विरुद्ध, वह नहीं जंचाये जंचती है ।
लंकेश क्षमा करना मुझको, यह संशय है उपहास नहीं ।
लंका वाले मायावी हैं, हमको उनका विश्वास नहीं ।

**राम :** हे तात सुग्रीवजी ! कुतर्क करना उचित नहीं है ।

नारी के पतिव्रत का बल, अनहोनी भी कर सकता है ।
पतिव्रत यदि हो उठे प्रबल, तो ईश्वर भी डर सकता है ।

**सुग्रीव :** हे प्रभो !

इस समरस्थल पर खड़े हुए, बस रस्ता एक जानते हैं।
विश्वास न गुप्त जगत पर है, प्रत्यक्ष प्रमाण मानते हैं।
जिसने सत वहाँ दिखाया है, वह चमत्कार दिखलाए यहाँ।
हो जायेगा विश्वास हमें यदि, कटा शीश हँस जाए यहाँ।

॥ दोहा ॥

सिर सों कहत सुलोचना, हँसहु बेगि मम नाथ ।
नातर सत्य न मानि हैं, लिखा जो तुम्हरे हाथ ॥

सुलोचना : हे स्वामी ! हँसिये, नहीं तो आपके हाथ ने जो-२ लिखा है उसको ये लोग सत्य नहीं मानेंगे।

मेरे प्रीतम प्राण अधार-२, सती का धर्म निभा दो।
कि हँसकर इन्हें दिखा दो।
रामादल से सर की माँगी भिक्षा है।
बदले में इक देनी पड़े परीक्षा है।
मैं दुखिया हूँ लाचार-२, सती का धर्म निभा दो।
कि हँसकर इन्हें दिखा दो।
मेरे प्रीतम.....(१)
पति धर्म पर सती जो प्राण गंवायेगी।
मेरी लाज न जाय तुम्हारी जायेगी।
पति सब गुण में आगार-२, सती का धर्म निभा दो।
कि हँसकर इन्हें दिखा दो।
मेरे प्रीतम.....(२)
हँस दो, हँस दो नाथ धर्म मेरा रह जाये।
ऐसी हँसी, हँसों कि अम्बर तक दहलाये।
मेरी लाज रखो भरतार-२, सती का धर्म निभा दो।
कि हँसकर इन्हें दिखा दो।
मेरे प्रीतम.....(३)

**(श्री अशोक पचौरी अवागढ़ वालों के सौजन्य से)**

हे स्वामी ! प्रभु के सामने मुझे क्यों लजा रहे हो ? इस देह

के मन, कर्म और वचन से आप ही देवता हैं तो हे स्वामी ! सभी के बीच सिर हँसने लगे ।

हे प्राणेश्वर के कटे शीश, आ गई बात पतिव्रत पर है।
हँसी न उड़े इस विधवा की, बट्टा न कहीं आये सत पर है।
आँखें तुमको ही देख रहीं, इस भरी सभा में आज यहाँ।
इन टूटी हुई चूड़ियों की, मिट्टी में मिले न लाज यहाँ।
आदेश तुम्हारे पर आई, रामादल में यह नारी है।
अब लोक हँसाई हुई यहाँ, तो मेरी नहीं तुम्हारी है।
क्यों हँसते नहीं प्राण जीवन, क्यों मेरी हँसी कराते हो।
ऐसी भी हँसी नहीं अच्छी, पँचों में हँसी कराते हो।

हे स्वामी ! यदि मैं यह जानती कि आपकी यह गति होगी तो सहायता के लिए अपने पिता को बुला भेजती ।

॥ व्यास : ॥

सिर ने सोचा वह पिता, वह बासुक वह शेष ।
हुआ यहाँ अवतीर्ण है, धर लक्ष्मण का भेष ।
कन्या हरने का लिया, बदला उसने आन ।
मारकेश की दशा कब, देती जीवन दान ।
इस बात पर सिर हँसा, अट्टहास के साथ ।
काँप उठा पृथ्वी गगन, उमड़ उठा जलनाथ ।

**(सिर का हँसना)**

**॥ चौपाई ॥**

सुनि तिय वचन हँसेउ तब सीसा, चौंके चकित भालु भट कीसा ।
हँसेउ ठठाय बदन सब देखा, विस्मय भयउ सकल जिहि पेखा ।

**सुग्रीव :** (विस्मय से) बड़ा ही आश्चर्य है। वास्तव में पतिव्रता की महिमा बड़ी विचित्र है ।

**॥ चौपाई ॥**

पूछत कपिपति पद सिर नाई । कारन कवन हँसा फिर साँई ।
प्रभु कह सुनु सुग्रीव कपीसा । सीस हँसे कर सुनहु असीसा ॥

सुग्रीव : (राम के चरणों में सिर नवाकर) हे स्वामी ! सिर के हँसने का क्या कारण है ?

राम : हे कपिराज सुग्रीव ! सुनो ..... ? मैं सिर के हँसने का कारण सुनाता हूँ। मन-कर्म और वचन से स्वामी की सेवा करने के समान स्त्रियों के हित में दूसरा उपाय नहीं है। जी में ऐसा जानकर जो पति सेवा करती है। उन पर मुनि और आदि देवता प्रसन्न होते हैं। यह नाग कन्या सतवन्ती है। इसी के सत से मेघनाद का सिर हँसा है।

॥ दोहा ॥

सीस पाय प्रभु चरन गहि, बहु विधि विनय सुनाय ।
आज के दिन रन परिहरहु, मम हित कौसलराय ॥

सुलोचना : (शीश उठाकर) अच्छा प्रभु ! अब आज्ञा दीजिए और आज का युद्ध बन्द करने की घोषणा कर दीजिए।

राम : बहुत अच्छा, देवी ! ऐसा ही होगा।

सुलोचना : अच्छा प्रभु ! अब इस अबला का प्रणाम लीजिये और जाने की इजाजत दीजिये।

(सुलोचना का जाना)

पर्दा गिरना

## सीन ग्यारहवाँ

स्थान : लंका नगरी।

दृश्य : चिता जल रही है।

पर्दा उठना

॥ चौपाई ॥

रचि दृढ़ दारुन चिता बनाई । जनु सुरलोक निसेनी लाई ॥
करि प्रनाम जब जनिपरितोषी । धीरज धरसि तासु मति पोषी ॥

(सुलोचना का सती होना)

पर्दा गिरना

**॥ दोहा ॥**

दे अनल ज्वाला बढ़ी, लपट गगन लगि जाय ।
लखी न काहू जाति तेहि सुरपुर पहुँची धाय ॥

**॥ सुलोचना सती लीला समाप्त ॥**

◆ ◆ ◆

## तेरहवाँ दिन (ग्यारहवाँ भाग)

# रावण वध लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. रावण वध

(क) अहिरावध वध

(ख) नारान्तक वध

(ग) रावण वध

(घ) विभीषण का राजतिलक

(ङ) सीता की अग्नि परिक्षा

(च) राम का अयोध्या वापिस लौटना

(छ) राम राजतिलक

# रावण वध लीला

## (संक्षिप्त कथा)

सुत मेघनाद के वध ने रावण को एक बार फिर झकझोर दिया। वह छल से, बल से या रण कौशल से किसी भी प्रकार राम की हस्ती मिटाने पर उतारू हो गया। पाताल लोक से अपने पुत्र अहिरावण को बुलाकर उसने यह काम उसे सौंप दिया। अहिरावण ने छल से राम-लक्ष्मण को अपने काबू में कर लिया, परन्तु जब बल प्रयोग का समय आया। तब प्रभु ने भक्त का मान रखते हुए हनुमान से उसका वध कराया और मकरध्वज का पाताल नगरी का राजा बना;या। अपनी चाल निष्फल होते देख रावण फिर बौखला गया तब उसे अपने ओछे बेटे नारान्तक की याद आई जिसे उसने मूलों में पैदा हुआ जानकर समुद्र में फिकवा दिया था। नारान्तक ने अपने बल से एक बार तो रामादल के दाँत खट्टे कर दिये, परन्तु नारद मुनि द्वारा उसकी मौत का भेद बताने पर प्रभु ने सुग्रीव के पुत्र दधिबल द्वारा उसका वध कराया।

अब रावण आपे से बाहर हो गया। वह काल के वश होकर श्री राम

से युद्ध करने चला। तब भयंकर युद्ध हुआ। राम रावण युद्ध। एक बार तो रावण ने श्री राम को हैरानी में डाल दिया, परन्तु अपने ही भाई विभीषण द्वारा उसकी मौत का रहस्य खुलने पर उसने हमेशा-२ के लिए श्री राम के हाथों मुक्ति पाई। प्रभु ने अपने वचनानुसार विभीषण को लंका का राजा बनाया और भरे समाज में पत्नी सीता को अग्नि की साक्षी में निष्कलंक साबित कर अपनाया। एक बार फिर अवध को अपनी खुशियाँ वापिस मिल गईं। श्री राम ने माता कैकई के मन का मैल धो डाला और अवध के राजसिंहासन को सुशोभित किया।

⇔

# पात्र परिचय
## (रावण वध लीला)

१. राम
२. लक्ष्मण
३. हनुमान
४. सुग्रीव
५. अंगद
६. जामवंत
७. नल
८. नील
९. वानर सेना
१०. विभीषण
११. राम का दूत
१२. रावण
१३. अहिरावण
१४. रावण का मंत्री
१५. रावण का द्वारपाल
१६. रावण का दूत
१७. सभासद
१८. नारान्तक
१९. दधिबल
२०. मकरध्वज
२१. धूमकेतू
२२. भरत
२३ शत्रुघ्न
२५. नारान्तक का मंत्री

### स्त्री पात्र

१. मन्दोदरी
२. अप्सरा
३. सीता
४. पार्वती

५. त्रिजटा
६. कौशल्या
७. कैकई
८. सुमित्रा
९. उर्मिला

# अहिरावण का वध

## (रावण वध लीला)

### सीन पहला

**स्थान :** मन्दोदरी का महल।

**दृश्य :** मन्दोदरी पुत्रशोक में बैठी है।

**पर्दा उठना**

**मन्दोदरी :** (रोते हुए) हाय बेटा..... !
दिल का खिलौना हाय टूट गया।
बेटा हमारा हम से रूठ गया।

**रावण :** (प्रवेश करके) प्रिये ! मन में धीरज रखो। विलाप करने से भाग्य की रेखा नहीं मिटती। ये दुनियाँ तो आनीजानी है।

**मन्दोदरी :** (रोते हुए) स्वामी ! धीरज कैसे रखूँ जब धीरज का सहारा ही न रहा।

**रावण :** प्रिये ! मेरे जीते जी तुम किसी बात की चिन्ता मत करो। मैं सुत मेघनाद के मरने का बदला अवश्य लूँगा। मैं शिव मन्दिर जा रहा हूँ प्रिये ! अभी मैं पाताललोक से सुत अहिरावण को बुलाता हूँ जो इन तपसियों का हरण करके देवी की भेंट चढ़ायेगा तब उन तपसियों का दुनियाँ से नामोनिशान मिट जायेगा। तुम मन में शान्ति रखो। अच्छा प्रिये ! अब मैं जाता हूँ।

**(रावण का जाना)**

**पर्दा गिरना**

### सीन दूसरा

**स्थान :** शिव मन्दिर ।

**दृश्य :** रावण ध्यान में लीन है ।

## पर्दा उठना

### ॥ चौपाई ॥

मंत्राकर्षण जपि दसभाला । अहिरावन चित डोल पताला ॥
चलेउ बहुरि आयउ सो तहँवा । सिव मंडप रावन रह जहँवा ॥

**अहिरावण :** (जमीन से प्रगट होकर) पिताजी ! जय शंकर की । कहिए ? किसलिए मुझे याद किया..... ?
हाजरे खिदमत में हूँ, इरशाद हो कुछ नेक नाम।
किसलिए थी इन्तजारी, और क्या है मुझसे काम।

### ॥ दोहा ॥

अहिरावन तब रावनहिं, बूझी कुशल सप्रीति ।
प्रथ कही तेही सब कथा, जैसे भगिनि अनीति ॥

**रावण :** (छाती से लगाकर आधे आसन पर बैठाते हुए)
हे तात कुशलता नहीं यहाँ, लंका पर आफत आई है ।
दो तपसी लड़कों ने आकर, लंका पर करी चढ़ाई है ।

**अहिरावण :** पिताजी ! आपसे दुश्मनी करने का कोई कारण तो होगा ?

**रावण :** क्या बताऊँ पुत्र ! अयोध्या नगरी के राजा दशरथ के दो तपसी बच्चे हमारी पंचवटी पर निवास कर रहे थे तभी एक दिन बहन सूपनखा हवा खोरी करने वहाँ पहुँच गई । उन तपसियों ने हमारी बहन से छल करना चाहा। उसके विरोध करने पर उन्होंने बहन सूपनखा के नाक-कान काट लिये । तब वह खर-दूषण आदि को साथ लेकर पहुँची, मगर उन तपसियों ने उनका भी काम तमाम कर दिया । तब बेटा ! इसी का बदला लेने के लिए मैंने मारीच को साथ लिया, जिसने सोने का मृग बनकर उन तपस्यियों को बहकाया और मैंने स्वयं भिखारी का भेष धारण करके उनकी आबरु सीता का हरण कर लिया ।

**अहिरावण :** शिव . . . . . ! शिव . . . . . ! यह तो आपने बहुत बुरा किया, पिताजी ! धर्म और नीति को छोड़कर कुमार्ग पर चलने में भलाई नहीं है।

पर तिरिया का चोरी करना, है बहादुरी का काम नहीं ।
मरते में लात लगा देना, इसमें होता कुछ नाम नहीं ।
तुम लड़के जिन्हें बताते हो वे नारायण अवतारी हैं ।
नर रूप किया धारण उनने, वे भार भूमि संहारी हैं ।
जो करनी करी आपने है, उस पर भी तो कुछ ख्याल करो ।
जो होना था सो हो ही गया, मत उसके लिए मलाल करो ।
इस अहंकार को त्याग अभी, श्री राम से संधि जोड़ लीजै ।
आगे कर जनक दुलारी को, सादर भेंट उन्हें दीजै ।
क्यों वृथा रार बढ़ाते हो, इतनी क्यों कुमति कमाई है ।
निकलेगा नहीं फायदा कुछ, बस इसी में तात भलाई है ।

**रावण :** पुत्र ! मैंने तुम्हें उपदेश देने के लिए नहीं, बल्कि सहायता करने को बुलाया है।

यदि क्षमा याचना करूँ जाय, तो कायरपन कहलायेगा ।
थोड़े से इस जीवन के लिए, वृथा ही दाग लग जायेगा।
अब प्रण ये ही ठाना है, यदि रामचन्द्र अवतारी हैं ।
मारा जाऊँ उनके कर से, तो भी मुझको शुभकारी है ।
यदि नहीं हुए अवतारी वो, नर-वानर ही कहलायेंगे ।
इसमें न जरा सन्देह करो, निज कर से मारे जायेंगे ।
कुछ भी हो परिणाम पुत्र, यह अच्छी तरह विचारा है ।
अब मारें या मर जायें हम, सब विधि से भला हमारा है ।
जो किया विभीषण भाई ने, अफसोस उसी का भारी है ।
सब भेद बताया लंका का, कीनी मुझ से गद्दारी है ।

**॥ दोहा ॥**

शर्म नहीं आती तुझे, देता है मुझे उपदेश ।
वीरों का यह धर्म नहीं, तजे तेग और देश ।

आज्ञा तो पिता की मानी थी, वह परशुराम तपधारी था ।
माता का शीश काट डाला, पितु का वह आज्ञाकारी था ।

**।। चौपाई ।।**

आनेहु बोलि तोहि निज पासा । कहहु सो यतन होइरिपु नासा ॥
सुनत सोच भा अहिरावन मन । बोला बचन सहावन पावन ॥

**रावण :** पुत्र ! तुमको अपने पास इसलिए बुलाया है कि वह उपाय कहो जिससे शत्रु का नाश हो ।

**अहिरावरण:** पिताजी ! आप चिन्ता न करें। मुझे देवी का वरदान है कि वानर जाति के अलावा मैं किसी ओर से न मारा जाऊँगा।

अच्छा मैं जाता हूँ निशि ही में, दोनों को हर ले जाऊँगा।
बलिदान माँगती है देवी, उनको यह भेंट चढ़ाऊँगा।
बतलाता हूँ तुम्हें परीक्षा, ये वह ध्यान हृदय अन्दर रखना।
हो सूर्य समान तेज प्रकाश, लो समझ कार्य हो गया अपना।

**रावण :** (खुश होकर) जाओ बेटा ! तुम अपने उद्देश्य में सफल रहो तभी मुझे शान्ति मिलेगी।

**अहिरावण :** (सिर नवाकर) अच्छा पिताजी ! जय शंकर की।

**(अहिरावण का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**।। व्यास : दोहा ।।**

कहि असि बचन प्रबोध करि, सीस नाइ बल भाखि ।
आयउ रघुपति कटक महं, निज देविहि उर राखि ॥

## सीन तीसरा

**स्थान :** समुद्र तट।

**दृश्य :** रामादल।

**पर्दा उठना**

**राम :** हे तात विभीषण जी ! रावण के सभी योद्धा क़ाम आ चुके

हैं। अब या तो वह खुद युद्ध में आयेगा या जानकी को दे जायेगा।

**विभीषण :** नहीं प्रभो ..... ! ऐसी बात नहीं है। रावण बड़ा हठी है। वह अभी अपने सगे-सम्बन्धियों को बुलायेगा।

**हनुमान :** प्रभो ! अर्धरात्रि हो चुकी है। सभी वानर सेना अलसा गई है। इसलिए सोने की आज्ञा दीजिये और आप भी विश्राम कीजिए।

**राम :** हाँ..... ? ठीक है..... ? सब लोग आराम करो।

**सुग्रीव :** हनुमान जी ! आप पहरे पर सावधान रहना।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) बहुत अच्छा, महाराज ! आप सब निश्चिंत होकर सो जाइये।

**(सबका सोना। हनुमान का पहरे पर खड़ा होना)**

**॥ चौपाई ॥**

देखिय उन्नत सैल समाना । द्वार जहाँ तहँ मुख हनुमान ॥
देखि हृदय अहिरावन हारा । किमिरबि गृहकर तिमिर पसारा ॥

**अहिरावण :** (प्रवेश करके एक ओर खड़ा होकर) अब परकोटे में कैसे जाऊँ? कौन सी तरकीब से राम-लक्ष्मण को चुराऊँ? यह वानर तो बड़ी सावधानी से पहरा दे रहा है। सबको अपनी पूंछ के घेरे में ले रहा है। (सोचकर) बस... ! बस... ! अब यही उचित है कि विभीषण का भेष बनाऊँ और वानर को धोखा देकर परकोटे में घुस जाऊँ।

**(अहिरावण का विभीषण का भेष बनाकर आना)**

**॥ चौपाई ॥**

एकौ युक्ति न मन ठहरानी । कपट वेष तेहि कीन्ह भवानी ॥
वेष विभीषन सब अनुहारी । पवन तनय पहँगा छलकारी ॥

**हनुमान :** (अहिरावण को आगे बढ़ता देखकर टोकते हुए) कौन है? वहीं खड़ा रह। आगे कहाँ जाता है?

**अहिरावण :** जय प्रभो जानकी नाथ की जय।

**हनुमान :** कौन है, भाई ! आधीरात को रामादल में क्या काम है ।

**अहिरावण :** कोई नहीं भैया ! मैं हूँ विभीषण । क्या पहचान नहीं पाये ?

**हनुमान :** (देखकर) विभीषण जी ! इस समय तक कहाँ रहे ?

**अहिरावण :** भाई ! समुद्र तट पर संध्या करने गया था । आज देर हो गई ।

**हनुमान :** तात विभीषण जी ! आप अपनी कुछ पहचान दिखाइये ।

**अहिरावण :** (माला दिखाते हुए) देखो भाई ! ये रामानन्दी माला है । क्या आप पहचान नहीं पाये ?

**हनुमान :** (माला देखकर रास्ता छोड़ते हुए) अच्छा. . . ? अब आप जा सकते हैं ।

**।। चौपाई ।।**

आयसु पाइ गयऊँ सो तहवाँ । रहे फनीस अरु प्रभु दोउ जहवाँ ॥

**(अहिरावण का परकोटे में प्रवेश करना)**

**।। चौपाई ।।**

अहिरावन मन कीन्ह प्रनामा । देखि राम सुन्दर घनश्यामा ।<br>
सो प्रभु तेहि देखा भरि लोचन । कृपा सिंधु सेवक भय मोचन ॥<br>
बहुरि हृदय तेहि कीन्ह बिचारा । करहुं काज रावन अनुसारा ॥

**अहिरावण :** (खुश होकर) अब मुझे शीघ्र ही राम-लक्ष्मण को उठा कर ले जाना चाहिए परन्तु यदि कोई जाग गया तो लेने के देने पड़ जायेंगे । (सोचना)

**।। व्यास : दोहा ।।**

मोहन ते मोहे सकल, मंत्रन ते मुख मूँदि ।<br>
भयउ अदृश्य उठाय करि, प्रभुहि चलेउ लै कूंदि ॥

**अहिरावण :** ठीक है . . . . . ? सब पर मोहिनी मंत्र डालकर अचेत बनाता हूँ और खुद छिपकर राम-लक्ष्मण को उठा के ले जाता हूँ, परन्तु इस वानर पर तो मेरा मोहिनी मंत्र नहीं चल पायेगा । हाँ. . . ? राम मंत्र इस पर जरूर काम आयेगा ।

(अहिरातण द्वारा हनुमान पर राम मंत्र फैंकना तथा सब पर मोहिनी

मंत्र डालना । सबका गहरी नींद में सो जाना । राम-लक्ष्मण को उठाकर ले जाना)

**॥ चौपाई ॥**

यहि बिधि गयउ दुहुंन लै सोई । नभ मारग प्रकास अति होई ।
लै निज लोक गयउ पल माहीं । भयउ सोर सब कपि दल माहीं ॥
जागे बानर श्रीहत भारी । देखिय जिमि सरिता बिनु बारी ॥

**(रामादल का जागना)**

**विभीषण :** (इधर-उधर देखकर विस्मय से) हे... ? तात हनुमान जी ! प्रभु कहाँ हैं ? आज तो लक्ष्मण जी का भी पता नहीं । मुझे तो ऐसा मालूम होता है..... ?
जिसने सीता का हरण किया, क्या उसने हरा राम को भी।
निर्दयी निशाचर हत्यारा, ले भागा दयाधाम को भी।

**हनुमान :** (क्रोधित होकर) हूँ..... ?
यदि ऐसा है तो सारी लंका, सागर के मध्य बहा दूँगा।
दशमुख के शत-शत टुकड़े कर, गीधों का ग्रास बना दूँगा।
हे पामर, पापी सावधान, अब यह हनुमान भयंकर है।
कल तक लंका दाहक ही था, पर आज पूर्ण प्रलयंकर है।
(सोचकर) नहीं..... !
जिन प्रभु ने रण में उस, कुम्भकरण को मारा है।
जिन लक्ष्मण ने मेघनाद, इन्द्रजीत संहारा है।
जिनके कि नाम के बल से, मैंने लंका दहन किया।
अंगद ने पाँव जमा करे, खलदल का बल शमन किया।
उन स्वामी को किसका साहस, जो ले जाये कपि मंडल से।
रावण तो क्या यमराज तलक, थर्राता है रामादल से।

**अंगद :** क्यों जामंवत जी ! आपको कुछ पता है ।

**जामवंत :** नहीं भाई ! मैं तो तुम्हारे पास ही सो रहा था ।

**अंगद :** सुग्रीव जी ! आपको कुछ पता है कि प्रभु कहाँ चले गये ?

**सुग्रीव :** नहीं भाई ! मैं तो बिल्कुल अन्जान हूँ। रात हनुमान जी

पहरे पर थे उन्हीं से पूछना चाहिए।

**जामवंत :** हनुमान जी ! रात्रि में जब आप पहरा दे रहे थे तब प्रभु कैसे चले गये ?

**हनुमान :** (दुखी होकर) क्या बताऊँ, भाई ! मैं खुद ताज्जुब में हूँ। (सोचकर) हाँ ..... ? याद आया ..... ? आधी रात को विभीषण जी संध्या करके लौटे थे।

**विभीषण :** (अचरज से) हैं ..... ! नहीं भाई ..... ! मै तो प्रभु के चरणों के पास गहरी नींद सो रहा था।

**हनुमान :** (अचरज से) हैं ..... ? यह आप कैसे कहते हैं ..... ? मैंने स्वयं देखा था। आप आधी रात को आये थे और सुनो ..... ?

मैं जब प्रबन्ध में था तब, आप कहीं से आये थे।
उस डरावनी अंधियारी में, कुछ बात नहीं कर पाये थे।
मैं रहा उधर अपनी धुन में, पर आप नाथ की ओर गये।
इसलिए आप ही बतलायें, किस दिशा से युगल किशोर गये।

**विभीषण :** (दुखी होकर विस्मय से) क्या मैं ..... !

**हनुमान :** (चिल्लाकर) हाँ ..... ! हाँ ..... ! आप ..... !

**विभीषण :** क्या यही रूप था ..... ?

**हनुमान :** बिल्कुल यही ..... !

**विभीषण :** और ऐसी ही बोली ..... !

**हनुमान :** जी हाँ ..... ! ऐसी ही ..... !

**विभीषण :** बस ..... ? मैं समझ गया ..... ? हे तात हनुमान जी !

चन्द्रोदय के उपरान्त रहा, मैं तो प्रभु ही की सेवा में।
फिर उन चरणों ही के समीप, सोया कुछ गहरी निद्रा में।
रावण का बेटा अहिरावण, पाताल लोक से आया है।
निश्चय अंधियारी का कौतुक, उसने ही यहाँ रचाया है।
मेरे स्वरूप में आ वह ही, रघुवर को उठा ले गया है।
दुख भंजन को इस भाँति छीन, दुख सबको दुष्ट दे गया है।

॥ दोहा ॥

तुमसे भी हे वीर वर, खेल गया वह चाल ।
पृथ्वी पर जो थे उन्हें, पहुँचाया पाताल ॥

**अंगद :** (दुखी होकर) तो अब क्या होगा? हम प्रभु को कैसे पायेंगे ?

**विभीषण :** बस..... ? जिसमें बल हो वह सीधा पाताल जाये और अहिरावण को जीतकर प्रभु को छुड़ा लाये ।

**जामवंत :** हे तात हनुमान जी ! तुम्हारे बल को संसार जानता है... ?

यह काम आप कर सकते हैं, नहीं और किसी के बसका है ।
हर समय वक्त पड़ जाने पर, बैरी को तुमने मसका है ।

**हनुमान :** अच्छा..... ! मैं जाता हूँ और तीनों लोक चौदहों भुवन में जहाँ कहीं प्रभु होंगे मैं उन्हें लेकर आऊँगा । तुम सब सावधान रहना । "जय श्री राम"

(हनुमान का जाना)

पर्दा गिरना

॥ चौपाई ॥

अब तुम सजग रहेउ सब भाई । लरेहु काल सन जो चढ़ि आई ॥
अस कहि सकृत चलेउ हनुमाना । गर्जन प्रलय पयोद समाना ॥

## सीन चौथा

**स्थान :** पाताल नगरी का प्रवेश द्वार ।

**दृश्य :** मकरध्वज पहरा दे रहा है ।

पर्दा उठना

॥ चौपाई ॥

अभय फलाँग पतालहि गयऊ । अहिरावण पुर प्रविसत भयऊ ।
द्वारपाल मकरध्वज कीसा । कपि सन डाटि कहत बहु रीसा ॥

(हनुमान का प्रवेश)

**मकरध्वज :** (हनुमान को जाते देखकर) कौन है जो ऐसा निडर होकर

नगर में घुसा जा रहा है।

**हनुमान :** (डपटकर) और तू कौन है जो मेरे मार्ग में रोड़ा अटका रहा है।

**मकरध्वज :** (आगे आकर रोकते हुए) मुझे अपने स्वामी की आज्ञा है कि नगर में कोई प्रवेश न करे।

आज्ञा स्वीकार न की तो फिर, उत्पात पूर्ण हो जायेगा।
बालक द्वारा हे वृद्ध कीश, अभिमान चूर्ण हो जायेगा।
इसलिये यहाँ से लौट जाओ, बानर के नाते कहता हूँ।
मैं मकरध्वज कहलात हूँ, कपिवर हनुमत का बेटा हूँ।

**हनुमान :** (चौंककर) क्या कहा..... ? हनुमान का बेटा..... !

**मकरध्वज :** हाँ..... ! वही हनुमान जो जला चुके हैं लंका को।

**हनुमान :** (गरजकर) अरे दुष्ट ! क्यों बढ़ा रहा है शंका को ?
मैं ही हनुमत हूँ इधर देख, प्रभु का आज्ञाकारी हूँ मैं।
कैसा बेटा किसका बेटा, जब बाल ब्रह्मचारी हूँ मैं।

**मकरध्वज :** (हाथ जोड़कर) हे पिताजी..... !
कर लंका दहन पिता तुमने, जब जल में पूँछ बुझाई थी।
उस समय पसीने की धारा, सागर में बहकर आई थी।
मछली ने उसका पान किया, रह गया गर्भ तत्काल उसे।
मिल गया विचित्र देव गति से, मकरध्वज सा लाल उसे।

**।। व्यास : दोहा ।।**

सत्य बचन हनुमान कहि, पुनि पूछी सब बात ।
लावा लछिमन राम कहँ, कहा करत सो तात ॥

**हनुमान :** हे पुत्र ! तुम्हारा वचन सत्य है। तुम्हारा स्वामी श्री राम-लक्ष्मण को ले आया है। अब उस स्थल का नाम बताओ क्योंकि मैं तुम्हारे स्वामी के स्थान को जाना चाहता हूँ।

**मकरध्वज :** हे पिताजी ! जो बात मैंने कानों से सुनी है वह आपको बताता हूँ। सीता जी के स्वामी श्रीराम जी और लक्ष्मण जी

को वह राक्षसराज साथ में ले आया है उसी कारण आज होम कर रहा है और उन दोनों भाइयों को देवी की भेंट चढ़ायेगा। आप जाने को कहते हैं परन्तु, पिताजी ! इस समय मैं धर्म संकट में हूँ। एक ओर पिताजी की आज्ञा है तो दूसरी ओर स्वामी का आदेश। अब आप ही बताइये मैं क्या करूँ ?

स्वामी का आदेश उधर, आदर इस ओर पिता का है।
असमंजस में है मकरध्वज, यह सोच रहा करना क्या है।
उस ओर कुँआ है दीख रहा, इस ओर दीखती खाई है।
है ऐसी जगह खड़ा सेवक, पथ देता नहीं दिखाई है।
पितुदेव आप ही बतलायें, इस समय धर्म क्या है मेरा।
हे कर्मशील है कर्मवीर, कर्त्तव्य कर्म क्या है मेरा।

**हनुमान :** हे बेटे..... !

कर्त्तव्य पूछते हो अपना, तो सुनो बाप सन्तुष्ट हुआ।
तुम निश्चय ही मेरे सुत हो, यह सिद्ध हुआ यह पुष्ट हुआ।
हनुमत का ही बेटा ऐसा, गम्भीर प्रश्न कर सकता है।
कर्त्तव्य विपक्षी तक से भी, होकर बेधड़क पूछता है।

परन्तु बेटा ! मेरा धर्म है कि मैं नगरी के भीतर जाकर अपने स्वामी को ले आऊँ और तुम्हारा कर्त्तव्य है कि मुझें बलपूर्वक नगरी के बाहर रोको। सुनो..... ?

जब लक्ष्य भिन्न दोनों का है, तो कैसा बाप और बेटा।
दो वीरों में मल्लयुद्ध होगा, बस अब इसी ठौर बेटा।

**(दोनों में मल्लयुद्ध होना। हनुमान द्वारा मकरध्वज को पूंछ से बांधकर नगर में प्रवेश करना)**

**स्थान :** देवी का मन्दिर।

**दृश्य :** राक्षस पूजा कर रहे हैं।

**॥ चौपाई ॥**

सुतहि लूम सन बांधि भवानी। चलेउ वायुसुत बिलम न आनी ॥

धरि लघु रूप होम ग्रह देखा। जीव सजीव परे नहिं लेखा ॥
तहँ देवी कर मंडप रहई। शोनित घट बहु को कहि सकई ॥

**हनुमान :** (छोटा रूप रखकर प्रवेश करके) यही है देवी का मंदिर यहीं वह दुष्ट राक्षस प्रभु को लेकर आयेगा और देवी की भेंट चढ़ायेगा। इसलिए यही उचित है कि इसको रसातल में धंसा दूँ और खुद बैठकर यहाँ का दृश्य देखूँ।

**(हनुमान का मन्दिर में देवी की जगह बैठना)**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

छुवत चरण देवी तुरत, धरणी गई समाइ ।
मुख पसारि ठाढ़े, भये, कपि छवि लखत डराइ ॥

(राक्षसों द्वारा पूजा करना। हनुमान द्वारा सब चढ़ावा खाना)

**॥ चौपाई ॥**

करि प्रनाम पुनि पूजा करहीं। जो चढ़ाव सो कपि मुख परहीं ॥
जबहीं होम सिद्ध तेहि जाना। लछिमन राम तुरत तहँ आना ॥

**अहिरावण :** (राम-लक्ष्मण के साथ प्रवेश करके) हा.... हा....हा.... !
तुम अब तक यही जानते हो, देवी की बलि को आये हैं।
कुछ और बात भी है कह दें, किस हेतु तुम्हें हम लाये हैं।
रावण से तुमने युद्ध ठान, सिर अपने बहुत उठाये हैं।
वे सिर देवी की भेंट चढ़ें, इस हेतु तुम्हें हम लाये हैं।
अभियान तुम्हारा ही तुमको, यह भारी दण्ड दे रहा है।
रावण से लड़ने का बदला, अहिरावण आज ले रहा है।

**लक्ष्मण :** (क्रोध से) ओ चोर पिता के चोर पूत! क्या तू नहीं जानता?
सीता देवी के कारण ही, हम रण रावण से करते हैं।
रावण से भी क्यों यों न कहें, उस दुष्ट चोर से लड़ते हैं।
तूने भी चोरी की इससे, यह कथन सिद्ध हो जाता है।
चोरों का साथी निश्चय ही, मौसेरा भाई कहलाता है।
अरे दुष्ट! सतवंती सीता के बल पर हमें पूरा भरोसा है।

तू हमको क्या मारेगा ?
इस कारण तुझे चिताते हैं, तू पतिब्रता का शाप न ले।
रावण की तरह अहिरावण, अपने माथे पर पाप न ले।
देवी मैया सब समझ रहीं, अन्याय नहीं कर सकती हैं।
सीता सी सती साध्वी का, सौभाग्य नहीं हर सकती हैं।

**अहिरावण :** हा..... हा..... हा..... खूब ? बहुत खूब ..... ?

**(व्यंग्य से)**

बूढ़ों की कही कहावत वह, इस समय ध्यान में आती है।
रस्सी तमाम जल जाती है, पर ऐंठ न उसकी जाती है।
मरने को खड़ा हुआ है पर, अपनी ही हाँके जाता है।
आ गया काल के मुँह में, फिर भी बकवास लगाता है।
अच्छा तू अकड़ दिखाये जा, मुँह तेरे मुझे न लगना है।
जो यमपुर जाने वाला है, तकरार न उससे करना है।
इतना कह दूँ तुम दोनों से, मरने की घड़ी आ रही है।
इस कारण देवी के सम्मुख, पूछी यह बात जा रही है।
अन्तिम अभिलाषा क्या है, उसको वर्णन कर सकते हो।
अतिशय प्यारा है जो तुमको, उसका सुमिरन कर सकते हो।

**॥ चौपाई ॥**

पुनि अस बचन मूढ़मति कहहीं । सुमिरहु जो तुम्हरे हित अहही ।
जाना देवि रूप हनुमाना । बिहंसि कहा तब राम सुजाना ॥

**राम :** (मुस्कराकर) हे भाई..... !

यों तो भाई श्री भरत-लक्ष्मण, राघव की युगल भुजायें हैं।
कैकई-कौशल्या दोनों ही, जीवन दात्री मातायें हैं।
पर आज ध्यान में हनुमत है, सीता को जो कि दुलारा है।
सुमिरन इस समय उसी का है, वह ही प्राणों से प्यारा है।
हनुमत के होते राघव, को भी सता नहीं सकता।
रावण-अहिरावण तो क्या, यम तक भी डरा नहीं सकता।

**अहिरावण :** (झुंझलाकर क्रोध से) हूँ..... ?

हनुमत-हनुमत कैसा हनुमत, कपिदल में वह तो सोता है।
तुम दोनों उसको रोते हो, वह तुम दोनों को रोता है।
है धन्य तुम्हारा यह शरीर, जो देवी की बलि चढ़ता है।
ऐसा अच्छा संयोग भला, क्या कहीं सहज मिल सकता है।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

प्रगट रूप करि पवनसुत, अट्टाहस गम्भीर ।
अति भय त्रासित रजनिचर, सुनहु उमामतिधीर ॥

(अरहिरावण का अट्टहास कर तलवार उठाना । हनुमान का प्रगट होकर पीछे से लात मारकर अहिरावण को मार कर अग्नि में फैंक देना)

**हनुमान :** (राम के चरणों में गिरकर) चलिये प्रभु ! सभी वानर आपके वियोग से दुखी हैं ।

**राम :** (उठाकर छाती से लगाकर) तात हनुमान जी..... !
सीता और लक्ष्मण को, प्राणों का दान दिया तुमने।
पर आज राघव को भी, जीवन हनुमान दिया तुमने।
अब तुम उस पर पहुँच गये, जहाँ द्वैत का खेद नहीं।
हो राम-हनुमान एक, हनुमान-राम में भेद नहीं।
अच्छा अब मकरध्वज को पाताल का राजा बनाओ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जैसी आज्ञा महाराज !

(हनुमान का राम-लक्ष्मण सहित प्रवेश द्वार पर आना । मकरध्वज के बन्धन खोलना । मकरध्वज का प्रणाम करना । हनुमान द्वारा तिलक करना फिर राम-लक्ष्मण को लेकर जाना)

**पर्दा गिरना**

**दृश्य परिर्वतन**

**स्थान :** समुद्र तट ।

**दृश्य :** रामादल ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

आहुति पूर्ण दीन्ह तब कीसा । लै पुनि चलेउ लषन जगदीसा ॥

मकरध्वज विनती तब कीन्हा । बंधन तोरि राज्य तेहि दीन्हा ॥
अस कहि कपिनिज दलसो आवा । हर्षेउ कटक सबनि सुख पावा ॥

**(सबका राम-लक्ष्मण के गले मिलना)**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

जामवंत अंगद सहित, मिले भालु और कीस ।
सन्माने कहि बचन प्रिय, लषन कोसलाधीस ॥

**बोलो . . . ! सियापति रामचन्द्र की जय ।**

**पर्दा गिरना**

# नारान्तक वध

## (रावण वध लीला)

**सीन पाँचवां**

**स्थान :** रावण दरबार ।
**दृश्य :** दरबार लगा है ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

सो प्रकास जब रावन देखा । किय प्रमान तेहि बचन बिसेखा ॥
मन महँ हर्ष करहि अति भारी । अहिरावन लं गा असुरारी ॥

**रावण :** हा..... हा..... हा..... रात्रि के प्रकाश से सिद्ध होता था कि अहिरावण उन दोनों तपसियों को चुराकर ले गया । अब वह उन दोनों को देवी की भेंट चढ़ायेगा और मेरी जीत का डंका चारों ओर बजायेगा । हा.. हा.. हा.. ।
राम तो क्या चीज है, काल भी भयभीत हो।
जिसके ऐसे पुत्र हों, कैसे न उसकी जीत हो।

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) यर्थाथ है महाराज !

**रावण :** आज इस विजय के उपलक्ष में घर-घर खुशियां मनाई जाएं । सारे नगर में दिवाली मनाई जाये ।
हर तरफ आनन्द ही, आनन्द ही छाया हुआ।

हर तरफ आनन्द ही, आनन्द ही छाया हुआ।
हर कोई मैखार की, बस्ती में हो आया हुआ॥

**मंत्री :** (सिर नवाकर) बहुत अच्छा महाराज ! ऐसा ही होगा ।

**(अप्सरा का गाना)**

साकी तेरी नजर न, इधर को फिरी कभी।
जी भरके दम ब दम, नहीं हमको मिली कभी॥

**रावण :** हा... हा... हा... वाह... ! वाह... ! आज तो चैन लुटा जा रहा है असली मजा आ रहा है । हा... हा... हा... ।

**॥ चौपाई ॥**

वहाँ दसानन सब सुधि पाई। दूत संदेस दीन्ह सब जाई॥
अहिरावन कर वध सुनि काना। भयउ तेजहत अति दुख मान॥

**दूत :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो। अन्नदाता ! अनर्थ हो गया ।

**रावण :** (अचरज से) क्या हुआ ?

**दूत :** अहिरावण भी मारे गये ।

**रावण :** (चौंककर) हैं..... ? मारा गया । किसने मारा ?

**दूत :** हनुमान ने ।

**रावण :** (सिर धुनकर रोते हुए) आह..... ! वज्रपात हो गया ।

अफसोस आरजुओं की, बस्ती उजड़ गई।
कैसी बनी थी बात कि, बनकर बिगड़ गई ।

**॥ दोहा ॥**

यह बिचारि बोलेउ सचिव, सुनहु दनुज कुलराय ।
धीर धरहु संसय बिगत, कहहुं सो करिय उपाय ।

**॥ चौपाई ॥**

अक्षादिकन सुतन बल दूना। कस सुरारि मन मानहु ऊना॥
सचिव बचन सुनि दसमुख कहई। अब हमरे कुल को भेंट अहई॥

**मंत्री :** (सिर नवाकर) हे दानव कुल के स्वामी ! मन में धैर्य धारण कीजिये। इतने निराश न होइये ।

**रावण :** अब हमारे कुल में कौन योद्धा है ? किसके भरोसे पर धैर्य धारण करूँ ?

**॥ चौपाई ॥**

अपने मन महँ करहु बिचारा । नारान्तक तनय तुम्हारा ॥
मूल अभुक्त ताहिं भा जोई । दियो बहाइ मरा नहिं सोई ॥
संभु प्रसाद ताहि कुछ भयऊ । पुर बिहबाबल नृपती दयऊ ॥
दूत पठाइ बुलाबहु ताहीं । जीतहि सो रिपु रन के माहीं ॥

**मंत्री :** (सिर नवाकर) महाराजॉ ! जरा विचार तो कीजिये कि आपका बली पुत्र नारान्तक बिहबाबलपुर में राज्य कर रहा है जिसे मूलों में पैदा होने के कारण आपने समुद्र में बहा दिया था ।

**रावण :** (खुश होकर) ठीक ..... ? बिल्कुल ठीक ..... ? तुमने खूब याद दिलाया और मेरे सच्चे हितैषी का स्मरण कराया । अच्छा किसी दूत को बुलवाओ और नारान्तक के पास संदेश भिजवाओ ।

**मंत्री :** (सिर नवाकर) महाराज ! धूमकेतु बड़ा चतुर और वीर है यदि उसे भेज दिया जाय तो अच्छा है ।

**(द्वारपाल का जाना)**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

तासु मन्त्र सुनि दसबदन, हृदय प्रमोद महान ।
धूम्रकेतु कहँ बोलि ढिंग, समझायउ सनमान ॥

॥ चौपाई ॥

धूम्रकेतु तुम परम सयाना । लै मम पाती करहु पयाना ॥
वसत जहाँ नारान्तक राजा । तहां न तात अवर कर काजा ॥
अवसर पाइ हेतु समुझाई । सपदि तहि लै आनौं भाई ॥

**धूम्रकेतु :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो । सेवक को क्या आज्ञा है ।

**रावण :** (पत्रिका देते हुए) हे धूम्रकेतु ! तुम परम चतुर हो । मेरे पत्र

को लेकर जाओ। हे तात! बिहबाबलपुर में राजा नारान्तक निवास करता है वहाँ जाना और नारान्तक को अतिशीघ्र साथ ले आना।

## सीन छठवाँ

**स्थान :** नारान्तक दरबार।

**दृश्य :** दरबार लगा है।

### पर्दा उठना

**नारान्तक :** हा..... हा..... हा..... ।

मेरे यश और कीर्ति को, जानता संसार है।
मेरा वैभव उच्च है, मेरा अमिट भण्डार है।
धाक से कंपा दिया, लोक और सुरधाम को।
जानते हैं आज सब, नारान्तक के नाम को।

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) यथार्थ है, महाराज !

**द्वारपाल :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो। लंका का राजदूत आया है जो श्रीमान के नाम कोई संदेश लाया है ?

**नारान्तक :** अच्छा... !आने दो।

### ॥ चौपाई ॥

दीन्ह पत्रिका पद सिर नाई। कुसल तासु बूझी हरषाई॥

**धूम्रकेतु :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो। (पत्र देते हुए) लंकापति महाराज रावण ने मुझे भेजा है और आपके नाम यह पत्र दिया है।

**नारान्तक :** हाँ..... !हाँ..... !हमने सुना है कि रावण हमारे पिता हैं। कहो..... ? सब प्रकार से कुशल तो है।

**धूम्रकेतु :** कुशल कहाँ, महाराज ! आजकल लंका पर बड़ी आफत आई हुई है। शत्रु की सेना चारों ओर से मंडरा रही है।

**नारान्तक :** (अचरज से) हैं..... ? क्या कहा..... ? शत्रु की सेना। ऐसा कौन मूर्ख है, जिसने लंका पर चढ़ाई कर दी है।

**धूम्रकेतू :** महाराज ने पत्र में सब कुछ लिख दिया है और आपको

साथ लेकर आने को कहा है ।

**नारान्तक :** (मंत्री को पत्र देते हुए) मंत्री जी ! यह पत्र पढ़कर सुनाओ ।

**मंत्री :** (पत्र लेकर सिर नवाकर) जो आज्ञा, महाराज ।प्रिय पुत्र ! प्रसन्न रहो । मैं अभागा हूँ जो तुम जैसे पुत्र से अलग पड़ा हुआ हूँ । आजकल लंका पर महान संकट आया हुआ है । अयोध्या के दो राजकुमार राम और लक्ष्मण ने अनर्थ कर डाला है । साक्षात मौत से पड़ गया पाला है । मेरे सब योद्धा काम आ चुके हैं । मुझे तुम्हारी सहायता की जरूरत है इसलिये यह पत्र पाते ही देर न लगाना और धूम्रकेतू के साथ जल्दी से जल्दी चले आना । तुम्हारा पिता—रावण

**पर्दा गिरना**

**॥ दोहा ॥**

नारान्तक लंका तुरत, दल समेत नियरान ।
दस जोजन दल रहेउ जब, सुनु मुनीस सुग्यान ॥

## सीन सातवां

**स्थान :** समुद्र तट ।

**दृश्य :** रामादल ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

इहाँ कृपालु रमेस खरारी । असित जलद सम सेन निहारी ।
प्रभु सर्वग्य नीति हित सेतू । सचिव बोलि कह रघुकुल केतू ॥
सखा बिलोकहु दक्षिण ओरा । गर्जत घन आवत नहिं थोरा ॥
राम बचन सुनि दसमुख भ्राता । कहि हँसि गहि प्रभु पद जल जाता ॥
देव देव नहिं दल जलवाहा । अहहि नरन्तक निसिचर नाहा ॥

**राम :** हे तात विभीषण जी ! दक्षिण की ओर देखो, घने मेघ गर्जते हुए आ रहे हैं ।

**विभीषण :** (चरण कमलों को पकड़कर हँसते हुए) हे प्रभो ! यह मेघों का दल नहीं है। राक्षसों का स्वामी नारान्तक आ रहा है।

**दूत :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो। रावण का पुत्र नारान्तक दलबल सहित बढ़ा आ रहा है।

**विभीषण :** हे स्वामी ! यह बिहबाबलपुर में रहता है। उसको रावण ने बुला भेजा है। वह कोलाहल के साथ भारी नाद करता हुआ दूत धूम्रकेतु के साथ आ रहा है।

**॥ चौपाई ॥**

यह प्रभाव तेहि सुनि भगवाना । बिहँसे प्रभु बलबुद्धि निधाना ॥

**राम :** (मुस्कराकर) हे तात हनुमान जी ! तुम लक्ष्मण सहित चले जाओ और मार्ग में ही रोककर उसका अहंकार मिटाओ।

**हनुमान :** (चरणों में सिर नवाकर) जैसी आज्ञा, प्रभो ! "जय श्री राम।"

**(हनुमान का लक्ष्मण तथा अंगद के साथ जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

पाइ राम रुख पवन कुमारा । उठे हर्षि हिय गरजि प्रचारा ॥
सहित लषन प्रभु पद सिर नाई । धाए कहि जय जय रघुराई ॥

## सीन आठवाँ

**स्थान :** लंकानगरी का बाहरी भाग।

**दृश्य :** रास्ता। हनुमान जी लक्ष्मण सहित चले जा रहे हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

बूझेउ दूतहि निसिचरत्राता । यह आवत धावत को भ्राता ॥
तब नारान्तक सन कह दूता । यहै पवनसुत बली अकूता ॥

**नारान्तक :** (सेना के साथ प्रवेश करके हनुमान को देखकर) धूमकेतू ! यह कौन है जो सामने से अकड़ता हुआ आ रहा है।

**धूमकेतू :** महाराज ! यह हनुमान नाम का बड़ा ही वीर वानर है । इसी ने एक बार लंका को जलाया था और अहिरावण को मारकर दोनों भाइयों को बचाया था ।

**॥ चौपाई ॥**

नारान्तक अति हृदय रिसाई । कपि तट पहुँचा आतुर धाई ॥
कह भलि कीस जो कछु बल धरहू । मोसन मल्लयुद्ध रन करहू ॥

**नारान्तक :** हा . . . हा . . . हा . . . चलो. . . . ? अच्छा ही हुआ . . . . . ? पहले ही मुहूर्त में ही शिकार मिला ।
चढ़ रहा है जो इसे, सारा नशा खिल जायेगा ।
बैर का रावण के बदला, आज ही मिल जायेगा ।

**हनुमान :** (नारान्तक का आगा रोककर) ठहर. . ! ओ नारान्तक. . . ! आगे कहाँ जाता है ?
आ गया मरने को तू भी, खिंच के अपने आप से ।
कर यहाँ दो हाथ पहले, पीछे मिलना बाप से ।

**नारान्तक :** (क्रोध से) आ . . . ! आ . . . ! मैं भी यही चाहता था । पिता से मिलने पर कोई तो शुभ सूचना सुनाऊँ ?
सुन चुका हूँ मैं अभी, सबसे अहंकारी है तू ।
देखना मुझको यही है, कितना बलकारी है तू ।

**हनुमान :** अच्छा . . . . . ! तो संभल . . . . . ! और अच्छी तरह से देख हमारा बल ।

**(दोनों का युद्ध होना । नारान्तक द्वारा धनुष चढ़ाना । हनुमान जी द्वारा उसे तोड़कर छाती में घूँसा मारना । नारान्तक का पृथ्वी पर गिर जाना ।)**

**हनुमान :** (हाथ झाड़कर) चल . . . . . ? दूर हो पापी !

**नारान्तक :** (उठकर अरे पाजी) ! जरा पैर फिसल गया था । अब बचकर कहाँ जाता है ? देखता हूँ तुझे कौन बचाता है ?

**॥ चौपाई ॥**

लरत अकेल तहाँ हनुमाना । धायउ बालि तनय बलवाना ॥

**अंगद :** (प्रवेश करके) जय श्री राम । ओर नारी चोर की औलाद ! इतनी बातें क्यों बनाता है ? यदि वीर है तो पराक्रम क्यों नहीं दिखाता है ?

**नारान्तक :** (क्रोध से) अरे मूर्ख ..... !
सोच ले दुनियाँ से तेरा, आबो दाना उठ गया।
जिंदगी के दिन गये, सुख का जमाना उठ गया।

**अंगद :** (क्रोध से) क्यों नहीं ..... ? अरे घमण्डी ..... !
जान ले संसार से अब, तेरा साझा उठ गया।
कह उठेगा आज रावण, वंश मेरा उठ गया।

**नारान्तक :** (क्रोध से) ओह ..... ! इतना मुँहफट ..... ! इतना वाचाल ..... ! देखने में सीधा और आदत का चाण्डाल ।
चाहता है जी तेरा, जाने को यम के धाम को।
छोड़ जायेगा यहाँ, रोता बिलखता राम को।

**अंगद :** (क्रोध से) यह समय ही बतायेगा कि यम के धाम को कौन जायेगा ?

**नारान्तक :** अच्छा ..... ! तो ..... ? आगे बढ़ और युद्ध कर ।

**(दोनों में युद्ध होना)**

**नारान्तक :** (लड़ाई रोककर) देखो ..... ? संध्या का समय हो रहा है । धर्म नीति के अनुसार लड़ाई बन्द की जाये ।

**अंगद :** अच्छा ..... ? तो जा ..... ? अब विश्राम कर । प्रातःकाल फिर देखा जायेगा ।

**(सबका जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

अंगद हनुमदादि कपि भालू । आए जहँ रघुबीर कृपालु ॥
अति आदर प्रभु किए सन्माना । सब कहँ बैठन कह भगवाना ॥
उत नारान्तक सेन समेता । गयउ जहाँ दसकंध निकेता ॥
सुतहि सुरारि मिला पुलकाई । कुसल बूझ बैठिउ हरषाई ॥

## सीन नवाँ

**स्थान :** रावण दरबार ।

**दृश्य :** दरबार लगा है ।

### पर्दा उठना

**धूमकेतू :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) महाराज की जय हो । नारान्तक जी आ गये हैं ।

**रावण :** (खुश होकर) अच्छा..... ! उसे आदर सहित ले आओ ।

**धूमकेतू :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा, महाराज !

### (धूमकेतू का जाना)

### ॥ चौपाई ॥

देखि नारान्तक कै समुदाई । दस मुख सठ सब सोच दुराई ॥
जेहि विधि हरि लावा जगमाता । ताहि आदि कृत-२ बिख्याता ॥
कुभंकरन घननाद निपाता । कहि बिलखा अहिरावन घाता ॥
पितु मन मलिन नरान्तक देखा । बोला खल उर गर्व बिसेसा ॥
तजहु सकल संसय बिबुधारी । करिहहुं प्रात समर अति भारी ॥

**नारान्तक :** (प्रवेश कर सिर नवाकर) पिताजी ! जय शंकर की ।

**रावण :** (खुश होकर सिंहासन से उठकर गले लगाकर) जीवित रहो, पुत्र ! कहो..... ! कुशल तो है ।

**नारान्तक :** हाँ पिताजी ! सब प्रकार से कुशल है। केवल यहाँ के समाचार का दुख है ।

**रावण :** (दुखी मन से) हाँ बेटा ! लंका के सारे योद्धा मारे जा चुके हैं । अब तुम्हारा ही भरोसा है ।

**नारान्तक :** (हौंसला बढ़ाते हुए) तो..... ? चिन्ता की क्या बात है ? मैं अकेला ही सबको ठिकाने लगा दूँगा और अत्याचार का बदला चुका दूँगा ।

**रावण :** (खुश होकर) धन्य हो पुत्र । धन्य हो ! वास्तव में तुम सच्चे वीर हो ।

पर्दा गिरना

## सीन दसवाँ

**स्थान :** समुद्र तट।
**दृश्य :** रामादल।

पर्दा उठना

॥ चौपाई ॥

कपि घेरा गढ़ यह सुनि काना, रावण सुत लखि निपट रिसाना ।
साजि बिपुल दल हनत निसाना, गढ़ ते चला निकरि बलवाना ।

**नारान्तक :** (सेना सहित प्रवेश करके ललकार कर) ओ कायरो ! अब कहाँ जा छिपे हो? आज तो नारान्तक सारा झगड़ा ही मिटायेगा। देखता हूँ कि मेरे सामने कौन आयेगा।

**अंगद :** (श्री राम से आज्ञा पाकर क्रोध से) तो क्या तू अब भी बचकर चला जायेगा। ओ दुष्ट ! रावण को बुला तेरी लाश उठाकर ले जायेगा।
खैर थी जब तक तुझे, रावण ने बुलवाया न था।
जी रहा था जब तलक, तू सामने आया न था।

**नारान्तक :** (क्रोध से) अब तो सामने आ गया। अरे नीच..... !
हो चुकी है दुष्ट तेरी, जिन्दगानी हो चुकी।
तेरे जीवन के लिये, तेरी जवानी रो चुकी॥

**अंगद :** अच्छा..... ! अब आगे बढ़ और वीरों की तरह लड़।

**(युद्ध होना। अंगद का मूर्छित होकर गिरना)**

**हनुमान :** (श्री राम से आज्ञा पाकर प्रवेश कर) बस... ! बस... ! आपे से बाहर न हो। ले..... ? अब जीवन से हाथ धो।
बात तो करता है बहुत, बढ़ बढ़कर अभिमान से।
जीतकर दिखला जरा, संग्राम तू हनुमान से।

**नारान्तक :** (व्यंग्य से) ओह..... ! आप फिर आ गये। लंका को जलाने वाले और अहिरावण को मौत की नींद सुलाने

वाले फिर आ गये। आइये..... ? आज तुम्हें उस वीरता का पुरस्कार देता हूँ। राम को पीछे देखूँगा पहले तुम्हारी ही खबर लेता हूँ।

कायरों को जीतकर, बलवान बन बैठा है तू।
आज देखूँगा कि क्या, हनुमान बन बैठा है तू।

**हनुमान :** (क्रोध से) आ..... ! ओ अधर्मी आ..... ! बढ़ बढ़कर बातें ने बना।

आज दिखाऊँगा तुझको, वीर की क्या चाल है।
देख यह मुष्टिक निसाचर, वंश का ही काल है।

**नारान्तक :** (क्रोध से) बस..... ! बस..... ! ओ पापी मुष्टिक क्या दिखाता है ? साक्षात अपनी मौत को ही बुलाता है।

इस तरह उड़कर न चल, आपे से यो बाहर न हो।
देख तेरी राह में, सोया हुआ अजगर न हो।

**हनुमान :** (क्रोधित होकर) अजगर के बच्चे ! फूलों की सेज समझकर अग्नि में पाँव मत डाल।

देख ओ नादान अपने, प्राण का घातक न बन।
सो रहा है शेर इसको, छेड़ मत बालक न बन।

**नारान्तक :** (व्यंग्य से) शेर..... ! हूँ..... ! शेर और गीदड़ का पता अभी चल जायेगा।

हाथ करतब के दिखा, और छोड़ इस तकरार को।
वार अपना भी चला, और झेल मेरे वार को।

**(युद्ध होना। हनुमान का मूर्छित हो जाना)**

**(नारान्तक का जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

अस्ताचल रवि कीन्ह प्रवेसा। बन्दे चरन छाइ अवधेसा।
राम सबनि सादर सन्माना। को दयाल रघुबीर समाना।

**हनुमान :** (मूर्छा से उठकर राम के पास आकर चरणों में गिरकर) भगवन ! नारान्तक तो बड़ा बलवान है। इससे विजय

पाना असम्भव जान पड़ता है ।

**अंगद :** (मूर्छा से उठकर राम के पास आकर चरणों में गिरकर) हाँ प्रभो ! मेरे ऊपर दुष्ट ने ऐसा बाण चला!या कि मैं बहुत देर तक बेसुध रहा ।

**राम :** अच्छा... ! तो... ? कल नारान्तक से मैं युद्ध करूँगा ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

कहत सुनत इतिहास सुचि, निसि बीती जुग जाम ।
खगपति आगम देवऋृषि, जित शोभित श्री राम ॥

**॥ चौपाई ॥**

निरखि मानि मुनि हृदय सनाथा, उठे हरषि प्रभु रघुकुल नाथा ।
सीस नाइ प्रभु आसन दीन्हा, आसिष पाइ हरषि हित कीन्हा ।

**नारद जी :** (गाते हुए प्रवेश)

सबके नारायण रखवारे ।
जाके और भरोसौ नाहीं ताके आप सहारे ।
सबके नारायण रखवारे ।
नारायण..... ! नारायण..... !

**राम :** (हर्षित होकर उठकर सिर नवाकर) आइये नारदजी ! पधारिये । आसन ग्रहण कीजिये ।

(नारद जी का श्री राम के साथ आसन ग्रहण करना)

**॥ चौपाई ॥**

नारान्तक वध है तेहि हाथा । दधिबल नाम भक्त तव नाथा ॥
अब रघुबीर करहु सोइ बाता । बिनु प्रयास रिपु मरइ प्रभाता ॥

**नारद जी :** (पुलकित होकर) हे नाथ ! आप अन्तर्यामी हैं । फिर भी, हे स्वामी ! ब्रह्माजी ने मुझे आपके पास भेजा है ।धौलागिरि पर्वत पर सुग्रीव का पुत्र दधिबल अपने मन में निरन्तर आपको ही जपता रहता है । ब्रह्मा जी के वरदान की पूर्ति के लिए सवेरा होने से पहले उसे बुलवा लीजिए। नारान्तक का वध उसी के हाथों है ।

**॥ चौपाई ॥**

सबिनय नाइ सीख बर साखी, गबने मुनि प्रभु छवि उर राखी ।

**नारद जी :** (सिर नवाकर) अच्छा प्रभो ! मुझे आज्ञा दीजिए। नारायण..... ! नारायण..... !

**(नारद जी का जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

नारद गए जबहिं बिधि लोका । वायु तनय तन राम बिलोका ॥
तात तुरत तुम गबनहुँ तहँवा । बारिधि महँ धौलागिरि जहँवा ॥

**राम :** हे तात हनुमान जी ! आप तुरन्त धौलागिरि पर्वत पर चले जाइये और दधिबल को अपने साथ ले आइये ।

**हनुमान :** (चरणों में सिर नवाकर) जो आज्ञा, प्रभो ! जय श्री राम ।

**(हनुमान का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**सीन ग्यारहवाँ**

**स्थान :** धौलागिरि पर्वत ।

**दृश्य :** दधिबल भजन में लीन है ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

जय श्री राम वायु सुत बोला, सुनि दधिबल निज लोचन खोला ।
पुनि हनुमान कहेउ सुनु भ्राता, चलहु बिलोकन त्रिभुवन त्राता ।

**हनुमान :** (दधिबल को देखकर) जय श्री राम ।

**दधिबल :** (आँखें खोलकर विस्मय से) अरे.. ? कौन है भाई.... ? आधी रात को यहाँ क्या काम है ?

**हनुमान :** (हर्षित होकर) भक्त दधिबल ! मैं तुम्हारे पिता सुग्रीव जी का मंत्री हनुमान हूँ ।

**दधिबल :** (छाती से लगाकर) कहो.... ? अंजनी कुमार ! कैसे आना हुआ ?

**हनुमान :** भाई ! तुम्हारी तपस्या सफल हुई । प्रभु रामचन्द्र जी ने तुम्हें याद किया है ।

**दधिबल :** (प्रसन्न होकर) प्रभु ने याद किया है । सच..... ?

**हनुमान :** हाँ भाई ! तुम्हें इसी समय साथ चलना होगा ।

**दधिबल :** अहो भाग्य..... ? प्रभु के दर्शनों के लिए जो तपस्या कर रहा था वह आज पूर्ण हुई । चलिये... महाराज !

**॥ चौपाई ॥**

सुनि सुभ वचन सुकंठ कुमारा, हरि पहँ हरि संग तुरत सिधारा ।

**सीन बारहवाँ**

**स्थान :** समुद्र तट ।

**दृश्य :** रामादल ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

आए नाथ निकट मृग साखा । देखे पद जे हर हिय राखा ॥
रहेउ चरन गहि प्रीति समेता । दधिबल निरखेउ कृपा निकेता ॥

**हनुमान :** (श्री राम के पास आकर चरणों में गिरकर) जय श्री राम ।

**दधिबल :** (चरणों में गिरकर) जय हो..... ! कृपासिंधु भगवान ! आपकी जय हो..... !

**(श्री राम का प्रसन्न होकर दोनों को छाती से लगा लेना । दधिबल का सबसे मिलना)**

**राम :** प्रिय पुत्र दधिबल ! आजकल नारान्तक से हमारा युद्ध चल रहा है और वह ब्रह्माजी के वरदान के कारण तुम्हारे हाथों से ही मारा जा सकता है । अत: प्रात:काल तुम उससे युद्ध करो ।

**दधिबल :** (सिर नवाकर) ऐसा ही होगा, प्रभो !

**सीन तेरहवाँ**

**स्थान :** लंका नगरी ।

**दृश्य :** रणभूमि।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

जहँ तहँ समर करन बनचारी । चले कहत जय लषन खरारी ॥
वहाँ नरान्तक प्रात प्रबोधा । रथ चढ़ि चलेउ भयंकर जोधा ॥

**नारान्तक :** (सेना सहित प्रवेश करके गरजकर) हे सिंह के शिकारों! अपनी गुफा से बाहर आओ।
जी चुके हो बहुत अब, प्राणों की ममता छोड़ दो।
नाश का दिन आ गया, जीने की आशा छोड़ दो।

**॥ चौपाई ॥**

दधिबल लखा सखा चलि आयउ, भुजा पसारि हर्षि उठि धायउ ।

**दधिबल :** (प्रवेश करके भुजा पसार कर) ओ हो . . . . . ! मित्र नारान्तक !

**(दोनों का आपस में गले मिलना)**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

हरिपति पूत प्रवीन अति, सुनि तेहि मुख विख्यात ।
लगे बुझावन मित्र कहँ, सुनहु बिहँगपति बात ॥

**दधिबल :** हे भाई ! रावण का पक्ष लेकर भगवान से वैर करने चले हो। इसमें तुम्हारी कुशल नहीं।
राम की महिमा को तुमने, भाई जाना ही नहीं।
उनके शत्रु का कहीं, कोई ठिकाना ही नहीं।
हे भाई ! अब भी कुछ नहीं बिगड़ा है। प्रभु के चरण पकड़कर अपना जन्म सफल करो। वे समदर्शी भगवान तुम्हें निर्भय कर देंगे।

**॥ चौपाई ॥**

सुनत बचन गुरु भ्राता केरा । नारान्तक भा क्रोध घनेरा ॥

**नारान्तक :** (क्रोधित होकर) हूँ..... ? वानर तो स्वभाव से ही डरपोक हैं। जिस तपस्वी ने बालि को मार दिया उसी का बेटा

अंगद उन्हीं का आज्ञाकारी हो गया। हे दधिबल ! यह तो वानर वंश की ही रीति है। हमारे कुल में शत्रु से प्रीति नहीं करते। समझे..... ?

जिसने अपने कुल का, अच्छा बुरा देखा नहीं।
कुल का शत्रु है अपने, मूर्ख ! वह बेटा नहीं।

**दधिबल :** (क्रोध से) हे मूर्ख ! मैं तुझे गुरु भाई समझकर समझा रहा हूँ... ?

कह रहा हूँ फिर तुझे, अभिमान में अन्धा न बन।
ओ अधर्मी अपने कुल के, खून का प्यासा न बन।

**नारान्तक :** (क्रोध से) ओ वानर अज्ञान ! मुझे शिक्षा देने का ध्यान.. ! मैं तुझे गुरु भाई समझ कर छोड़ रहा था परन्तु अब... ?

इस परम शिक्षा का तेरी, फल चखाता हूँ तुझे।
देख अब भूमि की शैया, पर सुलाता हूँ तुझे।

**(दोनों में युद्ध होना)**

**।। व्यास : दोहा ।।**

नारान्तक दधिबल भिरे, निरखि भालु अरु कीस ।
लगे लरन संग निसिचरन, कहि जय श्री जगदीस ।

**।। चौपाई ।।**

गहि मनुजाद भूमि पर डाला । करि चिकार तेहि मरती बारा ॥

**(नारान्तक का मारा जाना)**

**राम :** (प्रवेश करके दधिबल को छाती से लगाकर) धन्य हो भक्त दधिबल ! तुमने सचमुच बड़ी वीरता का काम किया और मेरी चिन्ता को हर लिया। अब तुम्हें जो अच्छा लगे वही वर माँग लो।

**दधिबल :** (चरण पकड़कर) हे नाथ ! संसार के सकल पदार्थ नाशवान हैं। इनके मोह में फंसने वाले जीव महान अज्ञानी हैं। प्रभो ! मुझे इनके बन्धन से छुड़ा दीजिये और अपनी निर्मल भक्ति दीजिए।

**राम :** (सिर पर हाथ रखकर) एवमस्तु ।

पर्दा गिरना

# रावण वध

## (रावण वध लीला)

### सीन चौदहवाँ

**स्थान :** रावण दरबार ।

**दृश्य :** दरबार लगा है ।

पर्दा उठना

॥ दोहा ॥

यहाँ दसानन दूत मुख, सुन नारान्तक नास ।
एका दिन निज सेन लखि, चढ़ा समर बिन त्रास ॥

**रावण :** हा... हा... हा... वाह रे बली नारान्तक ! कल तूने कैसा पराक्रम दिखाया कि लक्ष्मण, हनुमान और अंगद आदि को मूर्छित बनाया । क्यों नहीं..... ? आखिर तो रावण का पुत्र है ।

है मुझे निश्चय करेगा, अब सिद्ध मेरा काम तू।
विश्व में फैलायेगा, रावण का इक दिन नाम तू।

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) यथार्थ है महाराज ! नारान्तक से ऐसी ही आशा है ।

**दूत :** (घबड़ाये हुए प्रवेश कर सिर झुकाकर) महाराज..... !

**रावण :** (विस्मय से) क्यों..... ? क्या समाचार है..... ?

**दूत :** (डरते-डरते) महाराज ! नारान्तक भी परलोक सिधार गये ।

**रावण :** (क्रोध से) क्या बकता है ?

**दूत :** (रोते हुए पैरों में गिरकर) नहीं..... ? पृथ्वीनाथ !

**रावण :** (खिसियाकर) किसने मारा ?

**दूत :** (धीरे से) सुग्रीव के पुत्र दधिबल ने ।

**रावण :** (व्यंग्य से) अरे मूर्ख ! दधिबल वहाँ कहाँ था ।

**दूत :** महाराज ! उसे हनुमान जाकर धौलागिरि से ले आया था।

**रावण :** हाँ..... ! अब विश्वास हो गया। निसन्देह मेरा भाग्य सो गया। अफसोस..... ?

हो चुका है खात्मा, इक-इक दिलावर का मेरे।
बुझ गया है आखिरी, दीपक भी अब घर का मेरे।

**मंत्री :** (दुखी होकर) शान्त... शान्त... ! महाराज शान्त... !

**रावण :** (क्रोध से) चुप रहो..... ?

मर जायें रण में कुम्भकरण, घननाद-नारान्तक अहिरावण।
फिर भी दशकन्धर शान्त हो, सोचे ने जरा इसका कारण।

सावधान हो जा..... ? हे शत्रुओं का नाश करने वाली चन्द्रहास ! सावधान हो जा..... ? शत्रुओं की विजय का समाचार बार-बार नहीं सुना जाता। हे भगवान शंकर ! तुमने मुझे अपार शक्तियाँ दी जिससे मुझमें अहंकार पैदा हुआ और उसी के मद में चूर होकर मैंने अधर्म का मार्ग अपनाया।

क्रोध ने अंधा किया है, आज मेरे ज्ञान को।
अब नहीं बैठूँगा मैं, आराम से इक आन को।
जानकी बाजी लगाकर, अब समर में जाऊँगा।
आज शत्रु का जगत से, नाश करके आऊँगा।

**मन्दोदरी :** (प्रवेश करके चरणों में गिरकर) स्वामी..... !

**रावण :** (अचरज से) महारानी..... !

**मन्दोदरी :** (रोते हुए) महारानी नहीं..... ! भिखारिणी कहिये, नाथ !

**रावण :** क्या मतलब..... ?

**मन्दोदरी :** मैं अपने सुहाग की भिक्षा लेने आई हूँ, स्वामी !

**रावण :** मैं समझा नहीं..... ?

**मन्दोदरी :** स्वामी ! समझने की कोशिश तो करिये..... ?

इस अहंकार को त्याग अभी, श्रीराम से संधि जोड़ लीजै।
आगे कर जनक दुलारी को, सादर जा भेंट उन्हें दीजै।

**रावण :** प्रिये ! शायद तुम्हें मेरी ताकत का अनुमान नहीं है ..... ?
राम की हस्ती को मिटा दूँगा, मैं इस संसार से।
सर कलम दोनों का होगा, मेरी इस तलवार से।

**मन्दोदरी :** स्वामी ! आप समझते क्यों नहीं ..... ?
राम के सम्मुख जो ठहरे, ऐसा न कोई इन्सान है।
मनुष्य के चोले में आया, समझ लो साक्षात भगवान है।

**रावण :** महारानी ! तुम यह नहीं जानती कि—
मैं अमर हूँ मर नहीं सकता, हरगिज किसी इन्सान से।
मनुष्य वानर तो चीज क्या, टकराऊँगा खुद भगवान से।

**मन्दोदरी :** (चरणों में गिरकर)
हे प्राणनाथ ! हे प्रजानाथ ! हे भूमण्डल के भूप प्रभो।
मेरी आँखों में घूम रहा, अब घोर प्रलय का रूप प्रभो।

**रावण :** प्रिये ! तुम बड़ी ना समझ और डरपोक हो ..... ?
कांपता है जिससे जग, भयभीत सारा लोक है।
क्या उसी रावण की भार्या, इस कदर डरपोक है।

**मन्दोदरी :** स्वामी ! मैं डरपोक नहीं, बल्कि आपकी हितैषी हूँ। आप नहीं समझते ..... ?
जिन्होंने बाण मारा, ताड़िका का दम निकाला है।
जिन्होंने चाप शम्भू का, सहज में तोड़ डाला है।
उन्हीं को आपने, बलहीन और नादान समझा है।
बड़ा धोखा हुआ, भगवान को इन्सान समझा है।

**रावण :** तो सुनो, प्रिये ..... ?
अब प्रण ये ही ठाना है, यदि रामचन्द्र अवतारी हैं।
मारा जाऊँ उनके कर से, तो भी मुझको शुभकारी है।
यदि नहीं हुए अवतारी वो, तब नर वानर ही कहलायेंगे।
इसमें न जरा सन्देह करो, निज कर से मारे जायेंगे।
कुछ भी हो परिणाम प्रिये, यह अच्छी तरह विचारा है।
अब मारें या मर जायें हम, सब बिधि से भला हमारा है।

**मन्दोदरी :** स्वामी ! हठ न कीजिए। आप समझते क्यों नहीं..... ?
हनुमत से जिनके पायक हैं, वो कैसे मारे जायेंगे।
तुम लड़के जिन्हें समझते हो, वे लड़के तुम्हें हरायेंगे।
हे नाथ ! मेरी मानिये..... ? सीता को वापिस देकर उन तपसियों से जाकर सुलह कर लीजिये। इसी में आपकी भलाई है।

**रावण :** (क्रोध से) महारानी ! सीधे से शब्दों में कहो... ?कायर बन जाऊँ। अपनी वीरता के माथे पर कलंक का टीका लगा लूँ। जानकी को लौटा कर मैं डरपोक कहलाऊँ। नहीं... ! कभी नहीं... ! यह तुम नहीं तुम्हारा मोह बोल रहा है। तुम्हें मेरे मान की नहीं बल्कि जान की चिंता है।

वह शूर नहीं वह कायर है, जो रण में डटकर हट जाये।
वह मर्द नहीं नामर्द है जो, कहकर बात पलट जाये।
उस वानर वाले तपसी से, क्या मेरी प्रभुताई कम है।
दूँगा न कदापि जानकी को, जब तक मेरे दम में दम है।

**मन्दोदरी :** (चरणों में गिरकर रोते हुए) स्वामी ! मुझे आपकी शक्ति और अपने सतीत्व पर पूरा भरोसा है, परन्तु क्या करूँ? मेरा हृदय घबड़ा रहा है। क्या इस दासी के सुहाग की रक्षा न हो सकेगी, नाथ ! दया करो, स्वामी ! दया करो।

**रावण :** (क्रोध) ओ कायर और डरपोक औरत ! भाड़ में जाये तू और तेरा सुहाग। मैंने जो हठ ठानी है उसे अवश्य पूरा करूँगा।

जो इरादा कर चुका हूँ, वह बदल सकता नहीं।
बल यह रस्सी का है, जलकर भी निकल सकता नहीं।
मंत्री जी !

**मंत्री :** (आगे आकर सिर नवाकर) जी सरकार !

**रावण :** सेना तैयार कराइए और कूँच का बिगुल बजवाइए।

**मंत्री :** (सहमकर सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज !

**(मंत्री का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

अस कहि मारुत बेग रथ साजा । बाजे सकल जुझाऊ बाजा ॥
चले बीर सब अतुलित बली । जनु कज्जल कै आंधी चली ॥

## सीन पन्द्रहवाँ

**स्थान :** लंका नगरी ।

**दृश्य :** रणभूमि ।

**रावण :** (रथ पर सवार होकर सेना सहित प्रवेश करके गरजकर) कहाँ है सम और लक्ष्मण ? आज देखना है कि किसमें कितना बल है ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

देखि पवनसुत धायउ, बोलत बचन कठोर ।
आवत कपिहि हन्यो तेहिं, मुष्टि प्रहार प्रघोर ॥

**हनुमान :** (वानर सेना के साथ प्रवेश करके सामने आकर) लंकेश ! इतना अभिमान ?

**(पत्थर मार कर रथ तोड़ देना)**

**रावण :** (रथ से उतरकर) शाबास..... ? हनुमान शाबास..... ?

**॥ दोहा ॥**

तुझको मैं मान गया, धन्य तुझे है कीश ।
खुश है तेरी शक्ति पर, लंकापति दशशीश ॥
यह आज प्रथम ही अवसर है, जो तूने रथ को तोड़ा है ।
जितना सम्मान करूँ तेरा, वह सब इस जय पर थोड़ा है ।

**हनुमान :** लंकेश ! यह बानर किस योग्य है ?
यह सारा खेल उन्हीं का है, जो जग को खेल खिलाते हैं ।
जब ग्रीष्म बहुत गरमाता है, तब वर्षा ऋतु ले आते हैं ।

**रावण :** नहीं हनुमान ..... ! अब मैं समझ गया ..... ? यह सब
तुम्हारे ब्रह्मचर्य का प्रताप है ।
अच्छा अब मेरी इच्छा है, तुम मेरे साथी हो जाओ।
रण नायक की पदवी लेकर, मेरे रण मंत्री हो जाओ।

**हनुमान :** (मुस्कराकर) क्षमा करें लंकेश ! पदवी मान की नहीं, अभिमान की सूचक है ।
जो करनी करने वाले हैं, वे कहते कब हैं करते हैं।
हम रण के सच्चे वीर बनें, रणवीर इसी पर मरते हैं ॥

**रावण :** (लज्जित होकर क्रोध से) अच्छा, तेरा बल देखना है ।

**(रावण द्वारा हनुमान की छाती पर घूँसा मारना। हनुमान का एक हाथ जमीन पर टेकना)**

**॥ चौपाई ॥**

जानु टेकि कपि भूमि न गिरा । उठा संभारि बहुत रिस भरा ॥
मुठिका एक ताहि कपि मारा । परेउ सैल जनु बज्र प्रहारा ॥

**हनुमान :** (उठकर क्रोध से) लंकेश ..... !
तेरा बल निष्फल हुआ, राम कृपा से आज।
मेरा मुष्टिक देख अब, असुरों के सरताज।

**(हनुमान द्वारा रावण की छाती में घूँसा मारना। रावण का मूर्छित होकर जमीन पर गिर जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

मुरुछा गै बहोरि सो जागा । कपिबल बिपुल सराहन लागा ॥
धिग-२ मम पौरष धिग मोही । ज़ौं तैं जिअत रहेसि सुरद्रोही ॥

**रावण :** (मूर्छा से जागकर लज्जित होकर) हे हनुमान सुन ..... ?
प्रत्येक वीर इस दुनियाँ का, बल से मेरे आधीन हुआ।
धिक्कार मुझे बलशाली हो, इस भाँति चेतनाहीन हुआ।

**हनुमान :** लंकेश ! धिक्कार,तुझको नहीं, मुझको है ।
है खेद मेरा मुक्का खाकर, तू मेरे सम्मुख जीवित है।
तू क्यों लज्जित है दशकंधर, हनुमान स्वयं ही लज्जित है।

**रावण :** (क्रोध से) ओ बनरी के बच्चे ! क्यों व्यंग्य बाण चला रहा है ? क्यों नहीं मेरा भय खा रहा है ? बता... ? कहाँ हैं वे दोनों तपसी ! आज मैं उन्हें युद्ध में मारूँगा और अब तक की तमाम मौत का बदला अभी और एक दम लूँगा ।

**॥ व्यास : दोहा ॥**

बहुरि राम सब तन चितइ, बोले बचन गम्भीर ।
द्वंद्वजुद्ध देखहु सकल, श्रमित भए अति बीर ।

**॥ चौपाई ॥**

अस कहि रथ रघुनाथ चलावा । बिप्र चरन पंकज सिरु नावा ॥
तब लंकेश क्रोध उर लावा । गर्जत तर्जत सन्मुख धावा ॥

**राम :** (प्रवेश कर) रावण ! इतनी भूल न कर । यदि किसी से भी नहीं तो, भाग्य के चक्र से डर ।
नाश होने से जो, अपने को बचा सकता नहीं।
जान ले रावण कि, औरो को मिटा सकता नहीं।

**रावण :** (क्रोध से) मिटा सकता नहीं ! हूँ.. ! भूल जा, हे राम... !
तोड़ दूँगा चक्र नभ का, भाग्य को झुठलाऊँगा।
चाहे कुछ भी हो विजय, करके तुझे दिखलाऊँगा।

**राम :** (मुस्कराकर) विजय..... ! क्या पापों से विजय होती है ?
देख रावण ध्यान से, और खोल आँखें न्याय की।
न्याय की जय और पराजय, है सदा अन्याय की।

**रावण :** (क्रोध से) अरे अज्ञानी ! क्या तू मेरी शक्ति को नहीं पहचानता ।
देख मेरे इन चरणों पर, सारा भूमण्डल झुकता है।
बन्दी होकर मेरे घर में, यम और काल तक सड़ता है ।

**राम :** (गम्भीर होकर) लंकेश ! मैं तेरी वीरता को जानता हूँ परन्तु तू अहंकार में पड़कर वैभव पाना चाहता है ।
वीर, पंडित, तेजधारी, राव और राजा गये।
काल के पापी उदर में, सैकड़ों योद्धा गये।

**रावण :** (व्यंग्य से) गये होंगे ..... ? परन्तु तू क्यों मुझे ज्ञान सिखाता है..... ? पंडितों जैसी बातें बनाकर क्यों अपने प्राण बचाना चाहता है।

तू मुझे जानता है इतना, केवल मैं लंकाधीश्वर हूँ।
अरे मूर्ख तुझे यह खबर नहीं, मैं ही दुनिया का ईश्वर हूँ।

**राम :** (मुस्कराकर) ठीक है परन्तु, रावण !

मिट गया वैभव क़ा जादू, अब तो बस अंधेर है।
जान ले मिटने में तेरे, बस पलों की देर है।

**रावण :** हा... हा... हा... पलों की देर है..... ?

हो चुकी बस आज तक, जो जय तुम्हारी हो चुकी।
याद रखो अब विजय, चेरी हमारी हो चुकी।

**राम :** अच्छा तुझे अपनी विजय का इतना विश्वास है तो आगे आ और युद्ध कर।

**(दोनों में घमासान युद्ध होना)**

**आकाशवाणी:** जल्दी कीजिये प्रभो ! इस पापी का वध जल्दी कीजिये। वानर भयभीत होकर भागे जा रहे हैं और स्वर्ग के देवता बहुत घबड़ा रहे हैं।

**॥ चौपाई ॥**

मरइ न रिपु श्रम भयउ बिसेसा । राम विभीषन तन सब देखा ।

**विभीषण :** (पास आकर) बस महाराज ! अब इसे अधिक खेल न खिलाइये। जल्दी सुरपुर पहुँचाइये।

**राम :** (विभीषन की तरफ देखकर) क्या करूँ भाई। इस दुष्ट के जितने सिर काटे जाते हैं उतने ही फिर पैदा हो जाते हैं।

**॥ चौपाई ॥**

नाभिकुंड पियूष बस याकें । नाथ जिअत रावनु बल ताकें ॥
सुनत विभीषण बचन कृपाला । हरषि गहे कर बान कराला ॥

**विभीषण :** प्रभो ! रावण ने कई बार अपने शीश काट-काटकर शिवजी पर चढ़ाये हैं और आज एक-एक के बदले अनेकों

पाये हैं।

**राम :** (विस्मय से) हे तात विभीषण जी ! तो फिर क्या करना चाहिये ?

**विभीषण :** सुनिये प्रभो..... !

इस तरह मर नहीं सकता, यह किसी हथियार से।
तीर से, बरछी से, भाला, ढाल और तलवार से।
नाभि में इसकी है, अमृत कुण्ड जानना चाहिये।
यह मरेगा तब उसे, पहले सुखाना चाहिये।

**राम :** (मुस्कराकर) ओह..... ! यह भेद है।

**विभीषण :** (मुस्कराकर) प्रभो ! फिर काहे की देर है।

**(राम द्वारा अग्नि बाण रावण की नाभि में मारना)**

**॥ चौपाई ॥**

सायक एक नाभि सर सोपा । अपर लगे भुज सिर करि रोषा ॥
गर्जेउ मरत घोर रब भारी । कहाँ रामु रन हतौं पचारी ॥

**रावण :** (चक्कर खाकर गिरते हुए) राम कहाँ हैं ? मैं उन्हें युद्ध में मारूँगा।

भाई से बैर बढ़ाने का यह फल देख लिया मैंने।
बदला मिला मुझे आज, जो उसके साथ किया मैंने।
उसके मतपर मैं चलता तो, यश मिलता आप भलाई थी।
हा मैंने उल्टी सभी बीच, उसके ही लात लगाई थी।
हे राम मारने में मुझको, कुछ तुम्हें न गौरव प्राप्त हुआ।
यह रण था भाई-२ का, जो ऐसे आज समाप्त हुआ।

**राम :** हे ज्ञान के पुंज रावण ! तुमको शत-शत प्रणाम।

रावण जग में तुमसा योद्धा, तुमसा न आनवाला कोई।
तुम नीति विशारद पंडित हो, तुमसा न ज्ञानवाला कोई।
इसलिए मृत्यु के पहले तू, कुछ नीति सिखाते जाओ हमें।
हे विज्ञानी अपना अनुभव, कुछ तो बतलाते जाओ हमें।

**रावण :** (मुस्कराकर) हे राम..... !

सिखाना ज्ञान तुमको, दीप सूरज को दिखाना है।
तुम्हारी ज्ञान शक्ति को तो, वेदों ने बखाना है।
फिर भी आज्ञा पालन करता हूँ, सुनो ..... ?
दो बातें केवल कहनी हैं, शुभ कार्य शीघ्र करना अच्छा।
दुष्कर्म टले उतना टालो, उसका सदैव टलना अच्छा।
मैंने सोचा था लंका में, मैं क्षीर सिन्धु ले आऊँगा।
यह भी सोचा था स्वर्ग तलक, जाने का मार्ग बनाऊँगा।
पर आज-२ करते-२, मुझसे कर्त्तव्य रह गया यह।
मन ही में रही कामना यह, रह गई अपूर्ण योजना यह।
पर नारी चोरी करने का, कर डाला कार्य शीघ्रता से।
परिणाम उसी का यह पाया, चल दिया आज मैं दुनियाँ से।
अच्छा यह नीति समाप्त हुई, कहनी अब बात हृदय की है।
तुम समझे हो हम जीते हैं, पर नहीं जीत मेरी ही है।
अपने जीते जाने न दिया, लंका में राम तुम्हारे को।
जा रहा तुम्हारे आगे ही, देखो मैं धाम तुम्हारे को।
अच्छा राम ..... ! अब बोला नहीं जाता। प्राण पखेरू उड़ना चाहते हैं। वि... दा... दा... रा... म..... !

**(रावण का मरना)**

**राम :** (दुखी होकर) धन्य हो ! ज्ञान के पुंज रावण तुम धन्य हो.. !

**विभीषण :** (रावण का सिर अपनी जाँघों पर रखकर रोते हुए)
हे भाई आँखें खोलो, मैंने ही घर को ढाया है।
भाई होकर भाई को, रण में संहार कराया है।

**मन्दोदरी :** (रावण की छाती पर पछाड़ खाकर) हाय मेरे राजा..... !
हे ईश्वर यह न्याय बदल दे तू, जो जग में बहुधा करते हो।
पति को पत्नी से प्रथम बार, पत्नी को विधवा करते हो।

**राम :** (समझाकर) हे देवी..... !
क्या भरोसा है तुच्छ जीवन का, है जल का बुलबुला।
सार है संसार का यह, आया यहाँ वो खुद चला।

अच्छा तात विभीषण जी ! अब आप अपने भाई को विधिपूर्वक दाह संस्कार करो ।

**विभीषण :** जो आज्ञा, प्रभो !

**(सागर तट पर दाह संस्कार करना । फिर राम के पास आना)**

**॥ चौपाई ॥**

आइ विभीषन पुनि सिरु नायो । कृपासिंधु तब अनुज बोलायो ।
सब मिलि जाहु विभीषन साथा । सारेहु तिलक कहेउ रघुनाथा ।

**राम :** हे भाई लक्ष्मण ! तुम सुग्रीव, अंगद, नल-नील, जामवंत और हनुमान मिलकर सब विभीषण के साथ जाओ और उन्हें राजतिलक कर दो । मैं पिताजी के वचनों के कारण नगर में नहीं जा सकता ।

**लक्ष्मण :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज !

**(सबका जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

तुरत चले कपिसुनि प्रभु बचना, कीन्ही जाइ तिलक की रचना ।

# विभीषण का राजतिलक

**सीन सोलहवाँ**

**स्थान :** राजदरबार ।

**दृश्य :** विभीषण सिंहासन पर विराजमान हैं । लक्ष्मण जी हनुमान तथा अंगद सहित सभासदों के साथ यथा स्थान बैठे हुए हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

सादर सिंहासन बैठारी । तिलक सारि अस्तुति अनुसारी ॥

**(लक्ष्मण द्वारा विभीषण का तिलक करके आरती उतारना)**

**सम्मिलित स्वर : बोलो विभीषण महाराज की जय ।**

**विभीषण :** नहीं भाई ..... ! आज जिनकी कृपा से मैं सिंहासन पर बैठा हूँ।

**बोलो : भगवान राम की जय**

**सम्मिलित स्वर : भगवान राम की जय।**

**सभासद :** (दूसरे सभासद की ओर देखकर विस्मय से) अरे भाई ... !
रावण राजा तो कहते थे, यदि राम जयी हो जायेंगे।
तो इस लंका की ईंट ईंट, कौशलपुर को ले जायेंगे।
पर वे तो आये भी न यहाँ, भेजा है केवल लक्ष्मण को।
वह भी इस कारण से भेजा, दे जायें राज्य विभीषण को।

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

जोरि पानि सबहीं सिर नाए । सहित विभीषन प्रभु पहिं आए ॥

**विभीषण :** (सबके साथ प्रवेश करके चरणों में गिरकर) प्रभो ! आपकी जय हो।

**॥ चौपाई ॥**

पुनि प्रभु बोलि लियेउ हनुमाना । लंका जाहु कहेउ भगवाना ॥
समाचार जानकिहि सुनावहु । तासु कुसल लै तुम्ह चलि आवहु ॥

**राम :** हे तात हनुमान जी ! तुम लंका जाओ। सीता को सब समाचार सुनाओ और उनका कुशल सन्देश लेकर तुम चले आओ।

**हनुमान :** (चरणों में सिर नवाकर) जो आज्ञा, प्रभो !

**॥ चौपाई ॥**

तब हनुमंत नगर महुँ आए । सुनि निसिचरी निसाचर थाए ॥

## सीता की अग्नि परीक्षा

**सीन अठारहवाँ**

**स्थान :** अशोक वाटिका।

**दृश्य :** सीता व्याकुल बैठी हैं।

**पर्दा गिरना**

**त्रिजटा :** (प्रवेश करके खुश होकर) बेटी ! बधाई । राम जी ने जय पाई है । बेटी अब तू मुझसे दूर होने जा रही है ।

उस दिन चिता रख चुकी थी, पर मैंने आग नहीं सुलगाई थी ।
दे देना मुझे क्षमा उसकी, जो पीड़ा मैंने पहुँचाई थी ।

**सीता :** (आँसू लाकर) नहीं... ! माँ नहीं... ! तुम मेरी धर्म की माँ हो । माँ ! तुमसे मुझे जो धीरज मिला है उसी ने मेरे भाग्य में यह दिन दिखाया है । माँ... ! मैं तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूँगी ।

**॥ चौपाई ॥**

दूरिहि ते प्रनाम कपि कीन्हा । रघुपति दूत जानकी चीन्हा ॥

**हनुमान :** (प्रवेश करके चरणों में गिरकर) माता जी प्रणाम ।

**सीता :** (हनुमान को उठाकर) बेटा !
मिल गई है आज मुझको, सम्पदा विश्वभर की।
इतना है मुझ पर ऋण तेरा, मैं मुक्त नहीं हो सकती।
हे तात ! कृपाधाम प्रभु भाई और वानरी सेना सहित कुशल से तो है ।

**हनुमान :** हे माता ! कौशलाधीश प्रभु श्री राम जी सब प्रकार से कुशल हैं । उन्होंने युद्ध में रावण को जीत लिया है और विभीषण ने अटल राज्य पा लिया है ।

**सीता :** (खुश होकर) हे तात ! अब तुम वही उपाय करो जिससे मैं इन नेत्रों से प्रभु के कोमल श्याम शरीर को देख सकूँ ।

**हनुमान :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा माँ !

**(हनुमान का जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

तब हनुमान राम पहिं जाई । जनक सुता कै कुसल सुनाई ॥

**सीन उन्नीसवाँ**

**स्थान :** समुद्र तट।

**दृश्य :** रामादल।

**पर्दा उठना**

**हनुमान :** (श्री राम के चरणों में गिरकर) जय श्री राम।

**राम :** हे तात ! बना कुछ काम।

**हनुमान :** प्रभो ! माता हरदम जपती हैं आपका नाम। अब नहीं है देरी का काम।

**॥ चौपाई ॥**

सुनिसंदेसु भानुकुल भूषन । बोलि लिए जुबराज विभीषन ॥
मारुतसुत के संग सिधावहउ । सादर जनकसुतहि लै आवहु ॥

**राम :** हे तात अंगद और विभीषण जी ! आप हनुमान जी के साथ जाइये और सीता को आदरपूर्वक ले आइए।

**विभीषण :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा प्रभो !

**(सबका सिर नवाकर जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

तुरतहिं सकल गए जहँ सीता । सेबहि सब निसिचरीं बिनीता ॥

**सीन बीसवाँ**

**स्थान :** अशोक बाटिका।

**दृश्य :** सीता जी निसाचारियों के साथ बैठी हैं।

**पर्दा उठना**

**हनुमान :** (प्रवेश करके चरणों में गिरकर) माताजी प्रणाम ! हे माँ चलिए..... ? रामादल प्रभु के साथ-२ आपके दर्शनों को व्याकुल हो रहा है।

**विभीषण :** (प्रवेश करके) तात हनुमान जी ! पालकी तैयार है।

**(सीता जी का पालकी में बैठकर जाना)**

**पर्दा गिरना**

॥ चौपाई ॥

ता पर हरषि चढ़ी बैदेही । सुमिरिं राम सुखधाम सनेही ॥

**सीन इक्कीसवाँ**

**स्थान :** समुद्र तट ।

**दृश्य :** रामादल ।

**पर्दा उठना**

**वानर समूह :** (पालकी देखकर खुश होकर) सीता-राम की जय ।

॥ चौपाई ॥

कह रघुबीर कहा मम मानहु । सीतहि सखा पयादे आनहु ॥

देखहुँ कपि जननी की नाईं । बिहंसि कहा रघुनाथ गौसाँई ॥

**राम :** (मुस्कराकर) हे तात हनुमान जी ! मेरा कहना मानो ..... ?

सीता जी को पैदल ही ले आओ ।

विभीषण जी पालकर ठहराओ, पैदल सीता को आने दो ।

उत्साही वानर मण्डल को, दर्शन का लाभ उठाने दो।

जी जान लड़ाकर जयी बने, उन भक्तों से लज्जा कैसी।

बनवासी जीवन है जिसका, उसको राजसी छटा कैसी।

**(सीता जी का पैदल आना)**

**सम्मिलित स्वर : सीता-राम की जय ।**

॥ व्यास : दोहा ॥

तेहि कारन करुनानिधि, कहे कछुक दुर्बाद ॥

सुनत जातुधानीं सब, लागीं करै विषाद ॥

**(सीताजी को देखकर राम का मुँह फेरकर खड़ा हो जाना)**

**सीता :** (दुखी होकर) हाँ ..... ! मैं जानती हूँ कि ..... ?

अब अपने चरित्र का चमत्कार, दुनियाँ को दिखलाना होगा ।

प्रतिबिम्ब अग्नि को अर्पण कर, बैदेही बन जाना होगा ॥

॥ चौपाई ॥

प्रभु के वचन सीस धरि सीता । बोली मन क्रम वचन पुनीता ।

लछिमन होहु धरम के नेगी । पावक प्रगट करहु तुम्ह बेगी ॥

**सीता :** हे लक्ष्मण ! तुम मेरे धर्म के नेगी बनो और तुरन्त ही अग्नि प्रकट करो ।

**॥ चौपाई ॥**

सुनि लछिमन सीता कै बानी । बिरह बिबेक धरम नीति सानी ॥
देखि राम रुख लछिमन धाए । पावक प्रगटि काठ बहु लाए ॥

**(श्रीराम का इशारा पाकर लक्ष्मण द्वारा अग्नि प्रगट करना)**

**॥ चौपाई ॥**

पावक प्रबल देखि बैदेही । हृदयँ हरष नहिं भय कछु तेही ॥
जौं मन बच क्रम मम उर माँही । तजि रघुबीर आनगति नाहीं ॥
तौ कृसानु सब कै गति जाना । मो कहुँ होउ श्रीखंड समाना ॥

**सीता :** (अग्नि में प्रवेश करते हुए हाथ जोड़कर) हे अग्निदेव ! यदि मेरे हृदय में मन, कर्म और वचन से रामजी को छोड़कर दूसरी गति नहीं है तो तुम चंदन के समान ठंडे हो जाओ ।

**(सीता जी का अग्नि में प्रवेश)**

**हनुमान :** (क्रोधित होकर) माँ सीते ..... !
रघुराज आप स्वामी मेरे, कहना कुछ नहीं आप से है।
मुझको तो आज युद्ध करना, इस भीषण अग्नि ताप से है।
हे अग्नि देव माता को दे दो, अन्यथा शपथ शंकर की है।
भक्षण कर लूँगा तुमको भी, सौगन्ध राम रघुवर की है।

(अग्नि की लपटों का शान्त होना। अग्निदेव का प्रकट होकर सीता को श्रीराम को अर्पण करना)

**सम्मिलित स्वर : बोलो. . . ? सियापति रामचन्द्र की जय।**

**॥ दोहा ॥**

जनकसुता समेत प्रभु, सोभा अमित अपार ।
देखि भालु कपि हरषे, जय रघुपति सुख सार ॥

**पर्दा गिरना**

**राम का अयोध्या वापिस लौटना**

## सीन बाईसवाँ

**स्थान :** समुद्र तट।

**दृश्य :** सीता जी श्रीराम के वामांग रामादल के साथ बैठी हुई हैं। लक्ष्मण तीर कमान लिए एक ओर खड़े हैं। हनुमान जी श्रीराम के चरणों में बैठे हुए हैं।

### पर्दा उठना

### ॥ चौपाई ॥

करि बिनती जब संभु सिधाए । तब प्रभु निकट विभीषनु आए ॥

**विभीषण :** (प्रवेश करके श्रीराम के चरणों में गिरकर) हे प्रभो ! आपने कुल और सेना सहित रावण को मार डाला और मुझ दीन पापी पर बहुत कृपा की। अब हे स्वामी ! दास के घर को पवित्र कीजिए।

**राम :** (मुस्कराकर) हे भ्राता ! तुम्हारा घर और सब धन मेरा ही है, परन्तु उधर भरत की दशा याद करके मुझे एक-एक पल कल्प के समान बींत रहा है। यदि अवधि बीतने पर जाऊँगा तो भाई को जीता न पाऊँगा। क्योंकि भरत बहुत भावकु है और मेरी अवधि में केवल दो दिन शेष रह गये हैं।

**हनुमान :** (हाथ जोड़ते हुए) प्रभो ! आशीर्वाद दीजिये . . . . ? यह दास आप सबको कन्धों पर बिठाकर पलों में पहुँचा देगा।

**विभीषण :** नहीं ? हनुमान जी ! सेवक का पुष्पक विमान हाजिर है।

### ॥ चौपाई ॥

चितइ सबन्हि पर कीन्ही दाया । बोले मृदुल बचन रघुराया ॥
निज-निज गृह अब तुम सब जाहू । सुमिरेहु मोहि डरपहु जनि काहू ॥

**राम :** (सब वानर भालुओं पर प्रेम दृष्टि डालकर) हे भाइयो ! तुम्हारे ही बल से मैंने रावण को मारा फिर विभीषण का राज तिलक किया। अब तुम सब अपने-२ घर जाओ और

हमेशा मेरा स्मरण करना।

हे भाइयो इस रण के नाते, तुमने वह नाता जोड़ा है।
जिस नाते के आगे जग में जग का नाता थोड़ा है।
दुर्दिन में मेरे साथी बन, तुमने जो जान लड़ाई है।
उस सहायता की रामचन्द्र, कर सकता नहीं बड़ाई है।
तुमने ही रावण को मारा है, सीता का कष्ट निवारा है।
मैं नाम मात्र का विजयी हूँ, वास्तव में काम तुम्हारा है।
जाओ पर इतना ध्यान रहे, मन मेरा धाम तुम्हारा है।
अब तक तुम रहे राम के थे, पर अब से राम तुम्हारा है।

**सम्मिलित स्वर : बोलो. . . ? सियापति रामचन्द्र की जय।**

**(बानर भालुओं का जाना)**

**॥ व्यास : दोहा ॥**

कपिपति नील रीछपति, अंगल नल हनुमान ।
सहित विभीषन ऊपर जे, जूथप कपि बलवान ॥
कहि न सकहिं कछु प्रेम बस, भरि-भरि लोचन बारि ।
सन्मुख चितवहिं राम तन, नयन निमेष निवारि ॥

**राम :** (लक्ष्मण-सीता सहित विमान पर चढ़ते हुए) अच्छा भाइयो ! मन तो नहीं चाहता किन्तु विवशता है।

**(सुग्रीव, नील, जामवन्त, अंगद, नल, हनुमान और विभीषण का श्रीराम की ओर देखना)**

**॥ चौपाई ॥**

अतिसय प्रीति देखि रघुराई । लीन्हे सकल विमान चढ़ाई ॥
मन महुँ बिप्र चरन सिरु नायो । उत्तर दिसिहि बिमान चलाओ ॥

**(श्रीराम द्वारा सबको विमान पर चढ़ा लेना)**

**॥ चौपाई ॥**

कह रघुबीर देखु रन सीता । लछिमन इहाँ हत्यो इन्द्रजीता ॥

**राम :** हे सीता ! युद्ध क्षेत्र देखो। यहाँ लक्ष्मण ने मेघनाद को मारा था।

॥ चौपाई ॥

कुंभकरन रावण द्वौ भाई । इहाँ हते सुर मुनि सुखदाई ॥

**राम :** (विमान आगे बढ़ने पर) हे सीता ! देवता और मुनियों को दुख देने वाले दोनों भाई रावण और कुम्भकरण यहाँ मारे गये ।

॥ व्यास : दोहा ॥

सीता सहित अवध कहुँ, कीन्ह, कृपाल प्रनाम ।
सजल नयन तन पुलकित, पुनि पुनि हरषित राम ॥

**राम :** (अयोध्यापुरी की प्रणाम करे) जय हो . . . . . ! जन्मभुमि तेरी जय हो . . . . . !

॥ चौपाई ॥

प्रभु हनुमंतहि कहा बुझाई । धरि बटु रूप अवधपुर जाई ॥
भरतहि कुसलहमारि सुनाएहु । समाचार लै तुम्ह चलि आएहु ॥

**राम :** हे तात हनुमान जी ! तुम ब्रह्मचारी का रूप धर कर अयोध्यापुरी में जाओ । भरत को हमारी कुशल सुनाना और उनका संदेश लेकर चले आना ।

**हनुमान :** (चरणों में सिर नवाकर) जो आज्ञा महाराज !

॥ चौपाई ॥

तुरत पवनसुत गवनत भयऊ । तब प्रभु भरद्वाज पहिं गयऊ ॥

## सीन तेइसवाँ

**स्थान :** नन्दीग्राम ।

**दृश्य :** भरत जी व्याकुल बैठे हैं ।

॥ चौपाई ॥

रहेउ एक दिन अवधि अधारा । समुझत मन दुख भयउ अपारा ॥
बीत अवधि रहहिं जौं प्राना । अधम कवन जग मोहि समाना ॥

**भरत :** (दुखी होकर) आह . . . . . ! प्राणों की आधार रूप अवधि का एक ही दिन शेष रह गया है । क्या कारण है कि स्वामी

नहीं आये ? प्रभु ने कहीं मुझे कुटिल जानकर भुला तो नहीं दिया। (रोते हुए) ठीक है..... ?

आह जिसकी माँ हट पूर्वक, छोटे को राज्य दिलाती है।
दासी की बातों में आकर, अग्रज को बन भिजवाती है।
जिस घर में राज्य फूट का हो, ऊजड़ ही वह घर होता है।
रत्नों का भी भण्डार वहाँ, कंकड और पत्थर होता है।

यदि प्रभु अवधि के रहते नहीं आये तो मैं प्राण त्यागने में एक क्षण की भी देर नहीं करूँगा।

॥ दोहा ॥

राम बिरह सागर महँ, भरत मगन मन होत ।
बिप्र रूप धरि पवनसुत, आइ गयउ जनु पोत ॥

**हनुमान :** (प्रवेश करके) एक क्षण ही इतिहास बदल देता है। अब प्राण त्यागने की जरूरत नहीं है। प्रभू आ चुके हैं।

हे राजर्षि ! सुनो ! ! जिनका तुम, ध्यान रात दिन करते हो।
जिनके दर्शन को भरत लाल, माला पर घड़ियाँ गिनते हो।
पुष्पक पर वानर मण्डल में, अपनी छठा दिखाते हैं।
लक्ष्मण-सीता के सहित वही, अवधेश अवध में आते हैं।

**भरत :** (गदगद होकर) हे भाई ! कौन हो तुम ?

बानरवर तुमने प्राण दिया, यह अमृत संदेश सुनाया है।
हो सकता मुक्त न भरत कभी, युग-युग तक ऋणी बनाया है।

**हनुमान :** (भेष उतारकर चरणों में गिरकर) हे कृपाधाम ! मैं पवन का पुत्र और जाति का बन्दर हूँ। हनुमान मेरा नाम है। मैं दीनबन्धु श्रीरामजी का दास हूँ।

**भरत :** (छाती से लगाकर) हे तात हनुमान जी ! तुम्हारे दर्शन से सब दुख जाते रहे। आज मुझे स्नेही राम जी ही मिल गये। हे प्राणदाता ! कहो... ? प्रभु माता सीता और भाई लक्ष्मण सहित कुशल तो हैं।

**हनुमान :** हाँ सब कुशल हैं। हे नाथ ! आप रामजी को प्राणों के

समान प्रिय हैं। प्रभु अपने प्राण त्याग सकते हैं परन्तु आपको नहीं त्याग सकते। तात! अब मुझे आज्ञा दीजिये। आपकी कुशलता का सन्देश प्रभु को जाकर सुनाना है।

**(हनुमान का जाना) पर्दा गिरना**

**॥ सोरठा ॥**

भरत चरन सिरु नाइ, तुरति गयउ कपि राम पहिं ।
कही कुसल तब जाइ, हरषि चलेउ प्रभु जानि चढ़ि ॥

## सीन चौबीसवाँ

**स्थान :** गुरु वशिष्ठ का आश्रम।

**दृश्य :** गुरु वशिष्ठ आसन पर विराजमान हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

हरषि भरत कोसलपुर आए । समाचार सब गुरुहि सुनाए ॥

**भरत :** (प्रवेश करके गुरु के चरणों में गिरकर) गुरुदेव ! अवधेश अवध में आते हैं।

**वशिष्ठ :** (भरत को उठाकर छाती से लगाकर) धन्य हो भरत. . ! तुम्हारी अटल भक्ति को धन्य है।

**॥ चौपाई ॥**

पुनि मंदिर महँ बात जनाई । आवत नगर कुसल रघुराई ॥

## सीन पच्चीसवाँ

**स्थान :** राजमहल।

**दृश्य :** कौशल्या, कैकई, और सुमित्रा महल में बैठी हुई हैं।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

सुनत सकल जननी उठि धाईं । कहि प्रभु कुसल भरत समुझाई ॥

समाचार पुरबासिन्ह पाए । नर अरु नारि हरषि सब धाए ॥

**भरत :** (गुरु वशिष्ठ के साथ प्रवेश करके) अवधेश अवध में आते हैं..... !

**(तीनों माताओं का उठकर भरत को छाती से लगाना। प्रजाजनों का इकट्ठा होना।)**

**वशिष्ठ :** बेटा भरत ! अब जल्दी से प्रभु की अगवानी के लिये चलने की तैयारी करो।

**भरत :** (गदगद होकर सिर नवाकर) चलिये गुरुदेव ! मुझे तो एक-एक पल भारी हो रहा है।

(भरत का गुरु वशिष्ठ तथा प्रजा के साथ श्रीराम के स्वागत को जाना)

**पर्दा गिरना**

**॥ दोहा ॥**

हरषित गुरू परिजन अनुज, भूसुर बृंद समेत ।
चले भरत मन प्रेम अति, सन्मुख कृपानिकेत ॥

## सीन छब्बीसवाँ

**स्थान :** अवधपुरी का बाहरी भाग।

**दृश्य :** श्री राम सखाओं सहित विमान पर विराजमान हैं।

**हनुमान :** (प्रवेश करके श्रीराम के चरणों में गिरकर) जय श्रीराम।

**राम :** तात हनुमान जी ! बना कुछ काम।

**हनुमान :** प्रभो भरत जी ! जपते है हरदम आपका नाम। अब नहीं है देरी का काम।

**॥ चौपाई ॥**

आए भरत संग सब लोगा । कृस तन श्री रघुबीर बियोगा ॥

**भरत :** (सबके साथ प्रवेश करके आकाश की ओर देखकर) वो वो देखो..... ? अवधेश आ गये।

**॥ चौपाई ॥**

गहे भरतपुनि प्रभुपद पंकज । नमत जिन्हहि सुरमुनि संकर अज ॥

परे भूमि नहिं उठत उठाए । बर करि कृपासिंधु उर लाए ॥

**(विमान का जमीन पर उतरना)**

**भरत :** (श्री राम के चरणों में गिरकर रोते हुए) राम ! भैया राम ! मेरे आराध्य देव..... !

**(श्रीराम का बल पूर्वक भरत को उठाकर छाती से लगा लेना। गुरु वशिष्ठ के चरणों में गिरना फिर सबका आपस में गले मिलना।)**

**राम :** (भरत के आँसू पौंछते हुए) पगले ! अब क्यों रोता है? अब तो मैं तेरे पास आ गया हूँ। तुझ जैसा भाई पाकर मैं धन्य हो गया। मैंने तो पिताजी की आज्ञा पालन के लिए राज्य छोड़ा था किन्तु तूने भावुकता में राजपाट छोड़ा। तू धन्य हो गया भरत ! आने वाला जमाना तुझे धर्म के नाम पर हमेशा याद करेगा। तू हम सब भाइयों में सिरमौर हो गया।

**भरत :** अपने भक्त का मान बढ़ाना ही तो भगवान का गुण है, भैया..... !

**॥ चौपाई ॥**

प्रभु जानी कैकई लजानी । प्रथम तासु गृह गए भवानी ॥

**राम :** हे भाई लक्ष्मण ! मैं सीता सहित माता कैकई की सेवा में जा रहा हूँ। तुम माता सुमित्रा के पास चले जाओ। हे भाई भरत !

बनवासी वीर बानरों को, हे बन्धु शीघ्र ठहराओ तुम।
इनके स्वागत सत्कारों का, पूरा प्रबन्ध कर आओ तुम।
यह मेरे सच्चे साथी हैं, इन सब का श्रम हरना पहले।
इनके सेवा इनका आदर, हे भरत लाल करना पहले।

**भरत :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा प्रभु !

**सीन सत्ताईसवाँ**

**स्थान :** कैकई महल।

**दृश्य :** कैकई सकुचाई हुई बैठी है।

**राम :** (सीता सहित प्रवेश कर चरणों में गिरकर) माता जी प्रणाम !

**कैकई :** (उठाकर छाती से लगाकर) बेटा राम..... !

मेरी आज्ञा से तुमने, सम्बन्ध बनों से जोड़ा है।
मेरी ही आज्ञा से तुमने, यह राज्य भरत को छोड़ा है।
मेरे मन की सम्पूर्ण ग्लानि, हे पुत्र तुम्हें धो देना है।
रघुकुल का पावन सिंहासन, रघुकुल पति होकर लेना है।

**राम :** हे माता..... !

सेवक ने तो केवल आज्ञा का, पालन करना सीखा है।
वन और राज्य की चर्चा क्या, आज्ञा पर मरना सीखा है।
पर यह अवसर है नहीं मात, राजा बन मुकुट पहनाने का।
यह दिन तो है श्री चरणों की, रज मस्तक पर लगाने का।

**कैकई :** (खुशी के आँसू पौंछकर) बेटा..... ! मैं सुध बुध खो बैठी थी। अच्छा... ठहरो..... ?

**(कैकई द्वारा आरती की थाली लाकर आरती उतारना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन अट्ठाईसवाँ

**स्थान :** सुमित्रा का महल।

**दृश्य :** सुमित्रा इन्तजार में बैठी है।

**पर्दा उठना**

**लक्ष्मण :** (चरणों में गिरकर) माताजी प्रणाम !

**सुमित्रा :** (छाती से लगाकर चूमते हुए)

बेटे तुझ जैसे बेटे पर, माता फूली न समाती है।
जिस माँ का ऐसा बेटा हो, निश्चय वह धन्य कहाती है।
सच बतलाना मेरे लाल, मेरी भी कभी याद आई।
यह भी बतलाना बन में, राजी तो रहा बड़ा भाई।

**लक्ष्मण :** माँ..... !
कर्त्तव्य पर मर मिटना, ऐसा उपदेश तुम्हारा है।
जितनी भी मुझे सफलता है, माँ ! आशीर्वाद तुम्हारा है।

**सुमित्रा :** बेटे... ! मेरे लाल... ! आज मैं धन्य हो गई ।
होगा अवश्य तू जगत पूज्य, तूने निज धर्म सुधारा है।
जिसने माँ को प्रसन्न रखा, वह ईश्वर तक को प्यारा है।
अच्छा..... ! जा बेटा..... ! उस वियोगिनि के हृदय को शान्ति दे ।

**लक्ष्मण :** जो आज्ञा, माँ ।

**(लक्ष्मण का जाना)**

**पर्दा गिरना**

## सीन उन्तीसवाँ

**स्थान :** उर्मिला का भवन ।
**दृश्य :** उर्मिला चित्र के सामने लीन है ।

**पर्दा उठना**

**(लक्ष्मण का प्रवेश कर पीछे खड़ा हो जाना)**

**उर्मिला :** (चित्र की आरती उतारते हुए)
हे आराध्य देव ! हे चित्रदेव ! पूरा हो गया आज अर्जन ।
जब तक ईश्वर था निराकार, तब तक ही था तेरा पूजन ।
साकार हो गया निराकार, तो उसका ही पूजन होगा ।
चन्दन-चावल की भाँति आज, अर्पण सब तन-मन-धन होगा ।
(पलटकर लक्ष्मण के पैरों में गिरते हुए) स्वामी..... !

**लक्ष्मण :** (उठाकर आँसू पौंछकर) प्रिये..... !
तन तेरा है मन तेरा है, धन तेरा लक्ष्मण तेरा है।
फिर बता कौन सी वस्तु रही, जिस पर अधिकार मेरा है।
अच्छा..... ! देवी..... ! अब माता कौशल्या से मिलने जाना है ।

**उर्मिला :** (सिसकते हुए) नाथ..... !

चौदह बरसों का बिरह सहा, पर अब क्षण भर का सहन नहीं।
क्या जाने क्यो हो गया आज, दर्शन से भरते नयन नहीं।
अच्छा, नाथ ! मैं भी चलती हूँ।

**(दोनों का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**सीन तीसवाँ**

**स्थान :** कौशल्या भवन।

**दृश्य :** कौशल्या इन्तजार में बैठी है।

**पर्दा उठना**

**राम :** (सीता सहित प्रवेश करके चरणों में गिरकर) प्रणाम जननी मां..... !

**कौशल्या :** (राम को अकेला देखकर विस्मय से) मेरे लाल..... ! पहले यह बता..... ?

हैं कहाँ सम्पदा वह मेरी, जो बन जाते दी थी तुझको।
बहुमूल्य लक्ष्मण सी वह मणि, संकट में सौंपी थी तुझको।

**लक्ष्मण :** (उर्मिला सहित प्रवेश करके चरणों में गिरकर) माता जी प्रणाम।

**कौशल्या :** (उठाकर छाती से लगाकर चूमते हुए) मेरे लाल..... !

कह दूंगी बहन सुमित्रा से, तू मुझे सौंप दे लक्ष्मण को।
बदले में इसके चाहे तो, ले ले इस रघुकुल भूषण को।

**सुमित्रा :** (प्रवेश करके)

हे ममतामयी जीजी, किसने तुमको बहकाया है।
बेटा है लक्ष्मण सुमित्रा का, यह भेदभाव क्यों आया है।
सबसे छोटी इस माता को, ऊँचे पद पर रखती हो तुम।
कह दो-२ सच्चे जी से, अन्याय नहीं करती हो तुम।

**कैकई :** ( प्रवेश करके ) बहन सुमित्रा... ! तुम ठीक कहती हो... ?

यह सच है मेरा पतन हुआ, सुत राजा हो इस चाहत से।
पर कलंकिनी हो बन बैठी, इतिहास लेखकों के मत से।

**कौशल्या :** नहीं बहन..... ?
लेखक बिन जाने समझे, अपयश तुमको कैसे देंगे।
दासी की दूषित लीला को, क्या नहीं आँख से देखेंगे।

**शत्रुघ्न :** (प्रवेश करके) हे भैया !
आज्ञा है गुरु की भाई जी, राजसी भेष में सज्जित हों।
राज्याभिषेक के मंडप में, सबके सहित उपस्थित हों।

**(राम-लक्ष्मण-सीता का राजसी भेष बनाने जाना)**

**पर्दा गिरना**

**।। चौपाई ।।**

पुनि निज जटा रात बिबराए। गुरु अनुसासन माँगि नहाए ॥

# राम का राजतिलक

## सीन इकत्तीसवाँ

**स्थान :** राजदरबार।

**दृश्य :** राम सीता सहित सिंहासन पर विराजमान हैं। गुरु वशिष्ठ भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न सहित सब सखाओं के साथ यथा स्थान विराजमान हैं।

**पर्दा उठना**

**।। चौपाई ।।**

प्रथम तिलक वशिष्ठमुनि कीन्हा, पुनि सब विप्रन्ह आयु दीन्हा।

**(गुरु वशिष्ठ द्वारा राजतिलक करना, उसके बाद सबका तिलक करना। विभीषण द्वारा मणिमाला राम के गले में डालना)**

**(श्री राम द्वारा मणिमाला सीता जी के गले में डालना। सीता जी द्वारा मणिमाला हनुमान के गले में डालना। हनुमान द्वारा उसे दाँतों से तोड़ना।)**

**विभीषण :** ॥ **दोहा** ॥

हे हनुमत ! हे वीरवर, हे बल बुद्धि के धाम ।
दानी होकर कर रहे नादानी का काम ॥

**जामवंत :** (हँसकर)

अरे भाई सुनो, मुझे मसल आ गई याद ।
बन्दर जाने है भला क्या अदरक का स्वाद ।

**राम :** (मुस्कराकर) पवनसुत ! यह क्या कर रहे हो ?

**हनुमान :** (चरणों में गिरकर) प्रभो ..... !

मेरे इष्टदेव का पता, इस मणिमाला में मिला नहीं।
दर्शन मेरे प्रभु का, इस मणिमाला में हुआ नहीं।
हो सकता है भीतर हों, इस कारण तोड़ रहा इनको।
नादानी हो या दानाई, अब तो मैं फोड़ रहा इनको।
दोनों के नाथ मिले इसमें, तब तो निश्चय उपयोगी है।
अन्यथा दास को मणि माला, कंकड़ की है पत्थर की है ।

**विभीषण :** (व्यंग्य से)

हे भक्त हनुमान जी, नहीं इसके भीतर राम।
पर तुमसे तो भक्तवर, व्यापक है यह नाम।

**हनुमान :** हाँ व्यापक है देह में, दो अक्षर का नाम ।
रोम-रोम में दास के, रमे हुए हैं राम।

**(हनुमान द्वारा छाती चीरकर राम-सीता दिखाना)**

**सम्मिलित स्वर : बोलो. . . सियापति रामचन्द्र की जय ।**

**पर्दा गिरना**

**॥ रावण वध लीला समाप्त ॥**

◆ ◆ ◆

### चौदहवां दिन (बारहवाँ भाग)

# सीता बनवास लीला

१. संक्षिप्त कथा

२. पात्र परिचय

३. सीता बनवास

## सीता बनवास लीला

### (संक्षिप्त कथा)

"छोटा मुँह बड़ी बात" प्रभो ! एक धोबिन एक रात घर से बाहर रही तो धोबी ने उसे यह कह कर निकाल दिया कि राम अपनी सीता को वर्षों रावण के यहाँ रहने पर भी अपना सके हैं, किन्तु मैं नहीं ..... क्या भाई बिरादरी में अपनी नाक कटवाऊँगा ? दुर्मुख कहे जा रहा था। राम की मुस्कान लुटती जा रही थी। अन्त में राम को कहना पड़ा... ? हम रघुकुल की मर्यादा को नष्ट नहीं होने देंगे। हम सीता का परित्याग करेंगे। सारा राज दरबार चीख उठा... नहीं... ? माता निर्दोष हैं, परन्तु राम को उनके अटूट प्रण से कोई नहीं डिगा सका। अन्त राम ने लक्ष्मण को आज्ञा दी ? लक्ष्मण ! कल की प्रभात बेला में सीता को घने जंगलों में छोड़कर आना होगा अन्यथा... ? रघुकुल रीति सदा चली आई। लक्ष्मण कराह उठा और यह सोचकर कि... ? प्राण जायँ पर वचन न जाई। कह उठा... ? आपकी इस आज्ञा का पालन होगा, भैया जी... !मार्ग में लक्ष्मण सोचे जा रहा था कि... ? एकबार माता सीता की आज्ञा मानकर अनजाने में माता को काल के मुंह में ढकेला था और आज... ? आज जानते हुए काल के मुँह में ले जा रहा हूँ और यही सोचते-सोचते वे अशुभ घड़ी आ पहुंची, जिनका उन्हें इन्तजार था। माता सीता को बेहोशी की हालत में छोड़कर लक्ष्मण चिल्ल्लाये जा रहा था... ? माँ... ! मैं जा रहा हूँ। सीता को होशआया। वह चिल्ला उठी... ? लक्ष्मण ..... ! लक्ष्मण ..... ! अन्त में निराश हो गंगा माई की गोद में सदा-सदा के वास्ते सोने के लिए तैयार हो गई तभी... ? उनके कानों में आवाज आई... ? ठहरो ..... !

आत्मघात करना कलंक को मिटाना नहीं, और बढ़ाना है। ऋषि बाल्मीकि कहे जा रहे थे... ? बेटी ! तेरे पास राम की निशानी है और वही तेरे जीवन की कहानी है। सीता सुबक उठी। डूबते को तिनके का सहारा मिला और अपने धर्म पिता की छाती से लग गई। तभी बाल्मीकि के मुंह से निकाल 'बन देवी... !' और वह इसी नाम से बाल्मीकि के आश्रम पर रहीं। समय पाकर सीता ने लव-कुश दो पुत्र रत्नों को जन्म दिया।

श्री राम का अश्वमेघ यज्ञ पूर्ण होने जा रहा था। आहुतियाँ दी जा रही थीं तभी राम के कानों में मधुर स्वर पड़ा। अपनी ही कथा सुनकर राम विचलित हो गये। आहूतियाँ देना भूल गये और यज्ञ खंडित हो गया। प्रभो ! गजब हो गया..... ? दो ऋषि कुमार प्रलय बनकर छाये हुए हैं। उन्होंने सारी सेना को मूर्छित कर दिया है। हनुमान जी को बांधकर अज्ञात स्थान में ले गये हैं। लक्ष्मण जी मूर्छित पड़े हैं। दूत कहे जा रहा था। राम का खून खौल उठा। उन्हें कहना पड़ा..... ? अब क्या शेष रह गया है? राम युद्धक्षेत्र में पहुंचेगा। दो निर्णयों में से एक होकर रहेगा..... ? उन बालकों का संहार या रघुवंश का विनाश।

और वही हुआ जिसका ऋषि बाल्मीकि का इन्तजार था। बालकों के व्यंग्य बाणों ने राम को मर्माहित कर दिया। राम को शस्त्र धारण करना पड़ा तभी ऋषि बाल्मीकि आ गये और उन्होंने अग्नि पर जल डाल दिया। राम सीता के लिए छटपटा उठे, परन्तु समय निकल चुका था। राम का दुर्भाग्य..... ? सीता जी पृथ्वी माँ की गोद में समा चुकी थीं। राम कराह उठे..... ? हा सीते..... ! हा सीते..... ! चिल्लाते हुए अपने विवेक को खो बैठे और मान वसुन्धरा से अपनी सीता को वापस मांगने लगे, तभी ब्रह्मा जी द्वारा भेजे हुए नारद जी ने आकर उनका क्रोध शान्त किया। "लक्ष्मी जी अपने लोक को पहुँच चुकी हैं" यह कहकर नारद जी अर्न्तध्यान हो गये। राम लुटा हुआ मन लेकर वापिस अयोध्या आ गये।

## पात्र परिचय
### (सीता बनवास लीला)

**पुरुष पात्र**

| | |
|---|---|
| १. छज्जू धोबी | २. प्रहरी |
| ३. राम | ४. गुरु वशिष्ठ |
| ५. लक्ष्मण | ६. भरत |
| ७. शत्रुघ्न | ८. हनुमान |
| ९. सुग्रीव | १०. विभीषण |
| ११. जामवंत | १२. मंत्री |
| १३. दूत | १४. पंडित |
| १५. ऋषि बाल्मीकि | १६. लव |
| १७. कुश | १८. सेनापति |
| १९. ब्रह्मा जी | २०. नारद जी |
| २१. शिवजी | |

**स्त्री पात्र**

| | |
|---|---|
| १. कम्मो धोबिन | २. मालती (बाल्मीकि की शिष्या) |
| ३. सीता | ४. पार्वती |
| ५. कौशल्या | |

# सीता बनवास

## (सीता बनवास लीला)

### सीन पहला

**स्थान :** छज्जी धोबी के मकान का बाहरी भाग।

**दृश्य :** छज्जू धोबी चबूतरे पर बैठा धोबिन का इन्तजार कर रहा है।

**पर्दा उठना**

**कम्मो :** (प्रवेश करके विस्मय से) अरे..... ? मेरे भरतार..... ! आप रात भर सोए नहीं।

**छज्जू :** (क्रोधित होकर चुटिया पकड़कर मारते हुए) अरे कम्बखत ! तू सोने दे जब न ।

**(दुमुर्ख का प्रवेश करके एक ओर छिपकर खड़ा हो जाना)**

**कम्मो :** मैं अपनी भूल की क्षमा मांगती हूँ, स्वामी !

**छज्जू :** (धक्का देते हुए) यह नहीं होगा । तूने छज्जू का स्नेह देखा है, क्रोध नहीं । बोल..... ? रात भर कहाँ रही ?

**कम्मो :** (पैरों में गिड़गिड़ाकर) मेरा कोई दोष नहीं है ?

**छज्जू :** (धक्का देते हुए) रोती रह कलंकिनी ! जी भरकर रोती रह । (भीतर से कपड़े लाकर कम्मो के मुँह पर मारकर) ले संभाल अपने कपड़े और इसी समय चली जा यहाँ से ।

**कम्मो :** (पैर पकड़कर) पर आपको छोड़कर जाऊँ कहाँ ?

**छज्जू :** (व्यंग्य से) अरे वाह री सती सावित्री ! ऐसे पूछती है कि जैसे मेरे सिवा तेरा कोई ठिकाना नहीं ।

**कम्मो :** (पैरों में गिड़गिड़ाकर) मैंने कोई बुरा काम नहीं किया है ।

**छज्जू :** (क्रोध से धक्का देते हुए) अरे ..... ! वाह री काली नागिन..... ! अपने नीच कर्म को छिपाती है । यह बालों की रंगत धूप में नहीं बदली ।

**कम्मो :** (पैरों में पड़कर) मैं विश्वास दिलाती हूँ कि ऐसा अपराध फिर कभी नहीं करूँगी ?

**छज्जू :** (क्रोध से) और मैं भी कह चुका हूँ कि छज्जू को ऐसी औरत की जरूरत नहीं जो रात-रात भर घर से बाहर रहे और पतिव्रता का दावा करे । तू समझती होगी..... ? सब पुरुष समान होते हैं । यह छज्जू भी रामचन्द्र जी की तरह अपनी सीता के वियोग में रोता फिरेगा ।

**कम्मो :** (घबड़ाकर) जरा सोच समझकर बात करो । कोई सुन लेगा..... ?

**छज्जू :** (चिल्लाकर) सुन ले मेरी बला से..... ? सच्ची बात कहनी ही पड़ती है ।

**कम्मो :** मैं कसम खाकर कहती हूँ कि पवित्र हूँ, स्वामी !

**छज्जू :** तो सीता ने ही अपना कौन सा अपराध स्वीकार किया था !

**कम्मो :** (सहमकर) क्रोध को पी जाओ, स्वामी ! सती सीता ने अग्नि की परीक्षा दी थी ।

**छज्जू :** (व्यंग्य से) तो तू भी दे ले अग्नि परीक्षा । जाति का छोटा हूँ, परन्तु धर्मकर्म का हीन नहीं । छज्जू वह मर्यादा पुरुषोत्तम राम नहीं जो वर्षों तक रावण के अधीन रही सीता को सती कहकर गले से लगा ले ।

**कम्मो :** (झुँझलाकर) बस ! चुप रहो जी !

**छज्जू :** (खिसियाकर क्रोध से) क्या मैं झूठ कह रहा हूँ । यह गरीब टुकड़ों के लिये खुद बिक सकता है, परन्तु लाज नहीं खो सकता, तूने सुना नहीं कलंकिनी । निकल जा इस घर से ।

**(छज्जू द्वारा कम्मो को धक्का देकर बाहर निकालना)**

**(दुर्मुख का जाना)**

**पर्दा गिरना**

**सीना दूसरा**

**स्थान :** राम दरबार ।

**दृश्य :** सिंहासन पर श्री राम गुप्तचर के रूप में बैठे हुए हैं । लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न पीछे खड़े हैं । हनुमान जी चरणों में बैठे हुए हैं । सुग्रीव, अंगद, विभीषण और जामवन्त मंत्री सभासदों के साथ यथास्थान बैठे हैं । प्रहरी पहरे पर खड़ा है ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

प्रतिदिन अवध अनंद उछाहू । दान देहिं प्रतिदिन नर नाहू ॥
दिन दिन प्रीति देखि भगवाना । अमित अनंत सकल पुर जाना ॥

**प्रहरी :** (प्रवेश कर सिर नवाकर) रघुकुल नरेश की जय ।

**राम :** क्या है प्रहरी !

**प्रहरी :** (सिर नवाकर) राजगुरु वशिष्ठ जी पधारे हैं ।

**राम :** आदरपूर्वक आने दिया जाय ।

**प्रहरी :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा, महाराज !

**(प्रहरी का जाना । गुरु वशिष्ठ का प्रवेश)**

**राम :** (सिंहासन से उठकर) राजगुरू को शत-शत प्रणाम ।

**वशिष्ठ :** प्रभो रघुवंशकी मान और मर्यादा के रक्षक रहें ।

**राम :** आसन ग्रहण कीजिये, गुरुदेव !

**(वशिष्ठ का आसन पर बैठ जाना)**

**वशिष्ठ :** (राम की ओर देखकर चौंककर) प्रभो ! यह भेष आप को शोभा नहीं देता ।

**राम :** (चरणों में गिरकर) मेरी शोभा इसी में है, कि मैं किसी भी प्रकार अपनी प्रजा की सेवा कर सकूँ । इन राजमहलों की सीढ़ियाँ इतनी विशाल होती हैं कि जिन साधारण को वहाँ तक पहुंचना कठिन होता है । मैं इस भेष में जाकर प्रजा की वह पुकार सुनना चाहता हूँ जो राजमहलों की चार दीवारी के अन्दर नहीं पहुच पाती ।

**वशिष्ठ :** इस कार्य के लिये तो आपका गुप्तचर दल है, अयोध्या पति !

**राम :** (मुस्कराकर) इस रूप से मैं अपने गुप्तचर दल का कार्य भी तो देख लेता हूँ, गुरुदेव ।

**वशिष्ठ :** (मुस्कराकर) आज मुझे तुम्हारे पिता दशरथकी याद ताजी हो गई है । वे भी तो इस भेष में..... ?

**राम :** (चरणों में झुककर) सब आपके चरणों का प्रताप है, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** सिंहासन की शोभा बढ़ाइये, अयोध्यापति !

**राम :** जो आज्ञा गुरुदेव !

## (श्री राम/का सिंहासन पर बैठना)

### ॥ चौपाई ॥

दूत अवधि निसि वासर धावहिं, संध्या कहँ सब खबर सुनावाहिं ।
पृथक-पृथक सुनि चरबर बानी, बोल एक नहिं सुनहु भवानी ।

**राम :** हम राज कार्य और प्रजा की जानकारी चाहते हैं, मंत्री !

**मंत्री :** (खड़ा होकर सिर नवाकर) प्रजा के लिये रामराज्य एक अमिट उदाहरण बन गया है ।

**राम :** यह प्रशंसनीय शब्द राम के लिए घातक हो सकते हैं मंत्री ! प्रशंसा की जरूरत कर्महीन को होती है ।

**मंत्री :** सेवक अभी आपका आशय नहीं समझ सका, अयोध्यापति !

**राम :** मंत्री जी ! राज्य प्रजा के लिए होता है । प्रजा राज्य के लिए नहीं और यदि ऐसा हुआ तो राजा नहीं शासक होगा और शासन शक्ति के आधार पर होता है । प्रशंसाओं के जाल में फंस यदि राम भी जनहित को भुला बैठा ..... ? राम शासक नहीं, प्रजा का शासक है । हम अपने राज प्रबन्ध की कमियाँ जानना चाहते हैं, मंत्री महोदय हमारे गुप्तचरों को प्रस्तुत किया जाए ।

**दुर्मुख :** (प्रवेश करके सिर नवाकर) रघुकुल नरेश की जय ।

**राम :** दुर्मुख ..... !

**दुर्मुख :** (सिर नवाकर) अन्नदाता ! गुप्तचरों के पास भी इन शब्दों से अधिक कुछ नहीं है । प्रजा का प्रत्येक प्राणी अयोध्या नरेश की नीति और व्यवहार से बहुत सन्तुष्ट है, आप आज ..... ?

**राम :** (विस्मय से) आज क्या ? कहो दुर्मुख ! कहते-२ रुक क्यों गये ?

**दुर्मुख :** (हिचकिचाकर दुखी मन से) कुछ नहीं महाराज ..... ! यूं ही ..... ?

**राम :** छुपाओ नहीं, दुर्मुख ! हमने अपने गुप्तचरों को सबसे बड़ा कार्य यही सौंपा है कि वह प्रजा की विरोधी धारणाओं को हम तक पहुँचाये ।

**दुर्मुख :** किन्तु..... ? वह सब महत्वहीन है, अयोध्यापति ?

**राम :** फिर भी हम सुनना चाहते हैं, दुर्मुख ! भले ही हम इस में पूर्ण सफल न हो सकें फिर भी हम प्रयास करेंगे कि कोई व्यक्ति राम का विरोधी न बन सके ।

**दुर्मुख :** धोबी का आक्षेप राजसत्ता पर नहीं था, महाराज !

**राम :** राजसत्ता पर न सही, राजा राम पर तो है । हम सुनना चाहते हैं ।

**दुर्मुख :** (नीची गर्दन करके) इसी बीती रात्रि की घटना है, प्रभो ! मैं अपने नित्य के नियमानुसार नगर भ्रमण पर था कि एक धोबी-धोबिन के आपसी झगड़े ने मुझे कुछ सुनने को विवश कर दिया ।

**राम :** तब..... ?

**दुर्मुख :** शायद धोबिन इस रात को घर से बाहर होगी ।

**राम :** हूँ..... ?

**दुर्मुख :** बस..... ? यही कारण था उनके झगड़े का ।

**राम :** दुर्मुख..... ! अपने कर्त्तव्य का पालन करो ।

**दुर्मुख :** धोबी ने अयोध्यापति को संकेत करते हुए कहा था कि, महाराज मैं वह राम नहीं जो वर्ष भर रावण के यहाँ रही सीता को अपना लूँ ।

**वशिष्ठ :** (क्रोधित होकर) उसका इतना साहस..... ?

**दुर्मुख :** धोबी ने छोटा मुँह बड़ी बात की है, महाराज !

**राम :** नहीं..... ? दुर्मुख ! धोबी ने सत्य कहा है । उसने राम की मान्यता पर घात नहीं किया । राम की कमी पर प्रकाश डाला है ।

**वशिष्ठ :** इस पर धोबी दण्ड का भागी है ।

**राम :** नहीं ..... ? गुरुदेव ! वह राम की मर्यादा का रक्षक है। हम अपनी भूल का अनुभव करते हैं। हमें वह कुछ नहीं करना चाहिये था जिस पर किसी को उंगली उठाने का अवसर मिले। हम इसका समाधान करेंगे।

**॥ चौपाई ॥**

त्यागहुँ जनक सुता बन माँहीं । राखहुं श्रुति पथ धर्म न जाहीं ॥

**वशिष्ठ :** (सकुचाकर) बहुत गम्भीर हो गये, अयोध्यापति !

**राम :** (पैरों में गिरकर) गुरुदेव ! आप ही के शुभ आशीष से मैंने प्रतिज्ञा की थी कि राम की राज सेवा तब सफल होगी जब प्रजा का हर प्राणी खुश रहेगा। भले ही इस के लिए राम को अपने प्राण गवाने पड़ें। हमें खोई हुई सीता को नहीं अपनाना चाहिये था। हम सीता का त्याग करेंगे ..... ?

**हनुमान :** (पैरों में गिरकर रोते हुए) नहीं ..... ? माता निर्दोष हैं। मेरे प्रभो ..... ! ऐसा कठिन प्रण मत करिये। मेरे प्राण ले लीजिये, प्रभो ! परन्तु ..... ? माता पर आघात मत कीजिये।

**राम :** (उठाकर छाती से लगाकर) भावना से कर्त्तव्य ऊँचा होता है, पवनपुत्र। रघुकुल का कलंक राम को घुला घुलाकर मार डालेगा। हमें अपनी मर्यादा रखनी होगी।

**दुर्मुख :** (रोते हुए) यह सब मुझसे क्या होगा ? दुर्मुख की दुष्टता बिसार दो, प्रजापते ! उसकी दुष्टता का दण्ड माँ सीता को नहीं, मुझे दीजिए, प्रभो ! आपको यह खबर सुनाने के अलावा और कोई चारा नहीं था, अन्नदाता ! यह सेवक अपने फर्ज के हाथों मजबूर था।

**वशिष्ठ :** यह देवी सीता की पवित्रता पर आक्षेप है, अयोध्यापति ! रघुकुल की लाज ..... ?

**राम :** नहीं ..... ? गुरूदेव ! सीता पवित्र है। स्वयं इन्द्रदेव ने अग्नि परीक्षा के बाद मुझे सौंपा था। सतीत्व के आगे

भगवान भी झुकते हैं। उसकी लाज की रक्षा होगी, गुरुदेव !

॥ सोरठा ॥

सुनि प्रभु वचन कठोर, भरत कहेउ युग जोरि कर ।
नाथ हमहि मति थोर, सुनु विनती सर्वग्य प्रभु ॥

**भरत :** (चरण पकड़कर) यह सब झूठ है भैया ! आप किस-किसकी जबान रोकेंगे। यह झूठा प्रचार भी तो हो सकता है।

**राम :** नहीं..... ? भैया, भरत ! यह झूठा प्रचार नहीं। हमें प्रजा की भावनाओं का आदर करना होगा।

**भरत :** यदि प्रजा की चाहत नीति विरोधी हो तब..... ?

**राम :** पूरी की जायेगी।

**भरत :** यदि प्रजा विद्रोही बन कर राज्य सम्पत्ति लूटना चाहे... ?

**राम :** प्रजा इसके लिए भी स्वतन्त्र है।

**भरत :** प्रजा आप के देव स्थानों को नष्ट करने की इच्छा करे.. ?

**राम :** मैं ऐसी देशा में भी प्रजा की इच्छा का स्वागत करूँगा, भरत।

**भरत :** किन्तु..... ? क्यौं भैया..... ?

**राम :** इसलिये कि ? प्रजा ने राम को राज्य का भार सौंपा है। राम प्रजा की दृष्टि में शासक हो सकता है किन्तु स्वयं की दृष्टि में वह एक सेवक है। प्रजा का आज्ञाकारी है। सीता त्याग का निर्णय अटल है।

॥ चौपाई ॥

सुनु लघु भ्रात कहेउ रघुनाथा । लै बन जाहु जानकिहि साथा ॥
आयसु मोर टरहि जो ताता । रहै न प्रान तात मम ताता ॥

**राम :** (लक्ष्मण की ओर इशारा करके) लक्ष्मण ! मैं तुम्हें... ? बड़े भाई के नाते समझो या अयोध्या नरेश के नाते... ? आज्ञा देता हूँ कि आज रात्रि में ही तुम्हें सीता को लेकर.. ?

**लक्ष्मण :** (पैरों में गिरकर रोते हुए) भैया..... !

**राम :** सीता को उन जंगलों के अधीन करके आना होगा जहाँ से सीता कभी लौटकर न आ सके।

**लक्ष्मण :** यह अनर्थ है भैया..... !

**राम :** और साथ-२ राम की आज्ञा भी। यदि लक्ष्मण की ओर से इस आज्ञा का पालन न हुआ तो..... ? शायद तुम राम को जिन्दा न देख सको।

**लक्ष्मण :** इतनी कठोर प्रतिज्ञा..... ?

**राम :** रघुकुल रीति सदा चलि आई..... !

**लक्ष्मण :** हाँ..... ? प्राण जाँय पर वचन न जाई..... ! आपकी इस आज्ञा का पालन होगा, भैयाजी !

**राम :** और सुनो..... ? मेरी पवित्र जानकी अपना अपराध पूछे तो कहना कि..... ? तुम अभागे राम की पत्नी हो। राम के दुर्भाग्य का साया तुम पर भी पड़ना ही था किन्तु अन्तिम समय विजय तुम्हारी ही होगी, बनबासिनी !

**लक्ष्मण :** (रोते हुए परदे से बाहर आकर)

**फिल्म—"कारीगर"**

मोसों रुठि गये मोरे राम रे।
अपनी सीता को दे बैठे, पतिता का एक नाम रे।
कौन जतन से मैं समझाऊँ।
रूठे भ्रात को कैसे मनाऊँ।
मरते-मरते भी होठों पर, होगा राम का नाम रे।
अपनी सीता को दे बैठे, पतिता का एक नाम रे।
मोसो रूठि.....(१)
काहे जीती सीता सुनकर, राम से ऐसी बानी।
पर क्या करती गर्भ में उसके, थी एक राम निशानी।
जान पै दुख सहकर भी जीना, माता का काम रे।

अपनी सीता को दे बैठे, पतिता का एक नाम रे।
मोसो रूठि.....(२)

**कौशल्या :** (प्रवेश करके) राम..... !

**राम :** सिंहासन से उठकर चरणों में गिरकर) आज्ञा माँ !

**कौशल्या :** मैं अपनी शंका का समाधान करने आई हूँ, बेटे !

**राम :** रोने कलपने और सहन करने के लिए आपका राम उपस्थित है, माँ !

**कौशल्या :** अचानक राजमहलों में दुखद समाचार फैल गया है कि राम ने सती सीता के त्याग का निर्णय कर लिया है।

**राम :** इन राजमहलों में यही सब कुछ तो हुआ करता है, माँ ! प्रकृति धन और मान देकर नरेश की मानसिक शान्ति का हरण कर लेती है।

**कौशल्या :** (विस्मय से) तो क्या..... ? यह समाचार सत्य है।

**राम :** हाँ..... ! यदि उदय और अस्त सत्य हैं तो राम द्वारा सीता का त्याग भी सत्य है।

**कौशल्या :** (विस्मय से) तो क्या ? इस पर मैं भी विश्वास कर लूँ, बेटे !

**राम :** अवश्य माँ..... ! आपके विश्वास पर ही तो रामप्रतिज्ञा सफल होगी।

**कौशल्या :** राम..... ! यह जानते हुए भी कि..... ? किसी भी राजकार्य में हस्तक्षेप करना स्त्री जाति का कर्म नहीं है। इसी कारण मैं अपने पुत्र को आज्ञा न देकर केवल अनुरोध करना चाहूँगी।

**राम :** नहीं माँ..... ! नहीं..... ! माँ की विनय को ठुकरा कर राम अपनी मर्यादा को नहीं बचा पायेगा।

**कौशल्या :** और तुझे अपनी गृहलक्ष्मी सती सीता को धूल में मिलाने की आजादी दे दूँ।

**राम :** यह होनहार है, मातेश्वरी ! इसे विधाता भी नहीं रोक सकता।

**कौशल्या :** जनकनन्दिनी रघुकुल की लाज है, राम !

**राम :** और राम इस लाज को त्यागने की प्रतिज्ञा कर चुका है।

**कौशल्या :** तो क्या राम उत्तर दे सकेगा कि उसे प्रतिज्ञा करने और निभाने की शक्ति किसने दी है ?

**राम :** माँ..... !

**कौशल्या :** मैंने ..... ! मेरे दूध ने ..... ! और आज तू अपनी प्रतिज्ञा का त्याग नहीं कर सकता तो कौशल्या अपनी ममता का त्याग कर तुझ से अपनी शक्ति लौटा लेना चाहती है।

**राम :** इसके लिए राम तुम्हारे सामने है, माँ ! दण्ड दो ..... ? अभिशाप देकर इस देह को फूँक दो, माँ !

**कौशल्या :** (रोकर) तू कितना निर्मोही बन गया है, बेटे ! तू अपना आदर्श बनाने के लिए सती सीता का त्यागकर सकता है परन्तु तू अपनी इस हत्यारी प्रतिज्ञा को तोड़ नहीं सकता।

**राम :** (माँ के आँसू पौंछते हुए) यह मोरी जैसे आँसू लुटा कर राम को विचलित न करो, माँ ! नहीं तो ..... ? यह रघुवंश, राम और उसकी मर्यादा सबका नाश हो जायेगा।

**कौशल्या :** जीवन की प्रथम सीढ़ी में ही तूने अपनी आशाओं पर पानी फेर दिया, बेटे ! मुझे तो देख .,.... ? तेरे बनवास का मार्मिक सन्देश और चौदह बरसों की अवधि ..... ? निश्चय नहीं कर सकती थी कि मुझे मेरा राम और बहू सीता कभी मिल सकेंगे या नहीं। फिर भी हृदय पर पत्थर रखकर चुप्पी साध ली। मेरा हृदय सांत्वना देता था कि तेरा राम तो वीर पुरुष है।

**राम :** किन्तु माँ..... ?

**कौशल्या :** यदि वह संदेश तेरे लिए फिर दे दिया जाये तो विश्वास कर बेटे ! मैं तनिक भी मन मैला नहीं करूँगी। जानती हूँ कि ? मेरा राम साहसी और वीर है किन्तु निर्दोष सीता का

त्याग ? उस पर यह यह घात मुझसे सहन नहीं हो सकेगा, बेटे ! तुम भगवान हो । तुम सब कुछ सह सकते हो परन्तु मैं मानवी हूँ और फिर एक माँ हूँ । मैं तुझसे भिक्षा के रूप मैं सीता मांगती हूँ । तू सीता का त्याग न कर । देख ?देख राम... ? आज तेरी कौशल्या माँ... ! मर्यादा पुरुषोत्तम राम की माँ... !अपने राम के सामने भिक्षा का आँचल फैला कर सीता की भीख मांग रही है ।

**राम :** नहीं माँ..... ! नहीं..... !

**कौशल्या:** तो क्या..... ? कौशल्या को भीख नहीं मिलेगी, बेटे !

**राम :** यह अनर्थ है, माँ... ! अपनी इस इच्छा को त्याग दो, माँ... !

**कौशल्या:** और तू अपना निर्णय नहीं बदल सकता ।

**राम :** राम भी भाग्य के आधीन है, मातेश्वरी !

**कौशल्या:** तो यह भी याद रखना, बेटे ! तू देवी सीता का त्याग कर चैन नहीं पा सकेगा ।

**राम :** ऐसा ही हो, माँ !

**कौशल्या:** और जब तू उस देवी को अपनाने की कोशिश करेगा तब तुझे निराश ही हाथ लगेगी ।

**(कौशल्या का जाना)**

**राम :** नहीं माँ..... ! नहीं..... ! ऐसा अबिशाप न दो, माँ ! उस देवी को खोकर यह राम जीवित न रह सकेगा माँ !

**पर्दा गिरना**

## सीन तीसरा

**स्थान:** वनपथ ।

**दृश्य:** लक्ष्मण सारथी बनकर सीता जी को रथ में ले जाते हुए दीख पड़ते हैं ।

**पर्दा उठना**

**॥ चौपाई ॥**

सुभग विमान सीय बैठारी । षट भूषन बहुधरे संभारी ।
अति अनंद मन चली जानकी । अतिसय प्रिय करुणानिधान की ॥

**(रथ का आगे बढ़ना)**

**॥ चौपाई ॥**

उतरि देवसरि यान सुहावा । अति उद्यान देखि भय पावा ॥
कारन अपर जानि भयभीता । बोली बचन मनोहर सीता ॥

**सीता :** हम बहुत दूर निकल आये हैं, लक्ष्मण !

**लक्ष्मण :** श्री राम की इच्छा ऐसी ही थी, माँ..... !

**सीता :** (अचरज से) उन्होंने इससे पहले मुझे कभी भी अकेले भ्रमण करने को नहीं भेजा ।

**लक्ष्मण :** (रथ से उतरते हुए) अधिक सोचने से मानसिक शक्तियाँ कमजोर हो जाती हैं, माँ ! आप विश्राम करें ।

**सीता :** (रथ से उतरकर भय से) विश्राम..... ! यहाँ..... ! धूलि और कंकड़ों में..... ! कहीं तुम्हें अब भी वनवास काल की याद तो नहीं आ रही हैं ।

**लक्ष्मण :** (रोते हुए) वह समय बहुत अच्छा था, माँ ! वहाँ हम तीन मूर्तियाँ तो साथ थीं । और यहाँ..... ? मैं और माता सीता..... ! फिर क्षण भर बाद..... ?

**सीता :** (घबड़ाकर) क्षण भर बाद क्या..... ?

**लक्ष्मण :** (आँसू पौंछकर) कुछ... नहीं..... !

**सीता :** लक्ष्मण ! तुम सोच क्या रहे हो ? तुम्हारे चेहरे पर हवाइयाँ क्यों उड़ रही हैं..... ?

**लक्ष्मण :** (चरणों में गिरकर रोते हुए) नहीं... माँ..... ! लक्ष्मण सदा से कर्म को प्रधान मानता रहा है, मातेश्वरी ! किन्तु... अब उसका यह विश्वास टूट चुका है ।

**सीता :** ऐसा क्यों..... ? लक्ष्मण..... !

**लक्ष्मण :** इसलिए कि ? अच्छे कर्म करने पर भी मनुष्य को दुर्भाग्य

की ठोकरें खानी पड़ती हैं।

**सीता :** मैं समझी नहीं, लक्ष्मण !

**लक्ष्मण :** माँ..... !

अच्छा होता यदि लंका में, सो जाता शक्ति बाण से मैं।
या रावण के रण सागर में, धो लेता हाथ प्राण से मैं।
यह दिन तो नहीं देख पाता, जीता हुआ मर रहा हूँ।
अपने मन मन्दिर की माँ पर, कुसमय आघात कर रहा हूँ।
आज्ञा का बर्छा भाई ने, मारा है मुझ हतभागी के।
यह अत्याचार धर्म का है, जो सिर पर है अनुरागी के।
भारत की ऊँची नारी का, तुमने तो चरित दिखाया है।
पर अवध वासियों ने उसको, अत्यन्त बुरा बतालाया है।
वे कहते हैं परवशता में, जब प्राण गंवा देती माता।
तो सच्ची पतिव्रताओं की, पदवी को पा लेती माता।
यह नहीं समझती मूर्ख प्रजा, अग्नि परीक्षा दी तुमने।
पति के हितनिज प्राणों को रख, पति की भी रक्षा की तुमने।
है यही भेद जिसके कारण, भाई ने यहाँ पठाया है।
बेटे के हाथों ही उसकी, माता को बन भिजवाया है।

**सीता :** (गिरते हुए) नहीं..... !

**(सीता का मूर्छित होकर गिर जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

देखि लषन सिय मूर्छा आई । गगन गिरा तब भई सुहाई ॥
लै रथ चरन बंदि सिय केरे । चले अवधपुर त्रास घनेरे ॥

**(लक्ष्मण का सोच में डूब जाना )**

**आकाशवाणी :** हे लक्ष्मण ! सुनो, सीता को त्याग कर जाओ। सौभाग्यवती सीता जीवित रहेंगी।

**लक्ष्मण :** (चरण छूकर) मातेश्वरी ! मुझे क्षमा करना। मैं जा रहा हूँ।

**॥ चौपाई ॥**

जागी सिया सकल दिसि देखा। नहिं रथ अश्व नहीं कहिं सेषा ॥

**सीता :** (मूर्छा से जागकर) लक्ष्मण... ! लक्ष्मण... !लक्ष्मण... !

**(पछाड़ खाकर गिर जाना)**

बनाके क्यों बिगाड़ा रे, बिगाड़ा रे नसीबा,
ओ ऊपर वाले, बनाके क्यों .....
पाप करे इन्सान अगर तो, वह पापी कहलाता है।
मैंने भी एक पाप किया है, कैसे कहूँ तू दाता है।
मुझको रुलाके, राह पै लाके, बिगाड़ा रे नसीबा।
ओ ऊपर वाले बनाके क्यों .....

(गंगा के किनारे आकर हाथ जोड़कर) हे पतित पावनी गंगा माँ तू हर पाप धोती है। आज इस अपनी अभागी बेटी के कलंक को धोदे, माँ..... !

**(सीता छलांग लगाने को होती है।)**

**॥ चौपाई ॥**

करुणा करत बिपिन अति भारी। बाल्मीकि आए बनचारी ॥

**बाल्मीकि :** (पीछे से आकर) ठहरो ..... ? आत्मघात करने से कलंक मिटेगा नहीं और बढ़ेगा, बेटी !

हे बेटी ! धीरज रक्खो, यों प्रण गंवाना ठीक नहीं।
संकट में या संघर्षों में, पागल बन जाना ठीक नहीं।
तुम तो विदेह की पुत्री हो, यों चिन्ता करना लज्जा है।
झठे अपयश का भाजन बन, इस प्रकार मरना लज्जा है।
है यही तुम्हारा आज धर्म, मिथ्यावादों का नाश करो।
मिट जायेगी कलंक रजनी, रविकुल का उदय प्रकाश करो।
अनुचित है फिर भी कहता हूँ, तुम खोटी बातकर रही हो।
जो गर्भवती होकर बेटी, जल में अपघात कर रही हो।

बेटी ! तेरे पास राग की निशानी है और वही तेरे जीवन की कहानी है।

**सीता :** हे मुनिराज !

वैदेही ठौर चाहती थी, रघुकुल की लाज बचाने को।

जीवन ही में दूसरी बार, फिर पतिव्रत दिखलाने को।

**बाल्मीक :** बेटी ! ईश्वर की लीला अपरम्पार है। उसके यहाँ देर है, अन्धेर नहीं..... ।

आती है बड़ी हँसी मुझको, बिधना की उल्टी माया है।
सब भाँति सती जो नारी है, उसमें ही दोष लगाया है।
चिन्ता को छोड़ चलो आश्रम, रहने को कुटी बना दूँगा।
महलों की शोभा मान सहित, फिर महलों में पहुँचा दूँगा।

**सीता :** (छाती से लगकर) जो आज्ञा, मुनिराज !

**बाल्मीक :** (पीठ पर हाथ फेरकर) बनदेवी !

**बाल्मीक का सीता सहित प्रस्थान**

**पर्दा गिरना**

**।। चौपाई ।।**

सादर पर्णकुटी सिय आनी । पुनि करि मज्जन सब गति जानी ॥

## सीन चौथा

**स्थान :** बाल्मीक आश्रम ।

**दृश्य :** ऋृषि बाल्मीक भगवान का भजन कर रहे हैं ।

**पर्दा उठना**

**मालती :** (खुशी से दौड़ती हुई प्रवेश करके) गुरुदेव ! गुरुदेव... !

**बाल्मीक :** क्या है, मालती ! बेटी ! बहुत खुश नजर आ रही हो ।

**मालती :** प्रभो ! बनदेवी ने दो पुत्र रत्नों को जन्म दिया है ।

**बाल्मीक :** (ऊपर हाथ उठाकर) प्रभो ! तेरी माया अपरम्पार है ।

**पर्दा गिरना**

**।। चौपाई ।।**

गुरु समेत प्रभु अवधहि आए । देखि बनाव अमित सुख पाए ॥

## सीन पाँचवाँ

**स्थान :** अयोध्या के राजमहल का बाहरी भाग ।

**दृश्य :** श्रीराम का राजगुरु के साथ प्रवेश ।

**राम :** मुझे भ्रम में डाल रहे हैं, गुरुदेव ! यह प्रतिपल राज्य की प्रशंसा, राम राज्य के जयकारे . . . मुझे विचलित कर देंगे, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** किन्तु मैं प्रशंसा नहीं कर रहा, आपके राज्य कौशल को प्रोत्साहन देने का यत्न कर रहा हूँ ।

**राम :** यही तो विचित्र नियम है, गुरुदेव ! राम राज्य को आदर्श बनाने के बहाने राम का सब कुछ लुटा जाता है और उसे आँसू तक गिराने की स्वतंत्रता नहीं दी जाती ।

**वशिष्ठ :** इसी का परिणाम है कि आज चारों दिशाओं से स्वर गूँज रहे हैं. . . . . ? राजा राम की जय . . . . . ! राम राज्य अमर हो ।

**राम :** (चरणों में झुककर) और यदि यह सब सत्य है तो आपके प्रताप का फल है, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** इस पर भी आत्मा को अभी संतोष नहीं मिला । मैं चाहता हूँ कि राम राज्य . . . . . ! किन्तु . . . . . ?

**राम :** (अचरज से) किन्तु . . . क्या . . . . . ? बताइये, गुरुदेव ! इस किन्तु शब्द का विराम तोड़िए । राम के जीवन में एक क्षण मुस्कान कभी आती भी है तो यह किन्तु का ग्रहण उसे नष्ट कर जाता है । इस किन्तु शब्द ने मुझे कई बार लूटा है, राजऋषि !

**वशिष्ठ :** अधीर मत हों, राम ! राज्य भार संभाले राजा को जो कुछ करना चाहिए वह श्रीराम कर चुके हैं । हाँ. . . ? एक कमी मुझे दीखती है वह अश्वमेघ यज्ञ द्वारा पूरी हो जायेगी ।

**राम :** (खुश होकर) अश्वमेघ यज्ञ . . . . . ! यह कौन सी बड़ी बात है ? गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** यह सब तो ठीक है, किन्तु . . . . . ?

**राम :** फिर वही किन्तु. . . ? गुरुदेव ! मुझे इस शब्द से घृणा है ।

**वशिष्ठ :** अयोध्यापति ! हमारे धर्मशास्त्रों के अनुसार यज्ञ आदि में धर्म पत्नी का होना जरूरी है ।

**राम :** (विस्मय से) धर्म पत्नी ..... ! किन्तु गुरुदेव ! यह राम तो अपनी सीता का त्याग कर चुका है ।

**वशिष्ठ :** देवी सीता को बुलाया भी तो जा सकता है ।

**राम :** (दुखी होकर) यह आप कह रहे हैं, गुरुदेव ! जिस निष्कलंक सीता को राम ने त्याग दिया वह उसे फिर बुला सकेगा ? (चरण पकड़कर) यदि आप राम प्रतिज्ञा की पूर्ति चाहते हैं तो आपको निराश होना पड़ेगा, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** हमारे धर्मशास्त्रों की रीति है । स्त्री के बिना यज्ञ पूर्ण होना असम्भव है ।

**राम :** और ठीक इसी प्रकार राम का सीता को अपना लेना असम्भव है, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** तो क्या मेरी इच्छा पूरी नहीं होगी, अयोध्यापति !

**राम :** (चरण पकड़कर) यदि आप राम प्रतिज्ञा की पूर्ति चाहते हैं तो आपको निराश होना पड़ेगा । गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** (दुखी होकर) तो क्या यज्ञ नहीं हो सकेगा ..... ?

**राम :** शायद नहीं ..... !

**वशिष्ठ :** इससे मृतक दशरथ नरेश की आत्मा को चोट पहुँचेगी, अयोध्यापति !

**राम :** पहुँचने दीजिए, गुरुदेव ?

**वशिष्ठ :** इन्द्रदेव रुष्ट हो जायेंगे, वर्षा रुक जायेगी, अन्न उत्पन्न नहीं हो सकेगा ।

**राम :** कुछ भी हो, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** और जब राम की भूखी प्रजा राम के सामने हाहाकार करेगी ।

**राम :** यह सब कुछ सहन किया जा सकेगा, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** यह सब कुछ सहने को आप तैयार हैं, किन्तु एक यज्ञ नहीं

कर सकते ।

**राम :** मेरी मजबूरी है, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** दूसरा विवाह भी तो किया जा सकता है ।

**राम :** (पैरों में गिरकर) नहीं गुरुदेव ..... ! नहीं ..... ! यह आप कह रहे हैं ।

**वशिष्ठ :** प्रजापति के लिये दूसरा विवाह निन्दनीय नहीं है, अयोध्यापति । स्वयं तुम्हारे पिता दशरथ ने तीन विवाह किये थे ।

**राम :** तभी तो अयोध्या में क्लेश का प्रकोप बढ़ा था, गुरुदेव । राम दूसरा विवाह रचाने में असमर्थ है ।

**वशिष्ठ :** तब मुझे निश्चय कर लेना चाहिए कि राम यज्ञ कराने में असमर्थ हैं ।

**राम :** हाँ गुरुदेव । यदि यज्ञ में स्त्री का होना जरूरी है । आप मेरी प्राण आहूति द्वारा यज्ञ रचाकर अपनी इच्छा पूर्ण कीजिए, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** अयोध्यापति ! वशिष्ठ की कामनायें तो रघुवंशी दीप को गगन मण्डल तक ले जाने की है उसे बुझा देने की नहीं ।

**राम :** (चरणों में गिरकर) तब रघुवंश के अभागे राम की मर्यादा भी बचाइये, गुरुदेव ! यदि सीता नारी रूप में अपने पतिव्रत धर्म का पालन कर सकती है । तो राम को भी आशीर्वाद दीजिये कि वह भी पुरुष के नाते अपने पत्नीव्रत धर्म का पालन कर सके ।

**वशिष्ठ :** (खुश होकर) ऐसा ही होगा, अयोध्यापति ! अश्वमेघ यज्ञ अवश्य होगा ।

**राम :** (अचरज से) किन्तु कैसे, गुरुदेव ! राम की मर्यादा का नाश करके ..... ?

**वशिष्ठ :** प्रभो ! मैं तो आपकी परीक्षा ले रहा था । आप साक्षात धर्म के अवतार हैं । मैंने यज्ञ का सब प्रबन्ध कर लिया है, सिर्फ आपकी ही देर है ।

## दृश्य परिवर्तन

**स्थान :** अयोध्या के राजमहल का भीतरी भाग।

**दृश्य :** हवन कुण्ड के पास पंडित बैठा है। ऋषिमुनि श्रीराम का जयघोष कर रहे हैं। सामने सीता की स्वर्ण प्रतिमा विराजमान है।

**(श्रीराम का गुरु वशिष्ठ के साथ प्रवेश। सबका खड़े होकर श्री राम का घोष जयघोष करना। श्री राम क सीता जी की प्रतिमा को वामांग लेकर हवन कुण्ड पर बैठना। पंडित का मंत्रोच्चारण करना। राम का आहुती देना।)**

**लव-कुश का गाते हुए प्रवेश—फिल्म : "राम राज्य"**

भारत की एक सन्नारी की, हम कथा सुनाते हैं-२।
मिथिला की राजदुलारी की, हम कथा सुनाते हैं-२।
शिव धनुष राम ने तोड़ा, मिला चन्द्र चकोर का जोड़ा।
कोमल थी वह कली, सुखों में पली, बनों में चली।
बहुत दुख पाई।
सुनकर उसकी व्यथा, नैन भर आते हैं, हम कथा सुनाते हैं।
भारत की...

**(श्रीराम का अपनी सुधि खोकर हवन मंडप से उठकर ध्वनि की ओर बढ़ना)**

**पंडित :** अयोध्यापति..... !

**वशिष्ठ :** यज्ञ अभी पूरा नहीं हुआ है, अयोध्यापति !

**राम :** राम हृदय के वशीभूत हुआ जा रहा है, गुरुदेव ! राम के कानों में न जाने कौन राम की कहानी कह रहा है ?

**पंडित :** यज्ञ को पूरा होने दीजिये, महाराज ! पधारिये !

**राम :** यज्ञ..... ! हाँ..... ! अश्वमेघ यज्ञ..... ! मैं यह सब कुछ तो भूल ही चला था, गुरुदेव !

**(राम फिर अपने आसन पर बैठ जाते है)**

**वशिष्ठ :** अयोध्यापति ! आपके उठ जाने से यज्ञ में एक बाधा आ

पड़ी है। शायद... शुभ नहीं होगा।

**राम :** (दुखी मन से) राम के जीवन में शुभ घड़ियों को स्थान नहीं है, गुरुदेव ! पूजा सम्पन्न की जाय, पंडित जी !

**(पंडित पुनः मंत्रोच्चारण करता है)**

**लव-कुश—गाना**

रावण ने छली करी, सिया को हरी, विधि क्या करी,
बहुत दुख पाई।
सीता-सीता करे, बिरह में जरे, बनों में फिर,
विकल रघुराई।
सुन कर उसकी व्यथा, नैन भर आते हैं, हम कथा सुनाते हैं।
भारत...
फिर पवन पुत्र वहाँ आए, सुधि को धाए, बजाइ दियौ डंका।
राम कोप पर बढ़े, लंक पर चढ़े, फूंकि दई लंका।
सिया लौटाई सिया लौटाई।
सुनकर उसकी व्यथा, नैन भर आते हैं, हम कथा सुनाते हैं।
भारत की...

**(आहुति बन्द कर श्रीराम का आवाज की ओर देखना)**

**पंडित :** हृदय को काबू में कीजिए, महाराज ! आपने फिर आहुति रोक ली है।

**राम :** ओह..... ! आज इस हृदय को क्या हो गया है ? क्षण भर के लिए पूजा कार्य रोक लिए जायें, पंडित जी !

**लव-कुश (गाना)**

जैसे दिए में तेल, तेल में बाती, बाती में तेज प्रकाशे।
तस राम हृदय में सिया, सिया हिय राम ही भासे।
क्या बिना प्राण के अमर, रही कहीं देही।
क्या यही राम दरबार, कहाँ बैदेही।
सुनकर उनकी व्यथा, नैन भर आते हैं।
हम कथा सुनाते हैं, भारत की...

**(राम का यज्ञ से उठकर लव-कुश के पास आना)**

**लव-कुश :** यदि धर्म कर्म को ठुकराकर, सीता भी दुर्गे हो जाती ।
तो मिट जाता रघुवंश-राम, मर्यादा ओझल हो जाती ।

**(लव-कुश का राम कथा रोक देना)**

**राम :** (पास आकर दुखी मन से) राम कथा रोक क्यों दी तुमने ? गाओ ..... ? यदि धर्म कर्म को ठुकराकर सीता भी दूर्गे हो जाती ..... ! तो ..... ! मिट जाता रघुवंश राम, मर्यादा ओझल हो जाती । और इसके बाद क्या होता, ऋषिकुमारो ! गाओ ..... ? मैं राम कथा का अन्त सुनना चाहता हूँ ।

**लव :** हूँ... ! हम अपनी इच्छा के गवैये हैं, पराई इच्छा के नहीं ।

**राम :** मैं अनुरोध करता हूँ ।

**कुश :** अनुरोध या विनती भगवान से की जाती है और आज्ञा सेवकों से ।

**लव :** और न हम भगवान हैं न सेवक । केवल संन्यासी बाल- हैं ।

**कुश :** समय बहुत हो गया है, भैया ! चलो चलें ।

**राम :** ठहरो ..... ! बालकों ! इतना अपमान सहन करने पर भी हृदय तुम्हारी ओर खिंचा जाता है ।

**लव :** बहती हवा को राज आज्ञा नहीं रोक सकती, नरेश ! समय मिला तो कभी फिर मिलन होगा ।

**(लव-कुश का जाना । राम का एकटक उसी ओर देखना । पंडित का हवन कुण्ड से उठकर राम के पास जाना)**

**पंडित :** अयोध्यापति !

**राम :** यज्ञ कब तक पूरा हो सकेगा, पंडित जी !

**पंडित :** पूजा कार्य सम्पन्न हो गया है, महाराज ! इसी अंतिम आहुती पर अश्व स्वतंत्र किया जायेगा । आइये ..... !

**(श्रीराम का फिर हवन कुण्ड के पास आना। मंत्रोच्चारण के बाद राम का आहुति देना)**

**सम्मिलित स्वर : "अयोध्यापति श्रीराम की जय"**

**पर्दा गिरना**

**सीन छठवाँ**

**स्थान :** अयोध्या के महल का भीतरी भाग।

**दृश्य :** गुरु वशिष्ठ आसन पर विराजमान हैं। राम उनके चरणों के पास खड़े हैं।

**पर्दा उठना**

**राम :** (चरणों में गिरकर) गुरुदेव ! समझ में नहीं आता कि वे बालक हैं या दैत्य। पल-पल में हमारी हार के समाचार. ! यह सब क्या हो रहा है, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** मनुष्य स्वयं को बलवान समझ बैठे . . . . . ? तो यह उसकी भूल है, अयोध्यापति ! वास्तव में मनुष्य बलवान नहीं, समय बलवान होता है।

**राम :** समय का चक्र राम को ही क्यों सता रहा है, गुरुदेव ! राजतिलक के समय बनवास, फिर सीता हरण, रावण युद्ध फिर सीता का वियोग और इन सबके बाद जब राम ने शान्ति की लालसा में अश्वमेघ यज्ञ रचाया तो. . . ? उल्टी अशान्ति ! यह सब मेरे भाग्य में रह गया था, गुरुदेव !

**वशिष्ठ :** भविष्य में क्या होना है? इसका अनुमान कोई नहीं लगा सका, अयोध्यापति !

**॥ चौपाई ॥**

आए खबरि लेन चर चारी । भरत सैन तिन सकल निहारी ॥
फिरे दूत कौसलपुर आए । समाचार सब राम सुनाए ॥

**दूत :** (प्रवेश कर सिर नवाकर) अयोध्यापति की जय हो।

**राम :** क्या समाचार है?

**दूत :** अन्नदाता ! युद्ध भूमि में वे दोनों ऋषिकुमार प्रलय बनकर छाये हुए हैं । सब योद्धा घायल हो चुके हैं । हनुमान जी को बाँधकर अज्ञात स्थान पर ले जाया जा चुका है । लक्ष्मण जी भी मूर्छित हो गये हैं ।

**राम :** (विस्मय से दुखी होकर) क्या कहा..... ? लक्ष्मण मूर्छित हो गये हैं तो अब शेष क्या रह गया है ?

**वशिष्ठ :** मर्यादा पुरुषोत्तम राम का शस्त्र धारण करना ।

**राम :** (क्रोध से) अब यही होगा, गुरुदेव ! राम युद्ध क्षेत्र में पहुँचेगा । दो निर्णयों में से एक होकर रहेगा... उन बालकों का संहार..... ! या रघुवंश का विनाश..... !

**वशिष्ठ :** प्रभु इच्छा से सब शुभ होगा ।

**राम :** (दूत से) हमारे युद्ध क्षेत्र में जाने की तैयारी की जाये ।

**दूत :** (सिर नवाकर) जो आज्ञा, महाराज !

**(दूत का जाना)**

**राम :** आइये गुरुदेव ! आपका आशीर्वाद राम का सारथी बनेगा ।

**(गुरु वशिष्ठ का राम के साथ जाना)**

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

चले सकोपि कृपालु उदारा । आए जहं प्रभु कटक संहारा ॥

## सीन सातवाँ

**स्थान :** रणभूमि ।

**दृश्य :** लवकुश बाण लिये हुए खड़े हैं ।

**पर्दा गिरना**

(श्रीराम का गुरु वशिष्ठ, दूत तथा सेनापति सहित रथ द्वारा प्रवेश)

**दूत-सेनापति** (रण भूमि में आकर) कौशल नरेश की जय ।

**लव-कुश :** जय जननी ! जय गुरुदेव !

**राम :** (युद्ध भूमि की ओर देखकर) ओह..... ! कौशल राज्य सेना और विपक्षीय दो ऋषिकुमारों के युद्ध का यह भीषण कोलाहल ! यह रक्तपात ! पृथ्वी की प्यास बुझाने के लिए है या रघुवंशीय मर्यादा का नाश करने के लिये ।

**सेनापति :** (सिर नवाकर) कौशल नरेश की जय होगी, प्रजापते ।

**राम :** सेनापति ! युद्ध विराम किया जाय । पहले हम उन बालकों से बातें करने के इच्छुक हैं ।

**दूत :** (आगे बढ़कर सिर नवाकर) जो आज्ञा, अन्नदाता !

**(दूत का जाना)**

**दूत :** (लव-कुश के पास आकर) ऋषिकुमार ! अयोध्या के दूत का प्रणाम स्वीकार करें ।

**लव :** कहिये..... ! क्या कहना है ?

**दूत :** (सिर नवाकर) युद्ध स्थल पर स्वयं रघुपति श्री राम पधारे हैं ।

**कुश :** (मुस्कराकर) सूचना शुभ है ।

**दूत :** उन्हीं के आदेशानुसार युद्ध बन्द किया है । वह आपसे मिलने के इच्छुक हैं ।

**लव :** हम उनसे मिलने को तैयार है, राजदूत ! तुम जा सकते हो ।

**(दूत का प्रणाम करके जाना)**

**लव-कुश :** (श्रीराम के सामने आकर) अयोध्या नरेश को हमारा प्रमाम स्वीकार हो ।

**राम :** तुम्हारी बाण विद्या की दाद देता हूँ, ऋषि कुमारों !

**लव :** (व्यंग्य से) लगता है... ? अपने कुटुम्ब की दुर्दशा देखकर नरेश अपना विवेक खो बैठे हैं । युद्ध स्थल में शत्रु के प्रति ऐसी धारणा उचित नहीं होती, अयोध्या नरेश ?

**राम :** राम वीरता का हमेशा सम्मान करता है ।

**कुश :** (व्यंग्य से) तभी तो..... ?

**राम :** (विस्मय से) तभी तो क्यों ? रुक क्यों गये ऋषिकुमार !

तुम्हें स्वतंत्रता है ।

**लव :** सुनना ही चाहते हैं तो ... सुनिये .... ?

हे अवधेश्वर ! हे राजेश्वर ! कष्टों की क्षमा चाहता हूँ।
थोड़े से सच्चा समाधान, शंका का किया चाहता हूँ।
रघुकुल के पति होकर तुमने, धोखे से बालि संहारा क्यों।
सब भेद विभीषण से लेकर, रावण सा ब्राह्मण मारा क्यों।
थी सूपनखा तो नारि जाति, फिर उसकी नाक कटाई क्यों।
सुग्रीव-विभीषण के कारण, पीछे से आँख चुराई क्यों।
न्यायी राजा होकर के क्यों, ऐसा अन्याय किया तुमने।
सीता की अग्नि परीक्षा ली, फिर भी वनवास दिया तुमने।

**राम :** उत्तर दूँ मैं ! क्या उत्तर दूँ? बस मेरा कहना यह ही है ।
गुण और दोष होते जिसमें, वह ही तो चरित्र मानवी है।
मैंने मानव लीला की है, मानव का रूप दिखाया है।
अन्यथा धाम जो है मेरा, उसमें न प्रपंच न माया है।

**लव :** भावना में बहकर नरेश अपना कर्त्तव्य भूल रहे हैं। यहाँ छल से नहीं, बल से मुकाबला है ।

**राम :** मुझे चुनौती दे रहे हो ।

**कुश :** नहीं तो ..... ? हम तो आपकी वीरता का गुणगान कर रहे हैं ।

**राम :** ऋषि कुमारों ! राम नहीं चाहता कि अबोध बालकों के वध के लिये राम को शस्त्र उठाना पड़े ।

**लव :** नरेश ! वीरता का प्रदर्शन बातों से नहीं होता ।

**राम :** (क्रोधित होकर) तो तुम्हें स्वीकार है ।

**लव :** (मुस्कराकर) हमें कब इन्कार है । जय गुरुदेव ..... !

**(श्रीराम का शस्त्र उठाना)**

**॥ चौपाई ॥**

जेहि बिधि सेष सीय बन आनी । मुनिबर सो सब कथा बखानी ॥

**बाल्मीक :** (प्रवेश करके) ठहरो ..... ? रघुनन्दन मैंने दिव्य दृष्टि से

यह जान लिया था कि सीता का भाव और विचार परम पवित्र है तथा यह पति को ही देवता मानती है। इसीलिये यह मेरे आश्रम में प्रवेश पा सकी है। मैंने अपनी माया द्वारा आप सबको यहाँ बुलाया है। आपको भी सीता प्राणों से अधिक प्रिय है और आप यह भी जानते हैं कि सीता सर्वथा पवित्र है, फिर भी लोक अपवाद से कलुषित चित्त होकर आपने इसका त्याग किया है।

**राम :** (चरणों में गिरकर) महाभाग ! आप धर्म के ज्ञाता हैं। सीता के बारे में आप जैसा कह रहे हैं, वह सब ठीक है। फिर भी, मैंने केवल समाज के भय से इनका त्याग किया। इसलिए जन-समुदाय में शुद्ध प्रमाणित होने पर ही मिथिलेश कुमारी में मेरा प्रेम हो सकता है।

**बाल्मीक :** (उठाकर छाती से लगाकर) धन्य हो राम ! तुम्हारी प्रजा-प्रेम की पराकाष्ठा हो गई।

**हनुमान :** (घबड़ाये हुए प्रवेश करके) प्रभो ! गजब हो गया..... ? माँ सीता आपकी मर्यादा बचाने के लिए अपने कलंक को सदा-सदा के लिये धोने जा रही है।

**राम :** (भागते हुए) सीते..... ! सीते..... !

**पट परिवर्तन**

**स्थान :** बाल्मीक आश्रम।

**दृश्य :** सीता जी हाथ जोड़े खड़ी हैं।

**पर्दा उठना**

**सीता :** हे माँ बसुन्धरे ! मैं श्री रघुनाथ जी के अलावा दूसरे किसी पुरुष का स्पर्श तो दूर रहा, मन से चिन्तन भी नहीं करती। यदि यह सत्य है तो भगवती पृथ्वी देवी ! मुझे अपनी गोद में स्थान दे।

**॥ चौपाई ॥**

हरि इच्छा सिय मन असआवा । सेषहसस फनि आनि दिखावा ॥

**(पृथ्वी से स्वर्ण सिंहासन का प्रगट होना। सीता का रसातल में प्रवेश)**

**॥ दोहा ॥**

जटित मनिन सिंहासनहि, सादर सीय चढ़ाय ।
भए अलोप पताल महं, महिमा किमि कहि जाय ॥

**राम :** (सबके साथ प्रवेश करके) सीते. . . ! सीते. . . ! !(पास आकर) पूज्यनीये भगवती बसुन्धरे ! मुझे सीता को लौटा दो, अन्यथा मेरे लिये भी अपनी गोद में जगह दो, वरना मैं सारी पृथ्वी का विनाश कर डालूँगा ।

**(ब्रह्माजी का सिंहासन हिलना)**

**॥ चौपाई ॥**

बीता अवधि ब्रह्म तब जानी । नारद मुनि सन कहा बखानी ॥

**नारद जी :** (प्रवेश करके) नारायण ! नारायण ! प्रभो ! लक्ष्मी जी पाताल लोक द्वारा आपके धाम को पहुँच चुकी हैं। अब आपका ही इन्तजार है। अच्छा प्रभो ! नारायण ! नारायण !

**(नारद जी का जाना)**

**॥ चौपाई ॥**

लव कुस कथा सकल मुनिभाखी । सिव बिरंचि सूरजकरि साखी ॥
मिले तनय दोउ हृदय लगाई । सुधा बर्षि सुर सैन्य जिवाई ॥

**बाल्मीक :** प्रभो ! ये लव-कुश आपकी ही निशानी हैं।

**राम :** (लव-कुश को छाती से लगाकर गदगद होकर) मेरे बेटे. . !

**पर्दा गिरना**

**॥ चौपाई ॥**

तनय सहित प्रभु निज पुर आए । दीन दान सुभ यज्ञ कराए ॥

**(शंकर पार्वती का प्रगट होना)**

**शिवजी :** प्रिये ! अब समझ गई. . . . . ?

**जब जब होता नाश धर्म का, और पाप बढ़ जाता है।**
**तब लेते अवतार प्रभु जी, विश्व शांति पाता है।**

**पार्वती :** (चरणों में गिरकर) धन्य हो प्रभु ! जो आपने राम कथा प्रसंग अथ से इति तक सुनाकर मेरे नेत्रों से अज्ञान का पर्दा हटा दिया । स्वामी ! अब मेरे मन में कोई शंका नहीं है ।

**बोलो—"सियापति रामचन्द्र की जय"**

**।। सीता बनवास लीला समाप्त ।।**

♦ ♦ ♦

**मंत्र-तंत्र, ज्योतिष, धार्मिक और जन साहित्य के प्रकाशक**

**रणधीर प्रकाशन**

**हरिद्वार**

## रामायण, महाभारत, पुराण

सम्पूर्ण रामायण : रामचरितमानस (आठों काण्ड) अर्थ सहित
सुपर डीलक्स (सिल्वर संस्करण सजिल्द) नया
राधेश्याम रामायण नया
योगवाशिष्ठ : महारामायण (मोटे अक्षर, बड़ा आकार) हिन्दी
सम्पूर्ण श्रीमद् भागवत महापुराण : सुखसागर (बड़ा आकार) हिन्दी
सम्पूर्ण श्री शिव महापुराण (बड़ा आकार) उपासना खण्ड सहित हिन्दी
सम्पूर्ण श्रीमद् देवी भागवत महापुराण (बड़ा आकार) हिन्दी
सम्पूर्ण बाल्मीकि रामायण (सरल हिन्दी में, बड़ा आकार)
सम्पूर्ण महाभारत (बड़ा आकार, 40 रंगीन चित्रों सहित) हिन्दी
हनुमद् पुराण (बड़ा आकार) हिन्दी
गरुड़ पुराण (हिन्दी, मोटे अक्षर, बड़ा आकार)
प्रेम सागर—भगवान श्री कृष्ण की लीलाएँ (बड़ा आकार)
श्री हरिवंश पुराण (बड़ा आकार) हिन्दी
श्री विष्णु पुराण (बड़ा आकार) हिन्दी
कालिका पुराण (बड़ा आकार) हिन्दी
अग्नि पुराण नया संस्करण (बड़ा आकार) हिन्दी
भविष्य पुराण (नया संस्करण, बड़ा आकार) हिन्दी
सूर्य पुराण (बड़ा आकार) हिन्दी
श्री नर्मदा पुराण (बड़ा आकार) हिन्दी नया
श्रीमद् भागवत महापुराण (**सप्ताह पाठ**)

---

श्रीमद् भागवत पुराण (सुखसागर) (कार्ड कवर) हिन्दी
श्रीमद् भागवत पुराण (सुखसागर) (**सजिल्द**)
सम्पूर्ण शिव पुराण (कार्ड कवर) हिन्दी
श्री गरुड़ पुराण (हिन्दी)
श्री गरुड़ पुराण भाषा टीका (मोटे अक्षर)
श्री विष्णु पुराण (कार्ड कवर) हिन्दी
मार्कण्डेय पुराण (कार्ड कवर) हिन्दी
श्री हरिवंश पुराण (कार्ड कवर) हिन्दी
श्री हरिवंश पुराण (**सजिल्द**)
देवी भागवत पुराण (कार्ड कवर) हिन्दी
देवी भागवत पुराण (**सजिल्द**)
लिंग पुराण (कार्ड कवर) हिन्दी
श्री सूर्य पुराण (कार्ड कवर) हिन्दी

मन को वश में कैसे करें (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
**श्री गुरुग्रन्थ साहिब की प्रमुख वाणियाँ** (सजिल्द)
स्वामी विद्यारण्यमुनि रचित—**पंचदशी** (अनुवादक नन्दलाल दशोरा)
**सर्ववेदान्त सिद्धान्त सार संग्रह**—*शंकराचार्य विरचित* (नन्दलाल दशोरा)
**श्री शंकर दिग्विजय** (नन्दलाल दशोरा)
**अपरोक्षानुभूति**—*शंकराचार्य विरचित* (अनुवाद एवं व्याख्या : नन्दलाल दशोरा)
**विवेक चूड़ामणि**—*शंकराचार्य विरचित* (हिन्दी अर्थ व व्याख्या : नन्दलाल दशोरा)
**तत्व बोध और आत्म बोध**—*शंकाराचार्य विरचित* (नन्दलाल दशोरा)
**गीता दर्शन :** श्रीमद्भगवद गीता की सम्पूर्ण व्याख्या (नन्दलाल दशोरा)
**श्री शिव गीता :** शिव राघव सम्वाद (नन्दलाल दशोरा)
**अवधूत गीता** (मूल अनुवाद, व्याख्या) (नन्दलाल दशोरा)
**श्री गुरु गीता :** मूल, अनुवाद, व्याख्या (नन्दलाल दशोरा)
**ज्ञानेश्वरी :** गीतासार (नन्दलाल दशोरा) सजिल्द
**अथ पंचीकरण** (हिन्दी व्याख्या सहित)(नन्दलाल दशोरा)
**अध्यात्म विद्या का अमृत कलश**(नन्दलाल दशोरा)
**ज्ञान सागर :** ज्ञान चिन्तकों के मर्मस्पर्शी वाक्य (नन्दलाल दशोरा)
आध्यात्मिक **तत्व ज्ञान :** जिज्ञासुओं के प्रश्न-उत्तर (नन्दलाल दशोरा)
आध्यात्मिक **साधना** की मुख्य बातें (नन्दलाल दशोरा)
आध्यात्मिक ज्ञान के 1100 **स्वर्ण सूत्र** (नन्दलाल दशोरा)
**गीता में सम्पूर्ण योग : ईश्वर प्राप्ति की श्रेष्ठ साधना** (नन्दलाल दशोरा)
**क्यों करते हैं सोलह संस्कार** (नन्दलाल दशोरा)
**ध्यान साधना** (नन्दलाल दशोरा)
**मन की अद्भुत शक्तियाँ** (नन्दलाल दशोरा)
**ध्यान योग चिकित्सा** (नन्दलाल दशोरा)(सजिल्द)
**ब्रह्मसूत्र : वेदान्त दर्शन** (अनुवाद एवम् व्याख्या : नन्दलाल दशोरा)
योगवाशिष्ठ : महारामायण (नन्दलाल दशोरा)
योगवाशिष्ठ : महारामायण (नन्दलाल दशोरा) **(सजिल्द)**
**योगवाशिष्ठ : महारामायण** (मोटे अक्षर, बड़ा आकार)
**योगवाशिष्ठ के सिद्धान्त** (नन्दलाल दशोरा) **सजिल्द**
अष्टावक्र गीता : राजा जनक और अष्टाव्रक संवाद (नन्दलाल दशोरा)
अष्टावक्र गीता : राजा जनक और अष्टाव्रक संवाद (सजिल्द)
**अष्टावक्र गीता :** मूल, अनुवाद, व्याख्या एवं काव्यानुवाद (नन्दलाल दशोरा)
(बड़ा आकार, मोटे अक्षर, डीलक्स एडीशन, सजिल्द)
**मानसिक शान्ति और आत्मिक आनन्द** (नन्दलाल दशोरा) **नया**

**विज्ञान भैरव** (रुद्रयामल तन्त्र का गूढ़ रहस्य) (नन्दलाल दशोरा) [नया]
**जीवन और ज्योतिष** (नन्दलाल दशोरा) [नया]
**आत्मा : स्वरूप, जीवन यात्रा, मोक्ष प्राप्ति** [नया]
(नन्दलाल दशोरा और दया कृष्ण शर्मा)
**आत्मज्ञान की विधियाँ :** योग से व तंत्र से ज्ञान प्राप्ति (नन्दलाल दशोरा)
**जीवन में सुख की खोज** (नन्दलाल दशोरा)
**योग साधना-प्राणायाम विधि** और ध्यान से लाभ (नन्दलाल दशोरा)
**अध्यात्म : विज्ञान और धर्म** (नन्दलाल दशोरा)
**कर्मफल और पुनर्जन्म** (नन्दलाल दशोरा)
**आत्मज्ञान की साधना** (नन्दलाल दशोरा)
**मृत्यु और परलोक यात्रा** (नन्दलाल दशोरा)
**पातंजल योग सूत्र : योग दर्शन** (हिन्दी व्याख्या सहित) (नन्दलाल दशोरा)
**योग रहस्य :** योगी का जीवन (नन्दलाल दशोरा) [नया]
**आत्म दर्शन :** क्या, क्यों, कैसे? (नन्दलाल दशोरा)
**पंचदशी** (हिन्दी अनुवाद सहित) (नन्दलाल दशोरा)
**महापुरुषों के अनमोल वचन** (नन्दलाल दशोरा)
**भारत के सन्त और भक्त : भगत माला** (उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर')
**अष्टावक्रगीता और चर्पट पञ्जरिका :**
संस्कृत श्लोक एवं काव्यानुवाद (हरिहरदास त्यागी)
**श्री राम गीता** (हिन्दी अनुवाद सहित) हरिहरदास त्यागी
मन्त्र जाप के रहस्य और सरल प्रयोग (गोपाल राजू) [नया]
कबीर अमृत वाणी (कार्ड कवर)
कबीर वाणी (अनुवाद सहित) **सजिल्द**
**श्रीमद्भागवतपुराण का सार** (स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती) [नया]
सचित्र हनुमान जीवन चरित्र (16 रंगीन चित्रों सहित)
प्रेमसागर (हिन्दी) सचित्र
भगवान श्री कृष्ण की लीलाएँ और उपदेश
शिव कथामृत (लेखक : सुदर्शन सिंह चक्र)
शिवलिंग रहस्य और शिवतत्व (चक्र)
शिवशक्ति रहस्य (योगीराज यशपाल जी)
श्रद्धा का महासागर : श्री अमरनाथ (100 से अधिक रंगीन चित्रों सहित) सजिल्द
**श्री गुरु रविदास जीवन चरित्र** और वचनामृत (धर्मनाथ भिक्षुक) [नया]
अमरनाथ की अमर कहानी (तोते वाली) डिमाई साइज
भगवान शंकर के 21 अवतार 12 शिवलिंगों की कथा

## सूक्ति संग्रह : अनमोल वचन

**1100 स्वर्ण सूत्र (आध्यात्मिक सूक्तियाँ)**
ज्ञान गंगा (वेदवाणी, शास्त्रवाणी, सन्तों की वाणी)
सुख और शान्ति का **सच्चा साथी**
**बिखरे मोती**—सूक्ति संग्रह (हरिहर दास त्यागी)
**श्रीमद्भागवत पुराण की ज्ञान वर्षा** (हरिहर दास त्यागी)
महापुरुषों के अनमोल वचन (नन्दलाल दशोरा)

## योग एवं चिकित्सा सम्बन्धी

**रेकी** : प्राण व स्पर्श चिकित्सा (नन्दलाल दशोरा)
कुण्डलिनी शक्ति जागरण एवं षट्चक्र रहस्य (महायोगी प्रकाशानन्द जी)
**चमत्कारी हिप्नाटिज्म** : रोगोपचार और त्राटक साधना (एस.एम. बहल)
**उपयोगी जड़ी बूटियाँ** : चित्र, परिचय व प्रयोग (डॉ. उपाध्याय)
अथर्ववेदीय **वनस्पतियों की गुप्त शक्तियों और उनके अद्भुत प्रयोग**
(लगभग 100 दुर्लभ रंगीन चित्रों सहित) (के.एल. निषाद भैरमगढ़ी)
ध्यान योग चिकित्सा (नन्दलाल दशोरा)
अष्टांग योग रहस्य (घेरण्ड संहिता का अविकल अनुवाद) 'राजर्षि'
योग साधना, प्राणायाम विधि और ध्यान से लाभ (नन्दलाल दशोरा)
**योग रहस्य : योगी का जीवन** (नन्दलाल दशोरा) नया
**सचित्र स्वास्थ्य और योग** : प्राणायाम चिकित्सा (आचार्य प्रकाश)
कुण्डलिनी सिद्धि (प्रकाशनाथ तंत्रेश) सचित्र
कुण्डलिनी संकेत विद्या : ललिता सहस्रनाम (पं. कुलपति मिश्र)
रत्न परिचय और चिकित्सा विज्ञान (डॉ. उपाध्याय)
सम्पूर्ण रत्न-उपरत्न : नग नगीना ज्ञान (पं. कपिल मोहन)
रत्नों की पहचान : परख और प्रयोग (डॉ. उपाध्याय व पं. कपिल मोहन)
**स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न** (गोपाल राजू) नया

## मंत्र-तंत्र-यंत्र सम्बन्धी

तन्त्र के नये प्रयोगों द्वारा—**नब्बे करोड़ की बरसात** (दिवेश कुमार भट्ट)
**असीमित नोटों की धनवर्षा** (दिवेश कुमार भट्ट)
दान और उपवास से रोग निवारण (आचार्य शशिमोहन बहल)
रहस्यमयी प्राचीन तन्त्र विद्याएँ (सन्त कमलादास)
मनचाही सन्तान पुत्र या पुत्री (डॉ. अनिल मोदी)
रोगनाशक धार्मिक अनुष्ठान (डॉ. अनिल मोदी)

धन प्राप्ति के धार्मिक अनुष्ठान (डॉ. अनिल मोदी)
पराविद्या और इच्छाशक्ति के चमत्कार (डॉ. एस.एल. धर्मरत्न)
चमत्कार को नमस्कार : गढ़वाली मंत्र तंत्र (पं. वी.डी. पालीवाल)
श्री नृसिंह तन्त्र और गढ़वाली शाबर (पं. वी.डी. पालीवाल)
गढ़वाल का प्राचीन तंत्रसार (पं. वी.डी. पालीवाल)
नृसिंह उपासना और नृसिंह रहस्य (पं. वी.डी. पालीवाल)
**मन्त्र प्रकाश संहिता एवं मुद्राएँ और रोगनाश** (सुरेन्द्र दास 'निर्वाण')
मन्त्र साधना में सफलता कैसे पायें (पं. महावीर प्रसाद मिश्र)
पेड़ पौधों के तान्त्रिक प्रयोग और चमत्कारी प्रभाव (वैद्य महावीर सिंह)
षट्कर्म साधिका **बगलामुखी ब्रह्मास्त्र विद्या** (पं. दुर्गा प्रसाद शर्मा) नया
**सर्वसिद्धि माँ बगलामुखी** : तांत्रिक और वैज्ञानिक विवेचन;
रंगीन चित्रों सहित (पं. दुर्गा प्रसाद शर्मा)
कामाख्या सिद्धि और कामाख्या तन्त्र (स्वामी आशुतोष गिरिजी)
माँ कामाख्या तान्त्रिक साधना (तान्त्रिक बहल)
**अद्भुत मन्त्र सागर**—तन्त्र के हजारों प्रयोग और अचूक टोटके (सजिल्द)
तन्त्र की रहस्यमयी **काली किताब** (बाबा औढरनाथ तपस्वी)सजिल्द
**चमत्कारी 55 पूजा यन्त्र** (रंगीन यन्त्र और विधि-विधान) (पं. कुलपति मिश्र)
**मन्त्र रहस्य (सजिल्द संस्करण, मोटे कागज पर)** (यशपाल जी)
**तान्त्रिक चमत्कार : मन्त्र तन्त्र यन्त्र महाशास्त्र** (यशपाल जी)
**वृहद शाबर मन्त्र, शाबर तन्त्र और यन्त्र** (योगीराज यशपाल जी)
दश महाविद्या तन्त्र सार (योगीराज यशपाल जी)
बगलामुखी महासाधना (योगीराज यशपाल जी)
**यंत्र विधान** (योगीराज यशपाल जी) सजिल्द
संकटमोचिनी **कालिका सिद्धि** (योगीराज यशपाल जी)
**१०८ यंत्र माला** (रंगीन बने यन्त्र, प्रयोग विधि सहित) (योगीराज यशपाल जी)
**संजीवनी विद्या : महामृत्युंजय प्रयोग** (योगीराज यशपालजी)
**श्री दुर्गा रहस्य** (प्राण प्रतिष्ठा सहित) (योगीराज यशपाल जी)
**सिद्ध शाबर मंत्र : अष्टकर्म युक्त** (योगीराज यशपाल जी)
**तंत्र प्रयोग**—सुलभ सामग्री से सफल प्रयोग (योगीराज यशपाल जी)
**आदित्य हृदय स्तोत्र**—सूर्योपासना सहित (योगीराज यशपाल जी)
सृष्टि का रहस्य : दश महाविद्या, रंगीन चित्रों सहित (योगीराज यशपाल जी)
**हनुमान सिद्धि 16 रंगीन चित्रों सहित** (योगीराज यशपाल जी)
उड्डीश तंत्र (सम्पादन : योगीराज यशपाल जी)
दत्तात्रेय तंत्र (सम्पादन : योगीराज यशपाल जी)

**मंत्र रामायण** : रामचरित मानस के सिद्ध मंत्र (योगीराज यशपाल जी)
तंत्र महायोग : मेरी भक्ति गुरु की शक्ति (यो. अवतार सिंह अटवाल)
महाविद्या तन्त्र मन्त्र : यक्षिणी साधना मन्त्रों सहित (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
**सचित्र तान्त्रिक जड़ी बूटी दर्शन** (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
गुरु नानक मंत्र शक्ति (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
मन्त्र पोथी (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
बावन जंजीरा (यशपाल जी व अटवाल जी)
**वीर हनुमान शाबर मन्त्र** (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
**काली विलास शाबर मन्त्र** (योगीराज अवतार सिंह अटवाल)
मन्त्र तन्त्र और रत्न रहस्य (तान्त्रिक बहल और पं. कपिल मोहन)
तान्त्रिक आक्रमणों से बचाव कैसे करें (तांत्रिक बहल)
तंत्र के अचूक प्रयोग (तांत्रिक बहल)
**पृथ्वी में गढ़ा धन कैसे पायें** (अहिबलचक्र सहित) (तांत्रिक बहल)
**जमीन में दबा हुआ धन पाने के सरल उपाय** : भूगर्भ विद्या (तांत्रिक बहल)
नाग और नागमणि (तांत्रिक बहल)
तंत्र मंत्र द्वारा रोग निवारण (तांत्रिक बहल)
गोरख तंत्र (तांत्रिक बहल)
मुस्लिम तंत्र (तांत्रिक बहल)
मृत आत्माओं से सम्पर्क और अलौकिक साधनाएँ (तांत्रिक बहल)
वनस्पति तंत्र (तांत्रिक बहल)
चमत्कारी मंत्र साधना (तांत्रिक बहल)
सुखी जीवन के लिए टोटके और मंत्र (तांत्रिक बहल)
वशीकरण मन्त्र : सुगम तांत्रिक क्रियाएँ (तांत्रिक बहल)
तंत्र मंत्र यंत्र (चाणक्य विरचित) प्रस्तुति तांत्रिक बहल
पराविज्ञान की साधना और सिद्धियाँ (तांत्रिक बहल)
**मन्त्र और तन्त्र साधना के सरल प्रयोग** (तांत्रिक बहल)
मंत्र साधना कैसे करें (तांत्रिक बहल)
तंत्र साधना कैसे करें (तांत्रिक बहल)
**वनस्पतियों की गुप्त शक्तियाँ और उनके अद्भुत प्रयोग**
(100 दुर्लभ रंगीन केमरा फोटो सहित) (के.एल. निषाद भैरमगढ़ी)
**अलौकिक तान्त्रिक तरंग** (के.एल. निषाद भैरमगढ़ी)
उल्लू तन्त्र, कौवा तन्त्र और पशु-पक्षी तन्त्र (के.एल. निषाद)
तंत्र द्वारा मनोकामना सिद्धि (पं. भृगुनाथ मिश्र)
यक्षिणी भूतिनी साधना और देवी सिद्धियाँ (कनकवती शोभना)

**त्रिसूक्तम् :** यंत्र और अनुवाद सहित (पं. हरिओम कौशिक)
**चमत्कारी टोटके और सुखदाई साधना तन्त्र** ('मानसश्री' गोपाल राजू)
**सर्वसुलभ वस्तुओं से तन्त्र के सरल उपाय**—सचित्र (गोपाल राजू)
**दुर्भाग्यनाशक टोटके और उपाय :** दूर करें दुर्भाग्य (गोपाल राजू)
**सौभाग्य जगाने और धनवान बनने के सरल प्रयोग** (गोपाल राजू)
**मन्त्र जाप के रहस्य एवं सरल प्रयोग** (गोपाल राजू)
धनदायक तांत्रिक प्रयोग (गोपाल राजू) रंगीन चित्रों सहित
**यंत्र विद्या के 121 प्रयोग** (बाबा औढरनाथ तपस्वी)
**मंत्र प्रयोग** (बाबा औढरनाथ तपस्वी)
मंत्र तंत्र और टोटके (डॉ. रामकृष्ण उपाध्याय)
**सौन्दर्य लहरी** (यंत्र और व्याख्या सहित) प्रस्तुति पं. कुलपति मिश्र
**श्री यन्त्रम् और पूजा विधान** (रंगीन पोस्टर 18×23 इंच सहित)
श्री यन्त्रम् (रंगीन, मोटा कार्ड, प्ला. लेमी., 7×10 इंच)
श्री यन्त्रम् (रंगीन, मोटा कार्ड, प्ला. लेमी., 5×7 इंच)

## इन्द्रजाल की पुस्तकों के विशेष संस्करण

विश्वकल्याण : **महान् इन्द्रजाल** (सम्पूर्ण 15 खण्ड) नया
सबसे बड़ा प्राचीन दुर्लभ चमत्कारी—**इन्द्रजाल** (7 खण्ड) नया
असली प्राचीन **इन्द्रजाल (नवखण्ड)** महा इन्द्रजाल नया
तन्त्र की रहस्मयी **काली किताब** (सजिल्द)
**मायावी बृहद इन्द्रजाल** (चार खण्ड वाला)(सजिल्द)
करामाती स्पेशल **काला इन्द्रजाल** (सजिल्द)
पुराना बड़ा **इन्द्रजाल**
तान्त्रिक सिद्धियों का असली **इन्द्रजाल**
मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र का **मायाजाल**
गुप्त मन्त्र शास्त्र और सिद्ध टोटके

## भारतीय मान्यताओं के वैज्ञानिक आधार पर पुस्तकें

**क्यों :** वैदिक मान्यताओं का शाश्वत आधार (पं. शशिमोहन बहल)
हमारे सोलह संस्कार : औचित्य एवं महत्व (नन्दलाल दशोरा)
**चमत्कारी ॐ महिमा एवं साधना** (प्रकाशनाथ शास्त्री)
ध्यान योग चिकित्सा (नन्दलाल दशोरा)(सजिल्द)
**गायत्री साधना और गायत्री मन्त्र का गूढ़ रहस्य** (एस.एम. बहल)
**चमत्कारी हिप्नाटिज्म :** रोगोपचार और त्राटक साधना (एस.एम. बहल)

## स्वर शास्त्र सम्बन्धी पुस्तकें

स्वरोदय विज्ञान (नासिका छिद्रों से श्वास प्रक्रिया पर आधारित)
शिव स्वरोदय भाषा-टीका (बाबा अनुराग दास)
**स्वर शास्त्र (स्वामी हरिहरदास त्यागी)**
स्वरोदय के चार रत्न (बाबा अनुराग दास)

## रुद्राक्ष एवं रत्न सम्बन्धी

**स्वयं चुनिए अपना भाग्यशाली रत्न** (गोपाल राजू) नया
मन्त्र-तन्त्र और रत्न रहस्य (तान्त्रिक बहल और पं. कपिल मोहन)
**सम्पूर्ण रत्न-उपरत्न : नग नगीना ज्ञान** (पं. कपिल मोहन जी)
चमत्कारी रुद्राक्ष की महिमा और प्रयोग (सचित्र) (बाबा एवं उपाध्याय)
रुद्राक्ष महात्म्य और धारण विधि (बाबा औढरनाथ)
रत्न और रुद्राक्ष (तांत्रिक बहल)
रत्न परिचय और चिकित्सा विज्ञान (डॉ. उपाध्याय)
**रत्नों की पहचान : परख और प्रयोग** नया
रुद्राक्ष और राशि के रत्न : Rudraksh & Starstones
(रत्नों के रंगीन चित्रों सहित)

## ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकें

जन्मपत्रिका एवं पुत्र या पुत्री योग (डॉ. अनिल मोदी)
मनचाही सन्तान पुत्र या पुत्री (डॉ. अनिल मोदी)
ब्रह्माण्ड और ज्योतिष रहस्य : खगोल विज्ञान (नन्दलाल दशोरा)
सरल ज्योतिष बोध (जे. बलराजन् और पं. दीनदयाल दिवाकर)
क्या आपके ग्रह खराब हैं : ज्योतिष के अचूक उपाय और स्तोत्र पाठ
**कालसर्प योग : निवारण के उपाय और टोटके** (पं. शशि मोहन बहल)
**रावण संहिता और ज्योतिष के सुनहरी सिद्धांत** (पं. कपिल मोहनजी)
**मानसागरी :** भारतीय ज्योतिष का फलित महाग्रन्थ (डॉ. ज्ञानेश्वर)
**सम्पूर्ण लाल किताब और हस्तरेखा ज्ञान** (सजिल्द)(डॉ. ज्ञानेश्वर)
**असली लाल किताब :** सरल अध्ययन (डॉ. ज्ञानेश्वर)
**लाल किताब के अद्भुत टोटके एवं उपाय** (डॉ. ज्ञानेश्वर)
**बृहज्जातक भाषा-टीका :** भारतीय फलित शास्त्र (डॉ. ज्ञानेश्वर) नया
वर्षफल विचार (डॉ. उमेश पुरी 'ज्ञानेश्वर')
**नवग्रह उपासना और ग्रहदोष के उपाय** (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)

30 दिन में ज्योतिष सीखें (लेखक डॉ. ज्ञानेश्वर जी)
ज्योतिष गुप्त प्रश्नोत्तरी (डॉ. उमेशपुरी)
ग्रह परिचय (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
**नक्षत्र ज्ञान** (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर) बड़ा संस्करण [नया]
लघु पाराशरी (सम्पादन : डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
**लघु पाराशरी** (बृहद परिवर्द्धित संस्करण)(डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
**जिज्ञासु के मूक प्रश्न और ज्योतिष का समाधान**
(सम्पादन : डॉ. उमेशपुरी)
आपकी राशि क्या कहती है (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
अंक बोलते हैं (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
**गोचर ज्योतिष** (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर) (नया बड़ा संस्करण)
वृहदवकहडाचक्रम् अर्थात् होड़ाचक्र (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
शीघ्र बोध (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
**मुहूर्त निकालिये** (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर) [नया]
**भृगु सूत्रम् भाषा-टीका** (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर) [नया]
**बृहद् पाराशर होरा शास्त्र** (फलित महाग्रन्थ) दो खण्डों में सम्पूर्ण
हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या (डॉ. उमेशपुरी ज्ञानेश्वर)
बच्चों के भाग्यशाली नाम (3500 सार्थक नामों के शब्दकोश सहित)
**हस्तरेखा महाशास्त्र का सम्पूर्ण ज्ञान** (सजिल्द ग्रंथ)
**सामुद्रिक ज्ञान** : (हाथ, पैर व मस्तक रेखा, सर्वांग लक्षण, शरीर लक्षण, तिल,
मस्सा और अन्य चिह्न) **पंचागुली साधना** (बहल) (चित्रों सहित)
**हस्त रेखायें देखना कैसे सीखें** (बहल) सचित्र
हस्त रेखाओं के गूढ़ रहस्य (बहल) सचित्र
मेडीकल पामिस्ट्री : **हस्तरेखाओं से रोग की पहचान** (गोपाल राजू) सचित्र
**सचित्र शरीर लक्षण विज्ञान** (बॉडी लेंग्वेज एण्ड फेस रीडिंग) बहल
सरल ज्योतिष-प्रवेश (भृगुनाथ मिश्र)
सरल ज्योतिष फल दीपिका (भृगुनाथ मिश्र एवं कपिल मोहनजी)
कन्या की शादी शीघ्र कैसे करें (भृगुनाथ मिश्र)
स्वप्न सिद्धान्त (योगीराज यशपाल जी)
स्वप्न रहस्य (स्वप्न सिद्धिप्रद मंत्रों सहित) (म.प्र. मिश्र)
स्वप्न फल विचार (श्रीनाथ जी)
हनुमान ज्योतिष (भविष्यज्ञान प्रश्नावली सहित)
सम्पूर्ण राशि विचार (डॉ. उमेशपुरी 'ज्ञानेश्वर')

श्राद्ध पद्धति (भाषा-टीका) (पं. ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी)
षोडश संस्कार विधि (16 संस्कारों के सनातन पद्धति के विधिवत् मन्त्र)
अन्त्येष्टि संस्कार : मृतक कर्म (दाहकर्म) तर्पण और श्राद्धकर्म
रोगनाशक धार्मिक अनुष्ठान (डॉ. अनिल मोदी) नया
धन प्राप्ति के धार्मिक अनुष्ठान (सचित्र) डॉ. अनिल मोदी
**पितृदोष-मातृदोष** (कारण और निवारण) (पं. शशिमोहन बहल)
101 स्तोत्र रत्नावली (सजिल्द)
दिव्य स्तोत्रम् (दुर्लभ और शुद्ध स्तोत्रों का संग्रह) सजिल्द
**वृहद स्तोत्र रत्नाकर** (464 स्तोत्र) सजिल्द नया
कर्मकाण्ड भारती भाषा-टीका (सजिल्द)
वृहद पूजा भास्कर (सम्पूर्ण तीनों भाग, सजिल्द)
रुद्राष्टाध्यायी (भाषा-टीका) डॉ. अनिल मोदी नया
रूद्री पाठ (रुद्राष्टाध्यायी) मूलपाठ
रूद्री पाठ (रुद्राष्टाध्यायी) गुटका, मूलपाठ
**आदित्य हृदय स्तोत्र** : सूर्य नमस्कार सहित (योगीराज यशपाल जी)
**त्रिसूक्तम्** (लक्ष्मी सूक्तम्, पुरुष सूक्तम्, सरस्वती सूक्तम्)
हनुमान बालाजी उपासना और भजन संग्रह (सचित्र)
नवनाथ उपासना (गुरु गोरखनाथ परिचय सहित)
**श्री दुर्गा रहस्य** : दुर्गा उपासना पद्धति (योगीराज यशपाल जी)
**शतचण्डी विधान** (नवरात्र में विधिवत् देवी उपासना) सजिल्द
नवग्रह उपासना व ग्रहदोष के उपाय (डॉ. उमेश पुरी)
नवग्रह पूजन विधान और अनिष्ट ग्रह निवारण (पं. कपिल मोहन)
श्री नृसिंह उपासना अर्थात् नृसिंह रहस्य (वी.डी. पालीवाल) नया
सूर्य उपासना (सूर्य पुराण और सूर्य चालीसा सहित)
सरस्वती उपासना (पं. कपिल मोहन जी)
लक्ष्मी उपासना (श्री सूक्तम् पाठ एवम् पूजा सहित)
बगलामुखी उपासना (पं. कुलपति मिश्र)
शनि उपासना (शनिदोष निवारक कथा सहित)
महाकाली उपासना (नया संस्करण)
भैरव उपासना (नया संस्करण)
शिव उपासना (बड़ा, नया संस्करण)
हनुमान उपासना-पूजा विधि सहित नया
श्री कुबेर उपासना—यन्त्र एवं पूजा विधान नया

हनुमान सिद्धि 16 रंगीन चित्रों सहित (योगीराज यशपाल जी)
हनुमान स्तुति : महाबली महिमा (लाल अक्षर) नया कवर
दैनिक प्रार्थना : स्तोत्र एवं कवच
पंचदेवता पूजा पद्धति (डॉ. रामकुमार तिवारी) नया
सर्वदेव पूजा पद्धति (भाषा-टीका) डीलक्स (पं. ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी)
भारतीय नित्यकर्म पद्धति और पूजा विधान (पं. ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी)
**महामाया के सिद्धस्तोत्र : दुर्गा कवच (भाषा-टीका)**
**शिवमहिम्न और शिवताण्डव स्तोत्र (भाषा-टीका)**
सन्ध्या और पितृतर्पण प्रयोग (बलिवैश्वदेव विधि सहित)
महामृत्युंजय मन्त्र, स्तोत्र एवं कवच (पं. कुलपति मिश्र)
महामृत्युंजय जप विधि (पं. ज्वाला प्रसाद चतुर्वेदी)
सन्तान गोपाल स्तोत्र (हिन्दी अनुवाद सहित)
सन्तान गोपाल स्तोत्र (संतानोत्पत्ति विधान, षष्ठी स्तोत्र सहित)
नवग्रह स्तोत्र, नवग्रह चालीसा सहित (भाषा-टीका) 7'' x 5''
महाकाल शनि मृत्युंजय स्तोत्र (भाषा-टीका) 7'' x 5''
श्री गंगालहरी (भाषा-टीका) गंगा चालीसा सहित
**श्री रामायण : आवाहन विसर्जन** नया
**श्री हनुमान बाहुक** (भाषा-टीका, मोटे लाल अक्षर, डिमाई)
दैनिक यज्ञ प्रकाश (वैदिक) नया
साधक संजीवनी हवन विधि (स्वामी प्रेमानन्द) (वैदिक) नया

## देवी-देवताओं की आरतियाँ

देवी देवताओं की 101 आरतियाँ (डिमाई साइज) नया
देवी देवताओं की 55 आरतियाँ (ग्लेज, 64 पृष्ठ)
आरती संग्रह : (48 पृष्ठ)
आरती संग्रह : (32 पृष्ठ)
प्रभु दर्शन : आरती संग्रह 23 फोटो एलबम (नया चमकदार कागज)
Prabhu Darshan Aarti Sangrah (Roman English)
ईश्वर दर्शन : आरती संग्रह (गुटका) 15 रंगीन फोटो एलबम
देव दर्शन : आरती संग्रह (लघु) 31 रंगीन फोटो एलबम
आरती माला (डीलक्स, दोरंगी, नई) नया
आरती माला : ५१ आरतियाँ (गुटका)

भजन माधुरी (जगद्गुरु बालस्वामी द्वारा प्रस्तुत)
मधुर गीत (स्त्रियों एवं बच्चों के लिए सरस भजन)
गंगा के भजन (शिव भजन व मधुर गीत)
भजन आराधना (अनूप जलोटा, हरिओम् शरण)
हरे राम हरे कृष्ण (अनूप जलोटा, हरिओम् शरण)
प्रभु सुमिरन (अनूप जलोटा, हरिओम् शरण)
अनूप जलोटा के गाये भक्ति गीत (संग्रह)
भजन गोविन्द (कैलाश दासी और सविता शर्मा)
शंकर विवाह और डमरू वाले बाबा की लीला
अमर कथा (शिव पार्वती विवाह)
शंकर भजन माला
श्री हरि कीर्तन (जनमानस में रचे बसे भजन कीर्तन)
मीरा के भजन
मैया का यशगान (माता की भेंटे हिन्दी में)
अब टेर सुनो! दुर्गे महाकाली : जै जै माता पहाड़ों वाली

## सहस्रनाम और नामावली

श्री दुर्गा सहस्रनाम स्तोत्र भाषा-टीका (सहस्रनामावली सहित)
श्री गणेश सहस्रनाम स्तोत्र भाषा-टीका (सहस्रनामावली सहित)
श्री हनुमान सहस्रनाम स्तोत्र भाषा-टीका (सहस्रनामावली सहित)
श्री लक्ष्मी सहस्रनाम भाषा-टीका (सहस्रनामावली सहित)
महामृत्युंजय सहस्रनाम स्तोत्र भाषा-टीका (नामावली सहित)
**पंचरत्न गोपाल सहस्रनाम** भाषा-टीका (डिमाई साइज)
श्री गोपाल सहस्रनाम भाषा-टीका (सहस्रनामावली सहित) 7'' x 5''
गोपाल सहस्रनाम भाषा-टीका (गुटका)
गोपाल सहस्रनाम मूल पाठ (नया कवर)
**पंचरत्न विष्णु सहस्रनाम** भाषा-टीका (डिमाई साइज)
विष्णु सहस्रनाम भाषा-टीका (सहस्रनामावली सहित) 7'' x 5''
विष्णु सहस्रनाम भाषा-टीका (गुटका)
विष्णु सहस्रनाम मूल पाठ (नया कवर)
शिव सहस्रनाम भाषा-टीका (सहस्रनामावली सहित)
गायत्री सहस्रनाम भाषा-टीका (चालीसा इत्यादि सहित)

## भारतवर्ष की प्राचीन विद्याओं की जानकारी देने वाले प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थ

- ❖ गुरु नानकदेव कृत प्राणसंगली (प्राचीन छपी हुई पुस्तक की फोटोस्टेट)
- ❖ हस्तलिखित भृगुसंहिता ग्रन्थ
- ❖ हस्तलिखित रावण संहिता (ज्योतिष)
- ❖ तन्त्रात्मक रावण संहिता (दो खण्ड)
- ❖ रुद्रायामल तन्त्र (भाषा-टीका)
- ❖ शारदा तिलक तन्त्र
- ❖ तन्त्रराज तन्त्र (भाषा-टीका)
- ❖ मन्त्र महोदधि (भाषा-टीका)
- ❖ मन्त्र महार्णव-तीन भाग (भाषा-टीका)
- ❖ श्रीविद्यार्णव तन्त्र-पाँच भाग (भाषा-टीका)
- ❖ महाकाल संहिता-पाँचभाग (भाषा-टीका)
- ❖ अभिनव गुप्त विरचित-तन्त्रालोक (भाषा-टीका)
- ❖ शंकराचार्य कृत-तांत्रिक साधना प्रपंच सार तंत्र (भाषा-टीका)
- ❖ ब्रह्मास्त्र विद्या एवं बगलामुखी महासाधना (भाषा-टीका)
- ❖ महार्थ मंजरी (एक योगिनी द्वारा साधक को दिये गये उपदेश)
- ❖ कुलार्णव तन्त्रम्—हिन्दी अनुवाद सहित
- ❖ श्रीविद्या साधना (सम्पूर्ण श्रीयंत्र पूजा) भाषा-टीका
- ❖ समरांगण सूत्रधार (बृहद वास्तुशास्त्र) भाषा-टीका
- ❖ भारतीय जड़ी बूटियाँ (सचित्र, सजिल्द)
- ❖ धन्वन्तरिकृत-आयुर्वेद निघण्टु (सजिल्द)

उपरोक्त पुस्तकें पूरा मूल्य पेशगी (Advance) आने पर ही भेजी जाती हैं।

इन ग्रन्थों की उपलब्धता एवं मूल्य पुनः पता करके ही जमा करें।

**तन्त्र के नये प्रयोगों से—90 करोड़ की बरसात** (लेखक : दिवेश कुमार भट्ट)

यह पुस्तक सम्बन्धित विषय का केवल जादूई प्रयास ही नहीं है, वरन् इन सभी तथ्यों का अनुसन्धानात्मक अवलोकन भी है। इस पुस्तक में बन्दर छाप सिक्कों, ताम्बे की अन्नी, गाँधीछाप सिक्का, सूरज छाप 20 नया पैसा, हिरण छाप पाँच रुपये का नोट, एक रुपये का मछली छाप सिक्का, सौ रूपये का चाँदी का सिक्का, उल्टे पैदा हुए व्यक्ति की माया की दुनिया, काली मुर्गी का पहला अण्डा, बोलने वाला उल्लू, काँसे का साढ़े नौ इंच का गिलास, बीस नाखून का कुत्ता, काली हल्दी का सम्मोहन, इमली का बान्दा, स्वर्ण सिद्धि, इत्यादि प्रयोगों से करोड़ों रुपयों की बरसात का विवरण दिया है। पुस्तक में 32 रंगीन चित्र भी दिए गए हैं।

**असीमित नोटों की धन वर्षा** (दिवेश कुमार भट्ट)

---

**रणधीर प्रकाशन, रेलवे रोड, हरिद्वार (पिन कोड-249401)**

**मोबाइल : 09012181820** फोन : (01334) 226297

लवकुश रामलीला कमेटी दिल्ली द्वारा प्रस्तावित

## सम्पूर्ण १२ भाग

# रामायण महानाटक

आवरण चित्र:
लवकुश रामलीला कमेटी दिल्ली (रंगमंच)

रणधीर प्रकाशन